पाइअ-सद्द-महण्णवो

[प्राकृत-शब्द-महार्णवः]।

अर्थात्

पाओं के शब्दों का, संस्कृत-प्रतिशब्दों से युक्त, हिन्दी अर्थों से अलंकृत, प्राचीन ग्रन्थों के अवतरणों और परिपूर्ण प्रमाणों से विभूषित बृहत्कोष।

(प्रथम खण्ड)

कर्ता

कलकत्ता-विश्वविद्यालय के प्राकृत-साहित्य-व्याख्याता, न्याय-व्याकरण-तीर्थ

पंडित हरगोविन्ददास त्रिकमचंद शेठ।

कलकत्ता।

प्रथम आवृत्ति।

संवत् १९७१।

Printed by Dr. G. C. AMIN, at the Gurjar Prabhat Printing Press . 27, Amratola Street, and
Pandit HARGOVIND DAS T. SHETH, 26, Zakariah Street, Calcutta.

पाइअ-सद्द-महण्णवो ।

(प्राकृत-शब्द-महार्णवः)

णासिअ-दोस-समूहं, भासिअणेगंतवाय-ललिअत्थं ।
पासिअ-लोआलोअं, वंदामि जिणं महावीरं ॥ १ ॥

निक्कित्तिम-साउ-पयं, अइसइअं सयल-वाणि-परिणमिरं ।
वायं अवाय-रहिअं, पणमामि जिणिंद-देवाणं ॥ २ ॥

पाइअ-भासामइअं, अवलोइअ सत्थ-सत्थमइविउलं ।
सद्द-महण्णव-णामं, रएमि कोसं स-वण्ण-कमं ॥ ३ ॥

d Pu

अ

१ प्राकृत वर्ण-माला का प्रथम अक्षर (हे १,
। २ विष्णु, कृष्ण; (से १, १)।
अ म; (श्रा १४, जी २ ; पउम ११३, १४ ;

°] निम्न-लिखित अर्थों में से, प्रकरण के अनु-
ी एक को बतलानेवाला अव्यय;—१ निषेध,
जैसे—'अहंसण' (सुर ७,२४८) "सव्वनिसंहे
" (विसे १२३२)। २ विरोध, उल्टापन; जैसे—
णाया १,१८)। ३ अयोग्यता, अनुचितपन ;
ाल' (पउम २२, ८५) । ४ अल्पता,
जैसे—'अधण' (गउड) ; 'अचेल' (सम ४०)।
अविद्यमानता; जैसे—'अगुण' (गउड)। ६
नता ; यथा—'अमणुस्स' (णंदि)। ७ सादृश्य,
े—'अचक्खुदंसण' (सम १५)। ८ अप्रशस्तता,
—'अभाइ' (चारु २६)। ९ लघुपन, छोटाई;
ड' (बृह १)।

ं] १ सूर्य, सूरज, (से ७,४३)। २ अग्नि,
यूर, मोर; (से ९,४३)। ४ न पानी, जल;
(से १, १)। ५ शिखर, टोंच; (से ९,४३)। ६ मस्तक,
सिर; (से ९,१८)।

°अ वि [°ज] उत्पन्न, जात; (गा ९७१)।

अअंख वि [दे] स्नेह-रहित, सूखा (दे १,१३)।

अअर देखो अवर; (पि १६५)।

अअर देखो आयर; (पि १६५)।

अइ अ [अयि] १-२ संभावना और आमंत्रण अर्थ का सूचक अव्यय; (हे २, २०५; स्वप्न ५८)।

अइ अ [अति] यह अव्यय नाम और धातु के पूर्व में लगता है और नीचे के अर्थों में से किसी एक को सूचित करता है;—१ अतिशय, अतिरेक; जैसे—'अइउण्ह' 'अइउत्तिं' 'अइचिंतंत' (श्रा १४, रंभा, गा २१४)। २ उत्कर्ष, महत्त्व, जैसे—'अइवेग' (कप्प)। ३ पूजा, प्रशंसा; जैसे—'अइजाय' (ठा ४) । ४ अतिक्रमण, उल्लंघन, जैसे—'अइक्कसो' (दस ५, ४, ४२)। ५ ऊपर, ऊंचा, जैसे—'अइमंच' 'अइपडागा' (औप, णाया १,१)। ६ निन्दा, जैसे—'अइपंडिय' (बृह १)।

अइ सक [आ+इ] आगमन करना, आ गिरना। "अइंति नाराया" (स ३८३)।

अइइ स्त्री [**अदिति**] पुनर्वसु नक्षत्र का अधिष्ठाता देव; (सुज्ज १०)।

अइइ सक [**अति+इ**] १ उल्लंघन करना। २ गमन करना। ३ प्रवेश करना। वकृ—**अइंत**; (से ६, २६, कप्प)। संकृ—**अइच्च**; (सूअ १,७,२८)।

अइंच सक [**अति+अञ्च्**] १ अभिषेक करना, स्थानापन्न करना। २ उल्लंघन करना। ३ अक. दूर जाना (से १३, ८; ८६)।

अइंचिअ वि [**अत्यञ्चित**] १ अभिषिक्त, स्थानापन्न किया हुआ; (से १३,८)। २ उल्लंघित, अतिक्रान्त (से १३, ८)। ३ दूर गया हुआ; (से १३,८६)।

अइंछ देखो **अइंच**; (से १३,८)।

अइंछिअ देखो **अइंचिअ** (से १३,८)।

अइंछण न [**अत्यञ्चन**] १ उल्लंघन; (से १३, ३८)। २ आकर्षण, खींचाव, (से ८, ६४)।

अइंत देखो **अइइ=अति+इ**।

अइंत वि [**अनायत्**] १ नहीं आता हुआ; २ जो जाना न जाता हो, "गाहाहि पणइणीहि य खिज्जइ चित्तं अइंतीहि" (वज्जा ४)।

अइंदिय वि [**अतीन्द्रिय**] इंद्रियों से जिसका ज्ञान न हो सके वह; (विसे; २८१८)।

अइकाय पुं [**अतिकाय**] १ महोरग-जातीय देवों का एक इन्द्र; (ठा २)। २ रावण का एक पुत्र; (से १६, ५६)। ३ वि. बडा शरीर वाला; (णाया १,६)।

अइक्कंत वि [**अतिक्रान्त**] १ अतीत, गुजरा हुआ "अइक्कंतजोव्वणा" (ठा ५)। २ तीर्ण, पार पहुंचा हुआ; (आवं)। ३ जिसने त्याग किया हो वह "सव्वसिणेहाइक्कंता" (औप)।

अइक्कम सक [**अति+क्रम्**] १ उल्लंघन करना। २ व्रत-नियम का आंशिक रूप से खण्डन करना। अइक्कमइ; (भग)। वकृ—**अइक्कमंत, अइक्कममाण**; (सुपा २३८; भग)। कृ—**अइक्कमणिज्ज**; (सूअ २,७)।

अइक्कम पुं [**अतिक्रम**] १ उल्लंघन; (गा ३४८)। २ व्रत या नियम का आंशिक खण्डन, (ठा ३,४)।

अइक्कमण न [**अतिक्रमण**] ऊपर देखो; (सुपा २३८)।

अइगच्छ, **अइगम** } अक [**अति+गम्**] १ गुजरना, बीतना। २ सक. पहुंचना। ३ प्रवेश करना। ४ उल्लंघन करना। ५ जाना, गमन करना। वकृ—**अइगच्छमाण**; (णाया १, १)। संकृ—**अइयच्च**; (आचा) ; "**अइगंतूण** अलोगं" (विसे ६०४)।

अइगम पुं [**अतिगम**] प्रवेश; (विसे ३८६)।

अइगमण न [**अतिगमन**] १ प्रवेश-मार्ग ; (णाया १, २)। २ उत्तरायण, सूर्य का उत्तर दिशा में जाना; (भग)।

अइगय वि (**दे**) १ आया हुआ; २ जिसने प्रवेश किया हो वह; (दे १,५७) "ससुरकुलम्मि अइगयं, दिट्ठा य सगउरवं तत्थ" (उप ५६७ टी)। ३ न. मार्गका पीछला भाग; (दे १,५७)।

अइगय वि [**अतिगत**] अतिक्रान्त, गुजरा हुआ "हिंडंतस्स अइगयं वरिसमेगं" (महा; से १०, १८; विसे ७ टी)।

अइचिरं अ [**अतिचिरम्**] बहुत काल तक; (गा ३४६)।

अइच देखो **अइइ=अति+इ**।

अइच्छ सक [**गम्**] जाना, गमन करना। अइच्छइ ; (हे ४,१६२)।

अइच्छ सक [**अति+क्रम्**] उल्लंघन करना। अइच्छइ; (आघ ५१८)। वकृ—**अइच्छंत**; (उत्त १८)।

अइच्छा स्त्री [**अदित्सा**] १ देने की अनिच्छा; २ प्रत्याख्यान विशेष; (विसे ३५०४)।

अइच्छिय वि [**गत**] गया हुआ, गुजरा हुआ, (पउम ३, १२२; उप पृ १३३)।

अइच्छिय वि [**अतिक्रान्त**] अतिक्रान्त, उल्लंघित; (पाअ; विसे ३५८२)।

अइजाय पुं [**अतिजात**] पिता से अधिक संपत्ति को प्राप्त करनेवाला पुत्र; (ठा ४)।

अइट्ठ वि [**अदृष्ट**] १ जो देखा गया न हो वह। २ न. कर्म, दैव, भाग्य; (भवि)। °**उव्व**, °**पुव्व** वि [°**पूर्व**] जो पहले कभी न देखा गया हो वह; (गा ४१४;७४८)।

अइट्ठ वि [**अनिष्ट**] १ अप्रिय; २ खराब, दुष्ट "जो पुण खलु खुद्दु अइट्ठसंगु, तो किमब्भत्थउ देइ अंगु" (भवि)।

अइट्ठा सक [**अति+स्था**] उल्लंघन करना। संकृ—**अइट्ठिय**; (उत्त ७)।

अइट्ठिय वि [**अतिष्ठित**] अतिक्रान्त; उल्लंघित; (उत्त ७)।

अइण न [**दे**] गिरि-तट, तराई, पहाड का निम्न भाग; (दे १, १०)।

अइण न [**अजिन**] चर्म, चमडा, (पाअ)।

अइणिय वि [दे. अतिनीत] आनीत, लाया हुआ; (दे १, २४)।
अइणिय } वि [अतिनीत] १ फेंका हुआ; (से ६, ५६)।
अइणीय } २ जो दूर ले जाया गया हो; (प्राप)।
अइणीय वि [दे. अतिनीत] आनीत, लाया हुआ; (महा)।
अइणु वि [अतिनु] जिसने नौका का उल्लंघन किया हो वह, जहाज से ऊतरा हुआ; (षड्)।
अइतह वि [अवितथ] सत्य, सच्चा; (उप १०३१ टी)।
अइदंपज्ज न [ऐदंपर्य] तात्पर्य, रहस्य, भावार्थ; (उप ८६४; ८७६)।
अइदुसमा } स्त्री [अतिदुष्षमा] देखो दुस्समदुस्समा;
अइदुस्समा } (पउम २०, ८३; ६०; उप पृ १४७)।
अइदूसमा }
अइदंपज्ज देखो अइदंपज्ज; (पंचा १४)।
अइधाडिय वि [अतिधाटित] फिराया हुआ, घुमाया हुआ, (पण्ह १, ३)।
अइनिट्ठुहावण वि [अतिविष्टम्भन] स्तब्ध करने वाला, रोकने वाला, (कुमा)।
अइन्न न [अजीर्ण] १ बदहजमी, अपच। २ वि. जो हजम हुआ न हो वह। ३ जो पुराणा न हुआ हो, नूतन; (उव)।
अइन्न वि [अदत्त] नहीं दिया हुआ। °याण न [°दान] चोरी; (आचा)।
अइपंडुकंबलसिला स्त्री [अतिपाण्डुकम्बलशिला] मेरु पर्वत पर स्थित दक्षिण दिशा की एक शिला; (ठा ४)।
अइपडाग पुं [अतिपताक] १ मत्स्य की एक जाति; (विपा १, ८)। २ स्त्री. पताका के ऊपर की पताका; (णाया १, १)।
अइपरिणाम वि [अतिपरिणाम] आवश्यकता न रहने पर भी अपवाद-मार्ग का ही आश्रय लेनेवाला, शास्त्रोक्त अपवादों की मर्यादा का उल्लंघन करनेवाला;
"जो दव्वखेत्तकालभावकयं जं जहिं जया काले।
तल्लेसुस्सुत्तमई, अइपरिणामं वियाणाहि" (बृह १)।
अइपास पुं [अतिपार्श्व] भगवान् अरनाथ के समकालिक ऐरवत क्षेत्र के एक तीर्थकर-देव; (तित्थ)।
अइप्पगे अ [अतिप्रगे] पूर्व-प्रभात, बड़ी सवेर; (सुर ७, ७८)।
अइप्पसंग पुं [अतिप्रसङ्ग] १ अति-परिचय; (पञ्चा १०)। २ तर्क-शास्त्र में प्रसिद्ध अतिव्याप्ति-नामक दोष; (स १६६; उवर ४८)

अइप्पहाय न [अतिप्रभात] बड़ी सवेर; (गा ६८)।
अइबल वि [अतिबल] १ बलिष्ठ, शक्ति-शाली; (औप)। २ न. अतिशय बल, विशेष सामर्थ्य; ३ बड़ा सैन्य; (हे ४, ३५४)। ४ पुं. एक राजा, जो भगवान् ऋषभ-देव के पूर्वीय चतुर्थ भव में पिता या पितामह था; (आचू)। ५ भरत चक्रवर्ती का एक पौत्र, (ठा ८)। ६ भरत क्षेत्र में आगामी चौवीसी में होनेवाला पांचवाँ वासुदेव; (सम ५)। ७ रावण का एक योद्धा; (पउम ५६, २७)।
अइभद्दा स्त्री [अतिभद्रा] भगवान् महावीर के प्रभास-नामक ग्यारहवें गणधर की माता; (आचू)।
अइभूइ पुं [अतिभूति] एक जैन मुनि, जो पंचम वासुदेव के पूर्व-जन्म में गुरू थे; (पउम २०, १७६)।
अइभूमि स्त्री [अतिभूमि] १ परम प्रकर्ष; २ बहुत जमीन; (से ३, ४२)। ३ गृहस्थों के घर का वह भाग, जहां साधुओं का प्रवेश करने की अनुज्ञा न हो "अइभूमिं न गच्छेज्जा, गोयरग्गगओ मुणी" (दस ५, १, २४)।
अइमट्टिया स्त्री [अतिमृत्तिका] कीचवाली मट्टी; (जीव ३)।
अइमत्त } वि [अतिमात्र] बहुत, परिमाणसे अधिक;
अइमाय } (उव ठा ६)।
अइमुंक } पुं [अतिमुक्त, °क] १ स्वनाम-ख्यात एक
अइमुंत } अन्तकृद् (उसी जन्म में मुक्ति पानेवाला)
अइमुंतय } जैन मुनि, जो पोलासपुर के राजा विजय का
अइमुत्त } पुत्र था और जिसने बहुत छोटी ही उम्र में
अइमुत्तय } भगवान् महावीर के पास दीक्षा ली थी; (अन्त)। २ कंस का एक छोटा भाई; (आव)। ३ वृक्ष-विशेष; (पउम ४२, ८)। ४ माधवी लता; (पाअ; स ३५)। ५ न. अन्तगड़दसा-नामक अंग-ग्रन्थ का एक अध्ययन; (अन्त)। (हे १, २६; १७८, पि २४६)।
अइय वि [अतिग] अतिक्रान्त "अव्वो अइअम्मि तुमे, णवरं जइ सा न जूरिहिइ" (हे २, २०४)। २ करने वाला; "ठाणाइय" (औप)।
°अइय वि. [दयित] १ प्रिय, प्रीतिपात्र; २ दया-पात्र, दया करने योग्य; (से ६, ३१)।

अइयच्च देखो **अइगच्छ**।

अइयण न [**अत्यदन**] बहुत खाना, अधिक भोजन करना ; (वव २)।

अइयय वि [**अतिगत**] गया हुआ ; (स ३०३)।

अइयर सक [**अति+चर्**] १ उल्लंघन करना ; २ व्रत को दूषित करना। वकृ— **अइयरंत**; (सुपा ३५४)।

अइया सक [**अति+या**] जाना, गुजरना ; (उत्त २०)।

अइया स्त्री [**अजिका**] बकरी, छागी ; (उप २३७)।

°**अइया** स्त्री [**दयिता**] स्त्री, पत्नी ; (से ६, ३१)।

अइयाण न [**अतियान**] १ गमन, गुजरना ; २ राजा वगैरः का नगर आदि में धूमधाम से प्रवेश करना ; (ठा ४)।

अइयाय वि [**अतियात**] गया हुआ, गुजरा हुआ (उत्त २०)।

अइयार पुं [**अतिचार**] उल्लंघन, अतिक्रमण ; (भवि)। २ गृहीत व्रत या नियम में दूषण लगाना ; (श्रा ६)।

अइर अ [**अचिर**] जल्दी, शीघ्र ; (स्वप्न ३७)।

अइर न [**अजिर**] आंगन, चौक ; (पाअ)।

अइर पुं [**दे**] आयुक्त, गांवका राज-नियुक्त मुखिया ; (दे १, १६)।

अइर न [**दे. अतर**] देखो **अयर**=अतर ; (सुपा ३०)।

अइरजुवइ स्त्री (दे) नई बहू, दुलहिन ; (दे १, ४८)।

अइरत्त पुं [**अतिरात्र**] अधिक तिथि, ज्योतिष की गिनती से जो दिन अधिक होता है वह ; (ठा ६)।

अइरत्त वि [**अतिरक्त**] १ गाढा लाल ; २ विशेष रागी। °**कंबलसिला**, °**कंबला** स्त्री [°**कम्बलशिला, कम्बला**] मेरु पर्वत के पांडुक वन में स्थित एक शिला, जिस पर जिनदेवों का जन्माभिषेक किया जाता है ; (ठा २, ३)।

अइरा अ [**अचिरात्**] शीघ्र, जल्दी (से ३, १५)।

अइरा }
अइराणी } स्त्री [**अचिरा**] पांचवें चक्रवर्ती और सोलहवें तीर्थंकर-देव की माता ; (सम १५२; पउम २०, ४२)।

अइराणी स्त्री [**दे**] १ इन्द्राणी ; २ सौभाग्य के लिए इन्द्राणी-व्रत करनेवाली स्त्री ; (दे १, ५८)।

अइरावण पुं [**ऐरावण**] इन्द्र का हाथी ; (पाअ)।

अइरावय पुं [**ऐरावत**] इन्द्र का हाथी ; (भवि)।

अइराहा स्त्री [**अचिराभा**] बिजली, चपला ; (दे १, ३४ टी)।

अइरि न [**अतिरि**] धन या सुवर्ण का अतिक्रमण करने वाला, धनाढ्य ; (षड्)।

अइरिंप पुं [**दे**] कथाबन्ध, बातचीत, कहानी ; (दे १, २६)।

अइरित्त वि [**अतिरिक्त**] १ बचा हुआ, अवशिष्ट ; (प १ ११८, ११६)। २ अधिक, ज्यादः ; (ठा २, १ "पवड्ढमाणाइरित्तगुणनिलओ" (सार्ध ६३)। °**सिज्जासणिय** वि [**शय्यासनिक**] लम्बी चौड़ी शय्या और आसन रखनेवाला (साधु) ; (आचू)।

अइरूव वि [**अतिरूप**] १ सुरूप, सुडौल ; (पउम २, ११३)। २ पुं. भूत-जातीय देव-विशेष ; (पण्ण १)।

अइरेग पुं [**अतिरेक**] १ आधिक्य, अधिकता ; "साइरेगअट्ठवासजाययं" (णाया १, ५)। २ अतिशय ; (जीव ३)।

अइरेण }
अइरेणं } अ [**अचिरेण**] जल्दी, शीघ्र ; (गा १३५; पउम ६२, ४ ; उवर ४३)।

अइरेय देखो **अइरेग** ; (णाया १, १)।

अइव अ [**अतीव**] अतिशय, अत्यन्त ;
"रित्तं अइव महंतं, चिट्ठइ मज्झम्मि तस्स भवणस्स।
ता तं सव्वं सुपुरिस ! अप्पायत्तं करेज्जासु॥" (महा)।

अइवट्टण न [**अतिवर्त्तन**] उल्लंघन, अतिक्रमण ; (आचा)।

अइवत्त सक [**अति+वृत्**] अतिक्रमण करना। अइवत्तइ ; (आचा)।

अइवत्तिय वि [**अतिवर्तिक**] १ जिसका उल्लंघन किया गया हो वह ; २ प्रधान, मुख्य ; ३ उल्लंघन करने वाला ; (आचा)।

अइवय सक [**अति+व्रज्**] १ उल्लंघन करना। २ संमुख जाना। ३ प्रवेश करना। अइवयंति ; (पण्ह १, ५)। वकृ—"नियगवयणं **अइवयंतं** गयं सुमिणे पासित्ताणं पडिबुद्धा" (णाया १, १ ; कप्प)।

अइवय सक [**अति+पत्**] १ उल्लंघन करना। २ संबन्ध करना। ३ प्रवेश करना। ४ अक. मरना। ५ गिरजाना। "अवरे रण-सीस-लद्ध-लक्खा संगामम्मि अइवयंति" (पण्ह १, ३) "लोभघत्था संसारं अइवयंति (पण्ह १, ५)। वकृ—"जरं वा सरीररूव-विणासिणिं सरीरं वा **अइवयमाणिं** निवारेसि" (णाया १, ५) ; **अइवयंत** ; (कप्प)। प्रयो—**अइवाएमाण** ; (आचा; ठा ५)।

अइवाइ वि [**अतिपातिन्**] १ हिंसक ; (सूअ १, ५)। विनस्वर ; (विसे १५७८)।

अइवाइत्तु वि [**अतिपातयितृ**] मारनेवाला (ठा ३, २)।

अइवाइय वि [**अतिपातिक**] ऊपर देखो ; (सूअ २, १)।

अइवाएत्तु देखो **अइवाइत्तु** ; (ठा ७)।
अइवाएमाण देखो **अइवय=अति+पत्**।
अइवाय पुं [**अतिपात**] १ हिंसा आदि दोष ; (ओघ ४६)। २ विनाश; "पाणाइवाएणं" (गाया १,५)।
अइवाय पुं [**अतिवात**] १ उल्लंघन; २ भयंकर पवन, तूफ़ान; (उप ७६८ टी)।
अइविरिय वि [**अतिवीर्य**] १ बलिष्ठ, महा-पराक्रमी; २ पुं. इक्ष्वाकु वंश का एक राजा; (पउम ५, ५)। ३ नन्दावर्त नगर का एक राजा ; (पउम ३७, ३)।
अइविसाल वि [**अतिविशाल**] १ बहुत बड़ा, विस्तीर्ण। २ स्त्री. यमप्रभ-नामक पर्वत के दक्षिण तरफ की एक नगरी ; (दीव)।
अइस [**अप**] वि [**ईदृश**] ऐसा, इस तरह का ; (हे ४, ४०३)।
अइसइ वि [**अतिशयिन्**] अतिशयवाला, विशिष्ट, आश्चर्य-कारक ; (सुपा २५७)।
अइसइअ वि [**अतिशयित**) ऊपर देखो ; (पाअ)।
अइसंधाण (**अतिसंधान**] ठगाई, वंचना; "भियगाणइ-संधाणं सासयवुड्ढी य जयणा य" (पंचा ७)।
अइसक्कणा स्त्री [**अतिष्वष्कणा**] उत्तेजना, प्रेरणा, बढ़ावा, (निसी)
अइसय सक [**अति+शी**] मात करना। वकृ—"परबलम् अइसयंतो" (पउम ६०, १५)।
अइसय पुं [**अतिशय**] १ श्रेष्ठता, उत्तमता; (कुमा १,५)। २ महिमा, प्रभाव ; "वयणाइसओ" (महा)। ३ बहुत, अत्यन्त ; (सुर, १२; ८१)। ४ चमत्कार; (उर १,३)। °**भरिय** वि [°**भृत**] पूर्ण, पूरा भरा हुआ; (पाअ)।
अइसरिय न [**ऐश्वर्य**] वैभव, संपत्ति, गौरव; (हे१,१५१)।
अइसाइ वि [**अतिशायिन्**] १ श्रेष्ठ; (धम्म ६ टी) २ दूसरे को मात करनेवाला। स्त्री—°णी; (सुपा ११४)।
अइसार पुं [**अतिसार**] संग्रहणी-रोग, जठर की व्याधि-विशेष; (लहुअ १५)।
अइसेस पुं [**अतिशेष**] १ महिमा, प्रभाव, आध्यात्मिक सामर्थ्य; (सम ५६)। २ बचा हुआ, अवशिष्ट; (ठा ४,२)। ३ अतिशय वाला; (विसे ५५२)।
अइसेसि वि [**अतिशेषिन्**] १ प्रभावशाली, महिमा-न्वित; २ समृद्ध ; (राज)।
अइसेसिय वि [**अतिशेषित**] ऊपर देखो; (ओघ ३०)।

अइहर पुं [**अतिभर**] हद, अवधि, मर्यादा; "सत्तीय को अइहरो ?" (अच्चु २३)।
अइहारा स्त्री [**दे**] विजली, चपला; (दे १, ३४)।
अइहि पुं (**अतिथि**) जिसकी आने की तिथि नियत न हो वह, पाहुन, यात्री, भिक्षुक, साधु; (आचा)। °**संवि-भाग** पुं [°**संविभाग**] साधु को भोजन आदिका निर्दोष दान ; (धर्म ३)।
अई सक [**गम्**] जाना, गमन करना। अईइ; (हे ४,१६२; कुमा;) अइंति; (गउड)।
अईअ [**अतीत**] १ भूतकाल (पच्च ६०)। २ जो बीत चुका हो, गुजरा हुआ; "जे अ अईआ सिद्धा" (पडि)। ३ अतिक्रान्त; (सुअ १, १०; सार्ध ४; विसे ८०८)। ४ जो दूर गया हो ; (उत्त १५)।
अईअ } अ [**अतीव**] बहुत, विशेष, अत्यन्त ; (भग २,
अईव } १ ; पराह १, २)।
अईसंत वि [**अ+दृश्यमान**] जो दिखता न हो; (से १, ३५)।
अईसय देखो **अइसय** ; (पउम ३, १०५; ७५, २६)।
अईसार पुं [**अतीसार**] १ संग्रहणी-रोग। २ इस नामका एक राजा; (ठा ५, ३)।
अउअ न [**अयुत**] १ दस हजार की संख्या। २ 'अउअंग' को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह; (ठा २, ४)।
अउअंग न [**अयुताङ्ग**] 'अच्छणिउर' को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह; (ठा २, ४)।
अउंठ वि [**अकुण्ठ**] निपुण, कार्य-दक्ष; (गउड)।
अउज्झ वि [**अयोध्य**] १ युद्ध में जिसका सामना न किया जा सके वह; (सम १३७)। २ जिस पर रिपु-सैन्य आक्रमण न कर सके ऐसा किला, नगर आदि ; (ठा ४)।
अउज्झा स्त्री [**अयोध्या**]. नगरी-विशेष, इक्ष्वाकुवंश के राजाओं की राजधानी, विनीता, कोसला, साकेतपुर आदि नामोंसे विख्यात नगरी, जो आजकल भी अयोध्या नाम से ही प्रसिद्ध है ; (ठा २)।
अउण वि [**एकोन**] जिसमें एक कम हो वह। यह शब्द बीस से लेकर तीस, चालीस आदि दहाई संख्या के पूर्व में लगता है और जिसका अर्थ उस संख्या से एक कम होता है। °**ट्ठि** स्त्री [°**षष्टि**] उनसाठ, ५९; (कप्प)। °**त्तरि** स्त्री [**सप्तति**] उनसत्तर, ६९; (कप्प) °**तीस** तीन

[°त्रिंशत्] उनतीस, २६ ; (गाया १, १३)। °सट्ठि स्त्री [°षष्टि] उनसाठ, ५६; (कप्प)। °पन्न, °वन्न स्त्रीन [पञ्चाशत्] उनपचास, ४६; (जी ३५; पउम १०२, ७०)। देखो एगूण।

अउणोणिउत्ति स्त्री [अपुनर्निवृत्ति] अन्तिम निवृत्ति, मोक्ष; (अच्चु १०)।

अउण्ण } न [अपुण्य] १ पाप; (सुर ६, २५)। २ वि.
अउन्न } अपवित्र। ३ पुण्य-रहित, पापी; (पउम २८, ११२; सुर २, ५१)।

अउम देखो **ओम**; (गुभा १४)।

अउल वि [अतुल] असाधारण, अद्वितीय; (उप ७२८ टी; पण्ह १, ४)।

अउलीन वि [अकुलीन] कुल-हीन, कुजाति, संकर; (गा २५३)।

अउव्व वि [अपूर्व] अनौखा, अद्वितीय; (गा ११६)।

अउस पुं [दे] उपासक, पूजारी; (प्रयौ ८२)।

अए अ [अये] आमन्त्रण-सूचक अव्यय; (कप्पू)।

अओ अ [अतस्] १ यहां से लेकर; (सुपा ४७८)। २ इसलिए, इस कारण से ; (उप ७३०)।

अओ° [अयस्°] लोह। °घण पुं [घन] लोहे का हथौड़ा "सीसंपि भिंदंति अओघणेहिं" (सूअ १, ५, २, १४)। °मय वि [°मय] लोहे की बनी हुई चीज; (सूअ २, २)। °मुह पुं [मुख] १-२ इस नाम का अन्तर्द्वीप और उसके निवासी; (ठा ५)। ३ वि. लोहे की माफिक मजबूत मुंह वाला "पक्खीहिं खज्जंति अओमुहेहिं" (सूअ १, ५, २, ४)। °मुही स्त्री [°मुखी] एक नगरी; (उप ७६४)।

अओज्झा देखो **अउज्झा**; (प्रति ११५)।

अंक पुं [अङ्क] १ उत्संग, कोला ; (स्वप्न २१६)। २ रत्न की एक जाति; (कप्प)। ३ नौ की एक संख्या "कासी विक्कमवच्छरम्मि य गए बाणंकसुन्नोडुवे" (सुर १६, २४६)। ४ संख्या-दर्शक चिन्ह, जैसे १, २, ३ः (पण्ण २)। ५ नाटक का एक अंश "सुण्णा मणुस्सभवणाडएसु निज्झाइआ अंका" (धण ४५)। ६ सफेद मणि की एक जाति ; (उत्त ३४)। ७ चिन्ह, निशान; (चंद २०)। ८ मनुष्य के बत्तीस प्रशस्त लक्षणो में से एक; (पण्ह १, ४)। ६ आसन-विशेष; (चंद ४)। °कण्ड पुंन [काण्ड] रत्नप्रभा पृथ्वी के खर-काण्ड का एक हिस्सा, जो अंक रत्नों का है ; (ठा १०)। °करेल्लुग, °करेल्लुअ पुं [°करेल्लुक] पानी में होनेवाली एक जात की वनस्पति ; (आचा)। °ट्ठिइ स्त्री [°स्थिति] अंक रेखाओं की विचित्र स्थापना, ६४ कलाओं में एक कला; (कप्प)। °धर पुं [धर] चन्द्रमा ; (जीव ३)। °धाई स्त्री [°धात्री] पांच प्रकार की धाई-माताओ में से एक जिसका काम बालक को उत्संग में ले उसका जी बहलाना है; (णाया १, १)। °लिवि स्त्री [°लिपि] अठारह लिपिओं में की एक लिपि, वर्णमाला-विशेष; (सम ३५)। °वणिय पुं [°वणिक्] अंक-रत्नों का व्यापारी; (राय)। °वाली °ली स्त्री [°पालि, °ली,] आलिंगन; (काप्र १६४)। °हर देखो °धर; (जीव ३)

अंक [दे अङ्क] निकट, समीप, पास; (दे १, ५)।

अंकण न [अङ्कन] १ चिह्नित करना; (आव)। २ बैल आदि पशुओं को लोहे की गरम सलाई आदि से दागना; (पण्ह १, १)। ३ वि. अंकित करनेवाला, गिनती में लानेवाला "अंकणं जोइसस्स......सूरं" (कप्प)।

अंकणा स्त्री [अङ्कना] ऊपर देखो; (णाया १, १७)।

अंकार पुं [दे] सहायता, मदद; (दे १, ६)।

अंकावई स्त्री [अङ्कावती] १ महाविदेह क्षेत्र के रम्य-नामक विजय की राजधानी; (ठा २)। २ मेरु की पश्चिम दिशा में बहती हुई शीतोदा महानदी की दक्षिण दिशा में वर्तमान एक वक्षस्कार पर्वत; (ठा ५, २)।

अंकिअ न [दे] आलिंगन; (दे १, ११)।

अंकिअ वि [अङ्कित] चिह्नित, निशानवाला; (औप)।

अंकिल्ल पुं [दे] नट, नर्तक, नचवैया; (णाया १, १)।

अंकुडग पुं [अङ्कुटक] नागदन्तक, खूँटी, ताख; (जं १)।

अंकुर पुं [अङ्कुर] प्ररोह, फुनगी; (जी ६)।

अंकुरिय वि [अङ्कुरित] अंकुर-युक्त, जिसमें अंकुर उत्पन्न हुए हों वह; (उवा)।

अंकुस पुं [अङ्कुश] १ आंकडी, लोहे का एक हथियार जिससे हाथी चलाये जाते हैं "अंकुसेण जहा णागो धम्मे संपडिवाइओ" (उत्त २२)। २ ग्रह-विशेष (ठा २, ३)। ३ सीता का एक पुत्र, कुस; (पउम ६७, १६)। ४ नियन्त्रण करनेवाला, काबु में रखने वाला; (गउड)। ५ एक देव-विमान; (राज)। ६ पुंन. गुरु-वन्दन का एक दोष; (पव २)।

अंकुसइय न [दे. अंकुशित] अंकुश के आकार वाली चीज,

(दे १, ३८; से ६,६३) ।
अंकुसय पुं [**अङ्कुशक**] देखो **अंकुस** । २ संन्यासी का एक उपकरण, जिससे वह देव-पूजा के वास्ते वृक्ष के पल्लवों को काटता है; (औप) ।
अंकुसा स्त्री [**अङ्कुशा**] चौदहवें तीर्थंकर श्रीअनन्तनाथ भगवान् की शासन-देवी; (पव २८) ।
अंकुसिअ वि [**अङ्कुशित**] अंकुश की तरह मुडा हुआ; (से १४, २६) ।
अंकुसी स्त्री [**अङ्कुशी**] देखो **अंकुसा**; (संति १०) ।
अंकेल्लण न [**दे**] घोड़ा आदि को मारने का चाबुक, कौडा, औंगो; (जं ४) ।
अंकेल्लि पुं [**दे**] अशोक-वृक्ष; (दे १,७) ।
अंकोल्ल पुं [**अङ्कोठ**] वृक्ष-विशेष; (हे १, २००) ।
अंग पुं [**अङ्ग**] १ ब. इस नामका एक देश, जिसको आजकल विहार कहते हैं; (सुर २, ६७) । २ रामका एक सुभट; (पउम ५६, ३७) । ३ न. आचारांग सूत्र आदि बारह जैन आगम-ग्रन्थ; (विपा २, १) । ४ वेदांग, वेदके शिक्षादि छः अंग; (आचू) । ५ कारण, हेतु; (पव १) । ६ आत्मा, जीव; (भवि) । ७ पुंन, शरीर; (प्रासू ८४) । ८ शरीर के मस्तक आदि अवयव; (कम्म १, ३४) । ९ अ. मित्रता का आमंत्रण, संबोधन; (राय) । १० वाक्यालंकार में प्रयुक्त किया जाता अव्यय; (ठा ४) । °**इ** पुं [°**जित्**] इस नामका एक गृहस्थ, जिसने भगवान् पार्श्वनाथ के पास दीक्षा ली थी; (निर) । °**इसि** पुं [°**र्षि**] चंपा नगरी का एक ऋषि; (आचू) । °**चूलिया** स्त्री [°**चूलिका**] अंग-ग्रन्थों का परिशिष्ट; (पक्खि) । °**च्छहिय** वि [**छिन्नाङ्ग**] जिसका अंग काटा गया हो वह; (सुअ २, २, ६३) । °**जाय** वि [°**जात**] बच्चा, लड़का; (उप ६४८) । °**द** देखो °**य=°द**; (ठा ८) । °**पविट्ठ** न [°**प्रविष्ट**] १ बारह जैन अंग-ग्रन्थों में से कोई भी एक; (कम्म १, ६;) २ अंग-ग्रन्थों का ज्ञान (ठा २, १) । °**बाहिर** न [°**बाह्य**] १ अंग-ग्रन्थों के अतिरिक्त जैन आगम; (आचू) । २ अंग-ग्रन्थों से भिन्न जैन आगमोंका ज्ञान; (ठा २) । °**भंग** न [°**ङ्ग**] १ अंग-प्रत्यंग; (राय) । २ हर एक अवयव; (षड्) । °**मंदिर** न [°**मन्दिर**] चम्पा नगरी का एक देव-गृह; (भग १, १) । °**मद्द**, °**मद्दय** पुं [°**मर्द**, °**मर्दक**] १ शरीर की चंपी करनेवाला नौकर; २ वि. शरीर को मलनेवाला, चंपी करनेवाला; (सुपा १०८; महा; भग ११, ९) । °**य** पुं [°**द**] १ वाली-नामक विद्याधर-राज का पुत्र; (पउम १०, १०; ५६, ३७) । २ न. बाजूबंद, केउंटा; (पण्ह १, ४) । °**य** वि [°**ज**] १ शरीर में उत्पन्न । २ पुं. पुत्र, लडका; (उप १३४ टी) । °**या** स्त्री [°**जा**] कन्या, पुत्री; (पाअ) । °**रक्ख**, °**रक्खग** वि [°**रक्ष**, °**रक्षक**] शरीर की रक्षा करनेवाला; (सुपा ५२७; इक) । °**राग** °**राय** पुं [°**राग**] शरीर में चन्दनादि का विलेपन; (औप; गा १८६) । °**राय** पुं [°**राज**] १ अंग-देश का राजा; (उप ७६५) । २ अंग देश का राजा कर्ण; (णाया १, १६; वेणी १०४) । °**रिसि** देखो °**इसि** । °**रुह** वि [°**रुह**] देखो °**य=°ज**; (सुपा ५१२; पउम ५६, ३२) । °**रुहा** स्त्री [°**रुहा**] पुत्री, लड़की; (सुपा १५०) । °**विज्जा** स्त्री (°**विद्या**) १ शरीर के स्फुरण का शुभाशुभ फल बतलाने वाली विद्या ; (उत्त ८) । २ उस नाम का एक जैन ग्रन्थ; (उत्त ८) । °**वियार** पुं [°**विचार**] देखो पूर्वोक्त अर्थ; (उत्त १५) । °**संभूय** वि [**संभूत**] संतान, बच्चा; (उप ६४८) । °**हारय** पुं [°**हारक**] शरीर के अवयवों के विक्षेप, हाव-भाव ; (अजि ३१) । °**ादाण** न [°**ादान**] पुरुषेन्द्रिय, पुरुष-चिन्ह; (निसी) ।
अंग वि [**आङ्ग**] १ शरीर का विकार; (ठा ८) । २ शरीर-संबंधी, शारीरिक; (सुअ २, २) । ३ न. शरीर के स्फुरण आदि विकारों के शुभाशुभ फल को बतलानेवाला शास्त्र, निमित्त-शास्त्र; (सम ४६) ।
°**अंग** वि [**चङ्ग**] सुन्दर, मनोहर; (भवि) ।
अंगइया स्त्री [**अङ्गदिका**] एक नगरी, तीर्थ-विशेष; (उप ५५२) ।
अंगंगीभाव पुं [**अङ्गाङ्गीभाव**] अभेद-भाव, अभिन्नता; "अंगंगीभावेण परिणएणन्नसरिसजिणधम्मे" (सुपा २१८) ।
अंगण न [**अङ्गण**] आंगन, चौक; (सुर ३, ७१) ।
अंगणा स्त्री [**अङ्गना**] स्त्री, औरत; (सुर ३,१८) ।
अंगदिआ देखो **अङ्गइया**; (ती) ।
अंगवड्ढण न [**दे**] रोग, बिमारी; (दे १, ४७) ।
अंगवलिज्ज न [**दे**] शरीर को मोडना; (दे १, ४२) ।
अंगार पुं [**अङ्गार**] १ जलता हुआ कोयला; (हे १, ४७) । २ जैन साधुओं के लिए भिक्षा का एक दोष; (आचा) । °**मद्दग** पुं [°**मर्दक**] एक अभव्य जैन-आचार्य;

(उप २५४)। °वई स्त्री [°वती] सुंसुमार नगर के राजा धुन्धुमार की एक कन्या का नाम (धम्म ८ टी)।

अंगारग } पुं [अङ्गारक] १-२ ऊपर देखो; (गा२६१)।
अंगारय } ३ मंगल-ग्रह; (पराह १,५)। ४ पहला महाग्रह; (ठा २)। ५ राक्षस-वंश का एक राजा; (पउम ५, २६२)।

अंगारिय वि [अङ्गारित] कोयलेकी तरह जला हुआ, विवर्ण; (नाट; आचा)।

अंगाल देखो **अंगार**; "निद्दड्ढंगालनिभं" (पिंड ६७५)।

अंगालग देखो **अंगारग**; (राज)।

अंगालिय न [दे] ईख का टुकड़ा; (दे १, २८)।

अंगालिय देखो **अंगारिय**; (आचा)।

अंगि पुं [अङ्गिन्] १ प्राणी, जीव; (गण ८)। २ वि. शरीर-वाला। ३ अंग-ग्रन्थो का ज्ञाता; (कप्प)।

अंगिरस न [अङ्गिरस] एक गोत्र, जो गोतम-गोत्र की शाखा है; (ठा ७)।

अंगिरस वि [आङ्गिरस] १ अंगिरस-गोत्र में उत्पन्न; (ठा ७)। २ पुं. एक तापस; (पउम ४, ८६)।

अंगीकड } वि [अङ्गीकृत] स्वीकृत; (ठा ५; सुपा
अंगीकय } ५२६)।

अंगीकर } सक [अङ्गी+कृ] स्वीकार करना। अंगी-
अंगीकुण } करेइ; (महा; नाट)। अंगीकरेहि; (स ३०६) संकृ-**अंगीकरेऊण**; (विसे २६४२)।

अंगुअ पुं [इङ्गुद] १ वृक्ष-विशेष; २ न. इंगुद वृक्ष का फल; (हे १, ८९)।

अंगुट्ठ पुं [अङ्गुष्ठ] अंगूठा; (ठा १०) **°पसिण** पुं [°प्रश्न] १ एक विद्या; २ 'प्रश्न-व्याकरण' सूत्र का एक लुप्त अध्ययन; (ठा १०)।

अंगुट्ठी स्त्री [दे] सिरका अवगुण्ठन, घूंघट; (दे १, ६; स २८४)।

अंगुत्थल न [दे] अंगुठी, अंगुलीय; (दे १, ३१)।

अंगुब्भव वि [अङ्गोद्भव] संतान, बचा; (उप २६४)।

अंगुम सक [पूरय्] पूर्ति करना, पूरा करना। अंगुमइ; (हे ४, ६८)।

अंगुमिय वि [पूरित] पूर्ण किया हुआ; (कुमा)।

अंगुरि, °री स्त्री [अङ्गुलि °ली] उंगली; (गा २७७)।

अंगुल न [अङ्गुल] यव के आठ मध्य-भाग के बराबर का एक नाप, मान-विशेष; (भग ३, ७)। **°पोहत्तिय** वि [°पृथक्त्विक] दो से लेकर नव अंगुल तक का परिमाण वाला; (जीव १)।

अंगुलि स्त्री [अङ्गुलि] उंगली; (कुमा।) **°कोस** पुं [°कोश] अंगुलि-त्राण, दास्ताना; (राय)। **°प्फोडण** न [°स्फोटन] उंगली फोड़ना, कड़ाका करना; (तंदु)।

अंगुलिअ }
अंगुलिज्जक } न [अङ्गुलीयक] अंगुठी; (दे ५, ६; कप्प; पि २५२)।
अंगुलिज्जग }

अंगुलिणी स्त्री [दे] प्रियंगु, वृक्ष-विशेष; (दे १, ३२)।

अंगुली स्त्री [अङ्गुली] देखो **अंगुलि**; (कप्प)।

अंगुलीय }
अंगुलीयग }
अंगुलीयय } पुंन [अङ्गुलीयक] अंगुठी; (सुर १०, ९४) "पायवडिएण सामिय ! समप्पिओ अंगुलीयओ तीए" (पउम ५४, ६; सुर १ १३२; पि २५२; पउम ४६, ३५)।
अंगुलेज्जक }
अंगुलेयय }

अंगुवंग } न [अङ्गोपाङ्ग] १ शरीर के अवयव;
अंगोवंग } (पराण २३)। २ नख वगैरः शरीर के छोटे छोटे अवयव; "नहकेससंसुअंगुलीओट्ठा खलु अंगोवंगाणि" (उत्त ३)। **°णाम** न [°नामन्] शरीर के अवयवों के निर्माण में कारण-भूत कर्म-विशेष; (कम्म १, ३४; ४८)।

अंगोहलि स्त्री [दे] शिर को छोड़ कर बाकी शरीर का स्नान; (उप पृ २३)।

अंघो अ [अङ्ग] भय-सूचक अव्यय; (प्रति ३६; प्रयौ २०५)।

अंच सक [कृष्] १ खींचना। २ जोतना, चास करना। ३ रेखा करना। ४ ऊठाना। अंचइ; (हे ४, १८७)। संकृ-**अंचेइत्ता**; (आव)।

अंच सक [अञ्च्] पूजना, पूजा करना। अंचए; (भवि)।

अंचल पुं [अञ्चल] कपडे का शेष भाग; (कुमा)।

अंचि पुं [अञ्चि] गमन, गति; (भग १५)।

अंचि पुं [आञ्चि] आगमन, आना; (भग १५)।

अंचिय वि [अञ्चित] १ युक्त, सहित; (सुर ४, ६७)। २ पूजित; (सुपा २१८)। ३ प्रशस्त, श्लाघित; (प्रासू १८)। ४ न. एक प्रकार का नृत्य; (ठा ४, ४; जीव ३)। ५ एक वार का गमन; (भग १५)। **°यंचि** पुं [°ञ्चि] १ गमनागमन, आना जाना; (भग १५)। २ ऊंचा-नीचा होना; (ठा १०)।

अंचिया स्त्री [अञ्चिका] आकर्षण; (स १०३)।

अंछ सक [कृष्] १ खींचना "अंछंति वासुदेवं अगड-

तडम्मि ठियं संतं (विसे ७९४) । २ अक. लम्बा होना । वकृ-अंछमाण; (विसे ७९५) । प्रयो—अंछावेइ; (णाया १,१) ।

अंछण न [कर्षण] खींचाव; (पण्ह २, ५) ।

अंछिय वि [दे] आकृष्ट, खींचा हुआ ; (दे १, १४) ।

अंज सक [अञ्ज्] आंजना । कृ-अंजियव्व; (स ५४३) ।

अंजण पुं [अञ्जन] १ पर्वत-विशेष; (ठा ५) । २ एक लोकपाल देव; (ठा ४) । ३ पर्वत-विशेष का एक शिखर, जो दिग्हस्ती कहा जाता है; (ठा २,३; ८) । ४ वृक्ष-विशेष; (आव) । ५ न. एक जात का रत्न; (णाया १, १) ६ देवविमान-विशेष; (सम ३५) । ७ काजल, कज्जल; (प्रासू ३०) । ८ जिसका सुरमा बनता है ऐसा एक पार्थिव द्रव्य; (जी ४) । ९ आंखको आंजना; (सूअ १, ९) । १० तैल आदि से शरीर की मालिस करना; (राज)। ११ लेप; (स ५८२) । १२ रत्नप्रभा पृथिवी के खर-काण्ड का दशवाँ अंश-विशेष; (ठा १०) । °केसिया स्त्री [°केशिका] वनस्पति-विशेष; (पण्ण १७; राय) । °जोग पुं [°योग] कला-विशेष; (कप्प) । °दीव पुं [°द्वीप] द्वीप-विशेष; (इक) । °पुलय पुं [°पुलक] १ एक जातिका रत्न; (ठा १०) । २ पर्वत-विशेष का एक शिखर; (ठा ८) । °प्पहा स्त्री [°प्रभा] चौथी नरक-पृथ्वी; (इक) । °रिट्ठ पुं [°रिष्ट] इन्द्र-विशेष; (भग ३,८) । °सलागा स्त्री [°शलाका] १ जैन-मूर्तिकी प्रतिष्ठा । २ अंजन लगाने की सलाई ; (सूअ १, ५) । °सिद्ध वि (°सिद्ध) आंख में अंजन-विशेष लगाकर अदृश्य होने की शक्ति वाला; (निसी) । °सुन्दरी स्त्री [°सुन्दरी] एक सती स्त्री, हनूमान् की माता; (पउम १५, १२) ।

अंजणइसिआ स्त्री [दे] वृक्ष-विशेष, श्याम तमाल का पेड़ ; (दे १, ३७) ।

अंजणई स्त्री [दे] वल्ली-विशेष ; (पण्ण १) ।

अंजणईस न [दे] देखो अंजणइसिआ; (दे २, ३७) ।

अंजणग देखो अंजण ।

अंजणा स्त्री [अंजना] १ हनूमान् की माता ; (पउम १, ६०) । २ स्वनाम-ख्यात चौथी नरक-पृथिवी; (ठा २, ४) । ३ एक पुष्करिणी; (जं ४) । °तणय पुं [°तनय] हनूमान्; (पउम ४७, २८) । °सुंदरी स्त्री [°सुन्दरी] हनूमान् की माता ; (पउम १८, ५८) ।

अंजणाभा स्त्री [अञ्जनाभा] चौथी नरक-पृथिवी ; (इक) ।

अंजणिआ स्त्री (दे) देखो अंजणइसिआ; (दे १, ३७) ।

अंजणिआ स्त्री [अञ्जनिका] कज्जल का आधार-पात्र; (सूअ १, ४) ।

अंजलि, °ली पुंस्त्री [अञ्जलि] १ हाथ का संपुट; (हे १, ३५) । २ एक या दोनों संकुचित हाथों को ललाट पर रखना " एगेण वा दोहि वा मउलिएहिं हत्थेहिं णिडालसंसितेहिं अंजली भण्णति" (निसी) । ३ कर-संपुट, नमस्कार रूप विनय, प्रणाम ; (प्रासू ११० ; स्वप्न ६३) । °उड पुं [°पुट] हाथ का संपुट; (महा) । °करण न [°करण] विनय-विशेष, नमन ; (दे) । °पग्गह पुं [°प्रग्रह] १ नमन, हाथ जोड़ना ; (भग १४, ३) । २ संभोग-विशेष ; (राज) ।

अंजस वि (दे) ऋजु, सरल ; (दे १, १४) ।

अंजिय वि [अञ्जित] आंजा हुआ, अंजन-युक्त किया हुआ ; (से ६, ४८) ।

अंजु वि [ऋजु] १ सरल, अकुटिल "अंजुधम्मं जहा तच्चं, जिणाणं तह सुणेह मे " (सूअ १, ९; १, १, ४, ८) । २ संयम में तत्पर, संयमी "पुढोवि नाइवत्तइ अंजू " (आचा) । ३ स्पष्ट, व्यक्त; (सूअ २, १) ।

अंजुआ स्त्री [अञ्जुका] भगवान् अनन्तनाथ की प्रथम शिष्या; (सम १५२) ।

अंजू स्त्री [अञ्जू) १ एक सार्थवाह की कन्या; (विपा १, १०) । २ 'विपाकश्रुत' का एक अध्ययन; (विपा १, १) । ३ एक इन्द्राणी; (ठा ८) । ४ 'ज्ञाताधर्मकथा' सूत्र का एक अध्ययन; (णाया १, २) ।

अंठि पुंन [अस्थि] हड्डी, हाड; (षड्) । "अट्ठिअमहुरस्स अंबस्स अजोगदाए अण्ठी न भक्खीअदि " (चारु ६) ।

अंड, अंडअ, अंडग न [अण्ड, °क] १ अंडा; (कप्प; औप) । २ अंड-कोश ; (महानि ४) । ३ 'ज्ञाताधर्मकथा ' सूत्र का तृतीय अध्ययन ; (णाया १, १) । °कड वि [°कृत] जो अण्डे से बनाया गया हो "बंभणा माहणा एगे, आह अण्डकडे जगे" (सूअ १, ३) । °बंध पुं [बन्ध] मन्दिर के शिखर पर रखा जाता अण्डाकार गोला (गउड) । °वाणियय पुं [°वाणिजक] अण्डों का व्यापारी; (विपा १, ३) ।

अंडग } वि [अण्डज] १ अण्डे से पैदा होनेवाले जंतु;
अंडय } जैसे पत्ती, सांप, मछली वगैरः; (ठा ३, १; ८)। २ रेशम का धागा; ३ रेशमी वस्त्र; (उत्त २६)। ४ शण का वस्त्र; (सूत्र २, २)।

अंडय पुं [दे, अण्डज] मछली, मत्स्य; (दे १, १६)।

अंडाउय वि [अण्डज] अण्डे से पैदा होनेवाला; (पउम १०२, ६७)।

अंत पुं [अन्त] १ स्वरूप, स्वभाव; (से ६, १८)। २ प्रान्त भाग; (से ६, १८)। ३ सीमा, हद; (जी ३३)। ४ निकट, नजदीक; (विपा १, १)। ५ भंग, विनाश; (विसे ३४५४, जी ४८)। ६ निर्णय, निश्चय; (ठा ३)। ७ प्रदेश, स्थान "एगंतमंतमवक्कमइ" (भग ३, २)। ८ राग और द्वेष; "दोहिं अंतेहिं अदिस्समाणो" (आचा)। ६ रोग, विमारी; (विसे ३४५४)। १० वि. इन्द्रियों को प्रतिकूल लगनेवाली चीज, असुन्दर, नीरस वस्तु; (पण्ह २, ४)। ११ मनोहर, सुन्दर; (से ६, १८)। १२ नीच, क्षुद्र, तुच्छ; (कप्प)। °कर वि [°कर] उसी जन्म में मुक्ति पानेवाला; (सूत्र १, १५)। °करण वि [°करण] नाशक; (पण्ह १, ६)। °काल पुं (°काल) १ मृत्यु-काल; २ प्रलय-काल (से ५, ३२)। °किरिया स्त्री [°क्रिया] मुक्ति, संसार का अन्त करना; (ठा ४, १)। °कुल न [°कुल] क्षुद्र कुल; (कप्प) °गड वि [°कृत्] उसी जन्म में मुक्ति पानेवाला; (उप ४६१)। °गडदसा स्त्री [°कृद्दशा] जैन अंग-ग्रन्थों में आठवाँ अंग-ग्रन्थ; (अणु १)। °चर वि (°चर) भिक्षा में नीरस पदार्थों की ही खोज करनेवाला; (पण्ह २, १)।

अंत वि [अन्त्य] अन्तिम, अन्त का; (पण्ण १५)। °क्खरिया स्त्री [°ाक्षरिका] १ ब्राह्मी लिपि का एक भेद; (पण्ण १)। २ कला-विशेष; (कप्प)।

अंत न [अन्त्र] आंत; (सुपा १८२, गा ५८५)।

अंत अ [अन्तर्] मध्य में, बीच में; (हे १, १४)। °उर न [°पुर] देखो अंतेउर; (नाट)। °करण, °क्करण [°करण] मन, हृदय "कलुणारसपरवसंतकरणेण" (उप ६ टी; नाट)। °गय वि [°गत] मध्यवर्ती, बीच-वाला; (हे १, ६०)। °द्धा स्त्री [°धा] १ तिरोधान; २ नाश; (आचू)। °द्धाण न [°धान] अदृश्य होना, तिरोहित होना; (उप १३६ टी)। °द्धाणिया स्त्री [°धानिका] जिससे अदृश्य हो सके ऐसी विद्या; (सूत्र २, २)। °द्धाभूअ वि (°धाभूत) नष्ट, विगत "नट्ठेति वा विगतेति वा अंतद्धाभूतेत्ति वा एगट्ठा" (आचू)। °प्पाअ पुं [°पात] अन्तर्भाव, समावेश; (हे २, ७७)। °भाव पुं [°भाव] समावेश; (विसे)। °मुहुत्त न [°मुहूर्त] कुछ कम मुहूर्त्त, न्यून मुहूर्त्त; (जी १४)। °रद्धा स्त्री [°धा] १ तिरोधान; २ नाश "वुड्ढी सइ-अन्तरद्धा" (श्रा १६)। °रद्धा स्त्री (°अद्धा) मध्य-काल, बीच का समय; (आचा)। °रप्प पुं [°आत्मन्] आत्मा, जीव; (हे १.१४)। °रहिय, °रिहिद (शौ) वि [°हित] १ व्यवहित, अंतराल-युक्त; (आचा)। २ गुप्त अदृश्य; (सम ३६; उप १६६ टी; अभि १२०)। °वेइ पुं [°वेदि] गंगा और यमुना के बीचका देश; (कुमा)।

°अंत वि [कान्त] सुन्दर, मनोहर; (से १, ५६)।

अंतअ वि [आयात्] आता हुआ; (से ६, ४६)।

अंतअ वि [अन्तग] पार-गामी, पार-प्राप्त; (से ६,१८)।

अंतअ वि [अन्तंद] १ अविनाशी, शाश्वत; २ जिसकी सीमा न हो वह; (से ६, १८)।

अंतअ } वि [अन्तक] १ मनोहर, सुन्दर; (से
अंतग } ६.१८)। २ अन्तर्गत, समाविष्ट; (सूत्र १ १५)। ३ पर्यन्त, प्रान्त भाग "जे एवं परिभासंति अन्तए ते समाहिए" (सूत्र १,२)। ४ यम, मृत्यु; (से ६,१८; उप ६६६ टी)। "समागमं कंखति अन्तगस्स" (सूत्र १,७)।

अंतग वि [अन्तग] १ पार-गामी। २ दुस्त्यज, जो कठिनाई से छोड़ा जा सके "चिच्चाण अन्तगं सोयं निरवेक्खो परिव्वए" (सूत्र १,६)।

°अंतण न [यन्त्रण] बन्धन, नियन्त्रण; (प्रयौ २४)।

अंतर न [अन्तर] १ मध्य, भीतर "गामंतरे पविट्ठो सो" (उप ६ टी)। २ भेद, विशेष, फर्क; (प्रासू १६८)। ३ अवसर, समय; (णाया १,२)। ४ व्यवधान; (जं १)। ५ अवकाश, अन्तराल; (भग ७,८)। ६ विवर, छिद्र; (पाअ)। ७ रजोहरण; ८ पात्र; ६ पुं. आचार, कल्प; १० सूते के कपड़े पहननेका आचार, सौत कल्प; (कप्प)। °कप्प पुं (°कल्प) जैन साधु का एक आत्मिक प्रशस्त आचरण; (पंचू) °करण

पुं [°कन्द] कन्द की एक जाति, वनस्पति-विशेष; (पएण १) । °करण न [°करण] आत्मा का शुभ अध्यवसाय-विशेष ; (पंच) । °गिह न [°गृह] १ घर का भीतरी भाग; २ दो घरों के बीच का अंतर ; (बृह ३) । °णई स्त्री [नदी] छोटी नदी ; (ठा ६) । °दीव पुं [°द्वीप] १ द्वीप-विशेष; (जी २३) । २ लवण समुद्र के बीच का द्वीप (पएण १) । °सत्तु पुं [°शत्रु] भीतरी शत्रु, काम-क्रोधादि ; (सुपा ८५) ।

अंतर सक [अन्तरय्] व्यवधान करना, बीच में डालना । अंतरेहि. अंतरेमि ; (विक्र १३६) ।

अंतर वि [आन्तर] १ अभ्यन्तर, भीतरी " सयलसुराणंपि अंतरो अप्पाणो " (अच्चु २०) । २ मानसिक ; (उवर ७१) ।

अंतरंग वि [अन्तरङ्ग] भीतरी ; (विसे २०२७) ।

अंतरंजी स्त्री [आन्तरञ्जी] नगरी-विशेष ; (विसे २३०३) ।

अंतरा अ [अन्तरा] १ मध्य में, बीचमें; (उप ६५४) । २ पहले, पूर्व में ; (कप्प) ।

अंतराइय न [आन्तरायिक] १ कर्म-विशेष, जो दान आदि करने में विघ्न करता है ; (ठा २) । २ विघ्न, रुकावट, (पण्ह २,१) ।

अंतराईय न [अन्तरायीय] ऊपर देखो ; (सुपा ६०१) ।

अंतराय पुंन. [अंतराय] देखो अन्तराइय ; (ठा २,४ ; स २०)

अंतराल पुं [अन्तराल] अंतर, बीच का भाग ; (अभि ८२) ।

अंतरावण पुंन. [अन्तरापण] दुकान, हाट; (चारु ३) ।

अंतरावास पुं [अन्तरवर्ष, अन्तरावास] वर्षा-काल, (कप्प) ।

अंतरिक्ख पुंन [अन्तरिक्ष] अन्तराल, आकाश ; (भग १७, १०, स्वप्न ७०) । °जाय वि [°जात] जमीन के ऊपर रही हुई प्रासाद, मंच आदि वस्तु ; (आचा २, ५) । °पासणाह पुं [°पार्श्वनाथ] खानदेश में अकोला के पासका एक जैन-तीर्थ और वहां की भगवान् श्रीपार्श्वनाथ की मूर्ति ; (ती)

अंतरिक्ख वि [आन्तरिक्ष] १ आकाश-संबंधी, आकाश का ; (जी ५) । २ ग्रहों के परस्पर युद्ध और भेद का फल बतलानेवाला शास्त्र ; (सम ४६) ।

अंतरिज्ज न [अंतरीय] १ वस्त्र, कपड़ा ; २ शय्या का नीचला वस्त्र " अंतरिज्जं णाम णियंसणं, अहवा अंतरिज्जं नाम सेज्जाए हेट्ठिल्लं पोत्तं " (निसी १५) ।

अंतरिज्ज न [दे] करधनी, कटीसूत्र ; (दे १, ३५) ।

अंतरिज्जिया स्त्री [अन्तरीया] जैनीय वेशवाटिक गच्छ की एक शाखा ; (कप्प) ।

अंतरित / **अंतरिय** वि [अन्तरित] व्यवहित, अंतरवाला ; (सुर ३, १४३ ; से १, २७) ।

अंतरिया स्त्री [दे] समाप्ति, अंत ; (जं २) ।

अंतरिया स्त्री [अन्तरिका] छोटा अन्तर, थोड़ा व्यवधान; (राय) ।

अंतरेण अ [अन्तरेण] बिना, सिवाय ; (उत्त १) ।

अंतलिक्ख देखो **अंतरिक्ख**; (गाया १, १; चारु ७) ।

°अंति देखो **पंति**; (से ६, ६६) ।

अंतिम वि [अन्तिम] चरम, शेष, अन्त्य ; (ठा १) ।

अंतिय न [अन्तिक] १ समीप, निकट ; (उत्त १) । २ अवसान, अंत "अह भिक्खू गिलाएज्जा आहारस्सेव अंतिया" (आचा १, ८) । ३ अन्तिम, चरम ; (सूअ २, २) ।

अंतीहरी स्त्री [दे] दूती ; (दे १, ३५) ।

अंतेआरि वि [अन्तश्चारिन्] बीच में जानेवाला, बीचक ; (हे १, ६०) ।

अंतेउर न [अन्तःपुर] १ राज-स्त्रीओं का निवास-गृह । २ राणी ; " सणंकुमारो वि तेसिं वंदणत्थं संतेउरो गओ तमुज्जाणं " (महा) ।

अंतेउरिगा / **अंतेउरिया** / **अंतेउरी** स्त्री [आन्तःपुरिकी, °री] अन्तःपुर में रहनेवाली स्त्री. राज्ञी; (उप ६ टी; सुपा २२८; २८६) । २ रोगी का नाम-मात्र लेने से उसको नीरोग बनानेवाली एक विद्या; (वव ५) ।

अंतेल्ली स्त्री [दे] १ मध्य, बीच ; २ उदर, पेट ; ३ कल्लोल , तरंग, (दे १, ५५) ।

अंतेवासि वि [अन्तेवासिन्] शिष्य ; (कप्प) ।

अंतेवुर देखो **अंतेउर**; (प्रति ५७) ।

अंतो अ [अन्तर्] बीच, भीतर ; " गामंतो संपत्ता " (उप ६ टी; सुर ३, ७४) । °खरिया स्त्री [°खरिका] नगर में रहनेवाली वेश्या ; (भग १५) । °गइया स्त्री [°गतिका] स्वागत के लिए सामने जाना " सव्वाए विभूईए अंतोगइयाए तणयस्स " (सुर १५, १६१) ।

°गय वि [°गत] मध्यवर्ती, समाविष्ट; (उप ९८६ टी)। °णिअंसणी स्त्री [°निवसनी] जैन साध्वीओं को पहनने का एक वस्त्र; (बृह ३)। °दहण न [°दहन] हृदय-दाह; (तंदु)। °मज्झोवसाणिय पुं [°मध्यावसानिक] अभिनय का एक भेद; (राय)। °मुहुत्त न [°मुहूर्त] कम मुहूर्त, ४८ मिनिट से कम समय; (कप्प)। °वाहिणी स्त्री [°वाहिनी] क्षुद्र नदी; (ठा २, ३)। °वीसंभ पुं [°विश्रम्भ] हार्दिक विश्वास; (हे १, ६०)। °सल्ल न [°शल्य] १ भीतरी शल्य, घाव; (ठा ४)। २ कपट, माया; (औप)। °साला स्त्री [°शाला] घरका भीतरी भाग "कोलालभंडं अंतोसालाहिंतो वहिया नीणेइ" (उवा; पि ३४३)। °हुत्त वि [°मुख] भीतर, "अंताहुत्तं डज्झइ जायासुण्णे घरे हलिअउत्तो" (गा ३७३)।

अंतोहुत्त वि [दे] अधोमुख, औंधा मुंह वाला; (दे १, २१)।

अंत्रडी (अप) स्त्री [अन्त्र] आंत, आंतो; (हे ४, ४४५)।

°अंद पुं [चन्द्र] १ चन्द्रमा, चांद "पसुवइणो रोसारुण-पडिमासंकंतगोरिमुहअंदं" (गा १)। २ कपूर; (से ६, ४७)। °राअ पुं (°राग) चन्द्रकान्त मणि; (से ६, ४७)।

°अंदरा स्त्री [कन्दरा] गुफा; (से ६, ४७)।

°अंदल पुं [कन्दल] वृक्ष-विशेष; (से ७, ४७)।

°अंदावेदि (शौ) देखो अंतावेइ; (हे ४, २८६)।

अंदु, अंदुया स्त्री [अन्दु] शृङ्खला, जंजीर; (औप, स ५३०)।

अंदेउर (शौ) देखो अंतेउर; (हे ४, २६१)।

अंदोल अक [अन्दोल्] १ हिंचकना, झूलना। २ कंपना, हिलना। ३ संदिग्ध होना "अंदोलइ दोलासु व माणो गरुओवि विलयाणं" (स ५२१)। वकृ—अंदोलंत, अंदोलिंत, अंदोलमाण; (से ८, ५१, ११, २५; सुर ३, ११६)।

अंदोल सक [अन्दोलय्] कंपाना, हिलाना। वकृ—अंदोलंत; (सुर ३, ६७)।

अंदोलग पुं [आन्दोलक] हिंडोला; (राय)।

अंदोलण न [आन्दोलन] १ हिंचकना, झूलना; (सुर ४, २२५)। २ हिंडोला; ३ मार्ग-विशेष; (सुअ १, ११)।

अंदोलय देखो अंदोलग; (सुर ३, १७५)।

अंदोलि वि [आन्दोलिन्] हिलानेवाला, कंपानेवाला; (गा २३७)।

अंदोलिर वि [आन्दोलितृ] झुलनेवाला; (सुपा ७८)।

अंदोल्लण देखो अंदोलण।

अंध वि [अन्ध] १ अंधा, नेत्र-हीन; (विपा १, १)। २ अज्ञान, ज्ञान-रहित; "एए णं अंधा मूडा तमप्पइट्ठा" (भग ७, ७)। °कंटइज्ज न [°कण्टकीय] अंध पुरुष के कंटक पर चलने के माफिक अविचारित गमन करना; (आचा)। °तम न [°तमस] निविड अन्धकार; (सूअ १, ५)। °पुर न [°पुर] नगर-विशेष; (बृह ४)।

अंध पुं.ब. [अन्ध्र] इस नाम का एक देश; (पउम ९८,६७)।

अंध वि [आन्ध्र] अन्ध्र देश का रहनेवाला; (पण्ह १,१)।

अंधंधु पुं [दे] कूप, कुँआ; (दे १,१८)।

अंधकार देखो अंधयार; (चंद ४)।

अंधग पुं [दे] वृक्ष, पेड़; (भग १८, ४)। °वण्हि पुं [°वह्नि] स्थूल अग्नि; (भग १८,४)।

अंधग देखो अंध; (भग १८, ४)। °वण्हि पुं [°वह्नि] सूक्ष्म अग्नि; (भग १८, ४)। °वण्हि पुं (°वृष्णि) यदुवंश का एक राजा, जो समुद्रविजयादि के पिता था; (अंत २)।

अंधय, अंधयग पुं [अन्धक] १ अंधा, नेत्र-हीन; (पण्ह १, २)। २ वानर-वंश का एक राज-कुमार; (पउम ६,१८६)।

अंधयार पुंन [अन्धकार] अंधेरा, अंधकार; (कप्प; स ४२६)। °पक्ख पुं [°पक्ष] कृष्ण-पक्ष; (सुज्ज १३)।

अंधयारण न [अन्धकार] अन्धेरा; (भवि)।

अंधयारिय वि [अन्धकारित] अंधकार-वाला; (से १,१५; ५३)।

अंधरअ, अंधल वि [अन्ध] अंधा, नेत्र-हीन; (गा ७०४; हे २, १७३)।

अंधलरिल्ली स्त्री [अन्धयित्री] अंध बनानेवाली एक विद्या; (सुपा ४२८)।

अंधार पुं [अन्धकार] अंधेरा; (ओघ १११;२७०)।

अंधारिय वि [अन्धकारित] अंधकार वाला; (सुपा ५४, सुर ३,२३०)।

अंधाव सक [अन्धय्] अंधा करना। अंधावेइ; (विक ८४)।
अंधिआ स्त्री [अन्धिका] द्यूत-विशेष; (दे २.१)।
अंधिल्लग वि [अन्ध] अन्धा, जन्मांध; (पगह २, ५)।
अंधोकिद (शौ) वि [अन्धीकृत] अंध किया हुआ; (स्वप्न ४६)।
अंधु पुं [अन्धु] कूप कुँआ; (प्रामा; दे १·१८)।
अंधेल्लग देखो अंधिल्लग; (पिंड)।
°अंप पुं [कम्प] कंपन; (मं ५,३२)।
अंब पुं [अम्ब] एक जात के पारमाधार्मिक देव, जो नरक के जीवों को दुख देते हैं; (सम २८)।
अंब पुं [आम्र] १ आम का पेड; २ न. आम, आम्र-फल; (हे १, ८४)। °गट्ठि स्त्री [दे] आम की आंटी. गुठली; (निचू १५)। °चोयग न [दे] १ आम का रुंछा; (निचू १५)। २ आम की छाल; (आचा २,७,२)। °डगल न [दे] आम का टुकड़ा; (निचू १५)। °डालग न [दे] आम का छोटा टुकड़ा; (आचा २, ७, २)। °पेसिया स्त्री [पेशिका] आम का लम्बा टुकड़ा; (निचू १५)। °भित्त न [दे] आम का टुकड़ा; (निचू १५)। °सालग न [दे] आम की छाल; (निचू १५)। °सालवण न [°शालवन] चैत्य-विशेष; (राय)।
अंब न [अम्ल] १ तक, मट्ठा; (जं ३)। २ खट्टा रस; ३ खट्टी चीज; (विसे)। ४ वि. निष्ठुर वचन बोलने वाला; (बृह १)।
अंब वि [आम्ल] १ खट्टी वस्तु; २ मट्ठे से संस्कृत चीज; (जं ३)।
°अंब वि [ताम्र] लाल, रक्त-वर्ण वाला; (से ३,३४)।
अंबग देखो अंब=आम्र; (अणु) °ट्ठिया स्त्री [°अस्थि] आम की गुठली; (अणु)।
अंबट्ठ पुं [अम्बष्ठ] १ देश-विशेष; (पउम ९८,६५)। २ जिसका पिता ब्राह्मण और माता वैश्य हो वह; (सूअ १,९)।
अंबड पुं [अम्बड] १ एक परिव्राजक, जो महाविदेह क्षेत्र में जन्म लेकर मोक्ष जायगा; (औप)। २ भगवान् महावीर का एक श्रावक, जो आगामी चौविसी में २२ वाँ तीर्थंकर होगा; (ठा ९)।
अंबड वि [दे] कठिन; (दे १,१६)।

अंबधाई स्त्री [अम्बाधात्री] धाई माता; (सुपा २६८)।
अंबमसी स्त्री [दे] कठिन और वासी कनिक; (दे १,३७)।
अंबय देखो अंब; (सुपा ३३४)।
अंबर न [अम्बर] १ आकाश; (पाअ; भग २,२) २ वस्त्र, कपड़ा; (प्राम; निचू १)। °तिलय पुं (°तिलक) पर्वत-विशेष; (आव)। °वत्थ न [°वस्त्र] स्वच्छ वस्त्र; (कप्प)।
अंबरिस पुंन [अम्बरिष] १ भट्ठो, भाठा; (भग ३,६)। २ कोष्ठक; (जीव ३)। ३ पुं. नारक-जीवों को दुःख देनेवाले एक प्रकार के पारमाधार्मिक देव; (पव १८०)।
अंबरिसि पुं [अम्बऋषि] १ ऊपर का तीसरा अर्थ देखो; (सम २८)। २ उज्जयिनी नगरी का निवासी एक ब्राह्मण; (आव)।
अंबरीस देखो अंबरिस।
अंबरीसि देखो अंबरीसि।
अंबसमिआ } देखो अंबमसी।
अंबसमी }
अंबहुंडी स्त्री [अम्बहुण्डी] एक देवी; (महानि २)।
अंबा स्त्री [अम्बा] १ माता, मां; (स्वप्न २२४)। २ भगवान् नेमिनाथ की शासन-देवी; (संति १०)। ३ वल्ली-विशेष; (पण्ण १)।
अंबाड सक [खरण्ट्] खरडना, लेप करना; "चमढेति खरण्टेति अंबाडेति त्ति वुत्तं भवति" (निचू ४)।
अंबाड सक [तिरस् + कृ] उपालंभ देना, तिरस्कार करना "तओ हक्कारिय अंबाडिआ भणिआ य" (महा)।
अंबाडग } पुं [आम्रातक] १ आमड़ा का ;
अंबाडय } (पण्ण १; पउम ४२, ६)। २ न. आमला का फल; (अनु ६)।
अंबाडिय वि [तिरस्कृत] १ तिरस्कृत; (महा)। २ उपालब्ध; (स ५१२)।
अंबिआ स्त्री [अम्बिका] १ भगवान् नेमिनाथ की शासन-देवी; (ती १०)। २ पांचवें वासुदेव की माता; (पउम २०,१८४)। °समय पुं [°समय] गिरनार पर्वत पर का एक तीर्थ स्थान; (ती ४)।
अंबिर न [आम्र] आम का फल; (दे १,१५)।
अंबिल पुं [आम्ल] १ खट्टा रस; (सम ४१)। २ वि. खटाई वाली चीज, खट्टी वस्तु; (ओघ ३४०)। ३

नामकर्म-विशेष ; (कम्म १, ४१) ।
अंबिलिया स्त्री [**अम्लिका**] १ इम्ली का पेड़ ; (उप १०३१ टी) । २ इम्ली का फल ; (श्रा २०) ।
अंबु न [**अम्बु**] पानी, जल ; (पाअ) । °**अ**, °**ज** न [°**ज**] कमल, पद्म ; (अच्चु ५५ ; कुमा) । °**णाह** पुं [**नाथ**] समुद्र ; (वव ६) । °**रुह** न [°**रुह**] कमल ; (पाअ) । °**वह** पुं [°**वह**] मेघ, वारिस ; (गउड) । °**वाह** पुं [°**वाह**] मेघ, वारिस ; (गउड) ।
अंबुपिसाअ पुं [**दे**] राहु ; (गा ८०४) ।
अंबुसु पुं [**दे**] श्वापद जन्तु विशेष, हिंसक पशु-विशेष, शरभ ; (दे १,११) ।
अंबेट्टिआ } स्त्री [**दे**] एक प्रकार का जूआ, मुष्टि-द्यूत ;
अंबेट्टी } (दे १, ७)
अंबेसि पुं [**दे**] द्वार-फलह, दरवाजा एक अंश ; (दे १,८) ।
अंबोची स्त्री [**दे**] फूलों को विननेवाली स्त्री ; (दे १,६ ; नाट) ।
अंभ पुं [**अम्भस्**] पानी, जल ; (श्रा १२) ।
अंभु (अप) पुं [**अश्मन्**] पत्थर, पाषाण ; (षड्) ।
अंभो पुं [**अम्भस्**] पानी, जल । °**अ** न [°**ज**] कमल; दे ७, ३८) । °**इणी** स्त्री [°**जिनी**] कमलिनी, पद्मिनी; (मै ६१) । °**निहि** पुं [°**निधि**] समुद्र ; (श्रा १२) । °**रुह** न [°**रुह**] कमल, पद्म, "कुंभंभोरुह-सरजलनिहिणो, दिव्वविमाणरयणगणसिहिणो" (उप ६ टी) ।
अंस पुं [**अंश**] १ भाग, अवयव, खंड, टुकडा; (पाअ) । २ भेद, विकल्प ; (विसे) । ३ पर्याय, धर्म, गुण ; (विसे) ।
अंस } पुं [**अंस**] कान्ध, कंधा ; (गाया १, १८;
अंसलग } तंदु) ।
अंसि देखो **अस**=**अस्** ।
अंसि स्त्री [**अश्रि**] १ कोण, कोना ; (उप पृ ६८) । २ धार, नौक ; (ठा ८) ।
अंसिया स्त्री [**अंशिका**] भाग, हिस्सा ; (बृह ३) ।
अंसिया स्त्री [**अर्शिका**] १ बवासीर का रोग; (भग १६, ३) । २ नासिका का एक रोग ; (निचू ३) । ३ फुनसी, फोड़ा ; (निचू ३) ।
अंसु पुं [**अंशु**] किरण ; (लहुअ ६) । °**मालि** पुं (°**मालिन्**) सूर्य, सूरज ; (रयण १) ।

अंसु } न [**अश्रु**] आंसु, नेत्र-जल ; (हे १, २
अंसुय } कुमा) ।
अंसुय न [**अंशुक**] १ वस्त्र. कपड़ा; (से ६, ८२) २ बारीक वस्त्र ; (बृह २) । ३ पोषाक, वेश (कप्प) ।
अंसोत्थ देखो **अस्सोत्थ**; (पि ७४, १५२, ३०६) ।
अंहि पुं [**अंहि**] पाद, पाँव ; (कप्पू) ।
अकइ वि [**अकति**] असंख्यात, अनन्त ; (ठा ३) ।
अकंड देखो **अयंड** ; (गा ६६५) ।
अकंडतलिम वि [**दे**] १स्नेह-रहित ; २ जिसने शा न की हो वह ; (दे १,६०) ।
अकंपण वि [**अकम्पन**] १ कंप-रहित । २ पुं. राव का एक पुत्र ; (से १४,७०) ।
अकंपिय वि [**अकम्पित**] १ कम्प-रहित । २ पुं भगवान् महावीर का आठवाँ गणधर ; (सम १६) ।
अकज्ज देखो **अकय**=अकृत्य; (उव) ।
अकण्ण } वि [**अकर्ण**] १ कर्ण-रहित । २-३ पुं.
अकन्न } स्वनाम-ख्यात एक अंतर्द्वीप और उसमें रहने वाला ; (ठा ४,२) ।
अकप्प पुं [**अकल्प**] अयोग्य आचार, शास्त्रोक्त विधि मर्यादा से बहार का आचरण ; (कप्प) ।
अकप्प वि [**अकल्प्य**] अनाचरणीय, शास्त्र-निषिद्ध आहार-वस्त्र आदी अग्राह्य वस्तु; (वव १) ।
अकप्पिय पुं [**अकल्पिक**] जिसको शास्त्र का पूरा ज्ञान न हो ऐसा जैन साधु ; (वव १) ।
अकप्पिय देखो **अकप्प**=अकल्प्य ; (दस ५) ।
अकम वि [**अक्रम**] १ क्रम-रहित; २ क्रिवि. एक साथ; (कुमा) ।
अकम्म } न [**अकर्मन्**, °**क**] १ कर्म का अभाव;
अकम्मग } (बृह १) । २ पुं. मुक्त, सिद्ध जीव; (आचा) । ३ वि. कृषि-आदि कर्म-रहित (देश, भूमि वगैरः); (जी २४) । °**भूमग**, °**भूमय** वि [°**भूमक**] अकर्म-भूमि में उत्पन्न होने वाला ; (जीव १) । °**भूमि**, °**भूमी** स्त्री [°**भूमि, भूमी**] जिस भूमि में कल्पवृक्षों से ही आवश्यक वस्तुओं की प्राप्ति होनेसे कृषि वगैरः कर्म करने की आवश्यकता नही है वह, भोग-भूमि ; (ठा ३, ४) । °**भूमिय** वि [°**भूमिज**] अकर्म-भूमि में उत्पन्न ; (ठा ३,१) ।

अकम्हा अ [**अकस्मात्**] अचानक, निष्कारण; (सुपा ५६६) ।

अकय वि [**अकृत**] नहीं किया हुआ ; (कुमा) । °**मुह** वि [°**मुख**] अपठित, अशिक्षित ; (बृह ३) । °**त्थ** वि [°**ार्थ**] असफल; (नाट) ।

अकय वि [**अकृत्य**] १—२ करने को अयोग्य या अशक्य । ३ न. अनुचित काम । °**कारि** वि [°**कारिन्**] अकृत्य को करनेवाला ; (पउम ८०,७१) ।

अकय्य (मा) ऊपर देखो ; (नाट) ।

अकरण न [**अकरण**] १ नहीं करना ; (कस) । २ मैथुन " जइ सेवंति अकरणं पंचएहवि बाहिरा हुंति " (वव ३) ।

अकाइय वि [**अकायिक**] १ शारीरिक चेष्टा से रहित । २ पुं. मुक्तात्मा ; (भग ८,२) ।

अकाम पुं [**अकाम**] १ अनिच्छा ; (सूअ २, ६) । २ वि. इच्छा-रहित, निष्काम; (सुपा २०६) । °**णिज्जरा** स्त्री [°**निर्जरा**] कर्म-नाश की अनिच्छा से बुभुक्षा आदि कष्टों को सहन करना ; (ठा ४, ४) ।

अकामग } [**अकामक**] ऊपर देखो । ३ अवांछ-
अकामय } नीय, इच्छा करने को अयोग्य ; (पएह १, १ ; णाया १, १) ।

अकामिय वि [**अकामिक**] निराश ; (विपा १, १) ।

अकाय वि [**अकाय**] १ शरीर-रहित । २ पुं. मुक्तात्मा; (ठा २, ३) ।

अकार पुं [**अकार**] 'अ' अक्षर, प्रथम स्वर वर्ण ; (विसे ४६५) ।

अकारग पुं [**अकारक**] १ अरुचि, भोजन की अनिच्छा रूप रोग; (णाया १, १३) । २ वि. अकर्ता ; (सूअ १, १) । °**वाइ** वि [°**वादिन्**) आत्मा को निष्क्रिय माननेवाला ; (सूअ १, १) ।

अकासि अ [**दे**] निषेध-सूचक अव्यय, अलम्, " अकासि लज्जाए " (दे १, ८) ।

अकिंचण वि (**अकिञ्चन**) १ साधु, मुनि, भिक्षुक; (पएह २, ५) । २ गरीब, निर्धन, दरिद्र; (पाअ) ।

अकिट्ठ वि (**अकृष्ट**) नहीं जोती हुई जमीन " अकिट्ठजाय-" (पउम ३३, १४) ।

अकिट्ठ वि [**अक्लिष्ट**] १ क्लेश-रहित, बाधा-रहित ; "पेच्छामि तुज्झ कंतं, संगामे कइवएसु दियहेसु । मह नाहेण विणिहयं रामेण अकिट्ठधम्मेणं" (पउम ५३,५२) ।

अकिरिय वि [**अक्रिय**] १ आलसु, निरुद्यम । २ अशुभ व्यापार से रहित; (ठा ७) । ३ परलोक-विषयक क्रिया को नहीं माननेवाला, नास्तिक, (णंदि) । °**प्प** वि [°**ात्मन्**] आत्मा को निष्क्रिय माननेवाला, सांख्य ; (सूअ १, १०) ।

अकिरिया स्त्री [**अक्रिया**] १ क्रिया का अभाव ; (भग २६, २) । २ दुष्ट क्रिया, खराब व्यापार ; (ठा ३, ३) । ३ नास्तिकता; (ठा ८) । °**वाइ** वि [°**वादिन्**] परलोक-विषयक क्रिया को नहीं माननेवाला, नास्तिक; (ठा ४, ४) ।

अकीरिय देखो **अकिरिय** ; " जे केइ लोगम्मि अकी-रियाया ; अन्नेण पुट्ठा धुयमादिसंति " (सूअ १, १०) ।

अकुइया स्त्री [**अकुचिका**] देखो **अकुय** ।

अकुओभय वि [**अकुतोभय**] जिसको किसी तर्फ से भय न हो वह, निर्भय ; (आचा) ।

अकुंठ वि [**अकुण्ठ**] अपने कार्य में निपुण (गउड) ।

अकुय वि [**अकुच**] निश्चल, स्थिर; (निचू १) । स्त्री— **अकुइया** ; (कप्प) ।

अकोप्प वि [**अकोप्य**] रम्य, सुन्दर ; (पएह १, ४) ।

अकोप्प पुं [**दे**] अपराध, गुनाह ; (षड्) ।

अकोस देखो **अक्कोस**=अक्रोश ।

अकोसायंत वि [**अकोशायमान**] विकसता हुआ " रवि-किरणतरुणबोहियअकोसायंतपउमगभीरवियडणाभे" (औप) ।

अक्क पुं [**अर्क**] १ सूर्य, सूरज ; (सुर १०, २२३) । २ आक का पेड़ ; (प्रासू १६८) । ३ सुवर्ण, सोना "जेण अन्नुन्नसरिसो विहिओ रयणक्क-संजोगो " (रयण ५४) । ४ रावण का एक सुभट ; (पउम ५६, २) । °**तूल** न [°**तूल**] आक की रूई ; (पएण १) । °**तेअ** पुं [°**तेजस्**] विद्याधर वंश का एक राजा ; (पउम ५, ४६) । °**बोंदीया** स्त्री [°**बोन्दिका**] वल्ली-विशेष ; (पएण १) ।

अक्क पुं [**दे**] दूत, संदेश-हारक ; (दे १, ६) ।

°**अक्क** देखो **चक्क**; (गा ५३०, से १, ५) ।

अक्कअ वि [**अकृत**] नहीं किया गया ; °**पुव्व** वि [°**पूर्व**] जो पहले कभी न किया गया हो; (से १२, ५०) ।

अक्कंड देखो **अकंड**; (आउ ५३) ।

अक्कंत वि [**आक्रान्त**] १ बलवान् के द्वारा दबाया हुआ; (णाया १, ८) । २ घेरा हुआ, ग्रस्त; (आचा) । ३ परास्त, अभिभूत; (सूअ १, १, ४) । ४ एक

जाति का निर्जीव वायु; (ठा ५, ३)। ५ न. आक्रमण, उल्लंघन; (भग १, ३)। °दुक्ख वि [°दुःख] दुःख से दबा हुआ; (सूत्र १, १, ४)।

अक्कंत वि [दे] बढ़ा हुआ, प्रवृद्ध; (दे १, ६)।

अक्कंद अक [आ+क्रन्द्] रोना, चिल्लाना; (प्रामा)। वकृ—**अक्कंदंत**; (सुपा ५७४)।

अक्कंद (अप) देखो **अक्कम=आ+क्रम्**। **अक्कंदइ**; संकृ—**अक्कंदिऊण**; (सण)।

अक्कंद पुं [आक्रन्द] रोदन, विलाप, चिल्लाकर रोना; (सुर २, ११४)।

अक्कंद वि [दे] त्राण करनेवाला, रक्षक; (दे १, १५)।

अक्कंदावणय वि [आक्रन्दक] रुलानेवाला; (कुमा)।

अक्कंदिय न [आक्रन्दित] विलाप, रोदन; (से ४, ६४; पउम ११०, ५)।

अक्कम सक [आ+क्रम्] १ आक्रमण करना; दबाना; २ परास्त करना। वकृ—**अक्कमंत**; (पि ४८१)। संकृ—**अक्कमित्ता**; (पराह १, १)।

अक्कम पुं (आक्रम) १ दबाना, चढ़ाई करना; २ पराभव (आव)।

अक्कमण न [आक्रमण] १—२ ऊपर देखो (से १४,६६)। ३ पराक्रम; (विसे १०४६)। ४ वि. आक्रमण करनेवाला; (से ६,१)।

अक्कमिअ देखो **अक्कंत=आक्रान्त**; (काप्र १७२; सुपा १२७)।

अक्कसाला स्त्री [दे] १ बलात्कार, जबरदस्ती; २ उन्मत्त सी स्त्री; (दे १,५८)।

अक्का स्त्री [दे] बहिन; (दे १,६)।

अक्कासी स्त्री [अक्कासी] व्यन्तर-जातीय एक देवी; (ती ६)।

अक्किज्ज वि [अक्रेय] खरीदने के अयोग्य; (ठा ६)।

अक्किट्ठ वि [अक्लिष्ट] १ क्लेश-वर्जित; (जीव ३)। २ बाधा-रहित; (भग ३,२)।

अक्किट्ठ वि [अकृष्ट] अ-विलिखित; (भग ३,२)।

अक्किय वि [अक्रिय] क्रिया-रहित; (विसे २२०६)।

अक्कुट्ठ वि [दे] अध्यासित, अधिष्ठित; (दे १,११)।

अक्कुस सक [गम्] जाना। अक्कुसइ; (हे ४,१६२)।

अक्कुहय वि [अकुहक] निष्कपट, माया-रहित; (दस ६,२)।

अक्कूर वि [अक्रूर] क्रूरता-रहित, दयालु; ([illegible] २३६)।

अक्केज्ज देखो **अक्किज्ज**।

अक्केल्लय वि [एकाकिन्] एकिला, एकाकी; (नाट)।

अक्कोड पुं [दे] छाग, बकरा; (दे १,१२)।

अक्कोडण न [आक्रोडन] इकट्ठा करना, संग्रह करना (विसे)।

अक्कोस न [अक्रोश] जिस ग्राम की अति नजदीक में अटवी, श्वापद या पर्वतीय नदी आदि का उपद्रव हो वह; "खेत्तं चलमचलं वा, इंदमणिंदं सकोसमक्कोसं। वाघातम्मि अकोसं, अडवीजले सावए तेणे" (बृह ३)।

अक्कोस सक [आ+क्रुश्] आक्राश करना। वकृ—**अक्कोसिंत**; (सुर १२,४०)।

अक्कोस पुं [आक्रोश] कटु वचन, शाप, भर्त्सना; (सम ४०)।

अक्कोसग वि [आक्रोशक] आक्रोश करनेवाला; (उत्त २)।

अक्कोसणा स्त्री [आक्रोशना] अभिशाप, निर्भर्त्सना; (णाया १,१६)।

अक्कोसिअ वि [आक्रोशित] कटु वचनों से जिसकी भर्त्सना की गई हो वह; (सुर ६, २३४)।

अक्कोह वि [अक्रोध] १ अल्प-क्रोधी; (जं २)। २ क्रोध-रहित; (उत्त २)।

अक्ख पुं [अक्ष] १ जीव, आत्मा; (ठा १)। २ रावण का एक पुत्र; (से १४,६५)। ३ चन्दनक, समुद्र में होनेवाला एक द्वीन्द्रिय जन्तु, जिसके निर्जीव शरीर को जैन साधु लोग स्थापनाचार्य में रखते हैं; (श्रा १)। ४ पहिया की धुरी, कील; (ओघ ५४६)। ५ चौसर का पाँसा; (धण ३२)। ६ बिभीतक, बहडा का वृक्ष; (से ६,४४)। ७ चार हाथ या ९६ अंगुलों का एक मान; (अणु; सम)। ८ रुद्राक्ष; (अणु ३)। ९ न. इन्द्रिय; (विसे ९१; धण ३२)। १० द्यूत, जूआ; (से ६,४४)। °**चम्म** न [°**चर्मन्**] पखाल, मसक "अक्खचम्मं उद्दगंडदेसं" (णाया १,६)। °**पाडय** न [°**पादक**] कील का टुकड़ा "राइणा हाहारवं करेमाणेण पहओ सो सुणओ अक्खपाडएणंति" (स २५५)। °**माला** स्त्री (°**माला**) जपमाला; (पउम ६६,३१)। °**लया** स्त्री [**लता**] रुद्राक्ष की माला; (दे)।

°वत्त न [°पात्र] पूजा का पात्र; "तो लोओ। गहियक्खवत्तहत्थो एइ गिहे............ वद्धावणत्थं" (सुपा ५८५)। °वलय न [°वलय] रुद्राक्ष की माला; (दे २, ८१)। °वाअ पुं [°पाद] नैयायिक मत के प्रवर्तक गौतम ऋषि; (विसे १५०८)। °वाडग पुं [°वाटक] अखाडा; (जीव ३)। °सुत्तमाला स्त्री [°सूत्रमाला] जपमाला; (अणु ३)।

अक्ख देखो अक्खा=आ+ख्या। अक्खइ; (सण)।

अक्खइय वि [आख्यात] उक्त, कथित; (सण)।

अक्खंड वि [अखण्ड] १ संपूर्ण; २ अखण्डित; ३ निरन्तर, अविच्छिन्न "अक्खण्डपयाणेहिं रहवीरपुरे गओ कुमरो" (सुपा २६६)।

अक्खंडल पुं [आखण्डल] इन्द्र; (पाअ)।

अक्खंडिअ वि [अखण्डित] १ संपूर्ण, खण्ड-रहित; (से ३, १२)। २ अविच्छिन्न, निरन्तर; (उर ८, १०)।

अक्खंत देखो अक्खा=आ+ख्या।

अक्खड सक [आ+स्कन्द्] आक्रमण करना। "अक्खडइ पिया हिअए, अण्णं महिलाअणं रमंतस्स" (गा ४४)।

अक्खणवेल न [दे] १ मैथुन, संभोग; २ शाम, संध्या काल; (दे १, ५६)।

अक्खणिआ स्त्री (दे) विपरीत मैथुन; (पाअ)।

अक्खम वि [अक्षम] १ असमर्थ; (सुपा ३७०)। २ अयुक्त, अनुचित; (ठा ३, ३)।

अक्खय वि [अक्षत] १ घाव-रहित, व्रण-शून्य; (सुर २, ३३)। २ अखण्डित, संपूर्ण; (सुर ६, १११)। ३ पुं.ब. अखण्ड चावल; (सुपा ३२६)। °यार वि [°चार] निर्दोष आचरण वाला; (वव ३)।

अक्खय वि [अक्षय] १ क्षय का अभाव; (उवर ८३)। २ जिसका कभी क्षय—नाश न हो वह; (सम १)। °णिहितव पुंन [°निधितपस्] एक प्रकार की तपश्चर्या; (पंचा ६)। °तइया स्त्री [°तृतीया] वैशाख शुक्ल तृतीया; (आनि)।

अक्खर पुंन [अक्षर] १ अक्षर, वर्ण; (सुपा ६५६)। २ ज्ञान, चेतना "नक्खरइ अणुवओगेवि, अक्खरं, सो य चेयणाभावो" (विसे ४५५)। ३ वि. अविनश्वर, नित्य; (विसे ४५७)। °त्थ पुं [°र्थ] शब्दार्थ; (अभि १५१)। °पुट्ठिआ स्त्री [°पृष्ठिका] लिपि-विशेष; (सम ३५)। °समास पुं [°समास] १ अक्षरों का समूह; २ श्रुत-ज्ञान का एक भेद; (कम्म १, ७)।

अक्खल पुं [दे] १ अखरोट वृक्ष; २ न. अखरोट वृक्ष का फल; (पण्ण १६)।

अक्खलिय वि [दे] १ जिसका प्रतिशब्द हुआ हो वह, प्रतिध्वनित; (दे १, २७)। २ आकुल, व्याकुल; (सुर ४, ८८)।

अक्खलिय वि [अस्खलित] १ अबाधित, निरुपद्रव; (कुमा)। २ जो गिरा न हो वह, अपतित; (नाट)।

अक्खवाया स्त्री [दे] दिशा; (दे १, ३५)।

अक्खा सक [आ+ख्या] कहना, बोलना। वकृ—अक्खंत; (सण; धर्म ३)। कवकृ—अक्खिज्जंत; (सुर ११, १६२)। कृ—अक्खेअ, अक्खाइयव्व; (विसे २६४७; गा २४२)। हेकृ—अक्खाउं; (दस ८; सत्त ३ टी)।

अक्खा स्त्री (आख्या) नाम; (विसे १६११)।

अक्खाइ वि [आख्यायिन्] कहनेवाला, उपदेशक "अधम्म-क्खाई" (णाया १, १८; विपा १, १)।

अक्खाइय न [आख्यातिक] क्रिया-पद, क्रिया-वाचक शब्द; (विसे)।

अक्खाइय वि [अक्षितिक] स्थायी, अनश्वर, शाश्वत "एवं ते अलियवयणदच्छा परदोसुप्पायणपसत्ता वेढेंति अक्खाइयबीएण अप्पाणं कम्मबंधणेण" (पण्ह १,२)।

अक्खाइया स्त्री [आख्यायिका] उपन्यास, वार्ता, कहानी; (कप्पू; भास ५०)।

अक्खाग पुं [आख्याक] म्लेच्छों की एक जाति; (सूअ १,५)।

अक्खाडग } अक्खाडय } पुं [अक्षवाटक] १ जूआ खेलने का अड्डा। २ अखाड़ा, व्यायाम-स्थान; (उप पृ १३०)। ३ प्रेक्षकों को बैठने का आसन; (ठा ४, २)।

अक्खाण न [आख्यान] १ कथन, निवेदन; (कुमा)। २ वार्ता, उपकथा; (पउम ४८,७७)।

अक्खाणय न [आख्यानक] कहानी, वार्ता; (उप ५६७ टी)।

अक्खाय वि [आख्यात] १ प्रतिपादित, कथित; (सुपा ३६५)। २ न. क्रियापद; (पण्ह २, २)।

अक्खाय न [अखात] हाथी को पकड़ने के लिए किया जाता गढ़ा, खड्डा; (पाअ)।

अक्खाया स्त्री [**आख्याता**] एक प्रकार की जैन दीक्षा; "अक्खायाए सुदंसणो सेट्ठी सामिणा पडिबोहिओ" (पंचू) ।

अक्खि त्रि [**अक्षि**] आंख, नेत्र ; (हे १, ३३; ३५; स २; १०४ ; प्राप्र ; स्वप्न ६१) ।

अक्खिअ वि [**आक्षिक**] पाँसा से जूआ खेलने वाला, जुआड़ी; (दे ७, ८) ।

अक्खिअ वि [**आख्यात**] प्रतिपादित, कथित ; (श्रा १४) ।

अक्खिंतर न [**अक्ष्यन्तर**] आंख का कोटर ; (विपा १, १) ।

अक्खिज्जंत देखो **अक्खा**=आ+ख्या ।

अक्खित्त वि [**आक्षिप्त**] १ व्याकुल । २ जिस पर टीका की गई हो वह । ३ आकृष्ट, खींचा हुआ ; (सुर ३,११५) । ४ सामर्थ्य से लिया हुआ ; (से ४,३१) ।

अक्खित्त न [**अक्षेत्र**] मर्यादित क्षेत्र के बहार का प्रदेश ; (निचू १) ।

अक्खिव सक [**आ+क्षिप्**] १ आक्षेप करना, टीका करना, दोषारोप करना । २ रोकना । ३ गँवाना । ४ व्याकुल करना । ५ फेंकना । ६ स्वीकार करना । "अक्खिवइ पुरिसगारं" (उवर ४९) । हेकृ—**अक्खिविउं**; (निर १,१) । "तओ न जुत्तमिह कालम् अक्खिविउं" (स २०५ ; पि ५७७) । कर्म—" अक्खिप्पइ य मे वाणी " (स २३ ; प्रामा) ।

अक्खिवण न [**आक्षेपण**] व्याकुलता, घवराहट ; (पण्ह १,३) ।

अक्खीण वि [**अक्षीण**] १ ह्रास-शून्य, क्षय-रहित, अखूट; (कप्प) । २ परिपूर्ण, संपूर्ण; (कुमा) । °**महाणसिय** वि [°**महानसिक**] जिसको निम्नोक्त अक्षीण-महानसी शक्ति प्राप्त हुई हो वह ; (पण्ह २,१) °**महाणसी** स्त्री [°**महानसी**] वह अद्भुत आत्मिक शक्ति, जिससे थोड़ा भी भिक्षान्न दूसरे सैंकडो लोगों को यावत्तृप्ति खिलाने पर भी तवतक कम न हो, जवतक भिक्षान्न लानेवाला स्वयं उसे न खाय; (पव २७०) । °**महालय** वि [°**महालय**] जिससे थोड़ी जगह में भी वहूत लोगों का समावेश हो सके ऐसी अद्भुत आत्मिक शक्ति से युक्त ; (गच्छ २) ।

अक्खुअ वि [**अक्षत**] अक्षीण, त्रुटि-शून्य " अक्खुआ-यारचरित्ता " (पडि) ।

अक्खुडिअ वि [**अखण्डित**] संपूर्ण, अखण्ड, त्रुटि-रहित " अक्खुडिओ पक्खुडिओ छिक्कंतोवि सवालवुड्ढजणो " (सुपा ११९) ।

अक्खुण्ण वि [**अक्षुण्ण**] जो तुटा हुआ न हो, अविच्छिन्न (वृह १) ।

अक्खुद्द वि [**अक्षुद्र**] १ गंभीर, अतुच्छ; (दव्व ५) २ दयालु, करुण ; (पंचा २) । ३ उदार; (पंच ७) । ४ सूक्ष्म वुद्धि वाला; (धर्म २) ।

अक्खुद्द न [**अक्षौद्र्य**] क्षुद्रता का अभाव; (उप ६१५) ।

अक्खुपुरी स्त्री [**अक्षपुरी**] नगरी-विशेष; (णाया २) ।

अक्खुब्भमाण वि [**अक्षुभ्यमान**] जो क्षोभ को प्राप्त न होता हो; (उप पृ ६२) ।

अक्खुहिय वि [**अक्षुभित**] क्षोभ-रहित, अक्षुब्ध (सण) ।

अक्खूण वि [**अक्षूण**] अन्यून, परिपूर्ण "भोयणवत्थाहार संपायंतेण सव्वमक्खूणं " (उप ७२८ टी) ।

अक्खेअ देखो **अक्खा**=आ+ख्या ।

अक्खेव पुं [**अ+क्षेप**] शीघ्रता, जल्दी; (सुपा १२६) ।

अक्खेव पुं [**आक्षेप**] १ आकर्षण, खींच कर लाना; (पण्ह १, ३) । २ सामर्थ्य, अर्थ की संगति के लिए अनुक्त अर्थ को वतलाना; (उप १००२) । ३ आशंका, पूर्वपक्ष; (भग २, १ ; विसे १४३६) । ४ उत्पत्ति; " दइवेण फलक्खेवे अइप्पसंगो भवे पयडो " (उवर ४८) ।

अक्खेवग पुं [**आक्षेपक**] १ खींच कर लानेवाला, आकर्षक; २ समर्थक पद, अर्थ-संगति के लिए अनुक्त अर्थ को वतलानेवाला शब्द; (उप ९९९) । ३ सान्निध्य-कारक; (उवर १८८) ।

अक्खेवणी स्त्री [**आक्षेपणी**] श्रोताओं के मन को आकर्षण करनेवाली कथा; (औप) ।

अक्खेवि वि [**आक्षेपिन्**] आकर्षण करनेवाला, खींच कर लानेवाला; (पण्ह १, ३) ।

अक्खोड सक [**कृष्**] म्यान से तलवार को खींचना—वाहर करना । अक्खोडइ ; (हे ४, १८७) ।

अक्खोड सक [**आ+स्फोटय्**] थोड़ा या एक वार झाटकना । अक्खोडिज्जा । वकृ—**अक्खोडंत**; (दस ४) ।

अक्खोड पुं [**अक्षोट**] १ अखरोट का पेड़; २ न. अखरोट वृक्ष का फल; (पण्ण १७; सण) । ३ राज-कुल को दी जाती सुवर्ण आदि की भेंट; (वव १) ।

अक्खोडिय वि [कृष्ट] खींचा हुआ, बहार निकाला हुआ (खड्ग); (कुमा)।

अक्खोभ } पुं [अक्षोभ] १ क्षोभ का अभाव, घबराहट; (णाया १, ६)। २ यदुवंश के राजा अन्धकवृष्णि का एक पुत्र, जो भगवान् नेमिनाथ के पास दीक्षा ले कर शत्रुंजय पर मोक्ष गया था; (अंत १, ७)। ३ न. "अन्तकृद्दशा" सूत्र का एक अध्ययन; (अंत १, ७)। ४ वि. क्षोभ-रहित, अचल, स्थिर; (पण्ह २,५; कुमा)।
अक्खोह }

अक्खोहणिज्ज वि [अक्षोभणीय] जो क्षुब्ध न किया जा सके; (सुपा ११४)।

अक्खोहिणी स्त्री [अक्षौहिणी] एक बड़ी सेना, जिसमें २१८७० हाथी, २१८७० रथ, ६५६१० घोड़े और १०६३५० पैदल होते हैं; (पउम ५५, ७; ११)।

अखंड वि [अखंड] परिपूर्ण, खण्ड-रहित; (औप)।

अखंडल पुं [आखण्डल] इन्द्र; (पउम ४६, ४४)।

अखंडिय वि [अखण्डित] नहीं टुटा हुआ, परिपूर्ण; (पंचा १८)।

अखंपण वि [दे] स्वच्छ, निर्मल "आयवत्ताइं। धारिंति, ठविंति पुरो अखम्पणं दप्पणं केवि" (सुपा ७४)।

अखज्ज वि [अखाद्य] जो खाने लायक न हो; (णाया १, १६)।

अखत्त न [अक्षात्र] क्षत्रिय-धर्म के विरुद्ध, जुलम, "संपइ विज्जावलिओ, अहह अखत्तं करेइ कोइ इमो" (धम्म ८ टी)।

अखम देखो अक्खम; (कुमा)।

अखलिअ देखो अक्खलिय=अस्खलित; (कुमा)।

अखादिम वि [अखाद्य] खाने को अयोग्य, अभक्ष्य "कुपहे धावंति, अखादिमं खादंति" (कुमा)।

अखाय वि [अखात] नहीं खुदा हुआ। °तल न [°तल] छोटा तलाव; (पाअ)।

अखिल वि [अखिल] १ सर्व, सकल, परिपूर्ण; (कुमा)। २ ज्ञान-आदि गुणों से पूर्ण "अखिले अगिद्धे अणिए अचारी" (सुअ १, ७)।

अखुट्ट वि [दे] अखूट; (भवि)।

अखुट्टिअ वि (अतुडित) अखूट, परिपूर्ण; (कुमा)।

अखुडिय देखो अक्खुडिअ; (कुमा)।

अखेयण्ण वि [अखेदज्ञ] अकुशल, अनिपुण; (सुअ १, १०)।

अखोहा स्त्री [अक्षोभा] विद्या-विशेष; (पउम ७, १३७)।

अग पुं [अग] १ वृक्ष, पेड़; २ पर्वत, पहाड; (से ६, ४२) "उच्चागयठाणलट्ठसंठियं" (कप्प)।

अगइ स्त्री [अगति] १ नीच गति, नरक या पशु-योनि में जन्म; (ठा २, २)। २ निरुपाय; (अचु ६६)।

अगंठिम न [अग्रन्थिम] १ कदली-फल, केला; (बृह १)। २ फल की फाँक, टुकड़ा; (निचू १६)।

अगंडिगेह वि [दे] यौवनोन्मत्त, जुवानी से उन्मत्त बना हुआ; (दे १, ४०)।

अगंडूयग वि [अकण्डूयक] नहीं खुजलानेवाला; (सुअ २, २)।

अगंथ वि [अग्रन्थ] १ धन-रहित। २ पुंस्त्री. निर्ग्रन्थ, जैन साधु "पावं कम्मं अकुव्वमाणे एस महं अगंथे विआहिए" (आचा)।

अगंधण पुं [अगन्धन] इस नाम की सर्पों की एक जाति "नेच्छंति वंतयं भोत्तुं कुले जाया अगंधणे" (दस २)।

अगड पुं [दे. अवट] कूप, इनारा; (सुर ११, ८६; उव)। °तड त्रि [°तट] इनारा का किनारा; (विसे)। °दत्त पुं [°दत्त] इस नाम का एक राज-कुमार; (उत्त)। °दद्दुर पुं [°दर्दुर] कुँए का मेढक; अल्पज्ञ, वह मनुष्य जो अपना घर छोड़ बाहिर न गया हो; (णाया १, ८)।

अगड पुं [अवट] कूप के पास पशुओं के जल पीने के लिए जो गर्त बनाया जाता है वह; (उप २०५)।

अगड वि [अकृत] नहीं किया हुआ; (वव ६)।

अगणि पुं [अग्नि] आग; (जी ६)। °काय पुं [°काय] अग्नि के जीव; (भग ७,१०)। °मुह पुं [°मुख] देव, देवता; (आचू)।

अगणिअ वि [अगणित] अवगणित, अपमानित; (गा ४८४; पउम ११७,१४)।

अगणिज्जंत वि [अगण्यमान] जो गुणने में न आता हो, जिसकी आवृत्ति न की जाती हो "अगणिज्जंती नासे विज्जा" (प्रासु ६६)।

अगत्थि } पुं [अगस्ति, °क] १ इस नाम का एक ऋषि। २ वृक्ष विशेष; (दे ६,१३३;
अगत्थिय }

अनु)। ३ एक तारा, अठासी महाग्रहों में ५४ वाँ महाग्रह; (ठा २,३)।

अगन्न वि [अगण्य] १ जिसकी गिनती न हो सके वह; (उप ७२८ टी)।

अगन्न वि [अकर्ण्य] नहीं सुनने लायक, अश्राव्य; (भवि)।

अगम न [अगम] आकाश; गगन; (भग २०,२)।

अगमिय वि [अगमिक] वह शास्त्र, जिसमें एक-सदृश पाठ न हो, या जिसमें गाथा वगैरः पद्य हो; "गाहाइ अगमियं खलु कालियसुयं" (विसे ५४९)।

अगम्म वि [अगम्य] १ जाने को अयोग्य। २ स्त्री. भोगने को अयोग्य—भगिनी, परस्त्री आदि—स्त्री; (भवि; सुर १२,५२)। °**गामि** वि [°**गामिन्**] परस्त्री को भोगनेवाला, पारदारिक; (पण्ह १, २)।

अगय न [अगद] औषध, दवाई; (सुपा ४४७)।

अगय पुं [दे] दैत्य, दानव; (दे १,६)।

अगर पुंन [अगरु] सुगन्धि काष्ठ-विशेष; (पण्ह २,५)।

अगरल वि [अगरल] सुविभक्त, स्पष्ट, "अगरलाए अमम्मणाए......भासाए भासेइ" (औप)।

अगरु देखो **अगर**; (कुमा)।

अगरुअ वि [अगरुक] बड़ा नहीं, छोटा, लघु; (गउड)।

अगरुलहु वि [अगुरुलघु] जो भारी भी न हो और हलका भी न हो वह, जैसे आकाश, परमाणु वगैरः; (विसे)। °**णाम** न [°**नामन्**] कर्म-विशेष, जिससे जीवों का शरीर न भारी न हलका होता है; (कम्म १,४७)।

अगलदत्त पुं [अगडदत्त] एक रथिक-पुत्र; (महा)।

अगलुय देखो **अगर**; (औप)।

अगहण पुं [दे] कापालिक, एक ऐसे संप्रदाय के लोग, जो माथे की खोपड़ी में ही खाने पीने का काम करते हैं; (दे १,३१)।

अगहिल्ल वि [अग्रहिल] जो भूतादि से आविष्ट न हो, अपागल; (उप ५९७ टी)। °**राय** पुं [°**राज**] एक राजा, जो वास्तव में पागल न होने पर भी पागल-प्रजा के आक्रमण से बनावटी पागल बना था; (ती २१)।

अगाढ वि [अगाध] अथाह, बहुत गहरा "अगाढपण्णेसु वि भाविअप्पा" (सूअ १,१३)।

अगामिय वि [अग्रामिक] ग्राम-रहित "अगामियाए... अडवीए" (औप)।

अगार पुं [अकार] 'अ' अक्षर; (विसे ४८४)।

अगार न [अगार] १ गृह, घर; (सम ३७)। २ गृहस्थ, गृही, संसारी; (दस १)। °**त्थ** वि [°**स्थ**] गृही, संसारी; (आचा)। °**धम्म** पुं [°**धर्म**] गृहि-धर्म, श्रावक-धर्म; (औप)।

अगारि वि [अगारिन्] गृहस्थ, गृही; (सूअ २,६)।

अगारी स्त्री [अगारिणी] गृहस्थ स्त्री; (वव ४)।

अगाल देखो **अयाल**; (स ८२)।

अगाह वि [अगाध] गहरा, गंभीर; (पात्र)।

अगिला स्त्री [अग्लानि] अखिन्नता, उत्साह; (ठा ५, १)।

अगिला स्त्री [दे] अवज्ञा, तिरस्कार; (दे १,१७)।

अगीय वि [अगीत] शास्त्रों का पूरा ज्ञान जिसको न हो वैसा (जैन साधु); (उप ८३३ टी)।

अगीयत्थ वि [अगीतार्थ] ऊपर देखो; (वव १)।

अगुज्झहर वि [दे] गुप्त बात को प्रकाशित करनेवाला (दे १,४३)।

अगुण देखो **अउण**; (पि २६५)।

अगुण वि [अगुण] १ गुण-रहित, निर्गुण; (गउड)। २ पुं. दोष, दूषण; (दस ५)।

अगुणि वि [अगुणिन्] गुण-वर्जित, निर्गुण; (गउड)।

अगुरु, **अगुरुअ** वि [अगुरु] १ बड़ा नहीं सो, छोटा, लघु। २ पुंन. सुगन्धि काष्ठ विशेष, अगुरु-चंदन "धूवेण किं अगुरुणो किमु कंकणेण" (कप्पू; पउम २,११)।

अगुरुलहु, **अगुरुलहुअ** देखो **अगरुलहु**; (सम ५१, ठा १०)।

अगुलु देखो **अगुरु** "संखतितिखिसागुलुचंदणाइं" (निचू २)।

अग्ग न [अग्र] १ आगे का भाग, ऊपर का भाग; (कुमा)। २ पूर्व-भाग, पहले का भाग; (निचू १)। ३ परिमाण "अग्गं ति वा परिमाणं ति वा एगट्ठा" (आचू १)। ४ वि. प्रधान, श्रेष्ठ; (सुपा २४८)। ५ प्रथम, पहला; (आव १)। °**क्खंध** पुं [°**स्कन्ध**] सैन्य का अग्र भाग; (से ३,४०)। °**गामिग** वि [°**गामिक**] अग्र-गामी, आगे जानेवाला; (स १४७)। °**ज** देखो °**य** (दे ६,४६)। °**जम्म** [°**जन्मन्**] देखो °**य**; (उप ७२८ टी)। °**जा** [°**जात**] देखो °**य**; (आचा)। °**जीहा** स्त्री

[जिह्वा] जीभ का अग्र-भाग। °णिय, °णी वि [°णी] अगुआ, मुखिया, नायक ; (कप्प ; नाट)। °तावसग पुं [°तापसक] ऋषि-विशेष का नाम ; (सुज्ज १०)। °द्ध न [°र्ध] पूर्वार्ध ; (निचू १)। °पिंड पुं [°पिण्ड] एक प्रकारका भिक्षान्न ; (आचा)। °प्पहारि वि [°प्रहारिन्] पहले प्रहार करनेवाला ; (आव १)। °बीय वि [°बीज] जिसमें बीज पहले ही उत्पन्न हो जाता है या जिसकी उत्पत्ति में उसका अग्र-भाग ही कारण होता है ऐसी आम, कोरंटक आदि वनस्पति ; (पण्ण १ ; ठा ४,१) °मणि पुं (°मणि) मुख्य, श्रेष्ठ, शिरोमणि ; (उप ७२८ टी)। °महिसी स्त्री [°महिषी] पट्टरानी ; (सुपा ४६)। °य वि [°ज] १ आगे उत्पन्न होने वाला। २ पुं. ब्राह्मण। ३ बड़ा भाई। ४ स्त्री. बड़ी बहन ; (नाट)। °लोग पुं [°लोक] मुक्ति-स्थान सिद्धि-क्षेत्र ; (श्रा १२)। °हत्थ पुं [°हस्त] १ हाथ का अग्र भाग; (उवा)। २ हाथ का अवलम्बन, सहारा ; (से ४, ३)। ३ अंगुली ; (प्राप)।

अग्ग वि [अग्र्य] १ श्रेष्ठ, उत्तम ; (से ८, ४४)। २ प्रधान, मुख्य ; (उत्त १४)।

अग्गओ अ [अग्रतस्] सामने, आगे ; (कुमा)।

अग्गंथ वि [अग्रन्थ] १ धन-रहित। २ पुं. जैन साधु; (औप)।

अग्गक्खंध पुं [दे] रण-भूमि का अग्र-भाग ; (दे १, २७)।

अग्गल न [अर्गल] १ किवाड़ बंद करने की लकड़ी, आगल ; (दस ५, २)। २ पुं. एक महाग्रह ; (सुज्ज २०)। °पासय पुं [°पाशक] जिसमें आगल दिया जाता है वह स्थान ; (आचा २, १, ५)। °पासाय पुं [°प्रासाद] जहां आगल दिया जाता है वह घर (राय)।

अग्गल वि [दे) अधिक; "बीसा एक्कग्गला" (पिंग)।

अग्गला स्त्री [अर्गला] आगल, हुड़का ; (पाअ)।

अग्गलिअ वि [अर्गलित] जो आगल से बंद किया गया हो वह ; (सुर ६, १०)।

अग्गवेअ पुं [दे] नदी का पूर ; (दे १, २६)।

अग्गह पुं (आग्रह] आग्रह, हठ, अभिनिवेश ; (सूअ १, १, ३; स ५१२)।

अग्गहण न [अग्रहण] १ अज्ञान ; (सुर १२, ४६)। २ नहीं लेना ; (से ११, ६८)।

अग्गहण न [दे. अग्रहण] अनादर, अवज्ञा ; (दे १, १७ ; से ११, ६८)।

अग्गहणिया स्त्री [दे] सीमंतोन्नयन, गर्भाधान के बाद किया जाता एक संस्कार और उसके उपलक्ष्य में मनाया जाता उत्सव. जिसको गुजराती भाषा में "अघयणी" कहते हैं ; (सुपा २३)।

अग्गहि वि [आग्रहिन्] आग्रही, हठी ; (सूअ १, १३)।

अग्गहिअ वि [दे] १ निर्मित, विरचित ; २ स्वीकृत, कबूल किया हुआ ; (षड्)।

अग्गाणी वि [अग्रणी] मुख्य, प्रधान, नायक "दक्खिन्न-दयाकलिओ अग्गाणी सयलवणियसत्थस्स" (सुर ६, १३८)।

अग्गारण न [उद्गारण] वमन, वान्ति ; (चारु ७)।

अग्गाह वि [अगाध] अगाध, गंभीर ; "खीरादहिणुव्व अग्गाहा" (गुरु ४)।

अग्गाहार पुं [अग्राधार] ग्राम-विशेष का नाम ; (सुपा ५४५)।

अग्गि पुंस्त्री [अग्नि] १ आग, वह्नि ; (प्रासू २२), "एस पुण कावि अग्गी" (सट्टि ६१)। २ कृत्तिका नक्षत्र का अधिष्ठायक देव ; (ठा २, ३)। ३ लोकान्तिक देव-विशेष; (आवम)। °आरिआ स्त्री [°कारिका] अग्नि-कर्म, होम; (कप्पू)। °उत्त पुं [°पुत्र] ऐरवत क्षेत्र के एक तीर्थंकर का नाम ; (सम १५३)। °कुमार पुं [°कुमार] भवनपति देवों की एक अवान्तर जाति ; (पण्ण १)। °कोण पुं [°कोण] पूर्व और दक्षिण के बीच की दिशा ; (सुपा ६८)। °जस पुं [°यशस्] देव-विशेष ; (दीव)। °ज्जोय पुं [°द्योत] भगवान् महावीर का पूर्वीय बीसवें ब्राह्मण-जन्म का नाम ; (आचू)। °ट्ठ वि [°स्थ] आग में रहा हुआ ; (हे ४, ४२६)। °ट्टोम पुं [°ष्टोम] यज्ञ-विशेष; (पि १०; १५६)। °थंभणी स्त्री [°स्तम्भनी] आग की शक्ति को रोकने वाली एक विद्या ; (पउम ७, १३६)। °दत्त पुं [°दत्त] १ भगवान् पार्श्वनाथ के समकालीन ऐरवत क्षेत्र के एक तीर्थंकर देव; (तित्थ) २। भद्रबाहुस्वामी का एक शिष्य ; (कप्प)। °दाण पुं

[°दान] सातवें वासुदेव के पिता का नाम; (पउम २०, १८२)। °देव पुं [°देव] देव-विशेष; (दीव)। °भूइ पुं [°भूति] १ भगवान् महावीर का द्वितीय गणधर; (कप्प)। २ भगवान् महावीर का पूर्वीय अट्ठारहवें ब्राह्मण-जन्म का नाम; (आचू)। °माणव पुं [°माणव] अग्निकुमार देवों का उत्तर-दिशा का इन्द्र; (ठा २, ३)। °माली स्त्री [°माली] एक इन्द्राणी; (दीव)। °वेस पुं [°वेश] १ इस नाम का एक प्रसिद्ध ऋषि; (णंदि)। २ न. एक गोत्र; (कप्प)। °वेस पुं [°वेश्मन्] १ चतुर्दशी तिथि; (जं)। २ दिवस का बाइसवाँ मुहूर्त; (चंद १०)। °वेसायण पुं [°वैश्यायन] १ अग्निवेश ऋषि का पौत्र; (णंदि; स २२५)। २ अग्निवेश-गोत्र में उत्पन्न; (कप्प)। ३ गोशालक का एक दिक्चर; (भग १५)। ४ दिन का बाइसवाँ मुहूर्त; (सम ५१)। °सक्कार पुं [°संस्कार] विधि-पूर्वक जलाना, दाह देना; (आवम)। °सप्पभा स्त्री [°सप्रभा] भगवान् वासुपूज्य की दीक्षा समय की पालखी का नाम; (सम)। °सम्म पुं [°शर्मन्] एक प्रसिद्ध तपस्वी ब्राह्मण; (आचा)। °सिह पुं [°शिख] १ सातवें वासुदेव का पिता; (सम १५२)। २ अग्निकुमार देवों का दक्षिण-दिशा का इन्द्र; (ठा २, ३)। °सिह पुं [°सिंह] एक जैन मुनि; (उप ४८६)। °सिहा-चारण पुं [°शिखाचारण] अग्नि-शिखा में निर्बाधतया गमन करने की शक्ति वाला साधु; (पव ६८)। °सीह पुं [°सिंह] सातवें वासुदेव के पिता का नाम; (ठा ६)। °सेण पुं [°षेण] ऐरवत क्षेत्र के तीसरे और बाईसवें तीर्थंकर; (तित्थ; सम १५३)। °होत्त न [°होत्र] १ अग्न्याधान, होम; (विसे १६४०)। २ पुं. ब्राह्मण; (पउम ३५, ६)। °होत्तवाइ वि [°होत्रवादिन्] होम से ही स्वर्ग की प्राप्ति माननेवाला (सूअ १, ७)। °होत्तिय वि [°होत्रिक] होम करनेवाला; (सुपा ७०)।

अग्गिअ पुं [**अग्निक**] १ यमदग्नि-नामक एक तापस; (आचू)। २ भस्मक रोग, जिससे जो कुछ खाय वह तुरंत ही हजम हो जाता है; (विपा १, १; विसे २०४८)।

अग्गिअ पुं [**दे**] इन्द्रगोप, एक जातका क्षुद्र कीट; (दे १, ५३)। २ वि. मन्द; (दे १, ५३)।

अग्गिआय पुं [**दे**] इन्द्रगोप, क्षुद्र कीट-विशेष; (षड्)।

अग्गिच्च वि [**आग्नेय**] १ अग्नि-संबन्धी। २ पुं. लोकान्तिक देवों की एक जाति; [णाया १, ८)। ३ न. गोत्र विशेष, जो गोतम गोत्र की शाखा है; (ठा ७)।

अग्गिच्चाभ न [**आग्नेयाभ**] देव-विमान विशेष; (स १४)।

अग्गिज्झ वि [**अग्राह्य**] लेने के अयोग्य; (पउ ३१, ५४)।

अग्गिम वि [**अग्रिम**] १ प्रथम, पहला; (कप्पू)। २ श्रेष्ठ, प्रधान, मुख्य; (सुपा १)।

अग्गियय पुं [**आग्नेयक**] इस नाम का एक राजपुत्र; (उ ६३७)।

अग्गिलिय देखो **अग्गिम**; (पंचव २)।

अग्गिल्ल पुं [**अग्निल**] एक महाग्रह; (ठा २, ३)।

अग्गीय देखो **अगीय**; (उप ८४०)।

अग्गीवय न [**दे**] घर का एक भाग; (पउम १६, ६४)।

अग्गुच्छ वि (**दे**) प्रमित, निश्चित; (षड्)।

अग्गे अ [**अग्रे**] आगे, पहले; (पिंग)। °तण वि [°तन] आगे का, पहले का; (आवम)। °सर वि [°सर] अगुआ, मुखिया, नायक; (श्रा २८)।

अग्गेई स्त्री [**आग्नेयी**) अग्निकोण, दक्षिण-पूर्व दिशा; (धण १८)।

अग्गेणिय न [**अग्रायणीय**] दूसरा पूर्व, बारहवें जैनागम का दूसरा महान् भाग; (सम २६)।

अग्गेणी देखो **अग्गेई**; (आवम)।

अग्गेणीय देखो **अग्गेणिय**; (णंदि)।

अग्गेय वि (**आग्नेय**) १ अग्नि-संबंधी, अग्नि का; (पउम १२,१२६; विसे १६६०)। २ न. शस्त्र-विशेष; (सुर ८, ४१)। ३ एक गोत्र, जो वत्स गोत्र की शाखा है; (ठा ७)। ४ अग्नि-कोण, दक्षिण-पूर्व दिशा; (भवि)।

अग्गोदय न (**अग्रोदक**) समुद्रीय वेला की वृद्धि और हानि; (सम ७६)।

अग्घ अक [**राज्**] विराजना, शोभना, चमकना। अग्घइ (हे ४, १००)।

अग्घ सक [**अर्ह्**] योग्य होना, लायक होना "कलं न अग्घइ" (णाया १, ८)।

अग्घ सक [अर्घ्] १ अच्छी किम्मत से बेचना, २ आदर करना, सम्मान करना ।
" पहिएण पुणो भणियं, तुब्भेहिं सिद्धि ! कम्मि नयरम्मि ।
गंतव्वं सो साहइ, पणियं अग्घिस्सए जत्थ" (सुपा ५०१) । वकृ—अग्घायमाण (णाया १, १) ।
अग्घ पुं (अर्घ) १ मछली की एक जाति ; (जीव ३) । २ पूजा-सामग्री ; (णाया १, १६) । ३ पूजा में जलादि देना ; (कुमा) । ४ मूल्य, मोल, किम्मत ; (निचू २) । °वत्त न [°पात्र] पूजा का पात्र ; (गउड) ।
अग्घ वि [अर्घ्य) १ पूजा में दिया जाता जलादि द्रव्य ; (कप्पू) । २ कीमती, बहु-मूल्य ; (प्राप) ।
अग्घव सक [पूर्] पूर्ति करना, पूरा करना । अग्घवइ ; (हे ४, ६६) ।
अग्घविय वि [पूर्ण] १ भरा हुआ, संपूर्ण ; २ पूरा किया गया ; (सुपा १०६, कुमा) ।
अग्घविय वि [अर्घित] पूजित, सत्कृत, सम्मानित ; (से ११, १६ ; गउड) ।
अग्घा सक [आ+घ्रा] सूँघना । वकृ—अग्घाअंत, अग्घायमाण ; (गा ५६५ ; णाया १, ८) । कवकृ—अग्घाइज्जमाण ; (पण्ण २८) ।
अग्घाइ वि [आघ्रायिन्] सूँघनेवाला " सभमरपउमग्घाइणि ! वारियवामे ! सहसु इण्हिं " (काप्र २६४) ।
अग्घाइअ वि [आघ्रात] सूँघा हुआ ; (गा ६७) ।
अग्घाइज्जमाण देखो अग्घा ।
अग्घाइर वि [आघ्रातृ] सूँघनेवाला । स्त्री—°री ; (गा ८८६) ।
अग्घाड सक [पूर्] पूर्ति करना, पूरा करना । अग्घाडइ ; (हे ४,१६९) ।
अग्घाड } पुं [दे] वृक्ष-विशेष, अपामार्ग, चिचड़ा,
अग्घाडग } लटजीरा ; (दे १,८ ; पण्ण १) ।
अग्घाण वि [दे] तृप्त, संतुष्ट ; (दे १,१८) ।
अग्घाय वि [आघ्रात] सूँघा हुआ ; (पाअ) । २ आहूत बुलाया हुआ; "वलभद्देणग्घाया भणंति" (विसे २३८४) ।
अग्घायमाण देखो अग्घ=अर्घ् ।
अग्घायमाण देखो अग्घा ।
अग्घिय वि [राजित] विराजित, शोभित ; (कुमा) ।
अग्घिय वि [अर्घित] १ बहु-मूल्य, कीमती " अग्घियं नाम बहुमोल्लं " (निसी २) । २ पूजित ; (दे १,१०७ ; से २०२) ।
अग्घोदय न [अर्घोदक] पूजा का जल; (अभि ११८) ।
अघ न [अघ] १ पाप कुकर्म ; (कुमा) । २ वि. शोचनीय, शोक का हेतु, " अवं बम्हणभावं " (प्रयौ ८०) ।
अघो देखो अहो ; (नाट) ।
अचक्खु पुंन [अचक्षुस्] १ आँख सिवाय बाकी इन्द्रियाँ और मन; (कम्म १, १०) । २ आँख को छोड़ बाकी इन्द्रिय और मन से होनेवाला सामान्य ज्ञान; (दं १६) । ३ वि अंधा, नेत्र-हीन ; (कम्म ४) । °दंसण न [°दर्शन] आँख को छोड़ बाकी इन्द्रियां और मनसे होनेवाला सामान्य ज्ञान ; (सम १५) । °दंसणावरण न [°दर्शनावरण] अचक्षुर्दर्शन को रोकनेवाला कर्म ; (ठा ६) । °फास पुं [°स्पर्श) अंधकार, अंधेरा; (णाया १ १४) ।
अचक्खुस वि [अचाक्षुष] जो आँख से देखा न जा सके; (पण्ह १,१) ।
अचक्खुस्स वि [अचक्षुष्य] जिसको देखनेको मन न चाहता हो ; (वृह ३) ।
अचर वि (अचर) पृथिव्यादि स्थिर पदार्थ, स्थावर ; (दंस) ।
अचल वि [अचल] १ निश्चल, स्थिर ; (आचा) । २ पुं. यदुवंश के राजा अन्धकवृष्णि के एक पुत्र का नाम ; (अंत ३) । एक बलदेव का नाम ; (पव २०६) । ४ पर्वत पहाड़ ; (गउड १२०) । ५ एक राजा, जिसने रामचन्द्र के छोटे भाई के साथ जैन दीक्षा ली थी ; (पउम ८५,४) । °पुर न [°पुर] ब्रह्म-द्वीप के पास का एक नगर ; (कप्प) । °प्प न [°त्मन्] हस्त-प्रहेलिका को ८४ लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह, अन्तिम संख्या ; (इक) । °भाय पुं [°भ्रातृ] भगवान् महावीर का नववाँ गणधर ; (कप्प) ।
अचल न (दे) १ घर ; २ घर का पिछला भाग ; ३ वि. कहा हुआ ; ४ निष्ठुर, निर्दय ; ५ नीरस, सूखा ; (दे १, ५३) ।
अचला स्त्री [अचला] पृथिवी । २ एक इन्द्राणी ; (णाया २) ।
अचिंत वि [अचिन्त] निश्चिन्त, चिन्ता-रहित ।
अचिंत वि [अचिन्त्य] अनिर्वचनीय, जिसकी चिन्ता भी न हो सके वह, अद्भुत ; (लहुअ ३) ।

अचिंतणिज्ज } वि [**अचिन्तनीय**] ऊपर देखो; (अभि
अचिंतणीअ } २०३; महा)।

अचिंतिय वि [**अचिन्तित**] आकस्मिक, असंभवित; (महा)।

अचित्त वि [**अचित्त**] जीव-रहित, अचेतन "चित्तमचित्तं वा ऐव सयं अजिन्नं गिण्हेज्जा" (दस ४)।

अचियंत } वि [**दे**] १ अनिष्ट, अप्रीतिकर; (सूअ २,२;
अचियत्त } पण्ह २, ३)। २ न. अप्रीति, द्वेष; (ओघ २६१)।

अचिरा देखो **अइरा**; (पउम ३७, ३७)।

अचिराभा स्त्री [**अचिराभा**] विजली, विद्युत्; (पउम ४२, ३२)।

अचिरेण देखो **अइरेण**; (प्रारू)।

अचेयण वि [**अचेतन**] चैतन्य-रहित, निर्जीव; (पण्ह १, २)।

अचेल न [**अचेल**] १ वस्त्रों का अभाव। २ अल्प-मूल्यक वस्त्र; ३ थोडा वस्त्र; (सम ४०)। ४ वि. वस्त्र-रहित, नग्न; ५ जीर्ण वस्त्र वाला; ६ अल्प वस्त्र वाला; ७ कुत्सित वस्त्र वाला, मैला "तह थोव-जुन्न-कुत्थियचेलेहिवि भण्णए अचेलोत्ति" (विसे २६०१)। °**परिसह**, °**परीसह** पुं [°**परिषह**, °**परीषह**] वस्त्र के अभाव से अथवा जीर्ण, अल्प या कुत्सित वस्त्र होने से उसे अदीन भाव से सहन करना; (सम ४०; भग ८, ८)।

अचेलग } वि [**अचेलक**] १ वस्त्र-रहित, नग्न; २ फटा-
अचेलय } टुटा वस्त्र वाला; ३ मलिन वस्त्र वाला; ४ अल्प वस्त्र वाला; ५ निर्दोष वस्त्र वाला; ६ अनियत रूप से वस्त्र का उपभोग करने वाला; (ठा ५, ३)। "परिसुद्धजिण्ण-कुच्छियथोवानिययत्तभोगभोगेहिं"। मुणओ मुच्छारहिया, संतेहिं अचेलया हुंति" (विसे २५९९)।

अच्च सक [**अर्च्**] पूजना, सत्कार करना। अच्चेइ; (औप)। अच; (दे २, ३५ टी)। कवकृ—**अच्चिज्जंत**, (सुपा ७८)। कृ—**अच्चणिज्ज**; (गाया १, १)।

अच्च पुं [**अर्च्य**] १ लव (काल-मान) का एक भेद; (कप्प)। २ वि. पूज्य, पूजनीय; (हे १,१७७)।

अच्चंग न [**अत्यङ्ग**] विलासिता के प्रधान अंग, भोग के मुख्य साधन "अच्चंगाणं च भोगओ माणं" (पंचा ९)।

अच्चंत वि [**अत्यन्त**] हद से ज्यादः, अत्यधिक, बहुत (सुर ३, २२)। °**थावर** वि [°**स्थावर**] अनादि-काल से स्थावर-जाति में रहा हुआ; (आवम)। °**दूसमा** [°**दुष्षमा**] देखो **दुस्समदुस्समा**; (पउम २, ७२)।

अच्चंतिअ वि [**आत्यन्तिक**] १ अत्यन्त, अति अतिशयित। २ जिसका नाश कभी न हो वह, शाश्वत (सूअ २,६)।

अच्चग वि [**अर्चक**] पूजक; (चैत्य १२)।

अच्चण न [**अर्चन**] पूजा, सम्मान; (सुर ३, १३; १२ टी)।

अच्चणा स्त्री [**अर्चना**] पूजा; (अच्चु ५७)।

अच्चत्त वि [**अत्यक्त**] नहीं छोड़ा हुआ, अपरित्यक्त (उप पृ १०७)।

अच्चत्थ वि [**अत्यर्थ**] १ अतिशयित, बहुत; (१,१)। २ गंभीर अर्थ वाला; (राय)। ३ क्रि. ज्यादः, अत्यंत; (सुर १,७)।

अच्चब्भुय वि [**अत्यद्भुत**] बड़ा आश्चर्य-जनक; (४२)।

अच्चय पुं [**अत्यय**] १ विपरीत आचरण; (बृह ३) २ विनाश, मरण; (उव)।

अच्चय वि [**अर्चक**] पूजक, "अणच्चयाणं च चिरंतणाणं जहारिहं रक्खणवद्धणंति" (विवे ७० टी)।

अच्चर
अच्चरिअ } न [**आश्चर्य**] विस्मय, चमत्कार; (विक्र ६
अच्चरीअ } प्रवो १७; रंभा; भवि; नाट)।

अच्चहम वि [**अत्यधम**] अति नीच; (कप्पू)।

अच्चा स्त्री [**अर्चा**] पूजा, सत्कार; (गउड)।

अच्चासणया स्त्री [**अत्यासनता**] खूब बैठना, देर या वारंवार बैठना; (ठा ६)।

अच्चासणया स्त्री [**अत्यशनता**] खूब खाना; (ठा ६)

अच्चासण्ण } न [**अत्यासन्न**] अति समीप,
अच्चासन्न } नजदीक; (भग १,१; उवा)।

अच्चासाइय } वि [**अत्याशातित**] अपमानित,
अच्चासादिय } किया गया; (ठा १०; भग ३,२)।

अच्चासाय सक [**अत्या+शातय्**] अपमान करना, करना। वकृ—**अच्चासाएमाण**; (ठा १०)। **अच्चासाइत्तए**; (भग ३, २)।

अच्चाहिअ } वि [**अत्याहित**] १ महा-भीति, बड़ा भय;
अच्चाहिद } २ झुठा, असत्य ; (स्वप्न ४७)। ३ ऐसा जोखमी कार्य, जिसमें प्राण-हानि की संभावना हो ; (अभि ३७)।

अच्चि स्त्री [**अर्चिस्**] १ कान्ति, तेज ; (भग २,५)। २ अग्नि की ज्वाला ; (पराण १)। ३ किरण ; (राय)। ४ दीप की शिखा ; (उत्त ३)। ५ न. लोकान्तिक देवों का एक विमान ; (सम १४)। **°मालि** पुं [**°मालिन्**] १ सूर्य, रवि ; (सूअ १,६)। २ वि. किरणों से शोभित ; (राय)। ३ न. लोकान्तिक देवों का एक विमान; (सम १४)। **°माली** स्त्री [**°माली**] १ चन्द्र और सूर्य की तृतीय अग्र-महिषी का नाम ; (ठा ४,१)। २ 'ज्ञातासूत्र' के द्वितीय श्रुतस्कन्ध के एक अध्ययन का नाम ; (णाया २)। ३ शक्रेन्द्र की तृतीय अग्रमहिषी की राजधानी का नाम ; (ठा ४,२)। **°मालिणी** स्त्री [**°मालिनी**] चन्द्र और सूर्य की एक अग्रमहिषी का नाम ; (भग १०,५ ; इक)।

अच्चिअ वि [**अर्चित**] १ पूजित, सत्कृत ; (गा १५०)। २ न. विमान-विशेष; (जीव ३—पत्र १३७)।

अच्चिंत्त देखो **अचित्त**; (ओघ २२; सुर १२,२७)।

अच्चीकर सक [**अर्चीं+कृ**] १ प्रशंसा करना। २ खुशामद करना। अच्चीकरेइ। वकृ— **अच्चीकरंत** ; (निचू ५)।

अच्चीकरण न [**अर्चीकरण**] १ प्रशंसा ; २ खुशामद ; "अच्चीकरणं रगणो, गुणवयणं तं समासओ दुविहं।
संतमसंतं च तहा, पचक्खपरोक्खमेक्केक्कं ॥" (निचू ५)।

अच्चुअ पुं [**अच्युत**] १ विष्णु; (अच्चु ५)। २ बारहवाँ देवलोक ; (सम ३६)। ३ ग्यारहवें और बारहवें देवलोक का इन्द्र; (ठा २,३)। ४ अच्युत-देवलोकवासी देव ; "तं चेव आरणच्चुय ओहिगणाणेण पासंति" (विसे ६६६)। **°नाह** पुं [**°नाथ**] बारहवें देवलोक का इन्द्र ; (भवि)। **°वइ** पुं [**°पति**] इन्द्र-विशेष; (सुपा ६१)। **°वडिंसग** न [**°ावतंसक**] विमान-विशेष का नाम ; (सम ४१)। **°सग्ग** पुं [**स्वर्ग**] बारहवाँ देवलोक ; (भवि)।

अच्चुआ स्त्री [**अच्युता**] छठवें और सतरहवें तीर्थंकर की शासन-देवी ; (संति ६; १०)।

अच्चुइंद पुं [**अच्युतेन्द्र**] ग्यारहवें और बारहवें देवलोक का स्वामी, इन्द्र-विशेष ; (पउम ११७,७)।

अच्चुक्कड वि [**अत्युत्कट**] अत्यंत उग्र ; (आवम)।

अच्चुग्ग वि [**अत्युग्र**] ऊपर देखो ; (पव २२४)।

अच्चुच्च वि [**अत्युच्च**] खूब ऊंचा, विशेष उन्नत ; (उप ६८६ टी)।

अच्चुट्ठिय वि [**अत्युत्थित**] अकार्य करनेको तय्यार ; (सूअ १,१४)।

अच्चुण्ह वि [**अत्युष्ण**] खूब गरम ; (ठा ५,३)।

अच्चुत्तम वि [**अत्युत्तम**] अति श्रेष्ठ ; (कप्पू)।

अच्चुदय न [**अत्युदक**] १ बड़ी वर्षा ; (ओघ ३०)। २ प्रभूत पानी ; (जीव ३)।

अच्चुदार वि [**अत्युदार**] अत्यन्त उदार ; (स ६००)।

अच्चुन्नय वि [**अत्युन्नत**] बहुत ऊंचा ; (कप्प)।

अच्चुब्भड वि [**अत्युद्भट**] अति-प्रबल ; (भवि)।

अच्चुवयार पुं [**अत्युपकार**] महान् उपकार ; (गा ५१४)।

अच्चुवयार पुं [**अत्युपचार**] विशेष सेवा-सुश्रूषा ; (गा ५१४)।

अच्चुव्वाय वि [**अत्युद्वात**] अत्यंत थका हुआ ; (बृह ३)।

अच्चुसिण वि [**अत्युष्ण**] अधिक गरम ; (आचा २, १, ७)।

अच्चेअर न [**आश्चर्य**] आश्चर्य, विस्मय ; (विक्र १५)।

अच्छ अक [**आस्**] बैठना। अच्छइ ; (हे १,२१४)। वकृ—**अच्छंत, अच्छमाण** ; (सुर ७,१३ ; णाया १,१) कृ—**अच्छियव्व ; अच्छेयव्व** ; (पि ५७० ; सुर १२,२२८)।

अच्छ वि [**अच्छ**] १ स्वच्छ, निर्मल ; (कुमा)। २ पुं. स्फटिक रत्न ; (पव २७५)। ३ पुं.ब. आर्य देश-विशेष ; (प्रव २७५)।

अच्छ पुं [**ऋक्ष**] रींछ, भालुक ; (पराह १,१)।

अच्छ वि [**आच्छ**] अच्छ-देश में उत्पन्न, (पराण ११)।

अच्छ न [**दे**] १ अत्यन्त, विशेष ; २ शीघ्र, जल्दी ; (दे १,४६)।

°अच्छ वि [**अक्षि**] आंख, नेत्र ; (कुमा)।

°अच्छ पुं [**कच्छ**] १ अधिक पानीवाला प्रदेश ; २ लताओं का समूह ; ३ तृण, घास ; (से ६,४७)।

°अच्छ पुं [**वृक्ष**] वृत्त, पेड़ ; (से ६,४७)।

अच्छअ पुं [**अक्षक**] १ बहेड़ा का वृक्ष ; २ न. स्वच्छ जल ; (से ६, ४७) ।

अच्छअर न [**आश्चर्य**] विस्मय, चमत्कार ; (कुमा) ।

अच्छंद वि [**अच्छन्द**] जो स्वाधीन न हो, पराधीन “ अच्छंदा जे ण भुंजंति ण से चाइत्ति वुचइ ” (दस २) ।

अच्छक्क देखो **अत्थक्क** ; (गउड) ।

अच्छणं न [**आसन**] १ बैठना ; (णाया १, १) । २ पालखी वगैरः सुखासन ; (ओघ ७८) । °**घर** न [°**गृह**] विश्राम-स्थान ; (जीव ३) ।

अच्छण न [**दे**] १ सेवा, शुश्रूषा ; (बृह ३) । २ देखना, अवलोकन ; (वव १) । ३ अहिंसा, दया ; (दस ८) ।

अच्छणिउर न [**अच्छनिकुर**] अच्छनिकुरांग को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह ; (ठा २, १) ।

अच्चणिउरंग न [**अच्छनिकुराङ्ग**] संख्या-विशेष, नलिन को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह ; (ठा २, १) ।

अच्छण्ण वि [**अच्छन्न**] अगुप्त, प्रकट ; (बृह ३) ।

अच्छभल्ल पुं [**ऋक्षभल्ल**] रींछ, भालुक ; (दे १, ३७ ; पण्ह १, १) ।

अच्छभल्ल पुं [**दे**] यक्ष, देव-विशेष ; (दे १, ३७) ।

अच्छरआ देखो **अच्छरा** ; (षड्) ।

अच्छरय पुं [**आस्तरक**] शय्या पर बिछानेका वस्त्र-विशेष ; (णाया १, १) ।

अच्छरसा, **अच्छरा** } स्त्री [**अप्सरस्**] १ इन्द्र की एक पट्टरानी ; (ठा ६) । २ 'ज्ञाताधर्मकथा' का एक अध्ययन ; (णाया २) । ३ देवी ; (पउम २, ४१) । ४ रूपवती स्त्री ; (पण्ह १, ४) ।

अच्छराणिवाय पुं [**दे**] १ चुटकी ; २ चुटकी बजाने में जितना समय लगता है वह, अत्यल्प समय ; (पण्ण ३६) ।

अच्छरिअ, **अच्छरिज्ज**, **अच्छरीअ** } न [**आश्चर्य**] विस्मय, चमत्कार ; (हे १, ५८ ; प्रयौ ४२) ।

अच्छल न [**अच्छल**] निर्दोषता, अनपराध ; (दे १, २०) ।

अच्छवि वि [**अच्छवि**] जैन-दर्शन में जिसको स्नातक कहते हैं वह, जीवन्मुक्त योगी ; (भग २५, ६) ।

अच्छविकर पुं [**अक्षपिकर**] एक प्रकार का मानसिक विनय ; (ठा ८) ।

अच्छहल्ल पुं [**ऋक्षभल्ल**] रींछ, भालुक ; (पाअ) ।

अच्छा स्त्री (**अच्छा**) वरुण देश की राजधानी ; (प २७५) ।

°**अच्छा** स्त्री [**कक्षा**] गर्व, अभिमान ; (से ६, ४७) ।

अच्छाइ वि [**आच्छादिन्**] ढकने वाला, आच्छादक ; (स ३५१) ।

अच्छायण न [**आच्छादन**] १ ढकना ; (दे ७, ४५) । २ वस्त्र, कपड़ा ; (आचा) ।

अच्छायणा स्त्री [**आच्छादना**] ढकना, आच्छादित करना ; (वव ३) ।

अच्छायंत वि [**अच्छातान्त**] तीक्ष्ण, धारदार ; (पाअ) ।

अच्छि वि [**अक्षि**] आँख, नेत्र ; (हे १, ३३ ; ३५) । °**चमढण** न [°**मलन**] आँख का मलना ; (बृह २) । °**णिमीलिय** न [**निमीलित**] १ आँख को मूँदना, मींचना । २ आँख मिंचने में जो समय लगे वह “ अच्छिणिमीलियमेत्तं, णत्थि सुहं दुक्खमेव अणुवद्धं । णरए णेरइआणं, अहोणिसं पच्चमाणाणं ” (जीव ३) । °**पत्त** न [°**पत्र**] आँख का पक्ष्म, पपनी ; (भग १४, ८) । °**वेहग** पुं [°**वेधक**] एक चतुरिन्द्रिय जन्तु, क्षुद्र जीव-विशेष ; (उत्त ३६) । °**रोडय** पुं [°**रोडक**] एक चतुरिन्द्रिय जन्तु, क्षुद्र कीट-विशेष ; (उत्त ३६) । °**ल्ल** वि [°**मत्**] १ आँख वाला प्राणी ; २ चौइन्द्रिय जन्तु ; (उत्त ३६) । °**मल** पुं [°**मल**] आँख का मैल, कीट ; (निचू ३) ।

अच्छिंद सक [**आ+छिद्**] १ थोड़ा छेद करना । २ एक वार छेद करना । ३ बलात्कार से छीन लेना । वकृ— **अच्छिंदमाण** ; (भग ८, ३) ।

अच्छिंद पुं [**अक्षीन्द्र**] गोशालक के एक दिक्चर (शिष्य) का नाम ; (भग १५) ।

अच्छिंदण न [**आच्छेदन**] १ एक वार छेदना ; (निचू ३) । २ छीनना । ३ थोड़ा छेद करना, थोड़ा काटना ; (भग १५) ।

अच्छिक्क वि [**दे**] अस्पृष्ट, नहीं छुआ हुआ ; (वव १) ।

अच्छिघरुल्ल वि [**दे**] अप्रीतिकर ; २ पुं. वेष, पोषाक ; (दे १, ४१) ।

अच्छिज्ज वि [**आच्छेद्य**] १ जबरदस्ती जो दूसरे से छीन लिया जाय ; (पिंड) । २ पुं. जैन साधु के लिए भिक्षा का एक दोष ; (आचा) ।

अच्छिज्ज वि [**अच्छेद्य**] जो तोड़ा न जा सके ; (ठा ३, २) ।

अच्छित्ति स्त्री [अच्छित्ति] १ नाश का अभाव, नित्यता। २ वि. नाश-रहित ; (विसे)। °णय पुं [°नय] नित्यता-वाद, वस्तु को नित्य माननेवाला पक्ष ; (पव)।

अच्छिद्द वि [अच्छिद्र] १ छिद्र-रहित, निविड, गाढ़; (जं २)। २ निर्दोष ; (भग २, ५)।

अच्छिण्ण, अच्छिन्न वि [आच्छिन्न] १ बलात्कार से छीना हुआ। २ छेदा हुआ, तोड़ा हुआ; (पाअ)।

अच्छिण्ण, अच्छिन्न वि [अच्छिन्न] १ नहीं तोड़ा हुआ, अलग नहीं किया हुआ ; (ठा १०)। २ अव्यवहित, अन्तर-रहित ; (गउड)।

अच्छिप्प वि [अस्पृश्य] छूने को अयोग्य; (सुपा २८१)।

अच्छिप्पंत वि [अस्पृशत्] स्पर्श नहीं करता हुआ ; (श्रा १२)।

अच्छिय वि [आसित] बैठा हुआ ; (पि ४८०; ५६५)।

अच्छिवडण न [दे] आँख का मूँदना ; (दे १, ३६)।

अच्छिविअच्छि स्त्री [दे] परस्पर-आकर्षण, आपस की खींचतान ; (दे १, ४१)।

अच्छिहरिल्ल, अच्छिहरुल्ल देखो अच्छिघरुल्ल ; (दे १, ४१)।

अच्छी देखो अच्छि ; (रंभा)।

अच्छुक्क न [दे] अक्षि-कूप-तुला, आँख का कोटर; (सुपा २०)।

अच्छुत्ता स्त्री [अच्छुप्ता] १ एक विद्याधिष्ठात्री देवी ; (ति ८)। २ भगवान् मुनिसुव्रत-स्वामी की शासन-देवी ; (संति १०)।

अच्छुद्धसिरी स्त्री [दे] इच्छा से अधिक फल की प्राप्ति, असंभावित लाभ ; (षड्)।

अच्छुल्लूढ वि [दे] निष्कासित, बहार निकाला हुआ, स्थान-भ्रष्ट किया हुआ ; (बृह १)।

अच्छेज्ज देखो अच्छिज्ज ; (ठा ३, २; ४)।

अच्छेर, अच्छेरग, अच्छेरय न [आश्चर्य] १ विस्मय, चमत्कार ; (हे १, ५८)। २ पुंन. विस्मय-जनक घटना, अपूर्व घटना; (ठा १०, १३८)। °कर वि [°कर] विस्मय-जनक, चमत्कार उपजानेवाला; (श्रा १४)।

अच्छोड सक [आ+छोटय्] १ पटकना, पछाड़ना। २ सिंचना, छिटकना। "अच्छोडेमि सिलाए, तिलं तिलं किं नु छिंदामि" (सुर १५, २३; सुर २, २४५)।

अच्छोड पुं [आच्छोट] १ सिंचन। २ आस्फालन करना, पटकना ; (ओघ ३५७)।

अच्छोडण न [आच्छोटन] १ सिंचन। २ आस्फालन ; (सुर १३, ४१; सुपा ५६३; वेणी १०९)। ३ मृगया, शिकार ; (दे १, ३७)।

अच्छोडाविय वि [दे. अच्छोटित] बन्धित, बँधाया हुआ ; (स ५२५; ५२६)।

अच्छोडिअ वि [दे] आकृष्ट, खींचा हुआ "अच्छोडिअव-त्थद्धं ; (गा १६०)।

अच्छोडिअ वि [आच्छोटित] सिक्त, सिंचा हुआ ; (सुर २, २४५)।

अछिप्प वि [अस्पृश्य] स्पर्श करने को अयोग्य "सो सुणओव्व अछिप्पो कुलुग्गयाणं, न उण पुरिसो" (सुपा ४८७)।

अज देखो अय=अज ; (पउम ११, २५; २६)।

अजगर देखो अयगर ; (भवि)।

अजड पुं [दे] जार, उपपति ; (षड्)।

अजड वि [अजड] १ पक्व, विकसित ; (गउड)। २ निपुण, चतुर ; (कुमा)।

अजम वि [दे] १ सरल, ऋजु ; (षड्)। २ जमाईन; (पभा १५)।

अजय वि [अयत] १ पाप-कर्म से अविरत, नियम-रहित ; (कम्म ४)। २ अनुपयोगी, यत्न-रहित ; (ओघ ५४)। ३ उपयोग-शून्य, बे-ख्याल; (सुपा ५२२)। ४ क्रिवि. बे-ख्याल से, अनुपयोग से "अजयं चरमाणो य पाणभूयाइं हिंसइ ; (दस ४; उत्त ४ टी)।

अजय पुं [अजय] षट्पद छंद का एक भेद ; (पिंग)।

अजयणा स्त्री [अयतना] अनुपयोग, ख्याल नहीं रखना, गफलती ; (गच्छ ३)।

अजर वि [अजर] १ वृद्धावस्था-रहित, बुढ़ापा-वर्जित। २ पुं. देव, देवता; (आवम)। ३ मुक्त-आत्मा; (ओघ)।

अजराउर वि [दे] उष्ण, गरम ; (दे १, ४५)।

अजरामर वि [अजरामर] १ बुढ़ापा और मृत्यु से रहित "णत्थि कोइ जगम्मि अजरामरो" (महा)। २ न. मुक्ति, मोक्ष। ३ स्त्री—°रा विद्या-विशेष; (पउम ७, १३९)।

अजस पुं [अयशस्] १ अपयश, अपकीर्ति ; (उप ७६८)। °कित्तिणाम न [°कीर्तिनामन्] अप-कीर्ति का कारण-भूत एक कर्म ; (सम ६७)।

अजस्स क्रिवि [अजस्र] निरन्तर, हमेशां "आमरणंतम-जस्सं संजमपरिपालणं विहिणा" (पंचा ८)।

अजा देखो अया ; (कुमा)।

अजाण वि [अज्ञान] अनजान, मूर्ख; (रयण ८५)।
अजाणअ वि [अज्ञायक] अनजान, जानकारी-रहित; (काल)
अजाणणा स्त्री [अज्ञान] अ-जानकारी बे-समझी "अजाणणाए तज्जत्ती न कया तम्मि केणवि" (श्रा २८)।
अजाणुय वि [अज्ञायक] अज्ञ, नहीं जानने वाला; (ठा ३, ४)।
अजाय वि [अजात] अनुत्पन्न, अ-निष्पन्न। °**कप्प** पुं [°कल्प] शास्त्रोंको पूरा २ नहीं जाननेवाला जैन साधु, अगीतार्थ "गीयत्थ जायकप्पो अगीओ खलु भवे अजाओ अ" (धर्म ३)। °**कप्पिय** पुं [°कल्पिक] अगीतार्थ जैन साधु; (गच्छ १)।
अजिअ वि [अजित] १ अपराजित, अपराभूत; २ पुं. दुसरे तीर्थंकर का नाम; (अजि १)। ३ नववें तीर्थंकर का अधिष्ठाता देव; (संति ७)। ४ एक भावी बलदेव; (ती २१)। °**बला** स्त्री [°बला] भगवान् अजितनाथ की शासन-देवी; (पव २७)। °**सेण** पुं [°सेन] १ एक प्रसिद्ध राजा; (आव)। २ चौथा कुलकर; (ठा १०)। ३ एक विख्यात जैन मुनि; (अंत ४)।
अजिअ वि [अजीव] जीव-रहित, अचेतन; (कम्म १,१५)।
अजिअ वि [अजय्य] जो जिता न जा सके; (सुपा ७५)।
अजिआ स्त्री [अजिता] १ भगवान् अजितनाथ की शासन-देवी; (संति ६)। २ चतुर्थ तीर्थंकर की एक मुख्य शिष्या; (तित्थ)।
अजिण न [अजिन] १ हरिण-आदि पशुओं का चमड़ा; (उत्त ५; दे ७, २७)। २ वि. जिसने राग-द्वेष का सर्वथा नाश नहीं किया है वह; (भग १५)। ३ जिन-भगवान् के तुल्य सत्योपदेशक जैन साधु "अजिणा जिणसंकासा, जिणा इवावितहं वागरेमाणा" (औप)।
अजिण्ण देखो अइन्न=अजीर्ण; (आव)।
अजिर न [अजिर] आँगन, चौक; (सण)।
अजीर, **अजीरय** } देखो अइन्न=अजीर्ण; (वव १; गाया १, १३)।
अजीव पुं [अजीव] अचेतन, निर्जीव, जड पदार्थ; (नव २)। °**काय** पुं [°काय] धर्मास्तिकाय आदि अजीव पदार्थ; (भग ७, १०)।
अज्जुअ पुं [दे] वृक्ष-विशेष, सप्तच्छद, सतौना; (दे १,१७)
अज्जुअ न [अयुत] दश हजार "दोण्णि सहस्सा रहाणं, पंच अजुयाणि हयाणं" (महा)।
अजुअलवण्ण पुं [अयुगलपर्ण] सतौना; (दे १,४८)।
अजुअलवण्णा स्त्री [दे] इम्ली का पेड़; (दे १, ४८)
अजुत्त वि [अयुक्त] अयोग्य, अनुचित; (विसे) °**कारि** वि [°कारिन्] अयोग्य कार्य करनेवाला; (सु ६०४)।
अजुत्तीय वि [अयुक्तिक] युक्ति-शून्य, अन्याय (सुर १२, ५४)।
अजेअ वि [अजय्य] जा जिता न जा सके "मउडरयणपहावेण अजेआ दांमुहराया" (महा)।
अजोग पुं [अयोग] मन, वचन और काया के सब व्यापा का जिसमें अभाव होता है वह सर्वोत्कृष्ट योग, शैलेशी-कर (औप)।
अजोग वि [अयोग्य] अयोग्य, लायक नहीं वह (निचू ११)।
अजोगि पुं [अयोगिन्] १ सर्वोत्कृष्ट योग को प्राप्त योगी २ मुक्त आत्मा; (ठा २, १; कम्म ४, ४७; ५०)।
अज्ज सक [अर्ज्] पैदा करना, उपार्जन करना, कमाना अज्जइ; (हे ४, १०८)। संकृ—**अज्जिय**; (पिंग)।
अज्ज वि [अर्य] १ वैश्य; २ स्वामी, मालक; (दे १, ५)
अज्ज वि [आर्य] १ उत्तम, श्रेष्ठ; (ठा ४, २) २ मुनि, साधु; (कप्प)। ३ सत्कार्य करनेवाला (वव १)। ४ पूज्य, मान्य; (विपा १, १) ५ पुं. मातामह; (निसी)। ६ पितामह; (गाया १,८) ७ एक ऋषि का नाम; (णंदि)। ८ न. गोत्र-विशेष (णंदि)। ९ जैन साधु, साध्वी और उनकी शाखाओं के पूर्व में यह शब्द प्रायः लगता है, जैसे अज्जवइर अज्जचंदणा, अज्जपोमिला; (कप्प)। °**उत्त** [°पुत्र] १ पति, भर्ता; (नाट)। २ मालक पुत्र; (नाट)। °**घोस** पुं [°घोष] भगवान् पार्श्वनाथ का एक गणधर; (ठा ८)। °**मंगु** पुं [मंगु] एक प्राचीन जैनाचार्य; (सार्ध २२)। °**मिस्स** [°मिश्र] पूज्य, मान्य; (अभि १३)। °**समु** पुं [°समुद्र] एक प्रसिद्ध जैनाचार्य; (सार्ध २२)
अज्ज अ [अद्य] आज; (सुर २, १६७)। वि [°तन] अधुनातन, आजकलका; (रंभा)। स्त्री [°ता] आज कल; (कप्प)। °**प्पभिइ** [°प्रभृति] आज से ले कर; (उवा)।
अज्ज पुं [दे] १ जिनेन्द्र देव; २ बुद्ध देव; (दे १,५)

अज्ज न [आज्य] घी, घृत ; (पाअ)।
अज्जं देखो रिज्=अृ ।
अज्जं अ [अद्य] आज ; (गा ५८)।
अज्जंत वि [आयत्] आगामी। °काल पुं [°काल] भविष्य काल ; (पाअ)।
अज्जंहिज्जो अ [अद्यह्यः] आजकल ; (उप पृ ३३४)।
अज्जग देखो अज्जय=अर्जक ; "अज्जगतरुमंजरिव्व" (सुपा ५३)।
अज्जग देखो अज्जय=आर्यक ; (निर १, १)।
अज्जण } [अर्जन] उपार्जन पैदा करना ; (श्रा
अज्जणण } १२; सत १८) "रज्जं केरिसमेवं करेसुवायं तदज्जणणे" (उप ७ टी)।
अज्जम पुं [अर्यमन्] १ सूर्य ; (पि २६१)। २ देव-विशेष ; (जं ७)। ३ उत्तर-फाल्गुनी नक्षत्र का अधिष्ठायक देव ; (ठा २, ३)। ४ न. उत्तर-फाल्गुनी नक्षत्र ; (ठा २, ३)।
अज्जय पुं [आर्यक] १ मातामह, मां का बाप ; (पउम ५०,२)। २ पितामह, पिता का पिता; (भग ९.३३); "जं पुण अज्जय-पज्जय-जणयजियअत्थमज्झओ दाणं। परमत्थओ कलंकं तयं तु पुरिसाभिमाणीणं" (सुर १, २२०)।
अज्जय वि [अर्जक] १ उपार्जन करने वाला, पैदा करने वाला; (सुपा १२४)। २ पुं. वृक्ष-विशेष; (पण्ण १)।
अज्जय पुं [दे] १ सुरस-नामक तृण ; २ गुंरेटक-नामक तृण ; (दे १, ५४)। ३ तृण, घास ; (निचू ११)।
अज्जल पुं [आर्यल] म्लेच्छों की एक जाति; (पण्ण १)।
अज्जव न [आर्जव] सरलता, निष्कपटता; (नव २९)।
अज्जव (अप) देखो अज्ज=आर्य। °खंड पुं [खण्ड] आर्य-देश ; (भवि)।
अज्जवया स्त्री [आर्जव] ऋजुता, सरलता; (पक्खि)।
अज्जवि वि [आर्जविन्] सरल, निष्कपट; (आचा)।
अज्जा स्त्री [आर्या] १ साध्वी ; (गच्छ २)। २ गौरी, पार्वती ; (दे १, ५)। ३ आर्या-छन्द ; (जं २)। ४ भगवान् मल्लिनाथ की प्रथम शिष्या ; (सम १५२)। ५ मान्या, पूज्या स्त्री (पि १०६, १४३, १४५)। ६ एक कला ; (औप)।
अज्जा स्त्री [आज्ञा] आदेश, हुकुम ; (हे २, ८३)।
अज्जाव सक [आ+ज्ञापय्] आज्ञा करना, हुकुम फरमाना। कृ—अज्जावेयव्व ; (सूअ २, २)।

अज्जिअ वि [अर्जित] उपार्जित, पैदा किया हुआ ; (श्रा १४)।
अज्जिआ स्त्री [आर्यिका] १ मान्या, पूज्या स्त्री ; २ साध्वी ; संन्यासिनी ; (सम ६५ ; पि ४४८)। ३ माता की माता ; (दस ७)। ४ पिता की माता ; (स २५५)।
अज्जिणण देखो अज्जणण ; (उप ६६४)।
अज्जीव देखो [अजीव] "धम्माधम्मा पुग्गल, नह कालो पंच हुंति अज्जीवा" (नव १०)।
अज्जु (अप) अ [अद्य] आज; (हे ४,३४३; भवि; पिंग)।
अज्जुअ (शौ) देखो अज्ज=आर्य ; (नाट)।
अज्जुआ (शौ) देखो अज्जा=आर्या ; (पि १०५)।
अज्जुण पुं [अर्जुन] १ तीसरा पांडव ; (णाया १, १६)। २ वृक्ष-विशेष ; (णाया १, ९ ; औप)। ३ गाशालक के एक दिक्चर (शिष्य) का नाम ; (भग १५)। ४ न. श्वेत सुवर्ण, सफेद सोना; "सव्वज्जुणसुवण्णगमई" (औप)। ५ तृण-विशेष ; (पण्ण १)। ६ अर्जुन वृक्ष का पुष्प ; (णाया १, ९)।
अज्जुणग } [अर्जुनक] १-६ ऊपर देखो। ७ एक
अज्जुणय } माली का नाम ; (अंत १८)।
अज्जू स्त्री [आर्या] सासू, श्वश्रू ; (हे १, ७७)।
अज्जोग देखो अजोग=अयोग ; (पंच १)।
अज्जोगिं देखो अजोगि ; (पंच १)।
अज्जोरुह न [दे] वनस्पति-विशेष ; (पण्ण १)।
अज्झक्ख वि [अध्यक्ष] अधिष्ठाता ; (कप्पू)।
अज्झ पुं [दे] यह (पुरुष, मनुष्य); (दे १, ५०)।
अज्झत्त देखो अज्झप्प ; (सूअ १, २, २, १२)।
अज्झत्थ वि [दे] आगत, आया हुआ ; (दे १, १०)।
अज्झत्थ } न [अध्यात्म] १ आत्मा में, आत्म-
अज्झप्प } संबंधी, आत्म-विषयक ; (उत्त १; आचा)। २ मन में, मन-संबंधी, मनो-विषयक ; (उत्त ६; सूअ १, १६, ४)। ३ मन, चित "अज्झप्पसाणयणं" (दसनि १, २९)। ४ शुभ-ध्यान "अज्झप्प-रए सुसमाहिअप्पा, सुत्तत्थं च विआणइ जे स भिक्खू" (दस १०, १५)। ५ पुं. आत्मा ; (ओघ ७४५)। °जोग पुं [°योग] योग-विशेष, चित्त की एकाग्रता ; (सूअ १, १६, ४)। °दोस पुं [°दोष] आध्यात्मिक दोष—क्रोध, मान, माया और लोभ ; (सूअ १, ६)।

°वत्तिय वि [°प्रत्ययिक] चित्त-हेतुक, मन से ही उत्पन्न होने वाला, शोक, चिन्ता आदि ; (सूत्र २, २, १६) । °विसोहि स्त्री [°विशुद्धि] आत्म-शुद्धि ; (ओघ ७४५) । °संवुड वि [°संवृत] मना-निग्रही, मन को काबू में रखनेवाला ; (आचा) । °सुइ स्त्री [°श्रुति] अध्यात्म-शास्त्र, आत्म-विद्या, योग-शास्त्र ; (पण्ह २, १)। °सुद्धि स्त्री [°शुद्धि] मन की शुद्धि ; (आचू १) । °सोहि स्त्री [°शुद्धि] मनः-शुद्धि ; (आचू १) ।

अज्झत्थिय वि [आध्यात्मिक] आत्म-विषयक, आत्मा या मन से संबंध रखनेवाला ; (विपा १,१; भग २,१) ।

अज्झय वि [दे] प्रातिवेश्मिक, पडौसी ; (दे १, १७) ।

अज्झयण पुंन [अध्ययन] १ शब्द, नाम ; (चंद १) । २ पढ़ना, अभ्यास ; (विसे) । ३ ग्रन्थ का एक अंश ; (विपा १, १) ।

अज्झयणि वि [अध्ययनिन्] पढ़ने वाला, अभ्यासी ; (विसे १४६५) ।

अज्झयाव सक [अधि+आपू] पढ़ाना, सीखाना । अज्झयाविंति ; (विसे ३१६६) ।

अज्झवस सक [अध्यव+सो] विचार करना, चिंतन करना । वकृ—**अज्झवसंत** ; (सुपा ५६५) ।

अज्झवसण } न [अध्यवसान] चिन्तन, विचार,
अज्झवसाण } आत्म-परिणाम, "तो कुमरेणं भणियं, मुणिपुंगव ! रइसुहज्झवसणंपि । किं इयफलयं जायइ ?" (सुपा ५६५ ; प्रासू १०४ ; विपा १, २) ।

अज्झवसाय पुं [अध्यवसाय] विचार, आत्म-परिणाम, मानसिक संकल्प ; (आचा ; कम्म ४, ८२) ।

अज्झवसिय वि [अध्यवसित] १ जिसका चिन्तन किया गया हो वह ; (औप) । २ न. चिन्तन, विचार ; (अणु) ।

अज्झवसिय न [दे] मुंडा हुआ मुंह ; (दे १, ४०) ।

अज्झसिय वि [दे] देखा हुआ, दृष्ट ; (दे १, ३०) ।

अज्झस्स सक [आ+क्रुश] आक्रोश करना, अभिशाप देना । अज्झस्सइ ; (दे १, १३) ।

अज्झस्स } वि [आक्रुष्ट] जिस पर आक्रोश किया
अज्झस्सिय } गया हो वह ; (दे १, १३) ।

अज्झहिय वि [अभ्यधिक] अत्यंत, अतिशयित ; (महा) ।

अज्झा स्त्री [दे] १ असती, कुलटा ; २ प्रशस्त स्त्री ; ३ नवोढ़ा, दुलहिन ; ४ युवती स्त्री ; ५ यह (स्त्री) ; (दे १, ५० ; गा ८३८, ८५८; वज्जा ६४) ।

अज्झाइअव्व वि [अध्येतव्य] पढ़ने योग्य ; " मे भविस्सइ त्ति अज्झाइअव्वं भवइ" (दस ६, ४, ३) ।

अज्झाय पुं [अध्याय] १ पठन, अभ्यास ; (नाट) । २ ग्रन्थ का एक अंश ; (विसे १११५; प्राप) ।

अज्झारुह पुं [अध्यारुह] १ वृक्ष-विशेष ; २ वृक्ष के ऊपर बढ़नेवाली वल्ली या शाखा वगैरः ; (पण्ण १) ।

अज्झारोवण न [अध्यारोपण] १ आरोपण, ऊपर चढ़ाना । २ पूछना, प्रश्न करना ; (विसे २६२८) ।

अज्झारोह पुं [अध्यारोह] देखो **अज्झारुह** ; (२, ३, ७; १८; १६) ।

अज्झावणा स्त्री [अध्यापना] पढ़ाना ; (कम्म १,६०) ।

अज्झावय वि [अध्यापक] पढ़ानेवाला, शिक्षक, गुरु ; (वसु; सुर ३,२६) ।

अज्झावस अक [अध्या+वस्] रहना, वास करना । वकृ—**अज्झावसंत** ; (उवा) ।

अज्झास पुं [अध्यास] १ ऊपर बैठना ; २ निवास-स्थान ; (सुपा २०) ।

अज्झासणा स्त्री [अध्यासना] सहन करना ; (राज) ।

अज्झासिअ वि [अध्यासित] १ आश्रित, अधिष्ठित ; २ स्थापित, निवेशित ; (नाट) ।

अज्झाहय वि [अध्याहत] १ उत्तेजित "सीयलेण सुरहिगंधमट्टियागंधेणं हत्थी अज्झाहओ वणं संभरेइ" (महा) ।

अज्झीण वि [अक्षीण] १ अक्षय, अखूट ; २ न. अध्ययन, (विसे ६५८) ।

अज्झुववज्ज देखो **अज्झोववज्ज** ; (पि ७७; औप) ।

अज्झुववण्ण देखो **अज्झोववण्ण** ; (विपा १, १) ।

अज्झुववाय देखो **अज्झोववाय** ; (उप पृं २८१) ।

अज्झुसिर वि [अशुषिर] छिद्र-रहित ; (ओघ ३१३) ।

अज्झेउ वि [अध्येतृ] पढ़नेवाला ; (विसे १४६५) ।

अज्झेल्ली स्त्री [दे] दोहनेपर भी जिसका दोहन हो सके ऐसी गैया ; (दे १, ७) ।

अज्झेसणा स्त्री [अध्येषणा] अधिक प्रार्थना, विशेष यांचना ; (राज) ।

अज्झोयरग } पुं [अध्यवपूरक] १ साधु के लिए अधिक
अज्झोयरय } रसोई करना ; २ साधु के लिए बढ़ाकर की हुई रसोई ; (औप; पव ६७) ।

अज्झोल्लिआ स्त्री [दे] वक्षःस्थल के आभूषण में जाती मोतीओं की रचना ; (दे १, ३३) ।

अज्झोवगमिय वि [आभ्युपगमिक] स्वेच्छा से स्वीकृत; (पण्ण ३४)।
अज्झोववज्ज अक [अध्युप+पद्] अत्यासक्त होना, आसक्ति करना। अज्झोववज्जइ; (पि ७७)। भवि- अज्झोववज्जिहिइ; (औप)।
अज्झोववण्ण) वि [अध्युपपन्न] अत्यंत आसक्त;
अज्झोववन्न) (विपा १, २; णाया १, ३; महा; पि ७७)।
अज्झोववाय पुं [अध्युपपाद] अत्यन्त आसक्ति, तल्लीनता; (पण्ह २, ५)।
अट) सक [अट्] भ्रमण करना, घूमना। अटइ;
अट्ट) (षड्; हे १, १९५)। परिअट्टइ; (हे ४, २३०)।
अट्ट सक [क्वथ्] क्वाथ करना। अट्टइ; (हे ४, ११९; षड्; गउड)।
अट्ट अक [शुष्] सूकना, शुष्क होना। अट्टंति (से ५, ६१)। वकृ—अट्टंत; (से ५, ७३)।
अट्ट वि [आर्त] १ पीडित, दुःखित; (विपा १, १)। २ ध्यान-विशेष—इष्ट-संयोग, अनिष्ट-वियोग, रोग-निवृत्ति और भविष्य के लिए चिन्ता करना; (ठा ४, १)। °ण्ण वि [°ज्ञ] पीड़ित की पीडा को जाननेवाला; (षड्)।
अट्ट वि [ऋत] गत, प्राप्त; (णाया १,१; भग १२,२)।
अट्ट पुंन [अट्ट] १ दुकान, हाट; (श्रा १४)। २ महल के ऊपर का घर, अटारी; (कुमा)। ३ आकाश; (भग २०, २)।
अट्ट वि [दे] १ कृश, दुर्बल; २ बड़ा, महान्; ३ निर्लज्ज, बेशरम; ४ आलसु, सुस्त; ५ पुं. शुक, तोता; ६ शब्द, अवाज; ७ न. सुख; ८ झूठ, असत्योक्ति; (दे १,५०)।
अट्टट्ट वि [दे] गया हुआ, गत; (दे १, १०)।
अट्टट्टहास पुं [अट्टट्टहास] देखो अट्टहास, (उव)।
अट्टण न [अट्टन] १ व्यायाम, कसरत; (औप)। २ पुं. इस नाम का एक प्रसिद्ध मल्ल; (उत्त ४)। °साला स्त्री [°शाला] व्यायाम-शाला, कसरत-शाला; (औप; कप्प)।
अट्टण न [अटन] परिभ्रमण; (धर्म ३)।
अट्टमट्ट पुं [दे] १ आलवाल, कियारी; (हे २, १७४)। २ अशुभ संकल्प-विकल्प, पाप-संबद्ध अव्यवस्थित विचार; "अणवट्ठियं मणो जस्स भाइ बहुयाइं अट्टमट्टाइं। तं चिंतियं च न लहइ, संचिणइ य पावकम्माइं" (उव)।
अट्टय पुं [अट्टक] १ हाट, दुकान; (श्रा १२)। २ पात्र के छिद्र को बन्ध करने में उपयुक्त द्रव्य-विशेष; (बृह १)।
अट्टयक्कली स्त्री [दे] कमर पर हाथ रख कर खड़ा रहना; (पाअ)।
अट्टहास पुं [अट्टहास] बहुत हँसना, खिलखिला कर हँसना; (पि २७१)।
अट्टालग) पुंन [अट्टालक] महल का उपरि-भाग, अटारी;
अट्टालय) (सम १३७; पउम २, ६)।
अट्टि स्त्री [आर्ति] पीड़ा, दुःख; (आचा)।
अट्टिय वि [आर्तित] शोकादि से पीडित "अट्टा अट्टिय- चित्ता, जह जीवा दुक्खसागरमुवेंति" (औप)।
अट्टिय वि [अर्दित] व्याकुल, व्यग्र "अट्टदुहट्टियचित्ता" (औप)।
अट्ठ पुंन [अर्थ] १ वस्तु, पदार्थ; (उवा २; अच्चु); "अट्ठदंसी" (सूअ १, १४) "अट्ठाइं, हेऊइं, पसिणाइं" (भग २, १)। २ विषय "इंदियट्ठ" (ठा ६)। ३ शब्द का अभिधेय, वाच्य; (सूअ १, ६)। ४ मतलब, तात्पर्य; (विपा २,१; भास १८)। ५ तत्त्व, परमार्थ "तुब्भेत्थ भो भारहरा गिराणं, अट्ठं न याणाह अहिज्ज वेए" (उत्त १२, ११)। "इओ चुएसु दुहमट्ठदुग्गं" (सूअ १, १०, ६)। ६ प्रयोजन, हेतु; (हे २, ३३)। ७ अभिलाष, इच्छा "अट्ठो भंते ! भोगेहिं, हंता अट्ठो" (णाया १, १६; उत्त ३)। ८ उद्देश्य, लक्ष्य; (सूअ १, २, १)। ९ धन, पैसा; (श्रा १४; आचा)। १० फल, लाभ "अट्ठजुत्ताणि सिक्खेज्जा णिरट्ठाणि उ वज्जए" (उत्त १)। ११ मोक्ष, मुक्ति; (उत्त १)। °कर पुं [°कर] १ मंत्री; २ निमित्त शास्त्र का विद्वान्; (ठा ४, ३)। °जाय वि (जातार्थ) जिसकी आवश्यकता हो, जिसका प्रयोजन हो वह "अट्ठेण जस्स कज्जं संजातं एस अट्ठजाओ य" (वव २)। °जाय वि [°याच] धनार्थी, धन की चाह वाला; (वव २)। °सइय वि [°शतिक] सौ अर्थवाला, जिसका सौ अर्थ हो सके ऐसा (वचन आदि); जं २)। °सेण पुं [°सेन] देखो अट्ठिसेण। देखो अत्थ=अर्थ।

अट्ठ त्रि.ब. [अष्टन्] संख्या-विशेष, आठ, ८; (जी ४१)। °चत्ताल वि [°चत्वारिंश] अठतालीसवाँ; (पउम ४८, १२६)। °चत्तालीस वि [°चत्वरिंशत्] अठतालीस; (पि ४४५)। °ट्ठमिया स्त्री [°ष्टमिका] जैन साधुओं का ६४ दिन का एक व्रत, प्रतिमा-विशेष; (सम ७७)। °तालीस वि [°चत्वारिंशत्] अठतालीस; (नाट)। °तीस वि [°त्रिंशत्] संख्या-विशेष, अठतीस; (सम ६५; पि ४४२; ४४५)। °तीसइम वि [°त्रिंश] अठतीसवाँ; (पउम ३८, ५८)। °त्तरि स्त्री [°सप्तति] अठत्तर, ७८ की संख्या; (पि ४४६)। °त्तीस वि [°त्रिंशत्] अठतीस; (सुपा ६५६; पि ४४५)। °दस वि [°दशन्] अठारह, १८; (संति ३)। °दसुत्तरसय वि [°दशोत्तरशत] एक सौ अठारहवाँ; (पउम ११८, १२०)। °दह त्रि [°दशन्] अठारह, १८ की संख्या; (पिंग)। °पएसिय वि [°प्रदेशिक] आठ अवयव वाला; (ठा १०)। °पया स्त्री [°पदा] एक वृत्त, छन्द-विशेष; (पिंग) °पाहरिअ वि [°प्राहरिक] आठ प्रहर संबंधी; (सुर १५, २१८)। °भाइया स्त्री [°भागिका] तरल वस्तु नापने का बत्तीस पलों का एक परिमाण; (अणु)। °म न [°म] तेला, लगा तार तीन दिनों का उपवास; (सुर ४, ५५)। °मंगल पुंन [°मङ्गल] स्वस्तिक आदि आठ मांगलिक वस्तु; (राय)। °मभत्त पुंन [°मभक्त] तेला, लगा तार तीन दिनों का उपवास; (णाया १, १)। °मभत्तिय वि [°मभक्तिक] तेला करनेवाला; (विपा २, १)। °मी स्त्री [°मी] तिथि-विशेष अष्टमी; (विपा २, १)। °मुत्ति पुं [°मूर्ति] महादेव, शिव; (ठा ६)। °याल वि [°चत्वारिंशत्] अठतालीस; (भवि)। °वन्न वि [°पञ्चाशत्] संख्या-विशेष, अट्ठावन, ५८; (कम्म १, ३२)। °वरिस, °वारिस वि [°वार्षिक] आठ वर्ष की उम्र का; (सुर २, १४६; ८, १०१)। °विह वि [°विध] आठ प्रकार का; (जी २४)। °वीस वि [°विंशति] अट्ठाईस; (कम्म १, ५)। °सट्ठि स्त्री [°षष्टि] संख्या-विशेष, अठसठ; (पि ४४२-६)। °समइय वि (°समयिक) जिसकी अवधि आठ 'समय' की हो वह; (औप)। °सय न [°शत] एक सौ आठ, १०८; (ठा १०)। °सहस्स न [°सहस्र] एक हजार और आठ; (औप)। °सामइय देखो °समइय; (ठा ८)। °सिर वि [°शिरस्, °सिर] अष्ट-कोण, आठ कोण वाला; (औप)। °सेण पुं [°सेन] देखो अट्ठिसेण। °हत्तर वि [°सप्ततितम] अठत्तरवाँ; (पउम ७८, ५७)। °हत्तरि स्त्री [°सप्तति] अठत्तर की संख्या, ७८; (सम ८६)। °हा अ [°धा] आठ प्रकार का; (पि ४५१)।

°अट्ठ न [काष्ठ] काष्ठ, लकड़ी; (प्रयौ ७४)।

अट्ठंग वि [अष्टाङ्ग] जिसका आठ अंग हो वह। °णिमित्त न [°निमित्त] वह शास्त्र, जिसमें भूमि, स्वप्न, शरीर, स्वर आदि आठ विषयों के फलाफल का प्रतिपादन हो; (सूअ १, १२)। °महाणिमित्त न [°महानिमित्त) अनन्तर-उक्त अर्थ; (कप्प)।

अट्ठा स्त्री [अष्टा] १ मुष्टि "चउहिं अट्ठाहिं लोयं करेइ" (जं २; स १८२)। २ मुट्ठीभर चीज; (पंचव २)।

अट्ठा स्त्री [आस्था] श्रद्धा, विश्वास; (सूअ २, १)।

अट्ठा स्त्री [अर्थ] लिए, वास्ते "तइया य मणी दिव्वो, समप्पिओ जीवरक्खट्ठा" (सुर ६, ६; ठा ५, २)। °दंड पुं [°दण्ड] कार्य के लिए की गई हिंसा; (ठा ५, २)।

अट्ठाइस वि [अष्टाविंश] अठाईसवाँ; (पिंग)।

अट्ठाइस } स्त्री [अष्टाविंशति] संख्या-विशेष, अठाईस; अट्ठाईस } (पिंग; पि ४४२)।

अट्ठाण न [अस्थान] १ अयोग्य स्थान; (ठा ६; विसे ८४५)। २ कुत्सित स्थान, वेश्या का मुहल्ला वगैरः; (वव २)। ३ अयोग्य, गैरव्याजबी "अट्ठाणमेयं कुसला वयंति, दगेण जे सिद्धिमुयाहरंति" (सूअ १,७)।

अट्ठाण न [आस्थान] सभा, सभा-गृह; (ठा ५, १)।

अट्ठाणउइ स्त्री [अष्टानवति] अठाणवे, ९८; (सम ९९)।

अट्ठाणउय वि [अष्टानवत] अठाणवाँ, ९८ वाँ; (पउम ९८, ७८)।

अट्ठाणिय न [अस्थान] अपात्र, अनाश्रय। "अट्ठाणिए होइ बहू गुणाणं, जेणाणसंकाइ मुसं वएज्जा" (सूअ १, १३)।

अट्ठायमाण वकृ [अतिष्ठत्] नहीं बैठता हुआ; (पंचा १६)।

अट्ठार } त्रि. ब. [**अष्टादशन्**] संख्या-विशेष, अठारह ;
अट्ठारस } (पउम ३५, ७६ ; संति ५)। °**विह** वि [°**विध**] अठारह प्रकार का ; (सम ३५)।

अट्ठारसम वि [**अष्टादश**] १ अठारहवाँ ; (पउम १८, ५८)। २ न. लगा तार आठ दिनों का उपवास ; (णाया १, १)।

अट्ठारसिय वि [**अष्टादशिक**] अठारह वर्ष की उम्र का ; (वव ४)।

अट्ठारह } देखो **अट्ठार** ; (षड् ; पिंग)।
अट्ठाराह }

अट्ठावण्ण } स्त्रीन [**अष्टपञ्चाशत्**] संख्या-विशेष, पचास
अट्ठावन्न } और आठ, ५८ ; (पि २६५ ; सम ७४)।

अट्ठावन्न वि [**अष्टापञ्चाश**] अठावनवाँ ; (पउम ५८, १६)।

अट्ठावय पुं [**अष्टापद**] १ स्वनाम-ख्यात पर्वत-विशेष, कैलास ; (पण्ह १, ४)। २ न. एक जात का जुआ ; (पण्ह १, ४)। द्यूत-फलक, जिस पर जुआ खेला जाता है वह ; (पण्ह १, ४)। ४ सुवर्ण, सोना ; (धण ८)। °**सेल** पुं [°**शैल**] १ मेरु-पर्वत ; २ स्वनाम-ख्यात पर्वत-विशेष, जहां भगवान् ऋषभदेव निर्वाण पाये थे, "जम्मि तुमं अहिसित्तो, जत्थ य सिवसुक्खसंपयं पत्तो। ते अट्ठावयसेला, सीसामेला गिरिकुलस्स " (धण ८)।

अट्ठावय न [**अर्थपद**] अर्थ-शास्त्र, संपत्ति-शास्त्र, (सूअ १, ७; पण्ह १, ४)।

अट्ठावीस स्त्रीन [**अष्टाविंशति**] अठाईस, २८; (पि ४४२, ४४५)।

अट्ठावीसइ स्त्री [**अष्टाविंशति**] संख्या-विशेष, अठाईस, २८। °**विह** वि [°**विध**] अठाईस प्रकार का, (पि ४५१)।

अट्ठावीसइम वि [**अष्टाविंश**] १ अठाईसवां ; (पउम २८, १४१)। २ न. तेरह दिनों के लगातार उपवास ; (णाया १, १)।

अट्ठासट्ठि स्त्री [**अष्टाषष्टि**] संख्या-विशेष, अठसठ, ६८ ; (पिंग)।

अट्ठासि } स्त्री [**अष्टाशीति**] संख्या-विशेष ; अठासी,
अट्ठासीइ } ८८ ; (पिंग ; सम ७३)।

अट्ठासीय वि [**अष्टाशीत**] अठासीवाँ; (पउम ८८, ४४)।

अट्ठाह न [**अष्टाह**] आठ दिन ; (णाया १, ८)।

अट्ठाहिया स्त्री [**अष्टाहिका**] १ आठ दिनों का एक उत्सव; (पंचा ८)। २ उत्सव ; (णाया १, ८)।

अट्ठि वि [**अर्थिन्**] प्रार्थी, गरज वाला, अभिलाषी; (आचा)।

अट्ठि } स्त्रीन [**अस्थि**, °**क**] १ हड्डी, हाड; (कुमा;
अट्ठिग } पण्ह १, ३)। २ जिसमें बीज उत्पन्न न
अट्ठिय } हुए हों ऐसा अपरिपक्व फल ; (बृह १)। ३ पुं. कापालिक ' अट्ठी विज्जा कुच्छियभिक्खू ' (बृह १; वव २)। °**मिंजा** स्त्री [°**मिञ्जा**] हड्डी के भीतर का रस ; (ठा ३, ४)। °**सरक्ख** पुं [°**सरजस्क**] कापालिक ; (वव ७)। °**सेण** न [°**षेण**] १ वत्स-गोत्र की शाखारूप एक गोत्र; २ पुं. इस गोत्र का प्रवर्तक पुरुष और उसकी संतान ; (ठा ७)।

अट्ठिय वि [**अर्थिक**] १ गरजू, याचक, प्रार्थी ; (सूअ १, २, ३)। २ अर्थ का कारण, अर्थ-संबन्धी ; ३ मोक्ष का हेतु, मोक्ष का कारण-भूत "पसन्ना लाभइस्संति विउलं अट्ठियं सुयं " (उत्त १)।

अट्ठिय वि [**आर्थिक**] १ अर्थ का कारण, अर्थ-संबन्धी, २ मोक्ष का कारण ; (उत्त १)।

अट्ठिय वि [**अर्थित**] अभिलषित, प्रार्थित ; (उत्त १)।

अट्ठिय वि [**अस्थित**] १ अव्यवस्थित, अनियमित ; (पण्ह १, ३)। २ चंचल, चपल ; (से २, २४)।

अट्ठिय वि [**आस्थिक**] हड्डी-संबन्धी, हाड का, "अट्ठियं रसं सुणआ " (भत्त १४२)।

अट्ठिय वि [**अस्थित**] स्थित, रहा हुआ , (से १, ३५)।

अट्ठुत्तर वि [**अष्टोत्तर**] आठ से अधिक ; (औप)। °**सय** न [°**शत**] एक सौ और आठ; (काल)। °**सय** वि [°**शततम**] एक सौ आठवां ; (पउम १०८, ५०)।

अठ } देखो **अट्ठ**=अष्टन् ; (पिंग; पि ४४२; १४६ ; भग;
अड } सम १३४)।

अड सक [**अट्**] भ्रमण करना, फिरना " अडंति संसारे " (पण्ह १, १)। वकृ—**अडमाण** ; (णाया १,१४)।

अड पुं [**अवट**] १ कूप, इनारा ; (पाअ)। २ कूप के पास पशुओं के पानी पीने के लिये जो गर्त किया जाता है वह ; (हे १, २७१)।

°**अड** देखो **तड**=तट ; (गा ११७ ; से १, ५५)।

अडइ } स्त्री [**अटवि**, °**वी**] भयानक जंगल, वन ; (सुपा
अडई } १८१, नाट)।

अडडज्झिय न [दे] विपरीत मैथुन ; (दे १, ४२)।
अडखम्म सक [दे] सँभालना, रक्षण करना। कर्म—"अडखम्मिज्जंति सवरिआहि वणे" (दे १, ४१)।
अडखम्मिअ वि [दे] सँभाला हुआ, रक्षित ; (दे १, ४१)।
अडड न [अटट] 'अटटांग' को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह ; (ठा ३, ४)।
अडडंग न [अटटाङ्ग] संख्या-विशेष, 'तुडिय' या 'महातुडिय' को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह ; (ठा ३, ४)।
अडण न [अटन] भ्रमण, घूमना ; (ठा ६)।
अडणी स्त्री [दे] मार्ग, रास्ता ; (दे १, १६)।
अडपल्लण न [दे] वाहन-विशेष ; (जीव ३)।
अडयणा } **अडया** } स्त्री [दे] कुलटा, व्यभिचारिणी स्त्री ; (दे १, १८; पाअ; गा २७४; ६६२ ; वज्जा ८६)।
अडयाल न [दे] प्रशंसा, तारीफ ; (पण्ण २)।
अडयाल } **अडयालीस** } स्त्रीन [अष्टचत्वारिंशत्] अड़तालीस, ४८ की संख्या ; (जीव ३; सम ७०)। °**सय** न [°शत] एक सौ और अठतालीस, १४८ ; (कम्म २, २५)।
अडवडण न [दे] स्खलना, रुक रुक चलना, "तुरयावि परिस्संता अडवडणं काउमारद्धा" (सुपा ६४५)।
अडवि } **अडवी** } स्त्री [अटवि, °वी] भयंकर जंगल, गहरा वन; (पण्ह १, १; महा)।
अडसट्ठि स्त्री [अष्टषष्टि] अठसठ ; (पि ४४२)। °**म** वि [°तम] अठसठवाँ ; (पउम ६८, ५१)।
अडाड पुं [दे] बलात्कार, जबरदस्ती ; (दे १, १६)।
अडिल्ल पुं [अटिल] एक जात का पक्षी ; (पण्ण १)।
अडिल्ला स्त्री [अडिल्ला] छन्द-विशेष ; (पिंग)।
अडोलिया स्त्री [अटोलिका] १ एक राज-पुत्री, जो यवराज की पुत्री और गर्दभराज की बहिन थी ; २ मूषिका, चूही ; (बृह १)।
अडोविय वि [अटोपित] भरा हुआ ; (पण्ह १, ३)।
अड्ड वि [दे] जो आड़े आता हो, बीच में बाधक होता हो वह, "सो कोहाडओ अड्डो आवडिओ" (उप १४६ टी)।
अड्डुक्ख सक [क्षिप्] फेंकना, गिराना। अड्डुक्खइ ; (हे ४, १४३; षड्)।
अड्डुक्खिय वि [क्षिप्त] फेंका हुआ ; (कुमा)।

अड्डुण न [अड्डुन] १ चर्म, चमड़ा ; २ ढाल, फलक; "नवमुग्गवण्णअड्डुणढक्किअआजाणुभीसणसरीरा" (सुर २,५)।
अड्डिया स्त्री [अड्डिका] मल्लों की क्रिया-विशेष ; (विसे ३३५७)।
अड्ढ देखो **अद्ध=अर्ध** ; (हे २, ४१; चंद १०; सुर ६; १२६; महा)।
अड्ढ वि [आढ्य] १ संपन्न, वैभव-शाली, धनी ; (पाअ; उवा)। २ युक्त, सहित ; (पंचा १२)। ३ पूर्ण, परिपूर्ण "विगुणमवि गुणड्ढं" (प्रासू ७१)।
अड्ढअक्ली स्त्री [दे] देखो **अट्टयक्ली**; (दे १,४५)।
अड्ढत्त वि [आरब्ध] शुरू किया हुआ, प्रारब्ध ; (हे १३, ६)।
अड्ढाइज्ज } **अड्ढाइय** } वि [अर्धतृतीय] ढ़ाई ; (सम १०१; सुर १, ४४; भवि; विसे १४०१)।
°**अड्ढिय** वि [कृष्ट] खींचा हुआ ; (से ५, ७२)।
अड्ढुट्ठ वि [अर्धचतुर्थ] साढ़े तीन ; "अड्ढुट्ठाइं सयाइं" (पि ४५०)।
अड्ढेज्ज न [आढ्यत्व] धनिपन, श्रीमंताई ; (ठा १०)।
अड्ढेज्जा स्त्री [आढ्येज्या] श्रीमंत ने किया हुआ सत्कार ; (ठा १०)।
अड्ढोरुग पुं (अर्धोरुक] जैन साध्वीओं के पहननेका एक वस्त्र ; (ओघ ३१५)।
अढ (अप) देखो **अट्ठ=अष्टन्** ; (पि ६७; ३०४; ४४२; ४४५)।
अढाइस (अप) स्त्रीन [अष्टाविंशति] संख्या-विशेष, अठाईस, २८ ; (पि ४४५)।
अढारसम देखो **अट्ठारसम**; (भग १८; णाया ११८)।
अण अ [अ°, अन्°] देखो **अ°**; (हे २, १९०; से ११. ६४)।
अण सक [अण्] १ अवाज करना। २ जाना। ३ जानना। ४ समझाना। अणइ ; (विसे ३४४१)।
अण पुं [अण] १ शब्द, अवाज ; २ गमन. गति ; (विसे ३४४०)। ३ कषाय, क्रोध आदि आन्तर शत्रु ; (विसे १२८७)। ४ गाली, आक्रोश अभिशाप ; (तंदु)। ५ न. पाप ; (पण्ह १, १)। ६ कर्म ; (आचा)। ७ वि. कुत्सित, खराब ; (विसे २७९७ टी)।
अण पुं [अन] देखो **अणंताणुबंधि** ; (कम्म २, ५; १४;२६)।

अण पुं [**अनस्**] शकट, गाड़ी ; (धर्म २) ।

अण देखो **अण्ण**=अन्य " अणहिमआवि पिआणं " (से ११, १६; २०) ।

अण न [**ऋण**] १ करजा, ऋण ; (हे १, १४१) । २ कर्म ; (उत्त १) । °**धारग** वि [°**धारक**] करजदार, ऋणी ; (णाया १, १७) । °**बल** वि [°**बल**] उत्तमर्ण, लेनदार; (पण्ह १, २) । ° **भंजग** वि [°**भञ्जक**] देउलिया ; (पण्ह १, ३) ।

°**अण** देखो **गण** ; (से ६, ६६) ।

°**अण** देखो **जण** ; " अण्णं महिलाअणं रमंतस्स " (गा ४४) ; " गुरुअणपरवस पिअ किं (काप्र ६१) ; " दास-अणाणं " (अच्चु ३२) ।

अण देखो **तण**; (से ६, ६६) ।

°**अणअरद** देखो **अगवरय** ; (नाट) ।

अणइवर वि [**अनतिवर**] जिससे बढ़कर दूसरा न हो, सर्वोत्तम ; " अच्छराओ.........अणइवरसोमचारुरूवाओ " (औप) ।

अणईइ वि [**अनीति**] ईति-रहित, शलमादि-कृत उपद्रव से रहित " अणईइपत्ता " (औप) ।

अणंग पुं [**अनङ्ग**] १ काम, विषयाभिलाष, रमणेच्छा; (श्रा १६; आव ६) । २ कामदेव, मन्मथ ; (गा २३३; गउड; कप्पू) । ३ एक राजकुमार, जो आनन्दपुर के राजा जितारि का पुत्र था ; (गच्छ २) । ४ न. विषय-सेवन के मुख्य अंगों के अतिरिक्त स्तन, कुक्षि, मुख आदि अंग; (ठा ५, २) । ५ बनावटी लिंग आदि; (ठा ५.२) । ६ बारह अंग-ग्रन्थों से भिन्न जैन शास्त्र; (विसे ८४४) । ७ वि. शरीर-रहित, अंग-हीन, मृत ; " पहरइ कह णु अणंगो, कह णु हु विंधंति कोसुमा बाणा" (गउड); "पईव-मज्झे पडई पयंगो, रूवाणुरत्तो हवई अणंगो " (सत्त ४८) । °**घरिणी** स्त्री [°**गृहिणी**] रति, कामदेव की पत्नी ; (सुपा ६६७) । °**पडिसेविणी** स्त्री [°**प्रतिषेविणी**] अमर्यादित रीति से विषय-सेवन करनेवाली स्त्री; (ठा ५, २) । °**पविट्ठ** न [°**प्रविष्ट**] बारह अंग-ग्रन्थों से भिन्न जैन ग्रन्थ; (विसे ५२७) । °**बाण** पुं [°**बाण**] काम के बाण ; (गा ७४८) । °**लवण** पुं [°**लवन**] रामचन्द्रजी का एक पुत्र, लव; (पउम ६७,६) । °**सर** पुं [°**शर**] काम के बाण; (गा १०००) । °**सेणा** स्त्री [°**सेना**] द्वारका की एक विख्यात गणिका ; (णाया १, ५; १६) ।

अणंत पुं [**अनन्त**] चालु अवसर्पिणी काल के चौदहवें तीर्थंकर-देव " विमलमणंतं च जिणं " (पडि) । २ विष्णु, कृष्ण ; (पउम ५, १२२) । ३ शेष नाग ; (से ६, ८६) । ४ जिसमें अनन्त जीव हों ऐसी वनस्पति, कन्द-मूल वगैरः ; (आघ ४१) । ५ न. केवल-ज्ञान ; (णाया १, ८) । ६ आकाश ; (भग २०, २) । ७ वि. नाश-वर्जित, शाश्वत ; (सूअ १,१,४ ; पण्ह १, ३) । ८ निःसीम, अपरिमित, असंख्य से भी कहीं अधिक ; (विसे)। ९ प्रभूत, बहुत, विशेष ; (प्रासू २६ ; ठा ४, १) । °**काइय** वि [°**कायिक**] अनन्त जीव वाली वनस्पति, कन्द-मूल आदि ; (धर्म २) । °**काय** पुं [°**काय**] कन्द-मूल आदि अनन्त जीव वाली वनस्पति ; (पण्ण १)। °**खुत्तो** अ [°**कृत्वस्**] अनन्त वार ; (जी ४४) । °**जीव** पुं [°**जीव**] देखो °**काइय** ; (पण्ण १) । °**जीविय** वि [°**जीविक**] देखो °**काइय** ; (भग ८,३) । °**णाण** न [°**ज्ञान**] केवल-ज्ञान ; (दस २) । °**णाणि** वि [°**ज्ञानिन्**] केवल-ज्ञानी, सर्वज्ञ ; (सूअ १, ६) । °**दंसि** वि [°**दर्शिन्**] सर्वज्ञ ; (पउम ४८, १०५) । °**पासि** वि [°**दर्शिन्**] ऐरवत क्षेत्र के बीसवें जिन-देव ; (तित्थ) । °**मिस्सिया** स्त्री [°**मिश्रिका**] सत्य-मिश्र भाषा का एक भेद ; जैसे अनन्तकाय से भिन्न प्रत्येक-वनस्पति से मिली हुई अनन्तकाय को भी अनन्तकाय कहना ; (पण्ण ११) । °**मीसय** न [°**मिश्रक**] देखो °**मिस्सिया**; (ठा १०) । °**रह** पुं [°**रथ**] विख्यात राजा दशरथ के बड़े भाईका नाम; (पउम २२,१०१)। °**विजय** पुं [°**विजय**] भरतक्षेत्र के २४ वें और ऐरवत क्षेत्र के बीसवें भावि तीर्थंकर का नाम ; (सम १५४) । °**वीरिय** वि [°**वीर्य**] १ अनन्त बल वाला । २ पुं. एक केवलज्ञानी मुनि का नाम ; (पउम १४, १५८) । ३ एक ऋषि, जो कार्तवीर्य के पिता थे ; (आचू १) । ४ भरतक्षेत्र के एक भावि तीर्थंकर का नाम; (ती २१) । °**संसारिय** वि [°**संसारिक**] अनन्त काल तक संसार में जन्म-मरण पानेवाला; (उप ३८४) । °**सेण** पुं [°**सेन**] १ चौथा कुलकर ; (सम १५०) । २ एक अन्तकृद् मुनि ; (अंत ३) ।

अणंतइ पुं [**अनन्तजित्**] चालु काल के चौदहवें जिन-देव; (पउम ५, १४८) ।

अणंतग } १ देखो **अणंत**; (ठा ५, ३) । २ न. वस्त्र-विशेष;
अणंतय } (ओघ ३६) । ३ पुं. ऐरवत क्षेत्र के एक जिनदेव;

(सम १५३)।

अणंतर वि [**अनन्तर**] १ व्यवधान-रहित, अव्यवहित "अणंतरं चयं चइत्ता" (णाया १, ८)। २ पुं. वर्तमान समय; (ठा १०)। ३ क्रिवि. बाद में, पीछे, (विपा १, १)।

अणंतरहिय वि [**अनन्तर्हित**] १ अव्यवहित, व्यवधान-रहित; (आचा)। २ सजीव, सचित्त, चेतन; (निचू ७)।

अणंतसो अ [**अनन्तशस्**] अनन्त वार; (दं ४५)।

अणंताणुवंधि पुं [**अनन्तानुबन्धिन्**] अनन्त काल तक आत्मा को संसार में भ्रमण कराने वाले कषायों की चार चौकडियो में प्रथम चौकड़ी, अतिप्रचंड क्रोध, मान, माया और लोभ; (सम १६)।

अणक्क पुं [**दे**] १ एक म्लेच्छ देश; २ एक म्लेच्छ जाति; (पण्ह १, १)।

अणक्ख पुं [**दे**] १ रोष, गुस्सा, क्रोध; (सुपा १३; १३०; ६१४; भवि)। २ लज्जा; (स ३७६)।

अणक्खर न [**अनक्षर**] श्रुत-ज्ञान का एक भेद—वर्ण के विना संपर्क के, छींकना, चुटकी वजाना, सिर-हिलाना आदि संकेतों से दूसरे का अभिप्राय जानना; (णंदि)।

अणगार वि [**अनगार**] १ जिसने घर-बार त्याग किया हो वह, साधु, यति, मुनि; (विपा १, १; भग १७, ३)। २ घर-रहित, भिक्षुक, भीखमँगा; (ठा ६)। ३ पुं. भरतक्षेत्र के भावी पांचवें तीर्थंकर का एक पूर्वभवीय नाम; (सम १५४)। °**सुय** न [°**श्रुत**] 'सूत्रकृतांग' सूत्र का एक अध्ययन; (सूअ २, ५)।

अणगार वि [**ऋणकार**] १ करजा करनेवाला; २ दुष्ट शिष्य, अपात्र; (उत्त १)।

अणगार वि [**अनाकार**] आकृति-शून्य, आकार-रहित "उवलंभव्ववहाराभावओ नाणगारं च" (विसे ६५)।

अणगारि पुं [**अनगारिन्**] साधु, यति, मुनि; (सम ३७)।

अणगारिय वि [**अनगारिक**] साधु-संवन्धी, मुनि का; (विसे २६७३)।

अणगाल पुं [**अकाल**] दुर्भिक्ष, अकाल; (वृह ३)।

अणगिण पुं [**अनग्न**] १ जो नंगा न हो, वस्त्रों से आच्छादित। २ कल्पवृक्ष की एक जाति, जो वस्त्र देता है; (तंदु)।

अणग्घ वि [**ऋणघ्न**] ऋण-नाशक, कर्म-नाशक; (दंस)।

अणग्घ, **अणग्घेय** वि [**अनर्घ्य**] १ अमूल्य, वहुमूल्य, किंमती; (आव ४)। "रयणाइं अणग्घेयाइं हुंति पंचप्पयारवण्णाइं" (उप ५६७ टी; स ८०)। २ महान्, गुरु; ३ उत्तम, श्रेष्ठ; "तं भगवंतं अणग्घं नियसत्तीए अणग्घभत्तीए, सक्कारेमि" (विवे ६५; ७१)।

अणघ वि [**अनघ**] शुद्ध, निर्मल, स्वच्छ; (पंचव ४)।

अणच्छ देखो **करिस**=कृष्। अणच्छइ; (हे ४, १८७)।

अणच्छिआर वि [**दे**] अच्छिन्न, नहीं छेदा हुआ; (दे १,४४)।

अणज्ज वि [**अन्याय्य**] अयोग्य, जो न्याय-युक्त नहीं; (पण्ह १, १)।

अणज्ज वि [**अनार्य**] आर्य-भिन्न, दुष्ट, खराव, पापी; (पण्ह १, १; अभि १२३)।

अणज्जव (अप) ऊपर देखो। °**खंड** पुं [°**खण्ड**] अनार्य देश, (भवि ३१२, २)।

अणज्झवसाय पुं [**अनध्यवसाय**] अव्यक्त ज्ञान, अति सामान्य ज्ञान; (विसे ६२)।

अणज्झाय पुं [**अनध्याय**] १ अध्ययन का अभाव; २ जिसमें अध्ययन निषिद्ध है वह काल; (नाट)।

अणट्ट वि [**अनार्त**] आर्त-ध्यान से रहित; "अणट्टा कित्ति पव्वए" (उत्त १८, ५०)।

अणट्ठ पुं [**अनर्थ**] १ नुकसान, हानि; (णाया १, ६; उप ६ टी)। २ प्रयोजन का अभाव; (आव ६)। ३ वि. निष्कारण, वृथा, निष्फल; (निचू १; पण्ह २, १)। °**दंड** पुं [**दण्ड**] निष्कारण हिंसा, विना ही प्रयोजन दूसरे की हानि; (सूअ २, २)।

अणड पुं [**दे**] जार, उपपति; (दे १, १८; षड्)।

अणड्ढ वि [**अनर्ध**] विभाग-रहित, अखण्ड; (ठा ३, ३)।

अणण्ण वि [**अनन्य**] १ अभिन्न, अपृथग्भूत; (निचू १)। २ मोक्ष-मार्ग "अणण्णं चरमाणे से ण छणे ण छणावए" (आचा)। ३ असाधारण, अद्वितीय; (सुपा १८६; सुर १, ७)। °**तुल्ल** वि [°**तुल्य**] असाधारण, अनुपम; (उप ६४८ टी)। °**दंसि** वि [°**दर्शिन्**] पदार्थ को सत्य २ देखने वाला; (आचा)। °**परम** वि [°**परम**] संयम, इन्द्रिय-निग्रह "अणण्णपरमे णाणी, णो पमाए कयाइवि" (आचा)। °**मण**, °**मणस** वि [°**मनस्क**] एकाग्र चित्त वाला, तल्लीन; (औप; पउम ६, ६३)। °**समाण** वि [°**समान**] असाधारण, अद्वितीय; (उप ५६७ टी)।

अणत्त वि [**अनात्त**] अगृहीत, अस्वीकृत (ठा २, ३)।

अणत्त वि [**अनार्त्त**] अपीडित "दव्वावइमाईसु अत्तमणत्ते गवेसणं कुणइ" (वव १)।

अणत्त वि [ऋणार्त्त] ऋण से पीडित ; (ठा ३, ४)।
अणत्त वि [अनात्र] दुःखकर, सुख-नाशक " णेरइआणं भंते ! किं अत्ता पोग्गला अणत्ता वा " (भग १४, ६)।
अणत्त न [दे] निर्माल्य, देवोच्छिष्ट द्रव्य ; (दे १, १०)।
अणत्थ देखो **अणट्ठ** ; (पउम ६२, ४ ; श्रा २७ ; सण)।
अणथंत वक्र [अतिष्ठत्] १ नहीं रहता हुआ ; २ अस्त होता हुआ "अणथंते दिवसयरे जो चयइ चउव्विहंपि आहारं" (पउम १४, १३४)।
अणन्न देखो **अणण्ण** ; (सुपा १८६ ; सुर १, ७ ; पउम ६, ६३)।
अणपन्निय देखो **अणवण्णिय** ; (भग १०, २)।
अणप्प वि [अनर्प्य] अर्पण करने को अयोग्य या अशक्य ; (ठा ६)।
अणप्प वि [अनल्प] अधिक, बहुत ; (औप)।
अणप्प पुं [अनात्मन्] निजसे भिन्न, आत्मा से पर ; (पउम ३७, २२)। °ज्ज वि (°ज्ञ) १ निर्बोध, मूर्ख ; २ पागल, भूताविष्ट, पराधीन ; (निचू १)। °वसग वि [°वश] परवश, पराधीन ; (पउम ३७, २२)।
अणप्प पुं [दे] खड्ग, तलवार ; (दे १, १२)।
अणप्पिय वि [अनर्पित] १ नहीं दिया हुआ ; २ साधारण, सामान्य, अविशेषित ; (ठा १०)। °णय पुं [°नय] सामान्य-ग्राही पक्ष ; (विसे)।
अणब्भंतर वि [अनभ्यन्तर] भीतरी तत्व को नहीं जानने वाला, रहस्य-अनभिज्ञ " अणब्भंतरा खु अम्हे मदणगदस्स वुत्तंतस्स " (अभि ६१)।
अणभिग्गह न [अनभिग्रह] " सर्वे देवा वन्द्याः " इत्यादिरूप मिथ्यात्व का एक भेद ; (श्रा ६)।
अणभिग्गहिय न [अनभिग्रहिक] ऊपर देखो ; (ठा २, १)।
अणभिग्गहिय वि [अनभिगृहीत] १ कदाग्रह-शून्य ; (श्रा ६) २ अस्वीकृत ; (उत्त २८)।
अणभिण्ण, **अणभिन्न** वि [अनभिज्ञ] अजान, निर्बोध ; (अभि १७४ ; सुपा १६८)।
अणभिलप्प वि [अनभिलाप्य] अनिर्वचनीय, जो वचन से न कहा जा सके ; (लहुअ ७)।
अणमिस वि [अनिमिष] १ विकसित, खुला हुआ ; (सुर ३, १४३)। २ निमेष-रहित, पलक-वर्जित ; (सुपा ३५४)।
अणय पुं [अनय] अनीति, अन्याय ; (श्रा २७ ; स ५०१)।
अणयार देखो **अणगार** ; (पउम ०१, ७)।
अणरण्ण पुं [अनरण्य] साकेतपुर का एक राजा, जो पीछे से ऋषि हुआ था ; (पउम १०, ८७)।
अणरह, **अणरिह**, **अणरुह** वि [अनर्ह] अयोग्य, नालायक ; (कुमा) ; " णवि दिज्जंति अणरिहे, अणरिहत्तं तु इमं होइ " (पंचभा)।
अणरहू स्त्री [दे] नवोढ़ा, दुलहिन ; (षड्)।
अणरामय पुं [दे] अरति, बेचैनी ; (दे १, ४५ ; भवि)।
अणराय वि [अराजक) राज-शून्य, जिसमें राजा न हो वह ; (बृह १)।
अणराह पुं (दे) सिर में पहनी जाती रंग-बेरंगी पट्टी ; (दे १, २४)।
अणरिक्क वि [दे] अवकाश-रहित, फुरसद-वर्जित ; (दे १, २०)। २ दधि, क्षीर आदि गोरस भोज्य ; (निचू १६)।
अणरिह, **अणरुह** वि [अनर्ह] अयोग्य, अ-लायक ; (णाया १, १)।
अणल पुं [अनल] १ अग्नि, आग ; (कुमा)। २ वि. असमर्थ ; ३ अयोग्य " अणलो अपच्चलोत्ति य होंति अजोगो व एगट्ठा " (निचू ११)।
अणव वि [ऋणवत्] १ करजदार ; २ पुं. दिवस का छब्बीसवाँ मुहूर्त ; (चंद)।
अणवकय वि [अनपकृत] जिसका अपकार न किया गया हो वह ; (उव)।
अणवगल्ल वि [अनवग्लान] ग्लानि-रहित, नीरोग, " सङ्ढस्स अणवगल्लस्स निरुवकिट्ठस्स, जंतुणो एगे ऊसासनीसासे, एस पाणुत्ति वुच्चइ " (ठा २, ४)।
अणवच्च वि [अनपत्य] सन्तान-रहित, निर्वंश ; (सुपा २५६)।
अणवज्ज न [अनवद्य] १ पाप का अभाव, कर्म का अभाव ; (सूअ १, १, २)। २ वि. निर्दोष, निष्पाप ; (षड्)।
अणवज्ज वि [अणवर्ज्य] ऊपर देखो ; (विसे)।
अणवट्ठप्प वि [अनवस्थाप्य] १ जिसको फिरसे दीक्षा न दी जा सके ऐसा गुरु अपराध करनेवाला ; (बृह ४)। २ न. गुरु प्रायश्चित्त का एक भेद ; (ठा ३, ४)।
अणवट्ठिय वि [अनवस्थित] १ अव्यवस्थित, अनियमित ;

(प्रासू १३७; सुर ४,७६)। २ चंचल, अस्थिर "अणव-ट्ठियं च चित्तं" (सुर १२, १३८)। ३ पल्य-विशेष, नाप-विशेष; (कम्म ४, ७३)।
अणवण्णिय पुं [अणपन्निक, अणपर्णिक] वानव्यंतर देवों की एक जाति; (पण्ह १, ४; भग १०, २)।
अणवत्थ वि [अनवस्थ] अव्यवस्थित, अनियमित असमं-जस; (दे १, १३६)।
अणवत्था स्त्री [अनवस्था] १ अवस्था का अभाव; (उव)। २ एक तर्क-दोष; (विसं)। ३ अव्यवस्था; "जणणी जायइ जाया, जाया माया पिया य पुत्तो य। अणवत्था संसारे, कम्मवसा सव्वजीवाणं" (भिवे १०७)।
अणवदग्ग वि [दे] १ अनन्त, अपरिमित, निस्सीम; (भग १, १)। २ अविनाशी; (सूअ २, ५)।
अणवन्निय देखो **अणवण्णिय**; (ओप)।
अणवयग्ग देखो **अणवदग्ग**; (सम १२५; पण्ह १, ३; प्राप)।
अणवयमाण वक्र [अनपवदत्] १ अपवाद नहीं करता हुआ। २ सत्यवादी; (वव ३)।
अणवरय वि [अनवरत] १ सतत, निरन्तर, अविच्छिन्न; २ न. सदा, हमेशाँ; (गा २८०; सुपा ६)।
अणवराइस (अप) वि [अनन्यादृश] असाधारण, अद्वितीय; (कुमा)।
अणवसर वि [अनवसर] आकस्मिक, अचिन्तित; (पाअ)।
अणवाह वि [अबाध] बाधा-रहित, निर्बाध; (सुपा २६८)।
अणवेक्खिय वि [अनपेक्षित] उपेक्षित, जिसकी परवा न हो।
अणवेक्खिय वि [अनवेक्षित] १ नहीं देखा हुआ; २ अविचारित, नहीं सोचा हुआ। °**कारि** वि (°**कारिन्**) साहसिक। °**कारिया** स्त्री (°**कारिता**) साहस कर्म; (उप ७६८ टी)।
अणसण न [अनशन] आहार का त्याग, उपवास; (सम ११६)।
अणसिय वि [अनशित] उपोषित, उपवासी; (आवम)।
अणह वि [अनघ] निर्दोष, पवित्र; (ओप; गा २७२; से ६, ३)।
अणह वि [दे] अक्षत, क्षति-रहित, व्रण-शून्य; (दे १, १३; सुपा ६, ३३; सण)।
अणह न [अनभस्] भूमि, पृथिवी; (से ६, ३)।
अणहप्पणय वि [दे] अनष्ट, विद्यमान; (दे १,४८)।
अणहवणय वि [दे] तिरस्कृत, भर्त्सित; (षड्)।
अणहारय पुं [दे] खल, खला, जिसका मध्य-भाग नीचा हो वह जमीन; (दे १, ३८)।
अणहिअअ वि [अहृदय] हृदय-रहित, निष्ठुर, निर्दय; (प्राप; गा ४१)।
अणहिगय वि [अनधिगत] १ नहीं जाना हुआ। २ पुं. वह साधु, जिसको शास्त्रों का पूरा ज्ञान न हो, अगीतार्थ; (वव १)।
अणहिण्ण देखो **अणभिण्ण**; (प्राप)।
अणहियास वि [अनध्यासक] असहिष्णु, सहन नहीं करने वाला; (उव)।
अणहिल } न [अणहिल्ल] गुजरात देश की प्राचीन राज-
अणहिल्ल } धानी, जो आजकल 'पाटन' नाम से प्रसिद्ध है; (ती २६; कुमा)। °**वाडय** न [**पाटक**] देखो **अणहिल**; (गु १०; मुणि १०८८८)।
अणहीण वि [अनधीन] स्वतन्त्र, अनायत्त; (संग १६१)।
अणाइ वि [अनादि] आदि-रहित, नित्य; (सम १२५)। °**णिहण, निहण** वि [°**निधन**] आद्यन्त-वर्जित, शाश्वत; (उव; सम्म ६५; आव ४)। °**मंत**, °**वंत** वि [**मत्**] अनादि काल से प्रवृत्त; (पउम ११८, ३२; भवि)।
अणाइज्ज वि [अनादेय] १ अनुपादेय, ग्रहण करने को अयोग्य। २ नाम-कर्म का एक भेद, जिसके उदय से जीव का वचन, युक्त होने पर भी, ग्राह्य नहीं समझा जाता है; (कम्म १, २७)।
अणाइय वि [अनादिक] आदि-रहित, नित्य; (सम १२५)।
अणाइय वि [अज्ञातिक] स्वजन-रहित, अकेला; (भग १, १)।
अणाइय वि [अणातीत) पापी, पापिष्ठ; (भग १, १)।
अणाइय पुं [ऋणातीत] संसार, दुनयां; (भग १, १)।
अणाइय वि [अनादृत] जिसका आदर न किया गया है वह; (उप ८३३ टी)।
अणाइल वि [अनाविल] १ अकलुषित, निर्मल; (पण्ह २, १)।
अणाईअ देखो **अणाइय**; (उप १०३१ टी; पि ७०)।
अणाउ } पुं [अनायुष्क] १ जिन-देव; (सूअ १, ६)।
अणाउय } २ मुक्तात्मा, सिद्ध; (ठा १)।

अणाउल वि [अनाकुल] अव्याकुल, धीर ; (सुअ १, २, २ ; णाया १, ८) ।

अणाउत्त वि [अनायुक्त] उपयोग-शून्य, बे-ख्याल, असावधान ; (औप) ।

अणाएज्ज देखो अणाइज्ज ; (सम १५६) ।

अणागय पुं [अनागत] १ भविष्य काल,
" अणागयमपस्संता, पच्चुप्पन्नगवेसगा ।
ते पच्छा परितप्पंति, खीणे आउम्मि जोव्वणे" (सुअ १,३,४)।
२ वि. भविष्य में होनेवाला ; (सुअ १, २) । °द्धा स्त्री [°द्धा) भविष्य काल ; (नव ४२) ।

अणागलिय वि [अनर्गलित] नहीं रोका हुआ ; (उवा)।

अणागलिय वि [अनाकलित] १ नहीं जाना हुआ, अलक्षित ; (णाया १, ६) । २ अपरिमित " अणागलियतिव्वचंडरोसं सप्परूवं विउव्वइ " (उवा) ।

अणागार वि [अनाकार] १ आकार-रहित, आकृति-शून्य; (ठा १०) । २ विशेषता-रहित ; (कम्म ४, १२) । ३ न. दर्शन, सामान्य ज्ञान ; (सम ६५) ।

अणाजीव वि [अनाजीव] १ आजीविका-रहित ; २ आजीविका की इच्छा नहीं रखने वाला ; ३ निःस्पृह, निरीह ; (दस ३) ।

अणाजीवि वि [अनाजीविन्] ऊपर देखो " अगिलाई अणाजीवी " (पडि ; निचू १) ।

अणाड पुं [दे] जार, उपपति ; (दे १, १८) ।

अणाढिय वि [अनादृत] १ जिसका आदर न किया गया हो वह, तिरस्कृत ; (आव ३) । २ पुं. जम्बूद्वीप का अधिष्ठायक एक देव; (ठा २, ३) । ३ स्त्री. जम्बूद्वीप के अधिष्ठायक देव को राजधानी ; (जीव ३) ।

अणाणुगामिय वि [अनानुगामिक] १ पीछे नहीं जाने वाला ; (ठा ५, १) । २ न. अवधिज्ञान का एक भेद ; (णंदि) ।

अणादिय, **अणादीय** } देखो अणाइय; (इक; पण्ह १, १ ; ठा ३, १) ।

अणादेज्ज देखो अणाइज्ज ; (पण्ह १, ३) ।

अणाभोग पुं [अनाभोग] १ अनुपयोग, बे-ख्याली, असावधानी ; (आव ४) । २ न. मिथ्यात्व-विशेष ; (कम्म ४, ५१) ।

अणामिय वि [अनामिक] १ नाम-रहित ; २ पुं. असाध्य रोग ; (तंदु) । ३ स्त्री. कनिष्ठांगुली के ऊपर की अंगुली।

अणाय वि [अज्ञात] नहीं जाना हुआ, अपरिचित ; (पउम २४, १७) ।

अणाय पुं [अनाक] मर्त्यलोक, मनुष्य-लोक ; (से १,१)।

अणाय पुं [अनात्मन्] आत्म-भिन्न; आत्मा से पर ; (सम १) ।

अणायग वि [अनायक] नायक-रहित ; (पउम ५६, ७०) ।

अणायग वि [अज्ञातक] स्वजन-रहित, अकेला; (निचू ६)।

अणायग वि [अज्ञायक] अजान, निर्बोध; (निचू ११)।

अणायतण, **अणाययण** } न [अनायतन] १ वेश्या आदि नीच लोगों का घर ; (दस ५, १) । २ जहां सज्जन पुरुषों का संसर्ग न होता हो वह स्थान ; (पण्ह २, ४) । ३ पतित साधुओं का स्थान ; (आव ३) । ४ पशु, नपुंसक वगैरः के संसर्ग वाला स्थान ; (ओघ ७६३) ।

अणायत्त वि [अनायत्त] पराधीन ; (पउम २६,२६)।

अणायर पुं [अनादर] अ-बहुमान, अपमान; (पाअ) ।

अणायरण न [अनाचरण] अनाचार, खराब आचरण ।

अणायरणया स्त्री [अनाचरण] ऊपर देखो ; (सम ७१) ।

अणायरिय देखो अणज्ज=अनार्य ; (पण्ह १, १; पउम १४, ३०) ।

अणायार देखो अणागार=अनाकार ; (विसे) ।

अणायार पुं [अनाचार] १ शास्त्र-निषिद्ध आचरण ; (स १८८) । २ गृहीत नियमों का जान-बुझ कर उल्लंघन करना, व्रत-भङ्ग ; (वव १) ।

अणारिय देखो अणज्ज=अनार्य ; (उवा) ।

अणारिस वि [अनार्ष] जो ऋषि-प्रणीत न हो वह ; (पउम ११, ८०) ।

अणारिस वि [अन्यादृश] दूसरे के जैसा; (नाट) ।

अणालत्त वि [अनालपित] अनुक्त, अकथित, नहीं बुलाया हुआ; (उवा) ।

अणालवय पुं [अनालपक] मौन, नहीं बोलना; (पाअ)।

अणावरण वि [अनावरण] १ आवरण-रहित; २ न. केवल ज्ञान; (सम्म ७१) ।

अणाविट्ठि, **अणावुट्ठि** } स्त्री [अवृष्टि] वर्षा का अभाव ; (पउम २०, ८७; सम ६०) ।

अणाविल वि [अनाविल] १ निर्मल, स्वच्छ ; (गउड)।

अणासंसि वि [अनाशंसिन्] अनिच्छु, निस्पृह ; (बृह १)।
अणासय पुं [अनाश, °क] अनशन, भोजनाभाव "खारस्स लोणस्स अणासएणं" (सूअ १, ७, १३)।
अणासव वि [अनाश्रव] १ आश्रव-रहित; २ पुं. आश्रव का अभाव, संवर ; ३ अहिंसा, दया; (पण्ह २, १)।
अणासिय [अनशित] भूखा ; (सूअ १, ५, २)।
अणाह वि [अनाथ] १ शरण-रहित ; (निचू ३)। २ स्वामि-रहित, मालिक-रहित। ३ रंक, गरीब, विचारा ; (णाया १, ८)। ४ पुं. एक जैन मुनि ; (उत्त २०)।
अणाहि, **अणाहिय** वि [अनाधि, °क] मानसिक पीड़ा से रहित; (स ३, ४४ ; पि ३६५)।
अणाहिट्ठि पुं [अनाधृष्टि] एक अन्तकृद् मुनि ; (अन्त३)।
अणिइय वि [अनियत] १ अनियमित , अव्यवस्थित ; २ पुं. संसार ; (भग ६, ३३)।
अणिउंचिय वि [अनिकुञ्चित] टेढ़ा नहीं किया हुआ, सरल ; (गउड)।
अणिउँत, **अणिउँतय**, **अणिउँत्तय** देखो अइमुत्त ; (दे ४,३८ ; हे १, १७८ ; कुमा)।
अणिएय वि [अनियत] अनियमित, अप्रतिबद्ध ; "अखिले अगिद्धे अणिएयचारी, अभयंकरे भिक्खू अणाविलप्पा" (सूअ १, ७, २८)।
अणिंदिय वि [अनिन्दित] १ जिसकी निन्दा न की गई हो वह, उत्तम ; (धर्म १)। २ पुं. किन्नर देव की एक जाति ; (पण्ण १)।
अणिंदिय वि [अनिन्द्रिय] १ इंद्रिय-रहित; २ पुं. मुक्त जीव; ३ केवलज्ञानी ; (ठा १०)। ४ वि. अतीन्द्रिय, जो इंद्रियों से जाना न जा सके "नय विज्जइ तग्गहणे लिंगंपि अणिंदियत्तणओ" (सुर १२, ४८; स १६८; विसे १८६२)।
अणिंदिया स्त्री [अनिन्दिता] ऊर्ध्व लोक में रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी ; (ठा ८)।
अणिक्क वि [अनेक] एक से ज्यादः; (नव ४३)। °वाइ वि [°वादिन्] अक्रियावादी ; (ठा ८)।
अणिक्किणी स्त्री [अनीकिनी] ऐसी सेना जिसमें २१८७ हाथी, २१८७ रथ, ६५६१ घोड़े और १०९३५ प्यादें हों; (पउम ५६, ६)।
अणिक्खित्त वि [अनिक्षिप्त] नहीं छोड़ा हुआ, अपरित्यक्त, अविच्छिन्न, "अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ" (उवा; औप)।
अणिगण, **अणिगिण** देखो अणगिण ; (जीव ३; सम १७)।
अणिग्गह वि (अनिग्रह) स्वच्छन्द, असंयत; (पण्ह १, ३)।
अणिच्च वि [अनित्य] नश्वर, अस्थायी ; (नव २४; प्रासु ६५)। °भावणा स्त्री [°भावना] सांसारिक पदार्थों की अनित्यता का चिन्तन ; (पव ६७)। °णुप्पेहा स्त्री [°नुप्रेक्षा] देखो पूर्वोक्त अर्थ ; (ठा ४, १)।
अणिट्ठ वि [अनिष्ट] अप्रीतिकर, द्वेष्य ; (उव)।
अणिट्ठिय वि [अनिष्ठित] असंपूर्ण ; (गउड)।
अणिण देखो अणिरिण ; (नाट)।
अणिदा स्त्री [दे. अनिदा] १ बिना ख्याल किये की गई हिंसा ; (भग १६, ५)। २ चित्त की विकलता ; ३ ज्ञान का अभाव ; (भग १, २)।
अणिमा पुंस्त्री [अणिमन्] आठ सिद्धियों में एक सिद्धि, अत्यन्त छोटा बन जाने की शक्ति ; (पउम ७, १३६)।
अणिमिस, **अणिमेस** वि [अनिमिष, °मेष] १ निमेष-शून्य; (सुर ३, १७३)। २ पुं. मत्स्य, मछली; (दस १)। ३ देव, देवता ; (वव १; श्रा १६)। °नयण पुं [नयन] देव, देवता ; (विसे ३४८६)।
अणिय न [अनीक] सैन्य, लश्कर ; (कप्प)।
अणिय न [अनृत] असत्य, झूठ ; (ठा १०)।
अणिय न [दे] धार, अग्र भाग ; (पण्ह २, २)।
अणिय वि [अनित्य] अस्थिर, अनित्य ; (उव)।
अणियट्ट पुं (अनिवर्त] १ मोक्ष, मुक्ति ; (आचा १, ५, १)। २ एक महाग्रह ; (ठा २, ३)।
अणियट्टि वि [अनिवर्तिन्] १ निवृत्त नहीं होनेवाला ; पीछे नहीं लौटने वाला ; (औप)। २ न. शुक्ल-ध्यान का एक भेद ; (ठा ४, १)। ३ पुं. एक महाग्रह ; (चंद २०)। ४ आगामी उत्सर्पिणी काल में होनेवाले एक तीर्थंकर देव का नाम ; (सम १५४)।
अणियट्टि वि [अनिवृत्ति] १ निवृत्ति-रहित, व्यावृत्ति-वर्जित (कर्म २, २)। २ नववाँ गुण-स्थानक ; (कर्म २)। °करण न [°करण] आत्मा का विशुद्ध परिणाम-विशेष (आचा)। °बादर न [°बादर] १ नववाँ गुण-स्थानक ; २ नववें गुण-स्थानक में प्रवृत्त जीव; (आव ४)।
अणियण देखो अणगिण ; (जीव ३)।

अणियय वि [**अनियत**] १ अव्यवस्थित, अनियमित ; (उव) । २ कल्पवृक्ष की एक जाति, जो वस्त्र देती है ; (ठा १०) ।

अणिया देखो **अणिदा** ; (पिंड) ।

अणिरिक्क वि [**दे**] परतन्त्र, पराधीन ; (काप्र ५४ ; गा ६६१) ।

अणिरिण वि [**अनृण**] ऋण-वर्जित, उऋण, अनृणी ; (अभि ४६; चारु ६६) ।

अणिरुद्ध वि [**अनिरुद्ध**] १ अप्रतिहत, नहीं रोका हुआ ; (सूअ १, १२) । २ एक अन्तकृद् मुनि; (अन्त ४) ।

अणिल पुं [**अनिल**] १ वायु, पवन ; (कुमा) । २ एक अतीत तीर्थंकर का नाम ; (तित्थ) । ३ राक्षस-वंशीय एक राजा ; (पउम ५, २६४) ।

अणिला स्त्री [**अनिला**] वाईसवें तीर्थंकर की एक शिष्या; (पव ६) ।

अणिल्ल न [**दे**] प्रभात, सवेरा ; (दे १, १६) ।

अणिस न [**अनिश**] निरन्तर, सदा, हमेशां ; (गा २६२, प्रासू २६) ।

अणिसट्ठ } वि [**अनिसृष्ट**] १ अनिक्षिप्त ; २ असंमत,
अणिसिट्ठ } अननुज्ञात; ३ ऐसी भिक्षा, जिसके मालिक अनेक हों और जा सब की अनुमति से ली न गई हो,—साधु की भिक्षा का एक दोष ; (पिंड; औप) ।

अणिसीह वि [**अनिशीथ**] शास्त्र-विशेष, जो प्रकाश में पढ़ा या पढ़ाया जाय ; (आवम) ।

अणिस्सकड वि [**अनिश्रोकृत**] जिस पर किसी खास व्यक्ति का अधिकार न हा, सर्व-साधारण ; (धर्म २) ।

अणिस्सा स्त्री [**अनिश्रा**] अनासक्ति, आसक्ति का अभाव; (उव) ।

अणिस्सिय वि [**अनिश्रित**] १ अनासक्त, आसक्ति-रहित ; (सूअ १, १६) । २ प्रतिबन्ध-रहित, रुकावट-वर्जित , (दस १) । ३ अनाश्रित, किसी के साहाय्य की इच्छा न रखने वाला ; (उत्त १६) । ४ न. ज्ञान-विशेष, अवग्रह-ज्ञान का एक भेद, जो लिंग या पुस्तक के विना ही हाता है ; (ठा ६) ।

अणिह वि [**अनीह**] १ धीर, सहिष्णु ; (सूअ १, २, २) २ निष्कपट, सरल ; (सूअ १, ८) । ३ निर्मम, निःस्पृह ; (आचा) ।

अणिह वि [**दे**] १ सदृश, तुल्य ; २ न. मुख, मुँह ; (दे १, ५१) ।

अणिहय वि [**अनिहत**] अहत, नहीं मारा हुआ । °रिउ पुं [°**रिपु**] एक अन्तकृद् मुनि ; (अन्त ३) ।

अणिहस वि [**अनीदृश**] इस माफिक नहीं, विलक्षण ; (स ३०७) ।

अणिय न [**अनीक**] सेना, लश्कर ; (औप) ।

अणीयस पुं [**अनीयस**] एक अन्तकृद् मुनि का नाम ; (अन्त ३) ।

अणीस वि [**अनीश**] असमर्थ ; (अभि ६०) ।

अणीसकड देखो **अणिस्सकड** ; (धर्म २) ।

अणीहारिम वि [**अनिर्हारिम**] गुफा आदि में होने वाला मरण-विशेष ; (भग १३, ८) ।

अणु अ [**अनु**] यह अव्यय नाम और धातु के साथ लगता है और नीचेके अर्थों में से किसी एक को बतलाता है ;—१ समीप, नजदीक ; जैसें—'अणुकुंडल' ; (गउड) । २ लघु, छोटा ; जैसे—'अणुगाम' (उत्त ३) । ३ क्रम. परिपाटी ; जैसे—'अणुगुरु' ; (बृह १) । ४ में, भोतर; जैसे—'अणुजत्त' (महा) । ५ लक्ष्य करना ; जैसें— " अणु जिणं अकारि संगीयं इत्थीहिं " (कुमा) ; " अणु धारं संदट्ठभेमोत्तिए तुह असिम्मि सच्चविया " (गउड) । ६ योग्य, उचित ; जैसे—'अणुजुत्ति' (सूअ १, ४, १) । ७ वीप्सा, जैसे—' अणुदियं ' (कुमा) । ८ बीच का भाग, जैसे—'अणुदिसी' (पि ४१३) । ६ अनुकूल, हितकर ; जैसे— 'अणुधम्म' (सूअ १, २, १) । १० प्रतिनिधि, जैसे—'अणुप्पभु' (निचू २) । ११ पीछे, बाद ; जैसे—'अणुमज्जण' (गउड) । १२ बहुत, अत्यंत; जैसे—'अणुवंक' (मा ६२) । १३ मदद करना, सहायता करना, जैसे—'अणुपरिहारि' (ठा ३, ४) । १४ निरर्थक भी इसका प्रयोग होता है, जैसे—देखो 'अणुक्कम', 'अणुसरिस' ।

अणु वि [**अणु**] १ थोड़ा, अल्प ; (पण्ह २, ३) । २ छोटा ; (आचा) । ३ पुं. परमाणु ; (सम्म १३६) । °भय वि (°भत) उत्तम कुल, श्रेष्ठ वंश ; (कप्प) । °विरइ स्त्री [°**विरति**] देखो **देसविरइ**; (कम्म १,१८) ।

अणु पुं [**दे**] धान-विशेष, चावलकी एक जाति; (दे १, ५२)

°**अणु** स्त्री [**तनु**] शरीर " सुअणु " (गा २६६) ।

अणुअ देखो **अणु**=अणु ; (पाअ) ।

अणुअ वि [**अज्ञ**] अजान, मूर्ख ; (गा १८४, ३४५) ।

अणुअ पुं [दे] १ आकृति, आकार। २ पुंस्त्री. धान्य-विशेष ; (दे १, ५२ ; श्रा १८)।

अणुअ वि [अनुग] अनुसरण करने वाला "अधम्माणुए" (विपा १, १)।

अणुअ वि [अनुज] १ पीछे से उत्पन्न ; २ पुं. छोटा भाई ; ३ स्त्री. छोटी बहिन ; (अभि ८२; पउम २८,१००)।

अणुअंच सक [अनु+कृष्] पीछे खींचना। संकृ—**अणुअंचिवि** ; (भवि)।

अणुअंपा स्त्री [अनुकम्पा] दया, करुणा ; (से ५, २४; गा १६३)।

अणुअंपि वि [अनुकम्पिन्] दयालु, करुणा करने वाला ; (अभि १७३)।

अणुअत्तय वि [अनुवर्त्तक] अनुकूल आचरण करने वाला, अनुसरण करने वाला ; (विसे ३४०२)।

अणुअत्ति देखो **अणुवत्ति** ; (पुप्फ ३२६)।

अणुअर वि [अनुचर] १ सहायताकारी, सहचर ; (पाअ)। २ सेवक, नौकर ; (प्रामा)।

अणुअल्ल न [दे] प्रभात, सुबह ; (दे १, १६)।

अणुआ स्त्री [दे] लाठी ; (दे १, ५२)।

अणुआर पुं [अनुकार] अनुकरण ; (नाट)।

अणुआरि वि [अनुकारिन्] अनुकरण करने वाला; (नाट)।

अणुआस पुं [अनुकास] प्रसार, विकास; (णाया १, १)।

अणुइअ पुं [दे] धान्य-विशेष, चना ; (दे १, २१)।

अणुइअ देखो **अणुदिय**।

अणुइण्ण वि [अनुकीर्ण] १ व्याप्त, भरा हुआ। २ नहीं गिरा हुआ, अपतित "अवाइण्णपत्ता अणुइण्णपत्ता निद्धु-यजरढपंडुपत्ता" (औप)।

अणुइण्ण वि [अनुद्गीर्ण] बहार नहीं निकला हुआ ; (औप)।

अणुइण्ण देखो **अणुचिण्ण**।

अणुइण्ण देखो **अणुदिण्ण**।

अणुऊल वि [अनुकूल] अप्रतिकूल, अनुकूल ; (गा ५२३)।

अणुऊल सक [अनुकूलय्] अनुकूल करना। भवि—**अणुऊलइस्सं** ; (पि ५२८)।

अणुओअ पुं [अनुयोग] १ व्याख्या, टीका, सूत्र का विस्तार से अर्थ-प्रतिपादन ; (ओघ २)। २ पृच्छा, प्रश्न, (अभि ४४)।

अणुओइय वि [अनुयोजित] प्रवर्तित, प्रवृत्त कराया हुआ ; (णंदि)।

अणुओग देखो **अणुओअ** ; (वसे ६)।

अणुओगि पुं [अनुयोगिन्] सूत्रों का व्याख्याता आचार्य "अणुओगी लोगाणं कल संसयणासओ दढं होइ" (पंचव ४)।

अणुओगिअ वि [अनुयोगिक] दीक्षित, मुनि-शिष्य ; (णंदि)।

अणुओयण न [अनुयोजन] बन्धन, जोड़ना ; (विसे १३८५)।

अणुकंप सक [अनु+कम्प्] १ दया करना। २ भक्ति करना। ३ हत करना। वकृ—**अणुकंपंत** (नाट)। कृ—**अणुकंपणिज्ज, अणुकंपणीअ**; (अभि ६४; रयण १५)।

अणुकंप वि [अनुकम्प्य] अनुकम्पा के योग्य; (दे १,२२)।

अणुकंप } वि [अनुकम्प, °क] १ दयालु, करुण ; २
अणुकंपय } भक्त, भक्तिमान् ; (उत १२); "हिआणुकंपएणं देवेणं हरिणगमेसिणा" (कप्प)। ३ हितकर "आयाणुकंपए णाममेगे, नो पराणुकंपए" (ठा ४, ४)।

अणुकंपण न [अनुकम्पन] १ दया, कृपा ; (वव ३)। २ भक्ति, सेवा "माउअणुकंपणट्ठाए" (कप्प)।

अणुकंपा स्त्री [अनुकम्पा] ऊपर देखो ; (णाया १, १); "आयरियणुकंपाए गच्छो अणुकंपिओ महाभागो" (कप्प-टी)। °**दाण** न [°दान] करुणा से गरीबों को अन्न आदि देना "अणुकंपादाणं सड्ढयाण न कहिंपि पडिसिद्धं" (धर्म २)।

अणुकंपि वि [अनुकम्पिन्] १ दयालु, कृपालु ; (माल ७५)। २ भक्ति करने वाला ; (सूअ १, ३, २)।

अणुकंपिअ वि [अनुकम्पित] जिस पर अनुकम्पा की गई हो वह ; (नाट)।

अणुकड्ढ सक [अनु+कृष्] १ खींचना ; २ अनुसरण करना। वकृ—**अणुकड्ढमाण, अणुकड्ढेमाण** ; (विपा १, १; णंदि)।

अणुकड्ढि स्त्री [अनुकृष्टि] अनुवर्तन, अनुसरण ; (पंच ५)।

अणुकड्ढिय वि [अनुकृष्ट] अनुकृत, अनुसृत ; (स १८२)।

अणुकप्प पुं [अनुकल्प] १ बड़े पुरुषों के मार्ग का अनुकरण ; २ वि. महापुरुषों का अनुकरण करनेवाला "णाण-चरणड्ढगाणं पुव्वायरियाण अणुकित्तिं कुणइ, अणुगच्छइ गुणगणे, अणुकप्पं से वियाणाहि" (पंचभा)।

अणुकम पुं [अनुक्रम] परिपाटी, क्रम ; (महा)। °सो अ [°शस्] क्रम से, परिपाटी से ; (जी २८)।
अणुकर सक [अनु+कृ] अनुकरण करना, नकल करना। अणुकरेइ ; (स ४३६)।
अणुकरण न [अनुकरण] नकल ; (वव ३)।
अणुकह सक [अनु+कथय्] अनुवाद करना, पीछे बोलना।
अणुकहण न [अनुकथन] अनुवाद ; (सूअ १, १३)।
अणुकार पुं [अनुकार] अनुकरण, नकल ; (कप्पू)।
अणुकारि वि [अनुकारिन्] अनुकरण करने वाला " किन्न-राणुकारिणा महुरगेएण " (महा)।
अणुकिइ स्त्री [अनुकृति] अनुकरण, नकल ; " पुव्वाय-रियाणं नाणग्गहणेण य तवोविहाणेसु य अणुकिइं करेइ " पंचू)।
अणुकिण्ण वि [अनुकीर्ण] व्याप्त, भरा हुआ ; (पउम ६१, ७)।
अणुकित्तण न [अनुकीर्तन] वर्णन, प्रशंसा, श्लाघा ; (पउम ६३, ७३)।
अणुकित्ति देखो अणुकिइ ; (पंचभा)।
अणुकुइय वि [अनुकुचित] १ पीछे फेंका हुआ ; २ ऊंचा किया हुआ ; (निचू ८)।
अणुकुण सक [अनु+कृ] अनुकरण करना। अणुकुणइ ; (विक्र १२६)।
अणुकूल देखो अणुऊल ; (हे २, २१७)।
अणुकूलण न [अनुकूलन] अनुकूल करना, प्रसन्न करना " तं कहइ। तम्मज्झे जिट्ठसुणी तच्चित्तणुकूलणत्थं जं " (सुपा २३४)।
अणुक्कंत वि [अन्वाक्रान्त] आचरित, अनुष्ठित ; (आचा)।
अणुक्कंत वि [अनुक्रान्त] आचरित, विहित, अनुष्ठित " एस विही अणुक्कंते माहणेणं मइमया " (आचा)।
अणुक्कम सक [अनु+क्रम्] अतिक्रमण करना। वकृ— अणुक्कमंत ; (सूअ १, ५, १, ७)।
अणुक्कम देखो अणुकम ; (महा ; नव १६)।
अणुक्कोस पुं [अनुक्रोश] दया, करुणा ; (ठा ४, ४)।
अणुक्कोस पुं [अनुत्कर्ष] १ उत्कर्ष का अभाव ; २ वि. उत्कर्ष-रहित ; (भग ८, १०)।
अणुक्खित्त वि [अनुत्क्षिप्त] ऊंचा न किया हुआ " दिट्ठ धणुक्खित्तमुहं एसो मग्गो कुलवहूणं " (गा ५२६)।

अणुग वि [अनुग] अनुचर, नौकर ; (दे ७, ६६)।
अणुगंतव्व देखो अणुगम=अनु+गम्।
अणुगंपा स्त्री [अनुकम्पा] करुणा, दया; (स १५८)।
अणुगंपिय वि [अनुकम्पित] जिस पर करुणा की गई हो वह ; (स ४७५)।
अणुगच्छ देखो अणुगम=अनु+गम्। अणुगच्छइ ; वकृ—अणुगच्छंत, अणुगच्छमाण ; (नाट ; सूअ १, १४)। कवकृ—अणुगच्छिज्जंत ; (गाया १, २)। संकृ—अणुगच्छित्ता ; (कप्प)।
अणुगच्छण देखो अणुगमण ; (पुप्फ ४०८)।
अणुगच्छिर वि [अनुगामिन्] अनुसरण करने वाला ; (सण)।
अणुगज्ज अक [अनु+गर्ज्] प्रतिध्वनि करना, प्रतिशब्द करना। वकृ—अणुगज्जेमाण ; (णाया १, १८)।
अणुगम सक [अनु+गम्] १ अनुसरण करना, पीछे जाना। २ जानना, समझना। ३ व्याख्या करना, सूत्र के अर्थों का स्पष्टीकरण करना। कर्म---अणुगम्मइ; (विसे ६१३)। कवकृ—अणुगम्मंत, अणुगम्ममाण ; (उप ६ टी; सुपा ७८; २०८)। संकृ—अणुगम्म ; (सूअ १, १४)। कृ—अणुगंतव्व ; (सुर ७, १७६ ; पण्ण १)।
अणुगम पुं [अनुगम] १ अनुसरण, अनुवर्तन; (दे २,६१)। २ जानना, ठीक २ समझना, निश्चय करना ; (ठा १)। ३ सूत्र की व्याख्या, सूत्र के अर्थ का स्पष्टीकरण ; (वव १)। ४ अन्वय, एक की सत्ता में दूसरे की विद्यमानता; (विसे २६०)। ५ व्याख्या, टीका ; (विसे १३५७)। " अणुगम्मइ तेण तहिं, तओ व अणुगमणमेव वाणुगमो। अणुणोणुरूवओ वा, जं सुत्तत्थाणमणुसरणं " (विसे ६१३)।
अणुगमण न [अनुगमन] ऊपर देखो।
अणुगमिर वि [अनुगन्तृ] अनुसरण करने वाला ; (दे ६, १२७)।
अणुगय वि [अनुगत] १ अनुसृत, जिसका अनुसरण किया गया हो वह ; (पण्ह १, ४)। २ ज्ञात, जाना हुआ ; (विसे)। ३ अनुवृत्त, जो पूर्व से बराबर चला आया हो ; (पण्ह १, ३)। ४ अतिक्रान्त ; (विसे ६५६)।
अणुगर देखो अणुकर। अणुगरेइ ; (स ३३४)। वकृ—अणुगरिंत ; (स ६८)।
अणुगवेस सक [अनु+गवेष्] खोजना, शोधना, तलाश

करना । अणुगवेसइ ; (कस) । वक्--अणुगवेसेमाण ; (भग ८, ५) । कृ--अणुगवेसियव्व ; (कस) ।

*अणुगह देखो अणुग्गह=अनु+ग्रह् ; (नाट) ।

अणुगहिअ देखो अणुगिहिअ ; (दे ८, २६) ।

*अणुगाम पुं [अणुग्राम] १ छोटा गाँव ; (उत्त ३) । २ उपपुर, शहर के पास का गाँव ; (ठा ५, २) । ३ विवक्षित गाँव से दुसरा गाँव "गामाणुगामं दुइज्जमाणे" (विपा १, १ ; औप ; आचा) ।

*अणुगामि, *अणुगामिय } वि [अनुगामिन्, °मिक] १ अनुसरण करनेवाला, पीछे २ जानेवाला ; (औप) । २ निर्दोष हेतु, शुद्ध कारण ; (ठा ३, ३) । ३ अवधिज्ञान का एक भेद ; (कम्म १, ८) । ४ अनुचर, सेवक ; (सूअ १,२,३) ।

*अणुगारि वि [अनुकारिन्] अनुकरण करनेवाला ; नक्काल्ची ; (महा; धर्म ५; स ६३०) ।

अणुगिइ स्त्री [अनुकृति] अनुकरण, नकल ; (श्रा १) ।

अणुगिण्ह देखो अणुग्गह=अनु+ग्रह् । वक्--अणुगिण्हमाण, अणुगिण्हेमाण; (निर १,१; णाया १, १६) ।

अणुगिद्ध वि [अनुगृद्ध] अत्यंत आसक्त ; लोलुप ; (सूअ १, ३, ३) ।

अणुगिद्धि स्त्री [अनुगृद्धि] अत्यासक्ति ; (उत्त ३) ।

अणुगिल सक [अनु+गॄ] भक्षण करना । संकृ--अणुगिलइत्ता ; (णाया १, ७) ।

अणुगिहीअ वि [अनुगृहीत] जिस पर महरवानी की गई हो वह ; (स १४; १६३) ।

अणुगीय वि [अनुगीत] १ पीछे कहा हुआ, अनूदित ; २ पूर्व ग्रन्थकार के भाव के अनुकूल किया हुआ ग्रन्थ, व्याख्यान आदि ; (उत्त १३) । ३ जिसका गान किया गया हो वह, कीर्त्तित, वर्णित । ४ न. गाना, गीत "उज्जाणे ......मत्तभिंगाणुगीए" (पउम ३३, १४८) ।

अणुगुण वि [अनुगुण] १ अनुकूल, उचित, योग्य ; (नाट) । २ तुल्य, सदृश गुण वाला,

"जाण अलंकारसमो, विहवो मइलेइ तेवि वड्ढंतो ।
विच्छाएइ मियंकं, तुसार-वरिसो अणुगुणेवि" (गउड) ।

अणुगुरु वि [अनुगुरु] गुरु-परम्परा के अनुसार जिस विषय का व्यवहार होता हो वह ; (बृह १) ।

अणुगूल वि [अनुकूल] अनुकूल ; (स ३७८) ।

अणुगेज्झ वि [अनुग्राह्य] अनुग्रह के योग्य, कृपा-पात्र ; (प्राप) ।

अणुगेण्ह देखो अणुग्गह=अनु+ग्रह् । अणुगेण्हंतु ; (पि ५१२) ।

अणुग्गह सक [अनु+ग्रह्] कृपा करना, महरवानी करना । कृ--अणुग्गहइदव्व, अणुग्गाह्रिदव्व (शौ) (नाट) ।

अणुग्गह पुं [अनुग्रह] १ कृपा, महरवानी ; (कप्पू) । २ उपकार ; (औप) । ३ वि. जिस पर अनुग्रह किया जाय वह ; (वव १) ।

अणुग्गह पुं [अनवग्रह] जैन साधुओं को रहने के लिए शास्त्र-निषिद्ध स्थान,

"णो गोयरे णो वणगोणियाणं, णो वद्ध दुज्झंति य जत्थ गावो ।
अण्णत्थ गोणेहिसु जत्थ खुण्णं, स उग्गहो सेसमणुग्गहो तु" (बृह ३) ।

अणुग्गहिअ, अणुग्गहीअ, अणुग्गिहीअ } वि [अनुगृहीत] जिस पर कृपा की गई हो वह, आभारी ; (महा ; सुपा १६२ ; स ६७) ।

अणुग्घाइम न [अनुद्घातिम] १ महा-प्रायश्चित्त का एक भेद ; (ठा ३, ४) । २ वि. महा प्रायश्चित का पात्र ; (ठा ३, ४) ।

अणुग्घाइय वि [अनुद्घातिक] १ अनुद्घातिम-नामक महा प्रायश्चित्त का पात्र, (ठा ५, ३) । २ न. ग्रन्थांश-विशेष, जिसमें अनुद्घातिम प्रायश्चित्त का वर्णन है ; (पण्ह २, ५) ।

अणुग्घाय वि [अनुद्घात] १ उद्घात-रहित ; २ न. निशीथ सूत्र का वह भाग, जिसमें अनुद्घातिक प्रायश्चित्त का विचार है "उग्घायमणुग्घायं आरोवण तिविहमो निसीहं तु" (आव ३) ।

अणुग्घायण न [अणोद्घातन] कर्मों का नाश ; (आचा) ।

अणुग्घास सक [अनु+ग्रासय्] खीलाना, भोजन कराना ; "असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा अणुग्घासेज्ज वा अणुपाएज्ज वा" (निसी ७) । वक्--अणुग्घासंत ; (निचू ७) ।

अणुचय पुं [अनुचय] फैला कर इकट्ठा करना ; (उप पृ १५) ।

अणुचर सक [अनु+चर्] १ सेवा करना । २ पीछे २ जाना, अनुसरण करना । ३ अनुष्ठान करना । अणुचरइ ; (आरा ६) । अणुचरंति ; (स १३०) । कर्म--अणुचरिज्जइ ; (विसे ३५५४) । वक्--अणुचरंत ;

(पुप्फ ३१३)। संकृ—अणुचरित्ता ; (चउ १४)।
अणुचर देखो **अणुअर** ; (उत्त २८)।
अणुअरिय वि [अनुचरित] अनुष्ठित, विहित, किया हुआ ; (कप्प)
अणुचि सक [अनु+च्यु] मरना, एक जन्म से दूसरे जन्म में जाना। संकृ—अणुचिऊण ; (महा)।
अणुचिंत सक [अनु+चिन्त्] विचारना, याद करना, सोचना। अणुचिंते; (संथा ९६)। वकृ—अणुचिंतेमाण; (णाया १,१)। संकृ—अणुचीइ, अणुचीति, अणुवीइ; (आचा; सूअ १, १, ३, १३ ; दस ७)।
अणुचिंतण न [अनुचिन्तन] सोच-विचार, पर्यालोचन ; (आव ४)।
अणुचिंता स्त्री [अनुचिन्ता] ऊपर देखो ; (आव ४)।
अणुचिट्ठ सक [अनु+स्था] १ अनुष्ठान करना। २ करना। अणुचिट्ठइ ; (महा)।
अणुचिण्ण वि [अनुचीर्ण] १ अनुष्ठित, आचरित, विहित ; "मोहतिगिच्छा य कया, विरियायारो य अणुचिण्णो" (ओघ २४९)। २ प्राप्त, मिला हुआ "कायसंफासमणुचिण्णा एगइया पाणा उद्दाइया" (आचा)। ३ परिणमित ; (जीव १)।
अणुचिण्णव वि [अनुचीर्णवत्] जिसने अनुष्ठान किया हो वह ; (आचा)।
अणुचिन्न देखो **अणुचिण्ण** ; (सुपा १६२ ; रयण ७५ ; पुप्फ ७५)।
अणुचिय वि [अनुचित] अयोग्य ; (बृह १)।
अणुचीइ / **अणचीति** } देखो **अणुचिंत**।
अणुच्च वि [अनुच्च] ऊंचा नहीं, नीचा। °कुइय वि [°कुचिक] नीची और अस्थिर शय्या वाला ; (कप्प)।
अणुच्छहंत वि [अनुत्सहमान] उत्साह नहीं रखता हुआ; (पउम १८, १८)।
अणुच्छित्त वि [अनुत्क्षिप्त] नहीं छोड़ा हुआ, अत्यक्त ; (गउड २३८)।
अणुच्छित्त वि [अनुत्थित] १ गर्व-रहित, विनीत ; २ स्फीत, समृद्ध ; ३ सबसे उन्नत, सर्वोच्च ; "पडिवद्धं नवर तुमे, नरिंदचक्कं पयाववियडंपि। गहवलयमणुच्छित्तं; धुवेव्व परियत्तइ णरिंद" (गउड)।
अणुच्छूढ वि [अनुत्क्षिप्त] अत्यक्त, नहीं छोड़ा हुआ ; (गा ५२६)।
अणुज पुं [अनुज] छोटा भाई ; (स ३८८)।
अणुजत्त न [अनुयात्र] यात्रा में "अगणया अणुजत्तं निग्गओ पेच्छइ कुसुमियं चूयं" (महा)।
अणुजा सक [अनु+या] अनुसरण करना, पीछे चलना। अणुजाइ ; (विसे ७१६)।
अणुजाइ वि [अनुयायिन्] अनुसरण करने वाला ; (सुपा ४०५)।
अणुजाण न [अनुयान] १ पीछे चलना ; २ महोत्सव-विशेष, रथयात्रा ; (बृह १)।
अणुजाण सक [अनु+ज्ञा] अनुमति देना, सम्मति देना। अणुजाणइ ; (उव)। भूका—अणुजाणित्था ; (पि ५१७)। हेकृ—अणुजाणित्तए ; (ठा २, १)।
अणुजाणण न [अनुज्ञान] अनुमति, सम्मति; (सूअ १, ६)।
अणुजाणावण न [अनुज्ञापन] अनुमति लेना, "अणुजाणावणविहिणा" (पंचा ६, १३)।
अणुजाणिय वि [अनुज्ञात] सम्मत, अनुमत ; (सुपा ५८४)।
अणुजाय वि [अनुयात] १ अनुगत, अनुसृत ; (उप १३७ टी)।
अणुजाय वि [अनुजात] १ पीछे से उत्पन्न ; २ सदृश, तुल्य "वसभाणुजाए" (सुज्ज १२)।
अणुजीवि वि [अनुजीविन्] १ आश्रित, नौकर, सेवक "पयईए च्चिय अणुजीविवच्छले" (सुपा ३३७; पाअ; स २४३) °त्त न [°त्व] आश्रय, नौकरी; (पि ५९७)।
अणजुत्ति स्त्री [अनुयुक्ति] योग्य युक्ति, उचित न्याय ; (सूअ १, ४, १)
अणुजेट्ठ वि [अनुज्येष्ठ] १ बडे के नजदीक का; (आवम)। २ छोटा, उतरता ; (पउम २२, ७९)।
अणुजोग देखो **अणुओअ** ; (ठा १०)।
अणुज्ज वि [अनूर्ज] उत्साह-रहित, अनुत्साही, हताश ; (कप्प)।
अणुज्ज वि [अनोजस्क] तेज-रहित, फीका "अणुज्जं दीणवयणं विहरइ" (कप्प)।
अणुज्ज वि [अनूद्य] उद्देश्य, लक्ष्य ; (धर्म १)।
अणुज्जा स्त्री (अनुज्ञा) अनुमति, सम्मति ; (पउम ३८, २४)।

अणुज्जिय वि [अनुर्जित] बल-रहित, निर्बल; (बृह ३) ।

अणुज्जुय वि [अनृजुक] असरल, वक्र, कपटी , (गा ७८६) ।

अणुज्झा सक [अनु+ध्यै] चिन्तन करना, ध्यान करना । संकृ—**अणुज्झाइत्ता** ; (आवम) ।

अणुज्झाण न [अनुध्यान] चिन्तन, विचार ; (आवम) ।

अणुझा देखो **अणुज्झा** । वकृ—**अणुझायंत**; (कुमा) ।

अणुझिअअ वि [दे] १ प्रयत, प्रयत्न-शील ; २ जागता, सावधान ; (षड्) ।

अणुट्ठ वि [अनुत्थ] नहीं ऊठा हुआ, स्थित ; (ओघ ७०)।

अणुट्ठा सक [अनु+स्था] १ अनुष्ठान करना, शास्त्रोक्त विधान करना । २ करना । कृ—**अणुट्ठियव्व, अणुट्ठेअ** (सुपा ५३७ ; सुर १४, ८५) ।

अणुट्ठाइ वि [अनुष्ठायिन्] अनुष्ठान करने वाला; (आचा) ।

अणुट्ठाण न [अनुष्ठान] १ कृति ; २ शास्त्रोक्त विधान ; (आचा) ।

अणुट्ठाण न [अनुत्थान] क्रिया का अभाव ; (उवा) ।

अणुट्ठावण न [अनुष्ठापन] अनुष्ठान कराना ; (कस) ।

अणुट्ठिय वि [अनुष्ठित] विधि से संपादित, विहित, किया हुआ ; (षड् ; सुर ४, १९९) ।

अणुट्ठिय वि [अनुत्थित] १ बैठा हुआ । २ आलसु, प्रमादी (आचा) ।

अणुट्ठियव्व देखो **अणुट्ठा** ।

अणुट्ठुभ न.[अनुष्टुप्] एक प्रसिद्ध छंद "पचक्खरगणणाए अणुट्ठुभाणं हवंति दस सहस्सा " (सुपा ६५९) ।

अणुट्ठेअ देखो **अणुट्ठा**

अणुण देखो **अणुणी** । अणुणह ; (भवि) ।

अणुणंत देखो **अणुणी** ।

अणुणय पुं [अनुनय] विनय, प्रार्थना ; (महा ; अभि ११९) ।

अणुणाइ वि [अनुनादिन्] प्रतिध्वनि करने वाला " गज्जियसहस्स अणुणाइणा " (कप्प) ।

अणुणाय पुं [अनुनाद] प्रतिध्वनि, प्रतिशब्द ; (विसे ३४०४) ।

अणुणाय वि [अनुज्ञात] अनुमत, अनुमोदित ; (पंचू) ।

अणुणास पुंन [अनुनास] १ अनुनासिक, जो नाक से बोला जाता है वह अक्षर ; २ वि सानुस्वार, अनुस्वार-युक्त; (ठा ७) । " कागस्सरमणुणासं च " (जीव ३ टी) ।

अणुणासिअ पुं [अनुनासिक] देखो ऊपर का १ ला अ(र्थ) (वज्जा ६) ।

अणुणी सक [अनु+नी] १ अनुनय करना, विनय क(रना) प्रार्थना करना । २ समझाना, दिलासा देना; सान्तवन क(रना) वकृ—**अणुणंत** " पुरोहियं तं कमसोणुणंतं " (उत्त १(४); भवि); **अणुणेंत** ; (गा ९०२) । कवकृ—**अणुणिज्जंत, अणुणिज्जमाण, अणुणोअमाण** ; (सुपा ३६(७); २, १६, पि ५३६) ।

अणुणीअ वि [अनुनीत] जिसका अनुनय किया गया वह ; (दे ८, ४८) ।

अणुणेंत देखो **अणुणी** ।

अणुण्णय वि [अनुन्नत] १ नीचा, नम्र ; (दस ५, १) २ गर्व-रहित, निरभिमानी "एत्थवि भिक्खू अणुण्णए विणं(ए)" (सूअ १, १६) ।

अणुण्णव सक [अनु+ज्ञापय्] १ अनुमति देना; आज्ञा देना, हुकुम देना । कर्म—अणुण्णविज्जइ; (उव) वकृ—**अणुण्णवेमाण**; (ठा ६) । कृ—**अणुण्णवे**(यव्व) (ओघ ३८५ टी) । संकृ—**अणुण्णवित्ता, अणुण्णवि**(य) (आवम; आचा २, २, ६) ।

अणुण्णवणया } स्त्री [अनुज्ञापना] १ अनु(मति,)
अणुण्णवणा } सम्मति ; २ आज्ञा, फरमायश ; (... ४४; ओघ ३८४ टी) ।

अणुण्णवणी स्त्री [अनुज्ञापनी] अनुमति-प्रकाशक भ(ाषा), अनुमति लेनेका वाक्य ; (ठा ४, ३) ।

अणुण्णा स्त्री [अनुज्ञा] १ अनुमति, अनुमोदन ; (... २, २) । २ आज्ञा । °**कप्प** पुं [°कल्प] साधुओं के लिए वस्त्र-पात्रादि लेने के विषय में शा(स्त्रोक्त) विधान ; (पंचभा) ।

अणुण्णाय वि [अनुज्ञात] १ जिसको आज्ञा दी गई वह । २ अनुमत, अनुमोदित ; (ठा ३, ४) ।

अणुण्ह वि [अनुष्ण] ठंडा, गरम नहीं वह ; (पि ३१...

अणुतड पुं [अनुतट] भेद, पदार्थों का एक जा(तिका) पृथक्करण, जैसे संतप्त लोहे को हथोड़े से पीटने से स्फु(लिंग) पृथक् होते हैं (ठा ५) ।

अणुतडिया स्त्री [अनुतटिका] १ ऊपर देखो ; (... ११) । २ तलाव, द्रह आदि का भेद ; (भास ७ ...

अणुतप्प अक [अनु+तप्] अनुताप करना, पछ(ताना) । अणुतप्पइ ; (सं १८४) ।

अणुतप्पि वि [अनुतापिन्] पश्चात्ताप करने वाला ; (वव १) ।
अणुताव पुं [अनुताप] पश्चात्ताप ; (पात्र; स १८४) ।
अणुताःवि देखो अणुतप्पि ; (उप ७२८ टी) ।
अणुत्त वि [अनुक्त] अकथित ; (पंच ५) ।
अणुत्तंत देखो अणुवत्त ।
अणुत्तप्प वि [अनुत्त्रप्य] १ परिपूर्ण शरीर । २ पूर्ण शरीरवाला ' होइ अणुत्तप्पो सो अविगलइंदियपडिप्पुण्णो" (वव २) ।
अणुत्तर वि [अनुत्तर] १ सर्व-श्रेष्ठ, सर्वोत्तम ; (ठा १०) । २ एक सर्वोत्तम देवलोक का नाम ; (अनु) । ३ छोटा " अणुत्तरो भाया " (पउम ६, ४) । °ग्गा स्त्री [°ग्र्या] एक पृथिवी जहां मुक्त जीवों का निवास है, (सूत्र १, ६) । °णाणि वि [°ज्ञानिन्] केवल-ज्ञानी ; (सूत्र १, २, ३) । °विमाण न [°विमान] एक सर्वोत्कृष्ट देवलोक ; (भग ६, ६) । °ववाइय वि [°पपातिक] अनुत्तर देवलोक में उत्पन्न; (अनु) । °ववाइयदसा स्त्री. व. [°पपातिकदशा] नववाँ जैन अंग-ग्रन्थ ; (अनु) ।
अणुत्थाण देखो अणुट्ठाण ; (स ६४६) ।
अणुत्थारय वि [अनुत्साह] हतोत्साह, निराश ; (कुमा)।
अणुदत्त पुं [अनुदात्त] नीचे से बोला जानेवाला स्वर ; (वृह १) ।
अणुदय पुं [अनुदय] १ उदय का अभाव ; २ कर्म-फल के अनुभव का अभाव ; (कम्म २, १३; १४;१५) ।
अणुदवि न [दे] प्रभात, सुवह ; (दे १, १६) ।
अणुदिअ वि [अनुदित] जिसका उदय न हुआ हो ; (भग) ।
अणुदिअस न [अनुदिवस] प्रतिदिन, हमेशां; (नाट) ।
अणुदिज्जंत वि [अनुदीयमान] उदय में न आता हुआ ; (भग) ।
अणुदिण न [अनुदिन] प्रतिदिन, हमेशां ; (कुमा) ।
अणुदिण्ण } वि [अनुदित] १ उदय को अप्राप्त ; २
अणुदिन्न } फल-दान में अतत्पर (कर्म); (भग १,२;३; " उदिण्ण=उदित " (भग १, ४; ७ टी) ।
अणुदिण्ण } व [अनुदीरित] १ जिसकी उदीरणा दूर
अणुदिन्न } भविष्य में हो ; २ जिसकी उदीरणा भविष्य में न हो ; (भग १, ३) ।
अणुदिय वि [अनुदित] उदय को अप्राप्त " मिच्छत्तं जमुदिन्नं तं खीणं अणुदियं च उवसंतं " (भग १, ३ टी) ।
अणुदियह न [अनुदिवस] प्रतिदिन, हमेशां ; (सुर १, ११५) ।
अणुदिव न [दे] प्रभात, प्रातःकाल ; (षड्) ।
अणुदिसा } स्त्री [अनुदिक्] विदिक्, ईशान कोण आदि
अणुदिसी } विदिशा ; (विसे २७०० टी; पि ६८; ४१३; कप्प) ।
अणुद्दिट्ठ वि [अनुद्दिष्ट] जिसका उद्देश न किया गया हो वह ; (पण्ह २, १)
अणुद्ध वि [अनूर्ध्व] ऊंचा नहीं, नीचा ; (कुमा) ।
अणुद्धय वि [अनुद्धत] सरल, भद्र, विनयी; (उप ७६८ टी)।
अणुद्धरि पुं [अनुद्धरिन्] एक क्षुद्र जन्तु, कुंथु ; (कप्प) ।
अणुद्धिय वि [अनुद्धृत] १ जिसका उद्धार न किया गया हो वह ; २ बहार नहीं निकाला हुआ " जं कुणइ भावसल्लं अणुद्धियं इत्थ सव्वदुहमूलं " (श्रा ४०) ।
अणुद्धुय वि [अनुद्धूत] अपरित्यक्त, नहीं छोड़ा हुआ (कप्प) ।
अणुधम्म पुं [अणुधर्म] गृहस्थ-धर्म; (विसे) ।
अणुधम्म पुं [अनुधर्म] अनुकूल—हितकर धर्म " एसो-णुधम्मो मुणिणा पवेइओ " (सूत्र १ २,१) । °चारि वि [°चारिन्] हितकर धर्म का अनुयायी, जैन-धर्मी ; (सूत्र १, २, २)
अणुधम्मिय वि [अनुधार्मिक] धर्म के अनुकूल, धर्मोचित, " एयं खु अणुधम्मियं तस्स " (आचा) ।
अणुधाव सक [अनु+धाव्] पीछे दौड़ना । वकृ— अणुधावंत ; (से ४, २१) ।
अणुधावण सक [अनुधावन] पीछे दौड़ना; (सुपा ५०३) ।
अणुधाविर वि [अनुधावितृ] पीछे दौड़ने वाला ; (उप ७२८ टी) ।
अणुनाइ वि [अनुनादिन्] प्रतिध्वनि करने वाला ; (कप्प)।
अणुनाय वि [अनुज्ञात] अनुमत, जिसको अनुमति दी गई हो वह " आहवणे मःकलयं अणुनायाए तए नाह " (सुपा ४७७) ।
अणुनास देखो अणुणास ; (जीव ३ टी)
अणुन्नव देखो अणुण्णव । वकृ—अणुन्नवेमाण ; (ठा ५, ३) । कृ—अणुन्नवेयव्व ; (कस) । संकृ— अणुन्नवेत्ता ; (कस) ।

अणुन्नवणा देखो **अणुण्णवणा** ; (ओघ ६३० ; कस)।
अणुन्नवणी देखो **अणुण्णवणी**; (ठा ४, १)।
अणुन्ना देखो **अणुण्णा** ; (सुर ४, १३३ ; प्रासू १८१)।
अणुन्नाय देखो **अणुण्णाय** ; (ओघ १; महा)।
अणुपंथ पुं [**अनुपथ**] १ समीप का मार्ग ; (कस)। २ मार्ग के समीप, रास्ता के पास ; (बृह २)।
अणुपत्त वि [**अनुप्राप्त**] प्राप्त, मिला हुआ ; (सुर ४, २११)।
अणुपयट्ट वि [**अनुप्रवृत्त**] अनुसृत, अनुगत ; (महा)।
अणुपरियट्ट सक [**अनुपरि+अट्**] घूमना, परिभ्रमण करना। संकृ—**अणुपरियट्टित्ताणं** "देवे णं भंते महिड्ढिए ......पभू लवणसमुद्दं अणुपरियट्टित्ताणं हव्वमागच्छित्तए ?" (भग १८, ७) कृ—**अणुपरियट्टियव्व** ; (णाया १, ६)। हेकृ—**अणुपरियट्टेउं** ; (णाया १, ६)।
अणुपरियट्ट अक [**अनुपरि+वृत्**] फिरना, फिरते रहना। "दुक्खाणमेव आवट्टं अणुपरियट्टइ" (आचा)। वकृ—**अणुपरियट्टमाण**; (आचा)। संकृ— **अणुपरियट्टित्ता** ; (औप)।
अणुपरियट्टण न [**अनुपर्यटन**] परिभ्रमण ; (सूअ १, १, २)।
अणुपरियट्टण न [**अनुपरिवर्तन**] परिवर्तन, फिरना; (भग १, ६)।
अणुपरिवट्ट देखो **अणुपरियट्ट**=अनुपरि+वृत्। वकृ— **अणुपरिवट्टमाण** ; (पि २८६)।
अणुपरिवाडि, °डी स्त्री [**अनुपरिपाटि, °टी**] अनुक्रम ; (सं १५, ६६ ; पउम २०, ११ ; ३२, १६)।
अणुपरिहारि वि [**अणुपरिहारिन्**] 'परिहारी' को मदद करनेवाला, त्यागी मुनि को सेवा-शुश्रूषा करनेवाला; (ठा ३, ४)।
अणुपरिहारि वि [**अनुपरिहारिन्**] ऊपर देखो ; (ठा ३, ४)।
अणुपवाएत्तु वि [**अनुप्रवाचयितृ**] पढ़ानेवाला, पाठक, उपाध्याय ; (ठा ५, ३)।
अणुपवाय देखो **अणुप्पवाय**=अनुप्र+वाचय्।
अणुपविट्ठ वि [**अनुप्रविष्ट**] पीछे से प्रविष्ट ; (णाया १, १ ; कप्प)।
अणुपविस सक [**अनुप्र+विश्**] १ पीछे से प्रवेश करना। २ प्रवेश करना, भीतर जाना। अणुपविसइ ; (कप्प)। वकृ—**अणुपविसंत** ; (निचू २)। संकृ—**अणुपविसित्ता** ; (कप्प)।
अणुपवेस पुं [**अनुप्रवेश**] प्रवेश, भीतर जाना ; (निचू ७)।
अणुपस्स सक [**अनु+दृश्**] पर्यालोचन करना, विवेचन करना। संकृ—**अणुपस्सिय** ; (सूअ १, २, २)।
अणुपस्सि वि [**अनुदर्शिन्**] पर्यालोचक, विवेचक ; (आचा)।
अणुपाल सक [**अनु+पालय्**] १ अनुभव करना। २ रक्षण करना। ३ प्रतीक्षा करना, राह देखना। अणुपालेइ ; (महा) ; वकृ—"सायासोक्खमू अणुपालंतो" (पक्खि) ; **अणुपालिंत, अणुपालेमाण** ; (महा)। संकृ—**अणुपालेऊण, अणुपालित्ता, अणुपालिय** (महा; कप्प; पि ५७०)।
अणुपालण न [**अनुपालन**] रक्षण, प्रतिपालन; (पंचभा)।
अणुपालणा देखो **अणुवालणा** ; (विसे २५२० टी)।
अणुपालिय वि [**अनुपालित**] रक्षित, प्रतिपालित ; (ठा ८)।
अणुपास देखो **अणुपस्स**। वकृ—**अणुपासमाण** (दसचू २)।
अणुपिट्ठ न [**अनुपृष्ठ**] अनुक्रम, "अणुपिट्ठसिद्धाइं" (सम्म)।
अणुपुव्व वि [**अनुपूर्व**] क्रमवार, आनुक्रमिक ; (ठा ४)। क्रिवि. क्रमशः ; (पाअ)। **°सो** [**°शस्**] अनुक्रम से ; (आचा)।
अणुपुव्व न [**आनुपूर्व्य**] क्रम, परिपाटी, अनुक्रम; (राय)।
अणुपुव्वी स्त्री [**आनुपूर्वी**] ऊपर देखो ; (पाअ)।
अणुपेक्खा स्त्री [**अनुप्रेक्षा**] भावना, चिन्तन, विचार (पउम १४, ७७)।
अणुपेहण न [**अनुप्रेक्षण**] ऊपर देखो; (उप १४२ टी)।
अणुपेहा स्त्री [**अनुप्रेक्षा**] ऊपर देखो ; (पि ३२३)।
अणुप्पइन्न वि [**अनुप्रकीर्ण**] एक दूसरे से मिला हुआ, मिश्रित ; (कप्प)।
अणुप्पणो सक [**अनुप्र+णी**] १ प्रणय करना। प्रसन्न करना। वकृ—**अणुप्पणंत** ; (उप पृ २८)।
अणुप्पगंथ वि [**अणुप्रग्रन्थ**] संतोषी, अल्प परिग्रह वाला (ठा ६)।
अणुप्पगंथ वि [**अनुप्रग्रन्थ**] ऊपर देखो ; (ठा ६)।
अणुप्पण्ण वि [**अनुत्पन्न**] अविद्यमान ; (निचू ५)।
अणुप्पत्त देखो **अणुपत्त** ; (कप्प)।

अणुप्पदा सक [अनुप्र+दा] दान देना, फिर २ देना। अणुप्पदेइ; (कस)। कृ—अणुप्पदायव्व ; (कस)। हेकृ—अणुप्पदाउं ; (उवा) ।

अणुप्पदाण न [अनुप्रदान] दान, फिर २ दान देना ; (आव ६) ।

अणुप्पभु पुं [अनुप्रभु] स्वामी के स्थानापन्न, प्रतिनिधि ; (निचू २) ।

अणुप्पया देखो अणुप्पदा । अणुप्पएइ ; (कस) । हेकृ—अणुप्पयाउं ; (उवा) ।

अणुप्पयाण देखो अणुप्पदाण ; (आचा) ।

अणुप्पवत्त सक [अनुप्र+वृत्] अनुसरण करना । हेकृ—अणुप्पवत्तए ; (विसे २२०७) ।

अणुप्पवाइत्तु, अणुप्पवाएत्तु वि [अनुप्रवाचयितृ] अध्यापक, पाठक, पढ़ानेवाला; (ठा ५, १; गच्छ १) ।

अणुप्पवाय सक [अनुप्र+वाचय्] पढ़ाना । वकृ—अणुप्पवाएमाण ; (जं ३) ।

अणुप्पवाय न [अनुप्रवाद] नववाँ पूर्व, बारहवें जैन अंग-ग्रन्थ का एक अंश-विशेष ; (ठा ६) ।

अणुप्पविट्ठ देखो अणुपविट्ठ ; (कस) ।

अणुप्पवित्ति स्त्री [अनुप्रवृत्ति] अनुप्रवेश, अनुगम ; (विसे २१६०) ।

अणुप्पविस देखो अणुपविस । अणुप्पविसइ ; (उवा) । संकृ—अणुप्पवेसेत्ता ; (निचू १) ।

अणुप्पवेस देखो अणुपवेस ; (नाट) ।

अणुप्पवेसण न [अनुप्रवेशन] देखो अणुपवेस ; (नाट) ।

अणुप्पसाद (शौ) सक [अनुप्र+सादय्] प्रसन्न करना। अणुप्पसादेदि ; (नाट) ।

अणुप्पसूय वि [अनुप्रसूत] उत्पन्न, पैदा किया हुआ ; (आचा) ।

अणुप्पाइ वि [अनुपातिन्] युक्त, संबद्ध, संबन्धी ; (निचू १) ।

अणुप्पिय वि [अनुप्रिय] अनुकूल, इष्ट ; (सुम १, ७) ।

अणुप्पेंत वि [अनुत्प्रयत्] दूर करता, हटाता हुआ ;
" जम्मि अविसण्णाहिययत्तणेण ते गारवं वलग्गंति ।
तं विसममणुप्पेंतो गरुयाण विही खलो होइ " (गउड) ।

अणुप्पेच्छ देखो अणुप्पेह ;
" तह पुव्विं किं न कयं, न बाहए जेण मे समत्थोवि ।
एण्हिं किं कस्स व कुप्पिमो त्ति धीरा ! अणुप्पेच्छ " (उव) ।

अणुप्पेसिय वि [अनुप्रेषित] पीछे से भेजा हुआ ; (नाट) ।

अणुप्पेह सक [अनुप्र+ईक्ष्] चिन्तन करना, विचारना। अणुप्पेहंति ; (पि ३२३) । कृ—अणुप्पेहियव्व ; (पंसू १) ।

अणुप्पेहा स्त्री [अनुप्रेक्षा] चिन्तन, भावना, विचार ; स्वाध्याय-विशेष ; (उत्त २६) ।

अणुप्फास पुं [अनुस्पर्श] अनुभाव, प्रभाव ; " लोहस्सेव अणुप्फासो मन्ने अन्नयरामवि " (दस ६) ।

अणुफुसिय वि [अनुप्रोञ्छित] पोंछा हुआ, साफ किया हुआ ; (स ३४४) ।

अणुबंध सक [अनु+बन्ध्] १ अनुसरण करना । २ संबन्ध बनाये रखना । अणुबंधंति; (उत्तर ७१) । वकृ—अणुबंधंत ; (वेणी १८३) । कवकृ—अणुबंधीअमाण, अणुबंधिज्जमाण ; (नाट)। हेकृ—अणुबंधिदुं (शौ); (मा ६) ।

अणुबंध पुं [अनुबन्ध] १ सततपन, निरन्तरता, विच्छेद का अभाव ; (ठा ६ ; उवर १२८) । २ संबन्ध ; (स १३८ ; गउड) । ३ कर्मों का संबन्ध ; (पंचा १५) । ४ कर्मों का विपाक, परिणाम ; (उवर ४ ; पंचा १८) । ५ स्नेह, प्रेम ; (स २७६) ;
" नयणाण पडउ वज्जं, अहवा वज्जस्स वड्ढिलं किंपि ।
अमुणियजणेवि दिट्ठे, अणुबंधं जाणि कुव्वंति" (सुर ४,२०)।
६ शास्त्र के आरम्भ में कहने लायक अधिकारी, विषय, प्रयोजन और संबन्ध ; (आव १) । ७ निर्बन्ध, आग्रह; (स ४५८) ।

अणुबंधअ वि [अनुबन्धक] अनुबन्ध करने वाला ; (नाट)।

अणुबंधि वि [अनुबन्धिन्] अनुबन्ध वाला, अनुबन्ध करने वाला ; (धर्म २ ; स १२७) ।

अणुबंधिअ न [दे] हिक्का-रोग, हिचकी ; (दे १, ४४) ।

अणुबंधेल्ल वि [अनुबन्धिन्] विच्छेद-रहित, अनुगम वाला, अविनश्वर ; (उप २३३) ।

अणुबज्झ, अणुबद्ध वि [अनुबद्ध] १ बँधा हुआ, संबद्ध ; (से ११, ६०) । २ सतत, अविच्छिन्न " अणुबद्ध-तिव्ववेरा परोप्परं वेयणं उदीरेंति " (पण्ह १, १) । ३ व्याप्त ; (णाया १, २) । ४ प्रतिबद्ध ; (णाया १,२) । ५ अत्यंत, बहुत " अणुबद्धनिरंतरवेयणासु " (पण्ह १, १) । ६ उत्पन्न ; (उत्तर ६२) ।

अणुवूह देखो **अणुवूह**।

अणुब्भड वि [अनुद्भट] अनुद्धत, अनुल्वण ; (उत्त २)।

अणुब्भूय वि [अनुद्भूत] अप्रकट, अनुत्पन्न ; (नाट)।

अणुभअ देखो **अणुभव**=अनुभव ; (नाट)।

अणुभव सक [अनु+भू] १ अनुभव करना, जानना, समझना। २ कर्मफल को भोगना। अणुभवंति ; (पि ४७५)। वकृ—**अणुभवंत** ; (पि ४७५)। संकृ—**अणुभविअ, अणुभवित्ता** ; (नाट ; पण्ह १,१)। हेकृ—**अणुभविउं** ; (उत्त १८)।

अणुभव पुं [अनुभव] १ ज्ञान, बोध, निश्चय ; (पंचा ५)। २ कर्म-फल का भोग ; (विसे)।

अणुभवण न [अनुभवन] ऊपर देखो ; (आव ४; विसे २०६०)।

अणुभवि वि [अनुभविन्] अनुभव करने वाला ; (विसे १६५८)।

अणुभाग पुं [अनुभाग] १ प्रभाव, माहात्म्य ; (सूअ १, ५, १)। २ शक्ति, सामर्थ्य ; (पराण २)। ३ कर्मों का विपाक—फल; (सूअ १, ५, १)। ४ कर्मों का रस, कर्मों में फल उत्पन्न करने की शक्ति "ताण रसो अणुभागो" (कम्म १, २ टी ; नव ३१)। °**बंध** पुं [°बन्ध] कर्म-पुद्गलों में फल उत्पन्न करने की शक्ति का बनना ; (ठा ४, २)।

अणुभाय } पुं [अनुभाव] १-४ ऊपर देखो ; (प्रासू
अणुभाव } ३५ ; ठा ३, ३ ; गउड ; आचा ; सम ६)। ५ मनोगत भाव की सूचक चेष्टा, जैसे भौंका चढाना वगैरः, (नाट)। ६ कृपा, महरबानी ; (स ३५५)।

अणुभावग वि [अनुभावक] बोधक, सूचक; (आवम)।

अणुभास सक [अनु+भाष्] १ अनुवाद करना, कही हुई बात को उसी शब्द में, शब्दान्तर में या दूसरी भाषा में कहना। २ चिन्तन करना। "अणुभासइ गुरुवयणं" (आचू ६; वव ३)। वकृ—**अणुभासयंत; अणुभासमाण**; (स १८४ ; विसे २५१२)।

अणुभासण न [अनुभाषण] अनुवाद, उक्त बात का कहना ; (नाट)।

अणुभासणा स्त्री [अनुभाषणा] ऊपर देखो ; (ठा ५, ३ ; विसे २५२० टी)।

अणुभासय वि [अनुभाषक] अनुवादक, अनुवाद करने वाला ; (विसे ३२१७)।

अणुभासयंत देखो **अणुभास**।

अणुभुंज सक [अनु+भुज्] भोग करना। वकृ—**अणुभुंजमाण** ; (सं १६)।

अणुभूइ स्त्री [अनुभूति] अनुभव ; (विसे १६११)।

अणुभूय वि [अनुभूत] ज्ञात, निश्चित ; (महा)। °**पुव्व** वि [°पूर्व] पहले ही जिसका अनुभव हो गया हो वह ; (गाया १, १)।

अणुभूस सक [अनु+भूष्] भूषित करना, शोभित करना। अणुभूसंदि (शौ); (नाट)।

अणुमइ स्त्री [अनुमति] अनुमोदन, सम्मति ; (श्रा ६)।

अणुमंतव्व देखो **अणुमण्ण** ; (विसे १६६०)।

अणुमग्ग न [दे] पीछे पीछे "एवं विचिंतयंती अणुमग्गेण चलिया हं" (सुर ४, १४२ ; महा)। °**गामि** वि [°गामिन्] पीछे २ जाने वाला ; (पि ४०५)।

अणुमण्ण } सक [अनु+मन्] अनुमति देना, अनुमोदन
अणुमन्न } करना। अणुमण्णे, अणुमन्नइ ; (पि ४५७; महा)। वकृ—**अणुमण्णमाण** ; (उवर ३१)। संकृ—**अणुमन्निऊण** ; (महा)।

अणुमन्निय } वि [अनुमत] अनुमोदित, सम्मत ; (ज
अणुमय } पृ २६१)।

अणुमर अक [अनु+मृ] १ मरना। २ सती होना, पति के मरने से मर जाना। "जं केवलिणो अणुमरंति" (आउ ३५)। भवि—अणुमरिहिइ ; (पि ५२२)।

अणुमरण न [अनुमरण] ऊपर देखो ; (गउड)।

अणुमहत्तर वि [अनुमहत्तर] मुखिया का प्रतिनिधि (निचू ३)।

अणुमाण न [अनुमान] १ अटकल-ज्ञान, हेतु के द्वारा अज्ञात वस्तु का निर्णय ; (गा ३४५ ; ठा ४, ४)।

अणुमाण सक [अनु+मानय्] अनुमान करना। संकृ—**अणुमाणइत्ता** ; (वव १)।

अणुमाय वि [अणुमात्र] बहुत थोड़ा, थोड़ा परिमाण वाला ; (दस ५, २)।

अणुमाल अक [अनु+मालय्] शोभित होना, चमकना। संकृ—**अणुमालिवि** ; (भवि)।

अणुमेअ वि [अनुमेय] अनुमान के योग्य ; (मै ७३)।

अणुमेरा स्त्री [अनुमर्यादा] मर्यादा, हद ; (कस)।

अणुमोइय वि [अनुमोदित] अनुमत, संमत, प्रशंसित (आउर ; भवि)।

अणुमोय सक (अनु + मुद्] अनुमति देना, प्रशंसा करना। अणुमोयइ ; (उव)। अणुमोएमो ; (चउ ५८)।
अणुमोयग वि [अनुमोदक] अनुमोदन करने वाला ; (विसे)।
अणुमोयण न [अनुमोदन] अनुमति, सम्मति, प्रशंसा ; (उव; पंचा ६)।
अणुम्मुक्क वि [अनुन्मुक्त] नहीं छोड़ा हुआ ; (पण्ह १,४)।
अणुम्मुह वि [अनुन्मुख] अ-संमुख, विमुख ; "किह साहुस्स अणुम्मुहो चिट्ठामि त्ति" (महा)।
अणुयंपा देखो अणुकंपा ; (गउड ; स २१४)।
अणुयत्त देखो अणुवत्त=अनु+वृत्। अणुयत्तइ ; (भवि)। वकृ—अणुयत्तंत, अणुयत्तमाण ; (पंचभा ; विसे १४५१)। संकृ—अणुयत्तिऊण ; (गउड)।
अणुयत्त देखो अणुवत्त=अनुवृत्त ; (भवि)।
अणुयत्तणा स्त्री [अनुवर्तना] १ बिमार की सेवा-शुश्रूषा करना; (वृह १)। २ अनुसरण; ३ अनुकूल वर्तन; (जीव १)।
अणुयत्तिय वि [अनुवृत्त] अनुकूल किया हुआ, प्रसादित ; (सुपा १३०)।
अणुयरिय वि [अनुचरित] आचरित, अनुष्ठित ; (णाया १, १)।
अणुया देखो अणुण्णा ; (सूअ २, १)।
अणुयाव देखो अणुताव ; (स १८३)।
अणुयास पुं [अनुकाश] विशेष विकास; (णाया १, १)।
अणुरंगा स्त्री [दे] गाड़ी ; (वृह १)।
अणुरंगिय वि [अनुरङ्गित] रँगा हुआ ; (भवि)।
अणुरंज सक [अनु + रञ्जय्] अनुरागी करना, प्रीणित करना। वकृ—अणुरंजअंत ; (नाट)। संकृ—अणुरंजिअ ; (नाट)।
अणुरंजण न [अनुरञ्जन] राग, आसक्ति ; (विसे २६७७)।
अणुरंजिपल्लय, अणुरंजिय } वि [अनुरञ्जित] अनुरक्त किया हुआ, अनुरागी बनाया हुआ; (जं ३; महा)।
अणुरक्क वि [अनुरक्त] अनुराग-प्राप्त, प्रेम-प्राप्त ; (नाट)।
अणुरज्ज अक [अनु+रञ्ज्] अनुरक्त होना, प्रेमी होना। "अणुरज्जंति खणेणं जुवईउ खणेण पुण विरज्जंति" (महा)।
अणुरत्त देखो अणुरक्क ; (णाया १, १६)।
अणुरसिय वि [अनुरसित] बोलाया हुआ, आहूत ; (णाया १, ६)।

अणुराइ, अणुराइल्ल } वि [अनुरागिन्] अनुराग वाला, प्रेमी ; (स ३३० ; महा ; सुर १३, १२०)।
अणुराग पुं [अनुराग] प्रेम, प्रीति ; (सुर ४, २२८)।
अणुरागय वि [अन्वागत] १ पीछे आया हुआ ; २ ठीक २ आया हुआ ; ३ न. स्वागत ; (भग २, १)।
अणुरागि देखो अणुराइ ; (महा)।
अणुराय देखो अणुराग ; (प्रासू १११)।
अणुराहा स्त्री [अनुराधा] नक्षत्र-विशेष ; (सम ६)।
अणुरुंध सक [अनु + रुध्] १ अनुरोध करना। २ स्वीकार करना। ३ आज्ञा का पालन करना। ४ प्रार्थना करना। ५ अक. अधीन होना। कर्म—अणुरुंधिज्जइ; (हे ४, २४८ ; प्रामा)।
अणुरूअ, अणुरूव } वि [अनुरूप] १ योग्य, उचित ; (से ६, ३६)। २ अनुकूल ; (सुपा ११२)। ३ सदृश, तुल्य ; (णाया १, १६)। ४ न. समानता, योग्यता ; (सम्म)।
अणुरोह पुं [अनुरोध] १ प्रार्थना "ता ममाणुरोहेण एत्थ घरे निच्चमेव आगंतव्वं" (महा)। २ दाक्षिण्य, दक्षिणता ; (पात्र)।
अणुरोहि वि [अनुरोधिन्] अनुरोध करने वाला ; (स १२१)।
अणुलग्ग वि [अनुलग्न] पीछे लगा हुआ ; (गा ३४५ ; सुर ३, २२६ ; सूक्त ७)।
अणुलद्ध वि [अनुलब्ध] १ पीछे से मिला हुआ ; २ फिर से मिला हुआ ; (नाट)।
अणुलाव पुं [अनुलाप] फिर २ बोलना ; (ठा ७)।
अणुलिंप सक [अनु + लिप्] १ पोतना, लेप करना। २ फिर से पोतना। संकृ—अणुलिंपित्ता ; (पि ५८२)। हेकृ—अणुलिंपित्तए ; (पि ५७८)।
अणुलिंपण न [अनुलेपन] लेप, पोतना ; (पण्ह २, ३)।
अणुलित्त वि [अनुलिप्त] लिप्त, पोता हुआ, (कप्प)।
अणुलिह सक [अनु + लिह्] १ चाटना। २ छूना। वकृ—अणुलिहंत; (सम १३१)। "गयणयलमणुलिहंतं" (पउम ३६, १२)।
अणुलेवण न [अनुलेपन] १ लेप, पोतना; (स्वप्न ६४)। २ फिर से पोतना ; (पण्ण २)।
अणुलेविय वि [अनुलेपित] लिप्त, पोता हुआ "कम्माणु-लेविओ सो" (पउम ८२, ७८)।

अणुलोम सक [**अनुलोमय्**] १ क्रम से रखना। २ अनुकूल करना। संकृ—**अणुलोमइत्ता** ; (ठा ६)।

अणुलोम न [**अनुलोम**] १ अनुक्रम, यथाक्रम "वत्थं दुहाणुलोमेण तह य पडिलोमत्रो भवे वत्थं" (सुर १६, ४८)।

अणुलोम वि [**अनुलोम**] सीधा, अनुकूल ; (जं २)।

अणुल्लण वि [**अनुल्बण**] अनुद्धत, अनुद्भट ; (बृह ३)।

अणुल्लय पुं [**अनुल्लक**] एक द्वीन्द्रिय क्षुद्र जन्तु ; (उत्त ३६)।

अणुल्लाव पुं [**अनुल्लाप**] खराब कथन, दुष्ट उक्ति; (ठा ३)।

अणुव पुं [**दे**] बलात्कार, जबरदस्ती ; (दे १, १६)।

अणुवइट्ठ वि [**अनुपदिष्ट**] १ अ-कथित, अ-व्याख्यात ; २ जो पूर्व-परम्परा से न आया हो "अणुवइट्ठं नाम जं णो आयरियपरंपरागयं" (निचू ११)।

अणुवउत्त वि [**अनुपयुक्त**] असावधान ; (विसे)।

अणुवएस पुं [**अनुपदेश**] १ अयोग्य उपदेश ; (पंचा १२)। २ उपदेश का अभाव ; ३ स्वभाव ; (ठा २, १)।

अणुवओग वि [**अनुपयोग**] १ उपयोग-रहित ; २ उपयोग का अभाव, असावधानता ; (अणु)।

अणुवंक वि [**अनुवक्र**] अत्यंत वक्र, बहुत टेढ़ा "जाव अंगारओ रासिं विअ अणुवंकं परिगमणं ण करेदि" (माल ६२)।

अणुवंदण न [**अनुवन्दन**] प्रति-नमन, प्रति-प्रणाम ; (सार्ध ३६)।

अणुवक्क देखो **अणुवंक** ; (पि ७४)

अणुवक्ख वि [**अनुपाख्य**] नाम-रहित, अनिर्वचनीय ; (बृह १)।

अणुवक्खड वि [**अनुपस्कृत**] संस्कार-रहित (पाक) ; (निचू १)।

अणुवच्च सक [**अनु+व्रज्**] अनुसरण करना, पीछे २ जाना। अणुवच्चइ ; (हे ४, १०७)।

अणुवच्चिअ वि [**अनुव्रजित**] अनुसृत ; (कुमा)।

अणुवजीवि वि [**अनुपजीविन्**] १ अनाश्रित ; २ आजीविका-रहित ; (पंचा १५)।

अणुवजुत्त वि [**अनुपयुक्त**] असावधान, ख्याल-शून्य ; (अभि १३१)।

अणुवज्ज सक [**गम्**] जाना। अणुवज्जइ ; (हे ४,१६२)।

अणुवज्ज सक [**दे**] सेवा-शुश्रूषा करना ; (दे १, ४१)।

अणुवज्जण न [**दे**] सेवा-शुश्रूषा ; (दे १, ४१)।

अणुवज्जिअ वि [**दे**] जिसकी सेवा-शुश्रूषा की गई हो वह ; (दे १, ४१)।

अणुवज्जिअ वि [**दे**] गत, गया हुआ ; (दे १, ४१)।

अणुवट्ट देखो **अणुवत्त**=अनु + वृत्। कृ—**अणुवट्टणीअ** (नाट)।

अणुवट्टि देखो **अणुवत्ति**=अनुवर्तिन् ; (विमे २४१७)।

अणुवड सक [**अनु+पत्**] अभिन्न होना। अणुवडइ (उवर ७१)।

अणुवत्त सक [**अनु+वृत्**] १ अनुसरण करना। २ सेवा-शुश्रूषा करना। ३ अनुकूल वरतना। ४ व्याकरण आदि के पूर्व सूत्र के पद का, अन्वय के लिए, नीचे के सूत्र में जाना अणुवत्तइ ; (स ४२)। वकृ—**अणुवत्तंत, अणुवत्तमाण** ; (प्राप्र ; विसे ३५६८ ; नाट)। कृ—**अणुवट्टणीअ, अणुवत्तणीअ, अणुवत्तियव्व** ; (नाट उप १०३१ टी)।

अणुवत्त वि [**अनुवृत्त**] १ अनुसृत, अनुगत ; २ अनुकूल किया हुआ ; ३ प्रवृत्त ; (वव २)।

अणुवत्तग वि [**अनुवर्त्तक**] अनुकूल प्रवृत्ति करने वाला सेवा करने वाला ; (उव)।

अणुवत्तण न [**अनुवर्त्तन**] १ अनुसरण ; (स २३६) २ अनुकूल प्रवृत्ति ; (गा २६५)। ३ पूर्व सूत्र के पद का अन्वय के लिए, नीचे के सूत्र में जाना ; (विसे ३५६८)

अणुवत्तणा स्त्री [**अनुवर्त्तना**] ऊपर देखो ; (अ १४८)।

अणुवत्तय देखो **अणुवत्तग** "अन्नमन्नच्छंदाणुवत्तया (णाया १, ३)।

अणुवत्ति स्त्री [**अनुवृत्ति**] १ अनुसरण ; (स ४५६) २ अनुकूल प्रवृत्ति ; ३ अनुगम ; (विसे ७०५)।

अणुवत्ति वि [**अनुवर्त्तिन्**] अनुकूल प्रवृत्ति करने वाला भक्त, सेवक ;
"तुह चंडि ! चलणकमलाणुवत्तिणो कह ण संजमिज्जंति।
सेरिहवहसंकियमहिसहोरमाणेण व जमेण" (गउड)।

अणुवम वि [**अनुपम**] उपमा-रहित, बेजोड़, अद्वितीय (श्रा २७)।

अणुवमा स्त्री [**अनुपमा**] एक प्रकारका खाद्य द्रव्य (जीव ३)।

अणुवमिय वि [**अनुपमित**] देखो **अणुवम** ; (सुपा ६८) ।

अणुवय देखो **अणुव्वय** ; (पउम २, ६२) ।

अणुवय सक [**अनु+वद्**] अनुवाद करना, कहे हुए अर्थ को फिरसे कहना । वक्र—**अणुवयमाण** ; (आचा) ।

अणुवरय वि [**अनुपरत**] १ असंयत, अनिग्रही; (ठा २, १)। २ क्रिवि. निरन्तर, हमेशां ; (रयण २५) ।

अणुवलद्धि स्त्री [**अनुपलब्धि**] १ अभाव, अप्राप्ति ; २ अभाव-ज्ञान ; " दुविहा अणुवलद्धीउ " (विसे १६८२) ।

अणुवलब्भमाण वि [**अनुपलभ्यमान**] जो उपलब्ध न होता हो. जो जानने में न आता हो ; (दसनि १) ।

अणुवलेवय वि [**अनुपलेपक**] उपलेप-रहित, अलिप्त ; (पण्ह १, २)

अणुवसंत वि [**अनुपशान्त**] अशान्त, कुपित ; (उत १६)

अणुवसम पुं [**अनुपशम**] उपशम का अभाव ; (उव) ।

अणुवसु वि [**अनुवसु**] रागवाला, प्रीतिवाला ; (आचा) ।

अणुवह न [**अनुपथ**] पीछे " कुमराणुवहेण सो लग्गो " (उप ६ टी) ।

अणुवहय वि [**अनुपहत**] अविनाशित ; (पिंड) ।

अणुवहुआ स्त्री [**दे**] नवोढ़ा स्त्री, दुलहिन ; (दे १,४८) ।

अणुवाइ वि [**अनुपातिन्**] १ अनुसरण करने वाला ; (ठा ६) । २ संबन्ध रखने वाला ; (सम १५) ।

अणुवाइ वि [**अनुवादिन्**] अनुवाद करने वाला, उक्त अर्थ को कहने वाला ; (सूअ १, १२ ; सत्त १४ टी) ।

अणुवाइ वि [**अनुवाचिन्**] पढ़ने वाला, अभ्यासी ; " संपुन्न सिवरिसो अणुवाई सव्वसुत्तस्स " (सत्त १४ टी) ।

अणुवाएज्ज वि [**अनुपादेय**] ग्रहण करने के अयोग्य ; (आवम) ।

अणुवाद देखो **अणुवाय**=अनुवाद ; (विसे ३५७७) ।

अणुवाय पुं [**अनुपात**] १ अनुसरण ; (पण्ण १७) । २ संबन्ध, संयोग ; (भग १२, ४) । ३ आगमन ; (पंचा ७) ।

अणुवाय पुं [**अनुवात**] १ अनुकूल पवन ; (राय) । २ वि. अनुकूल पवन वाला प्रदेश—स्थान ; (भग १६, ६) ।

अणुवाय वि [**अनुपाय**] उपाय-रहित, निरुपाय ; (उप पृ १४) ।

अणुवाय पुं [**अनुवाद**] अनुभाषण, उक्त बात को फिर से कहना ; (उवा ; दे १, १३१) ।

अणुवायण न [**अनुपातन**] अवतारण, उतारना; (धर्म २)।

अणुवायय वि [**अनुवाचक**] कहने वाला, अभिधायक, "पोसहसद्दो रूढीए एत्थ पव्वाणुवायओ भणिओ" (सुपा ६१६)।

अणुवाल देखो **अणुपाल** । वक्र—**अणुवालेंत**; (स २३)। संकृ—**अणुवालिऊण** ; (स १०२) ।

अणुवालण न [**अनुपालन**] रक्षण, परिपालन ; (आचा)।

अणुवालणा स्त्री [**अनुपालना**] १ ऊपर देखो; (पंचू) । २ °कप्प पुं [°**कल्प**] साधु-गण के नायक की अकस्मात् मृत्यु हो जाने पर गण की रक्षा के लिए शास्त्रीय विधान ; (पंचभा) ।

अणुवालय वि [**अनुपालक**] १ रक्षक, परिपालक । २ पुं. गोशालक के एक भक्त का नाम ; (भग २४, २०) ।

अणुवास सक [**अनु+वासय्**] व्यवस्था करना । अणुवासेज्जासि ; (आचा) ।

अणुवास पुं [**अनुवास**] एक स्थान में अमुक काल तक रह कर फिर वहां ही वास करना ; (पंचभा) ।

अणुवासण न [**अनुवासन**] १ ऊपर देखो । २ यन्त्र-द्वारा तेल आदि को अपान से पेट में चढ़ाना ; (णाया १, १३) ।

अणुवासणा स्त्री [**अनुवासना**] ऊपर देखो ; (पंचभा ; णाया १, १३) । °कप्प पुं [°**कल्प**] अनुवास के लिए शास्त्रीय व्यवस्था ; (पंचभा) ।

अणुवासग वि [**अनुपासक**] १ सेवा नहीं करने वाला । २ पुं. जैनेतर गृहस्थ ; (निचू ८) ।

अणुवासर न [**अनुवासर**] प्रतिदिन, हमेशाँ ; (सुर १, २४१) ।

अणुवित्ति स्त्री [**अनुवृत्ति**] १ अनुकूल वर्तन ; (कुमा) । २ अनुसरण ; (उप ८३३ टी) ।

अणुविद्ध वि [**अनुविद्ध**] संबद्ध, जुड़ा हुआ ; (से ११, १५) ।

अणुविहाण न [**अनुविधान**] १ अनुकरण ; २ अनुसरण ; (विसे २०७) ।

अणुवीइ स्त्री [**अनुवीचि**] अनुकूलता " वेयाणुवीइं मा कासि चोइज्जंतो गिलाइ से भुज्जो " (सूअ १, ४, १, १६) ।

अणुवीइ, **अणुवीई**, **अणुवीति**, **अणुवीतिय** } अ [**अनुविचिन्त्य**] विचार कर, पर्यालोचना कर ; (पि ५६३ ; आचा ; दस ७) । देखो **अणुचिंत** ।

अणुवूह सक [अनु+वृंह्] अनुमोदन करना, प्रशंसा करना। अणुवूहेइ ; (कप्प)।

अणुवूहेत्तु वि [अनुबृंहितृ] अनुमोदन करने वाला ; (ठा ७)।

अणुवेय सक [अनु+वेदय्] अनुभव करना। वकृ— **अणुवेयंत** ; (सूत्र १, ५, १)।

अणुवेयण न [अनुवेदन] फल-भोग, अनुभव ; (स ४०३)।

अणुवेल अ [अनुवेल] निरन्तर, सदा ; (पाअ)।

अणुवेलंधर पुं [अनुवेलन्धर] नाग-कुमार देवों का एक इन्द्र ; (सम ३३)।

अणुवेह देखो अणुप्पेह। वकृ—**अणुवेहमाण** ; (सूत्र १, १०)।

अणुव्वज सक [अनु+व्रज्] १ अनुसरण करना। २ सामने जाना। अणुव्वजे ; (सूत्र १, ४, १,३)।

अणुव्वय न [अणुव्रत] छोटा व्रत, साधुओं के महाव्रतों की अपेक्षा लघु व्रत, जैन गृहस्थ के पालने के नियम ; (ठा ५, १)।

अणुव्वय न [अनुव्रत] ऊपर देखो ; (ठा ५, १)।

अणुव्वयय वि [अनुव्रजक] अनुसरण करने वाला "अन्न-मन्नमणुव्वयया" (णाया १, ३)।

अणुव्वया स्त्री [अनुव्रता] पतिव्रता स्त्री ; (उत्त २०)।

अणुव्वस वि [अनुवश] आधीन, आयत्त "एवं तुब्भे सरागत्था अन्नमन्नमणुव्वसा" (सूत्र १, ३, ३)।

अणुव्वाण वि [अनुद्वान] १ अ-वन्ध, खुला हुआ ; (उप २११ टी)। २ स्निग्ध, चिकना "पव्वाणा किंचि-उव्वाणमेव किंचिच्च होअणुव्वाणं" (ओघ ४८८)।

अणुव्विग्ग वि [अनुद्विग्न] अ-खिन्न, खेद-रहित; (णाया १, ८ ; गा २८५)।

अणुव्विवाग न [अनुविपाक] विपाक के अनुसार "एवं तिरिक्खे मणुयासुरेसु चउरंतणंतं तयणुव्विवागं" (सूत्र १, ५, २)।

अणुव्वीइय देखो अणुवीइ ; (जीव १)।

अणुसंग पुं [अनुषङ्ग] १ प्रसंग, प्रस्ताव ; (प्रासू ३६; भवि)। २ संसर्ग, सौबत; "मज्झठिई पुण एसा; अणुसङ्गेणं हवन्ति गुण-दोसा" (सट्ठि २८; २७)।

अणुसंचर सक [अनुसं+चर्] १ परिभ्रमण करना। २ पीछे चलना। अणुसंचरइ ; (आचा; सूत्र १, १०)।

अणुसंध सक [अनुसं+धा] १ खोजना, ढुंढना, तलाश करना। २ विचार करना। ३ पूर्वापर का मिलान करना। **अणुसंधेमि** ; (पि ५००)। संकृ—**अणु-संधिवि** ; (भवि)।

अणुसंधण } न [अनुसंधान] १ खोज, शोध।
अणुसंधाण } २ विचार, चिन्तन "अत्ताणुसंधणपरा सुसावगा एरिसा हुंति" (श्रा २०)। ३ पूर्वापर का मिलान ; (पंचा १२)।

अणुसंधिअ न [दे] अविच्छिन्न हिक्का, निरन्तर हिचकी ; (दे १, ५६)।

अणुसंवेयण न [अनुसंवेदन] १ पीछेसे जानना; २ अनुभव करना; (आचा)।

अणुसंसर सक [अनुसं+सृ] गमन करना, भ्रमण करना। "जो इमाओ दिसाओ वा विदिसाओ वा अणुसंसरइ" (आचा)।

अणुसंसर सक [अनुसं+स्मृ] स्मरण करना, याद करना। अणुसंसरइ; (आचा)।

अणुसज्ज अक [अनु+सञ्ज्] १ अनुसरण करना, पूर्व काल से कालान्तर में अनुवर्तन करना। २ प्रीति करना। ३ परिचय करना। अणुसज्जन्ति ; (स ३)। भूका— अणुसज्जित्थ; (भग ६,७)।

अणुसज्जणा स्त्री [अनुसज्जना] अनुसरण, अनुवर्तन; (वव १)।

अणुसट्ठ वि [अनुशिष्ट] जिसको शिक्षा दी गई हो वह, शिक्षित; (सुर ११,२६)।

अणुसट्ठि वि [अनुशिष्टि] १ शिक्षण, सीख, उपदेश; (ठा ३, ३)। २ स्तुति, श्लाघा "अणुसट्ठी य थुई ति एगट्ठा" (वव १)। ३ आज्ञा, अनुज्ञा, सम्मति "इच्छामो अणुसट्ठिं पव्व ज्जं देह मे भयवं" (सुर ६,२०६)।

अणुसमय न [अनुसमय] प्रतिक्षण; (भग ४१,१)।

अणुसय पुं [अनुशय] १ पश्चात्ताप, खेद; (से २, १६) २ गर्व, अभिमान; (अणु)।

अणुसर सक [अनु+सृ] पीछा करना, अनुवर्तन करना। अणुसरइ; (सण)। वकृ—**अणुसरंत** ; (महा)। कृ—**अणु-सरियव्व**; (ठा ५, १)।

अणुसर सक [अनु+स्मृ] याद करना, चिन्तन करना। वकृ—**अणुसरंत**; (पउम ६६, ७)। कृ—**अणुसरियव्व**; (आवम)।

अणुसरण न [**अनुसरण**] १ पीछा करना; २ अनुवर्तन; (विसे ६१३)।

अणुसरण न [**अनुस्मरण**] अनुचिन्तन, याद करना; (पंचा १; स २३१)।

अणुसरिउ वि [**अनुस्मर्तृ**] याद करने वाला; (विसे ६२)।

अणुसरिच्छ } **अणुसरिस** } वि [**अनुसदृश**] १ समान, तुल्य; (पउम ६४, ७०)। २ योग्य, लायक (सं ११, ११५; पउम ८५, २६)।

अणुसार पुं [**अनुस्वार**] १ वर्ण-विशेष, बिन्दी; २ वि. अनुनासिक वर्ण; (विसे ५०१)।

अणुसार पुं [**अनुसार**] अनुसरण, अनुवर्तन; (गउड ; भवि)। २ माफिक, मुताबिक "कहियाणुसारओ सव्वमुवगयं सुमइणा सम्मं" (सार्ध १४४)।

अणुसारि वि [**अनुसारिन्**] अनुसरण करने वाला; (गउड; स १०१; सार्ध २६)।

अणुसास सक [**अनु+शास्**] १ सीख देना, उपदेश देना। २ आज्ञा करना। ३ शिक्षा करना, सजा देना। अणुसासंति; (पि १७२)। वकृ—**अणुसासंत** (पि ३६७)। कवकृ—**अणुसासिज्जंत**; (सुपा २७३)। कृ—**अणुसासणिज्ज**; (कुमा)। हेकृ—**अणुसासिउं**; (पि ५७६)।

अणुसासण न [**अनुशासन**] १ सीख, उपदेश; (सूअ १, १५)। २ आज्ञा, हुकुम; (सूअ १, २, ३)। ३ शिक्षा, सजा; (पंचा ६)। ४ अनुकम्पा, दया "अणुकंपंति वा अणुसासणंति वा एगट्ठा" (पंचचू)।

अणुसासणा स्त्री [**अनुशासना**] ऊपर देखो; (णाया १, १३)।

अणुसासिय वि [**अनुशासित**] शिक्षित; (उत्त १; पि १७३)।

अणुसिक्खिर वि [**अनुशिक्षितृ**] सिखने वाला;
"जं जं करेसि जं जं, जंपसि जह जह तुमं निअच्छेसि।
तं तं अणुसिक्खिरीए, दीहो दिअहो ण संपडइ"।
(गा ३७८)।

अणुसिट्ठ देखो **अणुसट्ठ**; (सूअ १, ३, ३)।

अणुसिट्ठि देखो **अणुसट्ठि**; (ओघ १७३ ; बृह १; उत्त १०)।

अणुसिण वि [**अनुष्ण**] गरम नहीं वह; ठण्डा; (कम्म १, ४६)।

अणुसील सक [**अनु+शीलय्**] पालन करना, रक्षण करना। **अणुसीलइ**; (सण)।

अणुसुत्ति वि [**दे**] अनुकूल; (दे १, २५)।

अणुसूआ स्त्री [**दे**] शीघ्र ही प्रसव करने वाली स्त्री; (दे १, २३)।

अणुसूय वि [**अनुस्यूत**] अनुविद्ध, मिला हुआ; (सूअ २, ३)।

अणुसूयग वि [**अनुसूचक**] जासुस की एक श्रेणी,
"सूयग तहाणुसूयग-पडिसूयग-सव्वसूयगा एव।
पुरिसा कयवित्तीया, वसंति सामंतनगरेसु।
महिला कयवित्तीया, वसंति सामंतनगरेसु॥" (वव १)।

अणुसेढि स्त्री [**अनुश्रेणि**] १ सीधी लाइन। २ न. लाइनसर; (पि ६६; ३०४)।

अणुसोय पुं [**अनुस्रोतस्**] १ अनुकूल प्रवाह; (ठा ४, ४)। २ वि. अनुकूल "अणुसोयसुहो लोगो पडिसोओ आसमो सुविहियाण" (दसचू २)। ३ न. प्रवाह के अनुसार,
"अणुसोयपट्ठिए बहुजणम्मि पडिसोयलद्धलक्खेणं।
पडिसोयमेव अप्पा, दायव्वो होउकामेणं॥" (दसचू २)।

अणुसोय सक [**अनु+शुच्**] सोचना, चिन्ता करना, अफसोस करना। वकृ—**अणुसोयमाण**; (सुपा १३३)।

अणुस्सर देखो **अणुसर**=अनु + स्मृ। संकृ-**अणुस्सरित्ता**; (सूअ १, ७, १६)।

अणुस्सर देखो **अणुसर**=अनु + सृ। वकृ—**अणुस्सरंत**; (स १४०)।

अणुस्सरण न [**अनुस्मरण**] चिन्तन करना; याद करना; (उव; स ५३५)।

अणुस्सार पुं [**अनुस्वार**] १ अनुस्वार, बिन्दी। २ वि. अनुस्वार वाला अक्षर, अनुस्वार के साथ जिसका उच्चारण हो वह; (चंदि; विसे ५०३)।

अणुस्सुय वि [**अनुत्सुक**] उत्कण्ठा-रहित; (सूअ १, ६)।

अणुस्सुय वि [**अनुश्रुत**] १ अवधारित; (उत्त ५)। २ सुना हुआ; (सूअ १,२,१)। ३ न. भारत-आदि पुराण-शास्त्र; (सूअ १,३,४)।

अणुहर सक [**अनु+हृ**] अनुकरण करना, नकल करना। अणुहरइ; (पि ४७७)।

अणुहरिय वि [**अनुहृत**] जिसका अनुकरण किया गया हो वह, अनुकृत;

"अणुहरियं धीर तुमे, चरियं निययस्स पुव्वपुरिसस्स।
भरह-महानरवइणो, तिहुयणविक्खाय-कित्तिस्स" (महा)।

अणुहव सक [अनु+भू] अनुभव करना। अणुहवइ; (पि ४७५)। वकृ—**अणुहवमाण**; (सुर १, १७१)। कृ—**अणुहवियव्व, अणुहवणीय**; (पउम १७, १४; सुपा ५८१)। संकृ—**अणुहवेऊण, अणुहविउं**; (प्राप्; पंचा २)।

अणुहवण न [अनुभवन] अनुभव; (स २८७)।

अणुहविय वि [अनुभूत] जिसका अनुभव किया गया हो वह, ; (सुपा ६)।

अणुहारि वि [अनुहारिन्] अनुकरण करने वाला, नक्कालची; (कुमा)।

अणुहाव देखो **अणुभाव**; (स ४०३; ६५६)।

अणुहियासण न [अन्वध्यासन] धैर्य से सहन करना; (जं २)।

अणुहु सक [अनु+भू] अनुभव करना। वकृ—**अणुहुंत**; (पउम १०३, १५२)।

अणुहुंज सक [अनु+भुञ्ज्] भोग करना, भोगना। अणुहुंजइ; (भवि)।

अणुहुत्त देखो **अणुहूअ**; (गा ६५६)।

अणुहूअ वि [अनुभूत] १ जिसका अनुभव किया गया हो वह; (कुमा)। २ न. अनुभव; (से ४, २७)।

अणुहो सक [अनु+भू] अनुभव करना। अणुहोंति; (पि ४७५)। वकृ—**अणुहोंत**; (पउम १०६, १७)। कवकृ—**अणुहोईअंत, अणुहोइज्जंत, अणुहोइज्जमाण**; **अणुहोईअमाण**; (षड्)। कृ—**अणुहोदव्व** (शौ); (अभि १३१)।

अणूकप्प देखो **अणुकप्प**; "एत्तो वोच्छं अणूकप्पं" (पंचभा)।

अणूण वि [अनून] कम नहीं, अधिक; (कुमा)।

अणूय, **अणूव** } पुं [अनूप] अधिक जल वाला देश, जल-बहुल स्थान; (विसे १७०३; वव ४)।

अणेअ वि [अनेक] देखो **अणेक्क**; (कुमा; अभि २४६)।

अणेकज्झ वि [दे] चञ्चल, चपल; (दे १,३०)।

अणेक्क, **अणेग** } वि [अनेक] एक से अधिक, बहुत; (औप; प्रासू ५३)। °**करण** न [°करण] पर्याय, धर्म, अवस्था; (सम्म १०६)। °**राइय** वि [°रात्रिक] अनेक रातों में होने वाला, अनेक रात संबन्धी (उत्सवादि); (कप्प)। °**सो** अ [°शस्] अनेक वार; (श्रा १४)।

अणेगंत पुं [अनेकान्त] अनिश्चय, नियम का अभाव; (विसे)। °**वाय** पुं [°वाद] स्याद्वाद, जैनों का मुख्य सिद्धान्त, सत्व-असत्व आदि अनेक विरुद्ध धर्मों का भी एक वस्तु में सापेक्ष स्वीकार,

"जेण विणा लोगस्सवि, ववहारो सव्वहा न निव्वडइ।
तस्स भुवणेक्कगुरुणो नमो अणेगंतवायस्स" (सम्म १६६)।

अणेगंतिय वि [अनैकान्तिक] ऐकान्तिक नहीं, अनिश्चित, अनियमित; (भग १, १)।

अणेगावाइ वि [अनेकवादिन्] पदार्थों को सर्वथा अलग २ मानने वाला, अक्रियवाद-मत का अनुयायी; (ठा ८)।

अणेच्छंत वि [अनिच्छत्] नहीं चाहता हुआ; (उप ७६८ टी)।

अणेज वि [अनेज] निश्चल, निष्कम्प; (आक)।

अणेज्ज वि [अज्ञेय] जानने को अयोग्य, जानने को अशक्य; (महा)।

अणेलिस वि [अनीदृश] अनुपम, असाधारण, "जे धम्मं सुद्धमक्खंति पडिपुण्णमणेलिसं" (सूअ १, ११)।

अणेवंभूय वि [अनेवम्भूत] विलक्षण, विचित्र "अणेवंभूयंपि वेयणं वेदंति" (भग ५,५)।

अणेस देखो **अण्णेस**। वकृ—**अणेसंत**; (नाट)।

अणेसण न [अन्वेषण] खोज, तलास; (महा)।

अणेसणा स्त्री [अनेषणा] एषणा, का अभाव; (उवा)।

अणेसणिज्ज वि [अनेषणीय] अकल्पनीय, जैन साधुओं के लिए अग्राह्य (भिक्षा-आदि); (ठा ३,१; णाया १ ५)।

अणोउया स्त्री [अनृतुका] जिसको ऋतु-धर्म न आता हो वह स्त्री; (ठा ५,२)।

अणोक्कंत वि [अनवक्रान्त] जिसका पराभव न किया गया हो वह, अजित, 'परवाईहिं अणोक्कंता" (औप)।

अणोग्गह देखो **अणुग्गह**=अनवग्रह; "नागरगो संवट्टो अणोग्गहो" (बृह ३)।

अणोग्घसिय वि [अनवघर्षित] नहीं घिसा हुआ, अमार्जित; (राय)।

अणोज्ज वि [अनवद्य] निर्दोष, शुद्ध; (णाया १,८)।

अणोज्जंगी स्त्री [अनवद्याङ्गी] भगवान् महावीर की पुत्री का नाम; (आचू)।

अणोज्जा स्त्री [अनवद्या] ऊपर देखो; (कप्प) ।
अणोणअ वि [अनवनत] नहीं नमा हुआ; (से १,१) ।
अणोत्तप्प देखो अणुत्तप्प; (पव ६४) ।
अणोम वि [अनवम] अ-हीन, परिपूर्ण; (आचा) ।
अणोमाण न [अनपमान] अनादर का अभाव, सत्कार, "एवं उग्गमदोसा विजढा पइरिक्कया अणोमाणं । मोहतिगिच्छा य कया, विरियायारो य अणुचिण्णो" (ओघ २४९) ।
अणोरपार वि [दे] १ प्रचुर, प्रभूत; (आवम) । २ अनादि-अनन्त; (पंचा १५; जी ४४) । ३ अति विस्तीर्ण; (पण्ह १,३) ।
अणोरुम्मिअ वि [अनुद्रान] अ-शुष्क, गिला; (कुमा) ।
अणोलय न [दे] प्रभात, प्रातःकाल; (दे १,१६) ।
अणोवणिहिया स्त्री [अनौपनिधिकी] आनुपूर्वी का एक भेद; क्रम-विशेष; (अणु) ।
अणोवणिहिया स्त्री [अनुपनिहिता] ऊपर देखो; (पि ७७) ।
अणोल्ल वि [अनार्द्र] १ शुष्क, सूखा हुआ; (गा ५४१) । °मण वि [°मनस्क] अकरुण, निष्ठुर, निर्दय; (काप्र ८६) ।
अणोवम वि [अनुपम] उपमा-रहित; अद्वितीय; (पउम ७६, २६; सुर ३,१३०) ।
अणोवमिय वि [अनुपमित] ऊपर देखो; (पउम २,६३) ।
अणोवसंखा स्त्री [अनुपसंख्या] अज्ञान, सत्य ज्ञान का अभाव; (सुअ २,१२) ।
अणोवहिय वि [अनुपधिक] १ परिग्रह-रहित, संतोषी । २ सरल, अकपटी; (आचा) ।
अणोवाहणग } अणोवाहणय } वि [अनुपानत्क] जूता-रहित, जो जूता-पहिना न हो; (औप; पि ७७) ।
अणोसिय वि [अनुषित] १ जिसने वास न किया हो । २ अव्यवस्थित "अणोसिएणं न करेइ णच्चा" (धर्म ३; सुअ १,१४) ।
अणोहंतर वि [अनोघन्तर] पार जाने के लिए असमर्थ, "मुणिणा हु एयं पवेइयं अणोहंतरा एए, नो य ओहं तरित्तए" (आचा) ।
अणोहट्टय वि [अनपघट्टक] निरंकुश, स्वच्छन्दी; (णाया १,१६) ।
अणोहीण वि [अनवहीन] हीनता-रहित; (पि १२०) ।
अण्ण सक [भुज्] भोजन करना, खाना । अण्णइ; (षड्) ।
अण्ण स [अन्य] दूसरा, पर; (प्रासू १३१) । °उत्थिय वि [°तीर्थिक °यूथिक] अन्य दर्शन का अनुयायी; (सम ६०) । °गहण न [°ग्रहण] १ गान के समय होने वाला एक प्रकार का मुख-विकार । २ पुं. गाने वाला, गान्धर्विक, गवैया; (निचू १७) । °धम्मिय वि [°धर्मिक] भिन्न धर्म वाला; (ओघ १५) ।
अण्ण न [अन्न] १ नाज, चावल आदि धान्य; (सुअ १,४,२) । २ भक्ष्य पदार्थ; (उत्त २०) । ३ भक्षण, भोजन; (सुअ १,२) । °इलाय, °गिलाय वि [°ग्लायक] वासी अन्न को खाने वाला; (औप; भग १६,३) । °विहि पुंस्त्री [°विधि] पाक-कला; (औप) ।
अण्ण न [अर्णस्] पानी, जल; (उत्त ५) ।
अण्ण वि [दे] १ आरोपित; २ खण्डित; (षड्) ।
°अण्ण देखो कण्ण=कर्ण; (गा ५६४, कप्पू) ।
अण्णअ पुं [दे] १ युवान, तरुण; २ धूर्त, ठग; ३ देवर; (दे १,५५) ।
अण्णइअ वि [दे] १ तृप्त; (दे १, १६) । २ सब विषयों में तृप्त, सर्वार्थ-तृप्त; (षड्)
अण्णओ अ [अन्यतस्] दूसरे से, दूसरी तर्फ; (उत्त १) । देखो अन्नओ ।
अण्णण्ण वि [अन्योन्य] परस्पर, आपस में; (षड्) ।
अण्णण्ण वि [अन्यान्य] और और, अलग अलग, "अण्णण्णाइं उवेंता, संसारवहम्मि णिरवसाणम्मि । मण्णंति धीरहियआ, वसइट्ठाणाइंव कुलाइं" (गउड) ।
अण्णत्त अ [अन्यत्र] दूसरे में, भिन्न स्थान में; (गा ६५५) ।
अण्णत्ति स्त्री [दे] अवज्ञा, अपमान, निरादर; (दे १, १७) ।
अण्णत्तो देखो अण्णओ; (गा ६३६) ।
अण्णत्थ देखो अण्णत्त; (विपा १, २) ।
अण्णत्थ वि [अन्यस्थ] दूसरे (स्थान) में रहा हुआ; (गा ५५०) ।
अण्णत्थ वि [अन्वर्थ] यथार्थ, यथा नाम तथा गुण वाला; "ठियमण्णत्थे तयत्थनिरवेक्खं" (विसे) ।
अण्णमण्ण देखो अण्णण्ण=अन्योन्य "अण्णमण्णमणुरत्तया" (णाया १, २) ।
अण्णमय वि [दे] पुनरुक्त, फिर से कहा हुआ; (दे १, २८) ।

अण्णयर वि [अन्यतर] दो में से कोई एक ; (कप्प) ।
अण्णया अ [अन्यदा] कोई समय में ; (उप ६ टी) ।
अण्णव पुं [अर्णव] १ समुद्र ; २ संसार " अण्णवंसि महोवंसि एगे तिण्णे दुरुत्तरे " (उत्त ५) ।
अण्णव न [ऋणवत्] एक लोकोत्तर मुहूर्त का नाम; (जं ७)।
अण्णह न [अन्वह] प्रतिदिन, हमेशां , (धर्म १) ।
अण्णह देखो **अण्णत्त** ; (षड्) ।
अण्णह } अ [अन्यथा] अन्य प्रकार से, विपरीत रीति
अण्णहा } से, उलटा ; (षड् ; महा) । °**भाव** पुं [°भाव] वैपरीत्य, उलटापन ; (बृह ४) ।
अण्णहि देखो **अण्णत्त** ; (षड्) ।
अण्णा स्त्री [आज्ञा] आज्ञा, आदेश ; (गा २३; अभि ६३ ; मुद्रा ५७) ।
अण्णाइट्ठ वि [अन्वादिष्ट] आदिष्ट, जिसको आदेश दिया गया हो वह " अज्जुणए मालागारे मोंगरपाणिणा जक्खेणं अण्णाइट्ठे समाणे " (अंत २०) ।
अण्णाइट्ठ वि [अन्वाविष्ट] १ व्याप्त ; (भग १४, १) । २ पराधीन, परवश ; (भग १८, ६) ।
अण्णाइस (अप) वि [अन्यादृश] दूसरे के जैसा ; (पि २४५) ।
अण्णाण न [अज्ञान] १ अज्ञान, अजानकारी, मूर्खता ; (दे १, ७) । २ मिथ्या ज्ञान, भूठा ज्ञान ; (भग ८, २) । ३ वि. ज्ञान-रहित, मूर्ख ; (भग १, ६) ।
अण्णाण न [दे] दाय, विवाह-काल में वधू को अथवा वर को जो दान दिया जाता है वह ; (दे १, ७) ।
अण्णाणि वि [अज्ञानिन्] १ ज्ञान-रहित, मूर्ख ; (सूत्र १, ७) । २ मिथ्या-ज्ञानी (पंच १) । ३ अज्ञान को ही श्रेयस्कर मानने वाला, अज्ञान-वादी ; (सूत्र १, १२) ।
अण्णाणिय वि [आज्ञानिक] १ अज्ञान-वादी, अज्ञानवाद का अनुयायी ; (आव ६; सम १०६) । २ मूर्ख, अज्ञानी ; (सूत्र १, १, २) ।
अण्णाय वि [अज्ञात] अ-विदित, नहीं जाना हुआ; (पण्ह २ १) ।
अण्णाय पुं [अन्याय] न्याय का अभाव ; (श्रा १२) ।
अण्णाय वि [दे] आर्द्र, गिला ; (से ४, ६) ।
अण्णाय वि [अन्याय्य] न्याय से च्युत, न्याय-विरुद्ध; " जे विग्गहीए अण्णायभासी, न से समे होइ अभंभपत्ते " (सूत्र १, १३) ।
अण्णाय्य (शौ) ऊपर देखो ; (मा २०) ।
अण्णारिच्छ वि [अन्यादृक्ष] दूसरे के जैसा ; (प्रामा)
अण्णारिस वि [अन्यादृश] दूसरे के जैसा ; (पि २४५)
अण्णालय वि [दे] आस्तृत, बिछाया हुआ ; (षड्) ।
अण्णिज्जमाण देखो **अण्णे** ।
अण्णिय वि [अन्वित] युक्त, सहित; (सूत्र १, १० ; नाट)
अण्णिया स्त्री [दे] देखो **अण्णी** ; (दे १, ५१) ।
अण्णिया स्त्री [अन्निका] एक विख्यात जैन मुनि की मा का नाम ; (ती ३६) । °**उत्त** पुं [°पुत्र] एक विख्या जैन मुनि ; (ती ३६) ।
अण्णी स्त्री [दे] १ देवर की स्त्री ; २ पति की वहिन, ननंद ३ फूफा, पिता की वहिन ; (दे १, ५१) ।
अण्णु } वि [अज्ञ] अजान, निर्बोध, मूर्ख ; (षड् ;
अण्णुअ } १८४) ।
अण्णुण्ण वि [अन्योन्य] परस्पर, आपस में ; (गउड)
अण्णूण वि [अन्यून] परिपूर्ण ; (उप पृ २२४) ।
अण्णे सक [अनु+इ] अनुसरण करना । अण्णे (विसे २५२६) । अण्णेंति ; (पि ४६३) । कवकृ **अण्णिज्जमाण** ; (अन्वीयमान); (विपा १, १) ।
अण्णेस सक [अनु+इष्] १ खोजना, ढूँढना, तहकीक करना । २ चाहना, वांछना । ३ प्रार्थना करना । अ सइ ; (पि १६३) । वकृ—**अण्णेसंत, अण्णे अंत, अण्णेसमाण** ; (महा; काल) ।
अण्णेसण न [अन्वेषण] खोज, तलाश, तहकीका (उप ६ टी) ।
अण्णेसणा स्त्री [अन्वेषणा] १ खोज, तहकीकात; (प्रा २ प्रार्थना ; (आचा) । ३ गृहस्थ से दी जाती का ग्रहण ; (ठा ३, ४) ।
अण्णेसि वि [अन्वेषिन्] खोज करने वाला ; (आचा
अण्णेसिय वि [अन्वेषित] जिसकी तहकीकात की गई वह, " अण्णेसिया सव्वओ तुब्भे न कहिंचि दिट्ठा " (मह
अण्णोण्ण देखो **अण्णुण्ण**, " अण्णोण्णसमणुबद्धं णिच्छ भणियविसयं तु " (पंचा ६ ; स्वप्न ५२) ।
अण्णोसरिअ वि [दे] अतिक्रान्त, उल्लङ्घित ; १, ३६) ।
अण्ह सक [भुज्] १ खाना, भोजन करना । २ करना । ३ ग्रहण करना । अण्हइ ; (हे ४, षड्) । अण्हाह (औप) । अण्हए ; (कुमा

अण्ह न [अहन्] दिवस, दिन " पुव्वावरण्हकालसमयंसि " (उवा) ।

अण्हग } पुं [आश्रव] कर्म-बन्ध के कारण हिंसादि ;
अण्हय } (पराह १, १; ५ ; औप) ।

अण्हा स्त्री [तृष्णा] तृषा, प्यास ; (गा ६३) ।

अण्हेअअ वि [दे] भ्रान्त, भूला हुआ ; (दे १, २१) ।

अतक्किय वि [अतर्कित] १ अचिन्तित, आकस्मिक, " अतक्कियमेव एरिसं वसणमहं पत्ता " (महा) । २ ठीक २ नहीं देखा हुआ, अपरिलक्षित ; (वव ८) । ३ क्रिवि. " अतक्कियं चेय......विहरिओ रायहत्थी " (महा) ।

अतड त्रि [अतट] छोटा किनारा " अतडव्ववातो सो चेव मग्गो " (बृह १) ।

अतण्हाअ वि [अतृष्णाक] तृष्णा-रहित, निःस्पृह; (अच्चु ६४) ।

अतत्त न [अतत्व] असत्य, भूठ, गैरव्याजवी ; (उप ५०८) ।

अतत्थ वि [अत्रस्त] नहीं डरा हुआ ; निर्भीक ; (कुमा) ।

अतत्थ वि [अतथ्य] असत्य; भूठा ; (आचा) ।

अतर देखो अयर ; (पव १ ; कम्म ५ ; भवि) ।

अतव पुंन [अतपस्] १ तपश्चर्या का अभाव ; (उत्त २३) । २ वि. तप-रहित ; (बृह ४) ।

अतव पुं [अस्तव] अ-प्रशंसा, निन्दा ; (कुमा) ।

अतसी देखो अयसी ; (पराण १) ।

अतह वि [अतथ] असत्य, अ-वास्तविक, भूठा ; (सूअ १, १, २ ; आचा) ।

अतह वि [अतथा] उस माफिक नहीं,
" जाओ चिय कायव्वे उच्छाहेंति गरुयाण कित्तीओ ।
ताओ चिय अतह-णिवेयणेण अलसेंति हिययाइं " (गउड) ।

अतार वि [अतार] तरने को अशक्य; (णाया १, ६; १४) ।

अतारिम वि [अतारिम] ऊपर देखो ; (सूअ १, ३, २) ।

अतिउट्ट अक [अति+त्रुट्] १ खूब टूटना ; टूट जाना ; २ सर्व वन्धन से मुक्त होना । अतिउट्टइ ; (सूअ १, १५, ५) ।

अतिउट्ट सक [अति+वृत्] १ उल्लंघन करना । २ व्याप्त होना । °तिउट्टइ ; (सूअ १, १५, ६ टी) ।

अतिउट्ट वि [अतिवृत्त] १ अतिक्रान्त ; २ अनुगत, व्याप्त ; " जंसी गुहाए जलणेतिउट्टे अविजाणओ डज्भइ लुत्तपण्णो " (सूअ १, ५, १, १२) ।

अतित्थ न [अतीर्थ] १ तीर्थ (चतुर्विध संघ) का अभाव, तीर्थ की अनुत्पत्ति ; २ वह काल, जिसमें तीर्थ की प्रवृत्ति न हुई हो या उसका अभाव रहा हो ; (पराण १) । °सिद्ध वि [°सिद्ध] अतीर्थ काल में जो मुक्त हुआ हो वह " अतित्थसिद्धा य मरुदेवी " (नव ५६) ।

अतिहि देखो अइहि ।

अतीगाढ वि [अतिगाढ] १ अति-निबिड ; २ क्रिवि. अत्यंत, बहुत " अतीगाढं भीओ जक्खाहिवो " (पउम ८, ११३) ।

अतुल वि [अतुल] अनुपम, असाधारण ; (पराह १, १) ।

अतुलिय वि [अतुलित] असाधारण, अद्वितीय ; (भवि) ।

अत्त देखो अप्प=आत्मन् ; (सुर ३, १७४ ; सम ५७ ; पंचि) । °लाभ पुं [°लाभ] स्वरूप की प्राप्ति, उत्पत्ति ; (कम्म २, २५) ।

अत्त वि [आर्त्त] पीडित, दुःखित, हैरान; (सुर ३,१४३; कुमा) ।

अत्त वि [आत्त] १ गृहीत, लिया हुआ ; (णाया १, १) । २ स्वीकृत, मंजुर किया हुआ ; (ठा २, ३) । ३ पुं. ज्ञानी मुनि ; (बृह १) ।

अत्त वि [आप्त] १ ज्ञानादि-गुण-संपन्न, गुणी ; २ राग-द्वेष वर्जित, वीतराग ; ३ प्रायश्चित्त-दाता गुरु,
" नाणमादीणि अत्ताणि, जेण अत्तो उ सो भवे ।
रागद्दोसपहीणो वा, जे व इट्ठा विसोहिए " (वव १०) ।
४ मोक्ष मुक्ति; (सूअ १, १०) । ५ एकान्त हितकर; (भग १४, ६) । ६ प्राप्त, मिला हुआ ; (वव १०) " अत्तप्प-सराणलेस्से " (उत्त १२) ।

अत्त वि [आत्र] दुःख का नाश करने वाला, सुख का उत्पादक ; (भग १४, ६) ।

अत्त अ [अत्र] यहां, इस स्थान में ; (नाट) । °भव वि [°भवत्] पूज्य, माननीय ; (अभि ६१ ; पि २६३) ।

अत्तट्ठ वि [आत्मार्थ] १ आत्मीय, स्वकीय ; (धर्म २) । २ पुं. स्वार्थ " इह कामनियत्तस्स अत्तट्ठे नावरज्झइ " (उत्त ८) ।

अत्तट्ठिय वि [आत्मार्थिक] १ आत्मीय ; २ जो अपने लिए किया गया हो, " उवक्खडं भोयण माहणाणं अत्तट्ठियं सिद्धमहेगपक्खं " (उत्त १२) ।

अत्तण } देखो अप्प=आत्मन् ; (मृच्छ २३६) ।
अत्तणअ } °केरक वि [आत्मीय] निजीय, स्वकीय ; (नाट; पि ४०१) ।

अत्तणअ } (शौ) वि [आत्मीय] स्वकीय, अपना,
अत्तणक } निजका; (पि २७७; नाट)।
अत्तणिज्जिय वि [आत्मीय] स्वकीय; (ठा ३, १)।
अत्तणीअ (शौ) ऊपर देखो; (स्वप्न २७)।
अत्तमाण देखो आवत्त=आ+वृत्।
अत्तय पुं [आत्मज] पुत्र, लड़का। °या स्त्री [°जा] पुत्री, लड़की; (विपा १, १)।
अत्तव्व वि [अत्तव्य] खाने लायक, भक्ष्य; (नाट)।
अत्ता स्त्री [दे] १ माता, माँ; (दे १, ५१; चारु ७०)। २ सासू; (दे १,५१; गा ६६७; हेका ३०)। ३ फूफा; ४ सखी; (दे १, ५१)।
°अत्ता देखो जत्ता; (प्रति ८२)।
अत्ताण देखो अत्त=आत्मन्; (पि ४०१)
अत्ताण वि [अत्राण] १ शरण-रहित, रक्षक-वर्जित; (पण्ह १,१)। २ पुं कन्धे पर लट्ठी रख कर चलने वाला मुसाफिर; ३ फटे-टूटे कपड़े पहन कर मुसाफिरी करने वाला यात्री; (बृह १)।
अत्ति पुं [अत्रि] इस नाम का एक ऋषि; (गउड)।
अत्ति स्त्री [अर्त्ति] पीड़ा, दुःख; (कुमा; सुपा १८५)। °हर वि [°हर] पीड़ा-नाशक, दुःख का नाश करने वाला; (अभि १०३)।
अत्तिहरी स्त्री [दे] दूती, समाचार पहुँचाने वाली स्त्री; (षड्)।
अत्तीकर सक [आत्मी+कृ] अपने आधीन करना, वश करना। अत्तीकरेइ; वकृ—अत्तीकरंत; (निचू ४)।
अत्तीकरण न [आत्मीकरण] अपने वश करना; (निचू ४)।
अत्तुक्करिस } पुं [आत्मोत्कर्ष] अभिमान, गर्व,
अत्तुक्कोस } "तम्हा अत्तुक्करिसो वज्जेयव्वो जइजणेणं" (सूअ १,१३; सम ७१)।
अत्तुक्कोसिय वि [आत्मोत्कर्षिक] गर्विष्ठ, अभिमानी; (औप)।
अत्तेय पुं [आत्रेय] १ अत्रि ऋषि का पुत्र; (पि १०; ८३)। २ एक जैन मुनि; (विसे २७६६)।
अत्तो अ [अतस्] १ इससे, इस हेतु से; (गउड)। २ यहां से; (प्रामा)।
अत्थ देखो अट्ठ=अर्थ; (कुमा; उप ७२८; ८८४ टी; जी १; प्रासू ६५; गउड) "अरोइअत्थे कहिए विलावो" (गोय ७) "अत्थसद्दो फलत्थोयं" (विसे १०३६; १२४३)। °जोणि स्त्री [°योनि] धनोपार्जन का उपाय, साम-दाम-दण्ड-रूप अर्थ-नीति; (ठा ३,३)। °णय पुं [°नय] शब्द को छोड़ अर्थ को ही मुख्य वस्तु मानने वाला पक्ष; (अणु)। °सत्थ न [°शास्त्र] अर्थ-शास्त्र, संपत्ति-शास्त्र; (णाया १, १)। °वइ पुं [°पति] १ धनी; २ कुबेर; (वव ७)। °वाय पुं [°वाद] १ गुण-वर्णन; २ दोष-निरूपण; ३ गुण-वाचक शब्द; ४ दोष-वाचक शब्द; (विसे)। °वि वि [°वित्] अर्थ का जानकार; (पिंड १ भा)। °सिद्ध वि [°सिद्ध] १ प्रभूत धन वाला; (जं ७)। २ पुं. ऐरवत क्षेत्र के एक भावी जिन-देव; (तित्थ)। °लिय न [°लीक] धन के लिए असत्य बोलना; (पण्ह १, २)। °लोयण न [°लोचन] पदार्थ का सामान्य ज्ञान (आचू १)। °लोयण न [°लोकन] पदार्थ का निरीक्षण,
"अत्थालोयण-तरला, इयरकईणं भमंति बुद्धीओ।
अत्थच्चेय निरारम्भमेंति हियं कइन्दाणं ॥" (गउड)।
अत्थ पुं [अस्त] १ जहां सूर्य अस्त होता है वह पर्वत; (से १०,१०)। २ मेरु पर्वत; (सम ६५)। ३ वि. अदृश्यमान; (णाया १,१३)। °गिरि पुं [°गिरि] अस्ताचल; (सुर ३, २७७; पउम १६,४५)। °सेल पुं [°शैल] अस्ताचल; (सुर ३, २२६)। °चल पुं [°चल] अस्त-गिरि; (कप्पू)।
अत्थ न [अस्त्र] हथियार, आयुध; (पउम ८,५०; से १३, ६१)।
अत्थ सक [अर्थय्] मांगना, याचना करना, प्रार्थना करना, विज्ञप्ति करना। अत्थयए; (निचू ४)।
अत्थ अक [स्था] बैठना। अत्थइ; (आरा ७१)।
अत्थ }
अत्थं } देखो अत्त=अत; (कप्प; पि २६३; ३६१)।
अत्थंडिल वि [अस्थण्डिल] साधुओं के रहने के लिए अयोग्य स्थान, क्षुद्र जन्तुओं से व्याप्त स्थान; (ओघ १३)।
अत्थंत वकृ [अस्तं यत्] अस्त होता हुआ; (वज्जा २२)।
अत्थक्क न [दे] १ अकाण्ड, अकस्मात्, बे-समय; (गा ३३०; से ११,२४; श्रा ३०; भवि)। अत्थक्कगज्जिउब्भंत-हित्थहिअआ पहिअजाआ" (गा ३८६)। २ वि. अखिन्न; (वज्जा ६)। ३ क्रिवि. अनवरत, हमेशां; (गउड)।

अत्थग्घ वि [दे] १ मध्य-वर्ती, बीच का "सभए अत्थग्घे वा ओइगणेसु घयं पहं" (ओघ ३४)। २ अगाध, गंभीर; ३ न. लम्बाई, आयाम; ४ स्थान, जगह; (दे १,५४)।

अत्थण न [अर्थन] प्रार्थना, याचना; (उप ७२८ टी)।

अत्थत्थि वि [अर्थार्थिन्] धन की इच्छा वाला; (उप १३६ टी)।

अत्थम अक [अस्तम् + इ] अस्त होना, अदृश्य होना। अत्थमइ; (पि ५५८)। वकृ—**अत्थमंत**; (पउम ८२, ५६)।

अत्थमण न [अस्तमयन] अस्त हाना, अदृश्य होना; (ओघ ५०७; से ८, ८५; गा २८४)।

अत्थमिय वि [अस्तमित] १ अस्त हुआ, डुब गया, अदृश्य हुआ; (ओघ ५०७; महा; सुपा १५५)। २ हीन. हानि-प्राप्त; (ठा ४,३)।

अत्थयारिआ स्त्री [दे] सखी, वयस्या; (दे १, १६)।

अत्थर सक [आ + स्तृ] बिछाना, शय्या करना, पसारना। अत्थरइ; (उव)। संकृ—**अत्थरिऊण**; (महा)।

अत्थरण न [आस्तरण] १ बिछौना, शय्या; (से १४, ५०)। २ बिछाना, शय्या करना; (विसे २३२२)।

अत्थरय वि [आस्तरक] १ आच्छादन करने वाला; (राय)। २ पुं. बिछौने के ऊपर का वस्त्र; (भग ११, ११; कप्प)।

अत्थरय वि [अस्तरजस्क] निर्मल, शुद्ध; (भग ११, ११)।

अत्थवण देखो **अत्थमण** ; (भवि)।

अत्था देखो **अट्ठा**=आस्था।

अत्था } सक [अस्ताय्] अस्त होना, डूब जाना, अद-
अत्थाअ } श्य होना। अत्थाइ, अत्थाए; (पउम ७३, ३५)। अत्थाअंति; (से ७,२३)। वकृ—**अत्था-अंत**; (से ७, ६६)।

अत्थाअ वि [अस्तमित] अस्त हुआ, डूबा हुआ "ताव-च्चिय दिवसयरो अत्थाओ विगयकिरणसंघाओ" (पउम १०, ६६; से ६,५२)।

अत्थाइया स्त्री [दे] गोष्ठी-मण्डप; (स ३६)।

अत्थाण न [आस्थान] सभा, सभा-स्थान; (सुर १, ८०)।

अत्थाणिय वि [अस्थानिन्] गैर-स्थान में लगा हुआ, "अत्थाणियनयणाहिं" (भवि)।

अत्थाणी स्त्री [आस्थानी] सभा-स्थान; (कुमा)।

अत्थाम वि [अस्थामन्] बल-रहित, निर्बल; (णाया १,१)।

अत्थार पुं [दे] सहायता, साहाय्य; (दे १,६; पाअ)।

अत्थारिय पुं [दे] नौकर, कर्मचारी; (वव ६)।

अत्थावग्गह देखो **अत्थुग्गह**; (पण्ण ५)।

अत्थावत्ति स्त्री [अर्थापत्ति] अनुक्त अर्थ को अटकल से समझना, एक प्रकार का अनुमान-ज्ञान, जैसे 'देवदत्त पुष्ट है और दिन में नहीं खाता है' इस वाक्य से 'देवदत्त रात में खाता है' ऐसा अनुक्त अर्थ का ज्ञान; (उप ६६८)।

अत्थाह वि [अस्ताघ] १ अथाह, थाह-रहित, गंभीर; (णाया १, १४)। २ नासिका के ऊपर का भाग भी जिसमें डूब सके इतना गहरा जलाशय ; (बृह ४)। ३ पुं. अतीत चौवीसी में भारत में समुत्पन्न इस नाम के एक तीर्थकर-देव ; (पव ६)।

अत्थाह वि [दे] देखो **अत्थग्घ** ; (दे १,५४ ; भवि)।

अत्थि वि [अर्थिन्] १ याचक, माँगने वाला ; (सुर १०, १००)। २ धनी, धन वाला ; (पंचा)। ३ मालिक, स्वामी ; (विसे)। ४ गरजू, चाहने वाला,

"धणओ धणत्थियाणं, कामत्थीणं च सव्वकामकरो ।
सग्गापवग्गसंगमहेऊ जिणदेसिओ धम्मो ॥ " (महा)।

अत्थि न [अस्थि] हाड, हड्डी ; (महा)।

अत्थि अ [अस्ति] १ सत्व-सूचक अव्यय, है, "अत्थेगइया मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइया" (औप); "अत्थि णं भंते! विमाणाइं" (जीव ३)। २ प्रदेश, अवयव "चत्तारि अत्थिकाया" (ठा ४, ४)।

°**अवत्तव्व** वि [°अवक्तव्य] सप्तभङ्गी का पांचवाँ भङ्ग, स्वकीय द्रव्य आदि की अपेक्षा से विद्यमान और एक ही साथ कहने को अशक्य पदार्थ,

"सब्भावे आइट्ठो देसो देसो अ उभयहा जस्स ।
तं अत्थिअवत्तव्वं च होइ दविअं विअप्पवसा" (सम्म ३८)।

°**काय** पुं [°काय] प्रदेशों का—अवयवों का समूह ; (सम १०)। °**णत्थवत्तव्व** वि [°नास्त्यवक्तव्य] सप्तभङ्गी का सातवाँ भङ्ग, स्वकीय द्रव्यादि की अपेक्षा से विद्यमान, परकीय द्रव्यादि की अपेक्षा से अविद्यमान और एक ही समय में दोनों धर्मों से कहने को अशक्य पदार्थ,

"सब्भावासब्भावे, देसो देसो अ उभयहा जस्स ।
तं अत्थिणत्थवत्तव्वयं च दविअं विअप्पवसा" (सम्म ४०)।

°त्त न [°त्व] सत्व, विद्यमानता, हयाती; (सुर २, १४२)। °त्ता स्त्री [°ता] सत्व, हयाती; (उप पृ ३७४)। °त्तिनय पुं [°इतिनय] द्रव्यार्थिक नय; (विसे ५३७)। °नत्थि वि (°नास्ति) सप्तभङ्गी का तीसरा भङ्ग—प्रकार, स्वद्रव्यादि की अपेक्षा से विद्यमान और परकीय द्रव्यादि की अपेक्षा से अविद्यमान वस्तु, "अह देसो सब्भावे देसोसब्भावपज्जवे णिअओ। तं दविअमत्थिनत्थि अ, आएसविसेसिअं जम्हा" (सम्म ३७)। °नत्थिप्पवाय न [°नास्तिप्रवाद] बारहवें जैन अङ्ग-ग्रन्थ का एक भाग, चौथा पूर्व; (सम २६)।

अत्थिक्क न [आस्तिक्य] आस्तिकता, आत्मा-परलोक आदि पर विश्वास; (श्रा ६; पुप्फ ११०)।

अत्थिय देखो **अत्थि=अर्थिन्**; (महा; औप)।

अत्थिय वि [अर्थिक] धनी, धनवान्; (हे २, १५९)

अत्थिय न [अस्थिक] १ हड्डी, हाड। २ पुं. वृक्ष-विशेष; ३ न. बहु बीज वाला फल-विशेष; (पण्ण १)।

अत्थिय वि [आस्तिक] आत्मा, परलोक आदि की हयाती पर श्रद्धा रखने वाला; (धर्म २)।

अत्थिर देखो **अथिर**; (पंचा १२)।

अत्थीकर सक [अर्थी+कृ] प्रार्थना करना, याचना करना। अत्थीकरेइ; (निचू ४)। वकृ—**अत्थीकरंत**; (निचू ४)।

अत्थीकरण न [अर्थीकरण] प्रार्थना, याचना; (निचू ४)।

अत्थु सक [आ+स्तृ] बिछाना, शय्या करना। कर्म—अत्थुव्वइ; कवकृ— **अत्थुव्वंत**; (विसे २३२१)।

अत्थुअ वि [आस्तृत] बिछाया हुआ; (पाअ; विसे २३२१)।

अत्थुग्गह पुं [अर्थावग्रह] इन्द्रियाँ और मन द्वारा होने वाला ज्ञान-विशेष, निर्विकल्पक ज्ञान; (सम ११; ठा २, १)।

अत्थुग्गहण न [अर्थावग्रहण] फल का निश्चय; (भग ११, ११)।

अत्थुड वि [दे] लघु, छोटा; (दे १, ६)।

अत्थुरण न [दे. आस्तरण] बिछौना; (स ६७)।

अत्थुरिय वि [दे. आस्तृत] बिछाया हुआ; (स २३९; दे १, ११३)।

अत्थुवड न [दे] भल्लातक, भिलावाँ वृक्ष का फल; (दे १, २३)।

अत्थेक्क वि [दे] आकस्मिक, अचिन्तित; (से १२, ४७)।

अत्थोग्गह देखो **अत्थुग्गह**; (सम ११)।

अत्थोग्गहण देखो **अत्थुग्गहण**; (भग ११, ११)।

अत्थोडिय वि [दे] आकृष्ट, खींचा हुआ; (महा)।

अत्थोभय वि [अस्तोभक] 'उत' 'वै' आदि निरर्थक शब्दों के प्रयोग से अदूषित (सूत्र); (वृह १)।

अत्थोवग्गह देखो **अत्थुग्गह**; (पण्ण १५)।

अथक्क न [दे] १ अकाण्ड, अनवसर, अकस्मात्; (षड्)। २ वि. पसरने वाला, फैलने वाला; (कुमा)।

अथव्वण पुं [अथर्वण] चौथा वेद-शास्त्र; (कप्प; णाया १, ५)।

अथिर वि [अस्थिर] १ चंचल, चपल; (कुमा)। २ अनित्य, विनश्वर; (कुमा)। ३ अदृढ, शिथिल; (ओघ) ४ निर्बल; (वव २)। ५ मजबूती से नहीं बैठा हुआ, नहीं जमा हुआ (अभ्यास), "अथिरस्स पुव्वगहियस्स, वत्तणा जं इह थिरीकरणं" (पंचा १२)। °णाम न [°नामन्] नाम-कर्म का एक भेद; (सम ६७)।

अद सक [अद्] खाना, भोजन करना। अदइ, अदए; (षड्)।

अदंसण देखो **अद्दंसण**; (पंचभा)।

अदंसण पुं [दे] चोर, डाकू; (दे १, २९; षड्)।

अदंसिया स्त्री [अदंशिका] एक प्रकार की मिष्ट चीज; (पण्ण १७)।

अदक्खु वि [अद्रष्ट] १ नहीं देखा हुआ; २ असर्वज्ञ; (सूअ १, २, ३)।

अदक्खु वि [अदक्ष] अनिपुण, अकुशल; (सूअ १, २, ३)।

अदक्खु वि [अपश्य] १ नहीं देखने वाला, अन्धा; २ असर्वज्ञ; "अदक्खुव! दक्खुवाहियं सद्दहसु अदक्खुदंसणा" (सूअ १, २, ३)।

अदण न [अदन] भोजन; (वृह १)।

अदत्त वि [अदत्त] नहीं दिया हुआ; (पण्ह १, ३)। °हार वि [°हार] चोर; (आचा)। °हारि वि [°हारिन्] चोर; (सूअ १, ५, १)। °दाण न [°दान] चोरी; (सम १०)। °दाणवेरमण न [°दानविरमण] चोरी से निवृत्ति, तृतीय व्रत; (पण्ह २, ३)।

अदब्भ वि [अदभ्र] अनल्प, बहुत; (जं ३)।

अदय वि [अदय] निर्दय, निष्ठुर; (निचू २)।

अदिइ देखो अइइ ; (ठा २, ३)।
अदिण्ण देखो अदत्त ; (ठा १)।
अदित्त वि [अद्वप्त] १ दर्प-रहित, नम्र ; (बृह १)। २ अहिंसक ; (ओघ ३०२)।
अदिन्न देखो अदत्त ; (सम १०)।
अदिस्स देखो अद्दिस्स ; (सम ६० ; सुपा १५३)।
अदिहि स्त्री [अधृति] अधोराई, धीरज का अभाव ; (पाअ)।
अदीण वि [अदीन] दीनता-रहित। °सत्तु पुं [°शत्रु] हस्तिनापुर का एक राजा ; (णाया १, ८)।
अदु अ [दे] आनन्तर्य-सूचक अव्यय, अब ; (आचा)। २ इस से ; (सूअ १, २, २)।
अदुत्तरं अ [दे] आनन्तर्य-सूचक अव्यय, अब, बाद ; (णाया १, १)।
अदुय न [अद्रुत] अ-शीघ्र, धीरे २ ; (भग ७, ६)। °बंधण न [°बन्धन] दीर्घ काल के लिए बन्धन ; (सूअ २, २)।
अदुव, अदुवा अ [दे] या, अथवा, और ; "हिंसेज्ज पाणभूयाइं, तसे अदुव थावरे" (दस ५, ५ ; आचा)।
अदोलि, अदोलिर वि [अदोलिन्] स्थिर, निश्चल ; (कुमा)।
अद्द वि [आर्द्र] १ गिला, भींजा हुआ ; अकठिन ; (कुमा)। २ पुं. इस नाम का एक राजा; ३ एक प्रसिद्ध राज-कुमार और पीछे से जैन मुनि ; ४ वि. आर्द्र राजा के वंशज; ५ नगर-विशेष ; (सूअ २, ६)। °कुमार पुं [°कुमार] एक राज-कुमार और बाद में जैन मुनि "अद्दकुमारो दढप्पहारो अ" (पडि)। °मुत्था स्त्री [°मुस्ता] कन्द-विशेष, नागर मोथा ; (श्रा २०)। °मलग न [°मलक] १ हरा आमला ; २ पीलु-वृक्ष की कली ; (धर्म २)। ३ शणवृक्ष की कली ; (पव ४)। °रिट्ठ पुं [°रिष्ट] कमल कौआ (आवम)।
अद्द पुं [अब्द] १ मेघ, वर्षा, वारिस ; (हे २, ७६)। २ वर्ष, संवत्सर, संवत् ; (सुर १३, ७०)।
अद्द पुं [अर्द] आकाश ; (भग २०, २)।
अद्द सक [अर्द्] मारना, पीटना ; (वव १०)।
अद्दइअ न [अद्वैत] १ भेद का अभाव ; २ वि. भेद-रहित वस्तु वगैरः (नाट)।
अद्दइज्ज वि [आर्द्रीय] १ आर्द्रकुमार-संबन्धी ; २ इस नाम का 'सूत्रकृताङ्ग' सूत्र का एक अध्ययन; (सूअ २, ६)।
अद्दंसण न [अदर्शन] १ दर्शन का निषेध, नहीं देखना ; (सुर ७, २४८)। २ वि. परोक्ष, जिसका दर्शन न हो "एक्कपएचिय हाहिंति मज्झ अद्दंसणा इण्हिं" (सुपा ६१७)। ३ नहीं देखने वाला, अन्धा ; ४ 'थीणद्धी' निद्रा वाला ; (गच्छ १ ; पव १०७)। °भूअ, °हूय वि [°भूत] जो अदृश्य हुआ हो ; (सुर १०, ५६ ; महा)।
अद्दण, अद्दण्ण वि [दे] आकुल, व्याकुल ; (दे १, १५ ; बृह १ ; निचू १०)।
अद्दव वि [आद्रव] गाला हुआ ; (आव ६)।
अद्दव्व न [अद्रव्य] अवस्तु, वस्तु का अभाव ; (पंचा ३)।
अद्दह सक [आ+द्रह्] उबालना, पानी-तैल वगैरः को खूब गरम करना। अद्दहेइ, अद्दहेमि ; संकृ—अद्दहेत्ता ; (उवा)।
अद्दहिय वि [आहित] रखा हुआ, स्थापित ; (विपा १, ६)।
अद्दा स्त्री [आर्द्रा] १ नक्षत्र-विशेष ; (सम २)। २ छन्द-विशेष ; (पिंग)।
अद्दाअ पुं [दे] १ आदर्श, दर्पण ; (दे १, १४ ; पण्ण १५ ; निचू १३)। °पसिण पुं [°प्रश्न] विद्या-विशेष, जिससे दर्पण में देवता का आगमन होता है ; (ठा १०)। °विज्जा स्त्री [°विद्या] चिकित्सा का एक प्रकार, जिससे बिमार को दर्पण में प्रतिबिम्बित करानेसे वह नीराग होता है ; (वव ५)।
अद्दाइअ वि [दे] आदर्श वाला, आदर्श से पवित्र ; (बृह १)
अद्दाग [दे] देखो अद्दाअ ; (सम १२३)।
अद्दि पुं [अद्रि] पहाड़, पर्वत ; (गउड)।
अद्दि पुंन [दे] गाडो का चाकडा ; "सगडद्दिसंठियाओ महा-दिसाओ हवंति चत्तारि" (विसे २७००)।
अद्दिट्ठ वि [अदृष्ट] १ नहीं देखा हुआ ; (सुर १, १७२)। २ दर्शन का अविषय ; (सम्म ६६)।
अद्दिय वि [आर्दित] आर्द्र किया हुआ, भींजाया हुआ ; (विक्र २३)।
अद्दिय वि [अर्दित] पीटा हुआ, पीड़ित ; (वव १०)।
अद्दिस्स वि [अदृश्य] देखने को अयोग्य या अशक्य ; (सुर ६, १३० ; सुपा ८५ ; श्रा २७)।
अद्दिस्संत, अद्दिस्समाण वकृ [अदृश्यमान] नहीं दिखाता हुआ ; (सुपा १५४; ४५७)।

अद्दीण वि [**अद्रीण**] क्षोभ को अप्राप्त, अक्षुब्ध, निर्भीक ; (पराह २, १) ।

अद्दीण देखो **अदीण** ; (ओघ ५३७) ।

अद्दुहुमाअ वि [**दे**] पूर्ण, भरा हुआ; (षड्) ।

अद्दुदेस वि [**अद्रश्य**] देखने को अशक्य; (स १७०) ।

अद्दुदेसीकारिणी स्त्री [**अद्रश्यीकारिणी**] अदृश्य बनाने वाली विद्या; (सुपा ४५४) ।

अद्दुदेस्सीकरण वि [**अद्रश्योकरण**] १ अदृश्य करना, २ अदृश्य करने वाली विद्या "किंपुण विज्जासिज्झा अद्दस्सीकरणसंगओ वावि" (सुपा ४५५) ।

अद्दोहि वि [**अद्रोहिन्**] द्रोह-रहित, द्वेष-वर्जित; (धर्म ३) ।

अद्ध पुंन [**अर्ध**] १ आधा; (कुमा) । २ खण्ड, अंश; (पि ४०२) । °**करिस** पुं [°**कर्ष**] परिमाण-विशेष, पल का आठवाँ भाग; (अणु) । °**कुडव,** °**कुलव** पुं [°**कुडव,** °**कुलव**] एक प्रकार का धान्य का परिमाण; (राय) । °**क्खेत्त** न [°**क्षेत्र**] एक अहोरात्र में चन्द्र के साथ योग प्राप्त करने वाला नक्षत्र; (चंद १०) । °**खल्ला** स्त्री [°**खल्वा**] एक प्रकार का जूता; (बृह ३) । °**घडय** पुं [°**घटक**] आधा परिमाण वाला घडा, छोटा घडा; (उवा) । °**चंद** पुं [°**चन्द्र**] १ आधा चन्द्र; (गा ५७१) । २ गल-हस्त, गला पकड़ कर बाहर करना; (उप ७२८ टी) । ३ न. एक हथियार; (उप पृ ३९५) । ४ अर्ध चन्द्र के आकार वाला सोपान; (णाया १, १) । ५ एक जात का बाण "एसो तुह तिक्खेणं सीसं छिंदामि अद्धचंदेण" (सुर ८, ३७) । °**चक्कवाल** न [°**चक्रवाल**] गति-विशेष; (ठा ७) । °**चक्कि** पुं [°**चक्रिन्**] चक्रवर्ती राजा से अर्ध विभूति वाला राजा, वासुदेव; (कम्म १, १२) । °**च्छट्ठ,** °**छट्ठ** वि [°**षष्ठ**] साढ़े पांच; (पि ४५०; सम १००) । °**ट्ठम** वि [°**ष्टम**] साढ़े सात; (ठा ६) । °**णाराय** न [°**नाराच**] चौथा संहनन, शरीर के हाड़ों की रचना-विशेष; (जीव १) । °**णारीसर** पुं [°**नारीश्वर**] शिव, महादेव; (कप्पू) । °**तइय** वि [°**तृतीय**] ढ़ाई; (पउम ४८, ३५) । °**तेरस** वि [°**त्रयोदश**] साढ़े बारह; (भग) । °**तेवन्न** वि [°**त्रिपञ्चाश**] साढ़े बावन्न ; (सम १३४) । °**द्ध** वि [°**र्ध**] चौथा भाग, पौआ; (बृह ३) । °**नवम** वि [°**नवम**] साढ़े आठ; (पि ४५०) । °**नाराय** देखो °**णाराय**; (कम्म १, ३८) । °**पंचम** वि [°**पञ्चम**] साढ़े चार; (सम १०२) । °**पलिअंक** वि [°**पर्यङ्क**] आसन-विशेष; (ठा ५, १) । °**पहर** पुं [°**प्रहर**] ज्योतिष शास्त्र प्रसिद्ध एक कुयोग; (गण १८) । °**बब्बर** पुं [°**बर्बर**] देश-विशेष; (पउम २७, ५) । °**मागहा,** °**ही** स्त्री [°**मागधी**] जैन प्राचीन साहित्य की प्राकृत भाषा, जिस में मागधी भाषा के भी कोई २ नियम का अनुसरण किया गया है "पोराणमद्धमागहभासानिययं हवइ सुत्तं" (हे ४, २८७; पि १६; सम ६०; पउम १, ३४] °**मास** पुं [°**मास**] पक्ष; पन्नरह दिन; (हे १०) । °**मासिय** वि [°**मासिक**] पाक्षिक,पक्ष-संबन्धी; (महा) । °**यंद** देखो °**चंद**; (उप ७२८ टी) । °**रज्जिय** वि [°**राज्यिक**] राज्य का आधा हिस्सेदार, अर्ध राज्य का मालिक; (विपा १,६) । °**रत्त** पुं [°**रात्र**] मध्य रात्रि का समय; निशीथ ; (गा २३१) । °**वेयाली** स्त्री [°**वेताली**] विद्या-विशेष ; (सुअ २, २) । °**संकासिया** स्त्री [°**सांकाश्यिका**] एक राज-कन्या का नाम ; (आव ४) । °**सम** न [°**सम**] एक वृत्त, छन्द-विशेष ; (ठा ७) । °**हार** पुं [°**हार**] १ नवसरा हार ; (राय; औप) । २ इस नाम का एक द्वीप ; ३ समुद्र-विशेष ; (जीव ३) । °**हारभद्द** पुं [°**हारभद्र**] अर्धहार-द्वीप का अधिष्ठाता देव ; (जीव ३) । °**हारमहाभद्द** पुं [**हारमहाभद्र**] पूर्वोक्त ही अर्थ ; (जीव ३) । **हारमहावर** पुं [°**हारमहावर**] अर्धहार समुद्र का एक अधिष्ठायक देव ; (जीव ३) । °**हारवर** पुं [°**हारवर**] १ द्वीप-विशेष ; २ समुद्र-विशेष ; ३ उनका अधिष्ठायक देव ; (जीव ३) । °**हारवरभद्द** पुं [°**हारवरभद्र**] अर्धहारवर द्वीप का एक अधिष्ठाता देव ; (जीव ३) । °**हारवरमहावर** पुं [°**हारवरमहावर**] अर्धहारवर समुद्र का एक अधिष्ठाता देव ; (जीव ३) । °**हारोभास** पुं [°**हारावभास**] १ द्वीप-विशेष ; २ समुद्र-विशेष ; (जीव ३) । °**हारोभासभद्द** पुं [°**हारावभासभद्र**] अर्धहारावभास-नामक द्वीप का एक अधिष्ठाता देव ; (जीव ३) । **हारोभासमहाभद्द** पुं [°**हारावभासमहाभद्र**] पूर्वोक्त ही अर्थ ; (जीव ३) । **हारोभासमहावर** पुं [°**हारावभासमहावर**] अर्धहारावभास-नामक समुद्र का एक अधिष्ठाता देव ; (जीव ३) । °**हारोभासवर** पुं [°**हाराव-**

°भासवर] देखो पूर्वोक्त अर्थ; (जीव ३)। °ाढ्य पुं [°ाढ्क] एक प्रकार का परिमाण, आढ़क का आधा भाग; (ठा ३, १)।

अद्ध पुं [अध्वन्] मार्ग, रास्ता; (महा; आचा)।

अद्धंत पुं [दे] १ पर्यन्त, अन्त भाग; (दे १, १८; से ६, ३२; पात्र) "भरिज्जंतसिद्धपहद्धंतो (विक १०१)। २ पुं.ब. कतिपय, कइएक; (से १३, ३२)।

अद्धक्खण न [दे] १ प्रतीक्षा करना; राह देखना; (दे १, ३४)। २ परीक्षा करना; (दे १, ३४)।

अद्धक्खिअ न [दे] १ संज्ञा करना; इसारा करना, संकेत करना; (दे १, ३४)।

अद्धक्खिअ वि [अर्धाक्षिक] विकृत आंख वाला; (महानि ३)।

अद्धजंघा } स्त्री [दे. अर्धजङ्घा] एक प्रकारका जूता, मोचक-
अद्धजंघी } नामक जूता, जिसे गुजराती में 'मोजड़ी' कहते हैं; (दे १, ३३; २, ५; ६, १३६)।

अद्धद्धा स्त्री [दे. अद्धाद्धा] दिन अथवा रात्रि का एक भाग; (सत्त ६ टी)।

अद्धर पुं [अध्वर] यज्ञ, याग; (पात्र)।

अद्धविआर न [दे] १ मण्डन, भूषा, "मां कुण अद्धविआरं" (दे १, ४३)। २ मंडल, छोटा मंडल; (दे १, ४३)।

अद्धा स्त्री [दे. अद्धा] १ काल, समय, वक्त; (ठा २,१; नव ४२)। २ संकेत; (भग ११, ११)। ३ लब्धि, शक्ति-विशेष; (विसे)। ४ अ. तत्त्वतः, वस्तुतः, ५ साक्षात् प्रत्यक्ष; (पिंग)। ६ दिवस; ७ रात्रि; (सत्त ६ टी)। °काल पुं (°काल) सूर्य आदि की क्रिया (परि-भ्रमण) से व्यक्त होने वाला समय "सूरकिरियाविसिट्ठो गोदोहाइकिरियासु निरवेक्खो। अद्धाकालो भण्णई" (विसे)। °छेय पुं [°छेद] समय का एक छोटा परिमाण, दो आवलिका परिमित काल; (पंच)। °पच्चक्खाण न [°प्रत्याख्यान] अमुक समय के लिए कोई व्रत या नियम करना; (आचू ६)। °मीसय न [°मिश्रक] एक प्रकार की सत्य-मृषा भाषा; (ठा १०)। °मीसिया स्त्री [°मिश्रिता] देखो पूर्वोक्त अर्थ; (पण्ण ११)। °समय पुं [°समय] सर्व-सूक्ष्म काल; (पण्ण ४)।

अद्धाण पुं [अध्वन्] मार्ग, रास्ता; (णाया १, १४; सुर ३, २२७) °सीसय न [°शीर्षक] मार्ग का अन्त, अटवी आदि का अन्त भाग; (वव ४; बृह ३)।

अद्धाणिय वि [आध्विक] पथिक, मुसाफिर; (बृह ४)

अद्धासिय वि [अध्यासित] अधिष्ठित, आश्रित; (सुर ७, २१४; उप २६४ टी)। २ आरूढ; (स ६३०)।

अद्धि देखो इड्ढि;
"धणवा वहिरंधरआ, ते च्चिअ जीअंति माणुसे लोए।
ण सुणंति खलवअणं, खलाण अद्धिं न पेक्खंति"
(गा ७०४)।

अद्धिइ स्त्री [अधृति] धीरज का अभाव, अधीरज; (पउम ११८, ३६)।

अद्धुइअ वि [अर्धोदित] थोड़ा कहा हुआ; (पि १५८)।

अद्धुग्घाड वि [अर्धोद्घाट] आधा खुला "अद्धोग्घाडा थणया" (पउम ३८, १०७)।

अद्धुट्ठ वि [अर्धचतुर्थ] साढ़े तीन; (सम १०१; विसे ६६३)।

अद्धुत्त वि [अर्धोक्त] थोड़ा कहा हुआ; (वव १०)।

अद्धुव वि [अध्रुव] १ चंचल, अस्थिर, विनश्वर; (स ३३६; पंचा १६; पउम २६, ३०)। २ अनि-यत; (आचा)।

अद्धेअद्ध वि [अर्धार्ध] १ द्विधा-भूत, दो टुकड़े वाला, खण्डित। २ क्रिवि. आधा आधा जैसे हो,
"अद्धेअद्धप्फुडिआ, अद्धेअद्धकडउक्खअसिलावेढा।
पवअभुआहअविसढा, अद्धेअद्धसिहरा पडंति महिहरा॥"
(से ६, ६६)।

अद्धोरु } देखो अड्ढोरुग, (दे ३, ४५; ओघ ६७६)।
अद्धोरुग }

अद्धोवमिय वि [अद्धौपम्य, अद्धौपमिक] काल का वह परिमाण जो उपमा से समझाया जा सके, पल्योपम आदि उपमा-काल; (ठा २,४; ८)।

अध अ [अधस्] नीचे; (आचा; पि १६०)।

अध (शौ) अ [अथ] अब, बाद; (कप्पू)।

अधइं (शौ) [अथकिम्] १ हाँ; २ और क्या; ३ जरूर, अवश्य; (कप्पू)।

अधं अ [अधस्] नीचे; (पिं ३४५)।

अधट्ठ वि [अधृष्ट] अ-धीठ; (कुमा)।

अधण वि [अधन] निर्धन, गरीब,
"रमइ विहवी विसेसे, थिइमेत्तं थोयवित्थरो महइ।
मग्गइ सरीरमधणो, रोई जीए च्चिय कयत्थो॥"
(गउड; सण)

अधणि वि [अधनिन्] धन-रहित, निर्धन; (श्रा १४) ।
अधण्ण वि [अधन्य] अकृतार्थ, निन्द्य; (पण्ह १,१) ।
अधम देखो अहम; (उत्त ६) ।
अधम्म पुं [अधर्म] १ पाप-कार्य, निषिद्ध कर्म, अनीति, "अधम्मेण चेव वित्तिं कप्पेमाणे विहरइ " (णाया १, १८) । २ एक स्वतन्त्र और लोक-व्यापी अजीव वस्तु, जो जीव वगैरः को स्थिति करने में सहायता पहुँचाती है; (सम २; नव ५) । ३ वि. धर्म-रहित, पापी; (विपा १,१) । °केउ पुं [°केतु] पापिष्ठ; (णाया १,१८) । °क्खाइ वि [°ख्याति] प्रसिद्ध पापी; (विपा १,१) । °क्खाइ वि [°ख्यायिन्] पाप का उपदेश देने वाला; (भग ३,७) । °त्थिकाय पुं [°स्तिकाय] अधम्म का दूसरा अर्थ देखो; (अणु) । °बुद्धि वि [°बुद्धि] पापी, पापिष्ठ; (उप ७२८ टी) ।
अधम्मिट्ठ वि [अधर्मिष्ठ] १ धर्म को नहीं करने वाला; (भग १२,२) । २ महा-पापी, पापिष्ठ; (णाया १,१८ ।
अधम्मिट्ठ वि [अधर्मेष्ट] अधर्म-प्रिय, पाप-प्रिय; (भग १२,२) ।
अधम्मिट्ठ वि [अधर्मीष्ट] पापिओं का प्यारा; (भग १२, २) ।
अधम्मिय देखो अहम्मिय; (ठा ४,१) ।
अधर देखो अहर; (उवा; सुपा १३८) ।
अधवा (शौ) देखो अहवा; (कप्पू) ।
अधा स्त्री [अधस्] अधो-दिशा, नीचली दिशा; (ठा ६) ।
अधि देखो अहि=अधि ।
अधिइ देखो अद्धिइ; (सुपा ३५६) ।
अधिकरण देखो अहिगरण; (पण्ह १,२) ।
अधिग वि [अधिक] विशेष, ज्यादः; (बृह १) ।
अधिगम देखो अहिगम; (धर्म २; विसे २२) ।
अधिगरण देखो अहिगरण; (निचू १) ।
अधिगरणिया देखो अहिगरणिया; (पण्ण २१) ।
अधिण्ण } (अप) वि [आधीन] आयत्त, पर-वश;
अधिन्न } (पि ६१; हे ४, ४२७) ।
अधिमासग पुं [अधिमासक] अधिक मास; (निचू २०) ।
अधीस वि [अधीश] नायक, अधिपति; (कुमा २३) ।
अधुव देखो अद्धुव; (णाया १,१, पउम ६५,४६) ।
अधो देखो अहो=अधस् ; (पि ३४५) ।
अनंदि स्त्री [अनन्दि] अमङ्गल, अकुशल " तं मोए अनंदिं " (अजि ३७) ।
अनन्न देखो अणण्ण ; (कुमा) ।
अनय देखो अणय ; (सुपा ३७१) ।
अनल देखो अणल ; (हे १, २२८ ; कुमा) ।
अनागय देखो अणागय ; (भग) ।
अनागार देखो अणागार ; (भग) ।
अनाय देखो अणाय ; (सुपा ४७०; पि ३८०) ।
अनालंफ (चूपै) वि [अनारम्भ] पाप-रहित; (कुमा) ।
अनालंफ (चूपै) वि [अनालम्भ] अहिंसक, दयालु; (कुमा) ।
अनिगिण देखो अणगिण ; (सम १७) ।
अनिदाया } देखो अणिदा ; (पण्ण ३४) ।
अनिद्दाया }
अनिमित्ती स्त्री [अनिमित्ती] लिपि-विशेष ; (विसे ४६४ टी) ।
अनियमिय वि [अनियमित] १ अव्यवस्थित; २ असंयत, इन्द्रियों का निग्रह नहीं करने वाला ; " गओ य नरयं अनियमियप्पा " (पउम ११४, २६) ।
अनियट्टि देखो अणियट्टि ; (सम २६ ; कम्म २ ; ७१ टी) ।
अनियय देखो अणियय ; (ओघ ७२) ।
अनिरुद्ध देखो अणिरुद्ध ; (अंत १४) ।
अनिल देखो अणिल ; (हे १, २२८ ; कुमा) ।
अनिसट्ठ देखो अणिसट्ठ ; (ठा ३, ४) ।
अनिहारिम } देखो अणीहारिम ; (भग; ठा २,४) ।
अनीहारिम }
अनु (अप) देखो अण्णहा ; (कुमा) ।
अनुकूल देखो अणुकूल ; (सुपा ४७४) ।
अनुग्गह देखो अणुग्गह ; (अभि ४१) ।
अनुचिट्ठिय देखो अणुट्ठिय ; (स १५) ।
अनुज्जुय देखो अणुज्जुय ; (पि ५७) ।
अनुहव देखो अणुहव=अनु+भू । वकृ—अनुहवंत; (रं
अन्न देखो अण्ण ; (सुपा ३६० ; प्रासू ४३ ; पण्ह १, २ ; २,१ ; श्रा ६) ।

अन्नइय देखो **अण्णइय** ; (भवि) ।
अन्नओ देखो **अण्णओ** । °**हुत्त** क्रिवि [°**मुख**] दूसरी तर्फ ; (सुर ३, १३६) ।
अन्नत्तो देखो **अण्णत्तो** ; (कुमा) ।
अन्नत्थ } देखो **अण्णत्थ** ; (आचा ; स १५० ;
अन्नत्थं } कुमा) ।
अन्नद्दो देखो **अण्णत्तो** ; (कुमा) ।
अन्नमन्न देखो **अण्णमण्ण** ; (गाया १, १) ।
अन्नन्न देखो **अण्णण्ण** ; (महा; कुमा) ।
अन्नय पुं [**अन्वय**] एक की सत्ता में ही दूसरे की विद्यमानता, जैसे अग्नि की हयाती में ही धूमकी सत्ता; नियमित संवन्ध ; (उप ४१३ ; स ६५१) ।
अन्नयर देखो **अण्णयर** ; (सुपा ३७०) ।
अन्नया देखो **अण्णया** ; (महा) ।
अन्नव देखो **अण्णव** ; (सुपा ८५; ५२६) ।
अन्नह देखो **अण्णह** ; (सुर १, १५६ ; कुमा) ।
अन्नहा देखो **अण्णहा** ; (पउम १००, २४ ; महा; सुर १, १४३ ; प्रासू ७) ।
अन्नहिं देखो **अण्णहिं** ; (कुमा) ।
अन्नाइट्ठ वि [**अन्वाविष्ट**] आक्रान्त ; "तुमं णं आउसो कासवा ! ममं तवेणं तेएणं अन्नाइट्ठे समाणे अंतो छण्हं मासाणं पित्तज्जरपरिगयसरीरे दाहवक्कंतीए छउमत्थे चेव कालं करेस्ससि " (भग १५) ।
अन्नाण देखो **अण्णाण**=अज्ञान ; (कुमा; सुर १, १५ ; महा ; उवर ६५ ; कम्म ४, ६ ; ११) ।
अन्नाणि देखो **अण्णाणि** ; (उव; सुपा ५८८) ।
अन्नाणिय देखो **अण्णाणिय** ; (पउम ४, २७) ।
अन्नाय देखो १ ला और २ रा **अण्णाय** ; (सुर ६, २ ; सुपा २५६ ; सुर २, ६ ; २०२ ; सम्म ६६ ; सुपा २३३ ; सुर २, १६५ ; सुपा ३०८) । "नाएण जं न सिद्धं को खलु सहलो तयत्थमन्नाओ ? " (उप ७२८ टी) ।
अन्नारिस देखो **अण्णारिस** ; (हे १, १४२ ; महा) ।
अन्निज्जमाण देखो **अण्णिज्जमाण** ; (गाया १, १६) ।
अन्निय देखो **अण्णिय** ।
अन्नियसुय पुं [**अन्निकासुत**] एक विख्यात जैन मुनि ; (उव) ।
अन्निया देखो **अण्णिया** ; (संथा ५६) ।

अन्नुन्न } देखो **अण्णुण्ण** ; (हे १, १५६ ; कप्प) ।
अन्नुमन्न }
अन्नेस देखो **अण्णेस** । वकृ—**अन्नेसमाण** ; (उप ६ टी) ।
अन्नेसण देखो **अण्णेसण** ; (सुर १०, २१८ ; सण) ।
अन्नेसणा देखो **अण्णेसणा**; (ठा ३, ४) ।
अन्नेसय वि [**अन्वेषक**] गवेषक, खोज करने वाला ; (स ५३५) ।
अन्नेसि } देखो **अण्णेसि**; (पि ५१६ ; आचा) ।
अन्नेसिय }
अन्नोन्न देखो **अण्णोण्ण**; (कुमा; महा) ।
अप स्त्री. व. [**अप्**] पानी, जल; (सुज्ज १०) । °**काय** पुं [°**काय**] पानी के जीव; (दं १३) ।
अपइट्ठाण देखो **अप्पइट्ठाण**; (आचा; ठा ४,३) ।
अपइट्ठिय देखो **अप्पइट्ठिय**; (ठा ४,१) ।
अपएस वि [**अप्रदेश**] १ निरंश, अवयव-रहित; (भग २०,५) । २ पुं. खराब स्थान; (पंचा ७) ।
अपंग पुं [**अपाङ्ग**] १ नेत्र का प्रान्त भाग; २ तिलक; ३ वि. हीन अंग वाला ; (नाट) ।
अपंडिअ वि [**दे**] अ-नष्ट, विद्यमान; (षड्) ।
अपंडिअ वि [**अपण्डित**] १ सद्बुद्धि-रहित; (बृह १) । २ मूर्ख; (अच्चु ५) ।
अपगंड वि [**अपगण्ड**] १ निर्दोष । २ न. फेन, पानी का झाग; (सुअ १, ६) ।
अपचय पुं [**अपचय**] अपकर्ष, हीनता; (उत्त १) ।
अपच्च देखो **अवच्च**; अपच्चणिव्विसेसाणि सत्ताणि" (पि ३६७) ।
अपच्चय पुं [**अप्रत्यय**] अविश्वास; (पण्ह १,२) ।
अपच्चल वि [**अप्रत्यल**] १ असमर्थ; २ अयोग्य; (निचू ११) ।
अपच्छ वि [**अपथ्य**) १ अ-हितकर; (पउम ८२,७२) । २ न. नहीं पचने वाला भोजन; "थेवेण अपच्छासेवणेण रोगुव्व वड्ढेइ " (सुपा ४३८) ।
अपच्छिम वि [**अपश्चिम**] अन्तिम; (गांदि; पाअ; उप २६४ टी) ।
अपज्जत्त } वि [**अपर्याप्त**] १ अपर्याप्त, असमर्थ; (गउड) । २ पर्याप्ति (आहारादि-ग्रहण करने की शक्ति) से रहित; (ठा २,१; नव ४) । °**नाम** न [°**नामन्**] नाम-कर्म का एक भेद; (सम ६७) ।
अपज्जत्तग }

अपज्जवसिय वि [अपर्यवसित] १ नाश-रहित; (सम्म ६१)। २ अन्त-रहित; (ठा १)।

अपडिच्छिर वि [दे] जड-बुद्धि, मूर्ख; (दे १,४३)।

अपडिण्ण } **अपडिन्न** } वि [अप्रतिज्ञ] १ प्रतिज्ञा-रहित, निश्चय-रहित; (आचा)। २ राग-द्वेष आदि बन्धनों से वर्जित; (सूअ १, ३, ३)। ३ फल की इच्छा न रखकर अनुष्ठान करने वाला, निष्काम; "गन्धेसु वा चन्दणमाहु सेट्ठं, एवं मुणीणं अपडिन्नमाहु" (सूअ १,६)।

अपडिपोग्गल वि [अप्रतिपुद्गल] दरिद्र, निर्धन; (निचू ५)।

अपडिबद्ध वि [अप्रतिबद्ध] १ प्रतिबन्ध-रहित, बेरोक, "अपडिबद्धो अनलो व्व." (पण्ह २,५)। २ आसक्ति-रहित; (पव १०४)।

अपडिवाइ देखो **अप्पडिवाइ**; (ठा ६; ओघ ५३२; णंदि)।

अपडिसंलीण वि [अप्रतिसंलीन] असंयत, इन्द्रिय आदि जिसके काबू में न हों; (ठा ४,२)।

अपडिहट्टु अ [अप्रतिहृत्य] नहीं दे कर; (कस; बृह ३)।

अपडिहय देखो **अप्पडिहय**; (खाया १,१६)।

अपडीकार वि [अप्रतीकार] इलाज-रहित, उपाय-रहित; (पण्ह १,१)।

अपडुप्पण्ण } **अपडुप्पन्न** } वि [अप्रत्युत्पन्न] १ अ-वर्तमान, अ-विद्यमान; (पि १६३)। २ प्रतिपत्ति में अ-कुशल; (वव ६)।

अपणट्ठ वि [अप्रनष्ट] नाश को अप्राप्त; (सुर ४, २४०)।

अपत्त देखो **अप्पत्त**; (बृह १; ठा ५,२; सूअ १, १४)।

अपत्तिअंत वकृ [अप्रतियत्] विश्वास नहीं करता हुआ; (गा ६७८; पि ४८७)।

अपत्तिय देखो **अप्पत्तिय**; (भग १६,३; पंचा ७)।

अपत्थ देखो **अपच्छ**; (उत ७; पंचा ७)।

अपमत्त देखो **अप्पमत्त**; (आचा)।

अपमाण न [अप्रमाण] १ झूठा, असत्य; (श्रा १२)। २ वि. ज्यादः, अधिक; (उत्त २४)।

अपमाय वि [अप्रमाद] १ प्रमाद-रहित। २ पुं. प्रमाद का अभाव, सावधानी; (पण्ह २,१)।

अपय वि [अपद] १ पाँव रहित, वृक्ष, द्रव्य, भूमि वगैरः पैर रहित वस्तु; (खाया १,५)। २ पुं. मुक्तात्मा "अपयस्स पयं नत्थि" (आचा)। ३ सूत्र का एक दोष; (बृह १; विसे)।

अपय स्त्री [अप्रज] सन्तानरहित; (बृह १)।

अपर देखो **अवर**; (निचू २०)। २ वैशेषिक दर्शन में प्रसिद्ध अवान्तर सामान्य; (विसे २४६१)।

अपरक्ख वि [अपराक्ष] असमक्ष, परोक्ष; (पण्ह १,३)।

अपरद्ध देखो **अवरुद्ध**; (कप्प)।

अपरंतिआ स्त्री [अपरान्तिका] छन्द-विशेष; (अजि ३४)।

अपराइय वि [अपराजित] १ अ-परिभूत; (पण्ह १,४)। २ पुं. सातवें बलदेव के पूर्व-जन्म का नाम; (सम १५३)। ३ भरतक्षेत्र का छठवाँ प्रतिवासुदेव; (सम १५४)। ४ उत्तम-पंक्ति के देवों की एक जाति; (सम ५६)। ५ भगवान् ऋषभदेव का एक पुत्र; (कप्प)। ६ एक महाग्रह ; (ठा २, ३)। ७ न. अनुत्तर देव-लोक का एक विमान—देवावास ; (सम ५६)। ८ रुचक पर्वत का एक शिखर ; (ठा ८)। ९ जम्बूद्वीप की जगती का उत्तर द्वार ; (ठा ४, २)।

अपराइया स्त्री [अपराजिता] १ विदेह-वर्ष की एक नगरी ; (ठा २, ३)। २ आठवें बलदेव की माता; (सम १५२)। ३ अङ्गारक ग्रह की एक पट्टरानी का नाम ; (ठा ४, १)। ४ एक दिशा-कुमारी देवी; (ठा ८)। ५ ओषधि-विशेष ; (ती ७)। ६ अञ्जनाद्रि पर्वत पर स्थित एक पुष्करिणी ; (ती २)।

अपराजिय देखो **अपराइय** ; (कप्प ; सम ५६ ; १०२; ठा २, ३)।

अपराजिया देखो **अवराइया** ; (ठा २, ३)।

अपरिग्गह वि [अपरिग्रह] १ धन-धान्य आदि परिग्रह से रहित ; (पण्ह २, ३)। २ ममता-रहित, निर्मम; "अपरिग्गहा अणारंभा भिक्खू ताणं परिव्वए" (सूअ १, १, ४)।

अपरिग्गहा स्त्री [अपरिग्रहा] वेश्या ; (वव २)।

अपरिग्गहिआ स्त्री [अपरिगृहीता] १ वेश्या, कन्या वगैरः अविवाहिता स्त्री ; (पडि)। २ पति-हीना स्त्री, विधवा; (धर्म २)। ३ घर-दासी ; ४ पनीहारी ; ५ देव-पुत्रिका, देवता को भेंट की हुई कन्या ; (आचू ५)।

अपरिच्छण्ण } **अपरिच्छन्न** } वि [अपरिच्छन्न] १ नहीं ढका हुआ, अनावृत ; (वव ३)। २ परिवार-रहित; (वव १)।

अपरिणय वि [अपरिणत] १ रूपान्तर को अप्राप्त ; (ठा २, १)। २ जैन साधु की भिक्षा का एक दोष ; (आचा)।

अपरित्त वि [अपरीत] अपरिमित, अनन्त ; (पण्ण १८)।

अपरिसेस वि [अपरिशेष] सब, सकल, निःशेष ; (पण्ह १, २ ; पउम ३, १४०)।

अपरिहारिय वि [अपरिहारिक] १ दोषों का परिहार नहीं करने वाला ; (आचा)। २ पुं. जैनेतर दर्शन का अनुयायी गृहस्थ ; (निचू २)।

अपवग्ग पुं [अपवर्ग] मोक्ष, मुक्ति ; (सुर ८, १०६ ; सत ११)।

अपविद्ध वि [अपविद्ध] १ प्रेरित ; (से ७, ११)। २ न. गुरु-वन्दन का एक दोष, गुरु को वन्दन कर के तुरन्त हो भाग जाना ; (गुभा २३)।

अपह वि [अप्रभ] निस्तेज ; (दे १, १६४)।

अपहत्थ देखो **अवहत्थ** ; (भवि)।

अपहारि वि [अपहारिन्] अपहरण करने वाला ; (स २१७)।

अपहिय वि [अपहृत] छीना हुआ ; (पउम ७६, ५)।

अपहु वि [अप्रभु] १ असमर्थ ; २ नाथ-रहित, अनाथ ; (पउम १०१, ३५)।

अपाइय वि [अपात्रित] पात्र-रहित, भाजन-वर्जित " नो कप्पइ निग्गंथीए अपाइयाए होत्तए " (कस)।

अपाउड वि [अप्रावृत] नहीं ढका हुआ, वस्त्र-रहित, नग्न ; (ठा ५, १)।

अपादाण न [अपादान] कारक-विशेष, जिसमें पञ्चमी विभक्ति लगती है ; (विसे २११७)।

अपाण न [अपान] १ पान का अभाव ; (उप ८४५)। २ पानी जैसी ठंडी पेय वस्तु-विशेष ; (भग १५)। ३ पुं. अपान वायु ; ४ गुदा ; (सुपा ६२०)। ५ वि. जल-वर्जित, निर्जल (उपवास), "छट्ठेणं भत्तेणं अपाणएणं" (जं २)।

अपार वि [अपार] पार-रहित, अनन्त ; (सुपा ४५०)।

अपारमग्ग पुं [दे] विश्राम, विश्रान्ति ; (दे १, ४३)।

अपाव वि [अपाप] १ पाप-रहित ; (सुअ १, १, ३)। २ न. पुण्य ; (उव)।

अपावा स्त्री [अपापा] नगरी-विशेष, जहां भगवान् महावीर का निर्वाण हुआ था, यह आजकल 'पावापुरी' नाम से प्रसिद्ध है और विहार से आठ माईल पर है ; (राज)।

अपिट्ठ वि [दे] पुनरुक्त, फिरसे कहा हुआ ; (षड्)।

अपिय वि [अप्रिय] अनिष्ट ; (जीव १)।

अपिह अ [अपृथक्] अ-भिन्न ; (कुमा)।

अपुणबंधग, अपुणबंधय वि [अपुनर्बन्धक] फिर से उत्कृष्ट कर्म-बन्ध नहीं करने वाला, तीव्र भाव से पाप का नहीं करने वाला ; (पंचा ३ ; उप २५३; ६५१)।

अपुणब्भव पुं [अपुनर्भव] १ फिर से नहीं होना। २ वि. जिससे फिर जन्म न हो वह, मुक्ति-प्रद ; (पण्ह २, ४)।

अपुणब्भाव वि [अपुनर्भाव] फिर से नहीं होने वाला ; (पंच १)।

अपुणभव देखो **अपुणब्भव** ; (कुमा)।

अपुणरागम पुं [अपुनरागम] १ मुक्त आत्मा ; २ मुक्ति, मोक्ष ; (दसचू १)।

अपुणरावत्तग, अपुणरावत्तय पुं [अपुनरावर्त्तक] १ फिर नहीं घूमने वाला, मुक्त आत्मा ; २ मोक्ष, मुक्ति ; (पि ३४३ ; औप ; भग १ १)।

अपुणरावत्ति पुं [अपुनरावर्तिन्] मुक्त आत्मा ; (पि ३४३)।

अपुणराविति पुं [अपुनरावृत्ति] मोक्ष, मुक्ति ; (पडि)।

अपुणरुत्त वि [अपुनरुक्त] फिर से अकथित, पुनरुक्ति-दोष से रहित " अपुणरुतेहिं महावित्तेहिं संथुणइ " (राय)।

अपुणागम देखो **अपुणरागम** ; (पि ३४३)।

अपुणागमण न [अपुनरागमन] १ फिर से नहीं आना ; २ फिर से अनुत्पत्ति ; " अपुणागमणाय व तं तिमिरं उम्मूलिअं रविणा " (गउड)।

अपुण्ण न [अपुण्य] १ पाप ; २ वि. पुण्य-रहित, कम-नसीब, हत-भाग्य ; (विपा १, ७)।

अपुण्ण [अपूर्ण] अधुरा, अपरिपूर्ण ; (विपा १, ७)।

अपुण्ण [दे] आक्रान्त ; (षड्)।

अपुत्त, अपुत्तिय वि [अपुत्र, °क] १ पुत्र-रहित ; (सुपा ४१२; ३१४)। २ स्वजन-रहित, निर्मम ; निःस्पृह ; (आचा)।

अपुन्न देखो **अपुण्ण** ; (णाया १, १३)।

अपुम न [अपुंस्] नपुंसक ; (ओघ २२३)।

अपुल्ल देखो **अप्पुल्ल** ; (चंड)।

अपुव्व वि [अपूर्व] १ नूतन, नवीन ; २ अद्भुत, आश्चर्य-कारक ; ३ असाधारण, अद्वितीय ; (हे ४, २७० ; उप

६ टी)। °करण न [°करण] १ आत्मा का एक अभूतपूर्व शुभ परिणाम; (आचा)। २ आठवाँ गुण-स्थानक; (पव २२४; कम्म २, ६)।

अपूय } पुं [अपूप] एक भक्ष्य पदार्थ, पूआ, पूड़ा; (औप;
अपूव } पण्ण ३६; दे १, १३४; ६, ८१)।

अपेक्ख सक [अप+ईक्ष्] अपेक्षा करना, राह देखना। हेकृ—अपेक्खिदुं (शौ); (नाट)।

अपेच्छ वि [अप्रेक्ष्य] १ देखने को अशक्य; २ देखने को अयोग्य; (उव)।

अपेय वि [अपेय] पीने को अयोग्य, मद्य आदि; (कुमा)।

अपेय वि [अपेत] गया हुआ, नष्ट; "अपेयचक्खु" (बृह १)।

अपेहय वि [अपेक्षक] अपेक्षा करने वाला; (आव ४)।

अपोरिसिय } वि [अपौरुषिक] पुरुष से ज्यादः परिमाण
अपोरिसीय } वाला; अगाध; (णाया १, ५; १४)।

अपोरिसीय वि [अपौरुषेय] पुरुष ने नहीं बनाया हुआ, नित्य; (ठा १०)।

अपोह सक [अप+ऊह्] निश्चय करना, निश्चय रूप से जानना। अपोहए; (विसे ५६१)।

अपोह पुं [अपोह] १ निश्चय-ज्ञान; (विसे ३९६)। २ पृथग्भाव, भिन्नता; (ओघ ३)।

अप्प देखो अत्त=आप्त; "अप्पोलंभनिमित्तं पढमस्स णाय-ज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्तेत्ति बेमि" (णाया १, १)।

अप्प वि [अल्प] १ थोड़ा; स्तोक; (सुपा २८०; स्वप्न ६७)। २ अभाव; (जीव ३; भग १४, १)।

अप्प पुं [आत्मन्] १ आत्मा, जीव, चेतन; (णाया १, १)। २ निज, स्व, "अप्पणा अप्पणो कम्मक्खयं करित्तए" (णाया १, ५)। ३ देह, शरीर; (उत्त ३)। ४ स्वभाव, स्वरूप; (आचा)। °घाइ वि [°घातिन्] आत्म-हत्या करने वाला; (उप ३५७ टी) °छंद वि [°च्छन्द] स्वैरी, स्वच्छन्दी; (उप ८३३ टी)। °ज्ञ वि [°ज्ञ] १ आत्मज्ञ; (हे २, ८३)। २ स्वाधीन; (निचू १)। °ज्जोइ पुं [°ज्योतिस्] ज्ञान-स्वरूप, "किंजोइरयं पुरिसो अप्पज्जोइ त्ति णिद्दिट्ठो" (विसे)। °ण्णु वि [°ज्ञ] आत्म-ज्ञानी; (षड्)। °वस वि [°वश] स्वतन्त्र, स्वाधीन; (पाअ; पउम ३७, २२)। °वह पुं [°वध] आत्म-हत्या, आपघात; (सुर २, १६६; ५, २३७)। °वाइ वि [°वादिन्] आत्मा के अति-रिक्त दूसरे पदार्थ को नहीं मानने वाला; (णंदि)।

अप्प पुं [दे] पिता, बाप; (दे १, ६)।

अप्प सक [अर्पय्] अर्पण करना, भेंट करना। अप्पेइ; (हे १, ६३)। अप्पअइ; (नाट)। संकृ—अप्पिअ; (सुपा २८०)। कृ—अप्पेयव्व; (सुपा २६५; ५१६)।

अप्पइट्ठाण पुंन [अप्रतिष्ठान] १ मोक्ष, मुक्ति; (आचा)। २ सातवीं नरक-भूमि का बीचला आवास; (सम २; ठा ५, ३)।

अप्पआस देखो अप्पगास; (नाट)।

अप्पआस सक [श्लिष्] आलिङ्गन करना। अप्पआसइ; (षड्)।

अप्पउलिय वि [अपक्वौषधि] नहीं पकी हुई फल फुलेरी; (स ५०)।

अप्पंभरि वि [आत्मम्भरि] एकलपेटा, स्वार्थी; (स ५७०)।

अप्पकंप वि [अप्रकम्प] निश्चल, स्थिर; (ठा १०)।

अप्पकेर वि [आत्मीय] स्वकीय, निजीय; (प्रामा)।

अप्पक्क वि [अपक्व] नहीं पका हुआ, कच्चा; (सुपा ४१३)।

अप्पग देखो अप्प; (आव ४; आचा)।

अप्पगास पुं [अप्रकाश] प्रकाश का अभाव, अन्धकार; (निचू १)।

अप्पगुत्ता स्त्री [दे] कपिकच्छू, कोंच वृक्ष; (दे १, २९)।

अप्पज्झ वि [दे] आत्म-वश, स्वाधीन; (दे १, १४)।

अप्पडिआर वि [अप्रतिकार] इलाज-रहित, उपाय-रहित; (मा ४३)।

अप्पडिकंटय वि [अप्रतिकण्टक] प्रतिपक्ष-शून्य, प्रति-स्पर्धि-रहित; (राय)।

अप्पडिकम्म वि [अप्रतिकर्मन्] संस्कार-रहित, परिष्कार-वर्जित, "सुण्णागारे व अप्पडिकम्मे" (पण्ह २, ५)।

अप्पडिक्कंत वि [अप्रतिक्रान्त] दोष से अनिवृत्त, अंगी-नियम में लगे हुए दूषणों की जिसने शुद्धि न की हो वह; (औप)।

अप्पडिकुट्ठ वि [अप्रतिक्रुष्ट] अनिवारित, नहीं रोका हुआ; (ठा २,४)।

अप्पडिचक्क वि [अप्रतिचक्र] अ-तुल्य, अ-समान; (णंदि)।

अप्पडिण्ण } देखो **अपडिण्ण** ; (आचा)।
अप्पडिन्न }

अप्पडिबंध पुं [**अप्रतिबन्ध**] १ प्रतिबन्ध का अभाव ; २ वि. प्रतिबन्ध-रहित ; (सुपा ६०८)।

अप्पडिबद्ध देखो **अपडिबद्ध** ; (उत्त २९ ; पि २१८)।

अप्पडिबुद्ध वि [**अप्रतिबुद्ध**] १ अ-जागृत । २ कोमल, सुकुमार ; (अभि १६१)।

अप्पडिम वि [**अप्रतिम**] असाधारण, अनुपम; (उप ७६८ टी ; सुपा ३५)।

अप्पडिरूव वि [**अप्रतिरूप**] ऊपर देखो ; (उप ७२८ टी)।

अप्पडिलद्ध वि [**अप्रतिलब्ध**] अप्राप्त ; (णाया १, १)।

अप्पडिलेस्स वि [**अप्रतिलेश्य**] असाधारण मनो-बल वाला; (औप)।

अप्पडिलेहण न [**अप्रतिलेखन**] अ-पर्यवेक्षण ; अन-वलोकन, नहीं देखना ; (आव ६)।

अप्पडिलेहणा स्त्री [**अप्रतिलेखना**] ऊपर देखो ; (कप्प)।

अप्पडिलेहिय वि [**अप्रतिलेखित**] अ-पर्यवेक्षित, अनव-लोकित, नहीं देखा हुआ; (उवा)।

अप्पडिलोम वि [**अप्रतिलोम**] अनुकूल ; (भग २५, ७ ; अभि २४)।

अप्पडिवरिय पुं [**अप्रतिवृत**] प्रदोष काल ; (बृह १)।

अप्पडिवाइ वि [**अप्रतिपातिन्**] १ जिसका नाश न हो ऐसा, नित्य; (सुर १४, २६)। २ अवधिज्ञान का एक भेद, जो केवल ज्ञान को बिना उत्पन्न किये नहीं जाता ; (विसे)।

अप्पडिहत्थ वि [**अप्रतिहस्त**] असमान, अद्वितीय ; (से १३, १२)।

अप्पडिहय वि [**अप्रतिहत**] १ किसी से नहीं रुका हुआ; (पण्ह २, ५)। २ अखण्डित, अबाधित ; " अप्पडिहय-सासणे " (णाया १, १६)। ३ विसंवाद-रहित " अप्प-डिहयवरनाणदंसणधरे " (भग १, १)।

अप्पडीबद्ध देखो **अपडिबद्ध** ; " निम्ममनिरहंकारा निरम्य-सरीरवि अप्पडीबद्धा " (संथा ६०)।

अप्पड्ढिय वि [**अल्पर्द्धिक**] थोड़ी ऋद्धि वाला, अल्प वैभव वाला ; (सुपा ४३०)।

अप्पण न [**अर्पण**] १ भेंट, उपहार, दान ; (श्रा २७)। २ प्रधान रूप से प्रतिपादन ; (विसे १८४३)।

अप्पण देखो **अप्प=आत्मन्** ; (आचा ; उत्त १; महा ; हे ४, ४२२)।

अप्पण वि [**आत्मीय**] स्वकीय; निजका ; " नो अप्पणा पराया गुरुणो कइयावि होंति सुद्धाणं " (सट्ठि १०५)।

अप्पणय वि [**आत्मीय**] स्वकीय, निजीय ; (पउम ५०, १६ , सुपा २७९ ; हे २, १५३)।

अप्पणा अ [**स्वयम्**] स्वयं, आप, निज, खुद ; (षड्)।

अप्पणिज्ज } वि [**आत्मीय**] स्वकीय, स्वीय ; (ठा
अप्पणिज्जिय } १; आवम)।

अप्पणो अ [**स्वयम्**] आप, खुद; निज ; " विअसंति अप्पणो चेव कमलसरा ; (हे २, २०९)।

अप्पतक्किय वि [**अप्रतर्कित**] अवितर्कित, असंभावित ; (स ५३०)।

अप्पत्त पुंन [**अपात्र**] १ अयोग्य, नालायक, कुपात्र, " अप्पणेवि हु अप्पत्ता परिद्धिं नेय विसहंति " (सुर ३, ४५; गा १५७)। २ वि. आधार-रहित, भाजन-शून्य ; (सुर १३, ४५)।

अप्पत्त वि [**अपत्र**] १ पत्ती से रहित (वृक्ष) ; (सुर ३, ४५)। २ पांख से रहित (पक्षी); (सूअ १, १४)।

अप्पत्त वि [**अप्राप्त**] अ-लब्ध, अनवाप्त ; (सुर १३, ४५ ; ओघ ८९)। °**कारि** वि [**कारिन्**] वस्तु का बिना ही स्पर्श किये (दूर से) ज्ञान उत्पन्न करने वाला, " अप्पत्तकारि णयणं " (विसे)।

अप्पत्ति स्त्री [**अप्राप्ति**] नहीं पाना ; (सुर ४, २१३)।

अप्पत्तिय पुंन [**अप्रत्यय**] अविश्वास ; (स ६६७ ; सुपा ५१२)।

अप्पत्तिय न [**अप्रीति**] १ अप्रीति, प्रेम का अभाव ; (ठा ४, ३)। २ क्रोध, गुस्सा ; (सूअ १,१, २)। ३ मानसिक पीड़ा ; (आचा)। ४ अपकार; (निचू १)।

अप्पत्तिय वि [**अपात्रिक**] पात्र-रहित, आधार-वर्जित ; (भग १६, ३)।

अप्पत्तियण न [**अप्रत्ययन**] अ-विश्वास, अ-श्रद्धा ; (उप ३१२)।

अप्पत्थ वि [**अप्रार्थ्य**] १ प्रार्थना करने को अयोग्य ; २ नहीं चाहने लायक ; (सुपा ३३६)।

अप्पत्थण न [**अप्रार्थन**] १ अयाच्ञा । २ अनिच्छा, अचाह ; (उत्त ३२)।

अप्पत्थिय वि [अप्रार्थित] १ अयाचित ; २ अनभिलषित, अवांछित; (जं ३) । °**पत्थय**, °**पत्थिय** वि [°प्रार्थक, °र्थिक] मरणार्थी, मौत को चाहने वाला, " कीस णं एस अप्पत्थियपत्थए दुरंतपंतलक्खणे " (भग ३, २ ; णाया १, ६; पि ७१) ।

अप्पत्थुय वि [अप्रस्तुत] प्रसंग के अनुपयुक्त, विषयान्तर ; (सुपा १०६) ।

अप्पदुट्ठ वि [अप्रद्विष्ट] जिस पर द्वेष न हो वह, प्रीतिकर; ओघ ७४४) ।

अप्पदुस्समाण वकृ [अप्रद्विष्यत्] द्वेष नहीं करता हुआ ; (अंत १२) ।

अप्पप्प वि [अप्राप्य] प्राप्त करने को अशक्य ; (विसे २६८७) ।

अप्पभाय न [अप्रभात] १ वड़ी सवेर; २ वि. प्रकाश-रहित, कान्ति-वर्जित ; " अज्ज पुण अप्पभाए गयणे " (सुर ११, ११०) ।

अप्पभु वि [अप्रभु] १ असमर्थ ; (भग) । २ पुं. मालिक से भिन्न, नौकर वगैरः ; (धर्म ३) ।

अप्पमज्जिय वि [अप्रमार्जित] साफ नहीं किया हुआ ; (उवा) ।

अप्पमत्त वि [अप्रमत्त] प्रमाद-रहित, सावधान, उपयोग वाला ; (पराह २, ५; हे १, २३१ ; अभि १८५) । °**संजय** पुंस्त्री [°संयत] १ प्रमाद-रहित मुनि ; २ न. सातवाँ गुण-स्थानक ; (भग ३, ३) ।

अप्पमाण देखो **अपमाण** ; (बृह ३ ; पराह २, ३) ;
" अइक्कमित्ता जिणरायआणं, तवंति तिव्वं तवमप्पमाणं ।
पढंति नाणं तह दिंति दाणं, सव्वंपि तेसिं कयमप्पमाणं "
(सत्त २०) ।

अप्पमाय पुं [अप्रमाद] प्रमाद का अभाव ; (निचू १) ।

अप्पमेय वि [अप्रमेय] १ जिसका मान न हो सके ऐसा, अनन्त ; (पउम ७५, २३) । २ जिसका ज्ञान न हो सके ऐसा ; (धर्म १) । ३ प्रमाण से जिसका निश्चय न किया जा सके वह ; (पराह १, ४) ।

अप्पय देखो **अप्प** ; (उव ; पि ४०१) ।

अप्परिचत्त वि [अपरित्यक्त] नहीं छोड़ा हुआ ; अपरि-मुक्त; (सुपा ११०) ।

अप्परिवडिय वि [अपरिपतित] अ-नष्ट, विद्यमान ; (श्रा ६) ।

अप्पलहुअ वि [अप्रलघुक] महान, बड़ा ; (से १, १) ।

अप्पलीण वि [अप्रलीन] अ-संवद्ध, सङ्ग-वर्जित ; (सूअ १, १, ४) ।

अप्पलीयमाण वकृ [अप्रलीयमान] आसक्ति नहीं करता हुआ ; (आचा) ।

अप्पवित्त वि [अप्रवृत्त] प्रवृत्ति-रहित ; (पंचा १४) ।

अप्पवित्ति स्त्री [अप्रवृत्ति] प्रवृत्ति का अभाव ; (धर्म १) ।

अप्पसंत वि [अप्रशान्त] अशान्त, कुपित ; (पंचा २) ।

अप्पसंसणिज्ज वि [अप्रशंसनीय] प्रशंसा के अयोग्य ; (तंदु) ।

अप्पसज्झ वि [अप्रसह्य] १ सहने को अशक्य ; २ सहन करने को अयोग्य ; (वव ७) ।

अप्पसण्ण वि [अप्रसन्न] उदासीन ; (नाट) ।

अप्पसत्थ वि [अप्रशस्त] अ-चारु, अ-सुन्दर, खराब; (ठा ३, ३ ; भग ; श्रा ४) ।

अप्पसत्तिय वि [अल्पसत्त्विक] अल्प सत्त्व वाला, " सुसमत्थाविसमत्था कीरंति अप्पसत्तिया पुरिसा " (सूअ १, ४, १) ।

अप्पसारिय वि [अप्रसारिक] निर्जन, विजन (स्थान); (उप १७०) ।

अप्पहवंत वकृ [अप्रभवत्] समर्थ नहीं होता हुआ, नहीं पहुँच सकता हुआ ; (स ३०५) ।

अप्पहिय वि [अप्रथित] १ अ-विस्तृत ; २ अ-प्रसिद्ध; (सुपा १२५) ।

अप्पाअप्पि स्त्री [दे] उत्कण्ठा, औत्सुक्य ; (पिंग) ।

अप्पाउड वि [अप्रावृत] अनाच्छादित, नग्न; (सूअ २, २) ।

अप्पाउय वि [अल्पायुष्क] थोड़ा आयुष्य वाला; (ठा ३, ३ ; पउम १४, ३०) ।

अप्पाउरण वि [अप्रावरण] १ नग्न । २ न. वस्त्र का अभाव; ३ वस्त्र नहीं पहनने का नियम ; (पंचा ५ ; पव ४) ।

अप्पाण देखो **अप्प**=आत्मन् ; (पराह १, २ ; ठा २, ३ ; प्राप्र ; हे ३, ५६) । °**रक्खि** वि [°रक्षिन्] आत्मा की रक्षा करने वाला ; (उत्त ४) ।

अप्पाबहु, **अप्पाबहुय** न [अल्पबहुत्व] न्यूनाधिकता, कम-वेशीपन; (नव ३२ ; ठा ४, २) ।

अप्पावय वि [अप्रावृत] १ वस्त्र-रहित, नग्न ; (पराह २, १) । २ खुला हुआ ; बँद नहीं किया हुआ ; (सूअ १, ५, १) ।

अप्पाविय वि [अर्पित] दिलाया हुआ ; (सुपा ३३१)।

अप्पाह सक [सं+दिश्] संदेश देना, खबर पहुँचाना। अप्पाहइ ; (षड् ; हे ४, १८०)। अप्पाहेइ (गा ६३२)। संकृ—अप्पाहट्टु, अप्पाहिवि; (पि ५७७ ; भवि)।

अप्पाह सक [अधि+आपय्] पढ़ाना, सीखाना। कर्म—अप्पाहिज्जइ ; (से १०, ७४)। वकृ—अप्पाहेंत ; (से १०, ७५)। हेकृ—अप्पाहेउं ; (पि २८६)।

अप्पाहण्ण न [अप्राधान्य] मुख्यता का अभाव, गौणता; (पंचा १ ; भास ११)।

अप्पाहिय वि [संदिष्ट] संदेश दिया हुआ; (भवि)।

अप्पाहिय वि [अध्यापित] १ पाठित, शिक्षित ; (से ११, ३८ ; १४, ६१)। २ न. सीख, उपदेश ; " अप्पाहियलरवं " (उप ५६२ टी)।

अप्पिड्ढिय वि [अल्पर्द्धिक] अल्प संपत्ति वाला ; (भग; पउम २, ७४)।

अप्पिण सक [अर्पय्] अर्पण करना, भेंट करना, देना। "अहीरोवि वारगेण अप्पिणइ " (आक)। अप्पिणामि ; (पि ५५७)। अप्पिणंति ; (विसे ७ टी)।

अप्पिणण न [अर्पण] दान, भेंट ; (उप १७४)।

अप्पिणिच्चिय वि [आत्मीय] स्वकीय, निजीय ; (भग)।

अप्पिय वि [अर्पित] १ दिया हुआ, भेंट किया हुआ ; (विपा १, २ ; हे १, ६३)। २ विवक्षित, प्रतिपादन करने को इष्ट, " जह दवियमप्पियं तं तहेव अत्थित्ति पज्जवनयस्स " (सम्म ४२)। ३ पुं. पर्यायार्थिक नय, " अप्पियमयं विसेसो सामन्नमणप्पियनयस्स " (विसे)।

अप्पिय वि [अप्रिय] १ अनिष्ट, अप्रीतिकर; (भग १, ५; विपा १,१)। २ न. मन का दुःख; ३ चित्त की शङ्का, " मदु णाईण व सुहीणं वा अप्पियं दट्ठु एगता होंति " (सूअ १, ४, १, १४)।

अप्पीइ स्त्री [अप्रीति] अप्रेम, अरुचि ; (सुपा २६४)।

अप्पीकय वि [आत्मीकृत] आत्मा से संबद्ध ; (विसे)।

अप्पुट्ठ वि [अस्पृष्ट] नहीं छूआ हुआ; असंयुक्त, "जं अप्पुट्ठा भावा ओहिनाणस्स हुंति पच्चक्खा " (सम्म ८१)।

अप्पुट्ठ वि [अपृष्ट] नहीं पूछा हुआ ; (सुपा १११)।

अप्पुण्ण वि [दे. आपूर्ण] पूर्ण ; (षड्)।

अप्पुल्ल वि [आत्मीय] आत्मा में उत्पन्न ; (हे २, १६३ ; षड् ; कुमा)।

अप्पुव्व देखो अप्पुव्व ; "अप्पुव्वो पडिबंधो जीवियमवि चयइ मह कज्जे " (सुपा ३११)।

अप्पेयव्व देखो अप्प=अर्पय्।

अप्पोलि स्त्री [अप्रज्वलिता] कच्ची फल-फुलेरी ; (श्रा २१)।

अप्पोल्ल वि [दे] पोल-रहित, नक्कर ; (बृह ३)।

अप्फडिअ वि [आस्फालित] आस्फालित, आहत ; (विसे २६८२ टी)।

अप्फाल सक [आ+स्फालय्] १ आस्फोटन करना, हाथ से आघात करना। २ ताडना, पीटना। ३ ताल ठोकना। अप्फालेइ ; (महा)। कवकृ—अप्फालिज्जंत; (राय)। संकृ—अप्फालिऊण ; (काप्र १८६ ; महा)।

अप्फालण न [आस्फालन] १ ताल ठोकना ; २ ताड़न, आघात ; (गा ५४८ ; से ५, २२ ; सुपा ८७)।

अप्फालिय वि [आस्फालित] १ हाथ से ताडित, आहत; (पि ३११)। २ वृद्धि-प्राप्त, उन्नत ; (राज)।

अप्फुंद सक [आ+क्रम्] १ आक्रमण करना। २ जाना। " संझाराओ व्व णहं अप्फुंदइ मलिअरविअरं कुसुमरओ " (से ६, ५७)।

अप्फुडिय देखो अफुडिय ; (जं २ ; दस ६)।

अप्फुण्ण वि [दे. आक्रान्त] आक्रान्त, दबाया हुआ ; (हे ४, २५८)।

अप्फुण्ण वि [अपूर्ण] अपूर्ण, अधूरा ; (गउड)।

अप्फुण्ण } वि [दे. आपूर्ण] पूर्ण, भरा हुआ ; (दे १, अप्फुन्न } २० ; सुर १०, १७० ; पाअ) " महया पुत्तसोएणं अप्फुन्ना समाणी " (निर १, १)।

अप्फुल्लय देखो अप्पुल्ल ; (गउड)।

अप्फोआ स्त्री [दे] वनस्पति-विशेष ; (पण्ण १)।

अप्फोड सक [आ+स्फोटय्] १ आस्फालन करना, हाथ से ताल ठोकना। २ ताड़न करना। वकृ—अप्फोडंत ; (णाया १, ८; सुर १३, १८२)।

अप्फोडण न [आस्फोटन] आस्फालन ; (गउड)।

अप्फोडिय } वि [आस्फोटित] १ आस्फालित, आहत। अप्फोलिय } २ न. आस्फालन, आघात ; (पण्ह १, ३ ; कप्प)।

अप्फोव वि [दे] वृक्षादि से व्याप्त, गहन, निबिड ; (उत्त १, १८)।

अफल वि [अफल] निष्फल, निरर्थक ; (द्र १)।

अफाय पुं [दे] भूमि-स्फोट, वनस्पति-विशेष ; (पराग १) ।

अफास वि [अस्पर्श] १ स्पर्श-रहित ; (भग) । २ खराब स्पर्श वाला ; (सूअ १, ५, १) ।

अफासुय वि [अप्रासुक] १ सचित्त, सजीव ; (भग ५, ६) । २ अग्राह्य (भिक्षा) ; (ठा ३, १) ।

अफुड वि [अस्फुट] अस्पष्ट, अव्यक्त ; (सुर ३, १०६; २१३ ; गा २६६ ; उप ७२८ टी) ।

अफुडिअ वि [अस्फुटित] अखण्डित, नहीं टूटा हुआ ; (कुमा) ।

अफुस वि [अस्पृश्य] स्पर्श करने को अयोग्य ; (भग) ।

अफुसिय वि [अभ्रान्त] भ्रम-रहित ; (कुमा) ।

अफुस्स देखो **अफुस** ; (ठा ३, २) ।

अब्° स्त्री. व. [अप्°] पानी, जल ; (श्रा २३) ।

अबंभ न [अब्रह्म] मैथुन, स्त्री-सङ्ग ; (पराह १, ४) । **°चारि** वि [°चारिन्] ब्रह्मचर्य नहीं पालने वाला ; (पि ४०५; ५१५) ।

अबद्धिय पुं [अबद्धिक] 'कर्मों का आत्मा से स्पर्श ही होता है, न कि क्षीर-नीर की तरह ऐक्य' ऐसा मानने वाला एक निह्नव—जैनाभास; २ न. उसका मत; (ठा ७; विसे) ।

अबल वि [अबल] बल-रहित, निर्बल; (पउम ४८, ११७) ।

अबला स्त्री [अबला] स्त्री, महिला, जनाना; (पाअ) ।

अबश पुं [अवश] वडवानल ; (से १, १) ।

अबहिट्ठ न [दे. अवहित्थ] मैथुन, स्त्री-सङ्ग; (सूअ १, ६) ।

अबहिम्मण वि [अबहिर्मनस्क] धर्मिष्ठ, धर्म-तत्पर ; (आचा) ।

अबहिल्लेस } **अबहिल्लेस्स** } वि [अबहिर्लेश्य] जिसकी चित्त-वृत्ति बाहर न घूमती हो, संयत; (भग ; पराह २, ५) ।

अबाधा देखो **अबाहा** ; (जीव ३) ।

अबाह पुं [अबाह] देश-विशेष ; (इक) ।

अबाहा स्त्री [अबाधा] १ बाध का अभाव ; (ओघ ५२ भा; भग १४,८) । २ व्यवधान, अन्तर ; (सम १६) । ३ बाध-रहित समय ; (भग) ।

अबाहिर अ [अबहिस्] बाहर नहीं, भीतर; (कुमा) ।

अबाहिरय वि [अबाह्य] भीतरी, आभ्यन्तर; (वव १) ।

अबाहिरिय वि [अबाहिरिक] जिसके किले के बाहर वसति न हो ऐसा गाँव या शहर; (बृह १) ।

अबीय देखो **अवीय** ; (कप्प) ।

अबुज्झ अ [अबुद्ध्वा] नहीं जान कर; "केसिंचि तक्काइ अबुज्झ भावं " (सूअ १, १३, २०) ।

अबुद्ध वि [अबुध] १ अजान, मूर्ख ; (दस २) । २ अविवेकी ; (सूअ १, ११) ।

अबुद्धसिरी स्त्री [दे] इच्छा से भी अधिक फल की प्राप्ति ; (दे १, ४२) ।

अबुद्धिय } **अबुद्धीय** } वि [अबुद्धिक] बुद्धि-रहित, मूर्ख; (गाथा १, १७; सूअ १, २, १; पउम ८, ७४) ।

अबुह वि [अबुध] १ अजान ; (सूअ १, २, १ ; औप १) । २ मूर्ख, बेवकुफ ; (पराह १, १) ।

अबोह वि [अबोध] १ बोध-रहित, अजान । २ पुं ज्ञान का अभाव ; (धर्म १) ।

अबोहि पुंस्त्री [अबोधि] १ ज्ञान का अभाव ; (सूअ २, ६) । २ जैन धर्म की अप्राप्ति; ३ बुद्धि-विशेष का अभाव; (भग १, ६) । ४ मिथ्या-ज्ञान, "अबोहिं परियाणामि बोहिं उवसंपज्जामि " (आव ४) । ५ वि. बोधि-रहित; (भग) ।

अबोहिय न [अबोधिक] ऊपर देखो ; (दस ६; सूअ १, १, २) ।

अब्बंभ देखो **अबंभ**; (सुपा ३१०) ।

अब्बंभण्ण } **अब्बम्हण्णं** } न [अब्रह्मण्य] ब्रह्मण्य का अभाव; (नाट ; प्रयौ ७६) ।

अब्बुय पुं [अर्बुद] पर्वत-विशेष, जो आजकल 'आबू' नाम से प्रसिद्ध है ; (राज) ।

अब्भ न [अभ्र] १ आकाश ; (राय; पाअ) । २ मेघ, बद्दल ; (ठा ४, ४ ; पाअ) ।

अब्भंग सक [अभि+अञ्ज्] तैल आदि से मर्दन करना, मालिश करना । अब्भंगइ, अब्भंगेइ ; (महा) । संकृ—**अब्भंगिउं, अब्भंगेत्ता, अब्भंगित्ता,** (ठा ३, १; पि २३४) । हेकृ—**अब्भंगेत्तए** ; (कस) ।

अब्भंग पुं [अभ्यङ्ग] तैल-मर्दन, मालिश ; (निचू ३) ।

अब्भंगण न [अभ्यञ्जन] ऊपर देखो ; (णाया १, १; महा) ।

अब्भंगिएल्लय } **अब्भंगिय** } वि [अभ्यक्त] तैलादि से मर्दित, मालिश किया हुआ; (ओघ ८२; कप्प) ।

अब्भंतर न [अभ्यन्तर] १ भीतर, में ; (गा ६२३) । २ वि. भीतर का, भीतरी; (राय; महा) । ३ समीप का,

नजदीक का (सम्बन्धी); (ठा ८)। °ठाणिज्ज वि [स्थानीय] नजदीक के सम्बन्धी, कौटुम्बिक लोक; (विपा १, ३) °तव पुं [°तपस्] विनय, वैयावृत्य, प्रायश्चित्त, स्वाध्याय, ध्यान और कायोत्सर्ग रूप अन्तरंग तप; (ठा ६)। °परिसा स्त्री [°परिषद्] मित्र आदि समान जनों की सभा ; (राय)। °लद्धि स्त्री [°लब्धि] अवधिज्ञान का एक भेद ; (विसे)। °संवुका स्त्री [°शम्बूका] भिक्षा की एक चर्या, गति-विशेष ; (ठा ६)। °सगडुद्धिया स्त्री [°शकटोर्द्धिका] कायोत्सर्ग का एक दोष ; (पव ५)।

अब्भंतर वि [अभ्यन्तर] भीतरी, भीतर का ; (जं ७; ठा २, १ ; पण्ण ३६)।

अब्भंसि वि [अभ्रंशिन्] १ भ्रष्ट नहीं होने वाला ; (नाट)। २ अनष्ट ; (कुमा)।

अब्भक्खइज्ज देखो **अब्भक्खा**।

अब्भक्खण न [दे] अकीर्ति, अपयश ; (दे १, ३१)।

अब्भक्खा सक [अभ्या+ख्या] झूठा दोष लगाना, दोषारोप करना । अब्भक्खाइ; (भग ५; ७)। कृ—अब्भक्खइज्ज ; (आचा)।

अब्भक्खाण न [अभ्याख्यान] झूठा अभियोग, असत्य दोषारोप ; (पण्ह १, २)।

अब्भड अ [दे] पीछे जा कर ; (हे ४, ३९५)।

अब्भणुजाण सक [अभ्यनु+ज्ञा] अनुमति देना, सम्मति देना। अब्भणुजाणिस्सदि (शौ); (पि ५३४)।

अब्भणुण्णा स्त्री [अभ्यनुज्ञा] अनुमति, सम्मति ; (राज)।

अब्भणुण्णाय वि [अभ्यनुज्ञात] अनुमत, संमत ; (ठा ५, १)।

अब्भणुन्ना देखो **अब्भणुण्णा**।

अब्भणुन्नाय देखो **अब्भणुण्णाय**; (णाया १, १ ; कप्प ; सुर ३, ८८)।

अब्भण्ण न [अभ्यर्ण] १ निकट, नजदीक । २ वि. समीपस्थ ; (पउम ६८, ५८)। °पुर न [°पुर] नगर-विशेष ; (पउम ६८, ५८)।

अब्भत्त वि (अभ्यक्त) १ तैलादि से मर्दित, मालिश किया हुआ । २ सिक्त, सिञ्चा हुआ, "दिसि दिसि चब्भत्त-भूरिकेयारो, पत्तो वासारत्तो " (सुर २, ७८)।

अब्भत्थ वि [अभ्यस्त] पठित, शिक्षित ; (सुपा ६७)।

अब्भत्थ सक [अभि+अर्थय्] १ सत्कार करना। २ प्रार्थना करना। अब्भत्थम्ह ; (पि ४७०)। संकृ—अब्भत्थइअ, अब्भत्थिअ; (नाट)। कृ—अब्भत्थणीय ; (अभि ७०)।

अब्भत्थण न [अभ्यर्थन] १ सत्कार ; २ प्रार्थना ; (कप्पू ; हे ४, ३८४)।

अब्भत्थणा, **अब्भत्थणिया** } स्त्री [अभ्यर्थना] १ आदर, सत्कार; (से ४, ४८); २ प्रार्थना, विज्ञप्ति; (पंचा ११; सुर १, १९)।

"न सहइ अब्भत्थणियं, असइ गयाणंपि पिट्ठिमंसाइं ।
दट्ठूण भासुरमुहं, खलसीहं को न बीहेइ " (वज्जा१२)।

अब्भत्थिय वि [अभ्यर्थित] १ आदृत, सत्कृत । २ प्रार्थित ; (सुर १, २१)।

अब्भन्न देखो **अब्भण्ण** ; (पाअ)।

अब्भपिसाअ पुं [दे] राहु ; (दे १, ४२)।

अब्भय पुं [अर्भक] बालक, बच्चा ; (पाअ)।

अब्भय पुं [अभ्रक] अभरख ; (जी ४)।

अब्भरहिय वि [अभ्यर्हित] सत्कार-प्राप्त, गौरव-शाली ; (बृह १)।

अब्भवहार पुं [अभ्यवहार] भोजन, खाना; (विसे २२१)।

अब्भव्व देखो **अभव्व**। "अब्भव्वाणं सिद्धा णंतगुणा णंतया भव्वा " (पसं ८४)।

अब्भस सक [अभि+अस्] सीखना, अभ्यास करना। वकृ—अब्भसंत ; (स ६०६)। कृ—अब्भसियव्व ; (सुर १४, ८५)।

अब्भसण न [अभ्यसन] अभ्यास ; (दसनि १)।

अब्भसिय वि [अभ्यस्त] सीखा हुआ ; (सुर १, १८० ; ६, १९)।

अब्भहिय वि [अभ्यधिक] विशेष, ज्यादः ; (सम २ ; सुर १, १७०)।

अब्भाअच्छ वि [अभ्या+गम्] संमुख आना, सामने आना। अब्भाअच्छइ; (षड्)।

अब्भाइक्ख देखो **अब्भक्खा**। अब्भाइक्खइ, अब्भाइक्खेज्जा; (आचा)।

अब्भागम पुं [अभ्यागम] १ संमुखागमन ; २ समीप स्थिति ; (निचू २)।

अब्भागमिय, **अब्भागय** } वि [अभ्यागत] १ संमुखागत ; २ पुं. आगन्तुक, पाहुन , अतिथि ; (सुअ १, २, ३ ; सुपा ५)।

अब्भायत्त } वि [दे] प्रत्यागत, वापिस आया हुआ ;
अब्भायत्थ } (दे १, ३१) ।

अब्भास न [अभ्यास] १ निकट, नजदीक ; (से ६, ६० ; पाअ) । २ वि. समीप-वर्ती, पार्श्व-स्थित ; (पाअ) । ३ पुं. शिक्षा, पढ़ाई, सीख ; ४ आवृत्ति; (पाअ ; बृह १) । ५ आदत ; (ठा ४, ४) । ६ आवृत्ति से उत्पन्न संस्कार ; (धर्म २) । ७ गणित का संकेत-विशेष ; (कम्म ४, ७८ ; ८३) ।

अब्भास सक [अभि+अस्] अभ्यास करना, आदत डालना ।

" जं अब्भासइ जीवो, गुणं च दोसं च एत्थ जम्मम्मि ।
तं पावइ पर-लोए, तेण य अब्भास-जोएण" (धर्म २; भवि)।

अब्भाहय वि [अभ्याहत] आघात-प्राप्त ; (महा) ।

अब्भिंग देखो अब्भंग=अभि + अंज् । प्रयो—अब्भिंगावेइ; (पि २३४) ।

अब्भिंग देखो अब्भंग=अभ्यंग ; (णाया १, १८) ।

अब्भिंगण देखो अब्भंगण ; (कप्प) ।

अब्भिंगिय देखो अब्भंगिय ; (कप्प) ।

अब्भिंतर देखो अब्भंतर ; (कप्प ; सं ७; पण्ह ३, ५ ; णाया १, १३) ।

अब्भिंतरओ अ [अभ्यन्तरतस्] १ भीतर से ; २ भीतर-में ; (आवम) ।

अब्भिंतरिय वि [आभ्यन्तरिक] भीतर का, अन्तरङ्ग ; (सम ६७ ; कप्प ; णाया १, १) ।

अब्भिट्ट वि [दे] संगत, सामने आकर भीडा हुआ, " हत्थी हत्थीणा समं अब्भिट्टो रहवरो सह रहेणं " (पउम ६,१८२ ; ६८, २७) ।

अब्भिड सक [सं+गम्] संगति करना, मिलना । अब्भिडइ ; (कुमा ; हे ४, १६४) । अब्भिडसु ; (सुपा १५२)।

अब्भिडिअ वि [संगत] संगत, युक्त ; (पाअ ; दे १, ७८) ।

अब्भिडिअ वि [दे] सार, मजबूत ; (दे १, ७८) ।

अब्भिण्ण वि [अभिन्न] भेद को अप्राप्त ; (धर्म २) ।

अब्भुअअ देखो अब्भुदय ; (से १५, ६५ ; स ३०) ।

अब्भुक्ख सक [अभि+उक्ष्] सिञ्चन करना । वक्र—अब्भुक्खंत ; (वज्जा ८६) ।

अब्भुक्खण न [अभ्युक्षण] सिञ्चन करना, छिटकाव ; (स ५७६) ।

अब्भुक्खणीया स्त्री [अभ्युक्षणीया] सीकर, आसार, पवन से गिरता जल ; (बृह १) ।

अब्भुक्खिय वि [अभ्युक्षित] सिक्त ; (स ३४०) ।

अब्भुगम पुं [अभ्युद्गम] उदय, उन्नति ; (सुअ १,१४)।

अब्भुग्गय वि [अभ्युद्गत] १ उन्नत ; २ उत्पन्न ; (णाया १, १) । ३ ऊंचा किया हुआ, उठाया हुआ ; (औप)। ४ चारों तरफ फैला हुआ ; (चंद १८) ।

अब्भुग्गय वि [अभ्रोद्गत] ऊंचा, उन्नत ; (भग १२,५)।

अब्भुच्चय पुं [अभ्युच्चय] समुच्चय ; (भास ६५) ।

अब्भुज्जय वि [अभ्युद्यत] १ उद्यत, उद्यम-युक्त ; (णाया १, ५) । २ तय्यार ; (णाया १, १ ; सुपा २२२)। ३ पुं. एकाकी विहार ; (धम्म १२ टी) । ४ जिनकल्पिक मुनि ; (पंचव ४) ।

अब्भुट्ठ उभ [अभ्युत्+स्था] १ आदर करने के लिए खड़ा होना । २ प्रयत्न करना । ३ तय्यारी करना । अब्भुट्ठेइ; (महा) । वक्र—अब्भुट्ठमाण ; (स ४१६)। संकृ—अब्भुट्ठित्ता ; (भग) । हेकृ—अब्भुट्ठित्तए; (ठा २, १) । कृ—अब्भुट्ठेयव्व ; (ठा ८) ।

अब्भुट्ठण न [अभ्युत्थान] आदर के लिए खड़ा होना; (सं १०, ११) ।

अब्भुट्ठा देखो अब्भुट्ठ ।

अब्भुट्ठाण देखो अब्भुट्ठण ; (सम ५१ ; सुपा ३७६)।

अब्भुट्ठिय वि [अभ्युत्थित] १ सम्मान करने के लिए ऊंचा खड़ा हुआ हो ; (णाया १, ८) । २ उद्यत, तय्यार; " अब्भुट्ठिएसु मेहेसु " (णाया १, १ ; पडि) ।

अब्भुट्ठेत्तु [अभ्युत्थातृ] अभ्युत्थान करने वाला ; (ठा ५, १) ।

अब्भुण्णय वि [अभ्युन्नत] उन्नत, ऊंचा ; (पण्ह १,४)।

अब्भुण्णयंत वकृ [अभ्युन्नयत्] १ ऊंचा करता हुआ; २ उत्तेजित करता हुआ ; " तीएवि जलंतिं दीववत्तिमब्भुण्णअंतीए " (गा २६४) ।

अब्भुत्त अक [स्ना] स्नान करना । अब्भुत्तइ ; (हे ४, १४) । वक्र—अब्भुत्तंत ; (कुमा) ।

अब्भुत्त अक [प्र+दीप्] १ प्रकाशित होना । २ उत्तेजित होना । अब्भुत्तइ ; (हे ४, १५२) । अब्भुत्तए; (कुमा) । प्रयो—अब्भुत्तेंति ; (से ५, ५६) ।

अब्भुत्तिअ वि [प्रदीप्त] १ प्रकाशित ; २ उत्तेजित ; (से १५, ३८) ।

अब्भुत्थ वि [**अभ्युत्थ**] उत्पन्न, " पुव्वभवब्भुत्थसिणेहाओ " (महा) ।

अब्भुत्थ } देखो **अब्भुट्ठा** । वकृ—**अब्भुत्थंत** ; (से **अब्भुत्था** } १२, १८) । संकृ—**अब्भुत्थित्ता**; (काल) ।

अब्भुदय पुं [**अभ्युदय**] १ उन्नति, उदय ; (प्रयौ २६) ; " अब्भुयभूयब्भुदयं लद्धूणं नरभवं सुदीहद्धं " (उप ७६८ टी) ।

अब्भुद्धर सक [**अभ्युद् + धृ**] उद्धार करना । अब्भुद्धरामि; (भवि) ।

अब्भुद्धरण न [**अभ्युद्धरण**] १ उद्धार ; (स ५४३) । २ वि. उद्धार-कारक ; (हे ४, ३६४) ।

अब्भुन्नय देखो **अब्भुण्णय** ; (णाया १, १) ।

अब्भुब्भड वि [**अभ्युद्भट**] अत्युद्भट, विशेष उद्धत; (भवि)।

अब्भुय न [**अद्भुत**] १ आश्चर्य, विस्मय ; (उप ७६८ टी) । २ वि. आश्चर्य-कारक ; (राय ; सुपा; ३५) । ३ पुं. साहित्य शास्त्र प्रसिद्ध रसो में से एक ;
" विम्हयकरो अपुव्वो, अभूयपुव्वो य जो रसो होइ ।
हरिसविसाउप्पत्ती, लक्खणओ अब्भुओ नाम " (अणु) ।

अब्भुवगच्छ सक [**अभ्युप+गम्**] १ स्वीकार करना । २ पास जाना । प्रयो,—संकृ—**अब्भुवगच्छाविय** ; (पि १६३) ।

अब्भुवगच्छाविअ वि [**अभ्युपगमित**] स्वीकार कराया हुआ ; " ताहे तेहिं कुमारेहिं संबो मज्जं पाएत्ता अब्भुवगच्छाविओ विगयमओ चिंतेइ " (आक पृ ३०) ।

अब्भुवगम पुं [**अभ्युपगम**] १ स्वीकार, अङ्गीकार ; (सम १४५ ; स १७०) । २ तर्कशास्त्र-प्रसिद्ध सिद्धान्त-विशेष ; (बृह १ ; सूअ १, १२) ।

अब्भुवगमणा स्त्री [**अभ्युपगमना**] स्वीकार, अङ्गीकार ; (उप ८०५) ।

अब्भुवगय वि [**अभ्युपगत**] १ स्वीकृत ; (सुर ६, ५८)। २ समीप में गया हुआ ; (आचा) ।

अब्भुववण्ण वि [**अभ्युपपन्न**] अनुग्रह-प्राप्त, अनुगृहीत ; (नाट ; पि १६३; २७६) ।

अब्भुववत्ति स्त्री [**अभ्युपपत्ति**] अनुग्रह, महरबानी ; (अभि १०४) ।

अब्भो देखो **अव्वो** ; (षड्) ।

अब्भोक्खिय वि [**अभ्युक्षित**] सिक्त, सींचा हुआ ; (सुर ६, १६१) ।

अब्भोय (अप) देखो **आभोग** ; (भवि) ।

अब्भोवगमिय वि [**आभ्युपगमिक**] स्वेच्छा से स्वीकृत । °**ा** स्त्री [°**ा**] स्वेच्छा से स्वीकृत तपश्चर्यादि की वेदना ; (ठा ४, ३) ।

अब्भिड देखो **अब्भिड** । अब्भिडइ ; (षड्) ।

अब्हुत्त देखो **अब्भुत्त** । अब्हुतइ ; (षड्) ।

अभग्ग वि [**अभग्न**] १ अखण्डित, अत्रुटित ; (पडि) । २ इस नाम का एक चोर ; (विपा १,१) ।

अभत्त वि [**अभक्त**] १ भक्ति नहीं करने वाला ; (कुमा) । २ न. भोजन का अभाव; (वव ७) । °**ट्ठ** पुं [°**ार्थ**] उपवास ; (आचू ; पडि ; सुपा ३१७) । °**ट्ठिय** वि [°**ार्थिक**] उपोषित, जिसने उपवास किया हो वह ; (पंचव २) ।

अभय न [**अभय**] १ भय का अभाव, धैर्य ; (राय) । २ जीवित, मरण का अभाव ; (सूअ १, ६) । ३ वि. भय-रहित, निर्भीक ; (आचा) ४ पुं. राजा श्रेणिक का एक विख्यात पुत्र और मन्त्री, जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा ली थी ; (अनु १; णाया १, १) । °**कुमार** पुं [°**कुमार**] देखो अनन्तरोक्त अर्थ; (पडि) । °**दय** वि [°**दय**] भय-विनाशक, जीवित-दाता ; (पडि) । °**दाण** न [°**दान**] जीवित-दान ; (पण्ह २, ४) । °**देव** पुं [°**देव**] कईएक विख्यात जैनाचार्य और ग्रन्थकारों का नाम; (मुणि १०८७४ ; गु १४; ती ४०; सार्ध ७३) । °**प्पदाण** न [**प्रदान**] जीवित का दान ; (सूअ १, ६) । °**वत्त** न [°**वत्त्व**] निर्भयता, अभय ; (सुपा १८) । °**सेण** पुं [°**सेन**] एक राजा का नाम; (पिंड) ।

अभयंकर वि [**अभयंकर**] अभय देने वाला, अहिंसक ; (सूअ १, ७, २८) ।

अभया स्त्री [**अभया**] १ हरीतकी, हरडई; (निचू १५) । २ राजा दधिवाहन की स्त्री का नाम ; (ती ३५) ।

अभयारिट्ठ न [**अभयारिष्ट**] मद्य-विशेष ; (सूअ १, ८)।

अभवसिद्धिय } पुं [**अभवसिद्धिक**] अभव्य, मुक्ति के **अभवसिद्धिय** } लिये अयोग्य जीव ; (ठा २, २ ; णंदि ; ठा १) ।

अभविय } वि [**अभव्य**] १ असुन्दर, अचारु; (विसे) **अभव्व** } २ पुं. मुक्ति के लिये अयोग्य जीव ; (विसे ; कम्म ३, ३३) ।

अभाअ वि [**अभाग**] अ-स्थान, अयोग्य स्थान ; (से ८, ४२)।

अभाइ वि [**अभागिन्**] अभागा,, हत-भाग्य, कमनसीब ; (चारु २६)।

अभागधेज्ज वि [**अभागधेय**]ऊपर देखो; (पउम २८,८६)

अभाव पुं [**अभाव**] १ ध्वंस, नाश ; (बृह १)। २ अ-विद्यमानता, असत्त्व ; (पंचा ३)। ३ असम्भव ; (दस १)। ४ अशुभ परिणाम ; (उत्त १)।

अभाविय वि [**अभावित**] अयोग्य, अनुचित ; (ठा १० ; बृह ३)।

अभावुग वि [**अभावुक**] जिस पर दूसरे के संग की असर न पड़ सके वह, "विसहरमणी अभावुगदव्वं जीवो उ भावुगं तम्हा" (सुपा १७५; ओघ ७७३)।

अभासग, **अभासय** वि [**अभाषक**] १ बोलने की शक्ति जिसको उत्पन्न न हुई हो वह ; २ नहीं बोलने वाला ; ३ पुं. केवल त्वग्-इन्द्रिय वाला, एकेन्द्रिय जीव; ४ मुक्त आत्मा ; (ठा. २, ४; भग; अणु)।

अभासा स्त्री [**अभाषा**] १ असत्य वचन ; २ सत्य-मिश्रित असत्य वचन ; (भग २५, ३)।

अभि अ [**अभि**] निम्न-लिखित अर्थों में से किसी एक को वतलाने वाला अव्यय;— १ संमुख, सामने ; जैसे— 'अभिगच्छणया' (औप)। २ चारों ओर, समन्तात् ; जैसे—'अभिदो' (स्वप्न ४२)। ३ बलात्कार ; जैसे— 'अभिओग' (धर्म २)। ४ उल्लंघन, अतिक्रमण ; जैसे— 'अभिक्कंत' (आचा)। ५ अत्यन्त, ज्यादः ; जैसे— 'अभिदुग्ग' (सूअ १, ५, २)। ६ लक्ष्य ; जैसे—'अभि मुहं'। ७ प्रतिकूल, जैसे—'अभिवाय' (आचा)। ८ विकल्प ; ६ संभावना ; (निचू १)। १० निरर्थक भी इस अव्यय का प्रयोग होता है; जैसे—'अभिमंतिय' (सुर १६, ६२)।

अभिअण पुं [**अभिजन**] १ कुल ; २ जन्म-भूमि ; (नाट)।

अभिआवण्ण वि [**अभ्यापन्न**] संमुख-आगत ; (सूअ १, ४,२)।

अभिइ स्त्री [**अभिजित्**] नक्षत्र-विशेष ; (ठा २, ३)।

अभिइ सक [**अभि+इ**] सामने जाना, संमुख जाना। वकृ— **अभिइंत** ; (उप १४२ टी)।

अभिउंज देखो **अभिजुंज**। संकृ—**अभिउंजिय** ; (ठा ३, ४ ; दस १०)।

अभिओअ, **अभिओग** पुं [**अभियोग**] १ आज्ञा, हुकुम; (औप; ठा १०)। २ बलात्कार, "अभिओगे अ निओगे" (श्रा ५)। ३ बलात्कार से कोई भी कार्य में लगाना ; (धर्म २)। ४ अभिभव, पराभव ; (आव ५)। ५ कार्मण-प्रयोग, वशीकरण, वश करने का चूर्ण या मन्त्र-तन्त्रादि ;

"दुविहो खलु अभिओगो, दव्वे भावे य होइ नायव्वो।
दव्वम्मि होइ जोगो, विज्जा मंता य भावम्मि"
(ओघ ५६७)।

६ गर्व, अभिमान; (आव ५)। ७ आग्रह, हठ; (नाट)। °**पण्णत्ति** स्त्री [°**प्रज्ञप्ति**) विद्या-विशेष ; (गाया १, १६)। देखो **अहिओय**।

अभिओगी स्त्री [**आभियोगी**] भावना-विशेष, ध्यान-विशेष, जो अभियोगिक देव-गति (नौकर-स्थानीय देव-जाति) में उत्पन्न होने का हेतु है ; (बृह १)।

अभिओयण न [**अभियोजन**] देखो **अभिओग**; (आव; पराग २०)।

अभिंगण, **अभिंजण** देखो **अब्भंगण** ; (नाट ; रंभा)।

अभिकंख सक [**अभि+काङ्क्ष्**] इच्छा करना, चाहना। अभिकंखेज्जा ; (आचा)। वकृ—**अभिकंखमाण** ; (ठा ६, ३)।

अभिकंखा स्त्री [**अभिकाङ्क्षा**] अभिलाषा, इच्छा; (आचा)।

अभिकंखि, **अभिकंखिर** वि [**अभिकाङ्क्षिन्**] अभिलाषी, इच्छुक ; (पि ४०५ ; सुपा १२६)।

अभिक्कंत वि [**अभिक्रान्त**]१ गत, अतिक्रान्त, "अभिक्कंतं च खलु वयं संपेहाए" (आचा)। २ संमुख-गत ; ३ आरब्ध ; ४ उल्लंघित ; (आचा ; सूअ २, २)

अभिक्कम सक [**अभि + क्रम्**] १ जाना गुजरना। २ सामने जाना। ३ उल्लंघन करना। ४ शुरू करना। वकृ—**अभिक्कममाण** ; (आचा)। संकृ—**अभिक्कम्म** ; (सूअ १, १, २)।

अभिक्कम पुं [**अभिक्रम**] १ उल्लंघन। २ प्रारम्भ। ३ संमुख-गमन। ४ गमन, गति ; (आचा)।

अभिक्ख, **अभिक्खण** अ [**अभीक्ष्ण**] बारंवार ; (उप १४' टी ; ठा २, ४ ; वव ३)।

अभिक्खा स्त्री [**अभिख्या**] नाम ; (विसे १०४८)।

अभिगच्छ सक [अभि + गम्] सामने जाना। अभिगच्छंति ; (भग २, ५)।

अभिगच्छणया स्त्री [अभिगमन] संमुख-गमन; (औप)।

अभिगज्ज अक [अभि+गर्ज्] गर्जना, खूब जोर से अवाज करना। वकृ—**अभिगज्जंत**; (गाया १, १८; सुर १३, १८२)।

अभिगम पुं [अभिगम] १ प्राप्ति, स्वीकार ; (पक्खि)। २ आदर, सत्कार ; (भग २, ५)। ३ (गुरु का) उपदेश, सीख ; (गाया १, १)। ४ ज्ञान, निश्चय; (पव १४९)। ५ सम्यक्त्व का एक भेद ; (ठा २, १)। ६ प्रवेश ; (से ८, ३३)।

अभिगमण न [अभिगमन] ऊपर देखो ; (स्वप्न १६ ; गाया १, १२)।

अभिगमि वि [अभिगमिन्] १ आदर करने वाला। २ उपदेशक। ३ निश्चय-कारक। ४ प्रवेश करने वाला। ५ स्वीकार करने वाला, प्राप्त करने वाला ; (पराग ३४)।

अभिगय वि [अभिगत] १ प्राप्त। २ सत्कृत। ३ उपदिष्ट। ४ प्रविष्ट ; (वृह १)। ५ ज्ञात, निश्चित ; (गाया १, १)।

अभिगहिय न [अभिग्रहिक] मिथ्यात्व-विशेष ; (कम्म ४, ५१)।

अभिगिज्झ अक [अभि+ गृध्] अति लोभ करना, आसक्त होना। वकृ— **अभिगिज्झंत** ; (सूअ २, २)।

अभिगिण्ह, **अभिगिन्ह** सक [अभि + ग्रह्] ग्रहण करना, स्वीकारना। अभिगिण्हइ; (कप्प)। संकृ— **अभिगिन्हित्ता, अभिगिज्झ**; (पि ५८२; ठा २, १)।

अभिग्गह पुं [अभिग्रह] १ प्रतिज्ञा, नियम ; (ओघ ३)। २ जैन साधुओं का आचार-विशेष ; (वृह १)। ३ प्रत्याख्यान, (नियम-विशेष) का एक भेद ; (आव ६)। ४ कदाग्रह, हठ ; (ठा २, १)। ५ एक प्रकार का शारीरिक विनय ; (वव १)।

अभिग्गहिय वि [अभिग्रहिक] अभिग्रह वाला ; (ठा २, १ ; पव ६)।

अभिग्गहिय वि [अभिगृहीत] १ जिसके विषय में अभिग्रह किया गया हो वह ; (कप्प ; पव ६)। २ न. अवधारण, निश्चय ; (पराग ११)।

अभिघट्ट सक [अभि + घट्ट्] वेग से जाना। कवकृ— **अभिघट्टिज्जमाण** ; (राय)।

अभिघाय पुं [अभिघात] प्रहार, मार-पीट, हिंसा ; (पराह १, १; वृह ४)।

अभिचंद पुं [अभिचन्द्र] १ यदु-वंश के राजा अन्धक-वृष्णि का एक पुत्र, जिसने जैन दीक्षा ली थी ; (अंत ३)। २ इस नाम का एक कुलकर पुरुष ; (पउम ३, ५५)। ३ मुहूर्त-विशेष ; (सम ५१)।

अभिजण देखो **अभिअण** ; (स्वप्न २६)।

अभिजस न [अभियशस्] इस नाम का एक जैन साधुओं का कुल (एक आचार्य की संतति) ; (कप्प)।

अभिजाइ स्त्री [अभिजाति] कुलीनता, खानदानी ; (उत्त ११)।

अभिजाण सक [अभि+ज्ञा] जानना। वकृ— **अभिजाणमाण** ; (आचा)।

अभिजाय वि [अभिजात] १ उत्पन्न, " अभिजायसड्ढो " (उत्त १४)। २ कुलीन ; (राज)।

अभिजुंज सक [अभि+युज्] १ मन्त्र-तन्त्रादि से वश करना। २ कोई कार्य में लगाना। ३ आलिंगन करना। ४ स्मरण कराना, याद दिलाना। संकृ—**अभिजुंजिय, अभिजुंजियाणं, अभिजुंजित्ता** ; (भग २; ५ ; सूअ १, ५, २; आचा ; भग ३, ५)।

अभिजुत्त वि [अभियुक्त] १ व्रत-नियम में जिसने दूषण न लगाया हो वह ; (गाया १, १४)। २ जानकार, पण्डित ; (णंदि)। ३ दुश्मन से घिरा हुआ ; (वेणी १२०)।

अभिज्झा स्त्री [अभिध्या] लोभ, लोलुपता, आसक्ति ; (सम ७१ ; पराह १, ५)।

अभिज्झिय वि [अभिध्यित] अभिलषित, वाञ्छित ; (पराग २८)।

अभिट्ठुय वि [अभिष्टुत] वर्णित, श्लाघित, प्रशंसित ; (आव २)।

अभिड्डुय देखो **अभिद्दुय** ; (सूअ १, २, ३)।

अभिणअंत, **अभिणइज्जंत** देखो **अभिणी**।

अभिणंद सक [अभि+नन्द्] १ प्रशंसा करना, स्तुति करना। २ आशीर्वाद देना। ३ प्रीति करना। ४ खुशो

मनाना । ५ चाहना, इच्छना । ६ बहुमान करना, आदर करना । अभिणंदइ ; (स १६३) । वकृ— **अभिणंदंत**; (औप ; णाया १, १ ; पउम ५, १३०) । कवकृ— **अभिणंदिज्जमाण** ; (ठा ६ ; णाया १, १) ।

अभिणंदिय वि [**अभिनन्दित**] जिसका अभिनन्दन किया गया हो वह ; (सुपा ३१०) ।

अभिणंदण न [**अभिनन्दन**] १ अभिनन्दन; २ पुं. वर्तमान अवसर्पिणी-काल के चतुर्थ जिन-देव ; (सम ४३) । ३ लोकोत्तर श्रावण मास ; (सुज्ज १०) ।

अभिणय पुं [**अभिनय**] शारीरिक चेष्टा के द्वारा हृदय का भाव प्रकाशित करना , नाट्य-क्रिया; (ठा ४, ४) ।

अभिणव वि [**अभिनव**] नूतन, नया ; (जीव ३) ।

अभिणिक्खंत वि [**अभिनिष्क्रान्त**] दीक्षित, प्रव्रजित ; (स २७८) ।

अभिणिगिण्ह सक [**अभिनि+ग्रह्**] रोकना, अटकाना । संकृ—**अभिणिगिज्झ** ; (पि ३३१; ५६१) ।

अभिणिचारिया स्त्री [**अभिनिचारिका**] भिक्षा के लिए गति-विशेष ; (वव ४) ।

अभिणिपया स्त्री [**अभिनिप्रजा**] अलग २ रही हुई प्रजा; (वव ६) ।

अभिणिबुज्झ सक [**अभिनि+बुध्**] जानना, इन्द्रिय आदि द्वारा निश्चित रूप से ज्ञान करना । अभिणिबुज्झए; (विसे ८१) ।

अभिणिबोह पुं [**अभिनिबोध**] ज्ञान विशेष, मति-ज्ञान ; (सम्म ८६) ।

अभिणियट्टण न [**अभिनिवर्त्तन**] पीछे लौटना, वापिस जाना ; (आचा) ।

अभिणिविट्ठ वि [**अभिनिविष्ट**] १ तीव्र रूप से निविष्ट ; २ आग्रही ; (उत्त १४) ।

अभिणिवेस पुं [**अभिनिवेश**] आग्रह, हठ ; (णाया १, १२) ।

अभिणिवेह पुं [**अभिनिवेध**] उलटा मापना ; (आवम) ।

अभिणिव्वगड वि [**दे. अभिनिर्व्याकृत**] भिन्न परिधि वाला, पृथग्भूत (घर वगैरः); (वव १, ६) ।

अभिणिव्वट्ट सक [**अभिनि+वृत्**] रोकना, प्रतिषेध करना । "से मेहावी अभिणिव्वट्टेज्जा कोहं च माणं च मायं च लोभं च पेज्जं च दोसं च मोहं च गब्भं च जम्मं च मारं च नरयं च तिरियं च दुक्खं च " (आचा) ।

अभिणिव्वट्ट सक [**अभिनिर्+वृत्**] १ संपादित करना, निष्पन्न करना । २ उत्पन्न करना । संकृ—**अभिणिव्वट्टित्ता**, (भग ५, ४) ।

अभिणिव्वट्ट वि [**अभिनिर्वृत्त**] १ निष्पन्न । २ उत्पन्न; "इह खलु अत्तत्ताए तेहिं तेहिं कुलेहिं अभिसेएण अभिसंभूआ अभिसंजाया अभिणिव्वट्टा अभिसंवुड्ढा अभिसंबुद्धा अभिनिक्खंता अणुपुव्वेण महामुणी " (आचा) ।

अभिणिव्वुड वि [**अभिनिर्वृत**] १ मुक्त, मोक्ष-प्राप्त; (सूअ १, २, १) । २ शान्त, अकुपित; (आचा) । ३ पाप से निवृत्त ; (सूअ १, २, १) ।

अभिणिसज्जा स्त्री [**अभिनिषद्या**] जैन साधुओं को रहने का स्थान-विशेष ; (वव १) ।

अभिणिसिट्ठ वि [**अभिनिसृष्ट**] बाहर निकला हुआ; (जीव ३) ।

अभिणिसेहिया स्त्री [**अभिनैषेधिकी**] जैन साधुओं का स्वाध्याय करने का स्थान-विशेष ; (वव १) ।

अभिणिस्सड वि [**अभिनिस्सृत**] बाहर निकला हुआ ; (भग १४, ६) ।

अभिणी सक [**अभि+नी**] अभिनय करना, नाट्य करना। वकृ—**अभिणअंत** ; (मै ७५) । कवकृ—**अभिणिज्जंत** ; (सुपा ३५६) ।

अभिणूम न [**अभिनूम**] माया, कपट; (सुअ १, २, १) ।

अभिण्ण वि [**अभिज्ञ**] जानकार, निपुण ; (उप ५८०) ।

अभिण्ण वि [**अभिन्न**] १ अ-त्रुटित, अ-विदारित, अ-खण्डित ; (उवा ; पंचा ११) । २ भेद-रहित, अपृथग्भूत; (बृह ३) ।

अभिण्णपुड पुं [**दे**] खाली पुड़िया, लोगों को ठगने के लिए लड़के लोग जिसको रास्ता पर रख देते हैं; (दे १,४४) ।

अभिण्णाण न [**अभिज्ञान**] निशानी, चिह्न; (श्रा १४) ।

अभिण्णाय वि [**अभिज्ञात**] जाना हुआ, विदित; (आचा) ।

अभितज्ज सक [**अभि+तर्ज्**] तिरस्कार करना, ताड़न करना। वकृ—**अभितज्जेमाण** ; (णाया १, १८) ।

अभितत्त वि [**अभितप्त**] १ तपाया हुआ, गरम किया हुआ ; (सूअ १, ४, १, २७) ।

अभितव सक [**अभि+तप्**] १ तपाना ; २ पीडा करना। "चत्तारि अगणिओ समारभित्ता जेहिं कूरकम्मा भितविंति बालं " (सूअ १, ५, १, १३) । कवकृ—**अभितप्पमाण**; " ते तत्थ चिट्ठंतिभितप्पमाणा मच्छा व जीवंतुवजोतिपत्ता " (सूअ १, ५, १, १३) ।

अभिताव सक [अभि+तापय्] १ तपाना, गरम करना । २ पीडित करना । अभितावयंति; (सूत्र १, ५, १, २१; २२) ।
अभिताव पुं [अभिताप] १ दाह ; २ पीडा ; (सूत्र १, ५, १ ; २, ६) ।
अभितास सक [अभि+त्रासय्] त्रास उपजाना, भय-भीत करना । वकृ—अभितासेमाण ; (णाया १,१८)।
अभित्थु सक [अभि+स्तु] स्तुति करना, श्लाघा करना, वर्णन करना । अभित्थुणंति, अभित्थुणामि ; (पि ४६४; विसे १०५४) । वकृ—अभित्थुणमाण; (कप्प) । कवकृ—अभित्थुव्वमाण ; (रयण ६८) ।
अभित्थुय वि [अभिष्टुत] स्तुत, श्लाघित ; (संथा) ।
अभिथु देखो अभित्थु । वकृ—अभिथुणंत ; (णाया १, १) । कवकृ—अभिथुव्वमाण; (कप्प ; ठा ६) ।
अभिदुग्ग वि [अभिदुर्ग] १ दुःखोत्पादक स्थान ; २ अतिविषम स्थान ; (सूत्र १, ५, १, १७) ।
अभिदो (शौ) अ [अभितः] चारों ओर से; (स्वप्न ४२) ।
अभिद्दव सक [अभि+द्रु] पीड़ा करना, दुःख उपजाना, हैरान करना । "तुदंति वायाहिं अभिद्दवं णरा" (आचा २, १६, २) ।
अभिद्दविय वि [अभिद्रुत] उपद्रुत, हैरान किया हुआ ; (सुर १२, ६७) ।
अभिद्दुय देखो अभिद्दविय ; (णाया १, ६ ; स ५६) ।
अभिधाइ वि [अभिधायिन्] वाचक, कहने वाला ; (विसे ३४७२) ।
अभिधारण न [अभिधारण] धारणा, चिन्तन ; (बृह ३) ।
अभिधेज्ज } पुं [अभिधेय] अर्थ, वाच्य, पदार्थ ;
अभिधेय } (विसे १ टी) ।
अभिनंद देखो अभिणंद । वकृ—अभिनंदमाण; (कप्प) । कवकृ— अभिनंदिज्जमाण; (महा) ।
अभिनंदण देखो अभिणंदण ; (कप्प) ।
अभिनंदि स्त्री [अभिनंदि] आनन्द, खुशी, "पावेउ अ नंदिसेणमभिनंदिं " (अजि ३७) ।
अभिनिक्खंत देखो अभिणिक्खंत ; (आचा) ।
अभिनिक्खम अक [अभिनिर्+क्रम्] दीक्षा (संन्यास) लेना, दीक्षा लेने की इच्छा करना, गृहवास से बाहर निकलना । वकृ—अभिनिक्खमंत ; (पि ३६७) ।
अभिनिगिण्ह देखो अभिणिगिण्ह (आचा) ।

अभिनिवुज्झ देखो अभिणिवुज्झ । अभिनिवुज्झइ ; (विसे ६८) ।
अभिनिवट्ट देखो अभिणिवट्ट । संकृ—अभिनिवट्टित्ताणं; (पि ५८३) ।
अभिनिविट्ठ देखो अभिणिविट्ठ ; (भग) ।
अभिनिवेसिय न (अभिनिवेशिक) मिथ्यात्व का एक प्रकार, सत्य वस्तु का ज्ञान होने पर भी उसे नहीं मानने का दुराग्रह ; (श्रा ६; कम्म ४, ५१) ।
अभिनिव्वट्ट देखो अभिणिव्वट्ट ; (कप्प; आचा) ।
अभिनिव्विट्ठ वि [अभिनिर्विष्ट] संजात, उत्पन्न ; (कप्प) ।
अभिनिव्वुड देखो अभिणिव्वुड; (पि २१६) ।
अभिनिस्सव अक [अभिनि+स्रु] टपकना, झरना । अभिनिस्सवइ; (भग) ।
अभिन्न देखो अभिण्ण ; (प्राप्र) ।
अभिन्नाण देखो अभिण्णाण ; (ओघ ४३६ ; सुर ७, १०१) ।
अभिन्नाय देखो अभिण्णाय; (कप्प) ।
अभिपल्लाणिय वि [अभिपर्याणित] अध्यारोपित, ऊपर रखा हुआ ; (कुमा) ।
अभिपाइय वि [आभिप्रायिक] अभिप्राय-संबन्धी, मनः-कल्पित ; (अणु) ।
अभिप्पाय पुं [अभिप्राय] आशय, मन-परिणाम; (आचा; स ३४ ; सुपा २६२) ।
अभिप्पेय वि [अभिप्रेत] इष्ट ; अभिमत ; (स २३) ।
अभिभव सक [अभि+भू] पराभव करना, परास्त करना । अभिभवइ ; (महा) । संकृ—अभिभविय, अभिभूय ; (भग ६, ३३; पण्ह १, २) ।
अभिभव पुं [अभिभव] पराभव, पराजय, तिरस्कार ; (आचा ; दे १, ५७) ।
अभिभवण न [अभिभवन] ऊपर देखो ; (सुपा ४७६) ।
अभिभास सक [अभि+भाष्] संभाषण करना । अभिभासे; (पि १६६) ।
अभिभूइ स्त्री [अभिभूति] पराभव, अभिभव ; (द्र ३०) ।
अभिभूय वि [अभिभूत] पराभूत, पराजित ; (आचा ; सुर ४, ७५)
अभिमंजु देखो अभिमण्णु ; (हे ४, ३०५) ।

अभिमंत सक [अभि+मन्त्रय्] मंत्रित करना, मन्त्र से संस्कारना । संकृ—**अभिमंतिऊण, अभिमंतिय** ; (निचू १; आवम) ।
अभिमंतिय वि [अभिमन्त्रित] मन्त्र से संस्कारित; (सुर १६, ६२) ।
अभिमन्न सक [अभि+मन्] १ अभिमान करना । २ सम्मत करना । अभिमन्नइ ; (विसे २१६०, २६०३)।
अभिमय वि [अभिमत] इष्ट, अभिप्रेत ; (सूअ २, ४)।
अभिमाण पुं [अभिमान] अभिमान, गर्व ; (निचू १)।
अभिमार पुं [अभिमार] वृक्ष-विशेष ; (राज) ।
अभिमुह वि [अभिमुख] १ संमुख, सामने स्थित ; २ क्रिवि. सामने ; (भग) ।
अभिरइ स्त्री [अभिरति] १ रति, संभोग , २ प्रीति, अनुराग ; (विसे ३२२३) ।
अभिरम अक [अभि+रम्] १ क्रीड़ा करना, संभोग करना । २ प्रीति करना । ३ तल्लीन होना, आसक्ति करना । अभिरमइ ; (महा)। वकृ—**अभिरमंत, अभिरममाण** ; (सुपा १२० ; गाया १, २; ४) ।
अभिरमिय वि [अभिरमित] अनुरक्त किया हुआ, "अभिरमियकुसुयवणसंडं ससिमंडलं पलोयइ" (सुपा ३४)।
अभिरमिय } वि [अभिरत] १ अनुरक्त; (सुपा ३४)।
अभिरय } २ तल्लीन, तत्पर "साहू तवनियमसंजमाभिरया" (पउम ३७, ६३; स १२२) ।
अभिराम वि [अभिराम] सुन्दर, मनोहर, (गाया १, १३ ; स्वप्न ४५) ।
अभिरुइय वि [अभिरुचित] पसंद, मन का अभिमत; (गाया १, १ ; उवा ; सुपा ३४४ ; महा) ।
अभिरुय सक [अभि+रुच्] पसंद पडना, रुचना । अभिरुयइ ; (महा) ।
अभिरुह सक [अभि+रुह्] १ रोकना । २ ऊपर चढ़ना, आरोहना । संकृ—
" चत्तारि साहिए मासे बहवे पाणजाइया आगम्म ।
अभिरुज्झ कायं विहरिंसु, आरुहिया णं तत्थ हिंसिंसु "
(आचा) ।
अभिरोहिय वि [अभिरोधित] चारों ओर से निरुद्ध, रोका हुआ ; (गाया १, ६) ।
अभिरोहिय वि [अभिरोहित] ऊपर देखो " परचक्करायाभिरोहिया " (" परचक्रराजेनापरसैन्यनृपतिनाभिरोहिताः सर्वतः कृतनिरोधा या सा तथा " टी); (गाया १,८)।
अभिलंघ सक [अभि+लङ्घ्] उल्लंघन करना। वकृ—**अभिलंघमाण** ; (गाया १, १) ।
अभिलप्प वि [अभिलाप्य] कथन-योग्य, निर्वचनीय; (आचू १) ।
अभिलस सक [अभि+लष्] चाहना, वाञ्छना । अभिलसइ ; (उव) ।
अभिलाअ } पुं [अभिलाप] १ शब्द, ध्वनि ; (ठा १ ;
अभिलाव } १ ; भास २७) । २ संभाषण ; (णाया १, ८ ; विसे) ।
अभिलास पुं [अभिलाष] इच्छा, चाह ; (गाया १, ६ ; प्रयौ ६१) ।
अभिलासि } वि [अभिलाषिन्] चाहने वाला, इच्छुक;
अभिलासिण } (वसु ; स ६५४ ; पउम ३१, १२८)।
अभिलासुग वि [अभिलाषुक] अभिलाषी ; (उप ३६८ टी) ।
अभिलोयण न [अभिलोकन] जहां खड़े रह कर दूर की चीज देखी जाय वह स्थान ; (पण्ह २, ४) ।
अभिलोयण न [अभिलोचन] ऊपर देखो ; (पण्ह २, ४) ।
अभिवंद सक [अभि+वन्द्] नमस्कार करना, प्रणाम करना । वकृ—**अभिवंदंत** ; (पउम २३, ६) । कृ—" जे साहुणो ते **अभिवंदियव्वा** " (गोय १४)। **अभिवंदणिज्ज** ; (विसे २६४३) ।
अभिवंदय वि [अभिवन्दक] प्रणाम करने वाला (औप) ।
अभिवड्ढ अक [अभि + वृध्] बढ़ना, बड़ा होना, उन्नत होना । अभिवड्ढामो ; भूका—अभिवड्ढित्था ; (कप्प)। वकृ—**अभिवड्ढेमाण** ; (जं ७) ।
अभिवड्ढि देखो **अभिवुड्ढि** ; (इक) ।
अभिवड्ढिय वि [अभिवर्धित] १ बढ़ाया हुआ । २ अधिक मास ; ३ अधिक मास वाला वर्ष ; (सम ५६ ; चन्द १२) ।
अभिवत्ति स्त्री [अभिव्यक्ति] प्रादुर्भाव ; (उप २८५)।
अभिवय सक [अभि + व्रज्] सामने जाना । वकृ—**अभिवयंत** ; (गाया १, ८) ।

अभिवाइय वि [**अभिवादित**] प्रणत, नमस्कृत ; (सुपा ३१०)।

अभिवात पुं [**अभिवात**] १ सामने का पवन; २ प्रतिकूल (गरम या रूक्ष) पवन ; (आचा)।

अभिवाद } सक [**अभि+वादय्**] प्रणाम करना,
अभिवाय } नमस्कार करना। अभिवाएइ; (महा)। अभिवादये (विसे १०५४)। वकृ—**अभिवायमाण** ; (आचा)। कृ—**अभिवायणिज्ज** ; (सुपा ५६८)।

अभिवाय देखो **अभिवात** ; (आचा)।

अभिवायण न [**अभिवादन**] प्रणाम, नमस्कार ; (आचा ; दसचू)।

अभिवाहरणा स्त्री [**अभिव्याहरणा**] बुलाहट, पुकार ; (पंचा २)।

अभिवाहार पुं [**अभिव्याहार**] प्रश्नोत्तर, सवाल-जवाब ; (विसे ३३६६)।

अभिविहि पुंस्त्री [**अभिविधि**] मर्यादा, व्याप्ति ; (पंचा १५ ; विसे ८७४)।

अभिवुड्ढ देखो **अभिवड्ढ** । संकृ—**अभिवुड्ढित्ता**; (सुज्ज १)।

अभिवुड्ढि स्त्री [**अभिवृद्धि**] १ वृद्धि, बढाव। २ उत्तर भाद्रपदा नक्षत्र ; (जं ७)।

अभिव्वंजण न [**अभिव्यञ्जन**] देखो **अभिवत्ति**; (सूअ १, १, १)।

अभिव्वाहार देखो **अभिवाहार** ; (विसे ३४१२)।

अभिसंका स्त्री [**अभिशङ्का**] संशय, संदेह; (सूअ १, ६, १, १४)।

अभिसंकि वि [**अभिशङ्किन्**] १ संदेह करने वाला। २ भीरु, डरने वाला ; "उज्जु माराभिसंकी मरणा पमुच्चति" (आचा; णाया १, १८)।

अभिसंग पुं [**अभिष्वङ्ग**] आसक्ति ; (ठा ३, ४)।

अभिसंजाय वि [**अभिसंजात**] उत्पन्न ; (आचा)।

अभिसंथुण सक [**अभिसं+स्तु**] स्तुति करना, वर्णन करना। वकृ—**अभिसंथुणमाण** ; (णाया १, ८)।

अभिसंधारण न [**अभिसंधारण**] पर्यालोचन; विचारणा; (आचा)।

अभिसंधि पुंस्त्री [**अभिसंधि**] आशय, अभिप्राय; (उप २११ टी)।

अभिसंधिय वि [**अभिसंहित**] गृहीत, उपात्त ; (आचा)।

अभिसंभूय वि [**अभिसंभूत**] उत्पन्न, प्रादुर्भूत; (आचा)।

अभिसंबुद्ध वि [**अभिसंबुद्ध**] ज्ञान-प्राप्त, बोध-प्राप्त ; (आचा)।

अभिसंवुड्ढ वि [**अभिसंवृद्ध**] बढ़ा हुआ, उन्नत अवस्था को प्राप्त ; (आचा)।

अभिसमण्णागय } वि [**अभिसमन्वागत**] १ अच्छी
अभिसमन्नागय } तरह जाना हुआ, सुनिर्णीत ; (भग ५, ४)। २ व्यवस्थित ; (सूअ २, १)। ३ प्राप्त, लब्ध ; (भग १५ ; कप्प ; णाया १, ८)।

अभिसमागम सक [**अभिसमा+गम्**] १ सामने जाना। २ प्राप्त करना। ३ निर्णय करना, ठीक २ जानना। संकृ—**अभिसमागम्म** ; (आचा ; दस ५)।

अभिसमागम पुं [**अभिसमागम**] १ संमुख गमन। २ प्राप्ति। ३ निर्णय ; (ठा ३, ४)।

अभिसमे सक [**अभिसमा+इ**] देखो **अभिसमागम**= अभिसमा+गम्। अभिसमेइ ; (ठा ३, ४)। संकृ—**अभिसमेच्च** ; (आचा)।

अभिसरण न [**अभिसरण**] १ सामने जाना, संमुख गमन; (पण्ह १,१)। २ प्रिय के पास जाना; (कुमा)।

अभिसव पुं [**अभिषव**] १ मद्य आदि का अर्क ; २ मद्य-मांस आदि से मिश्रित चीज ; (पव ६)।

अभिसारिआ देखो **अहिसारिआ** ; (गा ८७१)।

अभिसिंच सक [**अभि+सिच्**] अभिषेक करना। अभिसिंचति; (कप्प)। कवकृ—**अभिसिच्चमाण**; (कप्प)। प्रयो, हेकृ—**अभिसिंचावित्तए**; (पि ५७८)।

अभिसित्त वि [**अभिषिक्त**] जिसका अभिषेक किया गया हो वह ; (आचम)।

अभिसेअ } पुं [**अभिषेक**] १ राजा, आचार्य आदि पद पर
अभिसेग } आरूढ करना ; (संथा ; महा) ; २ स्नान-महोत्सव ; "जिणाभिसेगे" (सुपा ५०)। ३ स्नान ; (औप; स ३२)। ४ जहां पर अभिषेक किया जाता है वह स्थान ; (भग)। ५ शुक्र-शोणित का संयोग "इह खलु अत्तत्ताए तेहिं तेहिं कुलेहिं अभिसेएण अभिसंभूया" (आचा १, ६,१)। ६ वि. आचार्य आदि पद के योग्य; (बृह ३)। ७ अभिषिक्त; (निचू १५)।

अभिसेगा स्त्री [**अभिषेका**] १ साध्वी, संन्यासिनी ; (निचू १५)। २ साध्वीओं को मुखिया, प्रवर्तिनी ; (धर्म ३; निचू ६)।

अभिसेज्जा स्त्री [**अभिशय्या**] देखो **अभिणिसज्जा** ; (वव १)। २ भिन्न स्थान ; (विसे ३४६१)।
अभिसेवण न [**अभिषेवण**] पूजा, सेवा, भक्ति ; (पउम १४, ४६)।
अभिस्संग पुं [**अभिष्वङ्ग**] आसक्ति; (विसे २६६४)।
अभिहट्टु अ [**अभिहृत्य**] बलात्कार करके, जबरदस्ती करके ; (आचा ; पि ५७७)।
अभिहड वि [**अभिहृत**] १ सामने लाया हुआ ; (पंचा १३)। २ जैन साधुओं की भिक्षा का एक दोष ; (ठा ३, ४)।
अभिहण सक [**अभि+हन्**] मारना, हिंसा करना। (पि ४६६)। वकृ—**अभिहणमाण** ; (जं ३)।
अभिहणण न [**अभिहनन**] अभिघात ; हिंसा ; (भग ८, ७)।
अभिहय वि [**अभिहत**] मारा हुआ, आहत ; (पडि)।
अभिहा स्त्री [**अभिधा**] नाम, आख्या ; (सण)।
अभिहाण न [**अभिधान**] १ नाम, आख्या ; (कुमा)। २ वाचक, शब्द ; (वव ६)। ३ कथन, उक्ति; (विसे)।
अभिहिय वि [**अभिहित**] कथित, उक्त ; (आचा)।
अभिहेअ पुं [**अभिधेय**] वाच्य, पदार्थ ; (विसे ८४१)।
अभीइ } स्त्री [**अभिजित्**] १ नक्षत्र-विशेष ; (सम ८;
अभीजि } १५)। २ पुं. एक राज-कुमार; (भग १३,६)। ३ राजा श्रेणिक का एक पुत्र, जिसने जैन दीक्षा ली थी ; (अनु)।
अभीरु वि [**अभीरु**] १ निडर, निर्भीक; (आचा)। २ स्त्री. मध्यम-ग्राम की एक मूर्च्छना ; (ठा ७)।
अभेज्झा देखो **अभिज्झा** ; (पराह १, ३)
अभोज्ज वि [**अभोज्य**] भोजन के अयोग्य ; (णाया १, १६)। °**घर** न [°**गृह**] भिक्षा के लिए अयोग्य घर, धोबी आदि नीच जाति का घर ; (बृह १)।
अम सक [**अम्**] १ जाना। २ अवाज करना। ३ खाना। ४ पीडना। ५ अक. रोगी होना। "अम गच्चाईसु" (विसे ३४५३); "अम रोगे वा" (विसे ३४५४)। अमइ ; (विसे ३४५३)।
अमग्ग पुं [**अमार्ग**] १ कुमार्ग, खराब रास्ता ; (उव)। २ मिथ्यात्व, कषाय आदि हेय पदार्थ; "अमग्गं परियाणामि मग्गं उवसंपज्जामि" (आव ४)। ३ कुमत, कुदर्शन ; (दंस)।
अमग्घाय पुं [**अमाघात**] १ द्रव्य का अ-हरण; २ अमारि-निवारण, अभय-घोषणा ; (पंचा ६)।
अमच्च पुं [**अमात्य**] मन्त्री, प्रधान ; (औप ; सु ४, १०४)।
अमच्च पुं [**अमर्त्य**] देव, देवता ; (कुमा)।
अमज्झ वि [**अमध्य**] १ मध्य-रहित, अखण्ड; (ठा ३,२)। २ परमाणु ; (भग २०, ६)।
अमण न [**अमन**] १ ज्ञान, निर्णय ; (ठा ३, ४)। २ अन्त, अवसान ; (विसे ३४५३)।
अमण } वि [**अमनस्क**] १ अप्रीतिकर, अभीष्ट; (ठा
अमणक्ख } ३, ३)। २ मन-रहित; (आव ४; सूअ २, ४, २)।
अमणाम वि [**अमनआप**] अनिष्ट, अ-मनोहर ; ([illegible] १४६ ; विपा १, १)।
अमणाम वि [**अमनोम**] ऊपर देखो ; (भग; विपा १,१)।
अमणाम वि [**अवनाम**] पीड़ा-कारक, दुःखोत्पादक; (सूअ २, १)।
अमणुस्स पुं [**अमनुष्य**] १ मनुष्य-भिन्न देव आदि; (णंदि)। २ नपुंसक ; (निचू १)।
अमत्त न [**अमत्र**] भाजन, पात्र ; (सूअ १, ६)।
अमम वि [**अमम**] १ ममता-रहित, निःस्पृह ; (पराह [illegible] ५; सुपा ५००)। २ पुं. आगामी काल में होने वाले एक जिन-देव का नाम ; (सम १५३)। ३ युग्म रूप से होने वाले मनुष्यों की एक जाति ; (जं ४)। ४ न. दिन के २५ वाँ मुहुर्त का नाम ; (चंद १०)। °**त्त** वि [°**त्व**] निःस्पृह, ममता-रहित ; (पंचव ४)।
अमय वि [**अमय**] विकार-रहित,
"अमओ य होइ जीवो, कारणविरहा जहेव आगासं।
समयं च होअनिच्चं, मिम्मयघडतंतुमाईयं" (विसे)।
अमय न [**अमृत**] १ अमृत, सुधा ; (प्रासू ६६)। २ क्षीर समुद्र का पानी; (राय)। ३ पुं. मोक्ष, मुक्ति; (सम्म १६७; प्रामा)। ४ वि. नहीं मरा हुआ, जीवित; "अमओ हं नय विमुच्चामि" (पउम ३३, ८२)। °**कर** पुं [°**कर**] चन्द्र, चन्द्रमा ; (उप ७६८ टी)। °**किरण** पुं [°**किरण**] चन्द्र ; (सुपा ३७७)। °**कुंड** पुं [°**कुण्ड**] चन्द्र, चाँद ; (श्रा २७)। °**घोस** पुं [°**घोष**] एक राजा का नाम ; (संथा)। °**फल** न [°**फल**] अमृतोपम फल ; (णाया १, ६)। °**मइ**

°मय वि [°मय] अमृत-पूर्ण ; (कुमा ; सुर ३, १२१ ; २३३) । °मऊह पुं [°मयूख] चन्द्र ; (मै ६८) । °वल्लरि, °वल्लरी स्त्री [°वल्लरि, °री] अमृतलता, वल्ली-विशेष, गुडूची । °वल्लि, °वल्ली स्त्री [°वल्लि, °ल्ली] वल्ली-विशेष, गुडूची ; (श्रा २० ; पव ४) । °वास पुं [°वर्ष] सुधा-वृष्टि; (आचा) । देखो अमिय=अमृत ।

अमय पुं [दे] १ चन्द्र, चन्द्रमा ; (दे १, १५) । २ असुर, दैत्य ; (षड्) ।

अमयणिग्गम पुं [दे. अमृतनिर्गम] १ चन्द्र, चन्द्रमा ; (दे १, १५) ।

अमर वि [आमर] दिव्य, देव-संबन्धी, "अमरा आउहभेया" (पउम ६१, ४६) ।

अमर पुं [अमर] १ देव, देवता ; (पाअ) । २ मुक्त आत्मा ; (औप) । ३ भगवान् ऋषभदेव का एक पुत्र ; (राज) । ४ अनन्तवीर्य-नामक भावी जिन-देव के पूर्व-जन्म का नाम; (ती २१) । ५ वि मरण-रहित "पावंति अविग्घेणं जीवा अयरामरं ठाणं" (पडि) । °कंका स्त्री [°कङ्का] एक नगरी का नाम ; (उप ६४८ टी) । °केउ पुं [°केतु] एक राज-कुमार ; (दंस) । °गिरि पुं [°गिरि] मेरु पर्वत ; (पउम ६५, ३७) । °गेह न [°गेह] स्वर्ग; (उप ७२८ टी) । °चन्दण न [चन्दन] १ हरिचन्दन वृक्ष ; २ एक प्रकार का सुगन्धित काष्ठ ; (पाअ) । °तरु पुं [°तरु] कल्प-वृक्ष; (सुपा ४४) । °दत्त पुं [°दत्त] एक श्रेष्ठि-पुत्र का नाम; (धम्म) । °नाह पुं [नाथ] इन्द्र ; (पउम १०१, ७५) । °पुर न [°पुर] स्वर्ग ; (पउम २, १४) । °पुरी स्त्री [°पुरी] स्वर्ग-पुरी, अमरावती; (उप पृ १०५) । °पभ पुं [°प्रभ] वानर-द्वीप का एक राजा ; (पउम ६, ६६) °वइ पुं [°पति] इन्द्र ; (पउम १०१, ७० ; सुर १, १) । °वहू स्त्री [°वधू] देवी; (महा) । °सामि पुं[स्वामिन्] इन्द्र; (विसे १४३६ टी) । °सेण पुं [°सेन] १ एक राजा का नाम ; (दंस) । २ एक राज-कुमार का नाम ; (णाया १, ८) । °लय ति [°लय] स्वर्ग ; "चविउममरालयाए" (उप ७२८ टी ; सुपा ३५) । °वई स्त्री [°वती] १ देव-नगरी, स्वर्ग-पुरी ; (पाअ) । २ मर्त्य-लोक की एक नगरी, राजा श्रीसेण की राजधानी ; (उप ६८६ टी) ।

अमरंगणा स्त्री [अमराङ्गना] देवी ; (श्रा २७) ।

अमरिंद पुं [अमरेन्द्र] देवों का राजा, इन्द्र ; (भवि) ।

अमरिस पुं [अमर्ष] १ असहिष्णुता ; (हे २, १०५) । २ कदाग्रह ; (उत्त ३४) । ३ क्रोध, गुस्सा ; (पण्ह १, ३; पाअ) ।

अमरिसण न [अमर्षण] १—३ ऊपर देखो । ४ वि. असहिष्णु, क्रोधी ; (पण्ह १, ४) । ५ सहिष्णु, क्षमा-शील ; (सम १५३) ।

अमरिसण वि [अमसृण] उद्यमी, उद्योगी ; (सम १५३) ।

अमरिसिय वि [अमर्षित] १ मत्सरी, असहिष्णु ; (आवम ; स ५६५) ।

अमरी स्त्री (अमरी) देवी ; (कुमा) ।

अमल वि [अमल] १ निर्मल, स्वच्छ; (उव ; सुपा ३४) । २ पुं. भगवान् ऋषभदेव के एक पुत्र का नाम ; (राज) ।

अमला स्त्री [अमला] शक्र की एक अग्र-महिषी का नाम, इन्द्राणी-विशेष ; (ठा ८) ।

अमाइ, अमाइल्ल वि [अमायिन्] निष्कपट, सरल ; (आचा ; ठा १० ; द ४७) ।

अमाघाय देखो अमग्घाय ; (उवा) ।

अमाण वि [अमान] १ गर्व-रहित, नम्र ; (कप्प) । २ असंख्य, "ठाणट्ठाणविलोइज्जमाणमाणोसहिसमूहो" (उव ६ टी) ।

अमाय वि [अमात] नहीं माया हुआ ; "सुसाहुवग्गस्स मणे अमाया" (सत्त ३५) ।

अमाय वि [अमाय] निष्कपट, सरल ; (कप्प) ।

अमायि देखो अमाइ ; (भग) ।

अमारि स्त्री [अमारि] हिंसा-निवारण, जीवित-दान ; (सुपा ११२) । °घोस पुं [°घोष] अहिंसा की घोषणा ; (सुपा ३०६) । °पडह पुं [°पटह] हिंसा-निषेध का डिण्डिम, "अमारिपडहं च घोसावेइ" (रयण ६०) ।

अमावसा, अमावस्सा, अमावासा स्त्री [अमावास्या] तिथि-विशेष, अमावस ; (कप्प ; सुपा २२६ ; णाया १, १० ; चंद १०) ।

अमिज्ज वि [अमेय] माप करने के लिये अशक्य, असंख्य; (कप्प) ।

अमिज्झ न [अमेध्य] १ अशुचि वस्तु, "भरियममिज्झस्स दुरहिगंधस्स" (उप ७२८ टी) । २ विष्ठा ; (सुपा ३१३) ।

अमित्त पुंन [अमित्र] रिपु, दुश्मन ; (ठा ४, ४; से ५, १७) ।

अमिय देखो **अमय**=अमृत; (प्रासू १; गा २; विसे; आवम; पिंग)। °**कुंड** न [°**कुण्ड**] नगर-विशेष का नाम; (सुपा ५७८)। °**गइ** स्त्री [°**गति**] एक छन्द का नाम; (पिंग)। °**णाणि** पुं [°**ज्ञानिन्**] ऐरवत क्षेत्र के एक तीर्थंकर देव का नाम; (सम १५३)। °**भूय** वि [**भूत**] अमृत-तुल्य; (आउ)। °**मेह** पुं [°**मेघ**] अमृत-वर्षा; (जं ३)। °**रुइ** पुं [°**रुचि**] चन्द्र, चन्द्रमा; (श्रा १६)।

अमिय वि [**अमित**] परिमाण-रहित, असंख्य, अनन्त; (भग ५, ४; सुपा ३१; श्रा २७)। °**गइ** पुं [°**गति**] दक्षिण दिशा के एक इन्द्र का नाम, दिक्कुमारों का इन्द्र; (ठा २, ३)। °**जस** पुं [°**यशस्**] एक चक्रवर्ती राजा का नाम; (महा)। °**णाणि** वि [°**ज्ञानिन्**] १ सर्वज्ञ; (विसे)। २ ऐरवत क्षेत्र के एक जिन-देव का नाम; (सम १५३)। °**तेय** पुं [°**तेजस्**] एक जैन मुनि का नाम; (उप ७६८टी)। °**बल** पुं [°**बल**] इक्ष्वाकु वंश के एक राजा का नाम; (पउम ५, ४)। °**वाहण** पुं [°**वाहन**] दिक्कुमार देवों के एक इन्द्र का नाम; (ठा २, ३)। °**वेग** पुं [°**वेग**] राक्षस वंश के एक राजा का नाम; (पउम ५, २६१)। °**ासणिय** वि [°**ासनिक**] एक स्थान पर नहीं बैठने वाला, चंचल; (कप्प)।

अमिल न [**दे**] ऊन का बना हुआ वस्त्र; (श्रा १८)। २ पुं. मेष, भेड़; (ओघ ३६८)।

अमिला स्त्री [**अमिला**] १ बीसवें जिन-देव की प्रथम शिष्या; (सम १५२)। २ पाड़ी, छोटी भैंस; (बृह १)।

अमिलाण, **अमिलाय** वि [**अम्लान**] १ म्लानि-रहित, ताजा, हृष्ट; (सुर ३, ६५; भग ११, ११)। २ पुं. कुरण्टक वृक्ष; ३ न. कुरण्टक वृक्ष का पुष्प; (दे १, ३७)।

अमु स [**अदस्**] वह, अमुक; (पि ४३२)।

अमुअ स [**अमुक**] वह, कोई, अमका-ढमका; (ओघ ३२ भा; सुपा ३१४)।

अमुअ देखो **अमय**=अमृत; (प्रासू ५१; गा ९७६)।

अमुअ देखो **अमय**=अमय; (काप्र ७७७)।

अमुअ वि [**अस्मृत**] स्मरण में नहीं आया हुआ; (भग ३, ६)।

अमुइ वि [**अमोचिन्**] नहीं छोड़ने वाला; (उव)।

अमुग देखो **अमुअ**=अमुक; (कुमा)।

अमुगत्थ वि [**अमुत्र**] अमुक स्थान में; (सुपा ६०२)।

अमुण वि [**अज्ञ**] अजान, मूर्ख; (बृह १)।

अमुणिय वि [**अज्ञात**] अविदित; (सुर ४, २०)।

अमुणिय वि [**अज्ञान**] मूर्ख, अजान; (पण्ह १, २)।

अमुत्त वि [**अमुक्त**] अपरित्यक्त; (ठा १०)।

अमुत्त वि [**अमूर्त्त**] रूप-रहित, निराकार; (सुर १४, ३६)।

अमुदग्ग, **अमुयग्ग** न [**अमुदग्र**] १ अतीन्द्रिय मिथ्याज्ञान विशेष, जैसे देवताओं के पुद्गल-रहित शरीर को देख कर जीव का शरीर पुद्गल से निर्मित नहीं है ऐसा निर्णय; (ठा ७)।

अमुसा स्त्री [**अमृषा**] सत्य वचन; (सूअ १, १०)। °**वाइ** वि [°**वादिन्**] सत्यवादी; (कुमा)।

अमुह वि [**अमुख**] निरुत्तर; (वव ६)।

अमुहरि वि [**अमुखरिन्**] अ-वाचाट, मित-भाषी; (उत्त १)।

अमूढ वि [**अमूढ**] अ-मुग्ध, विचक्षण; (णाया १, ६)। °**णाण** न [°**ज्ञान**] सत्य ज्ञान; (आवम)। °**दिट्ठि** स्त्री [°**दृष्टि**] १ सम्यग्दर्शन; (पव ६)। २ अविचलित बुद्धि; (उत्त २)। ३ वि. अविचलित दृष्टि वाला, सम्यग्दृष्टि; (गच्छ १)।

अमूस वि [**अमृष**] सत्यवादी; (कुमा)।

अमेज्ज देखो **अमिज्ज**; (भग ११, ११)।

अमेज्झ देखो **अमिज्झ**; (महा)।

अमोल्ल वि [**अमूल्य**] जिसकी कीमत न हो सके वह, बहुमूल्य; (गउड; सुपा ५१६)।

अमोसलि न [**दे. अमुशलि**] वस्त्रादि-निरीक्षण का एक प्रकार; (ओघ २५)।

अमोसा देखो **अमुसा**; (कुमा)।

अमोह वि [**अमोघ**] १ अवन्ध्य, सफल; (सुपा ८३; ५७५)। २ पुं. सूर्य के उदय और अस्त के समय किरणों के विकार से होने वाली रेखा-विशेष; (भग ३, ६)। ३ एक यक्ष का नाम; (विपा १, ४)। °**दंसि** वि [°**दर्शिन्**] १ ठीक २ देखने वाला; (दस ६)। २ न. उद्यान-विशेष; ३ पुं. यक्ष-विशेष; (विपा १, ३)। °**पहारि** वि [°**प्रहारिन्**] अचूक प्रहार करने वाला, निशान-बाज; (महा)। °**रह** पुं [°**रथ**] इस नाम का एक रथिक; (महा)।

अमोह पुं [अमोह] १ मोह का अभाव, सत्य-ग्रह ; (विसे)। २ रुचक पर्वत का एक शिखर; (ठा ८)। ३ वि. मोह-रहित, निर्मोह ; (सुपा ८३)।

अमोहण न [अमोहन] १ मोह का अभाव; (वव १०)। २ वि. मुग्ध नहीं करने वाला ; (कप्प)।

अमोहा स्त्री [अमोघा] १ एक जम्बू-वृक्ष, जिसके नाम से यह जम्बूद्वीप कहलाता है; (जीव ३)। २ एक पुष्करिणी; (दीव)।

अम्म देखो अंब=आम्ल ; (उर २, ६)।

अम्मएव पुं [आम्रदेव] एक जैन आचार्य ; (पव २७६-गा ६०६)।

अम्मगा देखो अम्मया ; (उवा)।

अम्मच्छ वि [दे] असंबद्ध; (षड्)।

अम्मड देखो अंबड ; (औप)।

अम्मडी (अप) स्त्री [अम्बा] माता, माँ ; (हे ४, ४२४)।

अम्मणुअंचिय न [दे] अनुगमन, अनुसरण; (दे १,४६)।

अम्मधाई देखो अंबधाई ; (विपा १, ६)।

अम्मया स्त्री [अम्बा] १ माता, जननी ; (उवा)। २ पांचवें वासुदेव की माता का नाम ; (सम १५२)।

अम्महे (शौ) अ. हर्ष-सूचक अव्यय ; (हे ४, २८४)।

अम्मा स्त्री (दे. अम्बा) माता; माँ ; (दे १, ५)। °पिइ, °पिउ, °पियर, °पीइ पुंब. [°पितृ] माँ-बाप, माता-पिता ; (वव ३ ; कप्प; सुर ३, ८३ ; ठा ३, १; सुर ३, ८८ ; ७, १७०)। °पेइय वि [°पैतृक] माँ-बाप-संबन्धी ; (भग १, ७)।

अम्माइआ स्त्री [दे) अनुसरण करने वाली स्त्री, पीछे २ जाने वाली स्त्री (दे १, २२)।

अम्मो अ [ ] १ आश्चर्य-सूचक अव्यय ; (हे २, २०८ ; स्वप्न २६)। २ माता का संबोधन, हे माँ ; (उवा ; कुमा)।

अम्मोस वि [अमर्ष्य] अक्षम्य, क्षमा के अयोग्य ; (सुपा ४८७)।

अम्ह सं [अस्मत्] हम, निज, खुद ; (हे २, ६६; १४२)। °केर, °क्केर, °च्चय वि [°ीय] अस्मदीय, हमारा ; (हे २, ६६ ; सुपा ४६६)।

अम्हत्त वि [दे] प्रमृष्ट, प्रमार्जित ; (षड्)।

अम्हार } (अप) वि [अस्मदीय] हमारा ; (षड् ;
अम्हारय } कुमा)।

अम्हारिच्छ वि [अस्मादृक्ष] हमारे जैसा ; (प्रामा)।

अम्हारिस वि [अस्मादृश] हमारे जैसा; (हे १, १४२; षड्)।

अम्हेच्चय वि [आस्माक] अस्मदीय, हमारा ; (कुमा ; हे २, १४६)।

अम्हो अ [अहो] आश्चर्य-सूचक अव्यय ; (षड्)।

अय पुं [अग] १ पहाड़, पर्वत ; २ साँप, सर्प ; ३ सूर्य, सूरज ; (श्रा २३)।

अय पुं [अज] १ छाग, बकरा ; (विपा १, ४)। २ पूर्व भाद्रपदा नक्षत्र का अधिष्ठायक देव ; (ठा २, ३)। ३ महादेव ; ४ विष्णु ; ५ रामचन्द्र ; ६ ब्रह्मा ; ७ कामदेव ; (श्रा २३)। ८ महाग्रह-विशेष ; (ठा ६)। ६ बीजोत्पादक शक्ति से रहित धान्य ; (पउम ११, २५)। °करक पुं [°करक] एक महाग्रह का नाम ; (ठा २, ३)। °वाल पुं [°पाल] आभीर ; (श्रा २३)।

अय पुं [अय] १ गमन, गति ; (विसे २७६३; श्रा २३)। २ लाभ, प्राप्ति; ३ अनुभव ; (विसे)। ४ न. पुण्य; (ठा १०)। ५ भाग्य, नसीब; (श्रा २३)।

अय न [अक] १ दुःख ; २ पाप ; (श्रा २३)।

अय न [अयस्] लोहा, लोह ; (ओघ ६२)। °आगर पुं [°आकर] १ लोहे की खान ; (निचू ५)। २ लोहे का कारखाना ; (ठा ८)। °कंत °क्खंत पुं [°कान्त] लोह-चुम्बक; (आवम)। °कडिल्ल न [दे °कडिल्ल] कटाह ; (ओघ)। °कुंडी स्त्री [°कुण्डी] लोहे का भाजन-विशेष ; (विपा १, ६)। °कोट्ठय पुं [°कोष्ठक] लोहे का कुशूल, लोहे का गोला ; "पोट्टं अयकोट्ठओ व्व वट्टं" (उवा)। °गोलय पुं [°गोलक] लोहे का गोला ; (श्रा १६)। °दव्वी स्त्री [°दर्वी] लोहे की कड़छी , जिससे दाल, कढ़ी आदि हलाया जाता है ; (दे २, ७)। °पाय न [°पात्र] लोहे का भाजन। °सलागा स्त्री [°शलाका] लोहे की सलाई ; (उप २११ टी)।

अय सक [अय्] १ गमन करना, जाना । २ प्राप्त करना । ३ जानना । वकृ—अयमाण ; (सम ६३)।

अयंछ सक [कृष्] १ खींचना । २ जोतना, चास करना । ३ रेखा करना । अयंछइ ; (हे ४, १८७)।

अयंछिर वि [कर्षिन्] कर्षण-शील, खींचने वाला ; (कुमा)।

अयंड पुं [**अकाण्ड**] १ अनुचित समय ; (महा)। २ अकस्मात्, हठात् ; (पउम ५, १६४; से ६,४४; गउड)। ३ क्रिवि. अनधारा, अतर्कित ; (पाअ)।

अयंत वकृ [**आयत्**] आता हुआ, प्रवेश करता हुआ ; (आवम)।

अयंपिर वि [**अजल्पितृ**] नहीं बोलने वाला, मौनी ; (पि २६६; ५६६)।

अयंपुल पुं [**अयंपुल**] गो-शालक का एक शिष्य ; (भग ८, ५)

अयंस पुं [**आदर्श**] दर्पण, काँच। °**मुह** पुं [°**मुख**] १ इस नाम का एक द्वीप ; २ द्वीप-विशेष का निवासी ; (इक)।

अयंसंधि वि [**इदंसंधि**] उपयुक्त कार्य को यथासमय करने वाला ; (आचा)।

अयक, **अयग** पुं [**दे**] दानव, असुर ; (दे १, ६)।

अयगर पुं [**अजगर**] अजगर, मोटा साँप ; (पण्ह १, १ ; पउम ६३, ५४)।

अयड पुं [**दे. अवट**] कूप, कुँआ ; (दे १, १८)।

अयण न [**अतन**] सतत होना, निरन्तर होना ; (विसे ३५७८)।

अयण न [**अयन**] १ गमन ; २ प्राप्ति, लाभ ; (विसे ८३)। ३ ज्ञान, निर्णय ; (विसे ८३)। ४ गृह, मन्दिर "चंडियायणं" (स ४३५)। ५ वि. प्रापक, प्राप्त करने वाला ; (विसे ६६०)। ६ पुंन. वर्ष का आधा भाग, जिसमें सूर्य दक्षिण से उत्तर में या उत्तर से दक्षिण में जाता है ; ((ठा २, ४) ;

"एक्के अअणे दिअहा, बीए रअणीओ होंति दोहाओ।
विरहाअणो अउव्वो, इत्थ दुवे च्चेअ वड्ढंति"
(गा ८४६)।

अयण न [**अदन**] १ भक्षण ; २ खुराक, भोजन ; (स १३० ; उर ८, ७)।

अयणु वि [**अज्ञ**] अजान, मूर्ख ; (सुर ३, १६६)।

अयणु वि [**अतनु**] स्थूल, मोटा, महान् ; (सण)।

अयतंचिअ वि [**दे**] पुष्ट, उपचित; (दे १, ४७)।

अयर वि [**अजर**] वृद्धावस्था-रहित "अयरामरं ठाणं" (पडि; उव)।

अयर पुंन [**अतर**] १ सागर, समुद्र ; (दे १६)। २ समय का मान-विशेष, सागरोपम ; (संग २१, २५ ; धम्म ४३)। ३ वि. तरने को अशक्य ; (बृह १)। ४ असमर्थ, अशक्त ; (निचू १)। ५ ग्लान, बिमार ; (बृह १)।

अयरामर वि [**अजरामर**] १ जरा और मरण से रहित; (नव २)। २ न. मुक्ति, मोक्ष ; (पउम ८, १२७)।

अयल देखो **अचल**=अचल ; (पाअ ; गउड; उप पृ १०५; अंत ३ ; पउम ८५, ४; सम ८८ ; कप्प ; सम १६)।

अयला देखो **अचला**; (पउम १२०, १५६)।

अयस देखो **अजस** ; (गउड ; प्रासु २३; १५३ ; भ १७८)।

अयसि वि [**अयशस्विन्**] अजसी, यशो-रहित, कीर्ति-शून्य ; (गउड)।

अयसि, **अयसी** स्त्री [**अतसी**] धान्य-विशेष, अलसी ; (भग; ठा ७ ; गाया १, ५)।

अया स्त्री [**अजा**] १ बकरी ; २ माया, अविद्या ; ३ प्रकृति, कुदरत; (हे ३, ३२;षड्)। °**किवाणिज्ज** पुं [°**कृपाणीय**] न्याय-विशेष, जैसे बकरी के गले पर अनधारी छुरी पड़ती है उस माफिक अनधारा किसी कार्य का होना; (आचा)। °**पाल** पुं [°**पाल**] आभीर, बकरी चराने वाला ; (ग २६०)। °**वय** पुं [°**व्रज**] बकरी का वाडा ; (भग १६, ३)।

अयागर देखो **अय-आगर**; (ठा ८)।

अयाण न [**अज्ञान**] ज्ञान का अभाव ; (सत्त ६३)।

अयाण वि [**अज्ञ, अज्ञान**] अजान, अज्ञानी, मूर्ख; (ओघ ७४ ; पउम २२, ८३ ; गा २७५ ; दे ७, ७३)।

अयाणअ वि [**अज्ञायक**] ऊपर देखो ; (पाअ; भवि)।

अयाणंत देखो **अजाणंत** ; (ओघ ११)।

अयाणमाण देखो **अजाणमाण** ; (नव ३६)।

अयाणिय देखो **अजाणिय** ; (उप ७२८ टी)।

अयाणुय देखो **अजाणुय** ; (सुर ३, १६८ ; सुपा ५४३)।

अयार पुं [**अकार**] 'अ' अक्षर; (विसे ४७८)।

अयाल पुं [**अकाल**] अयोग्य समय, अनुचित काल; (पउम २२, ८५)।

अयालि पुं [**दे**] दुर्दिन, मेघाच्छन्न दिवस ; (दे १, १३)।

अयालिय वि [**अकालिक**] आकस्मिक, अकाण्डोत्पन्न; "पडउ पडउ एयस्स हत्थतले अयालिया विज्जू" (रंभा)।

अयि देखो **अइ**=अयि ; (हे २, २१७)।

अयुजरेवइ स्त्री [दे] अचिर-युवति, नवोढा, दुलहिन ; (षड्)।
अयोमय देखो अओ-मय ; (अंत १६)।
अय्यावत्त (शौ) पुं [आर्यावर्त] भारत, हिन्दुस्थान ; (कुमा)।
अय्युण (म) देखो अज्जुण ; (हे ४, २६२)।
अर पुं [अर] १ धूरी, पहिये का बीचका काष्ठ; २ अठारहवाँ जिनदेव और सातवाँ चक्रवर्ती राजा; "सुमिणे अरं महरिहं पासइ जणणी अरो तम्हा" (आव २ ; सम ५३ ; उत्त १८)। ३ समय का एक परिमाण, कालचक्र का बारहवाँ हिस्सा ; (ती २१)।
°अर पुं [°कर] १ किरण ; (गा ३४३ ; से १, १७)। हस्त; हाथ ; (से १, २८)। ३ शुल्क, चुंगी ; (से १, २८)।
अरइ स्त्री [अरति] १ बेचैनी ; (भग ; आचा ; उत्त २)। °कम्म न [°कर्मन्] अरति का हेतु-भूत कर्म-विशेष ; (ठा ६)। °परिसह, परीसह पुं (°परिषह, °परीषह) अरति को सहन करना; (पंच ८) । °मोहणिज्ज न [°मोहनीय] अरति का उत्पादक कर्म-विशेष ; (कम्म १)। °रइ स्त्री [°रति] सुख-दुःख ; (ठा १)।
°अरंग देखो तरंग ; (से २, २६)।
अरंजर पुंन [अरञ्जर] घड़ा, जल-घट ; (ठा ४, ४)।
°अरक्ख देखो वरक्ख ; (से ६, ४४)।
अरक्खरी स्त्री [अराक्षरी] नगरी-विशेष ; (आक)।
अरग देखो अर ; (पराह २, ४ ; भग ३, ५)।
अरज्झिय वि [अरहित] निरन्तर, सतत "अरज्झियाभिताबा" (सूअ १, ५, १)।
अरड्डु पुं [अरड्डु] वृक्ष-विशेष ; (उप १०३१ टी)।
अरण न [अरण] हिंसा ; (उव)।
अरणि पुं [अरणि] १ वृक्ष-विशेष ; २ इस वृक्ष की लकड़ी, जिसको घिसने पर अग्नि जल्दी पैदा होती है; (आवम; णाया १, १८)।
अरणि पुंस्त्री [दे] १ रास्ता, मार्ग ; २ पङ्क्ति, कतार ; (षड्)।
अरणिया स्त्री [अरणिका] वनस्पति-विशेष ; (आचा)।
अरणेट्टय पुं [दे. अरणेटक] पत्थरों के टुकडों से मिली हुई सफेद मिट्टी ; (जी ३)।
अरण्ण न [अरण्य] वन, जंगल ; (दे १, ६६)। °वडिंसग न [°ावतंसक] देव-विमान विशेष ; (सम ३६)। °साण पुं [°श्वन्] जंगली कुत्ता; (कुमा)।
अरण्णय वि [आरण्यक] जंगली, जंगल-वासी ; (अभि ५२)।
अरत्त वि [अरक्त] राग-रहित, नीराग ; (आचा)।
अरन्न देखो अरण्ण ; (कप्प ; उव)।
अरमंतिया स्त्री [अरमन्तिका] अ-रमणता, कार्य में अतत्परता ; (उवा)।
अरय देखो अर ; (खेत्त १०८)।
अरय वि [अरजस्) १ रजोगुण-रहित ; (पउम ६, १४६)। २ एक महाग्रह का नाम ; (ठा २, ३)। ३ वि. धूली-रहित, निर्मल ; (कप्प)। ४ न. पांचवें देव-लोक का एक प्रतर ; (ठा ६)। ५ रजोगुण का अभाव ; "अरो य अरयं पतो पतो गइमणुत्तरं" (उत्त १८)।
अरय वि [अरत] अनासक्त, निःस्पृह ; (आचा)।
अरया स्त्री [अरजा] कुमुद-नामक विजय की राजधानी ; (जं ४)।
अरयणि पुं [अरत्नि] परिमाण-विशेष, खुली अंगुली वाला हाथ ; (ठा ४, ४)।
अरर न [अरर] १ युद्ध ; २ ढकना। °कुरी स्त्री [°कुरी] नगरी-विशेष ; (धम्म ६ टी)।
अररि पुंन [अररि] किवाड, द्वार ; (प्रामा)।
अरल न [दे] १ चीरी, कीट-विशेष ; २ मशक, मच्छड़ ; (दे १, ५३)।
अरलाया स्त्री [दे] चीरी, कीट-विशेष ; (दे १, २६)।
अरलु देखो अरड्डु ; (पउम ४२, ८)।
अरविंद न [अरविन्द] कमल, पद्म ; (पराह २, ४)।
अरविंदर वि [दे] दीर्घ, लम्बा ; (दे १, ४५)।
अरस पुं [अरस] रस-रहित, नीरस ; (णाया १, ५)।
अरस पुं [अर्शस्] व्याधि-विशेष, बवासीर ; (श्रा २२)।
अरह वक्र [अर्हत्] १ पूजा के योग्य, पूज्य ; (षड् ; हे २, १११)। २ पुं. जिन-देव, तीर्थंकर ; (सम्म ६७)। °मित्त पुं [°मित्र] एक व्यापारी का नाम ; (गच्छ २)।
अरह वि [अरहस्] १ प्रकट। २ जिससे कुछ भी छिपा न हो। ३ पुं. जिन-देव, सर्वज्ञ ; (ठा ४, १ ; ६)।
अरह वि [अरथ] परिग्रह-रहित ; (भग)।

अरहंत वक़ [अर्हत्] १ पूजा के योग्य, पूज्य ; (षड् ; हे २, १११ ; भग ८, ५)। २ पुं. जिन भगवान्, तीर्थंकर-देव ; (आचा; ठा ३, ४)।

अरहंत वि [अरहोन्तर्] १ सर्वज्ञ, सब कुछ जानने वाला। २ पुं. जिन भगवान् ; (भग २, १)।

अरहंत वि [अरथान्त] १ निःस्पृह, निर्मम ; २ पुं. जिन-देव ; (भग)।

अरहंत वक़ [अरहयत्] १ अपने स्वभाव को नहीं छोडने वाला ; २ पुं. जिनेश्वर देव ; (भग)।

अरहट्ट पुं [अरघट्ट] अरहट, पानी का चरखा, पानी निकालने का यन्त्र-विशेष ; (गा ४६० ; प्रासु ५५ ; "भमिश्रो कालमणंतं अरहट्टघडिव्व जलमज्झे" (जीवा १)।

अरहण्णय पुं [अरहन्नक] एक व्यापारी का नाम ; (णाया १, ८)।

अराइ पुं [अराति] रिपु, दुश्मन ; (कुमा)।

अराइ स्त्री [अरात्रि] दिन, दिवस ; (कुमा)।

अरागि वि [अरागिन्] राग-रहित; वीतराग ; (पउम ११७, ४१)।

अरि पुं [अरि] दुश्मन, रिपु ; (पउम ७३, १६)। °**छव्वग्ग** पुं [°षड्वर्ग] छः आन्तरिक शत्रु—काम, क्रोध, लोभ, मान, मद, हर्ष ; (सूत्र १, १, ४)। °**दमण** वि [°दमन] १ रिपु-विनाशक। २ पुं. इक्ष्वाकु वंश के एक राजा का नाम ; (पउम ५, ७)। ३ एक जैन मुनि जो भगवान् अजितनाथ के पूर्वजन्म के गुरू थे ; (पउम २०, ७)। °**दमणी** स्त्री [°दमनी] विद्या-विशेष; (पउम ७, १४५)। °**विद्धंसी** स्त्री [°विध्वंसिनी] रिपु का नाश करने वाली एक विद्या ; (पउम ७, १४०)। °**संतास** पुं [°संत्रास] राक्षस वंश में उत्पन्न लङ्का का एक राजा ; (पउम ५, २६५)। °**हंत** वि [°हन्तृ] १ रिपु-विनाशक ; २ पुं जिन-देव ; (आवम)।

अरिस देखो **अरस** ; (णाया १, १३)।

अरिसल्ल } **अरिसिल्ल** } वि [अर्शस्वत्] बवासीर रोग वाला ; (पात्र ; विपा १, ७)।

अरिह वि [अर्ह] १ योग्य, लायक ; (सुपा २६६ ; प्राप्र)। २ जिन-देव ; (औप)।

अरिह सक [अर्ह] १ योग्य होना। २ पूजा के योग्य होना। ३ पूजा करना। अरिहइ ; (महा)। अरि-हेति ; (भग)।

अरिह देखो **अरह**=अर्हत् ; (हे २, १११ ; षड्)। °**दत्त**, °**दिण्ण** पुं [°दत्त] जैन मुनि-विशेष का नाम; (कप्प)।

अरिहंत देखो **अरहंत** = अर्हत् ; (हे २, १११ ; षड् ; आचा १, १)। °**चेइय** न [°चैत्य] १ जिन-मन्दिर ; (उवा ; आचू)। °**सासण** न [°शासन] १ जैन आगम-ग्रन्थ ; २ जिन-आज्ञा ; (पण्ह २, ५)।

°**अरु** देखो **तरु** ; (से २, १६; ५, ८५)।

अरुग न [दे. अरुक] व्रण, घाव, "अरुगं इहरा कुत्थइ" (बृह ३)।

अरुण पुं [अरुण] १ सूर्य, सूरज ; (से ३, ६)। २ सूर्य का सारथि ; ३ संध्याराग, सन्ध्या की लाली ; (से ८, ७)। ४ द्वीप-विशेष ; ५ समुद्र-विशेष, "गंतूण होइ अरुणो, अरुणो दीवो तश्रो उदही" (दीव)। ६ ग्रह-देवता का नाम ; (ठा २, ३—पत्र ७८)। ७ गन्धावती-पर्वत का अधिष्ठाता देव ; (ठा २, ३—पत्र ६९))। ८ देव-विशेष ; (णंदि)। ९ रक्त रंग, लाली ; (गउड)। १० न. विमान-विशेष ; (सम १४)। ११ वि. रक्त, लाल ; (गउड)। °**कंत** न [°कान्त] देव-विमान-विशेष ; (उवा)। °**कील** न [°कील] देव-विमान-विशेष ; (उवा)। °**गंगा** स्त्री [°गङ्गा] महाराष्ट्र देश की एक नदी; (ती २८)। °**गव** न [°गव] देव-विमान-विशेष ; (उवा)। °**ज्झय** न [°ध्वज] एक देव-विमान का नाम ; (उवा)। °**प्पभ**, °**प्पह** पुं [°प्रभ] इस नाम का एक देव-विमान ; (उवा)। °**भद्द** पुं [°भद्र] एक देवता का नाम ; (सुज्ज १६)। °**भूय** न [°भूत] एक देव-विमान ; (उवा)। °**महाभद्द** पुं [°महाभद्र] देव-विशेष ; (सुज्ज १६)। °**महावर** पुं [°महावर] १ द्वीप-विशेष ; २ समुद्र-विशेष (इक)। °**वडिंसय** न [°ावतंसक] एक देव-विमान ; (उवा)। °**वर** पुं [°वर] १ द्वीप-विशेष ; २ समुद्र-विशेष ; (सुज्ज १६)। °**वरोभास** पुं [°वरावभास] १ द्वीप-विशेष ; २ समुद्र-विशेष; (सुज्ज १६)। °**सिट्ठ** न [°शिष्ट] एक देव-विमान ; (उवा)। °**ाभ** न [°ाभ] देव-विमान-विशेष ; (उवा)।

अरुण न [दे] कमल, पद्म ; (दे १, ८)।

अरुणिय वि [अरुणित] रक्त, लाल ; (गउड)।

अरुणुत्तरवडिंसग न [अरुणोत्तरावतंसक] इस नाम का एक देव-विमान ; (सम १४)।

अरुणोदग पुं [अरुणोदक] समुद्र-विशेष ; (सुज्ज १६)।

अरुणोदय पुं [अरुणोदय] समुद्र-विशेष ; (भग)।

अरुणोववाय पुं [अरुणोपपात] ग्रन्थ-विशेष का नाम ; (णंदि)।

अरुय वि [अरुष्] व्रण, घाव ; (सूत्र १, ३, ३)।

अरुय वि [अरुज्] नीरोगी, रोग-रहित ; (सम १ ; अजि ३१)।

अरुह देखो अरह=अर्हत् ; (हे २, १११ ; षड् ; भवि)।

अरुह वि [अरुह] १ जन्म-रहित ; २ पुं. मुक्त आत्मा ; (पव २७५ ; भग १, १)। ३ जिन-देव ; (पउम ५, १२२)।

अरुह देखो अरिह=अर्ह्। अरुहसि ; (अभि १०४)। वकृ—अरुहमाण ; (षड्)।

अरुह वि [अर्ह] योग्य ; (उत्तर ८४)।

अरुहंत देखो अरहंत=अर्हत् ; (हे २, १११ ; षड्)।

अरुहंत वि [अरोहत्] १ नहीं उगता हुआ, जन्म नहीं लेता हुआ ; (भग १, १)।

अरूव वि [अरूप] रूप-रहित, अमूर्त ; (पउम ७५, २६)।

अरूवि वि [अरूपिन्] ऊपर देखो ; (ठा ५, ३ ; आचा ; पण्ण १)।

अरे अ [अरे] १—२ संभाषण और रति-कलह का सूचक अव्यय ; (हे २, २०१ ; षड्)।

अरोअ अक [उत्+लस्] उल्लास पाना, विकसित होना। अरोअइ ; (हे ४, २०२ ; कुमा)।

अरोअअ पुं [अरोचक] रोग-विशेष, अन्न की अरुचि ; (श्रा २२)।

अरोइ वि [अरोचिन्] अरुचि वाला, रुचि-रहित, " अरोइ अत्थे कहिए विलावो " (गोय ७)।

अरोग वि [अरोग] रोग-रहित ; (भग १८, १)। °या स्त्री [°ता] आरोग्य, नीरोगता ; (उप ७२८ टी)।

अरोगि वि [अरोगिन्] नीरोग, रोग-रहित। °या स्त्री [°ता] आरोग्य, तंदुरस्ती ; (महा)।

अरोस वि [अरोष] १ गुस्सा-रहित। २—३ पुं. एक म्लेच्छ देश और उसमें रहने वाली म्लेच्छ-जाति ; (पण्ह १, १)।

अल न [अल] १ विच्छू के पुच्छ का अग्र भाग,

" अलमेव विच्छुआणं, मुहमेव अहीणं तह य मंदस्स।
दिट्ठि-विसं पिसुणाणं, सव्वं सव्वस्स भय-जणयं "
(प्रासू १६)।

२ अला-देवी का एक सिंहासन ;(णाया २)। ३ वि. समर्थ ; (आचा)। °पट्ट न [°पट्ट] विच्छू के पूंछ जैसे आकार वाला एक शस्त्र ; (विपा १, ६)।

°अल देखो तल ; (गा ७५ ; से १, ७८)।

अलं अ [अलम्] १ पर्याप्त, पूर्ण ; " अलमाणंदं जणंतीए " (सुर १३, २१)। २ प्रतिषेध, निवारण, बस ; (उप २, ७)।

अलंकर सक [अलं+कृ] भूषित करना, विराजित करना। अलंकरेंति ; (पि ५०६)। वकृ—अलंकरंत ; (माल १४३)। संकृ—अलंकरिअ ; (पि ५८१)। प्रयो, कर्म—अलंकरावीयउ ; (स ६४)।

अलंकरण न [अलङ्करण] १ आभूषण, अलंकार; (रयण ७४, भवि)। २ वि. शोभा-कारक ; " मज्झमलोअस्स अलंकरणिं सुलोअणिं " (विक्र १४)।

अलंकरिय वि [अलंकृत] सुशोभित, विभूषित, " किं नयरमलंकरियं जम्ममहेणं तए महापुरिस। " (सुपा ५८४ ; सुर ४, ११८)।

अलंकार पुं [अलंकार] १ भूषण, गहना; (औप ; राय)। २ भूषा, शोभा ; (ठा ४, ४)। °सहा स्त्री [°सभा] भूषा-गृह, शृङ्गार-घर ; (इक)।

अलंकारिय पुं [अलंकारिक] नापित, नाई, हजाम ; (णाया १, १३)। °कम्म न [°कर्मन्] हजामत, क्षौर-कर्म ; (णाया १, १३)। °सहा स्त्री [°सभा] हजामत बनाने का स्थान ; (णाया १, १३)।

अलंकिय वि [अलंकृत] १ विभूषित, सुशोभित ; (कप्प; महा)। २ न. संगीत का एक गुण ; (जीव ३)।

अलंकुण देखो अलंकर। अलंकुणंति; (रयण ५२)।

अलंघ वि [अलङ्घ्य] १ उल्लंघन करने को अयोग्य ; (सुर १, ४१)। २ उल्लंघन करने को अशक्य ; (उप ५९७ टी)।

अलंघणिय } वि [अलङ्घनीय] ऊपर देखो ; (महा ;
अलंघणीय } सुपा ६०१ ; पि ९६ ; नाट)।

अलंप [दे] कुर्कुट, मुर्गा ; (दे १, १३)।

अलंबुसा स्त्री [**अलम्बुषा**] १ एक दिक्कुमारी देवी का नाम ; (ठा ८)। २ गुल्म-विशेष ; (पाअ)।
अलंभि स्त्री [**अलाभ**] अ-प्राप्ति ; (ओघ २३ भा)।
अलका स्त्री [**अलका**] नगरी-विशेष, पहले प्रतिवासुदेव की राजधानी ; (पउम २०, २०१)। देखो **अलया**।
अलक्ख पुं [**अलक्ष**] १ इस नामका एक राजा, जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा ले कर मुक्ति पाई थी ; (अंत १८)। २ न. 'अंतगडदसा' सूत्र के एक अध्ययन का नाम ; (अंत १८)।
अलक्ख वि [**अलक्ष्य**] लक्ष्य में न आ सके ऐसा ; (सुर ३, १३६ ; महा)।
अलक्खमाण वि [**अलक्ष्यमाण**] जो पिछाना न जा सकता हो, गुप्त ; (उप ५६३ टी)।
अलक्खिय वि [**अलक्षित**] १ अज्ञातं, अपरिचित ; (से १३, ४५)। २ नहीं पिछाना हुआ ; (सुर ४, १४०)।
अलग देखो **अलयं**=अलक ; (महा)।
अलगा देखो **अलया** ; (अंत १)।
अलग्ग न [**दे**] कलंक देना, दोष का झूठा आरोप ; (दे १, ११)।
अलचपुर न [**अचलपुर**] नगर-विशेष ; (कुमा)।
अलज्ज वि [**अलज्ज**] निर्लज्ज, बेशरम ; (पणह १, ३)।
अलज्जिर वि [**अलज्जालु**] ऊपर देखो ; (गा ६०; ४४५ ; ६६१ ; महा)।
अलट्टपलट्ट न [**दे**] पार्श्व का परिवर्तन ; (दे १, ४८)।
अलत्त पुं [**अलक्त**] आलता, स्त्री-लोक हाथ-पैर को लाल करने के लिए जो रंग लगाती है वह ; (अनु ५)।
अलत्तय पुं-[**अलक्तक**] १ ऊपर देखो ; (सुपा ४०६)। २ आलता से रँगा हुआ ; (अनु)।
°अलधोय देखो **कलधोय** ; (से ६, ४६)।
अलमंजुल वि [**दे**] आलसी, सुस्त ; (दे १, ४६)।
अलमंथु वि [**अलमस्तु**] १ समर्थ; २ निषेधक, निवारक; (ठा ४, २)।
अलमल पुं [**दे**] दुर्दान्त बैल ; (दे १, २५)।
अलमलवसह पुं [**दे**] उन्मत्त बैल ; (दे १, २५)।
अलय न [**दे**] विद्रुम, प्रवाल ; (दे १, १६ ; भवि)।
अलय पुं [**अलक**] १ विच्छू का कांटा ; (विपा १, ६)। २ केश, घुंघराले बाल ; (पाअ ; से ९, ६६)।

अलया स्त्री [**अलका**] कुबेर की नगरी ; (पाअ ; पाया १, ४)। देखो **अलका**।
अलव वि [**अलप**] मौनी, नहीं बोलने वाला ; (सुअ २, ६)।
अलवलवसह पुं [**दे**] धूर्त बैल ; (षड्)।
अलस वि [**अलस**] १ आलसी, सुस्त ; (प्रासू ७)। २ मन्द, धीमा ; (पाअ)। ३ पुं. क्षुद्र कीट-विशेष, भू-नाग, वर्षा-ऋतु में साँप-सरीखा लाल रंग का जो लम्बा जन्तु उत्पन्न होता है वह ; (जी १५ ; पुप्फ २६५)।
अलस वि [**दे**] १ मधुर अवाज वाला "खं अलसं कलमंजुलं" (पाअ)। २ कुसुम्भ रंग से रँगा हुआ ; ३ न. मोम ; (दे १, ५२)।
°अलस देखो **कलस**; (से १, ६; ११, ४०; ८, ३६६)।
अलसग } पुं [**अलसक**] १ विसूचिका रोग ; (उवा)
अलसय } २ श्वयथु, सूजन ; (आचा)।
अलसाइअ वि [**अलसायित**] जिसने आलसी की तरह आचरण किया हो, मन्द; (गा ३५२)।
अलसाय अक [**अलसाय्**] आलसी होना, आलसी की तरह काम करना। अलसाअइ ; (पि ५५८)। वकृ— **अलसायंत, अलसायमाण** ; (से १४, १ ; उप ३१५ ; गच्छ १)।
अलसी देखो **अयसी** ; (आचा ; षड् ; हे २, ११)।
अला स्त्री [**अला**] १ इस नाम की एक देवी ; (ठा ६)। २ एक इन्द्राणी का नाम ; (णाया २)। **°वडिंसग** न [**°वतंसक**] अलादेवी का भवन ; (णाया २)।
°अला देखो **कला** ; (गा ६५७)।
अलाउ न [**अलाबु**] तुम्बी-फल, तुम्बा ; (औप ; प्रासू १५१)।
अलाऊ } स्त्री [**अलाबू**] तुम्बी-लता ; (कुमा ; षड्)
अलाबू }
अलाय न [**अलात**] १ उल्मुक, जलता हुआ काष्ठ ; (दे १, १०७ ; ओघ २१ भा)। २ अङ्गार, कोयला ; (से ३, ३४)।
अलाबु देखो **अलाउ** ; (जं ३)।
अलाबू देखो **अलाऊ** ; (पि १४१; २०१)।
अलाह पुं [**अलाभ**] नुकसान, गैरलाभ; "ववहरमाणाणं पुणो होइ लाहो अलाहो वा" (सुपा ४४६)।

अलाहि देखो अलं ; (उव ७२८ टी; हे २, १८९ ; गाया १, १ ; गा १२७)।
अलि पुं [अलि] भ्रमर ; (कुमा)। °उल न [°कुल] भ्रमरों का समूह ; (हे ४, २५३)। °विरुय न [°विरुत] भ्रमर का गुञ्जारव ; (पाअ)।
अलिअल्ली स्त्री [दे] १ कस्तूरी ; २ व्याघ्र, शेर ; (दे १, ५६)।
अलिआ स्त्री [दे] सखी ; (दे १, १६)।
अलिआर न [दे] दूध ; (दे १, २३)।
अलिंजर न [अलिञ्जर] १ घड़ा, कुम्भ ; (ठा ४, २)। २ कुण्ड, पात्र-विशेष ; (दे १, ३७)।
अलिंजरअ पुं [अलिञ्जरक] १ घड़ा ; (उवा)। २ रंगने का कुंडा, रंग-पात्र ; (पाअ)।
अलिंद न [अलिन्द] पात्र-विशेष, एक प्रकार का जल-पात्र; (ओघ ४७६)।
अलिंदग पुं [अलिन्दक] १ द्वार का प्रकोष्ठ ; (स ४७६)। २ घर के वाहर के दरवाजे का चौक ; ३ वाहर का अग्र-भाग ; (वृह २ ; राज)।
अलिण पुं [दे] वृश्चिक, विच्छू ; (दे १, ११)।
अलिणी स्त्री [अलिनी] भ्रमरी ; (कुमा)।
अलित्त न [अरित्र] नौका खेवने का डाँड़, चप्पू ; (आचा २, ३ १)।
अलिय न [अलिक] कपाल ; (पाअ)।
अलिय न [अलीक] १ मृषावाद, असत्य वचन ; (पाअ)। २ वि. झूठा, खोटा, " अलिअपंरुसालाव—" (पाअ)। ३ निष्फल, निरर्थक ; (पण्ह १, २)। °वाइ वि [°वादिन्] मृषावादी ; (पउम ११, २७; महा)।
अलिल्ल सक [कथय्] कहना, वोलना। अलिल्लइ ; (पिंग)।
अलिल्लह न [दे] १ छन्द-विशेष का नाम ; २ वि. अप्र-योजक , नियम-रहित ; (पिंग)।
अलिल्ला स्त्री [अलिल्ला] इस नाम का एक छन्द ; (पिंग)।
अलीग } अलीय } देखो अलिय=अलीक; (सुर ४ २२३ ; सुपा ३०० ; महा)।
अलीवहू स्त्री [अलिवधू] भमरी ; (कुमा)।
अलीसअ पुं [दे] शाक-वृत्त, साग का पेड़ ; (दे १, २७)।

अलुक्खि वि [अरूक्षिन्] कोमल ; (भग ११, ४)।
अलेसि वि [अलेश्यिन्] १ लेश्या-रहित ; २ पुं. मुक्त आत्मा ; (ठा ३, ४)।
अलोग पुं [अलोक] जीव-पुद्गल आदि रहित आकाश ; (भग)।
अलोणिय वि [अलवणिक) लूण-रहित, नमक-शून्य, " नय अलोणियं सिलं कोइ चट्टेइ " (महा)।
अलोय देखो अलोग ; (सम १)।
अलोभ पुं [अलोभ] १ लोभ का अभाव, संतोष। २ वि. लोभ-रहित, संतोषी ; (भग; उव)।
अलोल वि [अलोल] अ-लम्पट, निर्लोभ ; (दस १० ; पि ८५)।
अलोह देखो अलोभ ; (कप्प)।
अल्ल न [दे] दिन, दिवस ; (दे १, ५)।
अल्ल देखो अद्द ; (हे १, ८२)।
अल्ल अक [नम्] नमना, नीचे झुकना। ओअल्लंति ; (से ६, ४३)।
अल्लई स्त्री [आर्द्रकी] लता-विशेष, आर्द्रक-लता ; (पगण १७)।
अल्लग देखो अल्लय=आर्द्रक ; (धर्म २)।
अल्लत्थ सक [उत्+क्षिप्] ऊंचा फेंकना। अल्लत्थइ ; (हे ४, १४४)।
अल्लत्थ न [दे] १ जलार्द्रा, गिला पंखा ; २ केयूर, भूषण-विशेष ; (दे १, ५४)।
अल्लत्थिअ वि [उत्क्षिप्त] ऊंचा फेंका हुआ ; (कुमा)।
अल्लय न [आर्द्रक] आदा ; (जी ६)। °तिय न [°त्रिक] आदा, हल्दी और कचूरा ; (जी ६)।
अल्लय वि [दे] परिचित, ज्ञात ; (दे १, १२)।
अल्लय पुं [अल्लक] इस नाम का एक विख्यात जैन मुनि और ग्रन्थकार, उद्द्योतनसूरि का उपाध्याय-अवस्था का नाम; (सुर १६, २३९)।
अल्लल्ल पुं [दे] मयूर, मोर ; (दे १, १३)।
अल्लविय [अप] देखो आलत्त=आलपित ; (भवि)।
अल्ला स्त्री [दे] माता, माँ ; (दे १, ५)।
अल्लि } अल्लिअ } देखो अल्ली। अल्लिइ ; (षड्)। अल्लिअइ ; (दे १, ५८ ; हे ४, ५४)। वकृ—अल्लिअंत ; (से १२, ७१ ; पउम १२, ५१)।

अल्लिअ सक [उप+सृप्] समीप में जाना। अल्लिअइ; (हे ४, १३९)। वकृ—**अल्लिअंत**; (कुमा)। प्रया—अल्लियावेइ; (पि ४८२; ५५१)।

अल्लिअ वि [आर्द्रित] गिला किया हुआ; (गा ४४०)।

अल्लियावण न [आलायन] आलीन करना, श्लिष्ट करना, मिलान; (भग ८, ९)।

अल्लिल्ल पुं [दे] भमरा; (षड्)।

अल्लिव सक [अर्पय्] अर्पण करना। अल्लिवइ; (हे ४ ३९; भवि; पि १९६; ४८५)।

अल्ली } सक [आ+ली] १ आना। २ प्रवेश
अल्लीअ } करना। ३ जोड़ना। ४ आश्रय करना। ५ आलिंगन करना। ६ अक. संगत होना। अल्लीअइ; (हे ४, ५४)। भूका—अल्लीसी; (प्रामा)। हेकृ—**अल्लीउं** (बृह ६)।

अल्लीण वि [आलीन] १ आश्लिष्ट; २ आगत; ३ प्रविष्ट; ४ संगत; ५ योजित; ६ थोड़ा लीन; (हे ४, ५४)। ७ आश्रित; (कप्प)। ८ तल्लीन, तत्पर; (वव १०)।

अल्लेस वि [अलेश्य] लेश्या-रहित; (कम्म ४, ५०)।

अल्हाद पुं [आह्लाद] खुशी, प्रमोद, आनन्द; (प्राप्र)।

अव अ [अप] इन अर्थों का सूचक अव्यय;—१ विपरीतता, उल्टापन; जैसे—'अवकय, अवंगुय'। २ वापिसी, पीछेपन; जैसे—'अवक्कमइ'। ३ बुरापन, खराबपन; जैसे—'अवमग्ग, अवसद्द'। ४ न्यूनता, कमो; जैसे—'अवड्ढ'। ५ रहितपन, वियोग; जैसे—'अवयाण'। ६ बाहरपन; जैसे—'अवक्कमण'।

अव अ [अव] निम्न-लिखित अर्थों का सूचक अव्यय; १ निम्नता; जैसे—'अवइण्ण'। २ पीछेपन; जैसे—'अवचुल्ली'। ३ तिरस्कार; अनादर; जैसे—'अवगणंत' ४ खराबी, बुराई; जैसे—'अवगुण'। ५ गमन; ६ अनुभव; (राज)। ७ हानि, ह्रास; जैसे—'अवक्कास'। ८ अभाव; जैसे—'अवलद्धि'। ९ मर्यादा; (विसे ८२)। १० निरर्थक भी इसका प्रयोग होता है; जैसे—'अवपुट्ठ, अवगल्ल'।

अव सक [अव्] १ रक्षण करना;—"अवंतु मुणिणो य पयकमलं" (रयण ६)। २ जाना, गमन करना; ३ इच्छा करना; ४ जानना; ५ प्रवेश करना; ६ सुनना; ७ माँगना, याचना; ८ करना, बनाना; ९ चाहना; १० प्राप्त करना; ११ आलिङ्गन; १२ मारना, हिंसा करना; १३ जलाना; १४ अक. प्रीति करना; १५ तृप्त होना; १६ प्रकाशना; १७ बढ़ना। अव; (श्रा २३; विसे २०१)।

अव पुं [अव] शब्द, अवाज; (श्रा २३)।

अवअक्ख सक [दृश्] देखना। अवअक्खइ; (हे ४, १८१; कुमा)।

अवअक्खिअ न [दे] निवापित मुख, मुंडाया हुआ मुँह; (दे १, ४०)।

अवअच्छ न [दे] कक्षा-वस्त्र; (दे १, २६)।

अवअच्छ अक [ह्लाद्] आनन्द पाना, खुश होना। अवअच्छइ; (हे ४, १२२)।

अवअच्छ सक [ह्लादय्] खुश करना। अवअच्छइ; (हे ४, १२२)।

अवअच्छिअ [दे] देखो **अवअक्खिअ**; (दे १, ४०)।

अवअच्छिअ वि [ह्लादित] १ हृष्ट, आह्लाद-प्राप्त। २ खुश किया हुआ, हर्षित; (कुमा)।

अवअज्झ सक [दृश्] देखना। अवअज्झइ; (षड्)।

अवअणिअ वि [दे] असंघटित, असंयुक्त; (दे १, ४३)।

अवअण्ण पुं [दे] ऊखल, गूगल; (दे १, २६)।

अवअत्त वि [अपवृत्त] स्खलित; (से १०, १८)।

अवआस सक [दृश्] देखना। अवआसइ; (हे ४, १८१; कुमा)।

अवइ वि [अव्रतिन्] व्रत-शून्य, अ-विरत, असंयत; (बृह १)।

अवइण्ण वि [अवतीर्ण] १ उतरा हुआ, नीचे आया हुआ। २ जन्मा हुआ; (कप्पू; पउम ७९, २८)।

अवइद (शौ) वि [अवचित] एकत्रित, इकट्ठा किया हुआ; (अभि ११७)।

अवइद (शौ) वि [अपकृत] १ जिसका अहित किया गया हो वह। २ न. अपकार, अ-हित; (चारु ४०)।

अवइन्न देखो **अवइण्ण**; (सुर ३, १२२)।

अवउज्ज सक [अवकुब्ज्] नीचे नमना। संकृ—**अवउज्जिय**; (आचा २, १, ७)।

अवउज्झ सक [अप+उज्झ्] परित्याग करना; छोड़ देना। संकृ—**अवउज्झिऊण**; (बृह ३)।

अवउडग } देखो **अवओडग**; (णाया १, २; अनु)।
अवउडय }

अवउंठण न [अवगुण्ठन] १ ढकना । २ मुँह ढकने का वस्त्र, घूँघट ; (चारु ७०) ।

अवऊढ वि [अवगूढ] आलिंगित ; " संभावहूअवऊढो णववारिहरोव्व विज्जुलापडिभिन्नो " (हे २, ६ ; स ४६६)।

अवऊसण न [अपवसन] तपश्चर्या-विशेष ; (पंचा १६)।

अवऊसण न [अपजोषण] ऊपर देखो ; (पंचा १६)।

अवऊहण न [अवगूहन] आलिङ्गन ; (गा ३३४ ; ५५६ ; वज्जा ७४) ।

अवएड पुं [अवएज] तापिका-हस्त, पात्र-विशेष ; (णाया १, १ टी—पत्र ४३) ।

अवएस पुं [अपदेश] बहाना, छल ; (पाअ) ।

अवओडग न [अवकोटक] गले को मरोड़ना, कृकाटिका को नीचे ले जाना ; (विपा १, २) । °बंधण न [°बन्धन] १ हाथ और सिर को पृष्ठ भाग से बाँधना ; (पण्ह १, २) । २ वि. रस्सी से गला और हाथ को मोड़ कर पृष्ठ भाग के साथ जिसको बांधा जाय वह ; (विपा १, २) ।

अवंग पुं [अपाङ्ग] नेत्र का प्रान्त भाग ; (सुर ३,१२४; ११, ६१) ।

अवंग पुं [दे] कटाक्ष ; (दे १, १५) ।

अवंगु } वि [दे. अपावृत] नहीं ढ़का हुआ, खुला ;
अवंगुय } (औप ; पण्ह २, ४) ।

अवंचिअ वि [अवञ्चित] अधोमुख, अवाङ्मुख ; (वज्जा १०) ।

अवंचिअ वि [अवञ्चित] नहीं ठगा हुआ ; (वज्जा १०)।

अवंझ वि [अवन्ध्य] सफल, अचूक ; (सुपा ३२५) । °पवाय न [°प्रवाद] ग्यारहवाँ पूर्व, जैन ग्रन्थांश-विशेष ; (सम २६) ।

अवंतर वि [अवान्तर] भीतरी, बीचका ; (आवम) ।

अवंति } स्त्री [अवन्ति °न्ती] १ मालव देश ; २ मालव
अवंती } देश की राजधानी, जो आजकल राजपूताना में 'उज्जैन' नाम से प्रसिद्ध है ; (महा ; सुपा ३६६ ; आवम)। °गंगा स्त्री [°गङ्गा] आजीविक मत में प्रसिद्ध काल-विशेष ; (भग २४, १) । °वड्ढण पुं [°वर्धन] इस नाम का एक राजा , (आव ४) । °सुकुमाल पुं [°सुकुमाल] एक श्रेष्ठि-पुत्र जो आर्यसुहस्ति आचार्य के पास दीक्षा ले कर देव-लोक के नलिनीगुल्म विमान में उत्पन्न हुआ है ; (पडि)। °सेण पुं [°षेण] एक राजा ; (आक)।

अवंदिम वि [अवन्द्य] वन्दन करने को अयोग्य, प्रणाम के अयोग्य ; (दसचू १) ।

अवकंख सक [अव+काङ्क्ष्] १ चाहना । २ देखना । अवकंखइ ; (भग) । वकृ—अवकंखमाण ; (णाया १, ६) ।

अवकंत देखो अवक्कंत ; " कुमरोवि सत्थराओ उट्ठेत्ता सयणियमवकंतो " (महा) ।

अवकय वि [अपकृत] १ जिसका अपकार किया गया हो वह ; (उव) । २ अपकार, अहित ; (सुपा ६४१) ।

अवकर सक [अप+कृ] अहित करना । अवकरेंति ; (सूअ १, ४, १, २३) ।

अवकरिस पुं [अपकर्ष] अपकर्ष, ह्रास, हानि ; (सम ६०) ।

अवकलुसिय वि [अपकलुषित] मलिन ; (गउड) ।

अवकस सक [अव+ [illegible]] त्याग करना । संकृ— अवकसित्ता ; (चउ १४) ।

अवकारि वि [अपकारिन्] अहित करने वाला ; (पउम ६, ८५) ।

अवकिण्ण वि [अवकीर्ण] परित्यक्त ; (दे १, १३०) ।

अवकिण्णग } पुं [अपकीर्णक] करकण्डू-नामक एक
अवकिण्णय } जैन महर्षि का पूर्व नाम ; (महा) ।

अवकित्ति स्त्री [अपकीर्त्ति] अपयश ; (दे १, ६०) ।

अवकीरण न [अवकरण] छोड़ना, त्याग, उत्सर्ग ; (आव ५) ।

अवकीरिअ वि [दे] विरहित, वियुक्त ; (दे १, ३८) ।

अवकीरियव्व वि [अवकरितव्य] त्याज्य, छोड़ने लायक ; (पण्ह १, ५) ।

अवकूजिय न [अवकूजित] हाथ को ऊंचा-नीचा करना ; (निचू १७) ।

अवकेसि पुं [अवकेशिन्] फल-वन्ध्य वनस्पति ; (उर २, ८) ।

अवकोडक देखो अवओडग ; (पण्ह १, १) ।

अवक्कंत वि [अपक्रान्त] १ पीछे हटा हुआ, वापस लौटा हुआ ; (सुपा २६२ ; उप १३४ टी ; महा) । २ निकृष्ट, जघन्य ; (ठा ६) ।

अवक्कंति स्त्री [अपक्रान्ति] १ अपसरण ; २ निर्गमन ; (णाया १, ८) ।

अवक्कंति स्त्री [अवक्रान्ति] गमन, गति ; (आचा) ।

अवक्कम अक [अप+क्रम्] १ पीछे हटना। २ बाहर निकलना। अवक्कमइ; (महा, कप्प)। वकृ—**अवक्कममाण**; (विपा १, ६)। संकृ—**अवक्कमइत्ता, अवक्कम्म**; (कप्प, वव १)।
अवक्कम सक [अव+क्रम्] जाना। अवक्कमइ; (भग)। संकृ—**अवक्कमित्ता**; (भग)।
अवक्कमण न [अपक्रमण] १ बाहर निकलना; (ठा ५, २)। २ पलायन, भागना; "निग्गमणमवक्कमणं निस्सरणं पलायणं च एगट्ठा" (वव १०)। ३ पीछे हटना; (णाया १, १)।
अवक्कय पुं [अवक्रय] भाड़ा, भाटि; (बृह १)।
अवक्करस पुं [दे] दारु, मद्य; (दे १, ४६; पाअ)।
अवक्करिस } [अपकर्ष] हानि, अपचय; (विसे १७६६; **अवक्कास** } भग १२, ५)।
अवक्कास पुं [अवकर्ष] ऊपर देखो; (भग १२, ५)।
अवक्कास पुं [अप्रकाश] अन्धकार, अँधेरा; (भग १२, ५)।
अवक्कोस पुं [अवक्रोश] मान, अहंकार; (सम ७१)।
अवक्ख सक [दृश्] देखना। अवक्खइ; (षड्)। अवक्खए; (भवि)। वकृ—**अवक्खंत**; (कुमा)।
अवक्खंद पुं [अवस्कन्द] १ शिविर, छावनी, सैन्य का पड़ाव; २ नगर का रिपु-सैन्य द्वारा वेष्टन, घेरा; (हे २, ४; स ४१२)।
अवक्खारण न [अपक्षारण] १ निर्भर्त्सना, कठोर वचन; २ सहानुभूति का अभाव; (पण्ह १, २)।
अवक्खेव पुं [अवक्षेप] विघ्न, बाधा; (विपा १, ६)।
अवक्खेवण न [अवक्षेपण] १ बाधा; अन्तराय; २ क्रिया-विशेष, नीचे जाना; (आवम; विसे २४६२)।
अवखेर सक [दे] १ खिन्न करना। २ तिरस्कार करना। अवखेरइ; (भवि)। वकृ—**अवखेरंत**; (भवि)।
अवगइ स्त्री [अपगति] १ खराब गति; २ गोपनीय स्थान; (सुपा ३४५)।
अवगंड न [अवगण्ड] १ सुवर्ण; २ पानी का फेन; (सूअ १, ६)।
अवगंतव्व देखो **अवगम**=अवगम्।
अवगच्छ सक [अव+गम्] जानना। अवगच्छइ; (महा)। अवगच्छे; (स १५२)।
अवगच्छ अक [अप+गम्] दूर होना; निकल जाना। अवगच्छइ; (महा)।
अवगण } सक [अव+गणय्] अनादर करना, तिरस्कार करना। **अवगण्ण** } वकृ—**अवगणंत**; (श्रा २७)। संकृ—**अवगण्णिय**; (आरा १०५)।
अवगणणा स्त्री [अवगणना] अवज्ञा, अनादर; (... १, २७)।
अवगणिय } वि [अवगणित] अवज्ञात, तिरस्कृत; **अवगण्णिय** } (दे; जीव १)।
अवगद वि [दे] विस्तीर्ण, विशाल; (दे १, ३०)।
अवगन्न देखो **अवगण**। अवगन्नइ; (भवि)। संकृ—**अवगन्निवि**; (भवि)।
अवगन्निय देखो **अवगण्णिय**; (सुपा ४२१; भवि)।
अवगम पुं [अपगम] १ अपसरण; (सुपा ३०२)। २ विनाश; (स १५३, विसे ११८२)।
अवगम सक [अव+गम्] १ जानना, २ निर्णय करना। संकृ—**अवगमित्तु**; (सार्ध ६३)। कृ—**अवगंतव्व**; (स ५२६)।
अवगम पुं [अवगम] १ ज्ञान; २ निर्णय, निश्चय; (विसे १८०)।
अवगमण न [अवगमन] ऊपर देखो; (स ६७०, विसे १८६; ४०१)।
अवगमिअ } वि [अवगत] १ ज्ञात, विदित; (सुपा **अवगय** } २१८)। २ निश्चित, अवधारित; (दे ३, २३; स १४०)।
अवगय वि [अपगत] गुजरा हुआ, विनष्ट; (णाया १, १; दस १०, १६)।
अवगर सक [अप+कृ] अपकार करना, अहित करना। अवगरेइ; (स ६३६)।
अवगरिस देखो **अवक्करिस**; (विसे १५८३)।
अवगल वि [दे] आक्रान्त; (षड्)।
अवगल्ल वि [अवग्लान] बिमार; (ठा २, ४)।
अवगाढ देखो **ओगाढ**; (ठा १; भग; स १७२)।
अवगाढु वि [अवगाहितृ] अवगाहन करने वाला; (विसे २८२२)।
अवगार पुं [अपकार] अपकार, अहित-करण; (... २, ४३)।

अवगास पुं [अवकाश] १ फुरसद ; (महा) । २ जगह, स्थान ; (आवम) । ३ अवस्थान, अवस्थिति ; (ठा ४, ३) ।
अवगाह सक [अव+गाह्] अवगाहन करना । अवगाहइ ; (सण) ।
अवगाह पुं [अवगाह] १ अवगाहन ; २ अवकाश ; (उत्त २८) ।
अवगाहण न [अवगाहन] अवगाहन " तित्थावगाहणत्थं आगंतव्वं तए तत्थ " (सुपा ५६३) ।
अवगाहणा देखो ओगाहणा ; (ठा ४, ३ ; विसे २०८८) ।
अवगिंचण न [दे. अववेचन] पृथक्करण ; (उप पृ ६६) ।
अवगिज्झ देखो ओगिज्झ । संकृ—अवगिज्झिय ; (कप्प) ।
अवगीय वि [अवगीत] निन्दित ; (उप पृ १८१) ।
अवगुंठण देखो अवउंठण ; (दे १, ६) ।
अवगुंठिय वि [अवगुण्ठित] आच्छादित ; (महा) ।
अवगुण पुं [अवगुण] दुर्गुण, दोष ; (हे ४, ३६५) ।
अवगुण सक [अव + गुणय्] खोलना, उद्घाटन करना । अवगुरणेज्जा ; (आचा २, २, २, ४) । वकृ—अवगुणंत ; (भग १५) ।
अवगूढ वि [अवगूढ] १ आलिंगित ; (हे २, १६८) । २ व्याप्त ; (णाया १, ८) ।
अवगूढ न [दे] व्यलीक, अपराध ; (दे १, २०) ।
अवगूहण न [अवगूहन] आलिंगन ; (सुर १४, २२० ; पउम ७४, २४) ।
अवग्ग वि [अव्यक्त] १ अस्पष्ट । २ पुं. अगीतार्थ, शास्त्रानभिज्ञ साधु ; (उप ८७४) ।
अवग्गह देखो उग्गह ; (पव ३०) ।
अवग्गहण न [अवग्रहण] देखो उग्गह ; (विसे १८०) ।
अवच देखो अवय=अवच ; (भग) ।
अवचइय वि [अपचयिक] अपकर्ष-प्राप्त, ह्रास वाला ; (आचा) ।
अवचय पुं [अपचय] ह्रास, अपकर्ष ; (भग ११, ११ ; स २८२) ।
अवचय पुं [अवचय] इकट्ठा करना ; (कुमा) ।
अवचयण न [अवचयन] ऊपर देखो ; (दे ३, ५६) ।
अवचि अक [अप + चि] हीन होना, कम जाना । अवचिज्जइ ; (भग) । अवचिज्जंति ; (भग २५, २) ।
अवचि } सक [अव+चि] इकट्ठा करना (फूल आदि
अवचिण } को वृत्त से तोड़ कर) । अवचिणइ ; (नाट) । भवि—अवचिणिस्सं ; (पि ५३१) । हेकृ—अवचिणेदुं (शौ) ; (पि ५०२) ।
अवचिय वि [अपचित] हीन, ह्रास-प्राप्त ; (विसे ८६७) ।
अवचिय वि [अवचित] इकट्ठा किया हुआ ; (पाअ) ।
अवचुण्णिय वि [अवचूर्णित] तोड़ा हुआ, चूर २ किया हुआ ; (महा) ।
अवचुल्ली स्त्री [अवचुल्ली] चूल्हे का पीछला भाग ; (पिंड) ।
अवचूल देखो ओऊल ; (णाया १, १६—पत्र २१६) ।
अवच्च न [अपत्य] संतान, बच्चा ; (कप्प ; आव १ ; प्रासू ८३) । °व वि [°वत्] संतान वाला ; (सुपा १०६) ।
अवच्चीय वि [अपत्यीय] संतानीय, संतान-संबन्धी ; (ठा ६) ।
अवच्छुण्ण न [दे] क्रोध से कहा जाता मार्मिक वचन ; (दे १, ३६) ।
अवच्छेय पुं [अवच्छेद] विभाग, अंश ; (ठा ३, ३) ।
अवछंद वि [अपच्छन्दस्क] छन्द के लक्षण से रहित, छन्दो-दोष-दुष्ट ; (पिंग) ।
अवजस पुं [अपयशस्] अपकीर्ति ; (उप पृ १८७) ।
अवजाण सक [अप+ज्ञा] १ अपलाप करना । " बालस्स मंदयं बीयं जं च कडं अवजाणई भुज्जो " (सूअ १, ४, १, २६) ।
अवजाय पुं [अपजात] पिता की अपेक्षा से हीन वैभव वाला पुत्र ; (ठा ४, १) ।
अवजीव वि [अपजीव] जीव-रहित, मृत, अ-चेतन ; (गउड) ।
अवज्जुय वि [अवयुत] पृथग्भूत, भिन्न ; (वव ७) ।
अवज्ज न [अवद्य] १ पाप ; (पण्ह २, ४) । २ वि. निन्दनीय ; (सूअ १, १, २) ।
अवज्जस सक [गम्] जाना, गमन करना । अवज्जसइ ; (हे ४, १६२) । वकृ—अवज्जसंत ; (कुमा) ।

अवज्ञा स्त्री [अवज्ञा] अनादर ; (स ६०४)।
अवज्झ वि [अवध्य] मारने के अयोग्य ; (गाया १, १६)।
अवज्झस न [दे] १ कटी, कमर ; २ वि. कठिन ; (दे १, ५६)।
अवज्झा स्त्री [अवध्या] १ अयोध्या नगरी ; (इक)। २ विदेह-वर्ष की एक नगरी ; (ठा २, ३)।
अवज्झाण न [अपध्यान] बुरा चिन्तन, दुर्ध्यान ; (सुपा ५४९ ; उप ४६६ ; सम ५० ; विसे ३०१३)।
अवज्झाय वि [अपध्यात] १ दुर्ध्यान का विषय ; २ अवज्ञात, तिरस्कृत ; (गाया १, १४)।
अवज्झाय (अप) देखो उवज्झाय ; (दे १, ३७)।
अवट्ट सक [अप+वृत्] घुमाना, फिराना। "अवट्ट अवट्ट ति वाहरंते कएणहारे रज्जुपरिवत्तणुज्जएसुं निज्जामएसुं अयंडम्मि चेव गिरिसिहरनिवडियं पिव विवन्नं जाणवत्तं" (स ३५५)।
अवट्टा स्त्री [आवर्त्ता] राज-मार्ग से बाहर की जगह ; (उप ९९१)।
अवट्ठंभ पुं [अवष्टम्भ] अवलम्बन, आश्रय ; (पउम २९, २७ ; स ३३१)।
अवट्ठव सक [अव+स्तम्भ्] अवलम्बन करना, सहारा लेना। संकृ—अवट्ठविअ ; (विक ९४)।
अवट्ठद्ध वि [अवष्टब्ध] १ अवलम्बित। २ आक्रान्त, "अवठ्ठद्धा महाविसाएणं" (स ५८४)।
अवट्ठाण न [अवस्थान] १ अवस्थिति, अवस्था। २ व्यवस्था ; (वृह ५)।
अवट्ठिअ वि [अवस्थित] १ स्थिर रहा हुआ ; (भग)। २ नित्य, शाश्वत ; (ठा ३, ३)। ३ जो बढ़ता-घटता न हो ; (जीव ३)।
अवट्ठिइ स्त्री [अवस्थिति] अवस्थान ; (ठा ३, ४ ; विसे ७५८)।
अवठंभ सक [अव+स्तम्भ्] अवलम्बन करना। संकृ—
"घाएण मओ, सद्देण मई, चोज्जेण वाहवहुयावि।
अवठंभिऊण धणुहं वाहेणावि मुक्किया पाणा"
(वज्जा ४६)।
अवठंभ पुं [दे] ताम्बूल, पान ; (दे १, ३६)।
अवड पुं [अवट] कूप, कुँआ ; (गउड)।
अवड } पुं [दे] १ कूप, कुँआ ; २ आराम, बगीचा
अवडअ } (दे १, ५३)।
अवडअ पुं [दे] १ चञ्चा, तृण-पुरुष ; (दे १, २०)।
अवडंक पुं [अवटङ्क] प्रसिद्धि, ख्याति, "जणकयावडंकेण निग्घिणसम्मो णाम" (महा)।
अवडक्किअ वि [दे] कूप आदि में गिर कर मरा हुआ, जिसने आत्म-हत्या की हो वह ; (दे १, ४७)।
अवडाह सक [उत्+क्रुश्] ऊंचे स्वर से रुदन करना। अवडाहेमि ; (दे १, ४७)।
अवडाहिअ न [दे] १ ऊंचे स्वर से रोदन ; (दे १, ४७)। २ वि. उत्कृष्ट ; (षड्)।
अवडिअ वि [दे] खिन्न, परिश्रान्त ; (दे १, २१)।
अवडु पुं [अवटु] कृकाटिका, घंडी, कण्ठ-मणि (पाअ)।
अवडुअ पुं [दे] उदूखल, उलूखल ; (दे १, २६)।
अवडुल्लिअ वि [दे] कूप आदि में गिरा हुआ (षड्)।
अवड्ढ वि [अपार्ध] १ आधा ; (सुज्ज १०)। २ आधा दिन "अवड्ढं पच्चक्खाइ" (पडि ; भग ११, ३)। ३ आधे से कम ; (भग ७, १ ; नव ४१)
°क्खेत्त न [°क्षेत्र] १ नक्षत्र-विशेष ; (चंद १०) २ मुहूर्त-विशेष ; (ठा ६)।
अवण पुं [दे] १ पानी का प्रवाह ; २ घर का फलहक (दे १, ५५)।
अवण न [अवन] १ गमन ; २ अनुभव ; (धाँद ; ८३)।
अवणद्ध वि [अवनद्ध] १ संबद्ध, जोड़ा हुआ ; (२, ७)। २ आच्छादित ; (भग)।
अवणम अक [अव+नम्] नीचे नमना। वकृ—अवणमंत ; (राय)।
अवणमिय वि [अवनत] अवनत ; (सुपा ४२९)।
अवणमिय वि [अवनमित] नीचे किया हुआ, नमाया हुआ ; (सुर २, ४१)।
अवणय वि [अवनत] नमा हुआ ; (दस ५)।
अवणय पुं [अपनय] १ अपनयन, हटाना, (८)। २ निन्दा ; (पव १४३ ; विसे १४०३ टी)।
अवणयण न [अपनयन] हटाना, दूर करना ; (११ ; स ४८३ ; उप ४६६)।

अवणि स्त्री [**अवनि**] पृथिवी, भूमि; (उप ३३६ टी) ।
अवणिंत देखो **अवणी**=अप+नी ।
अवणिंद पुं [**अवनीन्द्र**] राजा, भूप ; (भवि) ।
अवणिय देखो **अवणीय** ; " तं कुणसु चित्तनिवसणमवणिय-नीसेसदोसमलं " (विवे १३८) ।
अवणी देखो **अवणि**; (सुपा ३१०) । °सर पुं [°श्वर] राजा, भूमि-पति ; (भवि) ।
अवणी सक [**अप+नी**] दूर करना, हटाना । अवणेइ, अवणेमि ; (महा) । वकृ—**अवणिंत, अवणेंत** ; (निचू १ ; सुर २, ८) । कवकृ—**अवणेज्जंत** ; (उप १४६ टी) । कृ—**अवणेअ** ; (द्र ३७) ।
अवणीय वि [**अपनीत**] दूर किया हुआ ; (सुपा ५४) ।
अवणेंत देखो **अवणी**=अप+नी ।
अवणोय पुं [**अपनोद**] अपनयन, हटाना ; (विसे ६८२) ।
अवणोयण न [**अपनोदन**] अपनयन ; दूरीकरण ; (स ६३१) ।
अवण्ण वि [**अवर्ण**] १ वर्ण-रहित, रूप-रहित; (भग) । २ पुं. निन्दा ; (पंचव ४) । ३ अपकीर्ति ; (ओघ १८४ भा) । °व वि [°वत्] निन्दक " तेसिं अवण्णवं वाले महामोहं पकुव्वइ " (सम ५१) । °वाय पुं [°वाद] निन्दा ; (द्र २६) ।
अवण्ण न [**दे**] अवज्ञा, निरादर ; (दे १, १७) ।
अवण्णा स्त्री [**अवज्ञा**] निरादर, तिरस्कार ; (औप) ।
अवण्हअ पुं [**अपह्नव**] अपलाप ; (षड्) ।
अवण्हवण न [**अपह्नवन**] अपलाप ; (आचा) ।
अवण्हाण न [**अवस्नान**] साबु आदि से स्नान करना ; (गाया १, १३ ; विपा १, १)
अवतंस देखो **अवयंस**=अवतंस ; (कुमा) ।
अवतंसिय वि [**अवतंसित**] विभूषित ; (कुमा) ।
अवतट्ठ वि [**अवतष्ट**] तनूकृत, छिला हुआ; (सूअ १, ५,२)।
अवतट्ठि देखो **अवयट्ठि**=अवतष्टि ; (सूअ १, ७) ।
अवतारण न [**अवतारण**] १ उतारना ; २ योजना करना; (विसे ६४०) ।
अवतित्थ न [**अपतीर्थ**] कुत्सित घाट, खराब किनारा ; (सुपा १५) ।
अवत्त वि [**अव्यक्त**] १ अ-स्पष्ट ; (विसे) । २ कम उमर वाला ; (बृह १) । ३ अ-संस्कृत ; (गच्छ १) । ४ पुं. देखो **अवग्ग** ; (निचू २)
अवत्त वि [**अवात**] पवन-रहित ; (गच्छ १) ।
अवत्त वि [**अवाप्त**] प्राप्त, लब्ध ।
अवत्त न [**अवत्र**] आसन-विशेष ; (निचू १) ।
अवत्तय वि [**दे**] विसंस्थुल, अव्यवस्थित ; (दे १, ३४)।
अवत्तव्व वि [**अवक्तव्य**] १ वचन से कहने को अशक्य, अनिर्वचनीय ; २ सप्त-भंगी का चतुर्थ भंग ; "अत्थंतरभूएहि अ नियएहिं दोहिं समयमाईहिं । वयणविसेसाईअं दव्वमवत्तयं पडइ " (सम्म ३६) ।
अवत्तिय न [**अव्यक्तिक**] १ एक जैनाभास मत, निह्नव-प्रचालित एक मत; २ वि. इस मत का अनुयायी; (ठा ७)।
अवत्थंतर न [**अवस्थान्तर**] जुदी दशा, भिन्न अवस्था ; (सुर ३, २०६) ।
अवत्थग वि [**अपार्थक**] १ निरर्थक, व्यर्थ ; २ अ-संबद्ध अर्थ वाला (सूत्र वगैरः); (विसे) ।
अवत्थद्ध वि [**अवष्टब्ध**] अवलम्बन-प्राप्त, जिसको सहारा मिला हो वह ; (गाया १, १८) ।
अवत्थय वि [**अपार्थक**] निरर्थक ; (विसे ६६६ टी) ।
अवत्थरा स्त्री [**दे**] पाद-प्रहार, लात मारना ; (दे १, २२) ।
अवत्था स्त्री [**अवस्था**] दशा, अवस्थिति ; (ठा ८, कुमा) ।
अवत्थाण न [**अवस्थान**] अवस्थिति ; (ठा ४, १ ; स ६२७ ; महा ; सुर १, २)।
अवत्थाव सक [**अव+स्थापय्**] १ स्थिर करना, ठहराना । २ व्यवस्थित करना । हेकृ—**अवत्थाविदुं ; अवत्था-वइदुं** (शौ); (पि ५७३ ; नाट) ।
अवत्थाविद (शौ) वि [**अवस्थापित**] अवस्थित किया हुआ ; (नाट) ।
अवत्थिय देखो **अवट्ठिय** ; (महा ; स २७४) ।
अवत्थिय वि [**अवस्तृत**] फैलाया हुआ, प्रसारित ; (गाया १, ८) ।
अवत्थु न [**अवस्तु**] १ अभाव, असत्त्व ; (भवि ; आवम) । २ वि. निरर्थक, निष्फल ; (पण्ह १, २) ।
अवदग्ग देखो **अवयग्ग** (सूअ २, २; ५)
अवदल वि [**अपदल**] १ निःसार, सार-रहित ; २ कच्चा, अपक्व ; (ठा ४, ४) ।
अवदहण न [**अवदहन**] दम्भन, गरम लोहे की कोश आदि से चर्म (फोड़े आदि) पर दागना ; (गाया १,४) ।

अवदाय वि [**अवदात**] १ पवित्र, निर्मल "दियरकरावदायं भत्तं पेहित्तु चक्खुणा सम्मं" (सुपा ४६१)। २ श्वेत, सफेद ; (पण्ह १, ४ ; पात्र)।

अवदार न [**अपद्वार**] १ छोटी खिड़की ; २ गुप्त द्वार ; (उप ६६१)।

अवदाल सक [**अव+दलय्**] खोलना। अवदालेइ ; (औप)। संकृ—**अवदालेत्ता** ; (औप)।

अवदालिय वि [**अवदलित**] विकसित, विजृम्भित ; "अवदालियपुंडरीयनयणे" (औप; पण्ह १, ४ ; उवा)।

अवदिसा स्त्री [**अपदिक्**] भ्रान्त दिशा ; (स ५२६)।

अवदेस देखो **अवएस** ; (अभि ७६)।

अवद्दार, **अवद्दाल** देखो **अवदार** ; (णाया १, २ ; प्राकृ)।

अवद्दाहणा स्त्री. देखो **अवदहण** ; (विपा १, १)।

अवद्दुस न [**दे**] उलूखल आदि घर का सामान्य उपकरण, गुजराती में जिसको 'राचरचिलुं' कहते हैं ; (दे १, ३०)।

अवद्धंस पुं [**अवध्वंस**] विनाश ; (ठा ४, ४)।

अवधार सक [**अव+धारय्**] निश्चय करना। कृ—**अवधारियव्व** ; (पंचा ३)।

अवधारण न [**अवधारण**] निश्चय, निर्णय ; (श्रा ३०)।

अवधारिय वि [**अवधारित**] निश्चित, निर्णीत ; (वसु)।

अवधारियव्व देखो **अवधार**।

अवधाव सक [**अप+धाव्**] पीछे दौड़ना। अवधावइ ; (सण)। वकृ—**अवधावंत** ; (स २३२)।

अवधिका स्त्री [**दे**] उपदेहिका, दिमक ; (पण्ह १, १)।

अवधीरिय वि [**अवधीरित**] तिरस्कृत, अपमानित ; (बृह १, ४)।

अवधुण, **अवधूण** सक [**अव+धू**] १ परित्याग करना। २ अवज्ञा करना। संकृ—**अवधुणिअ**, **अवधूणिअ** ; (माल २३२ ; वेणी ११०)।

अवधूय वि [**अवधूत**] १ अवज्ञात, तिरस्कृत ; (ओघ १८ भा. टी)। २ विक्षिप्त ; (आव ४)।

अवनिद्दय पुं [**अपनिद्रक**] उजागर, निद्रा का अभाव ; (सुर ६, ८३)।

अवन्न देखो **अवण्ण**=अवर्ण ; (भग; उव ; ओघ ३५१)।

अवन्ना देखो **अवण्णा** ; (ओघ ३८२ भा; सुर १६, १३१ ; सुपा ३७२)।

अवपक्का स्त्री [**अवपाक्या**] तापिका, तवी; छोटा तवा ; (णाया १, १ टी—पत्र ४३)।

अवपुट्ठ वि [**अवस्पृष्ट**] जिसका स्पर्श किया गया हो वह; "जीए ससिकंतमणिमंदिराइं निसि ससिकरावपुट्ठाइं। वियलियवाहजलाइं रोयंतिव तरणितवियाइं" (सुपा ३)।

अवपुसिय वि [**दे**] संघटित, संयुक्त ; (दे १, ३६)।

अवप्पओग पुं [**अपप्रयोग**] उल्टा प्रयोग, विरुद्ध औषधियों का मिश्रण ; (बृह १)।

अवप्फार पुं [**अवस्फार**] विस्तार, फैलाव, "ता किं मिणा अहोपुरिसियावप्फारपाएणं" (स २८८)।

अवबंध पुं [**अवबन्ध**] बन्ध, बन्धन ; (गउड)।

अवबद्ध वि [**अवबद्ध**] बंधा हुआ, नियन्त्रित; (धर्म ३)।

अवबाण वि [**अपबाण**] बाण-रहित ; (गउड)।

अवबुज्झ सक [**अव+बुध्**] १ जानना। २ समझना। "जत्थ तं मुज्झसी रायं, पेच्चत्थं नावबुज्झसे" (उत्त १८,१३)। वकृ—**अवबुज्झमाण** ; (स ८५)। संकृ—**अवबुज्झेऊण** ; (स १६७)।

अवबोह पुं [**अवबोध**] १ ज्ञान, बोध ; (सुपा १७)। २ विकास ; (गउड)। ३ जागरण ; (धर्म २)। ४ स्मरण, यादी ; (आचा)।

अवबोहय वि [**अवबोधक**] अवबोध-कारक ; "भविककमलावबोहय, मोहमहातिमिरपसरभरसूर " (काल)।

अवबोहि पुं [**अवबोधि**] १ ज्ञान ; २ निश्चय, निर्णय; (आचू १, विसे ११५४)।

अवभास अक [**अव+भास्**] चमकना, प्रकाशित होना।

अवभास पुं [**अवभास**] प्रकाश ; (सुज्ज ३)।

अवभासय वि [**अवभासक**] प्रकाशक ; (विसे ३१७; २०००)।

अवभासि वि [**अवभासिन्**] देदीप्यमान, प्रकाशने वाला ; (गउड)।

अवभासिय वि [**अवभासित**] प्रकाशित ; (विसे)।

अवभासिय वि [**अवभाषित**] आकुष्ट, अभिशप्त; (वव १)।

अवम देखो **ओम** ; (आचा)।

अवमग्ग पुं [**अपमार्ग**] कुमार्ग, खराब रास्ता; (कुमा)।

अवमग्ग पुं [**अपामार्ग**] वृक्ष-विशेष, चिचड़ा, लटजीरा; (दे १, ८)।

अवमच्चु पुं [अपमृत्यु] अकाल मृत्यु, अनमौत मरण ; (दे ६, ३ ; कुमा) ।
अवमज्ज सक [अव+मृज्] पोंछना, झाड़ना, साफ करना। संकृ—**अवमज्जिऊण** ; (स ३४८) ।
अवमण्ण सक [अव+मन्] तिरस्कार करना । अवमण्णंति ; (उवर १२२) ।
अवमद्द पुं [अवमर्द] मर्दन, विनाश ; (पण्ह १, २) ।
अवमद्दग वि [अवमर्दक] मर्दन करने वाला ; (गाया १, १६) ।
अवमन्न सक [अव+मन्] अवज्ञा करना, निरादर करना । अवमन्नइ ; (महा) । वकृ—**अवमन्नंत** ; (सुअ १,३,४) संकृ—**अवमन्निऊण** ; (महा) ।
अवमन्निय } **अवमय** } वि [अवमत] अवज्ञात, अवगणित ; (सुर १६, १२७ ; महा ; उव) ।
अवमाण पुं [अपमान] तिरस्कार ; (सुर १, २३५) ।
अवमाण पुंन [अवमान] १ अवज्ञा, तिरस्कार । २ परिमाण ; (ठा ४, १) ।
अवमाण सक [अव + मानय्] अवगणना करना। अवमाणइ ; (भवि) ।
अवमाणण न [अवमानन] अनादर, अवज्ञा ; (पण्ह १, ५ ; औप) ।
अवमाणण न [अपमानन] तिरस्कार, अपमान; (स १०) ।
अवमाणणा स्त्री [अवमानना] अवगणना ; (काल) ।
अवमाणि वि [अवमानिन्] अवज्ञा करने वाला ; (अभि ६६) ।
अवमाणिय वि [अपमानित] तिरस्कृत ; (से १०, ६६; सुपा १०५) ।
अवमाणिय वि [अवमानित] १ अवज्ञात, अनादृत ; (सुर २, १७६) । २ अपूरित, "अवमाणियदोहला" (भग ११, ११) ।
अवमार पुं [अपस्मार] भयंकर रोग-विशेष ; पागलपन ; (आचा) ।
अवमारिय वि [अपस्मारित, °रिक] अपस्मार रोग वाला ; (आचा) ।
अवमारुय पुं [अवमारुत] नीचे चलता पवन ; (गउड) ।
अवमिच्चु देखो **अवमच्चु** ; (प्राकृ) ।
अवमिय वि [दे] जिसको घाव हो गया हो वह, व्रणित ; (बृह ३) ।

अवमुक्क वि [अवमुक्त] परित्यक्त ; (पि ५६६) ।
अवमेह वि [अपमेघ] मेघ-रहित ; (गउड) ।
अवय देखो **अपय**=अपद ; (सुअ १, ८; ११) ।
अवय न [अब्ज] कमल, पद्म ; (पराग १) ।
अवय वि [अवच] १ नीचा ; अनुच ; (उत्त ३) । २ जघन्य, हीन ; अश्रेष्ठ ; (सुअ १, १०) । ३ प्रतिकूल ; (भग १, ६) ।
अवयंस पुं [अवतंस] १ शिरो-भूषण विशेष ; (कुमा ; गा १७३) । २ कान का आभूषण ; (पाअ) ।
अवयंस सक [अवतंसय्] भूषित करना । अवअंसअंति; (पि १४२; ४६०) ।
अवयक्ख सक [अप + ईक्ष्] अपेक्षा करना, राह देखना। अवयक्खह ; (णाया १, ६) । वकृ—**अवयक्खंत, अवयक्खमाण** ; (णाया १, ६ ; भग १०, २) ।
अवयक्ख सक [अव+ईक्ष्] १ देखना । २ पीछे से देखना । वकृ—**अवयक्खंत** ; (ओघ १८८ भा) ।
अवयक्खा स्त्री [अपेक्षा] अपेक्षा ; (णाया १, ६) ।
अवयग्ग न [दे] अन्त, अवसान ; (भग १, १) ।
अवयच्छ सक [अव+गम्] जानना । अवयच्छइ ; (स ११३) । संकृ—**अवयच्छिय** ; (स २१०) ।
अवयच्छ सक [दृश्] देखना । अवयच्छइ ; (हे ४, १८१) । वकृ—**अवयच्छंत** ; (कुमा) ।
अवयच्छिय वि [दृष्ट] देखा हुआ ; (णाया १, ८) ।
अवयच्छिय वि [दे] प्रसारित, "फुंकारपवणपिसुणियमवयच्छियमयगरमहा य" (स ११३) ।
अवयज्झ सक [दृश्] देखना। अवयज्झइ ; (हे ४, १८१) । संकृ—**अवयज्झिऊण** ; (कुमा) ।
अवयट्ठि स्त्री [अवतष्टि] तनूकरण, पतला करना ; (आचा) ।
अवयट्ठि वि [अवस्थायिन्] अवस्थिति करने वाला ; स्थिर रहने वाला ; (आचा) ।
अवयट्ठि स्त्री [अवकृष्टि] आकर्षण ; (आचा) ।
अवयड्ढिअ वि [दे] युद्ध में पकड़ा हुआ ; (दे १,४६) ।
अवयण न [अवचन] कुत्सित वचन, दूषित भाषा ; (ठा ६) ।
अवयर सक [अव + तृ] १ नीचे उतरना । २ जन्म-ग्रहण करना । अवयरइ ; (हे १, १७२) । वकृ—

अवयरंत, अवयरमाण; (पउम ८२, ६३ ; सुपा १८१)। संकृ—अवयरिउं; (प्रासू)।
अवयरिअ पुं [दे] वियोग, विरह ; (दे १, ३६)।
अवयरिअ वि [अपकृत] १ जिसका अपकार किया गया हो वह। २ न. अपकार, अहित-करण, "को हेऊ तुह गमणे तुह अवयरियं मए किं व" (सुपा ४२१)।
अवयरिअ वि [अवतीर्ण] १ जन्मा हुआ। २ नीचे उतरा हुआ ; (सुर ६, १८६)।
अवयव पुं [अवयव] १ अंश, विभाग। २ अनुमान-प्रयोग का वाक्यांश ; (दसनि १ ; हे १, २४५)।
अवयवि वि [अवयविन्] अवयव वाला (ठा १ ; विसे २३५०)।
अवयाढ देखो **ओगाढ** ; (नाट ; गउड)।
अवयाण न [दे] खींचने की डोरी, लगाम ; (दे १, २४)।
अवयाय पुं [अववाय] अपराध, दोष; (उप १०३१ टी)।
अवयार पुं [अपकार] अहित-करण ; (स ४३७ ; कुमा ; प्रासू ६)।
अवयार पुं [अवतार] १ उतरना। २ देहान्तर-धारण, जन्म-ग्रहण। ३ मनुष्य रूपमें देवता का प्रकाशित होना "अज्ज! एवं तुमं देवावयारो विय आगईए" (स ४१६; भवि)। ४ संगति, योजना ; (विसे १००८)। ५ प्रवेश ; (विसे १०४३)।
अवयार पुं [दे] माघ-पूर्णिमा का एक उत्सव, जिसमें इख से दतवन आदि किया जाता है ; (दे १, ३२)।
अवयारि वि [अपकारिन्] अपकार करने वाला; (स १७६; विवे ७६)।
अवयालिय वि [अवचालित] चलायमान किया हुआ ; (स ४२)।
अवयास सक [श्लिष्] आलिंगन करना। अवयासइ ; (हे ४, १६०)। कवकृ—अवयासिज्जमाण ; (औप)। संकृ—अवयासिय ; (णाया १, २)।
अवयास सक [अव+काश्] प्रकट करना। संकृ—अवयासेऊण ; (तंदु)।
अवयास देखो **अवगास** ; (गउड, कुमा)।
अवयास पुं [श्लेष] आलिंगन ; (ओघ २४४ भा)।
अवयासण न [श्लेषण] आलिंगन ; (बृह १)।
अवयासाविय वि [श्लेषित] आलिंगन कराया हुआ ; (विपा १, ४)।
अवयासिय वि [श्लिष्ट] आलिंगित ; (कुमा; पात्र)।
अवयासिणी स्त्री [दे] नासा-रज्जु, नाक में डाली जाती डोर ; (दे १, ४६)।
अवर वि [अपर] अन्य, दूसरा, तद्भिन्न ; (श्रा २७; महा)। °हा अ [°था] अन्यथा ; (पंचा ८)।
अवर स [अपर] १ पिछला काल या देश ; (महा)। २ पिछले काल या देशमें रहा हुआ ; पाश्चात्य ; (... १३ ; महा)। ३ पश्चिम दिशा में स्थित, "अवरद्दारेणं" (स ६४६)। °कंका स्त्री [°कङ्का] १ धातकी-खंड के भरतक्षेत्र की एक राजधानी; २ इस नामका "ज्ञाता-धर्मकथा" सूत्र का एक अध्ययन ; (णाया १, १६)। °ण्ह पुं [°ह्ण] १ दिन का अन्तिम प्रहर; (ठा ४, २)। २ दिनका उत्तरी भाग ; (आचू १; गा २६६; प्रासू ५४)। °दाहिण पुं [°दक्षिण] १ नैऋत्य कोण ; २ वि. नैऋत्य कोण में स्थित ; (पंचा २)। °दाहिणा स्त्री [°दक्षिणा] पश्चिम और दक्षिण दिशा के बीच की दिशा, नैऋत कोण ; (वव ७)। °फाणु स्त्री [°पार्ष्णि] एड़ी, अड्डी का पिछला भाग ; (वव ८)। °राय पुं [°रात्र] देखो **अवरत्त**=अपररात्र ; (आचा)। °विदेह पुं [°विदेह] महाविदेह-नामक वर्ष का पश्चिम भाग ; (ठा २, ३; पडि)। °विदेहकूड न [°विदेहकूट] पर्वत-विशेष का शिखर-विशेष ; (जं ४)। देखो अपर।
अवर स [अवर] ऊपर देखो ; (महा; णाया १, १... वव ७; पंचा २)।
अवरंमुह वि [अपराङ्मुख] १ संमुख ; २ तत्पर ; (पि २६६)।
अवरच्छ देखो **अपरच्छ** ; (पण्ह १, ३)।
अवरज्ज पुं [दे] १ गत दिन ; २ आगामी दिन ; ३ प्रभात, सुबह ; (दे १, ५६)।
अवरज्झ अक [अप+राध्] १ अपराध करना, गुनाह करना। २ नष्ट होना। अवरज्झइ ; (महा; उव)। वकृ—अवरज्झंत ; (राज)।
अवरत्त पुं [अपररात्र, अवररात्र] रात्रि का पिछला भाग ; (भग; णाया १, १)।
अवरत्त वि [अपरक्त] १ विरक्त, उदास ; (उप पृ ३०८) २ नाराज, नाखुश ; (मुद्रा २६७)।
अवरत्तअ } पुं [दे] पश्चात्ताप, अनुताप; (दे १, ४... **अवरत्तय** } पात्र)।

अवरद्ध न [अपराद्ध] १ अपराध, गुनाह; (सुर २, १२१)। २ वि. जिसने अपराध किया हो वह, अपराधी, "सगडे दारए ममं अंतेउरंसि अवरद्धे" (विपा १, ४; स २८)। ३ विनाशित, नष्ट किया हुआ; (गाया १,१)।

अवरद्धिग } पुंस्त्री [अपराद्धिक] १ सर्प-दंश; २ फुनसी, छोटा फोड़ा; (ओघ ३४१; पिंड)।
अवरद्धिय }

अवरा स्त्री [अपरा] विदेह-वर्ष की एक नगरी; (ठा २,३)।

अवराइया देखो अपराइया; (पउम २५, १; जं ४; ठा २, ३)।

अवराइस देखो अण्णाइस; (षड्; हे ४, ४१३)।

अवराजिय देखो अपराइय, (इक)।

अवराजिया देखो अपराइया; (इक)।

अवराह पुं [अपराध] १ अपराध, गुनाह; (आव १)। २ अनिष्ट, बुराई; "अवराहेसु गुणेसु य निमित्तमेत्तं परो होइ" (प्रासू १२२)।

अवराह पुं [दे] कटी, कमर; (दे १, २८)।

अवराहिय न [अपराधित] १ अपराध, गुनाह, "जंपइ जणो महल्लं कस्सवि अवराहियं जायं" (पउम ६४, २५; स ३२०)। २ अपकार, अनिष्ट, अहित,

"सिरि चडिआ खंति प्फलइं, पुणु डालइं मोडंति।
तोवि महद्दुम सउणाहं, अवराहिउ न करंति" (हे ४,४४५)।

अवराहुत्त वि [अपराभिमुख] १ पराङ्मुख; २ पश्चिम दिशा तरफ मुँह किया हुआ; (आव ४)।

अवरिं } अ [उपरि] ऊपर; (दे १, २६; प्राप्र)।
अवरिं }

अवरिक्क वि [दे] अवसर-रहित, अनवसर; (दे १, २०)।

अवरिगलिअ वि [अपरिगलित] पूर्ण, भरपूर; (से ११, ८८)।

अवरिज्ज वि [दे] अद्वितीय, असाधारण; (दे १,३६; षड्)।

अवरिल्ल वि [उपरि] उत्तरीय वस्त्र, चद्दर; (हे २, १६६; कुमा; गउड; पाअ)।

अवरिल्ल वि [अपरीय] पाश्चात्य, पश्चिम दिशा-संबन्धी "तो णं तुब्भे अवरिल्लं वणसंडं गच्छेज्जाह" (गाया १, ६)।

अवरिहड्ढपुसण न [दे] १ अकीर्ति, अजस; २ असत्य, झूठ; ३ दान; (दे १, ६०)।

अवरुंड सक [दे] आलिङ्गन करना। अवरुंडइ, (दे १, ११; सुर ३, १८२; भवि) कर्म—अवरुंडिज्जइ; (दे १, ११)। संकृ—अवरुंडिऊण; (दे १, ११; स ४२१)।

अवरुंडण } न [दे] आलिङ्गन; (भवि; पाअ; दे १, ११,)।
अवरुंडिअ }

अवरुत्तर पुं [अपरोत्तर] १ वायव्य कोण; २ वि. वायव्य कोण में स्थित; (भग)।

अवरुत्तरा स्त्री [अपरोत्तरा] वायव्य दिशा, पश्चिम और उत्तर के बीच की दिशा; (वव ७)।

अवरुद्ध वि [अवरुद्ध] घिरा हुआ; (विसे २६७५)।

अवरुप्पर देखो अवरोप्पर; (कुमा; रंभा)।

अवरुह अक [अव+रुह] नीचे उतरना। अवरुहेहि; (मै १४)।

अवरोप्पर } वि [परस्पर] आपस में; (हे ४, ४०९; गउड; सुपा २२; सुर ३, ७६; षड्)।
अवरोवर }

अवरोह पुं [अवरोध] १ अन्तःपुर, जनानखाना; (सुपा ६३)। २ अन्तःपुर में रहनेवाली स्त्री; (विपा १, ४)। ३ नगर को सैन्य से घेरना; (निचू ८)। ४ संक्षेप; (विसे ३५५५)। ५ प्रतिबन्ध; "कहं सव्वत्थित्तावरोहोत्ति" (विसे १७२३)। °जुवइ स्त्री [°युवति] अन्तःपुर की स्त्री; (पि ३८७)।

अवरोह पुं [अवरोह] उगने वाला, (तृण आदि); (गउड)।

अवरोह पुं [दे] कटी, कमर; (दे १, २८)।

अवलंब सक [अव+लम्ब्] १ सहारा लेना, आश्रय लेना। २ लटकना। अवलंबइ; (कस)। अवलंबेइ; (महा)। वकृ—अवलंबमाण; (सम्म ५८)। कवकृ—अवलंबिज्जंत; (पि ३६७)। संकृ—अवलंबिऊण, अवलंबिय; (आव ५; आचा २, १, ६)। हेकृ—अवलंबित्तए; (दसा ७)। कृ—अवलंबणिय, अवलंबिअव्व; (से १०, २६)।

अवलंब } पुं [अवलम्ब, °क] १ सहारा, आश्रय; (श्रा १६)। २ वि. लटकने वाला; (औप; वव ४)। ३ सहारा लेने वाला; (पच्च ८०)।
अवलंबग }

अवलंबण न [अवलम्बन] १ लटकना। २ आश्रय, सहारा; (ठा ५, २; राय)।

अवलंबि वि [अवलम्बिन्] अवलम्बन करने वाला; (गउड; विसे २३२६)।

अवलंबिय वि [अवलम्बित] १ लटका हुआ। २ आश्रित; (गाया १, १)।

अवलंविर देखो अवलंवि ; (गा ३६७)।

अवलक्खण न [**अपलक्षण**] खराब लक्षण, बुरी आदत ; (भवि)।

अवलग्ग वि [**अवलग्न**] १ आरूढ ; २ लगा हुआ, संलग्न ; (महा)।

अवलत्त वि [**अपलपित**] अपह्नुत, छिपाया हुआ ; (स २१२)।

अवलद्ध वि [**अपलब्ध**] अनादर से प्राप्त ; (ठा ६)।

अवलद्धि स्त्री [**अवलब्धि**] अ-प्राप्ति ; (भग)।

अवलय न [**दे**] घर, मकान ; (दे १, २३)।

अवलव सक [**अप+लप्**] १ असत्य बोलना। २ सत्य को छिपाना। कवकृ—**अवलविज्जंत** ; (सुपा १३२)। कृ—**अवलवणिज्ज** ; (सुपा ३१५)।

अवलाव पुं [**अपलाप**] अपह्नव ; (निचू १)।

अवलिअ न [**दे**] असत्य, झूठ ; (दे १, २२)।

अवलिंव पुं [**अवलिम्ब**] जीव या पुद्गलों से व्याप्त स्थान-विशेष ; (ठा २, ४)।

अवलिच्छअ वि [**दे**] अ-प्राप्त, अनासादित ; (से ६, ७८)।

अवलित्त वि [**अवलिप्त**] १ लिप्त ; २ गर्वित ;
" अलसो सढोवलित्तो, आलंवण-तप्परा अइपमाई।
एवं ठिओवि मन्नइ, अप्पाणं सुट्ठिओ मित्ति" (उव)।

अवलुआ स्त्री [**दे**] क्रोध, गुस्सा ; (दे १, ३६)।

अवलुत्त वि [**अवलुप्त**] लोप-प्राप्त ; (नाट)।

अवलेअ, **अवलेव** पुं [**अवलेप**] १ अहंकार, गर्व। २ लेप, लेपन ; (पाअ ; महा ; नाट)। ३ अवज्ञा, अनादर ; (गउड)।

अवलेहणिया स्त्री [**अवलेखनिका**] १ वांस का छिलका ; (ठा ४, २)। २ धूली आदि झाड़ने का एक उपकरण ; (निचू १)।

अवलेहि, **अवलेहिया** स्त्री [**अवलेखि, °का**] १ वांसका छिलका ; (कम्म १, २०)। २ लेह्य-विशेष ; (पव ४)। ३ चावल के आटा के साथ पकाया हुआ दूध ; (पभा ३२)।

अवलोअ सक [**अव+लोक्**] देखना, अवलोकन करना। वकृ—**अवलोअंत, अवलोएमाण** ; (रयण ३६ ; णाया १, १) संकृ—**अवलोइऊण** ; (काल)। कृ—**अवलोयणीय** ; (सुपा ७०)।

अवलोग, **अवलोय** पुं [**अवलोक**] अवलोकन, दर्शन ; (... ६८६ टी ; सुपा ६ ; स २७६ ; गउड)।

अवलोयण न [**अवलोकन**] १ दर्शन ; विलोक... (गउड)। २ स्थान-विशेष ; " तुंगं अवलोयणं ..." (पउम ८०, ४)। ३ शिखर-विशेष ; (तो ४)।

अवलोव पुं [**अपलोप**] छिपाना, लोप करना ; (... १,२)।

अवलोवणी स्त्री [**अपलोपनी**] विद्या-विशेष ; (... ७, १३६)।

अवलोह वि [**अपलोह**] लोह-रहित ; (गउड)।

अवल्लय न [**दे. अवल्लक**] नौका खेवने का उपकरण-विशेष ; (आचा २, ३, १)।

अवल्लाव, **अवल्लावय** पुं [**दे. अपलाप**] असत्य-कथन, अपलाप ; (दे १, ३८)।

अवव न [**अवव**] संख्या-विशेष 'अववाङ्ग' को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह ; (ठा २, ४)।

अववंग न [**अववाङ्ग**] संख्या-विशेष, 'अडड' को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह ; (ठा २, ४)।

अववक्कल वि [**अपवल्कल**] त्वचा-रहित ; (गउड)।

अववक्का स्त्री [**अवपाक्या**] तापिका, छोटा त... (भग ११, ११)।

अववग्ग पुं [**अपवर्ग**] मोक्ष, मुक्ति ; (आवम)।

अववट्टण न [**अपवर्तन**] १ अपसरण। २ कर्म-परमाणुओं को दीर्घ स्थिति को छोटी करना ; (पंच ५)।

अववट्टणा स्त्री [**अपवर्तना**] ऊपर देखो ; (पंच ५)।

अववत्त वि [**अपवृत्त**] १ वापिस लौटा हुआ ; २ ... सृत ; (दे १, १५२)।

अववरक पुं [**अपवरक**] कोठरी, छोटा घर ; (... ८१)।

अववाइय वि [**अपवादिक**] अपवाद वाला ; (नाट)।

अववाय पुं [**अपवाद**] १ विशेष नियम, अपवाद ; (उप ७८१)। २ निन्दा, अवर्ण-वाद ; (पण्ह २, १)। ३ अनुज्ञा, संमति ; (निचू १)। ४ निश्चय, निर्णय वाली हकीकत ; (निचू ५)।

अववास सक [**अव+काश्**] अवकाश देना, ... देना। अववासइ ; (प्राप्र)।

अववाह सक [**अव+गाह्**] अवगाहन करना। ... वाहइ ; (प्राप्र)।

अवविह पुं [अवविध] गोशालक के एक भक्त का नाम ; (भग ८, ५)।

अववीड पुं [अवपीड] निष्पीड़न, दबाना ; (गउड)।

अववीडण न [अवपीडन] ऊपर देखो ; (गउड)।

अवस वि [अवश] १ अ-स्वाधीन, पराधीन ; (सूअ १, ३, १)। २ स्वतन्त्र, स्वाधीन ; (से १, १)।

अवसं अ [अवश्यम्] अवश्य, जरूर, निश्चय ; (हे ४, ४२७)।

अवसउण न [अपशकुन] अनिष्ट-सूचक निमित्त, खराब शकुन ; (ओघ ८१ भा ; गा २६१ ; सुपा ३६३)।

अवसक्क सक [अव+ष्वष्क्] पीछे हट जाना। अवसक्केज्जा ; (आचा)।

अवसक्कण न [अवष्वष्कण] अपसरण, पीछे हटना ; (पंचा १३)।

अवसक्कि वि [अवष्वष्किन्] पीछे हटने वाला ; (आचा)।

अवसण्ण वि [दे] झरा हुआ, टपका हुआ; (षड्)।

अवसद्द पुं [अपशब्द] १ अशुद्ध शब्द ; (सुर १६, २४८)। २ खराब वचन ; (हे १, १७२)। ३ अपकीर्त्ति, अपयश ; (कुमा)।

अवसप्प अक [अव+सृप्] १ पीछे हटना। २ निवृत्त होना। ३ उतरना। अवसप्पंति ; (पि १७३)।

अवसप्पण न [अपसर्पण] अपसरण, अपवर्तन ; (पउम ५६, ७८)।

अवसप्पि वि [अपसर्पिन्] १ पीछे हटने वाला ; २ निवृत्त होने वाला ; (सूअ १, २, २)।

अवसप्पिय वि [अपसर्पित] १ अपसृत। २ निवृत्त। ३ अवतीर्ण ; (भवि)।

अवसप्पिणी देखो ओसप्पिणी ; (भग ३, २; भवि)।

अवसमिआ (दे) देखो अंबसमी ; (दे १, ३७)।

अवसय वि [अपशद] नीच, अधम ; (ठा ४, ४)।

अवसर अक [अप+सृ] १ पीछे हटना। २ निवृत्त होना। अवसरइ; (हे १, १७२)। कृ—अवसरियव्व; (उप १४६ टी)।

अवसर सक [अव+सृ] आश्रय करना। संकृ— "ओसरणम् अवसरित्ता" (चउ १८)।

अवसर पुं [अवसर] १ काल, समय ; (पाअ)। २ प्रस्ताव, मौका ; (प्रासू ५७; महा)।

अवसरण देखो ओसरण ; (पव ६२)।

अवसरण न [अपसरण] १ पीछे हटना। २ निवृत्ति; (गउड)।

अवसरिय वि [आवसरिक] सामयिक, समयोपयुक्त ; (सण)।

अवसरीर पुं [अपशरीर] रोग, व्याधि, "सव्वावसरीर-हिओ" (उप ५६७ टी)।

अवसवस वि [अपस्ववश] पराधीन, परतन्त्र ; (णाया १, १६)।

अवसव्वय न [अपसव्यक] शरीर का दहिना भाग ; (उप पृ २०८)।

अवसह पुं [आवसथ] घर, मकान ; (उत्त ३२)।

अवसह न [दे] १ उत्सव ; २ नियम ; (दे १, ५८)।

अवसाइअ वि [अप्रसादित] प्रसन्न नहीं किया हुआ ; (से १०, ६३)।

अवसाण न [अवसान] १ नाश ; २ अन्त भाग ; (गउड; पि ३६६)।

अवसाय पुं [अवश्याय] हिम, वर्फ ; (गउड)।

अवसारिअ वि [अप्रसारित] नहीं फैलाया हुआ, अ-विस्तारित ; (से ,१)।

अवसारिअ वि [अपसारित] १ आकृष्ट, खींचा हुआ ; (से १, १)। २ दूर किया हुआ, हटाया हुआ ; (सुपा २२२)।

अवसावण न [अवस्रावण] १ काञ्जी ; (बृह १)। २ भात वगैरः का पानी ; (सूक्त ८६)।

अवसिअ वि [अपसृत] पीछे हटा हुआ; (से १३, ६३)।

अवसिअ वि [अवसित] १ समाप्त, परिपूर्ण। २ ज्ञात, जाना हुआ ; (विसे २४८२)।

अवसिज्ज अक (अव+सद्] हारना, पराजित होना "एक्कोवि नावसिज्जइ" (विसे २४८४)।

अवसिद (शौ) वि [अवसित] समाप्त, पूर्ण ; (अभि १३३. प्रति १०६)।

अवसिद्धंत पुं [अपसिद्धान्त] दूषित सिद्धान्त ; (विसे २४५७; ६)।

अवसीय अक [अव+सद्] क्लेश पाना, खिन्न होना। वकृ—अवसीयंत ; (पउम ३३, १३१)।

अवसुअ अक [उद्+वा] सूखना, शुष्क होना। अवसुअइ ; (षड्)।

अवसेअ पुं [अवसेक] सिञ्चन, छिटकाव ; (अभि २१०)।

अवसेअ वि [अवसेय] जानने योग्य ; (विसे २६७१)।

अवसें (अप) देखो **अवस्सं** ; (हे ४, ४२७)।

अवसेण देखो **अवस्सं** " अवसेण भुंजियव्वा ; (पउम १०२, २०१)।

अवसेस पुं [अवशेष] १ अवशिष्ट, बाकी ; (सुपा ७७)। २ वि. सव, सर्व ; (उप २११ टी)।

अवसेसिय वि [अवशेषित] १ समाप्त किया हुआ, पार पहुँचाया हुआ ; (से ४, ४७)। २ बाकी का, अवशिष्ट ; (भग)।

अवसेह सक [गम्] जाना। अवसेहइ ; (हे ४, १६२)। अवसेहंति ; (कुमा)।

अवसेह अक [नश्] भागना, पलायन करना। अवसेहइ ; (हे ४, १७८ ; कुमा)।

अवसोइया स्त्री [अवस्वापिका] निद्रा ; (सुपा ६०६)।

अवसोग वि [अपशोक] १ शोक-रहित। २ देव-विशेष ; (दीव)।

अवसोण वि [अपशोण] थोड़ा लाल ; (गउड)।

अवसोवणी स्त्री [अवस्वापनी] निद्रा ; (सुपा ४७)।

अवस्स वि [अवश्य] जरूरी, नियत ; (आवम, आव ४)। °**कम्म** न [°कर्मन्] आवश्यक क्रिया ; (आचू १)। °**करणिज्ज** वि [°करणीय] अवश्य करने लायक कर्म, सामायिक आदि। °**किरिया** स्त्री [°क्रिया] आवश्यक अनुष्ठान ; (आचू १)। °**किच्च** वि [°कृत्य] आवश्यक कार्य ; (दे)।

अवस्सं अ [अवश्यम्] जरूर, निश्चय ; (पि ३१५)।

अवस्सिय वि [अवाश्रित] आश्रित, अवलग्न ; (अनु ६)।

अवह सक [रच्] निर्माण करना, बनाना। अवहइ ; (हे ४, ६४)।

अवह स [उभय] दोनों, युगल ; (हे २, १३८)।

अवहइ स्त्री [अपहति] विनाश ; (विसे २०१५)।

अवहट्ट वि [दे] अभिमानी, गर्वित ; (दे १, २३)।

अवहट्टु देखो **अवहर**=अप+हृ।

अवहड वि [अपहृत] ले लिया गया, छीना हुआ ; (सुपा २६६ ; पण्ह १, ३)।

अवहड वि [अवहृत] ऊपर देखो ; (प्रारू)।

अवहड न [दे] मुसल ; (दे १, ३२)।

अवहण्ण पुं [दे] ऊखल, उदूखल ; (दे १, २६)।

अवहत्थ पुं [अपहस्त] मारने के लिए या निकाल बाहर करने के लिए ऊंचा किया हुआ हाथ, " अवहत्थेण हंओ कुमरो " (महा)।

अवहत्थ सक [अपहस्तय्] १ हाथ को ऊंचा करना। २ त्याग करना, छोड़ देना। अवहत्थेइ ; (महा)। संक्र—**अवहत्थिऊण, अवहत्थेऊण** ; (पि ५८६ ; महा)।

अवहत्थरा स्त्री [दे] लात मारना, पाद-प्रहार ; (दे १, २२)।

अवहत्थिय वि [अपहस्तित] परित्यक्त, दूर किया हुआ ; (महा ; काप्र ५२४ ; गा ३५३ ; सुपा १६३ ; णंदि)।

अवहय वि [अपहत] नष्ट, नाश-प्राप्त ; (से १४, २८)।

अवहय वि [अघातक] अहिंसक ; (ओघ ७५०)।

अवहर सक [गम्] जाना। अवहरइ ; (हे ४, १६२)।

अवहर अक [नश्] भाग जाना, पलायन करना। अवहरइ ; (हे ४, १७८ ; कुमा)।

अवहर सक [अप+हृ] १ छीन लेना, अपहरण करना। २ भागाकार करना, भाग देना। अवहरइ ; (महा)। अवहरेज्जा ; (उवा)। कवकृ—**अवहरिज्जंत, अवहीरमाण** ; (सुर ३, १४२; भग २५, ४ ; णाया १, १८)। संकृ—**अवहरिऊण, अवहट्टु** ; (महा ; आचा ; भग)।

अवहर वि [अपहर] अपहारक, छीन लेने वाला ; (गा १५६)।

अवहरण न [अपहरण] छीन लेना ; (कुमा ; सुपा २५०)।

अवहरिअ वि [गत] गया हुआ ; (कुमा)।

अवहरिअ वि [अपहृत] छीन लिया हुआ ; (सुर ३, १४१ ; कुम्मा ६)।

अवहस सक [अव, अप+हस्] तुच्छकारना, तिरस्कारना, उपहास करना। अवहसइ ; (णाया १, १८)।

अवहसिय वि [अप°, अवहसित] तिरस्कृत, उपहसित ; (गाया १, ८; सुर १२, ६७) ।

अवहाय पुं [दे] विरह, वियोग ; (दे १, ३६) ।

अवहाय अ [अपहाय] छोड़ कर, त्याग कर ; (भग १५) ।

अवहाण न [अवधान] १ ख्याल, उपयोग ; (सुर १०, ७१ ; कुमा) । २ ज्ञान, जानना ; (वसे ८२) ।

अवहार सक [अव+धारय्] निर्णय करना, निश्चय करना । कर्म—अवहारिज्जइ ; (स १६६) । हेकृ—अवहारेउं ; (भास १६) ।

अवहार (अप) देखो अवहर=अप+हृ । अवहारइ ; (भवि) । संकृ—अवहारिवि ; (भवि) ।

अवहार पुं अपहार] १ अपहरण ; (पण्ह १, ३ ; सुपा २७५) । २ दूर करना, परित्याग ; (गाया १, ६) । ३ चोरी ; (सुपा ४४६) । ४ बाहर करना; निकालना ; (निचू ७) । ५ भागाकार ; (भग २५, ४) । ६ नाश, विनाश ; (सुर ७, १२५) ।

अवहार पुं [अवधार] निश्चय, निर्णय । °व वि [वत्] निश्चय वाला ; (ठा १०) ।

अवहारण न [अवधारण] निश्चय, निर्णय ; (से ११, १५ ; स १६६) ।

अवहारय वि [अपहारक] छीनने वाला, अपहरण करने वाला ; (सुर ११, १२) ।

अवहारि वि [अपहारिन्] अपहारक, छीनने वाला ; (सुपा ५०३) ।

अवहारिय वि [अवधारित] निश्चित ; (स ५७६ ; पउम २३, ६ ; सुपा ३३१) ।

अवहाव सक [कृप्] दया करना, कृपा करना । अवहावेइ ; (षड् ; हे ४, १५१) । अवहावसु (कुमा) ।

अवहास पुं [अवभास] प्रकाश, तेज ; (गउड ; प्राप्र) ।

अवहासिणी स्त्री [अवहासिनी] नासा-रज्जु ; "मोत्तव्वे जोत्तअपग्गहम्मि अवहासिणी मुक्का" (गा ६६४) ।

अवहासिय वि [अवभासित] प्रकाशित ; (सुपा १४२)

अवहि देखो ओहि ; (सुपा ८६; ५७८; विसे ८२; ७३७) ।

अवहिट्ठ वि [दे] दर्पित, अभिमानी, गर्वित ; (षड्) ।

अवहिय वि [अपहृत] छीन लिया हुआ ; (पउम २०, ६६ ; सुर ११,३२ ; सुपा ४१३) ।

अवहिय वि [अवधृत] नियमित ; (विसे २६३३) ।

अवहिय वि [अवहित] सावधान, ख्याल-युक्त ; (पाअ ; महा ; गाया १, २ ; पउम १०, ६५ ; सुपा ४२३) । °मण वि [°मनस्] तल्लीन, एकाग्र-चित्त ; (सुपा ६) ।

अवहिय वि [रचित] निर्मित, बनाया हुआ ; (कुमा) ।

अवहीण वि [अवहीन] हीन, उतरता, कम दरजा वाला ; (नाट ; पि १२०) ।

अवहीय वि [अपधीक] निन्द्य बुद्धि वाला, दुर्बुद्धि ; (पण्ह १, २) ।

अवहीर सक [अव+धीरय्] अवज्ञा करना, तिरस्कार करना । अवहीरेइ ; (महा) । वकृ—अवहीरंत ; (सुपा ३१२) । कवकृ—अवहीरिज्जंत; (सुपा ३७६)। संकृ—अवहीरिऊण ; (महा) ।

अवहीरण न [अवधीरण] अवहेलना, तिरस्कार ; (गा १४६; अभि ६८ ; गउड) ।

अवहीरणा स्त्री [अवधीरणा] ऊपर देखो ; (से १३, १६ ; वेणी १८) ।

अवहीरमाण देखो अवहर=अप+हृ ।

अवहीरिअ वि [अवधीरित] अवज्ञात, तिरस्कृत; (से ११, ७ ; गउड) ।

अवहील देखो अवहीर । अवहीलइ ; (सण) ।

अवहेअ वि [दे] दया-योग्य, कृपा-पात्र ; (दे १, २२) ।

अवहेड सक [मुच्] छोड़ना, त्याग करना । अवहेडइ ; (हे ४, ९१) । संकृ—अवहेडिउं ; (कुमा) ।

अवहेडिय वि [दे] नीचे की तरफ मोड़ा हुआ, अवमोटित ; (उत्त १२) ।

अवहेरि } स्त्री [अवहेला] अवगणना, तिरस्कार ; (उप
अवहेरी } २६०, ५९७ टी ; भवि ; सुपा २६१ ; महा) ।

अवहेलअ वि [अवहेलक] तिरस्कारक ; (सुपा १०६) ।

अवहोअ पुं [दे] विरह, वियोग ; (षड्) ।

अवहोल अक [अव+होलय्] १ भूलना । २ संदेह करना । वकृ—अवहोलंत ; (गाया १, ८) ।

अवाइ वि [अपायिन्] १ दुःखी, २ दोषी, अपराधी ; "निब्भिच्चसच्चवाई होइ अवाई य नेहलोएवि" (सुपा २७५) ।

अवाईण वि [अवाचीन] अधो-मुख ; (गाया १, १) ।

अवाईण वि [अवातीन] वायु से अनुपहत; (गाया १, १)।

अवाउड वि [**अ-व्यापृत**] किसी कार्य में नहीं लगा हुआ; (उप पृ ३०२)।

अवाउड वि [**अप्रावृत**] अनाच्छादित, नग्न, दिगम्बर; (णाया १, १ ; ठा ५, १)।

अवाडिअ वि [**दे**] वञ्चित; प्रतारित ; (षड्)।

अवाण देखो **अपाण** ; (पाअ ; विपा १, ६)।

अवाय पुं [**अपाय**] १ अनर्थ, अनिष्ट ; (ठा १)। २ दोष, दूषण ; (सुर ४, १२०)। ३ उदाहरण-विशेष ; (ठा ४, ३)। ४ विनाश ; (धर्म १)। ५ वियोग, पार्थक्य ; (णंदि)। ६ संशय-रहित निश्चयात्मक ज्ञान-विशेष ; (ठा ४, ४ ; णंदि)। °**दंसि** वि [°**दर्शिन्**] भावी अनर्थों को जानने वाला ; (ठा ८ ; द ४६)। °**विजय** न [°**विचय**, °**विजय**] ध्यान-विशेष ; (ठा ४, २)।

अवाय पुं [**अवाय**] संशय-रहित निश्चयात्मक ज्ञान-विशेष, मति ज्ञान का एक भेद ; (ठा ४, ४ ; णंदि)।

अवाय वि [**अम्लान**] अ-म्लान, म्लानि-रहित ; ताजा ; "अवायमल्लमंडिया" (स ३७२)।

अवायाण न [**अपादान**] कारक-विशेष, स्थानान्तरी-करण ; (ठा ८ ; विसे २०६६)।

अवार वि [**अपार**] पार-रहित, अनन्त ; (मै ६८)।

अवार पुं [**दे**] दुकान, हाट ; (दे १, १२)।

अवारी स्त्री [**दे**] ऊपर देखो ; (दे १, १२)।

अवालुआ स्त्री [**दे**] होठ का प्रान्त भाग ; (दे १, २८)।

अवालुआ स्त्री [**अवालुका**] एक स्निग्ध द्रव्य ; (तंदु)।

अवाव पुं [**अवाप**] रसोई, पाक। °**कहा** स्त्री [°**कथा**] रसोई-संबन्धी कथा ; (ठा ४, २)।

अवास } **अवासें** } (अप) देखो **अवसें** ; (षड्)।

अवाह पुं [**अवाह**] देश-विशेष ; (इक)।

अवाहा देखो **अवाहा** ; (औप)।

अवि अ [**अपि**] निम्न-लिखित अर्थों का सूचक अव्यय ; १ प्रश्न ; (से ५, ४)। २ अवधारण ; निश्चय ; (आचा ; गा ५०२)। ३ समुच्चय ; (विसे ३५५१; भग १, ७)। ४ संभावना ; (विसे ३५४८ ; उत्त ३)। ५ विलाप ; (पाअ)। ६-७ वाक्य के उपन्यास और पादपूर्ति में भी इसका प्रयोग होता है ; (आचा ; पउम ८, १४६ ; षड्)।

अवि पुं [**अवि**] १ अज ; २ मेष ; (विसे १७७४)।

अविअ वि [**दे**] उक्त, कथित ; (दे १, १०)।

अविअ वि [**अवित**] रक्षित ; (दे ५, ३५)।

अविअ अ [**अपिच**] समुच्चय-द्योतक अव्यय ; (सुर २, २४६ ; भग ३, २)।

अविअ पुं [**अविक**] मेष, भेड़ ; (आचा)।

अविउ वि [**अवित्**] अज्ञ, मूर्ख ; (सद्वि ४६)।

अविउक्कंतिय वि [**अव्युत्क्रान्तिक**] उत्पत्ति-रहित ; (भग)।

अविउसरण न [**अव्युत्सर्जन**] अ-परित्याग, पास में रखना ; (भग)।

अविकरण न [**अविकरण**] गृहीत वस्तुओं को यथास्थान नहीं रखना ; (बृह ३)।

अविक्ख देखो **अवेक्ख**। अविक्खइ ; (महा)। हेकृ—**अविक्खिउं**; (स ३०७)। कृ—**अविक्खणिज्ज** (विसे १७१६)।

अविक्खग वि [**अपेक्षक**] अपेक्षा करने वाला ; (विसे १७१६)।

अविक्खण न [**अवेक्षण**] अवलोकन, निरीक्षण ; (भवि)।

अविक्खण न [**अपेक्षण**] अपेक्षा ; परवा ; (विसे १७१६)।

अविक्खा देखो **अवेक्खा** ; (कुमा)।

अविक्खिय वि [**अपेक्षित**] १ अपेक्षित ; २ न. अपेक्षा, परवा, "नाविक्खियं सभाए" (श्रा १४)।

अविक्खिय वि [**अवेक्षित**] अवलोकित ; (सुपा ७२)।

अविगइय वि [**अविकृतिक**] घृत आदि विकार-जनक वस्तुओं का त्यागी ; (सूअ २, २)।

अविगडिय वि [**अविकटित**] अनालोचित ; (वव १)।

अविगप्प देखो **अवियप्प** ; (सुर ४, १८६)।

अविगल वि [**अविकल**] अखण्ड, पूर्ण ; (उप २८३)।

अविगिच्छ वि [**अविचिकित्स्य**] जिसका इलाज न हो सके ऐसा, असाध्य व्याधि,

"तालपुडं गरलाणं, जह बहुवाहीण खित्तिओ वाही।
दोसाणमसेसाणं, तह अविगिच्छो मुसादोसो" (श्रा १२)।

अविगीय पुं [**अविगीत**] अगीतार्थ, शास्त्रों के रहस्य का अनभिज्ञ साधु ; (वव ३)।

अविग्गह वि [**अविग्रह**] १ शरीर-रहित ; २ युद्ध-रहित, कलह-वर्जित ; (सुपा २५४)। ३ सरल, सीधा ; (भग)।

°गइ स्त्री [°गति] अकुटिल गति ; (भग १४, ५)।
अविच्छ वि [अवीप्स्य] वीप्सा-रहित, व्याप्ति-रहित ; (पड्)।
अविजाणय वि [अविज्ञायक] अनजान, मूर्ख ; (सूत्र १, ५, १)।
अविज्ज वि [अवीज] वीज-शक्ति से रहित ; (पउम ११, २५)।
अविणय पुं [अविनय] विनय का अभाव ; (ठा ३, ३)।
अविणयवइ } पुं [दे] जार, उपपति ; (दे १, १८)।
अविणयवर }
अविणिद्द वि [अविनिद्र] निद्रा-विच्छेद-रहित ; (गा ६६)।
अविण्णा स्त्री [अविज्ञा] अनुपयोग, ख्याल का अभाव ; (सूत्र १, १, १)।
अवितह वि [अवितथ] सत्य, सच्चा ; (महा ; उव)।
अविद } अ [अविद, °दा] विषाद-सूचक अव्यय ;
अविदा } (पि २२ ; स्वप्न ५८)।
अविधि पुंस्त्री [अविधि] १ विरुद्ध विधि ; २ विधि का अभाव ; (बृह ३ ; आचू १)।
अविन्नाण वि [अविज्ञान] १ अजान। २ अज्ञात, अपरिचित ; (पउम ५, २१६)।
अवियड्ढ वि [अविदग्ध] अ-निपुण; (सुपा ५८२)।
अवियत्त न [अप्रीतिक] १ प्रीति का अभाव; (ठा १०)। २ वि. अप्रीति-कारक ; (पण्ह १, १)।
अवियत्त वि [अव्यक्त] अस्फुट, अस्पष्ट; " अवियत्तं दंसणं अणागारं " (सम्म ६५)।
अवियप्प वि [अविकल्प] १ भेद-रहित, " वंजणपज्जायस्स उ पुरिसो पुरिसो त्ति निच्चमवियप्पो " (सम्म ३५)। २ क्रिवि निःसंशय, संशय-रहित, " सविअप्पनिव्विअप्पं इय पुरिसं जो भणिज्ज अवियप्पं " (सम्म ३५)।
अवियाउरी स्त्री [दे. अविजनयित्री] वन्ध्या स्त्री ; (गाया १, २)।
अवियाणय देखो अविजाणय ; (आचा)।
अविरइ स्त्री [अविरति] १ विराम का अभाव, अ-निवृत्ति; २ पाप-कर्म से अनिवृत्ति ; (सम १०; पण्ह २, ५)। ३ हिंसा ; (कम्म ४)। ४ अब्रह्म, मैथुन; (ठा ६)। ५ विरति-परिणाम का अभाव ; (सूत्र २, २)। ६ वि विरति-रहित ; (नाट)। °वाय पुं [°वाद] १ अविरति की चर्चा ; २ मैथुन-चर्चा ; (ठा ६)।
अविरइय वि [अविरतिक) विरति से रहित, पाप-निवृत्ति से वर्जित, पाप-कर्म में प्रवृत्त ; (भग; कस)।
अविरत्त वि [अविरक्त] वैराग्य-रहित ; (णाया १, १४)।
अविरय वि [अविरत] १ विराम-रहित, अविच्छिन्न ; (गा १५५)। २ पाप-निवृत्ति से रहित ; (ठा २, १)। ३ चतुर्थ गुण-स्थानक वाला जीव ; (कम्म ४, ६३)। ४ क्रिवि. सदा, हमेशा ; (पाअ)। °सम्मद्दिट्ठि स्त्री [°सम्यग्दृष्टि] चतुर्थ गुण-स्थानक ; (कम्म २, २)।
अविरल वि [अविरल] निविड, घन ; (णाया १, १)।
अविरहि वि [अविरहिन्] विरह-रहित ; (कुमा)।
अविराम वि [अविराम] १ विराम-रहित। २ क्रिवि. निरन्तर, हमेशा ; (पाअ)।
अविराय वि [अविलीन] अभ्रष्ट ; (कुमा)।
अविराहिय वि [अविराधित] अ-खण्डित, आराधित ; (भग १५)।
अविरिय वि [अवीर्य] वीर्य-रहित ; (भग)।
अविल पुं [दे.] १ पशु ; २ वि. कठिन ; (दे १, ५२)।
अविलंबिय वि [अविलम्बित] विलम्ब-रहित, शीघ्र ; (कप्प)।
अविला स्त्री [अविला] मेषी, भेड़ी ; (पाअ)।
अविवेग पुं [अविवेक] १ विवेक का अभाव। २ वि. विवेक-रहित। °वंत वि [°वत्] अविवेकी ; (पउम ११३, ३६)।
अविसंधि वि [अविसंधि] पूर्वापर-विरोध से रहित, संगत, संबद्ध ; (औप)।
अविसंवाइ वि [अविसंवादिन्] विसंवाद-रहित, प्रमाण भूत, सत्य ; (कुमा ; सुर ६, १७८)।
अविसम वि [अविषम] सदृश, तुल्य ; (कुमा)।
अविसाइ वि [अविषादिन] विषाद-रहित ; (पण्ह २, १)।
अविसेस वि [अविशेष] तुल्य, समान ; (ठा २, ३ ; उप ८७७)।
अविसेसिय वि [अविशेषित (ठा १०)।
अविस्स न [अविश्र] मांस और रुधिर ; (पव ४०)।
अविस्साम वि [अविश्राम] १ विश्राम-रहित ; (पण्ह १, १)। २ क्रिवि. निरन्तर, सदा ; (उप ७२८ टी)।
अविहड पुं [दे] बालक, बच्चा ; (बृह १)।
अविवह वि [अविभव] दरिद्र ; (गउड)।

अविहवा स्त्री [**अविधवा**] जिसका पति जीवित हो वह स्त्री, सधवा ; (गाया १, १)।

अविहा देखो **अविदा** ; (अभि २२४)।

अविहाड वि [**अविघाट**] अ-विकट ; (वव ७)।

अविहाविअ वि [**दे**] १ दीन, गरीब ; १ न. मौन ; (दे १, ५६)।

अविहाविअ वि [**अविभावित**] अनालोचित ; (गउड)।

अविहि देखो **अविधि** ; (दस १)।

अविहिअ वि [**दे**] मत, उन्मत ; (षड्)।

अविहिंत वकृ [**अविघ्नत्**] नहीं मारता हुआ, हिंसा नहीं करता हुआ,

" वज्जेमिति परिणओ, संपत्तीए विमुचई वेरा।
अविहिंतावि न मुच्चइ, किलिट्ठभावोत्ति वा तस्स "
(ओघ ६०)।

अविहिंस वि [**अविहिंस**] अहिंसक ; (आचा)।

अविहिंसा स्त्री [**अविहिंसा**] अहिंसा ; (सूअ १, २, १)।

अविहीर वि [**अप्रतीक्ष**] प्रतीक्षा नहीं करने वाला ; (कुमा)।

अविहेडय वि [**अविहेटक**] आदर करने वाला ; (दस १०, १०)।

अवीइय अ [**अविविच्य**] अलग न हो कर ; (भग १०, २)।

अवीइय अ [**अविचिन्त्य**] विचार न कर; (भग १०,२)।

अवीय वि [**अद्वितीय**] १ असाधारण, अनुपम ; (कुमा)। २ एकाकी, असहाय ; (विपा १, २)।

अवुक्क सक [**वि+ज्ञपय्**] विज्ञप्ति करना, प्रार्थना करना। अवुक्कइ ; (हे ४, ३८)। वकृ—**अवुक्कंत** ; (कुमा)।

अवुड्ढ वि [**अवृद्ध**] तरुण, जवान ; (कुमा)।

अवुग्गह देखो **अविग्गह** ; (ठा ५, १)।

अवुह देखो **अवुह** ; (सण)।

अवूह देखो **अवोह** ; (णाया १, १)।

अवे सक [**अव+इ**] जानना। अवेसि ; (विसे १७७३)।

अवे अक [**अप+इ**] दूर होना, हटना। अवेइ ; (स २०)। अवेह ; (मुद्रा १६१)।

अवेक्ख सक [**अप+ईक्ष्**] अपेक्षा करना। अवेक्खइ ; (महा)।

अवेक्ख सक [**अव+ईक्ष्**] अवलोकन करना। अवेक्खाहि; (स ३१७)। संकृ—**अवेक्खिऊण** ; (स ५२७)।

अवेक्खा स्त्री [**अपेक्षा**] अपेक्षा, परवा ; (सुर ३, ... स ५६२)।

अवेक्खि वि [**अपेक्षिन्**] अपेक्षा करने वाला ; (गउड)।

अवेक्खिय वि [**अपेक्षित**] जिसकी अपेक्षा हुई हो वह ; (अभि २१६)।

अवेक्खिय वि [**अवेक्षित**] अवलोकित ; (अभि १६६)।

अवेय वि [**अपेत**] रहित, वर्जित ; (विसे २२१)। °**रुइ** वि [°**रुचि**] रुचि-रहित, निरीह ; (उप ७२८)।

अवेय } वि [**अवेद**, °**क**] १ पुरुष-वेदादि वेद-रहित ; (पण्ण १)। २ मुक्त, मोक्ष-प्राप्त ; (ठा २, १)।
अवेयग }

अवेसि देखो **अंबेसि** ; (दे १, ८ ; पाअ)।

अवोअड वि [**अव्याकृत**] अव्यक्त, अस्पष्ट ; (... ७६)।

अवोच्छिण्ण देखो **अव्वोच्छिण्ण** ; (आचा)।

अवोच्छित्ति देखो **अव्वोच्छित्ति** ; (ठा ५, ३)।

अवोह सक [**अप+ऊह्**] १ विचार करना। २ ... करना। अवोहए ; (आवम)।

अवोह पुं [**अपोह**] १ विकल्प-ज्ञान, तर्क-विशेष। ... त्याग, वर्जन ; (उप ६६७)। ३ निर्णय, निश्चय ; (णंदि)।

अव्वईभाव पुं [**अव्ययीभाव**] व्याकरण-प्रसिद्ध ... समास ; (अणु)।

अव्वंग वि [**अव्यङ्ग**] अक्षत, अखण्ड ; (वव ७)।

अव्वक्खित्त वि [**अव्याक्षिप्त**] १ विक्षेप-रहित ; ... तल्लीन, एकाग्र ; (उत्त २०)।

अव्वग्ग वि [**अव्यग्र**] व्यग्रता-शून्य, अनाकुल ; (उत्त १५)।

अव्वत्त } वि [**अव्यक्त**] १ अस्पष्ट, अस्फुट ; (... ७६८ टी ; सुर ४, २१४ ; श्रा २७)। २ छोटी उमर का वालक, बच्चा ; (निचू १८)। ३ अगीतार्थ, शास्त्र-रहस्यानभिज्ञ (साधु) ; (धर्म २ ; आचा)। ४ पुं. अव्यक्त मत का प्रवर्तक एक जैनाभास मुनि ; (ठा ७)। ५ न. सांख्य मत में प्रसिद्ध प्रकृति ; (आवम)। ... [°**मत**] एक जैनाभास मत ; (विसे)।
अव्वत्तय }

अव्वत्तिय देखो **अवत्तिय** ; (औप ; विसे ; आवम)।

अव्वय न [**अव्रत**] १ व्रत का अभाव ; (श्रा ... सम १२४)। २ वि. व्रत-रहित ; (विसे २५४२)।

अव्वय वि [अव्यय] १ अक्षय, अखूट ; (सुपा ३२१)। २ नित्य, शाश्वत ; (भग २, १)।

अव्ववसिय वि [अव्यवसित] १ अनिश्चित, संदिग्ध। २ अपराक्रमी ; (ठा ३, ४)।

अव्वसण न [अव्यसन] १ व्यसन-रहित ; २ लोकोत्तर रीति से १२ वाँ दिन ; (जं ७)।

अव्वह वि [अव्यथ] १ व्यथा-रहित। २ न. निश्चल ध्यान ; (ठा ४, १ ; औप)।

अव्वहिय वि [अव्यथित] १ अपीडित ; (पंचा ५)। २ निश्चल ; (बृह १)।

अव्वा स्त्री [दे. अम्बा] माता, जननी ; (दे १, ५ ; षड्)।

अव्वाइद्ध वि [अव्याविद्ध] १ अ-विपर्यस्त, अ-विपरीत। २ न. सूत्र का एक गुण, अक्षरों की उलट-पुलट का अभाव ; (बृह १ ; गच्छ २)।

अव्वागड वि [अव्याकृत] अ-व्यक्त, अस्फुट ; (आचा ; सत ६ टी)।

अव्वाण वि [आव्यान] थोड़ा स्निग्ध ; (ओघ ४८८)।

अव्वाबाह वि [अव्याबाध] १ हरज-रहित, बाधा-वर्जित ; (आव ३)। २ न. रोग का अभाव ; (भग १८, १०)। ३ सुख ; (आवम)। ४ मोक्ष-स्थान, मुक्ति ; (भग १, १)। ५ पुं. लोकान्तिक देव-विशेष ; (णाया १, ८)।

अव्वावड वि [अव्यापृत] १ जो व्यवहार में न लाया गया हो, व्यापार-रहित। २ एक प्रकार का वास्तु ; (बृह ३)।

अव्वावन्न वि [अव्यापन्न] अ-विनष्ट, नाश को अप्राप्त ; (भग १, ७)।

अव्वावार वि [अव्यापार] व्यापार-वर्जित ; (स ५०)।

अव्वाहय वि [अव्याहत] १ रुकावट-वर्जित ; (ठा ४, ४ ; सुपा ८६)। २ अनुपहत, आघात-रहित ; (णंदि)।

°पुव्वावरत्त न [°पूर्वापरत्व] जिसमें पूर्वापर का विरोध या असंगति न हो ऐसा (वचन) ; (राय)।

अव्वाहार पुं [अव्याहार] नहीं बोलना; मौन ; (पाअ)।

अव्वाहिय वि [अव्याहूत] नहीं बुलाया हुआ ; (जीव ३ ; आचा)।

अव्विरय वि [अविरत] विरति-रहित ; (सट्ठि ८)।

अव्वो अ नीचे के अर्थों में से, प्रकरण के अनुसार, किसी एक अर्थ का सूचक अव्यय ;—१ सूचना ; २ दुःख ; ३ संभाषण ; ४ अपराध ; ५ विस्मय ; ६ आनन्द ; ७ आदर ; ८ भय ; ६ खेद ; १० विषाद ; ११ पश्चात्ताप ;

"अव्वो हरंति हिययं, तहवि न वेसा हवंति जुवईण।
अव्वो किंपि रहस्सं, मुणंति धुत्ता जणब्भहिआ ॥
अव्वो सुपहायमिणं,अव्वो अज्जम्ह सप्फलं जीअं।
अव्वो अइअम्मि तुमे, नवरं जइ सा न जूरिहिइ ॥"
(हे २, २०४)।

अव्वोगड वि [अव्याकृत] १ अविशेषित ; (बृह २)। २ फैलाव-रहित ; (दसा ३)। ३ नहीं बांटा हुआ ; ४ अस्फुट, अस्पष्ट ; ५ न. एक प्रकार का वास्तु ; (बृह ३)।

अव्वोच्छिण्ण वि [अव्युच्छिन्न, अव्यवच्छिन्न] १ आन्तर-रहित, सतत, विच्छेद-वर्जित ; (वव ७)। २ नित्य ; ३ अव्याहत; (गउड)।

अव्वोच्छित्ति स्त्री [अव्युच्छित्ति, अव्यवच्छित्ति] १ सातत्य, प्रवाह, बीचमें विच्छेद का अभाव, परंपरा से बराबर चला आना ; (आवम)। °नय पुं [°नय] वस्तु को किसी न किसी रूप से स्थायी मानने वाला पक्ष, द्रव्यार्थिक नय ; (भग ७, ३)

अव्वोच्छिन्न देखो अव्वोच्छिण्ण ; (ओघ ३२२ ; स २५६)।

अव्वोयड देखो अव्वोगड ; (भग १०, ४ ; भास ७१)।

अस सक [अश्] व्याप्त करना। असइ, असए ; (षड्)।

अस अक [अस्] होना। अस्सि, "हाहा हओहमस्सि त्ति कट्टु" (भग १५)। अंसि ; (प्राप)। अत्थि ; (हे ३, १४६ ; १४७ ; १४८)। भूका—आसि, आसी; (भग ; उवा)।

अस सक [अश्] भोजन करना, खाना। असइ ; "भक्ख-मणोसालूरं नासइ दोसोवि जत्थाहो ; (सार्ध १०६ ; भवि)। वकृ—असंत ; (भवि)। कृ—असियव्व , (सुपा ४३८)।

अस वकृ [असत्] अविद्यमान, असत् ; " दुहओ ण विण-स्संति, नो य उप्पज्जए असं " (सूअ १, १, १, १६)।

असइ स्त्री [असृति] १ उलटा रखा हुआ हस्त तल ; २ धान्य मापने का एक परिमाण; ३ उससे मापा हुआ धान्य; (अणु ; णाया १, ७)।

असइ स्त्री [दे. असत्त्व] अभाव, अ-विद्यमानता,
" पढमं जईण दाऊण, अप्पणा पणमिऊण पारेइ।
असईय सुविहियाणं, भुंजेइ य कयदिसालोओ " (उवा)।

असइ } अ [असकृत्] अनेक वार, वारंवार ; (भवि ;
असइं } आचा ; उप ८३३ टी)।
असई }

असई स्त्री [असती] १ कुलटा, व्यभिचारिणी स्त्री ; (सुपा ६)। २ दासी ; (भग ८, ६)। °पोस पुं [°पोष] धन के लिए दासी, नपुंसक या पशुओं का पालन, " असई-पासं च वज्जिज्जा " (श्रा २२)। °पोसणया स्त्री [°पोषणा] देखो अनन्तरोक्त अर्थ ; (पडि)।

असउण पुंन [अशकुन] अपशकुन ; (पंचा ७)।

असंक वि [अशङ्क] १ शङ्का-रहित, अ-संदिग्ध। २ निडर, निर्भय ; (आचा ; सुर २, २६)।

असंकल वि [अशृङ्खल] शृङ्खला-रहित, अनियन्त्रित ; (कुमा)।

असंकि वि [अशङ्किन्] संदेह नहीं करने वाला ; (सूअ १, १, २)।

असंकिलिट्ठ वि [असंक्लिष्ट] १ संक्लेश-रहित ; २ विशुद्ध, निर्दोष; (औप ; पण्ह २, १)।

असंख वि [असंख्य] संख्या-रहित, परिमाण-रहित ; (सुपा ५६६ ; जी २७ ; ४०)।

असंख न [असंख्य] सांख्य-मत से भिन्न दर्शन ; (सुपा ५६६)।

असंखड न [दे] कलह, झगड़ा; (निचू १)।

असंखडिय वि [दे] कलह करने वाला, झगडाखोर ; (बृह १)।

असंखय देखो असंख=असंख्य ; (सं ८५)।

असंखय वि [असंस्कृत] १ संस्कार-हीन। २ संधान करने को अशक्य ; (राज)।

असंखिज्ज वि [असंख्येय] गिनती या परिमाण करने को अशक्य ; (नव ३५)।

असंखिज्जय देखो असंखेज्जय ; (अणु)।

असंखेज्ज देखो असंखिज्ज ; (भग)।

असंखेज्जइ° वि [असंख्येय] असंख्यातवाँ। °भाग पुं [°भाग] असंख्यातवाँ हिस्सा ; (औप ; भग)।

असंखेज्जय पुंन [असंख्येयक] गणना-विशेष ; (अणु)।

असंग वि [असङ्ग] १ निस्सङ्ग, अनासक्त; (पण्ण २)। २ पुं. आत्मा; (आचा)। ३ मुक्त जीव। ४ न. मोक्ष, मुक्ति ; (पंचव ३ ; औप)।

असंगय न [दे] वस्त्र, कपड़ा , (दे १, ३४)।

असंगहिय वि [असंगृहीत] १ जिसका संग्रह न किया गया हो वह ; २ अनाश्रित ; (ठा ८)।

असंगहिय वि [असंग्रहिक] १ संग्रह नहीं करने वाला; २ पुं. नैगम नय का एक भेद ; (विसे)।

असंगिअ पुं [दे] १ अश्व, घोडा ; २ वि. अनवस्थित, चञ्चल ; (दे १, ५५)।

असंघयण वि [असंहनन] १ संहनन से रहित। २ वज्रऋषभनाराच आदि प्राथमिक तीन संघयणों से रहित; (निचू २०)।

असंजण न [असञ्जन] निःसङ्गता, अनासक्ति; (निचू १)

असंजम वि [असंयम] १ हिंसा, झूठ आदि सावद्य अनुष्ठान ; (सूअ १, १३)। २ हिंसा आदि पाप-कार्यों से अनिवृत्ति ; (धर्म ३)। ३ अज्ञान ; (आचा)। ४ असमाधि ; (वव १)।

असंजय वि [असंयत] १ हिंसा आदि पाप कार्यों से अनिवृत्त; (सूअ १, १०)। २ हिंसा आदि करने वाला; (भग ६, ३)। ३ पुं. साधु-भिन्न, गृहस्थ ; (आचा)।

असंजल पुं [असंज्वल] ऐरवत वर्ष के एक जिन-देव का नाम ; (सम १५३)।

असंजोगि वि [असंयोगिन्] १ संयोग-रहित। २ पुं. मुक्त जीव, मुक्तात्मा ; (ठा २, १)।

असंत वकृ [असत्] १ अविद्यमान ; (नव ३३)। २ झूठ, असत्य ; (पण्ह १, २)। ३ असुंदर, अचारु; (पण्ह २, २)।

असंत देखो अस=अश्।

असंत वि [अशान्त] शान्त नहीं, क्रुद्ध ; (पण्ह २, ३)।

असंत वि [असत्त्व] सत्त्व-रहित, बल-शून्य; (पण्ह १, २)।

असंथड वि [दे. असंस्तृत] अशक्त, असमर्थ; (आचा ; बृह ५)।

असंथरंत वकृ [दे. असंस्तरत्] १ समर्थ नहीं होता हुआ; २ खोज नहीं करता हुआ ; (वव ४)। ३ तृप्त नहीं होता हुआ ; (ओघ १८२)।

असंथरण न [दे. असंस्तरण] १ निर्वाह का अभाव; (बृह १)। २ पर्याप्त लाभ का अभाव ; (पंचव ३)। ३ असमर्थता, अशक्त अवस्था ; (धर्म ३; निचू १)।

असंथरमाण वकृ [दे. असंस्तरमाण] देखो असंथरंत; (वव ४ ; ओघ १८१)।

असंधिम वि [असंधिम] संधान-रहित, अखण्ड ; (बृह ५)।
असंभव्व वि [असंभाव्य] जिसकी संभावना न हो सके ऐसा ; (श्रा १२)।
असंभावणीय वि [असंभावनीय] ऊपर देखो ; (महा)।
असंलप्प वि [असंलप्य] अनिर्वचनीय ; (अणु)।
असंलोय पुं [असंलोक] १ अ-प्रकाश। २ वह स्थान जिसमें लोगों का गमनागमन न हो, भीड़-रहित स्थान ; (आचा)।
असंवर पुं [असंवर] आश्रव, संवर का अभाव ; (ठा ५, २)।
असंवरीय वि [असंवृत] १ अनाच्छादित। २ नहीं रुका हुआ ; (कुमा)।
असंवुड वि [असंवृत] असंयत, पाप-कर्म से अनिवृत्त ; (सूत्र १, १, ३)।
असंसइय वि [असंशयित] अ-संदिग्ध; (सूत्र २, २)।
असंसट्ठ वि [असंसृष्ट] १ दूसरे से नहीं मिला हुआ ; (बृह २)। २ लेप-रहित ; (औप)। ३ स्त्री. पिंडैषणा का एक भेद ; (पव ६६)।
असंसत्त वि [असंसक्त] १ अ-मिलित ; (उत्त २)। २ अनासक्त ; (दस ८ ; उत्त ३)।
असंसय वि [असंशय] १ संशय-रहित ; (बृह १)। २ क्रिवि. निःसंदेह, नक्की ; (अभि ११०)।
असंसार पुं [असंसार] संसार का अभाव, मोक्ष ; (जीव १)।
असंसि वि [अस्रंसिन्] अ-विनश्वर ; (कुमा)।
असक्क वि [अशक्य] जिसको न कर सके वह ; (सुपा ६५१)।
असक्क वि [अशक्त] असमर्थ ; (कुमा)।
असक्कय वि [असंस्कृत] संस्कार-रहित ; (पण्ह १, २)।
असक्कय वि [असत्कृत] सत्कार-रहित ; (पण्ह १, २)।
असक्कणिज्ज वि [अशकनीय] अशक्य ; (कुमा)।
असग्गाह, असंगह, असग्गाह } पुं [असद्ग्रह] १ कदाग्रह ; (उप ६७२ ; सुपा १३४)। २ अति-निर्बन्ध, विशेष आग्रह ; (भवि)।

असच्च न [असत्य] १ झूठ वचन ; (प्रासू १५१)। २ वि. झूठा ; (पण्ह १, २)। °मोस न [°मृष] झूठ से मिला हुआ सत्य ; (द्र २२)। °वाइ वि [°वादिन्] झूठ बोलने वाला ; (सम ५० ; पउम ११, ३४)। °ामोस न [°ामृष] नहीं सत्य और नहीं झूठ ऐसा वचन ; (आचा)। °ामोसा स्त्री [°ामृषा] देखो अनन्तरोक्त अर्थ ; (पंच १)। °संध वि [°संध] १ असत्य- प्रतिज्ञ ; २ असत्य अभिप्राय वाला ; (महा ; पण्ह १, २)।
असज्ज, असज्जमाण } वकृ [असजत्] संग नहीं करता हुआ ; (आचा ; उत्त १४)।
असज्झाइय वि [अस्वाध्यायिक] पठन-पाठन का प्रतिबन्धक कारण ; (पव २६८)।
असड्ढ वि [अश्रद्ध] श्रद्धा-रहित ; (कुमा)।
असढ वि [अशठ] सरल, निष्कपट ; (सुपा ५५०)। °करण वि [°करण] निष्कपट भाव से अनुष्ठान करने वाला ; (बृह ६)।
असण न [अशन] १ भोजन, खाना ; (निचू ११)। २ जो खाया जाय वह, खाद्य पदार्थ ; (पव ४)।
असण पुं [असन] १ बीजक-नामक वृक्ष ; (पण्ण १ ; गाया १, १ ; औप ; पाअ ; कुमा)। २ न. क्षेपण, फेंकना ; (विसे २७६५)।
असणि पुंस्त्री [अशनि] १ वज्र ; (पाअ)। २ आकाश से गिरता अग्नि-कण ; (पण्ण १)। ३ वज्र का अग्नि ; (जी ६)। ४ अग्नि ; (स ३३२)। ५ अस्त्र-विशेष ; (स ३८५)। °प्पह पुं [°प्रभ] रावण के मामा का नाम ; (से १२,६१)। °मेह पुं [°मेघ] १ वह वर्षा जिसमें ओले गिरते हैं ; २ अति भयंकर वर्षा, प्रलय-मेघ ; (भग ७, ६)। °वेग पुं [°वेग] विद्याधरों का एक राजा ; (पउम ६, १५७)।
असणी स्त्री [अशनी] एक इन्द्राणी ; (ठा ४, १)।
असण्ण वि [असंज्ञ] संज्ञा-रहित, अचेतन ; (लहुअ ६)।
असण्णि वि [असंज्ञिन्] १ संज्ञि-भिन्न, मनो-ज्ञान से रहित (जीव) ; (ठा २, २)। २ सम्यग्दृष्टि-भिन्न, जैनेतर ; (भग १, २)। °सुय न [°श्रुत] जैनेतर शास्त्र ; (णंदि)।
असत्त वि [अशक्त] असमर्थ ; (सुर ३, ३४४ ; ९, १५५)।

असत्त वि [**असक्त**] अनासक्त ; (आचा)।

असत्त न [**असत्त्व**] अभाव, असत्ता ; (णंदि)।

असत्ति स्त्री [**अशक्ति**] सामर्थ्य का अभाव। °**मंत** वि [°**मत्**] असमर्थ, अशक्त ; (पउम ६६, ३६)।

असंत्थ वि [**अस्वस्थ**] अ-तंदुरस्त, बिमार ; (सुर ३, १२७)।

असत्थ न [**अशस्त्र**] १ शस्त्र-भिन्न। २ संयम, निर्दोष अनुष्ठान ; (आचा)।

असद्द पुं [**अशब्द**] १ अ-कीर्ति, अपयश ; (गच्छ २)। २ वि. शब्द-रहित ; (वृह ३)।

असद्ध वि [**अश्रद्ध**] श्रद्धा-रहित। स्त्री—°**द्धी** ; (उप पृ ३६४)।

असन्नि देखो **असण्णि** ; (भग ; जी ४३)।

असबल वि [**अशबल**] १ अमिश्रित ; २ निर्दोष, पवित्र ; (पण्ह २, १)।

असब्भ वि [**असभ्य**] अशिष्ट, जंगली ; (स ६५०)। °**भासि** वि [**भाषिन्**] असभ्य-भाषी ; (सुर ६, २१५)।

असब्भाव पुं [**असद्भाव**] १ यथार्थता का अभाव, भूठ ; (पिंड)। २ वि. असत्य, अ-यथार्थ ; (उत्त ३ ; औप)।

असब्भावि वि [**असद्भाविन्**] भूठा, असत्य ; (महा)।

असब्भूय वि [**असद्भूत**] असत्य ; (भग)।

असम वि [**असम**] १ अ-समान, अ-साधारण ; (सुर ३, २४)। २ एक, तीन, पांच आदि एकाई संख्या वाला, विषम। °**सर** पुं [°**शर**] कामदेव ; (गउड)।

असमवाइ न [**असमवायिन्**] नैयायिक और वैशेषिक मत प्रसिद्ध कारण-विशेष ; (विसे २०९९)।

असमंजस वि [**असमञ्जस**]१ अव्यवस्थित, गैरव्याजवी ; (आचा ; सुर २, १३१ ; सुपा ६२३ ; उप १०००)। २ क्रिवि. अव्यवस्थित रूप से ; (पाअ)।

असमिक्खिय वि [**असमीक्षित**] अनालोचित, अविचारित ; (पण्ह १, २)। °**कारि** वि [°**कारिन्**] साहसिक। °**कारिया** स्त्री [°**कारिता**] साहस कर्म ; (उप ७६८ टी)।

असरासय वि [**दे**] निर्दय, निष्ठुर हृदय वाला ; (दे १, ४०)।

असव पुं [**असु**] प्राण, "विउत्तासवो विश्र ठिश्रो कंचि कालं" (स ३५७)।

असवण्ण वि [**असवर्ण**] असमान, असाधारण ; (सण्ण)।

असह वि [**असह**] १ असहिष्णु ; (कुमा ; सुपा ६३०)। २ असमर्थ ; (वव १)। ३ खेद करने वाला ; (पाअ)।

असहण वि [**असहन**] असहिष्णु, क्रोधी ; (पाअ)।

असहाय वि [**असहाय**] १ सहाय-रहित ; (भग)। २ एकाकी ; (वृह ४)।

असहिज्ज वि [**असाहाय्य**] १ सहायता-रहित। २ सहायता का अनिच्छुक ; (उवा)।

असहीण वि [**अस्वाधीन**] परतन्त्र, पराधीन ; (दस ८)।

असहु वि [**असह**] १ असहिष्णु ; (उव)। २ असमर्थ, अशक्त ; (ओघ ३६ भा)। ३ बिमार, ग्लान ; (निचू १)। ४ सुकुमार, कोमल ; (ठा ३, ३)।

असहेज्ज देखो **असहिज्ज** ; (भग)।

असागारिय वि [**असागारिक**] गृहस्थों के आवागमन से रहित स्थान ; (वव ३)।

असाढय न [**असाढक**] तृण-विशेष ; (पण्ण १—पत्र ३३)।

असाय न [**असात**] दुःख, पीड़ा ; (पण्ह १, १)। "रागंधा इह जीवा, दुल्लहलोयम्मि गाढ़मणुरत्ता। जं वेइंति असायं, कत्तो तं हंदि नरएवि" (सुर ८,७६)। °**वेयणिज्ज** न [°**वेदनीय**] दुःख का कारण-भूत कर्म ; (ठा २, ४)।

असार, **असारय** } वि [**असार**, °**क**] निंस्सार सार-रहित ; (महा ; कुमा)।

असारा स्त्री [**दे**] कदली-वृक्ष, केला का पेड़ ; (दे १, १२)।

असासय वि [**अशाश्वत**] अनित्य, विनश्वर ; (गाया १, १ ; गा २४७)।

असाहण न [**असाधन**] असिद्धि ; (सुर ४, २४८)।

असाहारण वि [**असाधारण**] अतुल्य, अनुपम ; (भग ; दंस)।

असि पुं [**असि**] १ खड्ग, तलवार ; (पाअ)। २ इस नाम की नरकपाल देवों की एक जाति ; (भग ३, ६)। ३ स्त्री. बनारस की एक नदी का नाम ; (ती ३८)। °**कुंड** न [°**कुण्ड**] मथुरा का एक तीर्थ-स्थान ; (ती ६)। °**घाय** पुं [°**घात**] तलवार का घाव ; पउम ५६, २५)। °**चम्मपाय** न [°**चर्मपात्र**] तलवार की म्यान, कोश ; (भग ३, ५)। °**धारा** स्त्री [°**धारा**]

तलवार की धार ; (उत्त १६) । °धेणु, °धेणुआ स्त्री [°धेनु, °धेनुका] छुरी ; (गउड ; पाअ) । °पत्त न [°पत्र] १ तलवार ; (विपा १, ६) । २ तलवार के जैसा तीक्ष्ण पत्न ; (भग ३, ६) । ३ तलवार की पतरी ; (जीव ३) । ४ पुं. नरकपाल देवों की एक जाति ; (सम २६) । °पुत्तगा स्त्री [°पुत्रिका] छुरी ; (उप पृ ३३४) । °मुट्ठि स्त्री [°मुष्टि] तलवार की मूठ ; (पाअ) । °रयण न [°रत्न] चक्रवर्ती राजा की एक उत्तम तलवार ; (ठा ७) । °लट्ठि स्त्री [°यष्टि] खड्ग-लता, तलवार ; (विपा १, ३) । °वण न [°वन] खड्गाकार पत्ती वाले वृक्षों का जंगल ; (पगह १, १) । °वत्त देखो °पत्त ; (से ३, ४२) । °हर वि [°धर] तलवार-धारक, योद्धा ; (से ६, १८) । °हारा देखो °धारा ; (उव) ।

असिइ (अप) देखो असीइ ; (सण) ।

असिण न [अशन] भोजन, खाना ; "अग्गपिंडं परिट्ठविज्ज-माणं पेहाए, पुरा असिणा इवा अवहारा इवा " (आचा २, १, ५, १) ।

असिद्ध वि [असिद्ध] १ अ-निष्पन्न । २ तर्कशास्त्र-प्रसिद्ध दुष्ट हेतु ; (विसे २८२४) ।

असिय वि [अशित] भुक्त, खादित ; (पाअ ; सुपा २१२) ।

असिय वि [असित] १ कृष्ण, अ-श्वेत ; (पाअ) । २ अशुभ ; (विसे) । ३ अबद्ध, अ-यन्त्रित ; (सूअ १, ३, १) । "सिया एगे अणुगच्छंति, असिया एगे अणु-गच्छंति ; (आचा) । °क्ख पुं [°क्ष] यक्ष-विशेष ; (सण) ।

असिय न [दे] दात्र, दाँती ; (दे १, १४) ।

असियव्व देखो अस=अश् ।

असिलेसा स्त्री [अश्लेषा] नक्षत्र-विशेष ; (सम ११) ।

असिलोग पुं [अश्लोक] अकीर्ति, अजस ; (सम १२) ।

असिव न [अशिव] १ विनाश ; २ असुख ; ३ देवतादि कृत उपद्रव ; (ओघ ७) । ४ मारी रोग ; (वव ४) ।

असिविण पुं [अस्वप्न] देव, देवता ; (प्रामा) ।

असिव्व देखो असिव ; (वव ७ ; प्राप्र) ।

असिह वि [अशिख] शिखा-रहित ; (वव ४) ।

असीइ स्त्री [अशीति] संख्या-विशेष, अस्सी, ८० ; (सम ८८) । °म वि [°तम] अस्सीवाँ, ८० वाँ ; (पउम ८०, ७४) ।

असीम वि [असीमन्] निस्सीम ; "असीमंतभत्तिराएण " (उप ७२८ टी) ।

असील वि [अशील] १ दुःशील, असदाचारी ; (पगह १, २) । २ न. असदाचार, अ-ब्रह्मचर्य । °मंत वि [°वत्] १ अब्रह्मचारी; (ओघ ७७७) । २ अ-संयत ; (सूअ १,७) ।

असु पुं. व [असु] १ प्राण ; (स ३८३) । २ न. चित्त ; ३ ताप ; (प्राप्र ; वृष ५१) ।

असु देखो अंसु ; (प्राप्र) ।

असुइ वि [अशुचि] १ अपवित्र, अ-स्वच्छ, मलिन ; (औप ; वव ३) । २ न. अमेध्य, विष्ठा ; (ठा ६ ; प्रासू १६६) ।

असुइ वि [अश्रुति] शास्त्र-श्रवण-रहित ; (भग ७, ६) ।

असुईकय वि [अशुचीकृत] अपवित्र किया हुआ ; (उप ७२८ टी) ।

असुग पुं [असुक] देखो असु=असु ; (हे १,१७७) ।

असुज्झंत वि [अ-दृश्यमान] नहीं दिखाता हुआ, "अन्नंपि जं असुज्झंतं । भुंजंतएण रत्तिं" (पउम १०३, २५) ।

असुणि वि [अश्रोतृ] नहीं सुनने वाला, "अलियपयंपिरि अणिमित्तकोवणे असुणि सुणसु मह वयणं" (वज्जा ७२) ।

असुद्ध वि [अशुद्ध] १ अस्वच्छ, मलिन । २ न. मैला, अशुचि । °विसोहय पुं [°विशोधक] भंगी, मेहतर ; (सुर १६, १६५) ।

असुभ देखो असुह=अशुभ ; (सम ६७ ; भग) ।

असुय वि [अश्रुत] नहीं सुना हुआ ; (ठा ४, ४) । °णिस्सिय न [°निश्रित] शास्त्र-श्रवण के विना ही होने वाली बुद्धि—ज्ञान ; (णंदि) । °पुव्व वि [°पूर्व] पहले कभी नहीं सुना हुआ ; (महा ; णाया १, १ ; पउम ६५, १४) ।

असुय वि [असुत] पुत्र-रहित ; (उत्त २) ।

असुर पुं [असुर] १ दैत्य, दानव ; (पाअ) । २ देवजाति-विशेष, भवनपति और व्यन्तर देवों की जाति ; (पगह १, ४) । ३ दास-स्थानीय देव ; (आउ ३६) । °कुमार पुं [°कुमार] भवनपति देवों की एक अवान्तर जाति ; (ठा १, १ ; महा) । °राय पुं [°राज] असुरों का इन्द्र ; (पि ४००) । °वंदि पुं [°वन्दिन्] राक्षस ; (से ६, ५०) ।

असुरिंद पुं [**असुरेन्द्र**] असुरों का राजा, इन्द्र-विशेष ; (गाया १, ८ ; सुपा ७७)।

असुह न [**अशुभ**] १ अ-मंगल, अनिष्ट ; (सुर ४, १९३)। २ पाप-कर्म ; (ठा ४, ४)। ३ वि. खराब, अ-सुन्दर ; (जीव १ ; कुमा)। °**णाम** न [°**नामन्**] अशुभ फल देने वाला कर्म-विशेष ; (सम ६७)।

असुह न [**असुख**] दुःख ; (ठा ३, ३)।

असूअ सक [**असूय्**] असूया करना। असूएहि ; (मै ७)।

असूया स्त्री [**असूचा**] १ सूचना का अभाव। २ दूसरे के दोषों को न कह कर अपना ही दोष कहना; (निचू १०)।

असूया स्त्री [**असूया**] असूया, असहिष्णुता ; (दंस)।

असूरिय वि [**असूर्य**] १ सूर्य-रहित, अन्धकार-मय स्थान। २ पुं. नरक-स्थान ; (सूअ १, ५, १)।

असेव्व देखो **असिव** ; (प्राप्र)।

असेव्व वि [**असेव्य**] सेवा के अयोग्य ; (गउड)।

असेस वि [**अशेष**] निःशेष, सर्व ; (प्राप)।

असोग पुं [**अशोक**] १ सुप्रसिद्ध वृक्ष-विशेष ; (औप)। २ महाग्रह-विशेष ; (ठा २,३)। ३ हरा रंग ; (राय)। ४ भगवान् मल्लिनाथ का चैत्य-वृक्ष ; (सम १५२)। ५ देव-विशेष ; (जीव ३)। ६ न. तीर्थ-विशेष ; (ती १०)। ७. यक्ष-विशेष ; (विपा १, ३)। ८ वि. शोक-रहित। °**चंद** पुं [°**चन्द्र**] १ राजा श्रेणिक का पुत्र, राजा कोणिक; (आवम)। २ एक प्रसिद्ध जैनाचार्य ; (सार्ध ७७)। °**ललिय** पुं [°**ललित**] चतुर्थ बलदेव का पूर्व-जन्मीय नाम ; (सम १५३)। °**वण** न [°**वन**] अशोक वृक्षों वाला वन; (भग)। °**वणिया** स्त्री [°**वनिका**] अशोक वृक्ष वाला बगीचा; (णाया १, १६)। °**सिरि** पुं [°**श्री**] इस नाम का एक प्रख्यात राजा, सम्राट् अशोक ; (विसे ८६२)।

असोगा स्त्री [**अशोका**] १ इस नाम की एक इन्द्राणी ; (ठा ४, १)। २ भगवान् श्रीशीतलनाथ की शासन-देवी; (पव २७)। ३ एक नगरी का नाम ; (पउम २०, १८९)।

असोभण वि [**अशोभन**] अ-सुन्दर, खराब ; (पउम ६६, १९)।

असोय देखो **असोग** ; (भग ; महा ; रंभा)।

असोय पुं [**अश्वयुक्**] आश्विन मास ; (सम २९)।

असोय वि [**अशौच**] १ शौच-रहित ; (महा)। २ न. शौच का अभाव ; अशुचिता। °**वाइ** वि [°**वादिन्**] अशौच को ही मानने वाला ; (ओघ ३१८)।

असोयणया स्त्री [**अशोचनता**] शोक का अभाव ; (पक्खि)।

असोया देखो **असोगा** ; (ठा २, ३ ; संति ६)।

असोल्लिय वि [**अपक्व**] कच्चा ; (उवा)।

असोहि स्त्री [**अशोधि**] १ अशुद्धि ; २ विराधना ; (ओघ ७८८)। °**ठाण** न [°**स्थान**] १ पाप-कर्म ; २ अशुद्धि का स्थान ; ३ दुर्जन का संसर्ग ; ४ अनायतन ; (ओघ ७६३)।

अस्स न [**आस्य**] मुख, मुँह ; (गा ६८६)।

अस्स वि [**अस्व**] १ द्रव्य-रहित, निर्धन। २ पुं. निर्ग्रन्थ, साधु, मुनि ; (आचा)।

अस्स पुं [**अश्व**] १ घोड़ा ; (उप ७६८ टी)। २ अश्विनी-नक्षत्र का अधिष्ठायक देव ; (ठा २, ३)। ३ ऋषि-विशेष ; (जं ७)। °**कण्ण** पुं [°**कर्ण**] १ एक अन्तर्द्वीप ; २ इस अन्तर्द्वीप का निवासी ; (णंदि)। °**कण्णी** स्त्री [°**कर्णी**] वनस्पति-विशेष ; (पराण १)। °**करण** न [°**करण**] जहां घोडा रखने में आता हो वह स्थान, अस्तवल; (आचा २, १०, १४)। °**ग्गीव** पुं [°**ग्रीव**] पहले प्रतिवासुदेव का नाम; (सम १५३)। °**तर** पुंस्त्री [°**तर**] खच्चड़ ; (पराण १)। °**मुह** पुं [°**मुख**] १-२ इस नाम का एक अन्तर्द्वीप और उसके निवासी ; (णंदि ; पराण १)। °**मेह** पुं [°**मेघ**] यज्ञ-विशेष, जिसमें अश्व मारा जाता है ; (अणु)। °**सेण** पुं [°**सेन**] १ एक प्रसिद्ध राजा, भगवान् पार्श्वनाथ का पिता ; (पव ११)। २ एक महाग्रह का नाम ; (चंद २०)। °**यर** पुं [°**दर**] विद्याधर वंश के एक राजा का नाम ; (पउम ५, ४२)।

अस्संख वि [**असंख्य**] संख्या-रहित ; (उप १७)।

अस्संगिअ वि [**दे**] आसक्त ; (षड्)।

अस्संघयणि वि [**असंहननिन्**] संहनन-रहित ; किसी प्रकार के शारीरिक बन्ध से रहित ; (भग)।

अस्संजम देखो **असंजम** ; (उव)।

अस्संजय वि [**अस्वयत**] १ गुरु की आज्ञानुसार चलने वाला, अ-स्वच्छंदी ; (श्रा ३१)।

अस्संजय देखो **असंजय** ; (उव)।
अस्संदम पुं [**अश्वन्दम**] अश्व-पालक ; (सुपा ६४५)।
अस्सच्च देखो **असच्च** ; " सूरिणो हवउ वयणमस्सच्चं " (उप १४६ टी)।
अस्सण्णि देखो **असण्णि** ; (विसे ५१६)।
अस्सत्थ पुं [**अश्वत्थ**] वृक्ष-विशेष, पीपल ; (नाट)।
अस्सत्थ वि [**अस्वस्थ**] अ-तंदुरस्त, बिमार ; (सुर ३, १५१ ; माल ६५)।
अस्सन्नि देखो **असण्णि** ; (सुर १४, ६६ ; कम्म ४, २ ; ३)।
अस्सम पुं [**आश्रम**] १ स्थान, जगह ; २ ऋषियों का स्थान ; (अभि ६६ ; स्वप्न २५)।
अस्समिअ वि [**अश्रमित**] श्रम-रहित; अनभ्यासी ; (भग)।
अस्सस अक [**आ+श्वस्**] आश्वासन लेना। हेकृ—**अस्ससिदुं** (शौ) ; (अभि १२०)।
अस्साइय वि [**आस्वादित**] जिसका आस्वादन किया गया हो वह ; (दे)।
अस्साएमाण देखो **अस्साय=आस्वादय्**।
अस्साद सक [**आ+सादय्**] प्राप्त करना। अस्सादेंति; अस्सादेस्सामो ; (भग १५)।
अस्साद सक [**आ+स्वादय्**] आस्वादन करना।
अस्सादिय वि [**आसादित**] प्राप्त किया हुआ ; (भग १५)।
अस्साय देखो **अस्साद=आ+सादय्**।
अस्साय देखो **अस्साद=आ+स्वादय्**। वकृ—**अस्साएमाण** ; (भग १२, १)। कृ—**अस्सायणिज्ज** ; (णाया १, १२)।
अस्साय देखो **असाय** ; (कम्म २, ७ ; भग)।
अस्सायण पुं [**आश्वायन**] १ अश्व ऋषि का संतान ; (जं ७)। २ अश्विनी नक्षत्र का गोत्र ; (इक)।
अस्सावि वि [**आस्राविन्**] झरता हुआ, टपकता हुआ, सच्छिद्र, " जहा अस्साविणिं नावं जाइअंधो दुरुहए " (सूअ १, १, २)।
अस्सास सक [**आ+श्वासय्**] आश्वासन देना ; दिलासा देना। अस्सासअदि (शौ); (पि ४६०)। अस्सासि; (उत्त २, ४० ; पि ४६१)।

अस्सि स्त्री [**अश्रि**] १ कोण, घर आदि का कोना ; (ठा ६)। २ तलवार आदि का अग्र-भाग—धार ; (उप पृ ६६)।
अस्सि पुं [**अश्विन्**] अश्विनी-नक्षत्र का अधिष्ठायक देव ; (ठा २, २)।
अस्सिणी स्त्री [**अश्विनी**] इस नाम का एक नक्षत्र ; (सम ८)।
अस्सिय वि [**आश्रित**] आश्रय-प्राप्त ; " विरागमेगमस्सिओ " (वसु ; ठा ७ ; संथा १८)।
अस्सु (शौ) न [**अश्रु**] आंसू ; (अभि ५६ ; स्वप्न ८५)।
अस्सुंक वि [**अशुल्क**] जिसकी चुंगी माफ की गई हो वह ; (उप ५६७ टी)।
अस्सुद (शौ) देखो **असुय=अश्रुत** ; (अभि १६३)।
अस्सुय वि [**अस्मृत**] याद नहीं किया हुआ ; (भग)।
अस्सेसा देखो **असिलेसा** ; (सम १७; विसे ३४०८)।
अस्सोई स्त्री [**आश्वयुजी**] आश्विन मास की पूर्णिमा ; (चंद १०)।
अस्सोक्कंता स्त्री [**अश्वोत्क्रान्ता**] संगीत-शास्त्र प्रसिद्ध मध्यम ग्राम की पांचवीं मूर्च्छना ; (ठा ७)।
अस्सोत्थ देखो **अस्सत्थ** ; (पि ७४; १५२; ३०६)।
अस्सोयव्व वि [**अश्रोतव्य**] सुनने के अयोग्य ; (सुर १४, २)।
अह अ [**अथ**] इन अर्थों का सूचक अव्यय ;—१ अब, बाद; (स्वप्न ४३ ; दं ३१ ; कुमा)। २ अथवा, और ;
" छिज्जउ सीसं अह होउ बंधणं चयउ सव्वहा लच्छी।
पडिवन्नपालणे सुपुरिसाण जं होइ तं होउ ॥ " (प्रासू ३)।
३ मङ्गल ; (कुमा)। ४ प्रश्न ; ५ समुच्चय ; ६ प्रतिवचन, उत्तर ; (बृह १)। ७ विशेष ; (ठा ७)। ८ यथार्थता, वास्तविकता; (विसे १२७६)। ९ पूर्वपक्ष; (विसे १७८३)। १०-११ वाक्य की शोभा बढ़ाने के लिए और पाद-पूर्ति में भी इसका प्रयोग होता है ; (सुअ १, ७ ; पंचा १६)।
अह न [**अहन्**] दिवस, दिन ; (श्रा १४ ; पाअ)।
अह अ [**अधस्**] नीचे ; (सुर २, ३८)। °**लोग** पुं [°**लोक**] पाताल-लोक; (सुपा ४०)। °**त्थ** वि [°**स्थ**] नीचे रहा हुआ ; निम्न-स्थित ; (पउम १०२, ६५)।
अह स [**अदस्**] यह, वह ; (पाअ)।

अह न [दे] दुःख ; (दे १, ६)।
अह न [अघ] पाप ; (पाअ)।
अह° देखो अहा ; (हे १, २४५ ; कुमा)। °क्कम, °क्कमसो अ [°क्रम] क्रम के अनुसार, अनुक्रम से ; (ओघ ५ भा ; स ६)। °क्खाय, °खाय न [°ख्यात] निर्दोष चारित्र, परिपूर्ण संयम ; (ठा ५, २ ; नव २६ ; कुमा)। °क्खायसंजय वि [°ख्यातसंयत] परिपूर्ण संयम वाला ; (भग २५, ७)। °च्छंद देखो अहा-छंद ; (स ६)। °त्थ वि [°स्थ] ठीक २ रहा हुआ, यथास्थित ; (ठा ५, ३)। °त्थ वि [°र्थ] वास्तविक ; (ठा ५, ३)। °प्पहाण अ [°प्रधान] प्रधान के हिसाब से ; (भग १५)।
अहइं अ [अथकिम्] स्वीकार-सूचक अव्यय ; हाँ, अच्छा; (नाट ; प्रयौ ५)।
अहंकार पुं [अहंकार] अभिमान, गर्व ; (सूअ १, ६ ; स्वप्न ८२)।
अहंकारि वि [अहंकारिन्] अभिमानी, गर्विष्ठ; (गउड)।
अहंणिस न [अहर्निश] रात-दिन, सर्वदा ; (पिंग)।
अहण वि [अधन] निर्धन, धन-रहित ; (विसे २८१२)।
अहण्णिस न [अहर्निश] रात-दिन, निरन्तर ; (नाट)।
अहत्ता अ [अधस्तात्] नीचे ; (भग)।
अहन्न वि [अधन्य] अप्रशस्य, हतभाग्य ; (सुर २,३७)।
अहन्निस देखो अहण्णिस ; (सुपा ४६२)।
अहम वि [अधम] अधम, नीच ; (कुमा)।
अहमंति वि [अहमन्तिन्] अभिमानी, गर्विष्ठ ; (ठा १०)।
अहमहमिआ, अहमहमिगया, अहमहमिगा } स्त्री [अहमहमिका] मैं इससे पहले हो जाऊं ऐसी चेष्टा, अत्युत्कण्ठा ; (गा ५८० ; सुपा ५४; १३२; १४८)।
अहमिंद पुं [अहमिन्द्र] १ उत्तम-श्रेणीय पूर्ण स्वाधीन देव-जाति विशेष ; ग्रैवेयक और अनुत्तर विमान के निवासी देव; (इक)। २ अपने को इन्द्र समझने वाला, गर्विष्ठ, "संपइ पुण रायाणो नरिंद ! सव्वेवि अहमिंदा" (सुर १, १२६)।
अहम्म देखो अधम्म ; (सूअ १, १, २ ; भग ; नव ६ ; सुर २, ४४ ; सुपा २५८ ; प्रासू १३६)।
अहम्म वि [अधर्म्य] धर्म-च्युत , धर्म-रहित, गैरव्याजवी ; (सण)।
अहम्माणि वि [अहम्मानिन्] अभिमानी; (आवम)।
अहम्मि वि [अधर्मिन्] धर्म-रहित, पापी ; (सुपा १७२)।
अहम्मिट्ठ देखो अधम्मिट्ठ ; (भग १२, २ ; राय)।
अहम्मिय वि [अधार्मिक] अधर्मी, पापी ; (विपा १, १)।
अहय वि [अहत] १ अनुवद्ध, अव्यवच्छिन्न ; (ठा ८— पत्र ४१८)। २ अक्षत, अखण्डित ; (सूअ २, २)। ३ जो दूसरी तरफ लिया गया हो ; (चंद १६)। ४ नया, नूतन ; (भग ८, ६)।
अहर वि [दे] अशक्त, असमर्थ ; (दे १, १७)।
अहर पुं [अधर] १ होठ, ओष्ठ ; (पाअ)। २ हि नीचे का, नीचला; (पण्ह १, ३)। ३ नीच, अधम; (पण्ह १, २) ४ दूसरा, अन्य ; (प्रामा)। °गइ स्त्री [°गति] अधोगति, दुर्गति, नीच गति ; "अहरगइं किं कम्माइं" (पिंड)।
अहरिय वि [अधरित] तिरस्कृत ; (सुपा ४७)।
अहरी स्त्री [अधरी] पेषण-शिला, जिस पर मसाला वगैरः पीसा जाता है वह पत्थर; (उवा)। °लोट्ठ पुं [°लोष्ट] जिससे पीसा जाता है वह पत्थर ; लोढ़ा ; (उवा)।
अहरीकय वि [अधरीकृत] तिरस्कृत, अवगणित; (सुपा ४)।
अहरीभूय वि [अधरीभूत] तिरस्कृत ;
"उयरेण धरंतीए, नररयणमिमं महप्पहं देवि !।
अहरीभूयमसेसं, जयंपि तुह रयणगब्भाए" (सुपा ३१)।
अहरुट्ठ पुंन [अधरोष्ठ] नीचे का होठ ; (पण्ह १, ३ ; हे १, ८४ ; षड्)।
अहरेम देखो अहिरेम । अहरेमइ (हे ४, १६९)।
अहरेमिअ वि [पूरित] पूरा किया हुआ ; (कुमा)।
अहल वि [अफल] निष्फल, निरर्थक ; (प्रासू १३३ ; रंभा)।
अहव देखो अहवा ; (हे १, ६७)।
अहवइ (अप) देखो अहवा ; (कुमा)।
अहवण, अहवा } अ [अथवा] १ वाक्यालंकार में प्रयुक्त किया जाता अव्यय ; (अणु ; सूअ २, २)। २ अथवा ; (वृह १; निचू १ ; पंचा ३ ; हे १, ६७)।
अहव्व देखो अभव्व ; (गा ३६०)।
अहव्वण पुं [अथर्वन्] चौथा वेद-शास्त्र ; (औप)।
अहव्वा स्त्री [दे] असती, कुलटा स्त्री ; (दे १, १८)।
अहह अ [अहह] इन अर्थों का सूचक अव्यय ;

आमन्त्रण ; २ खेद ; ३ आश्चर्य ; ४ दुःख ; ५ आधिक्य, प्रकर्ष ; (हे २, २१७ ; श्रा १४ ; कप्पू ; गा ६५६)।

अहा° अ [यथा] जैसे, माफिक, अनुसार ; (हे १, २४५)। **°छंद** वि [°च्छन्द] १ स्वच्छन्दी, स्वैरी ; (उप ८३३ टी)। २ न. मरजी के अनुसार ; (वव २)। **°जाय** वि [°जात] १ नग्न, प्रावरण-रहित ; (हे १, १४५)। २ न. जन्म के अनुसार ; ३ जैन साधुओं में दीक्षा काल के परिमाण के अनुसार किया जाता वन्दन—नमस्कार ; (धर्म २)। **°णुपुव्वी** स्त्री [°नुपूर्वी] यथाक्रम, अनुक्रम; (णाया १, १ ; पउम १, ८)। **°तच्च** न [°तत्त्व] तत्व के अनुसार ; (भग २, १)। **°तच्च** न [°तथ्य] सत्य सत्य ; (सम १६)। **°पडिरूव** वि [°प्रतिरूप] १ उचित, योग्य ; (औप)। २ क्रवि. यथायोग्य ; (विपा १, १)। **°पवत्त** वि [प्रवृत्त] १ पूर्व की तरह ही प्रवृत्त, अपरिवर्तित ; (णाया १, ५)। २ न. आत्मा का परिणाम-विशेष ; (स ४७)। **°पवित्तिकरण** न [°प्रवृत्तिकरण] आत्मा का परिणाम-विशेष; (कम्म ५)। **°बायर** वि [°बादर] नस्सार, सार-रहित ; (णाया १, १)। **°भूय** व [°भूत] तात्त्विक, वास्तविक; (ठा १, १)। **°राइणिय, °रायणिय** न [°रात्निक] यथाज्येष्ठ, बडे के क्रम से ; (णाया १, १ ; आचा)। **°रिय** न [ऋजु] सरलता के अनुसार ; (आचा)। **°रिह** न [°र्ह] यथोचित ; (ठा २, १)। २ वि. उचित, योग्य ; (धर्म १)। **°रीय** न [°रीत] १ रीति के अनुसार ; २ स्वभाव के माफिक ; (भग ५, २)। **°लंद** पुं [°लन्द] काल का एक परिमाण, पानी से भींजा हुआ हाथ जितने समय में सुख जाय उतना समय ;(कप्प)। **°वगास** न [°वकाश] अवकाश के अनुसार ; (सूअ २, ३)। **°वच्च** वि [°पत्य] पुत्र-स्थानीय ; (भग ३, ७)। **°संथड** वि [°संस्तृत] शयन के योग्य ; (आचा)। **°संविभाग** पुं [°संविभाग] साधु को दान देना ; (उवा)। **°सच्च** न [°सत्य] वास्तविकता, सचाई; (आचा)। **°सत्ति** न [°शक्ति] शक्ति के अनुसार ; (पंचू ४)। **°सुत्त** न [°सूत्र] आगम के अनुसार ; (सम ७७)। **°सुह** न [°सुख] इच्छानुसार ; (णाया १, १ ; भग)। **°सुहुम** वि [°सूक्ष्म] सारभूत ; (भग ३, १)। देखो अह° ।

अहासंखड वि [दे] निष्कम्प, निश्चल ; (निचू २)।

अहासल वि [अहास्य] हास्य-रहित ; (सुपा ६१०)।

अहाह अ [अहाह] देखो अहह ; (हे २, २१७)।

अहि देखो अभि ; (गउड ; पाअ ; पंचव ४)।

अहि अ [अधि] इन अर्थों का सूचक अव्यय;—१ आधिक्य, विशेषता ; जैसे—'अहिगंध, 'अहिमास' । २ अधिकार, सत्ता ; जैसे—'अहिगय '। ३ ऐश्वर्य ; जैसे—'अहिट्ठाण' । ४ ऊंचा, ऊपर ; जैसे—'अहिट्ठा' ।

अहि पुं [अहि] १ सर्प, साँप ; (पण्ण १ ; प्रासू १६ ; ३६; १०५)। २ शेष नाग ; (पिंग)। **°च्छत्ता** स्त्री [°च्छत्रा] नगरी-विशेष ; (णाया १, १६ ; ती ७)। **°मड** पुंन [°मृतक] साँप का मुर्दा ; (णाया १, ६)। **°वइ** पुं [°पति] शेष नाग ; (अच्चु ६०)। **°विंछिअ** पुं [°वृश्चिक] सर्प के मूत्र से उत्पन्न होने वाली वृश्चिक जाति ; (कुमा)।

अहिअल न [दे] क्रोध, गुस्सा ; (दे १, ३६ ; षड्)।

अहिआअ न [अभिजात] कुलीनता ; खानदानी ; (गा ३८)।

अहिआइ स्त्री [अभिजाति] कुलीनता ; (षड्)।

अहिआर पुं [दे] लोक-यात्रा, जीवन-निर्वाह; (दे १, २९)।

अहिउत्त वि [दे] व्याप्त, खचित ; (गउड)।

अहिउत्त वि [अभियुक्त] १ विद्वान्, पण्डित । २ उद्यत, उद्योगी ; (पाअ)। ३ शत्रु से घिरा हुआ ; (वेणी १२३ टि)।

अहिऊर सक [अभि+पूरय्] पूर्ण करना, व्याप्त करना । कर्म—अहिऊरिज्जंति ; गउड)।

अहिऊल सक [दह्] जलाना, दहन करना । अहिऊलइ ; (हे ४, २०८ ; षड् ; कुमा)।

अहिओय पुं [अभियोग] १ संबन्ध ; (गउड)। २ दोषारोपण ; (स २२६)। देखो अभिओअ ; (भवि)।

अहिंद पुं [अहीन्द्र] १ सर्पों का राजा, शेष नाग ; (अच्चु १)। २ श्रेष्ठ सर्प ; (कुमा)। **°पुर** न [°पुर] वासुकि-नगर । **°पुरणाह** पुं [°पुरनाथ] विष्णु, अच्युत ; (अच्चु २६)।

अहिंसग वि [अहिंसक] हिंसा नहीं करने वाला ; (ओघ ७४७)।

अहिंसण न [अहिंसन] अहिंसा ; (धर्म १)।

अहिंसय देखो अहिंसग ; (पण्ह २, १)

अहिंसा स्त्री [**अहिंसा**] दूसरे को किसी प्रकार से दुःख नहीं देना ; (निचू २ ; धर्म ३ ; सुत्र १, ११)।

अहिंसिय वि [**अहिंसित**] अ-मारित, अ-पीड़ित , (सुत्र १, १, ४)।

अहिकंख देखो **अभिकंख**। वकृ—**अहिकंखंत** ; (पंचव ४)।

अहिकंखिर वि [**अभिकांक्षिन्**] अभिलाषी, इच्छुक ; (सण)।

अहिकय वि [**अधिकृत**] जिसका अधिकार चलता हो वह, प्रस्तुत ; (विसे १५८)।

अहिकरण देखो **अहिगरण** ; (निचू ४)।

अहिकरणी देखो **अहिगरणी** ; (ठा ८)।

अहिकारि देखो **अहिगारि** ; (रंभा)।

अहिकिच्च अ [**अधिकृत्य**] अधिकार कर ; उद्देश कर ; (आचू १)।

अहिक्खण न [**दे**] उपालंभ, उलहना ; (दे १, ३५)।

अहिक्खित्त वि [**अधिक्षित**] १ तिरस्कृत ; २ निन्दित ; ३ स्थापित ; ४ परित्यक्त ; ५ क्षिप्त ; (नाट)।

अहिक्खिव सक [**अधि+क्षिप्**] १ तिरस्कार करना। २ फेंकना। ३ निन्दना। ४ स्थापित करना। ५ छोड़ देना। अहिक्खिवइ ; (उव)। अहिक्खिवाहि ; (स ३२६)। वकृ—**अहिक्खिवंत** ; (पउम ६५, ४४)।

अहिक्खेव पुं [**अधिक्षेप**] १ तिरस्कार ; २ स्थापन; ३ प्रेरणा ; (नाट)।

अहिखिव देखो **अहिक्खिव**। वकृ—**अहिखिवंत** ; (स ५७)।

अहिग देखो **अहिय**=अधिक ; (विसे १६४३ टी)।

अहिखीर सक [**दे**] १ पकड़ना। २ आघात करना। अहिखीरइ ; (भवि)।

अहिगंध वि [**अधिगन्ध**] अधिक गन्ध वाला ; (गउड)।

अहिगम सक [**अधि+गम्**] १ जानना। २ निर्णय करना। ३ प्राप्त करना। कृ—**अहिगम्म** ; (सम्म १६७)।

अहिगम सक [**अभि+गम्**] १ सामने जाना। २ आदर करना। कृ—**अहिगम्म** ; (सण)।

अहिगम पुं [**अधिगम**] १ ज्ञान ; (विसे ६०८)। "जीवाईणमहिगमो मिच्छत्तस्स खओवसमभावे" (धर्म २)। २ उपलम्भ , प्राप्ति ; (दे ७, १४)। ३ गुरु आदि का उपदेश; (विसे २६७५)। ४ सेवा, भक्ति; (सम ५१)। ५ न. गुर्वादि के उपदेश से होने वाली सद्धर्म-प्राप्ति—सम्यक्त्व; (सुपा ६४८)। °रुइ स्त्री [°रुचि] १ सम्यक्त्व का एक भेद। २ सम्यक्त्व वाला ; (पव १४५)।

अहिगम देखो **अभिगम** ; (औप ; से ८,३३; गउड)।

अहिगमण न [**अधिगमन**] १ ज्ञान ; २ निर्णय ; ३ प्राप्ति, उपलम्भ ; (विसे)।

अहिगमय वि [**अधिगमक**] जनाने वाला, बतलाने वाला ; (विसे ५०३)।

अहिगमिय वि [**अधिगत**] १ ज्ञात ; २ निश्चित; (सुर १, १८१)।

अहिगम्म देखो **अहिगम**=अधि+गम्।

अहिगम्म देखो **अहिगम**=अभि+गम्।

अहिगय वि [**अधिकृत**] १ प्रस्तुत, (रयण ३६)। २ न. प्रस्ताव, प्रसंग ; (राज)।

अहिगय वि [**अधिगत**] १ उपलब्ध, प्राप्त ; (उप १०)। २ ज्ञात ; (दे ६, १४८)। ३ पुं. गीतार्थ मुनि, शास्त्राभिज्ञ साधु ; (वव १)।

अहिगर पुं [**दे**] अजगर ; (जीव १)।

अहिगरण पुंन [**अधिकरण**] १ युद्ध, लड़ाई ; (उप २६८)। २ असंयम, पाप-कर्म से अनिवृत्ति ; (उप ८७२)। ३ आत्म-भिन्न बाह्य वस्तु ; (ठा २, १)। ४ पाप-जनक क्रिया ; (णाया १, ५)। ५ आधार; (विसे ८४)। ६ भेंट, उपहार ; (बृह १)। ७ कलह, विवाद ; (बृह १)। ८ हिंसा का उपकरण; "मोहंधेण . य रइयं हलउक्खलमुसलपमुहमहिगरणं" (विवे ६१)। °कड, °कर वि [°कर] कलह-कारक ; (सुत्र १, २, २ ; आचा)। °किरिया स्त्री [°क्रिया] पाप-जनक कृति, दुर्गति में ले जाने वाली क्रिया; (पराह १, २)। °सिद्धंत पुं [°सिद्धान्त] आनु-षंगिक सिद्धि करने वाला सिद्धान्त ; (सुत्र १, १२)।

अहिगरणी स्त्री [**अधिकरणी**] लोहार का एक उपकरण; (भग १६, १)। °खोडि स्त्री [°खोटि] जिस पर अधिकरणी रखी जाती है वह काष्ठ ; (भग १६, १)।

अहिगरणिया } **अहिगरणीया** } स्त्री [**आधिकरणिकी**] देखो **अहिगरण**-किरिया ; (सम १० ; ठा २, १ ; नव १७)।

अहिगरी स्त्री [**दे**] अजगरिन, स्त्री अजगर ; (जीव १)।

अहिगार पुं [अधिकार] १ वैभव, संपत्ति ; " नियअहिगारुल्लवं जम्मणमहिमं विहिस्सामो " (सुपा ४१)। २ हक्क, सत्ता ; (सुपा ३५०)। ३ प्रस्ताव, प्रसंग ; (विसे ४८७)। ४ ग्रन्थ-विभाग ; (वसु)। ५ योग्यता, पात्रता ; (प्रासू १३५)।

अहिगारि } वि [अधिकारिन्] १ अमलदार, राज-
अहिगारिय } नियुक्त सत्ताधीश ; " ता तप्पुराहिगारी समागओ तत्थ तम्मि खणे " (सुपा ३५० ; श्रा २७)। २ पात्र, योग्य ; (प्रासू १३५ ; सण)।

अहिगिच्च अ [अधिकृत्य] अधिकार करके; (उवर ३६; ६६)।

अहिघाय पुं [अभिघात] आस्फालन, आघात ; (गउड)।

अहिजाय वि [अभिजात] कुलीन ; (भग ६, ३३.)।

अहिजाइ स्त्री [अभिजाति] कुलीनता ; (प्राप्र)।

अहिजाण सक [अभि + ज्ञा] पीछानना। भवि—अहिजाणिस्सदि (शौ) ; (पि ५३४)।

अहिजुंज देखो अभिजुंज। संकृ—अहिजुंजिय; (भग)।

अहिजुत्त देखो अभिजुत्त; (प्रवो ८४)।

अहिज्ज सक [अधि+इ] पढ़ना, अभ्यास करना। अहिज्जइ ; (अंत २)। वकृ—अहिज्जंत, अहिज्जमाण ; (उप १६६ टी; उवा)। संकृ—अहिज्जित्ता, अहित्ता ; (उत्त १ ; सूअ १, १२) हेकृ—अहिज्जिउं ; (दस ४)।

अहिज्ज वि [अधिज्य] धनुष की डोरी पर चढ़ाया हुआ (णाया) ; (दे ७, ६२)।

अहिज्ञ } वि [अभिज्ञ] जानकार, निपुण ; (पि २६६ ;
अहिज्ञग } प्रारू ; दस ५)।

अहिज्ञण न [अध्ययन] पठन, अभ्यास; (विसे ७ टी)।

अहिज्ञाविय वि [अध्यापित] पाठित, पढ़ाया हुआ ; (उप पृ ३३)।

अहिज्जिय वि [अधीत] पठित, अभ्यस्त ; (सुर ८, १२१ ; उप ५३० टी)।

अहिज्झिय वि [अभिध्यित] लोभ-रहित, अ-लुब्ध ; (भग ६, ३)।

अहिट्ठग वि [अधिष्ठक] अधिष्ठाता, विधायक, कारक ; " नासंदीपलिअंकेसु, न निसिज्जा न पीढए। निग्गंथापडिलेहाए, बुद्धवुत्तमहिट्ठगा " (दस ६, ५५)।

अहिट्ठा सक [अधि+स्था] १ ऊपर चलना। २ आश्रय लेना। ३ रहना, निवास करना। ४ शासन करना। ५ करना। ६ हराना। ७ आक्रमण करना। ८ ऊपर चढ़ बैठना। ९ वश करना। अहिट्ठेइ ; (निचू ५)। " ता अहिट्ठेहि इमं रज्जं " (स २०४)। अहिट्ठेज्जा ; (पि २५२; ४६६)। वकृ—अहिट्ठंत ; (निचू ५)। कवकृ—अहिट्ठिज्जमाण; (ठा ४, १)। संकृ—अहिट्ठेइत्ता; (निचू १२)। हेकृ—अहिट्ठित्तए; (बृह ३)।

अहिट्ठाण न [अधिष्ठान] १ बैठना ; (निचू ५)। २ आश्रयण ; (सूअ १, २, ३)। ३ मालिक बनना ; (आचा)। ४ स्थान, आश्रय ; (स ४६६)।

अहिट्ठावण न [अधिष्ठापन] ऊपर रखना ; (निचू ५)।

अहिट्ठिय वि [अधिष्ठित] १ अध्यासित ; (णाया १, १४)। २ आधीन किया हुआ ; (णाया १, १४)। ३ आक्रान्त, आविष्ट ; (ठा ५, २)।

अहिड्डुय वि [दे. अभिद्रुत] पीडित, " अहिड्डुयं पीडिअं परद्धं च " (पाअ)।

अहिणंद देखो अभिणंद। वकृ—अहिणंदमाण ; (पउम ११, १२०) कवकृ—अहिणंदिज्जमाण, अहिणंदीअमाण ; (नाट ; पि ५६३)।

अहिणंदण देखो अभिणंदण ; (पउम २०, ३० ; भवि)।

अहिणंदिय देखो अभिणंदिय ; (पउम ८, १२३ ; स १४)।

अहिणय देखो अभिणय ; (कप्पू ; सण)।

अहिणव पुं [अभिनव] १ सेतुबन्ध काव्य का कर्ता राजा प्रवरसेन; (से १, ६)। २ नूतन, नया ; (णाया १, १ ; सुपा ३३०)।

अहिणवेमाण देखो अहिणी।

अहिणवेमाण देखो अहिणु।

अहिणाण देखो अहिण्णाण ; (भवि)।

अहिणिवोह पुं [अभिनिवोध] ज्ञान-विशेष, मतिज्ञान ; (पण्ण २६)।

अहिणिवस सक [अभिनि+वस्] वसना, रहना। वकृ—अहिणिवसमाण ; (मुद्रा २३१)।

अहिणिविट्ठ वि [अभिनिविष्ट] आग्रह-ग्रस्त ; (स २७३)।

अहिणिवेस पुं [अभिनिवेश] आग्रह, हठ ; (स ६२३ ; अभि ६५)।

अहिणिवेसि वि [अभिनिवेशिन्] आग्रही; (पि ४०५)।
अहिणी देखो **अभिणी**। वकृ—**अहिणवेमाण**; (सुर ३, १५०)।
अहिणील वि [अभिनील] हरा, हरा रंग वाला; (गउड)।
अहिणु सक [अभि+नु] स्तुति करना, प्रशंसना। वकृ—**अहिणवेमाण**; (सुर ३, ७७)।
अहिण्ण वि [अभिन्न] भेद-रहित, अ-पृथग्भूत; (गा २६५; ३८०)।
अहिण्णाण न [अभिज्ञान] चिन्ह, निशानी; (अभि १३)।
अहिण्णु वि [अभिज्ञ] निपुण, ज्ञाता; (हे १, ५६)।
अहितत्त वि [अभितप्त] तापित, संतापित; (उत्त २)।
अहित्ता देखो **अहिज्ज** = अधि+इ।
अहिदायग वि [अभिदायक] देने वाला, दाता; (सुपा ५४)।
अहिदेवया स्त्री [अधिदेवता] अधिष्ठाता देव; (सुपा ६०; कप्पू)।
अहिद्दव सक [अभि+द्रु] हैरान करना। अहिद्दवंति; (स ३६३)। भवि—अहिद्दविस्सइ; (स ३६६)।
अहिद्दुय वि [अभिद्रुत] हैरान किया हुआ; (स ५१४)।
अहिधाव सक [अभि+धाव्] दौड़ना, सामने दौड कर जाना। वकृ—**अहिधावंत**; (से १३, २६)।
अहिनाण, **अहिन्नाण** } देखो **अहिण्णाण**; (श्रा १६; सुपा २५०)।
अहिनिवेस देखो **अहिणिवेस**; (स १२५)।
अहिपच्चुअ सक [ग्रह्] ग्रहण करना। अहिपच्चुअइ; (हे ४, २०६; षड्)। **अहिपच्चुअंति**; (कुमा)।
अहिपच्चुअ सक [आ+गम्] आना। अहिपच्चुअइ; (हे ४, १६३)।
अहिपच्चुइअ वि [आगत] आयात; (कुमा)।
अहिपच्चुइअ न [दे] अनुगमन, अनुसरण; (दे १, ४६)।
अहिप्पाय देखो **अभिप्पाय**; (महा; कप्पू)।
अहिप्पेय देखो **अभिप्पेय**; (उप १०३१ टी; स ३४)।
अहिभव देखो **अभिभव**; (गउड)।
अहिमंजु पुं [अभिमन्यु] अर्जुन के एक पुत्र का नाम; (कुमा)।

अहिमंतण वि [अभिमन्त्रण] मन्त्रित करना, मन्त्र से संस्कारना; (भवि)।
अहिमंतिअ वि [अभिमन्त्रित] मन्त्र से संस्कृत; (महा)।
अहिमज्जु, **अहिमण्णु**, **अहिमन्नु** } देखो **अहिमंजु** (कुमा; षड्)।
अहिमय वि [अभिमत] संमत, इष्ट; (स २००)।
अहिमयर पुं [अहिमकर] सूर्य, रवि; (पाअ)।
अहिमर पुं [अभिमर] धनादि के लोभ से दूसरे को मारने का साहस करने वाला; (सुर १, ६८)। २ गजादि-घातक; (विसे १७६४)।
अहिमाण पुं [अभिमान] गर्व, अहंकार; (प्रासू १७; सण)।
अहिमाणि वि [अभिमानिन्] अभिमानी, गर्विष्ठ; (स ४३१)।
अहिमास, **अहिमासग** } पुं [अधिमास, °क] अधिक मास; (आव १; निचू २०)।
अहिमुह वि [अभिमुख] संमुख, सामने रहा हुआ; (से १, ४४; पउम ८, १६७; गउड)।
अहिमुहिहूअ, **अहिमुहीहूअ** } वि [अभिमुखीभूत] सामने आया हुआ; (पउम १२, १०५; ४५, ६)।
अहिय वि [अधिक] १ ज्यादः, विशेष; (औप; ... २७; स्वप्न ४०)। २ क्रिवि. बहुत, अत्यन्त; (महा)।
अहिय वि [अहित] अहितकर, शत्रु, दुश्मन; (महा; सुपा ६६)।
अहिय वि [अधीत] पठित, अभ्यस्त; "अहियसुओ प... वज्जिय एगल्लविहारपडिमं सो" (सुर ४, १५४)।
अहिया स्त्री [अधिका] भगवान् श्रीनमिनाथ की प्र... शिष्या; (सम १५२)।
अहियाय देखो **अहिजाय**; (पाअ)।
अहियाइ देखो **अहिजाइ**; (षड्)।
अहियार पुं [अभिचार] शत्रु के वध के लिए कि... जाता मन्त्रादि-प्रयोग; (गउड)।
अहियार देखो **अहिगार**; (स ५४३; पाअ; मुद्रा २६... सद्धि ७ टी; भवि; दे ७, ३२)।
अहियारि देखो **अहिगारि**; (दे ६, १०८)।

अहियास सक [अधि+आस्, अधि+सह्] सहन करना, कष्टों को शान्ति से झेलना। अहियासइ, अहियासए, अहियासेइ; (उव; महा)। कर्म—अहियासिज्जंति; (भग)। वकृ—अहियासेमाण; (आचा)। संकृ—अहियासित्ता, अहियासेत्तु; (सूत्र १, ३, ४; आचा) हेकृ—अहियासित्तए; (आचा)। कृ—अहियासियव्व; (उप ५४३)।

अहियास वि [अध्यास, अधिसह] सहिष्णु; (बृह १)।

अहियासण न [अध्यासन, अधिसहन] सहन करना; (उप ५३६; स १६२)।

अहियासण न [अधिकाशन] अधिक भोजन, अजीर्ण; (ठा ६)।

अहियासिय वि [अध्यासित, अधिषोढ] सहन किया हुआ; (आचा)।

अहिर पुं [अभीर] अहीर, गोवाला; (गा ८११)।

अहिरम अक [अभि+रम्] क्रीड़ा करना, संभोग करना। अहिरमदि (शौ); (नाट)। हेकृ—अभिरमिदुं (शौ); (नाट)।

अहिरम्म वि [अभिरम्य] सुन्दर, मनोहर; (भवि)।

अहिराम वि [अभिराम] सुन्दर, मनोरम; (पाअ)।

अहिरामिण वि [अभिरामिन्] आनन्द देने वाला; (सण)।

अहिराय पुं [अधिराज] १ राजा; (बृह ३)। २ स्वामी, पति; (सण)।

अहिराय न [अधिराज्य] राज्य, प्रभुत्व; (सट्ठि ७)।

अहिरीअ वि [अह्रीक] निर्लज्ज, बेशरम; (हे २, १०४)।

अहिरीअ वि [दे] निस्तेज, फीका; (दे १, २७)।

अहिरीमाण वि [दे, अहारिन्, अह्रीमनस्] १ अमनोहर, मनको प्रतिकूल; २ अलज्जाकारक; "एगयरे अन्नयरे अभिन्नाय तितिक्खमाणे परिव्वए, जे य हिरी, जे य अहिरीमाणा" (आचा १, ६, २)।

अहिरूव वि [अभिरूप] १ सुन्दर, मनोहर; (अभि २११)। २ अनुरूप, योग्य; (विक्र ३८)।

अहिरेम सक [पृ] पूरा करना, पूर्ति करना। अहिरेमइ; (हे ४, १६६)।

अहिरोइअ वि [दे] पूर्ण; (षड्)।

अहिरोहण न [अधिरोहण] ऊपर चढ़ना, आरोहण; (मा ४०)।

अहिरोहि वि [अधिरोहिन्] ऊपर चढ़ने वाला; (अभि १७०)।

अहिरोहिणी स्त्री [अधिरोहिणी] निःश्रेणी, सीढ़ी; (दे ८, २६)।

अहिल वि [अखिल] सकल, सब; (गउड; रंभा)।

अहिलंख, अहिलंघ, अहिलक्ख } सक [काङ्क्ष] चाहना, अभिलाष करना। अहिलंखइ, अहिलंघइ; (हे ४, १९२)। "अहिलक्खंति मुअंति अ रइवावारं विलासिणीहिअआइं" (से १०, ५७)।

अहिलक्ख वि [अभिलक्ष्य] अनुमान से जानने योग्य; (गउड)।

अहिलव सक [अभि+लप्] संभाषण करना, कहना। कवकृ—अहिलप्पमाण; (स ८४)।

अहिलस सक [अभि+लष्] अभिलाष करना, चाहना। अहिलसइ; (महा)। वकृ—अहिलसंत; (नाट)।

अहिलसिय वि [अभिलषित] वाञ्छित; (सुर ४, २४८)।

अहिलसिर वि [अभिलाषिन्] अभिलाषी; इच्छुक; (दे ६, ५८)।

अहिलाण न [अभिलान] मुख का बन्धन विशेष; (णाया १, १७)।

अहिलाव पुं [अभिलाप] शब्द, अवाज; (ठा २, ३)।

अहिलास पुं [अभिलाष] इच्छा, वाञ्छा, चाह; (गउड)।

अहिलासि वि [अभिलाषिन्] चाहने वाला; (नाट)।

अहिलिअ न [दे] १ पराभव; २ क्रोध, गुस्सा; (दे १, ५७)।

अहिलिह सक [अभि+लिख्] १ चिन्ता करना। २ लिखना। अहिलिहंति; (मुद्रा १०८)। संकृ—अहिलिहिअ; (वेणी २५)।

अहिलोयण न [अभिलोकन] ऊंचा स्थान; (पणह २, ४)।

अहिलोल वि [अभिलोल] चपल, चञ्चल; (गउड)।

अहिलोहिआ स्त्री [अभिलोभिका] लोलुपता, तृष्णा; (से ३, ४७)।

अहिल्ल वि [दे] धनवान्, धनी; (दे १, १०)।

अहिल्लिया स्त्री [अहिल्या] एक सती स्त्री; (पउह १, ४)।

अहिव वि [अधिप] १ ऊपरी, मुखिया ; (उप ७२८ टी)। २ मालिक, स्वामी ; (गउड)। ३ राजा, भूप ; "दुट्ठाहिवा दंडपरा हवंति" (गोय ८)।

अहिवइ वि [अधिपति] ऊपर देखो ; (गाया १, ८ ; गउड ; सुर ६, ६२)।

अहिवंजु देखो **अहिमंजु** ; (षड्)।

अहिवंदिय वि [अभिवन्दित] नमस्कृत ; (स ६४१)।

अहिवज्जु देखो **अहिमंजु** ; (षड्)।

अहिवड सक [अधि+पत्] आना। वकृ—**अहिवडंत** ; (राज)।

अहिवड्ढ देखो **अभिवड्ढ**। अहिवड्ढामो ; (कप्प)।

अहिवड्ढिय वि [अभिवर्धित] बढ़ाया हुआ ; (स २४७)।

अहिवण्ण वि [दे] पीला और लाल रंग वाला ; (दे १, ३३)।

अहिवण्णु } **अहिवन्नु** } देखो **अहिमंजु** ; (षड् ; कुमा)।

अहिवस सक [अधि+वस्] निवास करना, रहना। वकृ—**अहिवसंत**; (स २०८)।

अहिवाइय वि [अभिवादित] अभिनन्दित ; (स ३१४)।

अहिवायण देखो **अभिवायण** ; (भवि)।

अहिवाल वि [अधिपाल] पालक, रक्षक ; (भवि)।

अहिवास पुं [अधिवास] वासना, संस्कार ; (दे ७, ८७)।

अहिवासण न [अधिवासन] संस्काराधान ; (पंचा ८)।

अहिविण्णा स्त्री [दे] कृत-सापत्न्या स्त्री, उपपत्नी ; (दे १, २५)।

अहिसंका स्त्री [अभिशङ्का] भ्रम, संदेह ; (पउम ४२, २१)।

अहिसंजमण न [अभिसंयमन] नियन्त्रण ; (गउड)।

अहिसंधि पुंस्त्री [अभिसंधि] अभिप्राय, आशय ; (पगह १, २ ; स ४६३)।

अहिसंधि पुं [दे] वारंवार ; (दे १, ३२)

अहिसर सक [अभि+सृ] १ प्रवेश करना। २ अपने दयित—प्रिय के पास जाना। प्रयो,—कर्म—अभिसारीअदि (शौ); (नाट)। हेकृ—**अभिसारिदुं** (शौ); (नाट)।

अहिसरण न [अभिसरण] प्रिय के समीप गमन ; (स ५३३)।

अहिसरिअ वि [अभिसृत] १ प्रिय के समीप गत ; २ प्रविष्ट ; (आवम)।

अहिसहण न [अधिसहन] सहन करना ; (टा ६)।

अहिसाम वि [अभिशाम] काला, कृष्ण वर्ण वाला ; (गउड)।

अहिसाय वि [दे] पूर्ण, पूरा ; (दे १, २०)।

अहिसारण न [अभिसारण] १ आनयन ; (से १०, ६२)। २ पति के लिए संकेत स्थान पर जाना ; (गउड)।

अहिसारिअ वि [अभिसारित] आनीत ; (से १, १३)।

अहिसारिआ स्त्री [अभिसारिका] नायक को मिलने के लिए संकेत स्थान पर जाने वाली स्त्री ; (कुमा)।

अहिसिअ न [दे] १ अनिष्ट ग्रह की आशंका से खेद करना—रोना ; (दे १, ३०)। २ वि. अनिष्ट ग्रह से भय-भीत ; (षड्)।

अहिसिंच देखो **अभिसिंच**। अहिसिंचइ ; (महा)। संकृ—**अहिसिंचिऊण** ; (स ११६)।

अहिसिंचण न [अभिषेचन] अभिषेक ; (सम १२५)।

अहिसित्त देखो **अभिसित्त** ; (महा ; सुर ८, ११६)।

अहिसेअ देखो **अभिसेअ** ; (सुपा ३७ ; नाट)।

अहिसोढ वि [अधिसोढ] सहन किया हुआ ; (उप १४७ टी)।

अहिस्संग पुं [अभिष्वङ्ग] आसक्ति ; (नाट)।

अहिहय वि [अभिहत] १ आघात-प्राप्त ; (से ५, ७७)। २ मारित, व्यापादित ; (से १४, १२)।

अहिहर सक [अभि+हृ] १ लेना। २ ऊठाना। ३ अक. शोभना, विराजना। ४ प्रतिभास होना, लगना।

"वीयाभरणा अकयप्पणमंडणा अहिहरंति रमणीओ।
सुण्णाओ व कुसुमफलंतरम्मि सहयारवल्लीओ॥
इह हि हलिद्दाहयदविडसामलीगंडमंडलानीलं।
फलमसअलपरिणामावलंबि अहिहरइ चूयाणं" (गउड)।

अहिहर न [दे] १ देव-कुल, पुराना देव-मन्दिर; २ वल्मीक ; (दे १, ५७)।

अहिहव सक [अभि+भू] पराभव करना, जितना। अहिहवंति ; (स १६८)। कर्म—अहिहवीयंति ; (स ६६८)।

अहिहाण न [दे. अभिधान] वर्णना, प्रशंसा ; (दे १, २१)।
अहिहाण देखो अभिहाण ; (स १६५ ; गउड ; सुर ३, २५ ; पात्र)।
अहिहु देखो अहिहव । कवकृ—अहिहुअमाण ; (अभि ३७)।
अहिहुअ वि [अभिभूत] पराभूत, परास्त ; (दे १, १५८)।
अही सक [अधि+इ] पढ़ना । कर्म—अहीयइ ; (विसे ३१६६)।
अही स्त्री [अही] नागिन, स्त्री-साँप ; (जीव २)।
अहीकरण न [अधिकरण] कलह, झगड़ा ; (निचू १०)।
अहीगार देखो अहिगार ; "सेसेसु अहीगारो, उवगरणसरीरमुक्खेसु" (आचानि २५४)।
अहीण वि [अधीन] आयत्त, आधीन ; (पण्ह २, ४)।
अहीण वि [अ-हीन] अन्यून, पूर्ण ; (विपा १, १ ; उवा)।
अहीय वि [अधीत] पठित, अभ्यस्त "वेया अहीया ण भवंति ताणं" (उत्त १४, १२ ; णाया १, १४ ; सं ७८)।
अहीरग वि [अहीरक] तन्तु-रहित (फलादि) ; (जी १२)।
अहीरु वि [अभीरु] निडर, निर्भीक ; (भवि)।
अहीसर पुं [अधीश्वर] परमेश्वर ; (प्रामा)।
अहुआसेय वि [अहुताशेय] अग्नि के अयोग्य; (गउड)।
अहुणा अ [अधुना] अभी, इस समय, आजकल ; (ठा ३, ३ ; नाट)।
अहुलण वि [अमार्जक] अ-नाशक ; (कुमा)।
अहुल्ल वि [अफुल्ल] अ-विकसित ; (कुमा)।
अहुवंत वकृ [अभवत्] नहीं होता हुआ ; (कुमा)।
अहूण देखो अहीण = अहीन ; (कुमा)।
अहूव वि [अभूत] जो न हुआ हो । °पुव्व वि [°पूर्व] जो पहले कभी न हुआ हो ; (कुमा)।
अहे अ [अधस्] नीचे ; (आचा)। °कम्म न [°कर्मन्] आधाकर्म, भिक्षा का एक दोष ; (पिंड)। °काय पुं [°काय] शरीर का नीचला हिस्सा ; (सूअ १, ४, १)। °चर वि [°चर] बिल आदि में रहने वाले सर्प वगैरः जन्तु ; (आचा)। °तारग पुं [°तारक] पिशाच-विशेष ; (पण्ण १)। °दिसा स्त्री [°दिक्] नीचे की दिशा ; (आचा)। °लोग पुं [°लोक] पाताल-लोक ; (ठा २, २)। °वाय पुं [°वात] नीचे बहने वाला वायु ; (पण्ण १)। २ अपान-वायु, पर्दन ; (आवम)। °वियड वि [°विकट] भित्यादि-रहित स्थान, खुल्ला स्थान ; "तंसि भगवं अपडिन्ने अहे-वियडे अहियासए दविए" (आचा)। °सत्तमा स्त्री [°सप्तमी] सातवीं या अन्तिम नरक-भूमि ; (सम ४१ ; णाया १, १६; १६)। देखो अहो = अधस् ।
अहे देखो अह = अथ ; (भग १, ६)।
अहेउ पुं [अहेतु] १ सत्य हेतु का विरोधी, हेत्वाभास ; (ठा ५, १)। २ वि. कारण-रहित, नित्य ; (सूअ १, १, १)। °वाय पुं [°वाद] आगम-वाद, जिसमें तर्क—हेतु को छोड़ कर केवल शास्त्र ही प्रमाण माना जाता हो ऐसा वाद ; (सम्म १४०)।
अहेउय वि [अहेतुक] हेतु-वर्जित, निष्कारण ; (पउम ६३, ४)।
अहेसणिज्ज वि [यथैषणीय] संस्कार-रहित, कोरा ; "अहेसणिज्जाइं वत्थाइं जाएज्जा" (आचा)।
अहेसर पुं [अहरीश्वर] सूर्य, सूरज ; (महा)।
अहो देखो अह = अधस् ; (सम ३६ ; ठा २, २ ; ३, १ ; भग ; णाया १, १ ; पउम १०२, ८१ ; आव ३)। °करण न [°करण] कलह, झगड़ा ; (निचू १०)। °गइ स्त्री [°गति] १ नरक या तिर्यञ्च योनि । २ अवनति ; (पउम ८०, ४६)। °गामि वि [°गामिन्] दुर्गति में जाने वाला ; (सम १५३ ; श्रा ३३)। °तरण न [°तरण] कलह, झगड़ा ; (निचू १०)। °मुह वि [°मुख] अधोमुख, अवनत-मुख, लज्जित ; (सुर २, १५८ ; ३, १३५ ; सुपा २४२)। °लोइय वि [°लौकिक] पाताल लोक से संबन्ध रखने वाला ; (सम १४२)। °हि वि [°अवधि] १ नीचला दरजा का अवधिज्ञान वाला ; (राय)। २ पुंस्त्री. नीचला दरजा का अवधिज्ञान, अवधिज्ञान का एक भेद ; (ठा २, २)।
अहो अ [अहनि] दिवस में, "अहो य राओ य सिवाभिलासिणो" (पउम ३१, १२८ ; पण्ह २, १)।
अहो अ [अहो] इन अर्थों का सूचक अव्यय ;—१ विस्मय, आश्चर्य ; २ खेद, शोक ; ३ आमन्त्रण, संबोधन ; ४ वितर्क ; ५ प्रशंसा ; ६ असूया, द्वेष ; (हे २, २१७ ;

आचा ; गउड)। °दाण न [°दान] आश्चर्य-कारक दान ; (उत्त २ ; कप्प) । °पुरिसिगा, °पुरिसिया स्त्री [°पुरुषिका] गर्व, अभिमान ; (स १२३ ; २८८) । °विहार पुं [°विहार] संयम का आश्चर्य-जनक अनुष्ठान ; (आचा) ।

अहो° पुंन [अहन्] दिन दिवस ; (पिंग) । °णिस निस, निसि न [°निश] रात और दिन, दिन-रात, " णिरए णेरइयाणं अहोणिसं पच्चमाणाणं " (सुअ १, ५, १ ; श्रा ५०) " अंतो अहोनिसिस्स उ " (विसे ८७३) । पुं [°रात्र] १ दिन और रात्रि परिमित काल, आठ प्रहर ; (ठा २, ४) ; " तिण्णि अहोरत्ता पुण न, खाडि कयंतेणं " (पउम ४३, ३१) । २ चार-प्रहर का समय (जो २) । °राइया स्त्री [°रात्रिकी] ध्यान-विशेष अनुष्ठान-विशेष ; (पंचा १८ ; आव ४ ; सम २१) । °राइंदिय न [°रात्रिन्दिव] दिन-रात ; (भग ; औप) ।

अहोरण न [दे] उत्तरीय वस्त्र, चद्दर ; (दे १, २५ ; ७७१) ।

इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवे अयाराइसद्दसंकलणो

णाम पढमो तरंगो समत्तो ।



आ

आ पुं [आ] १ प्राकृत वर्णमाला का द्वितीय स्वर-वर्ण; (प्रामा)। इन अर्थों का सूचक अव्यय;—२ अ. मर्यादा, सीमा; जैसे—'आसमुद्द' (गउड; विसे ८७४)। ३ अभिविधि, व्याप्ति; जैसे—"आमूलसिरं फलिहत्थंभाओ" (कुमा; विसे ८७४)। ४ थोडाई, अल्पता; जैसे—"आणी-लकक्करुद्द तुरं वरणं" (गउड); 'आअंब' (से ६, ३१; विसे १२३५)। ५ समन्तात्, चारों ओर; जैसे—"अणुकूंडलमा विवइण्णसरसकवरीविलंघियंसम्मि" (गउड; विसे ८७५)। ६ अधिकता, विशेषता; जैसे—'आदीण' (सूत्र १, ५)। ७ स्मरण, याद; (षड्)। ८ विस्मय, आश्चर्य; (ठा ५)। ९-१० क्रिया-शब्द के योग में अर्थ-विस्तृति और विपर्यय; जैसे—'आरुहइ' 'आगच्छंत' (षड्; कुमा)। ११ वाक्य की शोभा के लिए भी इसका प्रयोग होता है; (पाया १, २)। १२ पादपूर्ति में प्रयुक्त किया जाता अव्यय; (षड् २, १, ७६)।

आ अ [आस्] इन अर्थों का सूचक अव्यय; १ खेद; (गा ६२६)। २ दुःख; ३ गुस्सा, क्रोध; (कप्पू)।

आ सक [या] जाना। "अव्वो ण आमि छेत्तं" (गा ८२१)।

आअ वि [दे] १ अत्यंत, बहुत; २ दीर्घ, लम्बा; ३ विषम, कठिन; ४ न. लोह, लोहा; ५ मुसल, मूषल; (दे १, ७३)।

आअ वि [आगत] आया हुआ; "पत्थंति आअरोसा" (से १२, ६८; कुमा)।

आअअ वि [आगत] आया हुआ; (से ३, ४; १२, १८; गा ३०१)।

आअअ वि [आयत] लम्बा, विस्तीर्ण; (से ११, ११); "मरगयसूईविद्धं व मोत्तिअं पिअइ आअअग्गीवो। मोरो पाउसआले तणग्गलग्गं उअअविंदु" (गा ३६४)।

आअंछ सक [कृष्] १ खींचना। २ जोतना, चास करना। ३ रेखा करना। आअंछइ; (षड्)।

आअंतव्व देखो **आगम=आ + गम्**।

आअंतुअ देखो **आगंतुय**; (स्वप्न २०; अभि १२१)।

आअंपिअ देखो **आकंपिय**; (से १०, ५१)।

आअंब वि [आताम्र] थोडा लाल; (से ६, ३१; सुर ३, ११०)।

आअंब पुं [कादम्ब] हंस, पक्षि-विशेष; (से ६, ३१)।

आअक्ख सक [आ+चक्ष्] कहना, बोलना, उपदेश करना। आअक्खाहि; (भग)। कर्म—आअक्खीअदि (शौ); (नाट)। भूक—आअक्खिद (शौ); (नाट)।

आअच्छ देखो **आगच्छ**। आअच्छइ; (षड्)। संकृ—**आअच्छिअ, आअच्छिऊण**; (नाट; पि ५८१; ५८४)।

आअड्ड अक [दे] परवश होकर चलना। आअड्डइ; (दे १, ६६)।

आअड्ड अक [व्या+पृ] व्यापृत होना, काम में लगना। आअड्डइ; (सण; षड्)। आअड्डेइ; (हे ४, ८१)।

आअड्डिअ वि [दे] परवश-चलित, दूसरे की प्रेरणा से चला हुआ; (दे १, ६८)।

आअड्डिअ वि [व्यापृत] कार्य में लगा हुआ; (कुमा)।

आअण्णण देखो **आयन्नण**; (गा ६५६)।

आअत्ति देखो **आयइ**; (पिंग)।

आअम देखो **आगम**; (अच्चु ७; अभि १८४; गा ४७६; स्वप्न ४८; मुद्रा ८३)।

आअमण देखो **आगमण**; (से ३, २०; मुद्रा १८७)।

आअर सक [आ+दृ] आदर करना, सत्कार करना। आअरइ; (षड्)।

आअर न [दे] १ उदूखल, ऊखल; २ कूर्च; (दे १, ७४)।

आअल्ल पुं [दे] १ रोग, बिमारी; (दे १, ७५; पाअ)। २ वि. चंचल, चपल; (दे १, ७५)। देखो **आय-ल्लया**।

आअल्लि, **आअल्ली** स्त्री [दे] झाड़ी, लताओं से निविड प्रदेश; (दे १, ६१)।

आअव्व अक [वेप्] काँपना। आअव्वइ; (षड्)।

आआमि देखो **आगामि**; (अभि ८१)।

आआस देखो **आयंस**; (षड्)।

आआसतअ (दे) देखो **आयासतल**; (षड्)।

आइ सक [आ+दा] ग्रहण करना, लेना। आइएज्जा; सूत्र १, ७, २६)। आइयति; (भग)। कर्म—आइयइ; (कस)। संकृ—**आइत्तूण; आयइत्ता, आइत्तु**; (आचा; सूत्र १, १२; पि ५७७)। प्रयो—आइयावेंति; (सूत्र २, १)। कृ—**आइयव्व**; (कस)।

आइ पुं [आदि] १ प्रथम, पहला; (सुर २, १३२)। २ वगैरः, प्रभृति; (जी ३)। ३ समीप, पास। ४ प्रकार, भेद। ५ अवयव, अंश। ६ प्रधान, मुख्य; "इअ आसंसंति निसोह! सिंहदत्ताइणो दिआ तुज्झ"

(कुमा ; सुअ १, ५)। ७ उत्पत्ति ; (सम्म ६५)। ८ संसार, दुनयाँ; (सुअ १, ७)। °गर वि [°कर] १ आदि-प्रवर्त्तक; (सम१)। २ पुं. भगवान् ऋषभदेव; (पउम २८, ३६)। °गुण पुं [°गुण] सहभावी गुण; (आव ४)। °णाह पुं [°नाथ] भगवान् ऋषभदेव ; (आवम)। °तित्थयर पुं [°तीर्थंकर] भगवान् ऋषभदेव; (णंदि)। °देव पुं [°देव] भगवान् ऋषभदेव ; (सुर २, १३२)। °म वि [°म] प्रथम, आद्य, पहला; (आव ५)। °मूल न [°मूल] मुख्य कारण ; (आचा)। °मोक्ख पुं [°मोक्ष] संसार से छूटकारा, मोक्ष ; २ शीघ्र ही मुक्त होने वाली आत्मा ; "इत्थीओ जे ण सेवंति आइमोक्खा हि ते जणा" ;(सुअ १, ७)। °राय पुं [°राज] भगवान् ऋषभदेव ; (ठा ६)। °वराह पुं [°वराह] कृष्ण, नारायण ; (से ७, २)।

आइ स्त्री [आजि] संग्राम, लडाई ; (संथा)।

आइअंतिय देखो **अच्चंतिय** ; (भग १२, ६)।

आइं अ [दे] वाक्य की शोभा के लिए प्रयुक्त किया जाता अव्यय ; (भग ३, २)।

आइंग न [दे] वाद्य-विशेष ; (पउम ३, ८७ ; ६६, ६)।

आइंच देखो **आयंच**। आइंचइ ; (उवा)।

आइंछ देखो **आअंछ**। आइंछइ ; (हे ४, १८७)।

आइक्ख सक [आ+चक्ष्] कहना, उपदेश देना, बोलना ; आइक्खइ, (उवा)। वकृ—**आइक्खमाण** ; (णाया १, १२)। हेकृ—**आइक्खित्तए** ; (उवा)।

आइक्खग वि [आख्यायक] कहने वाला, वक्ता ; (पण्ह २, ४)।

आइक्खण न [आख्यान] कथन, उपदेश ; (बृह ३)।

आइक्खिय वि [आख्यात] उक्त, उपदिष्ट ; (स ३२)।

आइक्खिया स्त्री [आख्यायिका] १ वार्ता, कहानी ; (णाया १, १)। २ एक प्रकार की मैली विद्या, जिससे चाण्डालनी भूत-काल आदि की परोक्ष बातें कहती है ; (ठा ६)।

आइग्ग वि [आविग्न] उद्विग्न, खिन्न ; (पाअ)।

आइग्घ सक [आ+घ्रा] सूँघना। आइग्घइ, आइग्घाइ ; (षड्)। हेकृ—**आइग्घिउं** ; (कुमा)।

आइच्च अ [दे] कदाचित्, कोइवार ; (पण्ण १७—पत्र ४८५)।

आइच्च पुं [आदित्य] १ सूर्य, सूरज, रवि ; (सम ५६)। २ लोकान्तिक देव-विशेष ; (णाया १, ८)। ३ न. देवविमान-विशेष ; ४ पुं. तन्निवासी देव ; (पव)। ५ वि. आद्य, प्रथम ; (सुज्ज २०)। ६ सूर्य-संबन्धी ; "आइच्चे णं मासे" (सम ५६)। °गइ पुं [°गति] राक्षस वंश के एक राजा का नाम ; (पउम ५, २६१)। °जस पुं [°यशस्] भरत चक्रवर्ती का एक पुत्र, जिससे इक्ष्वाकु वंश की शाखारूप सूर्यवंश की उत्पत्ति हुई थी; (पउम ५, ३ ; सुर २, १३४)। °पभ न [°प्रभ] इस नाम का एक नगर ; (पउम ५, ८२)। °पीढ न [°पीठ] भगवान् ऋषभदेव का एक स्मृति-चिन्ह—पादपीठ; (आवम)। °रक्ख पुं [°रक्ष] इस नाम का लङ्का का एक राज-पुत्र ; (पउम ५, १६६)। °रय पुं [°रजस्] वानर वंश का एक विद्याधर राजा ; (पउम ८, २३४)।

आइज्ज देखो **आएज्ज** ; (नव १५)।

आइज्जमाण वकृ [आर्द्रीक्रियमाण] आर्द्र किया जाता, भींजाया जाता ; (आचा)।

आइज्जमाण देखो **आढा=आ+दृ**।

आइट्ठ वि [आदिष्ट] १ उक्त, उपदिष्ट ; (सुर ४, १०१)। २ विवक्षित ; (सम्म ३८)।

आइट्ठ वि [आविष्ट] अधिष्ठित, आश्रित ; (कस)।

आइट्ठि स्त्री [आदिष्टि] धारणा ; (ठा ७)।

आइड्ढि स्त्री [आत्मर्द्धि) आत्मा की शक्ति, आत्मीय सामर्थ्य ; (भग १०, ३)।

आइड्ढिय वि [आत्मर्द्धिक] आत्मीय-शक्ति-संपन्न ; (भग १०, ३)।

आइण्ण देखो **आइन्न** ; (औप ; भग ७, ८ ; हे ३, १३४)।

आइत्त वि [आदीप्त] थोड़ा प्रकाशित—ज्वलित ; (णाया १, १)।

आइत्त वि [आयत्त] अधीन, वशीभूत ; "तुज्झ सिरी जा परस्स आइत्ता" (जीवा १०)।

आइत्तु वि [आदातृ] ग्रहण करने वाला ; (ठा ७)।

आइत्तूण देखो **आइ=आ+दा**।

आइदि स्त्री [आकृति] आकार ; (प्राप्र ; स्वप्न २०)।

आइद्ध वि [आविद्ध] १ प्रेरित ; (से ७, १०)। २ स्पृष्ट, छूआ हुआ ; (से ३, ३५)। ३ पहना हुआ, परिहित ; (आक ३८)।

आइद्ध वि [आदिग्ध] व्याप्त ; (गाया १, १)।
आइन्न वि [आकीर्ण] १ व्याप्त, भरा हुआ ; (सुर १, ४६ ; ३, ७१)। २ पुं. वस्त्र-दायक कल्प-वृत्त ; (ठा १०)।
आइन्न वि [आचीर्ण] आचरित, विहित ; (आचा ; चैत्य ४६)।
आइन्न वि [आदीर्ण] उद्विग्न, खिन्न ; " आइन्नाइं पियराइं तीए पुच्छंति दिव्व-देवन्नं " (सुपा ५६७)।
आइन्न पुं [दे] जात्याश्व, कुलीन घोड़ा ; (पण्ह १, ४)।
आइप्पण न [दे] १ आटा ; (गा १६६; दे १, ७८)। २ घर को शोभा के लिये जो चूना आदि की सफेदी दी जाती है वह ; ३ चावल के आटा का दूध ; ४ घर का मण्डन—भूषण ; (दे १, ७८)।
आइय (अप) वि [आयात] आया हुआ ; (भवि)।
आइय वि [आचित] १ संचित, एकत्रीकृत ; २ व्याप्त, आकीर्ण ; ३ ग्रथित, गुम्फित ; (कप्प; औप)।
आइय वि [आदृत] आदर-प्राप्त ; (कप्प)।
आइयण न [आदान] ग्रहण, उपादान ; (पण्ह १, ३)।
आइयणया स्त्री [आदान] ग्रहण, उपादान; (ठा २,१)।
आइरिय देखो आयरिय=आचार्य ; (हे १, ७३)।
आइल वि [आविल] मलिन, कलुष, अ-स्वच्छ; (पण्ह १, ३)।
आइल्ल } आइल्लिय } वि [आदिम] प्रथम, पहला ; (सम १२६ ; भग)। " आइल्लियासु तिंसु लेसासु " (पण्ण १७ ; विसे २६२४)।
आइवाहिअ पुं [आतिवाहिक] देव-विशेष, जो मृत जीव को दूसरे जन्म में ले जाने के लिए नियुक्त है ;
" काहे अमाणवंता अग्गिमुहा आइवाहिआ तव पुरिसा।
अइलंघेहिंति ममं अच्चुआ ! तमगहणनिउणयरकंतारं "
(अच्चु ८५)।
आइस सक [आ+दिश्] आदेश करना, हुकुम करना, फरमाना। आइसह ; (पि ४७१)। वकृ—आइसंत ; (सुर १६, १३)।
आइसण वि [दे] उज्झित, परित्यक्त ; (दे १, ७१)।
आईण वि [आदीन] १ अतिदीन, बहुत गरीब ; (सूअ १, १)। २ न. दूषित भिक्षा ; (सूअ १, १०)।
आईण पुं [दे] जातिमान् अश्व, कुलीन घोड़ा ; (गाया १, १७)।

आईण } आईणग } न [आजिन °क] १ चमड़े का बना हुआ वस्त्र ; (गाया १, १; आचा)। २ पुं. द्वीप-विशेष ; ३ समुद्र-विशेष ; (जीव ३)। °भद्द पुं [°भद्र] आजिन-द्वीप का अधिष्ठाता देव ; (जीव ३)। °महाभद्द पुं [°महाभद्र] देखो पूर्वोक्त अर्थ ; (जीव ३)। °महावर पुं [°महावर] आजिन और आजिनवर-नामक समुद्र का अधिष्ठाता देव ; (जीव ३)। °वर पुं [°वर] १ द्वीप-विशेष ; २ समुद्र-विशेष ; ३ आजिन और आजिनवर समुद्र का अधिष्ठाता देव ; (जीव ३)। °वरभद्द पुं [°वरभद्र] आजिनवर-द्वीप का अधिष्ठाता देव; (जीव ३)। °वरमहाभद्द पुं [°वरमहाभद्र] देखो अनन्तर उक्त अर्थ; (जीव ३)। °वरोभास पुं [°वरावभास] १ द्वीप-विशेष ; २ समुद्र-विशेष ; (जीव ३)। °वरोभासभद्द पुं [°वरावभासभद्र] उक्त द्वीप का अधिष्ठायक देव ; (जीव ३)। °वरोभासमहाभद्द पुं [°वरावभासमहाभद्र] देखो पूर्वोक्त अर्थ ; (जीव ३)। °वरोभासमहावर पुं [°वरावभासमहावर] आजिनवरावभास-नामक समुद्र का अधिष्ठाता देव; (जीव ३)। °वरोभासवर [°वरावभासवर] देखो अनन्तर-उक्त अर्थ ; (जीव ३)।
आईनीइ स्त्री [आदिनीति] साम-रूप पहली राज-नीति ; (सुपा ४६२)।
आईय देखो आइ=आदि ; (जी ७ ; काल)।
आईय वि [आतीत] १ विशेष-ज्ञात ; २ संसार-प्राप्त, संसार में घुमने वाला ; (आचा)।
आईल पुंन [आचील] पान का थूंकना ; (पव)।
आईव अक [आ+दीप्] चमकना। वकृ—आईवमाण; (महानि)।
आउ स्त्री [दे] १ पानी, जल, (दे १, ६१)। २ इस नाम का एक नक्षत्र-देव; (ठा २, ३)। °काय, °क्काय पुं [°काय] जल का जीव ; (उप ६८५ ; पण्ण १)। °काइय, °क्काइय पुं [°कायिक] जल का जीव; (पण्ण १; भग २४, १२)। °जीव पुं [°जीव] जल का जीव (सूअ १, ११)। °बहुल वि [°बहुल] १ जल-प्रचुर ; २ रत्नप्रभा पृथिवी का तृतीय काण्ड ; (सम ८८)।
आउ अ [दे] अथवा, या; "आउ पलोहेइ मं अज्जउत्त-वेसेण कोइ अमाणुसो, आउ सच्चयं चेव अज्जउत्तोत्ति" (स ३४६)।

आउ } न [आयुष्] १ आयु, जीवन-काल ; (कुमा ;
आउअ } रयण १६)। २ उम्मर, वय ; (गा ३२१)। ३ आयु के कारण-भूत कर्म-पुद्गल; (ठा ८)। °क्काल पुं [°काल] मरण, मृत्यु ; (आचा)। °क्खय पुं [°क्षय] मरण, मौत ; (विपा १, १०)। °क्खेम न [°क्षेम] आयु-पालन, जीवन ; (आचा)। °विज्जा स्त्री [°विद्या] वैद्यक-शास्त्र, चिकित्सा-शास्त्र; (आव)। °व्वेय पुं [°वेद] वैद्यक, चिकित्सा-शास्त्र ; (विपा १, ७)।

आउंच सक [आ+कुञ्चय्] संकुचित करना, समेटना। संकृ—आउंचिवि (अप); (भवि)।

आउंचण न [आकुञ्चन] संकोच, गात्र-संक्षेप ; (कस)।

आउंचणा स्त्री [आकुञ्चना] ऊपर देखो; (धर्म ३)।

आउंचिअ वि [आकुञ्चित] १ संकुचित ; २ ऊठा कर धारण किया हुआ ; (से ६, १७)।

आउंजि वि [आकुञ्चिन्] १ संकुचने वाला ; २ निश्चल ; (गउड)।

आउंट देखो आउट्ट = आ-वर्तय्। आउंटावेमि ; (णाया १, ५)।

आउंटण न [आकुञ्चन] संकोच, गात्र-संक्षेप ; (हे १, १७७)।

आउंवालिय वि [दे] आप्लावित, डुबोया हुआ, पानी आदि द्रव पदार्थ से व्याप्त ; (पाअ)।

आउक्क } देखो आउ=आयुष् ; (सुपा ६५५ ; भग
आउग } ६, ३)।

आउच्छ सक [आ+प्रच्छ्] आज्ञा लेना, अनुज्ञा लेना। वकृ—आउच्छंत, आउच्छमाण ; (से १२, २१ ; ४७)। संकृ—आउच्छिऊण, आउच्छिय ; (महा ; सुपा ६१)।

आउच्छण न [आप्रच्छन] आज्ञा, अनुज्ञा ; (गा ४७; ५००)।

आउच्छिय वि [आपृष्ट] जिसकी आज्ञा ली गई हो वह ; (से १२, ६४)।

आउज्ज देखो आओज्ज = आतोद्य ; (हे १, १५६)।

आउज्ज पुं [आवर्ज] १ संमुख करना ; २ शुभ क्रिया ; (पण्ण ३६)।

आउज्ज वि [आवर्ज्य] सम्मुख करने योग्य ; (आवम)।

आउज्ज वि [आयोज्य] जोडने योग्य, संबन्ध करने योग्य ; (विसे ७४; ३२९६)।

आउज्जण न [आवर्जन] ऊपर देखो।

आउज्जिय वि [आतोद्यिक] वाद्य बजाने वाला ; (सु[illegible] १६६)।

आउज्जिय वि [आयोगिक] उपयोग वाला, सावधान; (भग २, ५)।

आउज्जिय वि [आवर्जित] संमुख किया हुआ ; (पण्ण ३६)।

आउज्जिया स्त्री [आवर्जिका] क्रिया, व्यापार; (आवम)। °करण न [°करण] शुभ-व्यापार विशेष; (पण्ण ३६)।

आउज्जीकरण न [आवर्जीकरण] शुभ व्यापार-विशेष; (पण्ण ३६)।

आउट्ट सक [आ+वृत्] १ करना। २ भुलाना। ३ व्यवस्था करना। ४ अक. संमुख होना, तत्पर होना। ५ निवृत्त होना। ६ घुमना, फिरना। आउट्टइ, आउट्टंति, (क[illegible] ७, १ ; निचू ३)। वकृ—आउट्टंत; (सम ३२)। संकृ—आउट्टिऊण ; (राज)। हेकृ—आउट्टित्तए; (कप्प)। प्रयो—आउट्टावेमि ; (णाया १, ५ टी)।

आउट्ट सक [आ+कुट्ट्] छेदन करना, हिंसा करना। आउट्टामो ; (आचा)।

आउट्ट वि [आवृत्त] १ निवृत्त, पीछे फिरा हुआ ; ([illegible] ६६८); " दप्पकए वाउट्टे जइ खिंसति तत्थवि तहेव" (बृ[illegible] ३)। २ भ्रामित, भुलाया हुआ ; (उप ६००)। ३ ठीक २ व्यवस्थित; (आचा)। ४ कृत, विहित; (राज)।

आउट्ट पुं [आकुट्ट] छेदन, हिंसा ; (सूअ १, १)।

आउट्टण न [आकुट्टन] हिंसा ; (सूअ १, १)।

आउट्टण न [आवर्त्तन] १ आराधन, सेवा, भक्ति; (वव १, ६)। २ अभिमुख होना, तत्पर होना ; (सूअ १, १०)। ३ अभिलाषा, इच्छा ; (आचा)। ४ घुमाना, भ्रमण। ५ निवृत्ति ; (सूअ १, १०)। ६ करना, क्रिया, कृति ; (राज)।

आउट्टणया स्त्री [आवर्त्तनता] ऊपर देखो ; (णंदि)।

आउट्टणा स्त्री [आवर्त्तना] ऊपर देखो ; (निचू २)।

आउट्टावण न [आवर्त्तन] अभिमुख करना, तत्पर करना; (आचा २)।

आउट्टि स्त्री [आकुट्टि] १ हिंसा, मारना ; (आचा; उव)। २ निर्दयता ; (आप १८)।

आउट्टि स्त्री [आवृत्ति] देखो आउट्टण=आवर्तन ; (वव १, १ ; २, १० ; सूत्र १, १ ; आचा)। ५ फिर २ करना, पुनः पुनः क्रिया ; (सुज्ज १२)।

आउट्टि वि [आकुट्टिन्] १ मारने वाला, हिंसक ; " जाणं काएण णाउट्टी " (सूत्र)। २ अकार्य-कारक ; (दसा)।

आउट्टि वि [दे] साढ़े तीन ; " एगे पुण एवमाहंसु ता आउट्टिं चंदा आउट्टिं सूरा सव्वलोयं ओभासेंति ; (सुज्ज १६)।

आउट्टिय देखो आउट्ट=आवृत्त ; (दसा)।

आउट्टिय पुं [आकुट्टिक] दण्ड-विशेष; (भत्त २७)।

आउट्टिय वि [आकुट्टित] छिन्न, विदारित ; (सूत्र)।

आउट्ठ वि [आतुष्ट] संतुष्ट ; (निचू १)।

आउड सक [आ + जोडय्] संवन्ध करना, जोडना। कवकृ—आउडिज्जमाण ; (भग ५, ४)।

आउड सक [आ + कुट्ट्] १ कुटना, पीटना। २ ताडन करना, आघात करना। आउडेइ ; (जं ३)। कवकृ—आउडिज्जमाण ; (भग ५, ४)।

आउड सक [लिख्] लिखना, "इति कट्टु णामगं आउडेइ" संकृ—आउडित्ता ; (जं ३—पत्र २५०)।

आउडिय वि [आकुटित] आहत, ताडित ; (जं ३—पत्र २२२)।

आउड्ड अक [मस्ज्] मज्जन करना, डूबना। आउड्डइ ; (हे ४, १०१ ; षड्)।

आउड्डिअ वि [मग्न] डूबा हुआ, तल्लीन ; (कुमा)।

आउण्ण वि [आपूर्ण] पूर्ण, भरपूर, व्याप्त ; " कुसुमफलाउण्णहत्थेहिं " (पउम ८, २०३)।

आउत्त वि [आयुक्त] १ उपयोग वाला, सावधान; (कप्प)। २ क्रिवि. उपयोग-पूर्वक ; (भग)। ३ न. पुरीषोत्सर्ग, दिशागत जाना (?); (उप ६८५)। ४ पुं. गाँव का नियुक्त किया हुआ मुखिया ; (दे १, १६)।

आउत्त वि [आगुप्त] १ संक्षिप्त ; (ठा ३, १)। २ संकेत ; (भग)।

आउर वि [आतुर] १ रोगी, बीमार ; (णंदि)। २ उत्कण्ठित ; ३ दुःखित, पीडित ; (प्रासू २८ ; ६५)।

आउर न [दे] १ लडाई, युद्ध; २ वि. बहुत ; ३ गरम ; (दे १, ६५ ; ७६)।

आउरिय वि [आतुरित] दुःखित, पीडित ; (आचा)।

आउल वि [आकुल] १ व्याप्त ; (औप)। २ व्यग्र ; (आव)। ३ व्याकुल, दुःखित; ४ संकीर्ण ; (स्वप्न ७३)। ५ पुं. समूह ; (विसे ७००)।

आउल सक [आकुलय्] १ व्याप्त करना। २ व्यग्र करना। ३ दुःखी करना। ४ संकीर्ण करना। ५ प्रचुर करना। कवकृ—आउलिज्जंत, आउलीअमाण; (महा ; पि ५६३)।

आउलि स्त्री [आतुलि] वृक्ष-विशेष ; (दे ५, ५)।

आउलिअ वि [आकुलित] आकुल किया हुआ ; (गा २५ ; पउम ३३, १०६ ; उप पृ ३२)।

आउलीकर सक [आकुली+कृ] देखो आउल=आकुलय्। आउलीकरेंति ; (भग)। कवकृ—आउलीकिअमाण ; (नाट)।

आउलीभूअ वि [आकुलीभूत] घबडाया हुआ ; (सुर २, १०)।

आउस अक [आ+वस्] रहना, वास करना। वकृ—आउसंत ; (सम १)।

आउस सक [आ+क्रुश्] आक्रोश करना, शाप देना, निष्ठुर वचन बोलना। आउसइ ; (भग १५)। आउसेज्ज, आउसेसि ; (उवा)।

आउस सक [आ+मृश्] स्पर्श करना, छूना। वकृ—आउसंत ; (सम १)।

आउस सक [आ+जुष्] सेवा करना। वकृ—आउसंत; (सम १)।

आउस न [दे] कूर्च ; (दे १, ६५)।

आउस देखो आउ=आयुष् ; (कुमा)।

आउस } वि [आयुष्मत्] चिरायुष्क, दीर्घायु ; (सम
आउसंत } २६ ; आचा)।

आउसणा स्त्री [आक्रोशना] अभिशाप, निर्भर्त्सन ; (णाया १, १८ ; भग १५)।

आउस्स देखो आउस=आ+क्रुश्। आउस्सति; (णाया १, १८)।

आउस्सिय वि [आवश्यक] १ जरूरी। २ क्रिवि. जरूर, अवश्य; (पण्ण ३६)। °करण न [°करण] १ मन, वचन और काया का शुभ व्यापार; २ मोक्ष के लिए प्रवृत्ति ; (पण्ण ३६)।

आउह न [आयुध] १ शस्त्र, हथियार; (कुमा)। २ विद्याधर वंश के एक राजा का नाम; (पउम ५, ४४)। °घर न [°गृह] शस्त्र-शाला ; (जं)। °घरसाला स्त्री

[°गृहशाला] देखो अनन्तर-उक्त अर्थ ; (जं)। °घरिय वि [°गृहिक] आयुधशाला का अध्यक्ष—प्रधान कर्मचारी ; (जं)। °गार न [°गार] शस्त्र-गृह ; (औप)।

आउहि वि [आयुधिन्] योद्धा, शस्त्र-धारक ; (विसे)।

आऊड अक [दे] जुए में पण करना। आऊडइ ; (दे १, ६६)।

आऊडिय न [दे] द्यूत-पण, जुए में की जाती प्रतिज्ञा ; (दे १, ६८)।

आऊर सक [आ+पूरय्] भरना, पूर्ति करना, भरपूर करना। आऊरेइ ; (महा)। वकृ—**आऊरयंत, आऊरमाण;** (पउम १०२, ३३; से १२, २८)। कवकृ—**आऊरिज्जमाण** ; (पि ५३७)। संकृ—**आऊरिवि** (अप); (भवि)।

आऊरिय वि [आपूरित] भरा हुआ, व्याप्त ; (सुर २, १६६)।

आऊसिय वि [आयूषित] १ प्रविष्ट ; २ संकुचित ; (णाया १, ८)।

आएज्ज वि [आदेय] ग्रहण करने के योग्य, उपादेय। °णाम, °नाम न [°नामन्] कर्म-विशेष, जिसके उदय से किसी का कोई भी वचन ग्राह्य माना जाता है ; (सम ६७)।

आएस देखो **आवेस** ; (भग १४, २)।

आएस } पुं [आदेश] १ उपदेश, शिक्षा ; २ आज्ञा
आएसग } हुकुम ; (महा)। ३ विवक्षा, सम्मति ; (सम्म ३७)। ४ अतिथि, महमान ; (सूअ २, १, ५६)। ५ प्रकार, भेद; " जीवे णं भंते ! कालाएसेणं किं सपदेसे अपदेसे " (भग ६, ४ ; जीव २; विसे ४०३)। ६ निर्देश ; (निचू)। ७ प्रमाण ; " जाव न बहुप्पसन्नं ता मीसं एस इत्थ आएसो " (पिंड २१०)। ८ इच्छा, अभिलाषा ; देखो **आएसि**। ९ दृष्टान्त, उदाहरण ; " वाघाइयमाएसो अवरद्धो हुज्ज अन्नतरएणं " (आचानि २६७)। १० सूत्र, ग्रन्थ, शास्त्र ; (विसे ४०५)। ११ उपचार, आरोप ; " आएसो उवयारो " (विसे ३४ ८८)। १२ शिष्ट-सम्मत ;

" बहुसुयमाइएणं तु, न वाहियणेहिं जुगप्पहाणेहिं।
आएसो सो उ भवे, अहवावि नयंतरविगप्पो " (वव २, ८)।

आएसण न [आदेशन] ऊपर देखो ; (महा)।

आएसण न [आदेशन, आवेशन] लोहा वगैरः का कारखाना, शिल्पशाला ; (आचा २, २, २, १० ; औप)।

आएसि वि [आदेशिन्] १ आदेश करने वाला। २ अभिलाषी, इच्छुक ; (आचा)।

आएसिय वि [आदिष्ट] जिसको आज्ञा दी गई हो वह ; (भवि)।

आओ अ [दे] अथवा, या " हंत किमेयंति, किं ताव सुविणओ, आओ इंदजालं, आओ मइविब्भमो, आओ सच्चयं चेवत्ति " (स ४५४)।

आओग पुं [आयोग] १ लाभ, नफा ; (औप)। २ अत्यधिक सूद के लिए करजा देना ; (भग)। ३ परिकर, सरञ्जाम ; (औप)।

आओग्ग पुं [आयोग्य] परिकर, सरञ्जाम ; (औप)।

आओज्ज पुंन [आयोग्य] वाद्य, वाजा; (महा ; पड्)।

आओज्ज वि [आयोज्य] संबन्ध-योग्य, जोड़ने योग्य; (विसे २३)।

आओड सक [आ+खोटय्] प्रवेश कराना, घुसेड़ना। आओडावेंति ; (विपा १, ६)।

आओडण न [आकोलन] मजबूत करना ; (से ६,६)।

आओडिअ वि [दे] ताडित, मारा हुआ ; (से ६, ६)।

आओध अक [आ+युध्] लड़ना। आओधेहि ; (वेणी १११)।

आओस सक [आ+क्रुश्, क्रोशय्] आक्रोश करना, शाप देना। आओसइ ; (निर १, १)। आओसेज्जासि, आओसेमि ; (उवा)। कवकृ—**आओसेज्जमाण** ; (अंत २२)।

आओस पुं [दे] प्रदोष-समय, सन्ध्या-काल ; (ओघ ६१ भा)।

आओसणा स्त्री [आक्रोशना] निर्भर्त्सना, तिरस्कार ; (निर १, १)।

आओहण न [आयोधन] युद्ध, लडाई ; (उप ६४८ टी ; सुर ६, २२०)।

आकंख सक [आ+काङ्क्ष्] चाहना, इच्छना। आकंखिहि ; (भवि)।

आकंखा स्त्री [आकाङ्क्षा] चाह, इच्छा, अभिलाषा ; (विसे ८५६)।

आकंखि वि [आकाङ्क्षिन्] अभिलाषी, इच्छुक ; (आचा)।

आकंद अक [आ+क्रन्द्] रोना, चिल्लाना। आकंदामि; (पि ८८)।

आकंदिय न [आक्रन्दित] १ आक्रन्द, रोदन; २ जिसने आक्रन्द किया हो वह; (दे ७, २७)।

आकंप अक [आ+कम्प्] १ थोडा काँपना। २ तत्पर होना। ३ आराधन करना। संकृ—आकंपइत्ता, आकंपइत्तु; (राज)।

आकंप पुं [आकम्प] १ थोडा काँपना; २ आराधन; (वव)। ३ तत्परता, आवर्जन; (राज)।

आकंपण न [आकम्पन] ऊपर देखो; (वव; धर्म)।

आकंपिय वि [आकम्पित] ईषत् चलित, कम्पित; (उप ७२८ टी)

आकड्ढ पुं [आकर्ष] खींचाव; °विक ड्ढ स्त्री [°विकृष्टि] खींचतान; (भग १५)।

आकड्ढण न [आकर्षण] खींचाव; (निचू)।

आकण्णण न [आकर्णन श्रवण; (नाट)।

आकण्णिय वि [आकर्णित] श्रुत, सुना हुआ; (आचा)।

आकम्हिय वि [आकस्मिक] अकस्मात् होने वाला, विना ही कारण होने वाला; "वज्झनिमित्ताभावा जं भयमाकम्हियं तंति" (विसे ३४५१)।

आकर पुं [आकर] १ खान; २ समूह; (कुमा)।

आकस देखो आगस। आकसिस्सामो; (आचा २, ३, १, १५)। हेकृ—आकसित्तए; (आचा २, ३, १, १५)।

आकार देखो आगार; (कुमा; दं १३)।

आकास देखो आगास; (भग)।

आकासिय वि [दे] पर्याप्त, काफी; (षड्)।

आकिइ स्त्री [आकृति] स्वरूप, आकार; (हे १, २०६)।

आकिंचण न [आकिञ्चन्य] निस्पृहता, निष्परिग्रहता; "आकिंचणं च बंभं च जइधम्मो" (नव २३)।

आकिंचणया स्त्री [आकिञ्चनता] ऊपर देखो; (सम १२०)।

आकिंचणिय, आकिंचन्न } देखो आकिंचण; (आचू; सुपा ६०८)।

आकिदि देखो आकिइ; (कुमा)।

आकुंच सक [आ+आकुञ्चय्] संकोच करना। आकुंचइ; संकृ—आकुंचिवि (अप); (भवि)।

आकुंचण न [आकुञ्चन] संकोच, संक्षेप; (सम्म १३३; विसे २४६२)।

आकुंचिय वि [आकुञ्चित] संकुचित, "रुद्धं गलयं आकुंचियाओ धमणीओ पसरिया वियणा" (सुर ४, २३८)।

आकुट्ठ न [आक्रुष्ट] १ आक्रोश; २ वि. जिस पर आक्रोश किया गया हो वह; (३, ३२)।

आकुल देखो आउल; (कप्प)।

आकूय न [आकूत] १ इङ्गित, ईसारा; (उप ७२८ टी)। २ अभिप्राय; (विसे ६२८)।

आकेवलिय वि [आकेवलिक] असंपूर्ण; (आचा)।

आकोडण न [आकोटन] कूट कर घुसेड़ना; (पण्ह १, ३)।

आकोसाय अक [आकोशाय्] विकसित होना। वकृ—आकोसायंत; (पण्ह १, ४)।

आक्कंद (मा) देखो आकंद। आक्कंदामि; (पि ८८)।

आखंच (अप) सक [आ+कृष्] पीछे खींचना। संकृ—आखंचिवि; (भवि)।

आखंडल पुं [आखण्डल] इन्द्र; (सुपा ४७)। °धणुह न [°धनुष्] इन्द्र-धनुष्; (उप ६८६ टी)। °भूइ पुं [°भूति] भगवान् महावीर के मुख्य शिष्य गौतम-स्वामी; (पउम ११८, १०२)।

आगइ स्त्री [आगति] आगमन; (आचा; विसे २१४६)।

आगइ देखो आकिइ; (महा)।

आगंतव्व देखो आगम = आ+गम्।

आगंतगार, आगंतार } न [आगन्त्रगार] धर्म-शाला, मुसाफिर-खाना; (औप; आचा)।

आगंतु वि [आगन्तृ] आने वाला; (सूअ)।

आगंतु देखो आगम=आ+गम्।

आगंतुग, आगंतुय } वि [आगन्तुक] १ आने वाला; २ अतिथि; (स ४७१; चारु २४; सुपा ३३६; ओघ २१६)। ३ कृत्रिम, अस्वाभाविक; (सुर १२, १०)।

आगंतूण देखो आगम=आ+गम्।

आगंप सक [आ+कम्पय्] कँपाना, हिलाना। वकृ—आगंपयंत; (स ३३१; ४४३)।

आगंपिय देखो आकंपिय; (पउम ३४, ४३)।

आगच्छ सक [आ+गम्] आना, आगमन करना। आगच्छइ; (महा)। भवि—आगच्छिस्सइ; (पि ५२३)। वकृ—आगच्छंत, आगच्छमाण; (काल; भग)।

हेक्ट—आगच्छित्तए; (पि ५७८)।
आगत देखो आगय; (सुर २, २४८)।
आगत्ती स्त्री [दे] कूप-तुला; (दे १, ६३)।
आगम सक [आ+गम्] १ आना, आगमन करना। २ जानना। भवि—आगमिस्सं; (पि ५२३; ५६०)। वकृ—आगममाण; (आचा)। संकृ—आगंतूण; आगमेत्ता, आगम्म; (पि ५८१; ५८२; औप)। कृ—आगंतव्व; (सुपा १२)। हेक्ट—आगंतुं; (काल)।
आगम पुं [आगम] १ आगमन; (से १४, ७५)। २ शास्त्र, सिद्धान्त; (जी ४८)। °कुसल वि [°कुशल] सिद्धान्तों का जानकार; (उत्त)। °ज्ञ वि [°ज्ञ] शास्त्रों का जानकार; (प्रारू)। °णोइ स्त्री [°नीति] आगमोक्त विधि; (धर्म २)। °ण्णु वि [°ज्ञ] शास्त्रों का जानकार; (प्रारू)। °परतंत वि [°परतन्त्र] सिद्धान्त के अधीन; (पंचव)। °वलिय वि [°वलिक] सिद्धान्तों का अच्छा जानकार; (भग ८, ८)। °ववहार पुं [°व्यवहार] सिद्धान्तानुमोदित व्यवहार; (वव)।
आगमण न [आगमन] आगमन; (श्रा ४)।
आगमि वि [आगमिन्] आने वाला, आगामी; (विसे ३१५४)।
आगमिय वि [आगमिक] १ शास्त्र-संबन्धी, शास्त्र-प्रतिपादित; (उवर १५१)। २ शास्त्रोक्त वस्तु को ही मानने वाला; (सम्म १४२)।
आगमिर वि [आगन्तृ] आने वाला, आगमन करने वाला; (सण)।
आगमिस्स वि [आगमिष्यत्] १ आगामी, होने वाला; (पउम ११८, ६३)। २ आने वाला; (सम १५३)।
आगमिस्सा स्त्री [आगमिष्यन्ती] भविष्य काल; "अईअकालम्मि आगमिस्साए" (पच्च ६०)।
आगमेस } आगमेसि } देखो आगमिस्स; (अंत १६; औप)
आगम्म देखो आगम = आ+गम्।
आगय वि [आगत] १ आया हुआ; (प्रासू ५)। २ उत्पन्न; (णाया १, ७)।
आगर देखो आकर=आकर; (आचा; उप ८३३ टी)।
आगरि वि [आकरिन्] खान का मालिक, खान का काम करने वाला; (पण्ह १, २)।
आगरिस पुं [आकर्ष] १ ग्रहण, उपादान; (विसे २७८०; सम १४७)। २ खींचाव; (विसे २७८०; हे १, १७७)। ३ ग्रहण कर छोड़ देना; (आचू)। ४ प्राप्ति; (भग २५, ७)।
आगरिसग वि [आकर्षक] १ खींचने वाला; २ पुं. अयस्कान्त, लोह-चुम्बक; (आवम)।
आगरिसणी स्त्री [आकर्षणी] विद्या-विशेष; (सुर १३, ८१)।
आगरिसिय वि [आकृष्ट] खींचा हुआ; (सुपा १६६; महा)।
आगल सक [आ+कलय्] १ जानना। २ लगाना। ३ पहुँचाना। ४ संभावना करना। आगलेइ; (उव)। आगलेंति; (भग ३, २)। संकृ—"हत्थिं खंभम्मि आगलेऊण" (महा)।
आगल्ल वि [आग्लान] ग्लान, बिमार; (वृह १)।
आगस सक [आ+कृष्] खींचना। आगसाहि; (आचा २, ३, १, १४)। संकृ—आगसिउं; (विसे २२२)।
आगहिअ वि [आगृहीत] संगृहीत; (विसे २२०४)।
आगाढ वि [आगाढ] १ प्रबल, दुःसाध्य; "कडुगोसहंव आगाढरोगिणो रोगसमदच्छं" (उप ७२८ टी)। "नो कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा अन्नमन्नस्स मोए आइइत्तए, नन्नत्थ आगाढेहिं रोगायंकेहिं" (कस)। २ अपवाद, खास कारण; (पंचभा)। ३ अत्यंत गाढ; (निचू)। °जोग पुं [°योग] योग-विशेष; गणि-योग; (ओघ ५४८)। °पण्ण न [°प्रज्ञ] शास्त्र, आगम; "आगाढपण्णेसु य भावियप्पा" (वव)। °सुय न [°श्रुत] आगम-विशेष; (निचू)।
आगामि वि [आगामिन्] आने वाला; (सुपा ६)।
आगार सक [आ+कारय्] बोलाना, आह्वान करना। संकृ—आगारेऊण; (आव)।
आगार न [आगार] १ घर, गृह; (णाया १, १; महा)। २ वि. गृहस्थ, गृही; (ठा)। °त्थ वि [°स्थ] गृही; (पि ३०६)।
आगार पुं [आकार] १ अपवाद; (उप ७२८ टी; पडि)। २ इंगित, चेष्टा-विशेष; (सुर ११, १६२)। ३ आकृति, रूप; (सुपा ११५)।
आगारिय वि [आगारिक] गृहस्थ-संबन्धी; (विसे)।

आगारिय वि [आकारित] १ आहूत। २ उत्सारित, परित्यक्त ; (आव)।
आगाल पुं [आगाल] १ समान प्रदेश में रहना ; भाव से रहना ; (आचा)। ३ उदीरणा-विशेष ; (राज)।
आगास पुंन [आकाश] आकाश, अन्तराल; (उवा)। °गमा स्त्री [°गमा] विद्या-विशेष, जिसके बल से आकाश में गमन कर सकता है ; (पउम ७, १४४)। °गामि वि [°गामिन्] आकाश में गमन करने वाला, पक्षि-प्रभृति ; (आचा)। °जोइणी स्त्री [°योगिनी] पक्षि-विशेष; "आगासजोइणीए निसुओ सद्दोवि वामपासम्मि" (सुपा १८५)। °त्थिकाय पुं [°अस्तिकाय] आकाश-प्रदेशों का समूह, अखण्ड आकाश-द्रव्य ; (पण्ण १)। °थिग्गल न [दे] मेघ-रहित आकाश का भाग, (आवम)। °फलिह, °फालिय पुं [°स्फटिक] निर्मल स्फटिक-रत्न ; (राय ; औप)। °फालिया स्त्री [°फालिका] एक मिष्ट द्रव्य ; (पण्ण १७)। °इवाइ वि [°तिपायिन्] विद्या आदि के बल से आकाश में गमन करने वाला ; (औप)।
आगासिय वि [आकाशित] आकाश को प्राप्त ; (औप)।
आगासिय वि [आकर्षित] खींचा हुआ ; (औप)।
आगिइ स्त्री [आकृति] आकार, रूप, मूर्ति ; (सुर २, २२ ; विपा १, १)।
आगिट्ठि स्त्री [आकृष्टि] आकर्षण ; (सुपा २३२)।
आगी देखो आगिइ ; "छिण्णावलिरुयगागीदिसासु सामाइयं न जं तासु" (विसे २७०७)।
आगु पुं [आकु] अभिलाष, इच्छा ; (आक)।
आघं देखो आघव। 'सूत्रकृतांग' सूत्र के प्रथम श्रुतस्कन्ध का दसवाँ अध्ययन ; (सूअ १, १०)।
आघंस सक [आ+घृष्] घर्षण करना ; (निचू)।
आघंसण न [आघर्षण] एक वार का घर्षण; (निचू)।
आघयण न [दे] वध-स्थान ; (गाया १, ६—पत्न १६७)।
आघव सक [आ+ख्या] १ कहना, उपदेश देना। २ ग्रहण करना। आघवेइ ; (ठा)। कवकृ—आघविज्जए ; (भग)। भूका—आवं ; (सूअ ; पि ८८) वकृ—आघवेमाण ; (पि ४४)। हेकृ—आघवित्तए ; (पि ८८)।
आघवणा स्त्री [आख्यान] कथन, उक्ति ; (गाया १,६)।
आघवइत्तु वि [आख्यायक] कथक, वक्ता, उपदेशक ; (ठा ४, ४)।
आघविय वि [आख्यात] उक्त, कहा हुआ ; (पि ४४)।
आघवेत्तग वि [आख्यापयितृक] उपदेष्टा, वक्ता ; (आचा)।
आघस सक [आ+घस्] थोडा घिसना। आघसावेज्ज ; (निचू)।
आघा सक [आ+ख्या] कहना। (आचा)।
आघा सक [आ+घ्रा] सूँघना। वकृ—आघायंत ; (उप ३५७ टी)।
आघाय वि [आख्यात] कथित, उक्त ; (आचा)।
आघाय पुं [आघात] १ वध ; २ चोट, प्रहार ; (कुमा ; गाया १, ६)।
आघायंत देखो आघा=आ+घ्रा।
आघाव देखो आघव। आघावेइ ; (पि ८८; २०२)।
आघुट्ठ वि [आघुष्ट] घोषित, जाहिर किया हुआ ; (भवि)।
आघुम्म अक [आ+घूर्ण्] डोलना, हिलना, काँपना, चलना।
आघुम्मिय वि [आघूर्णित] डोला हुआ, कम्पित, चलित ; "आघुम्मियनयणजुओ" (पउम १०, ३२ ; ८७, ५६)।
आघोस सक [आ+घोषय्] घोषणा करना, ढिंढेरा पिटवाना। आघोसेह ; (स ६०)।
आघोसण न [आघोषण] ढिंढ़ेरा, घोषणा ; (महा)।
आचक्ख सक [आ+चक्ष्] कहना। वकृ—आचक्खंत; (पि २५; ८८ ; नाट)।
आचक्खिद (शौ) वि [आख्यात] उक्त, कथित ; (अभि २००)।
आचरिय वि [आचरित] १ अनुष्ठित, विहित। २ न. आचरण ; (प्रासू १११)।
आचार देखो आयार=आचार ; (कुमा)।
आचारिअ देखो आयरिय=आचार्य ; (प्राप)।
आचिक्ख सक [आ+चक्ष्] कहना। कृ— आचिक्खणीय ; (स ४०)।
आचिक्खिय वि [आख्यात] कथित, उक्त; (स ११६)।
आचुण्णिअ वि [आचूर्णित] चूर २ किया हुआ ; (पउम १७, १२०)।

आचेलक्क न [**आचेलक्य**] १ वस्त्र का अभाव; (कप्प)। २ वि. आचार-विशेष; "आचेलक्को धम्मो" (पंचा)।
आच्छेदण न [**आच्छेदन**] १ नाश। २ वि. नाशक; (कुमा)।
आजाइ देखो **आयाइ**; (ठा; स १७८)।
आजि देखो **आइ=आजि**; (कुमा; दे १, ४६)।
आजीरण पुं [**आजीरण**] स्वनाम-ख्यात एक जैन मुनि; "आजीरणो य गीओ" (संथा ६७)।
आजीव, **आजीवग** पुं [**आजीव**] १ आजीविका, जीवन-निर्वाह का उपाय; "आजीवमेयं तु अवुज्झमाणो पुणो पुणो विप्परियासुवेंतिं" (सूअ)। २ जैन साधु के लिए भिक्षा का एक दोष—गृहस्थ को अपने जाति-कुल आदि को समानता बतलाकर उससे भिक्षा ग्रहण करना; (ठा ३, ४)। ३ गोशालक-मत का अनुयायी साधु; (पव)। ४ धन का समूह; (सूअ)।
आजीवग पुं [**आजीवक**] १ धन का गर्व; (सूअ)। २ सकल जीव; (जीव ३ टी)। देखो **आजीवय**।
आजीवण न [**आजीवन**] १ आजीविका, जीवन-निर्वाह का उपाय। २ जैन साधु के लिए भिक्षा का एक दोष; (वव)।
आजीवणा स्त्री [**अजीवना**] ऊपर देखो; (दंस; जीत)।
आजीवय देखो **आजीवग**; "आजीवयदिट्ठंतेणं चउरासीतिं-जातिकुलकोडीजोणिपमुहसयसहस्सा भवंतीतिमक्खाया" (जीव ३)।
आजीविय वि [**आजीविक**] गोशालक के मत का अनुयायी; (पण्ण २०; उवा)।
आजीविया स्त्री [**आजीविका**] १ निर्वाह; (आव)। २ जैन साधु के लिए भिक्षा का एक दोष; (उत्त)।
आजुत्त वि [**आयुक्त**] अ-प्रमादी; (निचू)।
आजुज्झ अक [**आ+युध्**] लड़ना। हेकृ—**आजुज्झिदुं** (शौ); (वेणी १२४)।
आजुह न [**आयुध**] हथियार; (मै २४)।
आजोज्ज देखो **आओज्ज**; (विसे १५०३)।
आडंबर पुं [**आडम्बर**] १ आटोप, ऊपरी दिखाव; (पाअ)। २ वाद्य का अवाज; (ठा)। ३ यक्ष-विशेष; (आचू)। ४ न. यक्ष का मन्दिर; (पव)।
आडंबरिल्ल वि [**आडम्बरवत्**] आडम्बरी; (पाअ)।
आडविय वि [**दे**] चूर्णित, चूर २ किया हुआ; (षड्)।
आडविय वि [**आटविक**] जंगल में रहने वाला, जंगली; (स १२१)।
आडह सक [**आ+दह्**] चारों ओर से जलाना। आडहइ; (पि २२२; २२३)। आडहंति; (पि २२२; २२३)।
आडह सक [**आ+धा**] स्थापन करना, नियुक्त करना। आडहइ। संकृ—**आडहेत्ता**; (औप)।
आडाडा स्त्री [**दे**] बलात्कार, जबरदस्ती; (दे १, ६४)।
आडासेतीय पुं [**आडासेतीक**] पक्षि-विशेष; (पण्ह १, १)।
आडि स्त्री [**आटि**] १ पक्षि-विशेष; २ मत्स्य-विशेष; (दे ८, २४)।
आडियत्तिय पुं [**दे**] शिविका-वाहक पुरुष (?); (स ५३७; ५४१)।
आडुआल सक [**दे**] मिश्र करना, मिलाना। आडुआलइ; (दे १, ६९)।
आडुआलि पुं [**दे**] मिश्रता, मिलावट; (दे १, ६९)।
आडोय देखो **आडोव=आटोप**; (सुपा २६२)।
आडोलिय वि [**दे**] रुद्ध, रोका हुआ; (णाया १, १८)।
आडोव सक [**आ+टोपय्**] १ आडंबर करना। २ पवन द्वारा फूलाना। आडोवेइ; (भग)। संकृ—**आडोवेत्ता**; (भग)।
आडोव पुं [**आटोप**] आडम्बर; (उवा; सण)।
आडोविअ वि [**दे**] आरोषित, गुस्से किया हुआ; (दे १, ७०)।
आडोविअ वि [**आटोपिक**] आटोप वाला, स्फारित; (पण्ह १, ३)।
आढई स्त्री [**आढकी**] वनस्पति-विशेष; (पण्ण १)।
आढग पुंन [**आढक**] १ चार प्रस्थ (सेर) का एक परिमाण; २ चार सेर परिमित चीज; (औप; सुपा ६७)।
आढत्त वि [**दे**] आक्रान्त; "एत्थंतरम्मि विजयवम्मनरवइणा आढत्तो लच्छिनिलयसामी सूरतेओ नाम नरवई; (स १४०)।
आढत्त वि [**आरब्ध**] शुरू किया हुआ, प्रारब्ध; (ओघ ४८२; हे २, १३८)।
आढप्प° देखो **आढव**।
आढय देखो **आढग**; (महा; ठा ३, १)।
आढव सक [**आ+रभ्**] आरंभ करना, शुरू करना। आढवइ; (हे ४, १५५; धम्म २२)। कर्म—आढप्पइ, आढवीअइ; (हे ४, २५४)।

आढा सक [आ + दृ] आदर करना, मानना। आढाइ; (उवा)। वकृ—आढामाण, आढायमाण; (पि ५०० ; आचा)। कवकृ—आइज्जमाण; (आचा)।

आढिअ वि [आदृत] सत्कृत, सम्मानित; (हे १,१४३)।

आढिअ वि [दे] १ इष्ट, अभीष्ट ; २ गणनीय, माननीय ; ३ अप्रमत्त, उद्युक्त ; ४ गाढ, निविड ; (दे १, ७४)।

आण सक [ज्ञा] जानना। "किंव न आणह एअं" (हे १३, ३)। आणसि; (से १५, २८)। "अमिअं पाइअकव्वं पढिउं सोउं च जे ण आणंति" (गा २)। आणे; (अभि १९७)।

आण सक [आ + णी] लाना, आनयन करना; ले आना। आणइ ; (पि १७ ; भवि)। वकृ—आणमाणे ; (णाया १,१६)। हेकृ—आणिवि (अप); (भवि)।

आण पुं [आन] १ श्वासोच्छ्वास, सांस ; २ श्वास के पुद्गल ; (पण्ण)।

'आण देखो जाण=यान ; (चारु ८)।

आणंछ देखो आअंछ। आणंछइ ; (षड्)।

आणंत देखो आणी।

आणंतरिय न [आनन्तर्य] १ अविच्छेद, व्यवधान का अभाव ; (ठा ४, ३)। २ अनुक्रम, परिपाटि; "आणं-तरियंति वा अणुपरिवाडित्ति वा अणुक्कमेति वा एगट्ठा" (आचू)।

आणंद अक [आ + नन्द्] आनन्द पाना, खुश होना।

आणंद सक [आ + नन्दय्] खुश करना। आणंदेदि (शौ); नाट। कृ—आणंदिअव्व ; (रयण १०)।

आणंद पुं [आनन्द] १ हर्ष ; खुशी ; (कुमा)। २ भगवान् शीतलनाथ के एक मुख्य-शिष्य; (सम १५२)। ३ पातनपुर नगर का एक राजा, जो भगवान् अजितनाथ का मातामह था ; (पउम ५, ५२)। ४ भावी छठ्ठाँ बलदेव ; (सम १५४)। ५ नागकुमार-जातीय देवों के स्वामी धरणेन्द्र के एक रथ-सैन्य का अधिपति देव ; (ठा ५,१)। ६ मुहूर्त-विशेष ; (सम ५१)। ७ भगवान् ऋषभदेव का एक पुत्र ; (राज)। ८ भगवान् महावीर के एक साधु-शिष्य का नाम ; (कप्प)। ९ भगवान् महावीर के दश मुख्य उपासको (श्रावक-शिष्य) में पहला ; (उवा)। १० देव-विशेष ; (जं; दीव)। ११ राजा श्रेणिक के एक पौत्र का नाम ; (निर २, १)। १२ 'उपासकदसा' सूत्र का एक अध्ययन; (उवा)। १३ 'अणुत्तरोपपातिक दसा' सूत्र का सातवाँ अध्ययन ; (भग)। १४ 'निरयावली' सूत्र का एक अध्ययन; (निर २,१)। १५ व. देश-विशेष; (पउम ९८, ६६)। °पुर न [°पुर] नगर-विशेष; (बृह)। °रक्खिय पुं [°रक्षित] स्वनाम-ख्यात एक जैन साधु ; (भग)।

आणंदण न [आनन्दन] १ खुशी, हर्ष; (सुपा ४४०)। २ वि. खुश करने वाला, आनन्द-दायक; (स ३१३; रयण ३; सण)।

आणंदवड } पुं [दे] पहली वार की रजस्वला का रक्त
आणंदवस } वस्त्र ; (गा ४५७ ; दे १, ७२ ; षड्)।

आणंदा स्त्री [आनन्दा] १ देवी-विशेष; मेरु को पश्चिम दिशा में स्थित रुचक पर्वत पर रहने वाली एक दिक्कुमारी ; (ठा ८)। २ इस नाम की एक पुष्करिणी ; (राज)।

आणंदिय वि [आनन्दित] १ हर्ष-प्राप्त ; (औप)। २ रामचन्द्र के भाई भरत के साथ दीक्षा लेने वाला एक राजा ; (पउम ८५, ३)।

आणंदिर वि [आनन्दिन्] आनन्दी, खुश रहने वाला ; (भवि)।

आणक्ख सक [परि + ईक्ष्] परीक्षा करना। हेकृ—आणक्खेउं ; (ओघ ३६)।

आणच्छ देखो आअंछ। आणच्छइ ; (षड्)।

आणण न [आनन] मुख, मुँह ; (कुमा)।

आणण न [आनयन] लाना ; (महा)।

आणत्त वि [आज्ञप्त] आदिष्ट, जिसको हुकुम दिया गया हो वह ; (णाया १, ८ ; सुर ४, १००)।

आणत्ति स्त्री [आज्ञप्ति] आज्ञा, हुकुम ; (अभि ८१)। °अर वि [°कर] आज्ञा-कारक, नौकर ; (स ११, ६५)। °किंकर वि [°किङ्कर] नौकर ; (पण्ह)। °हर वि [°हर] आज्ञा-वाहक, संदेश-वाहक ; (अभि ८१)।

आणत्तिया स्त्री [आज्ञप्तिका] ऊपर देखो ; (उवा ; पि ८८)।

आणय (अशो) देखो आणव = आ+ज्ञपय्। आणपयति ; (पि ४)।

आणपाण देखो आणापाण ; (नव ६)।

आणप्प वि [आज्ञाप्य] आज्ञा करने योग्य ; (सूअ १, ४, २, १५)।

आणम अक [आ+अन्] श्वास लेना। आणमंति ; (भग)।

आणमणी देखो **आणवणी** ; (भास १८ ; पि ८८ ; २४८)।

आणय पुंन [**आनत**] १ देवलोक-विशेष ; (सम ३५)। २ पुं. उस देवलोक-वासी देव ; (उत्त)।

आणयण न [**आनयन**] लाना, आनना ; (श्रा १४ ; स ३७६)।

आणव सक [**आ+ज्ञपय्**] आज्ञा देना, फरमाना। आणवइ, आणवेसि ; (पउम ३३, १००; ६८)। वकृ—**आणवेमाण** ; (पि ५५१)। कृ—**आणवेयव्व** ; (महा)।

आणव देखो **आणाव** = आ + नायय्।

आणवण न [**आज्ञपन**] आज्ञा, आदेश, फरमाइश ; (उवा; प्रामा)।

आणवण न [**आनायन**] मंगवाना ; (सुपा ५७८)।

आणवणिया स्त्री [**आज्ञापनिका, आनायनिका**] देखो दोनों **आणवणी** ; (ठा २, १)।

आणवणी स्त्री [**आज्ञापनी**] १ क्रिया-विशेष, हुकुम करना। २ हुकुम करने से होने वाला कर्म-बन्ध ; (नव १६)।

आणवणी स्त्री [**आनायनी**] १ क्रिया-विशेष, मंगवाना। २ मंगवाने से होने वाला कर्म-बन्ध ; (नव १६)।

आणा स्त्री [**आज्ञा**] आदेश, हुकुम ; (ओघ ६०)। २ उपदेश ; "एसा आणा निग्गंथिया" (आचा)। ३ निर्देश ; "उववाओ णिद्देसो आणा विणओ य होंति एगट्ठा" (वव)। ४ आगम, सिद्धान्त ; (विसे ८६४ ; णंदि)। ५ सूत्र की व्याख्या ; (औप)। °**ईसर** पुं [°**ईश्वर**] आज्ञा फरमाने वाला मालिक; (विपा १, १)। °**जोग** पुं [°**योग**] १ आज्ञा का संबन्ध ; (पंचा)। २ शास्त्र के अनुसार कृति ; "पावं विसाइतुल्लं आणा-जोगो अ मंतसमो" (पंचव)। °**रुइ** स्त्री [°**रुचि**] सम्यक्त्व-विशेष ; (उत्त)। २ वि. आगमों पर श्रद्धा रखने वाला ; (पंच)। °**व** वि [°**वत्**] आज्ञा मानने वाला ; (पंचा) °**वत्त** न [°**पत्र**] आज्ञा-पत्र, हुकुमनामा ; (से १, १८)। °**ववहार** पुं [°**व्यवहार**] व्यवहार-विशेष; (पंचा)। °**विजय** न [°**विचय, °विजय**] धर्म-ध्यान-विशेष, जिसमें आज्ञा—आगम के गुणों का चिन्तन किया जाता है ; (औप)।

आणाइ पुं [**दे**] शकुनि, पक्षी ; (दे १, ६४)।

आणाइत्त वि [**आज्ञावत्**] आज्ञा मानने वाला; (पंचा)।

आणाइय वि [**आनायित**] मंगाया हुआ ; (कुमा २, २१)।

आणापाण पुं [**आनप्राण**] १ श्वासोच्छ्वास ; (प्रासु १०४)। २ श्वासोच्छ्वास-परिमित समय ; (अणु)। °**पज्जत्ति** स्त्री [°**पर्याप्ति**] श्वासोच्छ्वास लेने की शक्ति ; (नव ६ ; पव)।

आणापाणु स्त्री [**आनप्राण**] ऊपर देखो; "आणापाणूओ" (भग २५, ५)।

आणापाणुय पुं [**आनप्राणक**] श्वासोच्छ्वास-परिमित काल ; (कप्प)।

आणाम पुं [**आनाम**] श्वास, अन्तः-श्वास ; (भग)।

आणामिय वि [**आनामित**] १ थोड़ा नमाया हुआ ; (पण्ह १, ४)। २ आधीन किया हुआ ; (पउम ६८, ३७)।

आणाल पुं [**आलान**] १ बन्धन ; २ हाथी बांधने की रज्जु—डोरी ; ३ जहां पर हाथी बांधा जाता है वह स्तम्भ, खीला ; (हे २, ११७ ; प्रामा)। °**क्खंभ**, °**खंभ** पुं [°**स्तम्भ**] जहां हाथी बांधा जाता है वह स्तम्भ; (हे २, ११७)।

आणाव देखो **आणव=आ+ज्ञपय्**। आणावेइ ; (स १२६)। कवकृ—**आणाविज्जंत** ; (सुपा ३२३)। कृ—**आणावेयव्व** ; (आचा)।

आणाव सक [**आ+नायय्**] मंगवाना। आणावइ ; (भवि)। संकृ—**आणाविय** ; (नाट)।

आणावण न [**आज्ञापन**] आज्ञा, हुकुम ; (षड्)।

आणाविय वि [**आज्ञापित**] जिसको हुकुम किया गया हो वह, फरमाया हुआ ; (सुपा २५१)।

आणाविय वि [**आनायित**] मंगवाया हुआ ; (सुपा ३८५)।

आणि देखो **आणी**। कृ—**आणियव्व** ; (रयण ६)। संकृ—**आणिय** ; (नाट)।

आणिअ वि [**आनीत**] लाया हुआ ; (हे १, १०१)।

आणिअ [**दे**] देखो **आढिअ** ; (दे १, ७४)।

आणिक्क वि [**दे**] टेढ़ा, वक्र ; (से ६, ८६)।

आणी सक [**आ + नी**] लाना। कर्म—आणीअइ ; (पि ५४८)। वकृ—"**आणंतीए** गुणेसु, दोसेसु परंमुहं कुणंतीए" (मुद्रा २३६)। संकृ—**आणीय** ; (विसे ६१६)। कवकृ—**आणिज्जंत**; (सुपा १६३)।

आणीय वि [आनीत] लाया हुआ ; (हे १, १०१ ; काल) ।
आणुअ न [दे] १ मुख, मुँह ; (दे १, ६२ ; षड्) । २ आकार, आकृति ; (दे १, ६२) ।
आणुकंपिय वि [आनुकम्पिक] दयालु, कृपालु ; (राज) ।
आणुगामि वि [अनुगामिन्] नीचे देखो ; (विसे ७३६) ।
आणुगामिय वि [आनुगामिक] १ अनुसरण करने वाला, पीछे २ जाने वाला; (भग) । २ न. अवधिज्ञान का एक भेद ; (आवम) ।
आणुधम्मिय वि [आनुधर्मिक] इतर धर्म वालों को भी अभीष्ट, सर्व-धर्म-सम्मत ; (आचा) ।
आणुपुव्व न [आनुपूर्व्य] अनुक्रम, परिपाटी ; (निर १, १) ।
आणुपुव्वी स्त्री [आनुपूर्वी] क्रम, परिपाटी ; (अणु) । °णाम, °नाम न [°नामन्] नामकर्म का एक भेद ; (सम ६७) ।
आणुवित्ति स्त्री [अनुवृत्ति] अनुसरण ; (सं ६१) ।
आणूव पुं [दे] श्व-पच, डोम ; (दे १, ६४) ।
आणे सक [आ+नी] लाना, ले आना । आणेइ ; (महा) । कृ—आणेयव्व ; (सुपा १६३) । संकृ—आणेऊण ; (महा) ।
आणे सक [ज्ञा] जानना आणेइ ; (नाट) ।
आणेसर देखो आणा-ईसर ; (श्रा १०) ।
आत देखो आय=आत्मन् ; (ठा १) ।
आतंव देखो आयंव=आताम्र ; (स २६१) ।
आत्त देखो अत्त=आत्मन् । " आत्तहियं खु दुहेण लब्भइ " (सूअ १, २, २, ३०) ।
आदंस } देखो आयंस ; (गा २०४; प्रति ८ ; सूअ १,
आदंसग } ४) ।
आदण्ण } वि [दे] आकुल, व्याकुल, घवडाया हुआ ;
आदन्न } (उप पृ २२१ ; हे ४, ४२२) ।
आदर देखो आयर=आ+दृ । आदरइ ; (हे ४, ८३) ।
आदरिस देखो आयंस ; (कुमा ; दे २, १०७) ।
आदाउ वि [आदातृ] ग्रहण करने वाला ; (विसे १५-६९) ।
आदाण देखो आयाण ; (ठा ४, ४) । " मब्भादाणेण संजुआसि तुमं " (पउम ६५, ६० ; उवा) ।
आदाण न [आग्रहण] उबाला हुआ, गरम किया हुआ (जल तैल आदि) ; (उवा) ।
आदाणीय देखो आयाणीय ; (कप्प) ।
आदाय देखो आया=आ+दा ।
आदि देखो आइ=आदि ; (कप्प ; सूअ १, ५) ।
आदिअ देखो आइअ ; (ठा ५, ३ ; ८) ।
आदिच्छा स्त्री [आदित्सा] ग्रहण करने की इच्छा ; (आव) ।
आदिज्ज देखो आएज्ज ; (भग) ।
आदिट्ठ देखो आइट्ठ ; (अभि १०६) ।
आदित्तु वि [आदातृ] ग्रहण करने वाला ; (ठा ७) ।
आदिय सक [आ+दा] ग्रहण करना । आदियइ ; (उवा) । प्रयो—आदियावेंति ; (सूअ २, १) ।
आदिल्ल } देखो आइल्ल ; (पि ५९५) ।
आदिल्लग }
आदी स्त्री [आदी] इस नाम की एक महानदी; (ठा ५, ३)।
आदीण वि [आदीन] १ अत्यंत दीन, बहुत गरीब; (सूअ १, ५) । २ न. दूषित भिक्षा । °भोइ वि [°भोजिन्] दूषित भिक्षा को लेने वाला ; " आदीणभोईवि करेति पावं " (सूअ १, १०) ।
आदीणिय वि [आदीनिक] अत्यन्त-दीन-संबन्धी ; " आदीणियं उक्कडियं पुरत्था " (सूअ १, ४) ।
आदेज्ज देखो आएज्ज ; (पण्ह १, ४) ।
आदेस आएस=आदेश (कुमा ; वव २, ८) ।
आधरिस सक [आ+धर्षय्] परास्त करना, तिरस्कारना । आधरिसंहि ; (आवम) ।
आधा देखो आहा ; (पिंड) ।
आधार देखो आहार=आधार ; (पण्ह २, ५) ।
आनय देखो आणय ; (अनु) ।
आनामिय देखो आणामिय ; (पण्ह १, ४) ।
आपण देखो आवण ; (अभि १८८) ।
आपण्ण देखो आवण्ण; (अभि ६५) ।
आपाइय वि [आपादित] १ जिसकी आपत्ति की गई हो वह । २ उत्पादित, जनित ; (विसे १७४९) ।
आपीड पुं [आपीड] शिरो-भूषण ; (श्रा २८) ।
आपीण देखो आवीण ; (गउड) ।
आपुच्छ सक [आ+प्रच्छ्] आज्ञा लेना ; सम्मति लेना । आपुच्छइ ; (महा) । वकृ—आपुच्छंत ; (पि ३६७) ।

कृ—आपुच्छणीय ; (णाया १, १)। संकृ—आपुच्छित्ता, आपुच्छित्ताणं, आपुच्छिऊण, आपुच्छिउं, आपुच्छिय ; (पि ५८२; ५८३; कप्प; ठा ५, १)।

आपुच्छण न [आप्रच्छन] आज्ञा, अनुमति; (णाया १, ६)।

आपुट्ठ वि [आप्रष्ट] जिसकी आज्ञा या सम्मति ली गई हो वह ; (सुर १०, ५१)।

आपुण्ण वि [आपूर्ण] पूर्ण, भरपूर ; (दे १, २०)।

आपूर पुं [आपूर] पूरने वाला ; " मयणसरापूरं... ससिं " (कप्प)।

आपूर देखो आऊर। कर्म—आपूरिज्जइ; (महा)। वकृ—आपूरमाण, आपूरेमाण ; (भग ; राय)।

आपेड, आपेड्ड, आपेल्ल } देखो आपीड ; (पि १२२, महा)।

आप्पण न [दे] पिष्ट, आटा ; (षड्)।

आफंस पुं [आस्पर्श] अल्प स्पर्श ; (हे १, ४४)।

आफर पुं [दे] द्यूत, जुआ ; (दे १, ६३)।

आफाल सक [आ+स्फालय्] आस्फालन करना, आघात करना। संकृ—आफालित्ता ; आफालिऊण ; (पि ५८२ ; ५८६)।

आफालण देखो अप्फालण ; (गा ५४६)।

आफोडिअ न [आस्फोटित] हाथ पछाडना ; (पण्ह १, ३)।

आबंध सक [आ+बन्ध्] मजबूत बाँधना। वकृ—आबंधंत ; (हे १, ७)। संकृ—आबंधिऊण; (पि ५८६)।

आबंध पुं [आबन्ध] संबन्ध, संयोग ; (गउड)।

आबद्ध वि [आबद्ध] बँधा हुआ ; (स ३५८)।

आबाहा स्त्री [आबाधा] १ अल्प बाधा ; (णाया १, ४)। २ अन्तर ; (सम १५)। ३ मानसिक पीड़ा ; (बृह)।

आभंकर पुं [आभङ्कर] १ ग्रह- विशेष ; (ठा २, ३)। २ न. विमान-विशेष; (सम ८)। °पभंकर न [°प्रभङ्कर] विमान-विशेष ; (सम ८)।

आभक्खाण देखो अब्भक्खाण ; (उवा)।

आभट्ठ वि [आभाषित] १ कथित, उक्त ; (सुपा १५१) २ संभाषित ; (सुर २, २४८)।

आभरण न [आभरण] अलंकार, आभूषण ; (पि ६०३)।

आभव्व वि [आभाव्य] होने योग्य ; संभाव्य ; (वव ; सुपा ३०७)।

आभा स्त्री [आभा] प्रभा, कान्ति, तेज ; (कुमा; औप)।

आभागि वि [आभागिन्] भोक्ता, भोगी "अणेयाणं जम्ममरणाणं आभागी भवेज्ज" (वसु ; णाया १, १८)।

आभार पुं [आभार] बोझ, भार ; (सुपा २३६)।

आभास सक [आ+भाष्] कहना, संभाषण करना। आभासइ ; (हे ४, ४४७)।

आभास पुं [आभास] १ जो वास्तविक में वह न होकर उसके समान लगता हो ; २ विपरीत ; "करणाभासेहिं" (कुमा)।

आभासिय पुं [आभाषिक] १ इस नामका एक म्लेच्छ देश; २ उसमें रहने वाली म्लेच्छ जाति ; (पण्ह १, १)। ३ एक अन्तर्द्वीप ; ४ उसमें रहने वाला ; "कहि णं भंते! आभासियमणुयाणं आभासियदीवे नामं दीवे" (जीव ३; ठा ४, २)।

आभासिय देखो आभट्ठ ; (निर)।

आभिओइय देखो आभिओगिय ; (महा)।

आभिओग पुं [आभियोग्य] १ किंकर-स्थानीय देव-विशेष ; (ठा ४, ४)। २ नौकर, किंकर ; (राय)। ३ किंकरता, नौकरी ; (दस ६, २)।

आभिओगि वि [आभियोगिन्] किंकर-स्थानीय देव; (दस ६)।

आभिओगिय वि [आभियोगिक] १ मन्त्र आदि से आजीविका चलाने वाला ; (पण्ण २०)। २ नौकर-स्थानीय देव-विशेष ; (णाया १, ८)। ३ वशीकरण, दूसरे को वश में करने का मन्त्रादि-कर्म ; (पंचा ; महा)।

आभिओगिय वि [आभियोगित] वशीकरण आदि से संस्कृत ; (आव)।

आभिओग्ग देखो आभिओग ; (पण्ण २०)।

आभिग्गहिय वि [आभिग्रहिक] १ प्रतिज्ञा से संबन्ध रखने वाला ; २ प्रतिज्ञा का निर्वाह करने वाला ; (आव)। ३ न. मिथ्यात्व-विशेष ; (श्रा ६)।

आभिणंदिय पुं [आभिनन्दित] श्रावण मास ; (चंद)।

आभिट्ट, आभिडिय } वि [दे] प्रवृत्त; "आभिट्ट परमरणं" (पउम ४, ४२ ; ६, १६२ ; वज्जा ४२)।

आभिणिबोहिय न [**आभिनिबोधिक**] इन्द्रिय और मन से होने वाला प्रत्यक्ष ज्ञान-विशेष; (सम ३३)।

आभिसेक्क वि [**आभिषेक्य**] १ अभिषेक के योग्य; (निर १, १)। २ मुख्य, प्रधान; "आभिसेक्कं हत्थिरयणं पडिकप्पेह" (औप)।

आभीर } **आभीरिय** } पुं [**आभीर**] एक शूद्र-जाति; अहीर, गोवाला; (सूअ १, ८; सुर ६, ६२)।

आभूअ वि [**आभूत**] उत्पन्न; (निर १, १)।

आभेडिय [**दे**] देखो **आभिट्ट**; (उप पृ ४२)।

आभोइअ वि [**आभोगित**] देखा हुआ; (कप्प)।

आभोग पुं [**आभोग**] १ विलोकन, देखना; (उप १४७)। २ प्रदेश, स्थान; (सुर २, २२१)। ३ उपकरण, साधन; (ओघ ३६)। ४ प्रतिलेखन; (ओघ ३)। ५ उपयोग, ख्याल; (भग)। ६ विस्तार; (गाया १, १)। ७ ज्ञान, जानना; (भग २५, ६; ठा ४)। देखो **आभोय**=आभोग।

आभोगण न [**आभोगन**] ऊपर देखो; (वंदि)।

आभोगि वि [**आभोगिन्**] परिपूर्ण, "जह कमलो निरवाओ जाओ जसविहवाभोगी" (सुपा २७५)। °**णी** स्त्री [°**नी**] मानसिक निर्णय उत्पन्न कराने वाली विद्या-विशेष; (बृह)।

आभोय सक [**आ+भोगय्**] १ देखना। २ जानना। ३ ख्याल करना। आभोएइ; (उवा; गाया)। वकृ—**आभोएमाण**; (कप्प)। संकृ—**आभोइत्ता, आभोएऊण, आभोइअ**; (दस ५; महा; पंचव)।

आभोय पुं [**आभोग**] १ सर्प की फणा; (स ६१०)। २ देखो **आभोग**; (आव; महा; सुर ३, ३२)।

आम अ [**आम**] अनुमति-प्रकाशक अव्यय, हाँ; (गा ४१७; सुर २, २४५; स ४५६)।

आम पुं [**आम**] १ रोग, पीड़ा; (से ६, ४४)। २ वि. अपक्व, कच्चा; (श्रा २०)। ३ अशुद्ध, अपवित्र; (आचा)। °**जर** पुं [°**ज्वर**] अजीर्ण से उत्पन्न बुखार; (गा ५१)।

आमइ वि [**आमयिन्**] रोगी; (वव १, १)।

आमंड न [**दे**] बनावटी आमला का फल, कृत्रिम आमलक; (उप पृ २१४; उप १४५ टी)।

आमंडण न [**दे**] भाण्ड, पात्र; (दे १, ६८)।

आमंत सक [**आ+मन्त्रय्**] १ आह्वान करना, संबोधन करना। २ अभिनन्दन करना। वकृ—**आमंतेमाण**; (आचा)। संकृ—**आमंतित्ता**; (कप्प); **आमंतिय**; (सूअ १, ४)।

आमंतण न [**आमन्त्रण**] आह्वान, संबोधन; (वव) °**वयण** न [°**वचन**] संबोधन-विभक्ति; (विसे ३४५७)।

आमंतणी स्त्री [**आमन्त्रणी**] १ संबोधन की भाषा; आह्वान की भाषा; (दस ६)। २ आठवीं संबोधन-विभक्ति; (ठा ८)।

आमंतिय वि [**आमन्त्रित**] संबोधित; (विपा १, ६)।

आमग देखो **आम**; (गाया १, ६)।

आमज्ज सक [**आ+मृज्**] एक वार साफ करना। आमज्जेज्ज; (आचा)। वकृ—**आमज्जंत**; (निचू) प्रयो—**आमज्जावंत**, (निचू)।

आमद्द पुं [**आमर्द**] संघर्ष, आघात; (कुमा)।

आमय पुं [**आमय**] रोग, दर्द; (स ५६६; स्वप्न ६०)। °**करणी** स्त्री [°**करणी**] विद्या-विशेष; (सूअ २, २)।

आमय वि [**आमत**] संमत, अनुमत; (विवे १३६)।

आमरिस पुं [**आमर्ष**] स्पर्श; (विसे ११०६)।

आमलई स्त्री [**आमलकी**] आमला का पेड; (दे)।

आमलकप्पा स्त्री [**आमलकल्पा**] नगरी-विशेष; (गाया २, १)।

आमलग पुं [**आमरक**] १ चारों ओर से मारना। २ विपाक-श्रुत का एक अध्ययन; (ठा १०)।

आमलग } **आमलय** } पुंन [**आमलक**] १ आमला का पेड; (ठा ४)। २ आमला का फल; "मुक्खोवाओ आमलगो व्विं करतले देसिओ भगवया" (वसु; कुमा)।

आमलय न [**दे**] नूपुर-गृह, नूपुर रखने का स्थान; (दे १, ६७)।

आमसिण वि [**आमसृण**] १ थोडा चिकना; २ उल्लसित; (से १२, ४३)।

आमिल्ल सक [**आ+मुच्**] छोड़ना। **आमिल्लइ**; (भवि)।

आमिस न [**आमिष**] १ मांस; (गाया १, ४)। २ वि. मनोहर, सुन्दर; (से ६, ३१)। ३ आसक्ति का कारण; "आमिसं सव्वमुज्झित्ता विहरिस्सामो निरामिसा" (उत्त १४)। ४ आहार, फलादि भोज्य वस्तु; (पंचा ६)।

आमुंच सक [आ+मुच्] १ छोड़ना। २ उतारना। ३ पहनना। वकृ—**आमुंचंत** ; (आक ३८)।

आमुक्क वि [आमुक्त] १ त्यक्त ; (गा ५३६; गउड)। २ उतारा हुआ ; (आक ३८)। ३ परिहित ; (वेणी १११ टी)।

आमुट्ठ वि [आमृष्ट] १ स्पृष्ट। २ उलटा किया हुआ ; (ओघ)।

आमुय सक [आ+मुच्] छोड़ना, त्यागना। आमुयइ ; (गउड)।

आमुस सक [आ+मृश्] थाड़ा या एक वार स्पर्श करना। वकृ—**आमुसंत, आमुसमाण** ; (ठा १; आचा ; भग ८, ३)।

आमेडणा स्त्री [आम्रेडना] विपर्यस्त करना, उलटा करना ; (पण्ह १, ३)।

आमेल पुं (दे) लट, जटा ; (दे १, ६२)।

आमेल, आमेलग, आमेलय पुं [आपीड़] फूलों की माला, जो मुकुट पर धारण की जाती है, शिरो-भूषण; (हे १, १०५; पि १२२ ; भग ६, ३३)।

आमेलिअ वि [आपीडित] अवतंसित, शिरो-भूषण से विभूषित ; (से ६, २१)।

आमोअ अक [आ+मुद्] खुश होना। संकृ—**आमोएवि** (अप) ; (भवि)।

आमोअ पुं [दे. आमोद] हर्ष, खुशी ; (दे १, ६४)।

आमोअ पुं [आमोद] सुगन्ध, अच्छी गन्ध ; (से १, ३३)।

आमोअअ वि [आमोदक] १ सुगन्ध उत्पन्न करने वाला। २ आनन्द-जनक ; (से ६, ४०)।

आमोअअ वि [आमोदद] सुगन्ध देने वाला ; (से ६, ४०)।

आमोइअ वि [आमोदित] हृष्ट, हर्षित ; (भवि)।

आमोक्खा स्त्री [आमोक्ष] १ छुटकारा। २ परित्याग ; (सूअ १, ३ ; पि ४६०)।

आमोड पुं [दे] जूट, लट, समूह ; (दे १, ६२)।

आमोडग न [आमोटक] १ वाद्य-विशेष; (आचू)। २ फूलों से वालों का एक प्रकार का वन्धन ; (उत्त ३)।

आमोडण न [आमोटन] थोडा मोड़ना; (पण्ह १, १)।

आमोडिअ वि [आमोटित] मर्दित ; (माल ६०)।

आमोद, आमोय देखो **आमोअ** ; (स्वप्न ५२; सुर ३, ४१; काल)।

आमोय पुं [आमोक] कतवर-पुञ्ज, कतवार का ढग, धूली का पुञ्ज ; (आचा २, ७, ३)।

आमोरअ वि [दे] विशेष-ज्ञ, अच्छा जानकार ; (दे १, ६६)।

आमोस पुं [आमर्श, °र्ष] स्पर्श, छूना ; "संफरिसमामोसो" (पण्ह २, १ टी ; विसे ७८१)।

आमोसग वि [आमोषक] १ चोर, चोरी करने वाला; (ठा ५, २)। २ चोरों की एक जाति ; (उर २, ६)।

आमोसहि पुं [आमर्शौषधि] लब्धि-विशेष, जिसके प्रभाव से स्पर्श मात्र से ही सव रोग नष्ट होते हैं ; (पण्ह २, १; औप)।

आय पुं [आय] १ लाभ, प्राप्ति, फायदा; (अणु)। २ वनस्पति-विशेष ; (पगण १)। ३ कारण, हेतु ; (विसे १२२६; २६७६) ४ अध्ययन, पठन ; (विसे ६६५८)। ५ गमन ; (विसे २७६२)।

आय वि [आज] १ अज-संवन्धी, २ वकरे के वाल से उत्पन्न (वस्त्रादि) ; (आचा)।

आय वि [आगत] आया हुआ ; (काल)।

आय वि [आत्त] गृहीत ; "आयचरित्तो करेइ सामण्णं" (संथा ३६)।

आय पुं [आगस्] १ पाप ; २ अपराध, गुन्हा ; (श्रा २३)।

आय पुंस्त्री [आत्मन्] १ आत्मा, जीव ; (सम १)। २ निज, स्वयं ; "अहालहुस्सगाइं रयणाइं गहाय आयाए एगंतमंतं अवक्कामंति" (भग ३, २)। ३ शरीर, देह; (णाया १, ८)। ४ ज्ञान आदि आत्मा के गुण; (आचा)। **°गुत्त** वि [°गुप्त] संयत, जितेन्द्रिय; "आयगुत्ता जिइंदिया" (सूअ)। **°जोगि** वि [°योगिन्] मुमुक्षु, ध्यानी; (सूअ)। **°ट्ठि** वि [°र्थिन्] मुमुक्षु; "एवं से भिक्खु आयट्ठी" (सूअ)। **°तंत** वि [°तन्त्र] स्वाधीन, स्वतन्त्र ; (राज)। **°तत्त** न [°तत्त्व] परम पदार्थ, ज्ञानादि रत्न-त्रय ; (आचा)। **°प्पमाण** वि [°प्रमाण] साढ़े तीन हाथ का परिमाण वाला; (पव)। **°प्पवाय** न [°प्रवाद] वारहवें जैन अङ्ग ग्रन्थ का एक भाग, सातवाँ पूर्व ; (सम २६)। **°भाव** पुं [°भाव] १ आत्म-स्वरूप; २ निज अभिप्राय ; (भग)। ३ विषया-

सत्ति ; " विणइज्जओ सव्वह आयभावं " (सूत्र)। °य पुं [°ज] पुत्र, लड़का; (भवि)। °रक्ख वि [°रक्ष] अङ्ग-रक्षक ; (णाया १, ८)। °व वि [°वत्] ज्ञानादि आत्म-गुणों से संपन्न ; (आचा)। °हम्म वि [°घ्न] आत्मा को अधोगति में ले जाने वाला; २ देखो आहाकम्म; (पिंड)।

आय° देखो आवइ ; " किंचायरक्खिओ जो पुरिसो सो होइ वरिससयआऊ " (सुपा ४५३)

आयइ स्त्री [आयति] भविष्य काल ; (सुर ४, १३१)।

आयइत्ता देखो आइ=आ+दा ।

आयंक पुं [आतङ्क] १ दुःख; २ पीडा ; (आचा)। ३ दुःसाध्य रोग, आशु-घाती रोग ; (औप)।

आयंगुल न [आत्माङ्गुल] परिमाण का एक भेद ;
"जेणं जया मणूसा, तेसिं जं होइ माणरूवं तु।
तं भणियमिहायंगुलमणिययमाणं पुण इमं तु।"
(विसे ३४० टी)।

आयंच सक [आ+तञ्च्] सींचना, छिटकना। आयंचइ, आयंचामि ; (उवा)।

आयंचणिया स्त्री [आतञ्चनिका] कुम्भकार का पात्र-विशेष, जिसमें वह पात्र बनाने के समय मिट्टी वाला पानी रखता है ; (भग १५)।

आयंचणी स्त्री [आतञ्चनी] ऊपर देखो ; (भग १५)।

आयंत वि [आचान्त] जिसने आचमन किया हो वह ; (णाया १, १ ; स १८६)।

आयंत देखो आया=आ+या ।

आयंतम वि [आत्मतम] आत्मा को खिन्न करने वाला ; (ठा ४, २)।

आयंतम वि [आत्मतमस्] १ अज्ञानी, अजान ; २ क्रोधी ; (ठा ४, २)।

आयंदम वि [आत्मदम] १ आत्मा को शान्त रखने वाला, मन और इन्द्रियों का निग्रह करने वाला; २ अश्व आदि को संयत रहने को सीखाने वाला ; (ठा ४, २)।

आयंप पुं [आकम्प] १ काँपना, हिलना। २ कँपाने वाला; (पउम ६६, १८)।

आयंपिय वि [आकम्पित] कँपाया हुआ ; (स ३५३)।

आयंब अक [वेप्] काँपना, हिलना। आयंबइ ; (हे ४, १४७)।

आयंब } वि [आताम्र] थोड़ा लाल ; (औप;
आयंबिर } सुर ३, ११०, सुपा ६, १४४)।

आयंबिल न [आचाम्ल] तप-विशेष, आंबिल ; (णाया १, ८)। °वड्ढमाण न [°वर्धमान] तपश्चर्या-विशेष ; (अंत ३२ ; महा)।

आयंबिलिय वि [आचाम्लिक] आम्बिल-तप का कर्ता ; (ठा ७ ; पण्ह २, १)।

आयंभर } वि [आत्मम्भरि] स्वार्थी, एकलपेटा ;
आयंभरि } (ठा ४, ३)।

आयंव अक [आ+कम्प्] काँपना, हिलना ; (प्रामा)।

आयंस } पुं [आदर्श] १ दर्पण ; (पण्ह १, ४ ; सूअ
आयंसग } १, ४)। २ बैल आदि के गले का भूषण-विशेष ; (अणु)। °मुह पुं [°मुख] १ एक अन्तर्द्वीप ; २ उसके निवासी मनुष्य ; (ठा ४, २)।

आयक्ख देखो आइक्ख। आयक्खाहि ; (भग)।

आयग वि [आजक] देखो आय=आज ; (आचा)।

आयज्झ अक [वेप्] काँपना, हिलना। आयज्झइ ; (हे ४, १४१ ; षड्)। वकृ—आयज्झंत ; (कुमा)।

आयट्ट सक [आ+वर्त्तय्] १ फिराना, घूमाना। २ उवा-लना। वकृ—आअट्टंत ; (से ५, ७५ ; ८, १६)। कवकृ—आयट्टिज्जमाण ; (णाया १, ६)।

आयट्टण न [आवर्त्तन] फिराना ; (सुपा ५३०)।

आयड्ढ सक [आ+कृष्] खींचना। आयड्ढइ, (महा)। कवकृ—आअड्ढिज्जंत ; (से ५, २८)। संकृ—आयड्ढिऊण ; (महा)।

आयड्ढण न [आकर्षण] आकर्षण, खींचाव ; (सुपा १२; ७६ ; गा ११८)।

आयड्ढि स्त्री [आकृष्टि] ऊपर देखो ; (गउड ; दे ६, २१)।

आयड्ढि पुं [दे] विस्तार ; (दे १, ६४)।

आयड्ढिय वि [आकृष्ट] खींचा हुआ ; (काल; कप्पू)।

आयण्ण सक [आ+कर्णय्] सुनना, श्रवण करना। आअण्णेइ ; (गा ३६५)। वकृ—आअण्णंत ; (से १, ६५ ; गा ४६५ ; ६४३)। संकृ—आयण्णिऊण; (उवा)।

आयण्णण न [आकर्णन] श्रवण ; (महा)।

आयण्णिय वि [आकर्णित] सुना हुआ ; (उवा)।

आयतंत वकृ [आददत्] ग्रहण करता हुआ; (सूत्र २, १)।

आयत्त वि [आयत्त] आधीन, स्व-वश; (गा ३७६)।

आयन्न देखो **आयण्ण**। वकृ—**आयन्नंत**; (सुर १, २४७)।

आयन्नण देखो **आयण्णण**; (सुर ३, २१०)।

आयम सक [आ+चम्] आचमन करना, कुल्ला करना। हेकृ—**आयमित्तए**; (कप्प)। वकृ—**आयममाण**; (ठा ५)।

आयमण न [आचमन] शुद्धि, शौच; (श्रा १२; गा ३३०; निचू ४; स २०६; २५२)।

आयमिअ देखो **आगमिअ**; (हे १, १७७)।

आयमिणी स्त्री [आयमिनी] विद्या-विशेष; (सूत्र २, २)।

आयय वि [आयत] १ लम्बा, विस्तृत; (उवा; पउम ८, २१५)। २ पुं. मोक्ष; (सूत्र १, २)।

आययण न [आयतन] १ घर, गृह; (गउड)। २ आश्रय, स्थान; (आचा)। ३ देव-मन्दिर; (आवम)। ४ धार्मिक जनों का एकत्र होने का स्थान;
"जत्थ साहम्मिया बहवे सीलवंता बहुस्सुया।
चरित्तायारसंपण्णा आययणं तं वियाण हु" (धम्म)।
५ कर्म-बन्ध का कारण; (आचा)। ६ निर्णय, निश्चय; (सूत्र १, ६)। ७ निर्दोष स्थान; (सार्ध १०६)।

आयर सक [आ+चर्] आचरना, करना। आयरइ; (महा; उव)। वकृ—**आयरंत, आयरमाण**; (भग)। कृ—**आयरियव्व**; (स १)

आयर पुं [आकर] १ खानि, खान; २ समूह; (काल; कप्पू)।

आयर देखो **आयार**=आचार; (पुप्फ ३५६)।

आयर पुं [आदर] १ सत्कार, सम्मान; (गउड)। २ परिग्रह, असंतोष; (पण्ह १, ५)। ३ ख्याल, संभाल; (कप्पू)।

आयरंग पुं [आयरङ्ग] इस नाम का एक म्लेच्छ राजा; (पउम २७, ६)।

आयरण न [आचरण] प्रवृत्ति, अनुष्ठान; (पडि)।

आयरण न [आदरण] आदर; (भग १२, ५)।

आयरणा स्त्री [आचरणा] आचरण, अनुष्ठान; (सद्धि १४५; उवर १४५)।

आयरिय वि [आचरित] १ अनुष्ठित, विहित, कृत; (उवा)। २ न. शास्त्र-सम्मत चाल-चलन;
"असढेण समाइन्नं जं कत्थइ केणइ असावज्जं।
न निवारियमन्नेहि य, बहुमणुमयमेयमायरियं" (उप ८१३)।

आयरिय पुं [आचार्य] १ गण का नायक, मुखिया; (आवम)। २ उपदेशक, गुरु, शिक्षक; (भग १, १)। ३ अर्थ पढाने वाला; (भग ८, ८)।

आयरिस देखो **आयंस**; (हे २, १०५)।

आयल्ल अक [लम्ब्] १ व्याप्त होना। २ लटकना।
"केसकलाउ खंधि ओणल्लइ, परिमोक्कलु नियंवि आयल्लइ" (भवि)।

आयल्लया स्त्री [दे] बेचैनी; "मयणसरविहुरियंगी सहसा आयल्लयं पत्ता" (पउम ८, १८६)। "विद्धो अणंगबाणेहिं झत्ति आयल्लयं पत्तो" (सुर १६, ११०)। "किं उण पिअवअस्स मअणाअल्लअं अत्तणो अक्खरेहिं णिवेदेमि" (कप्पू)। देखो **आअल्ल**।

आयल्लिय वि [दे] आक्रान्त; व्याप्त; (उप १०३१ टी; भवि)।

आयव वि [आतप] १ उद्द्योत, प्रकाश; (गा ४६)। २ ताप, घाम; (उत्त)। ३ न. मुहूर्त्त-विशेष; (सम ५१)। °**णाम** °**नाम** न [°नामन्] नामकर्म का एक भेद; (सम ६७)।

आयवत्त न [आतपत्र] छत्र, छाता; (णाया १, १)।

आयवत्त पुं [आर्यावर्त्त] भारत, हिंदुस्तान; (इक)।

आयवा स्त्री [आतपा] १ सूर्य की एक अग्र-महिषी—पटरानी; २ इस नाम का 'ज्ञाताधर्मकथा' सूत्र का एक अध्ययन; (णाया २, १)।

आयस वि [आयस] लोहे का, लोह-निर्मित; (गउड; निचू १)।

आयसी स्त्री [आयसी] लोहे की कोश; (पण्ह १, १)।

आया देखो **आय**=आत्मन्।

आया सक [आ+या] आना, आगमन करना। आयंति; (सुपा ५७)। आयाइंति, आयाइंसु; (कप्प)। वकृ—**आयंत**।

आया सक [आ+दा] ग्रहण करना, स्वीकार करना। आयइज्ज; (उत्त ६)। कृ—**आयाणिज्ज**; (ठा ६)। संकृ—**आयाए, आदाय, आयाय**; (कस; कप्प; महा)।

आयाइ स्त्री [आजाति] १ उत्पत्ति, जन्म; (ठा १०) । २ जाति, प्रकार ; ३ आचार, आचरण ; (आचा) । °ट्ठाण न [°स्थान] १ संसार, जगत् ; २ 'आचाराङ्ग' सूत्र के एक अध्ययन का नाम ; (ठा १०) ।

आयाइ स्त्री [आयाति] १ आगमन । २ उत्पत्ति, गर्भ से बाहर निकलना ; (ठा २, ३) । ३ आयति, भविष्य काल ; (दसा) ।

आयाए देखो आया=आ+दा ।

आयाण पुंन [आदान] १ ग्रहण, स्वीकार ; (आचा) । २ इन्द्रिय ; (भग ५, ४) । ३ जिसका ग्रहण किया जाय वह, ग्राह्य वस्तु ; (ठा ४; सूत्र २, ७) । ४ कारण, हेतु ; " संति मे तउ आयाणा जेहिं कीरइ पावगं " (सूत्र १, १) ; " किंवा दुक्खआयाणं अट्टज्झाणं समारुहसि " (पउम ६५, ४८) । ५ आदि, प्रथम ; (अणु) ।

आयाण न [आयान] १ आगमन । २ अश्व का एक आभरण-विशेष ; (गउड) ।

आयाम सक [आ+यमय्] लम्बा करना । कवकृ— आआमिज्जंत ; (से १०, ७) । संकृ—आयामेत्ता, आयामेत्ताणं ; (भग ; पि ५८३) ।

आयाम सक [दा] देना, दान करना । आयामेइ ; (भग १५) । संकृ—आयामेत्ता ; (भग १५) ।

आयाम पुं [आयाम] लम्बाई, दैर्घ्य ; (सम २; गउड) ।

आयाम पुं [दे] बल, जोर ; (दे १, ६५) ।

आयाम न [आचाम्ल] तप-विशेष, आयंबिल ; " नाइ- विगिट्ठो उ तवो छम्मासे परिमियं तु आयामं " (आचानि २७२ ; २७३) ।

आयाम } न [आचाम] अवस्रावण, चावल आदि का
आयामग } पानी ; (ओघ ३५६ ; उत्त १५) ।

आयामणया स्त्री [आयामनता] लम्बाई ; (भग) ।

आयामि वि [आयामिन्] लम्बा ; (गउड) ।

आयामुही स्त्री [आयामुखी] इस नाम की एक नगरी ; (स ४३१) ।

आयाय देखो आया=आ+दा ।

आयाय वि [आयात] आया हुआ ; (पउम १४, १३० ; दे १, ६६ ; कुम्मा १६) ।

आयार सक [आ+कारय्] बोलाना, आह्वान करना । आआरेदि (शौ) ; (नाट) । संकृ—आआरिअ; आया- रेऊण ; (नाट ; स ५७८) ।

आयार पुं [आकार] १ आकृति, रूप ; (गाया १, १) । २ इङ्गित, इसारा ; (पात्र) ।

आयार पुं [आचार] १ आचरण, अनुष्ठान ; (ठा २, ३ ; आचा) । २ चालचलन, रीतभात ; (पउम ६३, ८) । ३ बारह जैन अङ्ग-ग्रन्थों में पहला ग्रन्थ " आयारपढम- सुत्ते " (उप ६८०) । ४ निपुण शिष्य ; (भग १, १) । °क्खेवणी स्त्री [°क्षेपणी] कथा का एक भेद ; (ठा ४) । °भंडग °भंडय न [°भाण्डक] ज्ञानादि का उपकरण—साधन ; (गाया १, १ ; १६) ।

आयारिमय न [आचारिमक] विवाह के समय दिया जाता एक प्रकार का दान ; (स ७७) ।

आयारिय वि [आकारित] १ आहूत, बोलाया हुआ ; (पउम ६१, २५) । २ न. आह्वान-वचन, आक्षेप-वचन ; (से १३, ८० ; अभि २०५) ।

आयाव सक [आ+तापय्] सूर्य के ताप में शरीर को थोडा तपाना । २ शीत, आतप आदि को सहन करना । वकृ— आयावंत ; (पउम ६, ६१) ; आयाविंत ; (काल) ; आया- वेंत ; (पउम २६, २१) ; आयावेमाण ; (महा ; भग) । हेकृ—आयावेत्तए ; (कस) । संकृ—आयाविय ; (आचा) ।

आयाव पुं [आताप] असुरकुमार-जातीय देव-विशेष ; (भग १३, ६) ।

आयावग वि [आतापक] शीत आदि को सहन करने वाला ; (सूत्र २, २) ।

आयावण न [आतापन] एक वार या थोडा आतप आदि को सहन करना ; (गाया १, १६) । °भूमि स्त्री [°भूमि] शीतादि सहन करने का स्थान ; (भग ६, ३३) ।

आयावणया } स्त्री [आतापना] ऊपर देखो ;
आयावणा } (ठा ३, ५) ।

आयावय वि [आतापक] शीत आदि को सहन करने वाला ; (पण्ह २, १) ।

आयावल } पुं [दे] सवेर का तड़का, बालातप ; (दे
आयावलय } १, ७० ; पात्र) ।

आयावि वि [आतापिन्] देखो आयावय ; (ठा ४) ।

आयास सक [आ+यासय्] तकलीफ देना, खिन्न करना । आआसंति ; (पि ४६०) । संकृ—आआसिअ ; (मा ४५) ।

आयास पुं [आयास] १ तकलीफ, परिश्रम, खेद ; (गउड) । २ परिग्रह, असन्तोष ; (पण्ह १, ५) । °लिवि स्त्री [°लिपि] लिपि-विशेष ; (पण्ण १) ।

आयास देखो **आयंस** ; (षड्)।
आयास देखो **आगास**; (पउम ६६, ४० ; हे १, ८४)।
°**तिलय** न [°तिलक] नगर-विशेष ; (भवि)।
आयासइत्तिअ वि [आयासयितृ] तकलीफ देने वाला ; (अभि ६३)।
आयासतल न [दे] प्रासाद का पृष्ठ भाग; (दे १,७२)।
आयासलव न [दे] पत्ति-गृह, नीड़ ; (दे १, ७२)।
आयासिअ वि [आयासित] परिश्रान्त, खिन्न ; (गा १६०)।
आयाहिण न [आदक्षिण] दक्षिण पार्श्व से भ्रमण करना ; (उवा)। °**पयाहिण** वि [°प्रदक्षिण] दक्षिण पार्श्व से भ्रमण कर दक्षिण पार्श्व में स्थित होने वाला ; (विपा १, १)। °**पयाहिणा** स्त्री [°प्रदक्षिणा] दक्षिण पार्श्व से परिभ्रमण, प्रदक्षिणा ; (ठा १)।
आयु देखो **आउ**=आयुष् । °**वंत** वि [°वत्] चिरायुष्क, दीर्घ आयु वाला ; (पण्ह १, ४)।
आर पुं [आर] १ मंगल-ग्रह ; (पउम १७, १०८ ; सुर १०, २२४)। २ चौथी नरक का एक नरकावास ; (ठा ६)। ३ वि. अर्वाक्तन, पूर्व का ; (सूअ १, ६)।
°**आरअ** वि [कारक] कर्त्ता, करने वाला ; (गा १७६; ३४८)।
आरओ अ [आरतस्] १ पूर्व, पहले, अर्वाक् ; (सूअ १, ८ ; स ६४३)। २ समीप में, पास में; (उप ३३१)। ३ शुरू कर के, प्रारम्भ कर के ; (विसे २२८५)।
आरंदर वि [दे] १ अनेकान्त ; २ संकट, व्याप्त; (दे १, ७८)।
आरंभ सक [आ+रभ्] १ शुरू करना । २ हिंसा करना । आरंभइ ; (हे ४, १५५)। वकृ—**आरंभंत** (गा ४२ ; से ८, ८२)। संकृ—**आरंभइत्ता, आरंभिअ**; (नाट)।
आरंभ पुं [आरम्भ] १ शुरूआत, प्रारम्भ ; (हे १, ३०)। २ जीव-हिंसा, वध; (श्रा ७)। ३ जीव, प्राणी ; (पण्ह १, १)। ४ पाप-कर्म ; (आचा)। °**य** वि [°ज] पाप-कार्य से उत्पन्न ; (आचा)। °**विणय** पुं [°विनय] आरंभ का अभाव। °**विणइ** वि [°विनयिन्] आरंभ से विरत ; (आचा)।
आरंभग } पुं [आरम्भक] १ ऊपर देखो ; (सूअ २,
आरंभय } ६)। २ वि. शुरू करने वाला ; (विसे ६२८ ; उप पृ ३)। ३ हिंसक, पाप-कर्म करने वाला ; (आचा)।
आरंभि वि [आरम्भिन्] १ शुरू करने वाला ; (गउड)। २ पाप-कार्य करने वाला ; (उप ८६६)।
आरंभिअ पुं [दे] मालाकार, माली ; (दे १, ७१)।
आरंभिअ वि [आरब्ध] प्रारब्ध, शुरू किया हुआ; (भवि)।
आरंभिअ देखो **आरंभ**=आ+रभ्।
आरंभिया स्त्री [आरम्भिकी] १ हिंसा से सम्बन्ध रखने वाली क्रिया ; २ हिंसक क्रिया से होने वाला कर्म-बन्ध ; (ठा २, १ ; नव १७)।
आरक्ख वि [आरक्ष] १ रक्षण करने वाला ; (दे १, १५)। २ पुं. कोटवाल, नगर का रक्षक ; (पाअ)।
आरक्खग वि [आरक्षक] १ रक्षण करने वाला, त्राता; (कप्प; सुपा ३५१)। २ पुं. क्षत्रियों का एक वंश; ३ वि. उस वंश में उत्पन्न ; (ठा ६)।
आरक्खि वि [आरक्षिन्] रक्षक, त्राता ; (ठा ३,१; ओघ २६०)।
आरक्खिग } वि [आरक्षिक] १ रक्षक, त्राता ; २ पुं.
आरक्खिय } कोटवाल ; (निचू १, १६ ; सुपा ३३६; महा ; स १२७; १५१)।
आरज्झ वि [आराध्य] पूज्य, माननीय; (अच्चु ७१)।
आरड सक [आ+रट्] १ चिल्लाना, बूम मारना । २ रोना । वकृ—**आरडंत** ; (उप १२८टी)। संकृ—**आरडिऊण**; (महा)।
आरडिअ न [दे] १ विलाप, क्रन्दन; २ वि. चित्त-युक्त; (दे १, ७५)।
आरण पुं [आरण] १ देवलोक-विशेष ; (अनु ; सम ३६; इक)। २ उस देवलोक का निवासी देव ; "तं चेव आरणच्चुय ओहीनाणेण पासंति" (संग २२१; विसे ६६६)।
आरण न [दे] १ अधर, होठ ; २ फलक ; (दे १,७६)।
आरणाल न [आरनाल] कांजी, साबुदाना ; (दे १,६७)।
आरणाल न [दे] कमल, पद्म ; (दे १, ६७)।
आरण्ण वि [आरण्य] जंगली, जंगल-निवासी ; (हे ८, ५६)।
आरण्णग } वि [आरण्यक] १ जंगली, जंगल-निवासी,
आरण्णय } जंगल में उत्पन्न; (उप २२६; दसा)। २ द. शास्त्र-विशेष, उपनिषद्-विशेष , (पउम ११, १०)।
आरण्णिय वि [आरण्यिक] जंगल में वसने वाला (तापस आदि) ; (सूअ २, २)।

आरत वि [आरत] १ थोड़ा रक्त ; (आचा) । २ अत्यन्त अनुरक्त ; (पण्ह २, ४) ।
आरत्तिय न [आरात्रिक] आरती; (सुर १०, १६; कुमा)।
आरद्ध वि [आरब्ध] प्रारब्ध, शुरू किया हुआ ; (काल) ।
आरद्ध वि [दे] १ बढ़ा हुआ ; २ सतृष्ण, उत्सुक ; ३ घर में आया हुआ ; (दे १, ७५) ।
आरनाल देखो आरणाल=आरनाल ; (पाअ) ।
आरनाल न [दे] कमल, पद्म ; (षड्) ।
आरव देखो आरव ।
आरब्भ नीचे देखो ।
आरभ देखो आरंभ=आ + रभ् । आरभइ ; (हे ४, १५५ ; उवर १०) । वकृ—आरभंत, आरभमाण ; (ठा ७) । संकृ—आरब्भ ; (विसे ७६५) ।
आरभड न [आरभट] १ नृत्य का एक भेद ; (ठा ४, ४) । २ इस नाम का एक मुहूर्त ;
"छव्वेव य आरभडो सोमित्तो पंचअंगुलो होइ" (गणि) ।
आरभडा स्त्री [आरभटा] प्रतिलेखना-विशेष ; (ओघ १६२ भा) ।
आरभिय न [आरभित] नाट्यविधि-विशेष ; (राय) ।
आरय वि [आरत] १ उपरत ; २ अपगत ; (सूअ १, १५) ।
आरव पुं [आरव] शब्द, अवाज, ध्वनि ; (सण) ।
आरव पुं [आरब] इस नाम का एक प्रसिद्ध म्लेच्छ-देश ; (पण्ह १, १) ।
आरव } वि [आरब] अरब देश में उत्पन्न, अरब देश का
आरवग } निवासी । स्त्री—°वी ; (णाया १, १) ।
आरविंद वि [आरविन्द] कमल-सम्बन्धी ; (गउड) ।
आरस सक [आ+रस्] चिल्लाना, बूम मारना । वकृ—आरसंत; (उत्त १९) । हेकृ—आरसिउं ; (काल) ।
आरसिय न [आरसित] १ चिल्लाहट; बूम; २ चिल्लाया हुआ ; (विपा १, २) ।
आरह देखो आरभ । आरहइ; (षड्) । संकृ—आरहिअ ; (अभि ९०) ।
आरा स्त्री [आरा] लोहे की सलाई, पैनेमें डाली जाती लोहे की खीली ; (पण्ह १, १ ; स ३८) ।
आरा अ [आरात्] १ अर्वाक्, पहले ; (दे १, ६३) । २ पूर्व-भाग ; (विसे १७४०) ।

आराइअ वि [दे] १ गृहीत, स्वीकृत ; २ प्राप्त ; (दे १, ७०) ।
आराडी स्त्री [दे] देखो आरडिअ; (दे १, ७५) ।
आराम पुं [आराम] वगीचा, उपवन; (औप; णाया १,१)।
आरामिअ पुं [आरामिक] माली ; (कुमा) ।
आराव पुं [आराव] शब्द, अवाज ; (स ५७७; गउड)।
आराह सक [आ+राधय्] १ सेवा करना, भक्ति करना । २ ठीक ठीक पालन करना । आराहइ, आराहेइ ; (महा; भग) । वकृ—आराहंत; (रयण ७०) । संकृ—आराहित्ता, आराहेत्ता, आराहिऊण; (कप्प; भग; महा) । हेकृ—आराहिउं ; (महा) ।
आराह वि [आराध्य] आराधन-योग्य ; (आरा ११) ।
आराहग वि [आराधक] १ आराधन करने वाला ; २ मोक्ष का साधक ; (भग ३, १) ।
आराहण न [आराधन] १ सेवना ; (आरा ११) । २ अनशन ; (राज) ।
आराहणा स्त्री [आराधना] १ सेवा, भक्ति ; २ परिपालन ; (णाया १, १२ ; पंचा ७) ३ मोक्ष-मार्ग के अनुकूल वर्तन; (पक्खि) । ४ जिसका आराधन किया जाय वह ; (आरा १) ।
आराहणी स्त्री [आराधनी] भाषा का एक प्रकार ; (दस ७) ।
आराहिय वि [आराधित] १ सेवित, परिपालित ; (सम ७०) । २ अनुरूप, योग्य ; (स ६२३) ।
आरिट्ठ वि [दे] यात, गत, गुजरा हुआ ; (षड्) ।
आरिय देखो अज्ज=आर्य । (भग; षड् ; सुपा १२८ ; पउम १४, ३० ; सुर ८, ६३) ।
आरिय वि [आरित] सेवित "आरिओ आयरिओ सेवितो वा एगट्ठति " (आचू) ।
आरिय वि [आकारित] आहूत, बोलाया हुआ ; ' आरिओ आगारिओ वा एगट्ठा " (आव) ।
आरिया देखो अज्जा=आर्या ; (प्रारू) ।
आरिल्ल वि [दे] अर्वाक् उत्पन्न, पहले जो उत्पन्न हुआ हो ; (दे १, ६३) ।
आरिस वि [आर्ष] ऋषि-सम्बन्धी ; (कुमा) ।
आरुग्ग देखो आरोग्ग=आरोग्य ; " आरुग्गबोहिलाभं समाहिवरमुत्तमं दिंतु " (पडि) ।
आरुट्ठ वि [आरुष्ट] क्रुद्ध, रुष्ट ; (पउम ५३, १४१) ।

आरुभ देखो **आरुह=आ+रुह्** । वकृ—**आरुभमाण** ; (कस)।

आरुवणा देखो **आरोवणा** ; (विसे २६२८)।

आरुस सक [आ+रुष्] क्रोध करना, रोष करना । संकृ—**आरुस्स** ; (सूअ १, ५)।

आरुसिय वि [आरुष्ट] क्रुद्ध, कुपित ; (याया १, २)।

आरुह सक [आ+रुह्] ऊपर चढ़ना, ऊपर बैठना । आरुहइ ; (षड् ; महा)। आरुहेइ ; (भग)। वकृ—**आरुहंत, आरुहमाण** ; (से ५, १६ ; श्रा ३६)। संकृ—**आरुहिऊण, आरुहिय** ; (महा; नाट)। हेकृ—**आरुहिउं** ; (महा)।

आरुह वि [आरुह] उत्पन्न, उद्भूत, जात ;

"गामारुह म्हि गामे, वसामि णअरट्ठिइं ण आणामि ।
णाअरिआणं पइणो हरेमि जा होमि सा होमि "
(गा ७०५)।

आरुहण न [आरोहण] ऊपर बैठना ; (याया १, २; गा ६३०; सुपा २०३; विपा १, ७ ; गउड)।

आरुहिय वि [आरोपित] १ स्थापित, २ ऊपर बैठाया हुआ ; (से ८, १३)।

आरुहिय } वि [आरूढ] १ ऊपर चढा हुआ ; (महा)।
आरूढ } २ कृत, विहित ; " तीए पुरओ पइण्णा आरुहिया दुक्करा मए सामि " (पउम ८, १६१)।

आरेइअ वि [दे] १ मुकुलित, संकुचित ; २ भ्रान्त ; ३ मुक्त ; (दे १, ७७)। ४ रोमाञ्चित, पुलकित ; (दे १, ७७ ; पाअ)।

आरेण अ [आरेण] १ समीप, पास ; (उप ३३६ टी)। २ अर्वाक्, पहले ; (विसे ३५१७)। ३ प्रारम्भ कर ; (विसे २२८४)।

आरोअ अक [उत्+लस्] विकसित होना, उल्लास पाना । आरोअइ ; (हे ४, २०२)।

आरोअणा देखो **आरोवणा** ; (ठा ४, १ ; विसे २६२७)।

आरोइअ [दे] देखो **आरेइअ** ; (षड्)।

आरोग्ग सक [दे] खाना, भोजन करना, आरोगना । आरोग्गइ ; (दे १, ६६)।

आरोग्ग न [आरोग्य] १ नीरोगता, रोग का अभाव ; (ठा ४, ३ ; उव)। २ वि. रोग-रहित, नीरोग ; (कप्प)। ३ पुं. एक ब्राह्मणोपासक का नाम ; (उप ५४०)।

आरोग्गरिअ वि [दे] रक्त, रँगा हुआ ; (षड्)।

आरोग्गिअ वि [दे] भुक्त, खाया हुआ ; (दे १, ६६)।

आरोद्ध वि [दे] १ प्रवृद्ध, वड़ा हुआ ; २ गृहागत, घर में आया हुआ ; (षड्)।

आरोल सक [पुञ्ज्] एकत्र करना, इकट्ठा करना । आरोलइ ; (हे ४, १०२ ; षड्)।

आरोलिअ वि [पुञ्जित] एकलित, इकट्ठा किया हुआ ; (कुमा)।

आरोव सक [आ + रोपय्] १ ऊपर चढ़ना, ऊपर बैठना। २ स्थापन करना । आरोवेइ ; (हे ४, ४७)। संकृ—**आरोवेत्ता, आरोविउं, आरोविऊण** ; (भग; कुमा; महा)।

आरोवण न [आरोपण] ऊपर चढ़ाना ; (सुपा २४६)। २ संभावना ; (दे १, १७४)।

आरोवणा स्त्री [आरोपणा] १ ऊपर चढ़ाना । २ प्रायश्चित्त-विशेष ; (वव १, १)। ३ प्ररूपणा, व्याख्या का एक प्रकार; ४ प्रश्न, पर्यनुयोग; (विसे २६२७; २६२८)।

आरोविय वि [आरोपित] १ चढ़ाया हुआ ; २ संस्थापित ; (महा ; पाअ)।

आरोस पुं [आरोष] १ म्लेच्छ देश-विशेष ; २ वि. उस देश का निवासी ; (पण्ह १, १; कस)।

आरोसिअ वि [आरोषित] कोपित, रुष्ट किया हुआ; (से ६, ६६ ; भवि ; दे १, ७०)।

आरोह सक [आ+रुह्] ऊपर चढ़ना, बैठना । आरोहइ (कस)।

आरोह सक [आ+रोहय्] ऊपर चढाना । कृ—**आरोहइयव्व** ; (वव १)।

आरोह पुं [आरोह] १ सवार; हाथी, घोड़ा आदि पर चढ़ने वाला ; (से १३, ७५)। २ ऊंचाई, (बृह)। ३ लम्बाई; (वव १, ५)।

आरोह पुं [दे] स्तन, थन, चूँची ; (दे १, ६३)।

आरोहग वि [आरोहक] १ सवार होने वाला ; २ हस्तिपक, हाथी का रक्षक ; (औप)।

आरोहि वि [आरोहिन्] ऊपर देखो ; (गउड)।

आरोहिय वि [आरूढ] ऊपर बैठा हुआ, ऊपर चढ़ा हुआ ; (भवि)।

आल न [दे] १ छोटा प्रवाह ; २ वि. कोमल, मृदु ; (दे १, ७३)। ३ आलस; (रंभा)।

आल न [आल] कलंकारोप, दोषारोपण ; (स ४३३); "न दिज्ज कस्सवि कूडआलं" (सत्त २)।

°आल देखो काल ; (गा ५५; से १, २६ ; ५, ८५ ; ६, ५६)।

°आल देखो जाल ; (से ५, ८५; ६, ५६)।

°आल देखो ताल "समविसमं णमंति हरिआलवंकियाइं ; (से ६, ५६)।

आलइअ वि [आलगित] यथास्थान स्थापित, योग्य स्थान में रखा हुआ ; (कप्प)।

आलइअ वि [आलयिक] गृही, आश्रय वाला ; (आचा)।

आलंकारिय वि [आलङ्कारिक] १ अलंकार-शास्त्र-ज्ञाता ; २ अलंकार-संबन्धी। ३ अलंकार के योग्य ; "आलंकारियं भंडं उवणेह" (जीव ३)।

आलंकिअ वि [दे] पंगु किया हुआ ; (दे १, ६८)।

आलंद न [आलन्द] समय का परिमाण-विशेष, पानी से भींजा हुआ हाथ जितने समय में सूख जाय उतनेसे लेकर पांच अहोरात्र तक का काल ; (विसे)।

आलंदिअ वि [आलन्दिक] उपर्युक्त समय का उल्लंघन न कर कार्य करने वाला ; (विसे)।

आलंब सक [आ+लम्ब्] आश्रय करना, सहारा लेना। संकृ—आलंबिय ; (भास ११)।

आलंब पुं [आलम्ब] आश्रय, आधार ; (सुपा ६३५)।

आलंब न [दे] भूमि-छत्र, वनस्पति-विशेष जो वर्षा में होता है; (दे १, ६४)।

आलंबण न [आलम्बन] १ आश्रय, आधार, जिसका अवलम्बन किया जाय वह ; (णाया १, १)। २ कारण, हेतु, प्रयोजन ; (आवम; आचा)।

आलंबणा स्त्री [आलम्बना] ऊपर देखो ; (पि ३६७)।

आलंबि वि [आलम्बिन्] अवलम्बन करने वाला, आश्रयी; (गउड)।

आलंभिय न [आलम्भिक] १ नगर-विशेष ; (ठा १)। २ भगवती सूत्र के ग्यारहवें शतक का बारहवाँ उद्देश; (भग ११, १२)।

आलंभिया स्त्री [आलम्भिका] नगरी-विशेष ; (भग ११, १२)।

आलक्क पुं [दे] पागल कुत्ता ; (भत्त १२५)।

आलक्ख सक [आ+लक्षय्] १ जानना। २ चिह्न से पिछानना। आलक्खिमो ; (गउड)।

आलक्खिय वि [आलक्षित] १ ज्ञात, परिचित। २ चिह्न से जाना हुआ ; (गउड)।

आलग्ग वि [आलग्न] लगा हुआ, संयुक्त; (से ५, ३३)।

आलत्त वि [आलपित] संभाषित, आभाषित; (पउम १६, ४२ ; सुपा २०८ ; श्रा ६)।

आलत्तय देखो अलत्त ; (गउड; गा ६४६)।

आलत्थ पुं [दे] मयूर, मोर ; (दे १, ६५)।

आलद्ध वि [आलब्ध] १ संसृष्ट ; २ संयुक्त ; ३ स्पृष्ट, छुआ हुआ ; ४ मारा हुआ ; (नाट)।

आलप्प वि [आलाप्य] कहने के योग्य, निर्वचनीय ; "सदसदणभिलप्पालप्पमेगं अणेगं" (लहुअ ८)।

आलभ सक [आ+लभ्] प्राप्त करना। आलभिज्जा ; (उवर ११)।

आलभिया स्त्री [आलभिका] नगरी-विशेष ; (उवा ; भग ११, २)।

आलय पुंन [आलय] गृह, घर, स्थान ; (महा ; गा १३५)।

आलयण न [दे] वास-गृह, शय्या-गृह; (दे १,६६; ८,५८)।

आलव सक [आ+लप्] १ कहना, बातचीत करना। २ थोडा या एक वार कहना। वकृ—आलवंत ; (गा ११८; अभि ३८) ; आलवमाण ; (ठा ४)। आलविऊण; (महा) ; आलविय ; (नाट)।

आलवण न [आलपन] संभाषण, बातचीत, वार्तालाप ; (ओघ ११३; उप १२८ टी; श्रा १६; दे १,५६; स ६६)।

आलवाल न [आलवाल] कियारी, थाँवला ; (पाअ)।

आलस वि [आलस] आलसी, सुस्त ; (भग १२,२)।

°त्त न [°त्व] आलस, सुस्ती ; (श्रा २३)।

आलसिय वि [आलसित] आलसी, मन्द, (भग १२,२)।

आलस्स न [आलस्य] आलस, सुस्ती ; (कुमा; सुपा २५१)।

आलाअ देखो आलाव ; (गा ४२८; ६१६ ; मे १६)।

आलाण देखो आणाल ; (पाअ; से ५, १७ ; महा)।

आलाणिय वि [आलानित] नियन्त्रित, मजबुती से बाँधा हुआ ; "दढभुयदंडालाणियकमलाकरिणी निवो समरसीहो" (सुपा ४)।

आलाव पुं [आलाप] १ संभाषण, बातचीत ; (श्रा ६)। २ अल्प भाषण ; (ठा ५)। ३ प्रथम भाषण ; (ठा ४)। ४ एक वार की उक्ति ; (भग ५, ४)।

आलावग पुं [आलापक] पैरा, पैरेग्राफ, ग्रन्थ का अंश-विशेष ; (ठा २, २) ।

आलावण न [आलापन] बाँधने का रज्जु आदि साधन, बन्धन-विशेष । °बंध पुं [°बन्ध] बन्ध-विशेष ; (भग ८, ६) ।

आलावणी स्त्री [आलापनी] वाद्य-विशेष; (वज्जा ८०) ।

आलास पुं [दे] वृश्चिक, विच्छू ; (दे १, ६१) ।

आलाहि देखो अलाहि ; (षड्) ।

आलि पुं [आलि] भ्रमर, भमरा ; (पडि) ।

आलि देखो आली ; (राय; पाअ) ।

आलिंग सक [आ+लिङ्ग्] आलिङ्गन करना, भेटना । आलिंगइ; (महा) । संकृ—आलिंगिऊण; (महा) । हेकृ—आलिंगिउं; (महा) ।

आलिंग पुं [आलिङ्ग] वाद्य-विशेष ; (राय) ।

आलिंग पुं [आलिङ्ग्य] १ आलिङ्गन करने योग्य । २ वाद्य-विशेष ; (जीव ३) ।

आलिंगण न [आलिङ्गन] आलिंगन; भेट ; (कप्पू) । °वट्टि स्त्री [°वृत्ति] उपधान, शरीर-प्रमाण उपधान ; (भग ११, ११) ।

आलिंगणिया स्त्री [आलिङ्गनिका] देखो आलिंगण-वट्टि ; (जीव ३) ।

आलिंगिय वि [आलिङ्गित] आश्लिष्ट, जिसका आलिंगन किया गया हो वह ; (काल) ।

आलिंद पुं [आलिन्द] बाहर के दरवाजे के चौकठे का एक हिस्सा ; (अभि १५६ ; अवि २८) ।

आलिंप सक [आ+लिप्] पोतना, लेप करना । आलिंपइ ; (उव) । हेकृ—आलिंपित्तए ; (कस) । वकृ—आलिंपंत ; प्रयो—आलिंपावंत ; (निचू ३) ।

आलिंपण न [आलेपण] १ लेप करना, विलेपन ; (रयण ५५) । २ जिसका लेप होता है वह चीज ; (निचू १२)

आलित्त वि [आलिप्त] चारों ओर से जला हुआ ; " जह आलित्ते गेहे कोइ पसुत्तं नरं तु बोहेज्जा " (वव १,३ ; णाया १, १; १४) २ न. आग लगनी, आग से जलना ; " कोट्टिमघरे वसंते आलित्तम्मि वि न डज्झइ " (वव ४) ।

आलिद्ध वि [आश्लिष्ट] आलिंगित ; (भग १६, ३ ; सुर ३, २२२) ।

आलिद्ध वि [आलीढ] चखा हुआ, आस्वादित ; (से ६, ५६) ।

आलिसंदग पुं [दे. आलिसन्दक] धान्य-विशेष; (ठा ५, ३ ; भग ६, ७) ।

आलिसिंदय पुं [दे. आलिसिन्दक] ऊपर देखो; (ठा ५, ३) ।

आलिह सक [स्पृश्] स्पर्श करना, छूना । आलिहइ (हे ४, १८२) । वकृ—आलिहंत ; (नाट) ।

आलिह सक [आ+लिख्] १ विन्यास करना, स्थापन करना । २ चित्र करना, चितरना । वकृ—आलिहमाण; (सुर १२, ४०) ।

आलिहिअ वि [आलिखित] चित्रित; (सुर १, ८७) ।

आली सक [आ+ली] १ लीन होना, आसक्त होना । २ आलिंगन करना । ३ निवास करना । वकृ—आलीयमाण; (गउड) ।

आली स्त्री [आली] १ पंक्ति, श्रेणी ; २ सखी, वयस्या; (हे १, ८३) । ३ वनस्पति-विशेष ; (णाया १, १) ।

आलीढ वि [आलीढ] १ आसक्त ; "आमूलालोलधूली-बहुलपरिमलालीढलोलालिमाला" (पडि) । २ न. आसन-विशेष ; (वव १) ।

आलीण वि [आलीन] १ लीन, आसक्त, तत्पर ; (पउम ३२, ६) । २ आलिंगित, आश्लिष्ट ; (कप्प) ।

आलीयग वि [आदीपक] जलाने वाला, आग सुलगाने वाला ; (णाया १, २) ।

आलीयमाण देखो आली=आ+ली ।

आलील नं [दे] समीप का भय, पास का डर; (दे १,६६) ।

आलीवग देखो आलीयग ; (पण्ह १, ३) ।

आलीवण न [आदीपन] आग लगाना ; (दे १, ७१; विपा १, १) ।

आलीविय वि [आदीपित] आग से जलाया हुआ; (पि २४४) ।

आलु पुंन [आलु] कन्द-विशेष, आलु ; (श्रा २०) ।

आलुई स्त्री [आलुकी] वल्ली-विशेष ; (पव १०) ।

आलुंख सक [दह्] जलाना, दाह देना । आलुंखइ; (हे ४, २०८ ; षड्) ।

आलुंख सक [स्पृश] स्पर्श करना, छूना । आलुंखइ; (हे ४, १८२) ।

आलुंखण न [स्पर्शन] स्पर्श, छूना ; (गउड) ।

आलुंखिअ वि [स्पृष्ट] स्पृष्ट, छुआ हुआ; (से १, ३१; पाअ) ।

आलुंखिअ वि [दग्ध] जला हुआ ; (सुर ६, २०३) ।

आलुंप सक [आ+लुम्प्] हरण करना । आलुंपइ ; (आचा) ।

आलुंप वि [आलुम्प] अपहारक, हरण करने वाला, छीन लेने वाला ; (आचा)।

आलुग देखो आलु ; (पराण १)।

आलुगा स्त्री [दे] घटी, छोटा घड़ा ; (उप ६६०)।

आलुयार वि [दे] निरर्थक, व्यर्थ, निष्प्रयोजन ; "ता दंसिमो समग्गं अन्नह किं आलुयारभणिएहिं" (सुपा ३४३)।

आलेक्ख } वि [आलेख्य] चित्रित, "रत्तिं परिवट्टेउं
आलेक्खिय } लक्खं आलेक्खदिणयराणवि न खमं" (अच्चु २५ ; से २, ४५ ; गा ६४१ ; गउड)।

आलेट्ठुअं } देखो आसिलिस।
आलेट्ठुं }

आलेव पुं [आलेप] विलेपन, लेप ; "आलेवनिमित्तं च देवीओ वलयालंकियवाहाओ घसंति चंदणं" (महा)।

आलेवण न [आलेपन] १ लेप, विलेपन ; २ जिसका लेप किया जाता है वह वस्तु; " जे भिक्खू रत्तिं आलेवणजायं पडिग्गाहेत्ता" (निचू १२)।

आलेह पुं [आलेख] चित्र ; (आवम)।

आलेहिअ वि [आलेखित] चित्रित ; (महा)।

आलोअ सक [आ+लोक्] देखना, विलोकन करना। वकृ—आलोअंत, आलोईंत, आलोएमाण ; (गा ५४६; उप पृ ४३ ; आचा)। कवकृ—आलोक्कंत ; (से १, २५) संकृ—आलोएऊण, आलोइत्ता; (काल; ठा ६)।

आलोअ सक [आ+लोच्] १ देखाना ; २ गुरू को अपना अपराध कह देना। ३ विचार करना। ४ आलोचना करना। अलोएइ ; (भग)। वकृ—आलोअंत ; (पडि)। संकृ—आलोएत्ता, आलोचित्ता ; (भग; पि ५८२)। हेकृ—आलोइत्तए ; (ठा २, १)। कृ—आलोएयव्व, आलोएइयव्व; (उप ६८२; ओघ ७६६)।

आलोअ पुं [आलोक] १ तेज, प्रकाश ; (से २, १२)। २ विलोकन, अच्छी तरह देखना ; (ओघ ३)। ३ पृथ्वी का समान-भाग, सम भू-भाग; (ओघ ५६५)। ४ गवाक्षादि प्रकाश-स्थान ; (आचा)। ५ जगत, संसार; (आव)। ६ ज्ञान ; (पराह १, ४)।

आलोअग } वि [आलोचक] आलोचना करने वाला ;
आलोअय } (श्रा ४० ; पुप्फ ३५५ ; ३६०)।

आलोअण न [आलोकन] विलोकन, दर्शन, निरीक्षण ; (ओघ ५६ भा) ; "अत्थालोअणतरला, इअरकईणं भमंति बुद्धीओ। त एव निरारंभं, एंति हिययं कइंदाणं" (गउड)।

आलोअण न [आलोचन] नीचे देखो ; (पण्ह २, १ ; प्रासू २४)।

आलोअणा स्त्री [आलोचना] १ देखना, बतलाना ; २ प्रायश्चित्त के लिए अपने दोषों को गुरु को बता देना ; ३ विचार करना ; (भग १७, २ ; श्रा ४२ ; स ५०६)।

आलोइअ वि [आलोकित] दृष्ट, निरीक्षित ; (से ६, ६४)।

आलोइअ वि [आलोचित] प्रदर्शित, गुरु को बताया हुआ; (पडि)।

आलोइअ देखो आलोअ=आ+लोच्।

आलोइत्तु वि [आलोकयितृ] देखने वाला, द्रष्टा ; (सम १५)।

आलोक्कंत देखो आलोअ=आ+लोक्।

आलोग देखो आलोअ=आलोक ; (ओघ ५६५)। °नयर न [°नगर] नगर-विशेष ; (पउम ६८, ५७)।

आलोच देखो आलोअ=आ+लोच्। वकृ—आलोच्चंत ; (सुपा ३०७)। संकृ—आलोचिऊण; (स ११७)।

आलोचण देखो आलोअण ; (उप ३३२)।

आलोड सक [आ+लोडय्] हिलोरना, मथन करना। संकृ— आलोडिवि (अप); (सण)।

आलोडिय } वि [आलोडित] मथित, हिलोरा हुआ ;
आलोलिय } "आलोडिया य नयरी" (पउम ५३, १२६ ; उप १४२ टी)।

आलोव सक [आ+लोपय्] आच्छादित करना। कवकृ— आलोविज्जमाण ; (स ३८२)।

आलोव देखो आलोअ=आलोक। "मंते अत्थालोवे भेसज्जे भोयणे पियागमणे" (रंभा)।

आलोविय वि [आलोपित] आच्छादित, ढका हुआ ; (णाया १, १)।

आव वि [यावत्] जितना। आवंति ; (पि ३६६)।

आव अ [यावत्] जब तक, जब लग। °कह वि [°कथ] देखो °कहिय ; (विसे १२६३; श्रा १)। °कहं अ [°कथम्] यावज्जीव, जीवन-पर्यन्त ; (आव)। °कहा स्त्री [°कथा] जीवन-पर्यन्त "धरणा आवकहाए गुरुकुल-वासं न मुंचंति" (उप ६८१)। °कहिय वि [°कथिक] यावज्जीविक, जीवन-पर्यन्त रहने वाला ; (ठा ६ ; उप ५२०)।

आव पुं [आप] १ प्राप्ति, लाभ; (पण्ह २, १)। २ जल का समूह। °**बहुल** न [°बहुल] देखो **आउ-बहुल**; (कस)।

आव सक [आ+या] आना, आगमन करना। "वणव-सिराणवि निच्चं आवइ निद्दासुहं ताण" (सुपा ६४७)। आवेइ; (नाट)। आवंति; (संग १६२)।

आवइ स्त्री [आपद्] आपत्ति, विपत्, संकट; (सम ५७; सुपा ३२१; सुर ४, २१५; प्रासू ५, १५६)।

आवंग पुं [दे] अपामार्ग, वृक्ष-विशेष, लटजीरा; (दे १, ६२)।

आवंडु वि [आपाण्डु] थोड़ा सफेद, फीका; (गा २६५)।

आवंडुर वि [आपाण्डुर] ऊपर देखो; (से ६, ७४)।

आवग्गण न [आवल्गन] अश्व पर चढ़ने की कला; (भवि)।

आवच्चेज्ज वि [अपत्यीय] अपत्य-स्थानीय; (कप्प)।

आवज्ज देखो **आओज्ज**; (हे १, १५६)।

आवज्ज अक [आ+पद्] प्राप्त होना, लागु होना। आवज्जइ; (कस)। कृ—**आवज्जियव्व**; (पण्ह २, ५)।

आवज्ज सक [आ+वर्ज्] १ संमुख करना। २ प्रसन्न करना। "आवज्जंति गुणा खलु अबुहंपि जणं अमच्छरियं" (स ११)।

आवज्जण न [आवर्जन] १ संमुख करना। २ प्रसन्न करना; (आचू)। ३ उपयोग, ख्याल; ४ उपयोग-विशेष; ५ व्यापार-विशेष; (विसे ३०५१)।

आवज्जिय वि [आवर्जित] १ प्रसन्न किया हुआ; २ अभिमुख किया हुआ; (महा; सुर ६, ३१; सुपा २३२)। °**करण** न [°करण] व्यापार-विशेष; (आचू)।

आवज्जिय देखो **आउज्जिय**=आतोद्यिक; (कुमा)।

आवज्जीकरण न [आवर्जीकरण] उपयोग-विशेष या व्यापार-विशेष का करना, उदीरणावलिका में कर्म-प्रक्षेप रूप व्यापार; (औप; विसे ३०५०)।

आवट्ट अक [आ+वृत्] १ चक्र की तरह घूमना, फिरना। २ विलीन होना। ३ सक. शोषण करना; सुखाना। ४ पीड़ना, दुःखी करना। आवट्टइ; (हे ४, ४१९; सुअ १, १; ५)। वकृ—**आवट्टमाण**; (से ५, ८०)।

आवट्ट देखो **आवत्त**; (आचा; सुपा ६४; सुअ १, ३)।

आवट्टिआ स्त्री [दे] १ नवोढ़ा, दुलहिन; २ परतन्त्र स्त्री; (दे १, ७७)।

आवड सक [आ+पत्] १ आना, आगमन करना। २ आ लगना। वकृ—**आवडंत**; (प्रासू १०६)।

आवडण न [आपतन] १ गिरना; (से ६, ४२)। २ आ लगना; (स ३८४)।

आवडिअ वि [आपतित] १ गिरा हुआ; (महा)। २ पास में आया हुआ; (से १४, ३)।

आवडिअ त्रि [दे] १ संगत, संबद्ध; (दे १, ७८; पाअ)। २ सार, मजबूत; (दे १, ७८)।

आवण पुं [आपण] १ हाट, दुकान; (णाया १, १; महा)। २ बाजार; (प्रामा)।

आवणिय पुं [आपणिक] सौदागर, व्यापारी; (पाअ)।

आवण्ण वि [आपन्न] १ आपत्ति-युक्त। २ प्राप्त; (गा ४६७)। °**सत्ता** स्त्री [°सत्त्वा] गर्भिणी, गर्भवती स्त्री; (अभि १२४)।

आवत्त अक [आ+वृत्] १ परिभ्रमण करना। २ बदलना। ३ चक्राकार घूमना। ४ सक. पठित पाठ को याद करना। ५ घुमाना। आवत्तइ; (सुक्त ५१)। वकृ—**अत्तमाण, आवत्तमाण**; (हे १, २७१; कुमा)।

आवत्त पुं [आवर्त्त] १ चक्राकार परिभ्रमण; (स्वप्न ५६)। २ मुहूर्त-विशेष; (सम ५१)। ३ महाविदेह क्षेत्रस्थ एक विजय (प्रदेश) का नाम; (ठा २, ३)। ४ एक खुर वाला पशु-विशेष; (पण्ह १, १)। ५ एक लोकपाल का नाम; (ठा ४, १)। ६ पर्वतविशेष; (ठा ६)। ७ मणि का एक लक्षण; (राय)। ८ ग्राम-विशेष; (आवम)। ९ शारीरिक चेष्टा-विशेष, कायिक व्यापार-विशेष; "दुवालसावत्ते कितिकम्मे" (सम २१)। °**कूड** न [°कूट] पर्वत-विशेष का शिखर-विशेष; (इक)। °**यंत** वकृ [°यमान] दक्षिण की तर्फ चक्राकार घुमने वाला; (भग ११, ११)।

आवत्त न [आतपत्र] छत्र, छाता; (पाअ)।

आवत्तण न [आवर्त्तन] चक्राकार भ्रमण; (हे २, ३०)। °**पेढ़िया** स्त्री [°पीठिका] पीठिका-विशेष; (राय)।

आवत्तय पुं [आवर्त्तक] देखो **आवत्त**। १० वि. चक्राकार भ्रमण करने वाला; (हे २, ३०)।

आवत्ता स्त्री [आवर्त्ता] महाविदेह-क्षेत्र के एक विजय (प्रदेश) का नाम ; (इक)।
आवत्ति स्त्री [आपत्ति] १ दोष-प्रसंग, "सव्वविमोक्खावत्ती" (विसे १६३४)। २ आपदा, कष्ट ; ३ उत्पत्ति ; (विसे ६६)।
आवन्न देखो आवण्ण ; (पउम ३४, ३० ; गाया १, २ ; स २५६ ; उवर १६०)।
आवय पुं [आवर्त्त] देखो आवत्त ; "किंतिकम्मं बारसावयं" (सम २१)।
आवय देखो आवड। वक्र—आवयंत, आवयमाण ; (पउम ३३, १३ ; गाया १, १ ; ८)।
आवया स्त्री [आपगा] नदी ; (पाअ ; स ६१२)।
आवया स्त्री [आपद्] आपदा, विपद्, दुःख; (पाअ; धण ४२); "न गणंति पुव्वनेहं, न य नीइं नेय लोय-अववायं। नय भाविआवयाओ, पुरिसा महिलाण आयत्ता" (सुर २, १८६)।
आवर सक [आ+वृ] आच्छादन करना, ढाँकना। आवरिज्जइ ; (भग ६, ३३)। कवक्र—आवरिज्जमाण ; (भग १५)। संकृ—आवरित्ता ; (ठा)।
आवरण न [आवरण] १ आच्छादन करने वाला, ढ़कने वाला, तिरोहित करने वाला ; (सम ७१ ; गाया १, ८)। २ वास्तु-विद्या ; (ठा ६)।
आवरणिज्ज वि [आवरणीय] १ आच्छादनीय। २ ढकने वाला, आच्छादन करने वाला ; (औप)।
आवरिय वि [आवृत] आच्छादित, तिरोहित ; "आवरिओ कम्मेहिं" (निचू १)।
आवरिसण न [आवर्षण] छिटकना, सिञ्चन ; (बृह १)।
आवरेइया स्त्री [दे] करिका, मद्य परोसने का पात्र-विशेष ; (दे १, ७१)।
आवलण न [आवलन] मोड़ना ; (पण्ह १, १)।
आवलि स्त्री [आवलि] १ पङ्क्ति; श्रेणी ; (महा)। २ पुं. एक विद्यार्थी का नाम ; (पउम ५, ६५)।
आवलिआ स्त्री [आवलिका] १ पङ्क्ति, श्रेणी; (राय)। २ क्रम, परिपाटी ; (सुज्ज १०)। ३ समय-विशेष, एक सूक्ष्म काल-परिमाण ; (भग ६, ७)। °पविट्ठ वि [°प्रविष्ट] श्रेणि से व्यवस्थित ; (भग)। °बाहिर वि [°बाह्य] विप्रकीर्ण, श्रेणि-बद्ध नहीं रहा हुआ ; (भग)।
आवली स्त्री [आवली] १ पङ्क्ति, श्रेणी ; (पाअ)।
२ रावण की एक कन्या का नाम; (पउम ६, ११)।
आवस सक [आ+वस्] रहना, वास करना। आवसेज्जा ; (सुअ १, १२)। वकृ—"आगारं आवसंता वि" (सुअ १, ६)।
आवसह पुं [आवसथ] १ घर, आश्रय, स्थान ; (सुअ १, ४)। २ मठ, संन्यासिओं का स्थान; (पण्ह; हे २, १८७)।
आवसहिय पुं [आवसथिक] १ गृहस्थ, गृही ; (सुअ २, २)। २ संन्यासी ; (सुअ २, ७)।
आवसिय, आवस्सग, आवस्सय } वि [आवश्यक] १ अवश्य-कर्तव्य, जरूरी ; २ न. सामायिकादि धर्मानुष्ठान, नित्य-कर्म ; (उव; दस १०; पंदि)। ३ जैन ग्रन्थ-विशेष, आवश्यक सूत्र ; (आवम)। °णुओग पुं [°ानुयोग] आवश्यक-सूत्र की व्याख्या ; (विसे १)।
आवस्सय पुंन [आपाश्रय] १—३ ऊपर देखो; ४ आधार, आश्रय ; (विसे ८७४)।
आवस्सिया स्त्री [आवश्यकी] सामाचारी-विशेष, जैन साधु का अनुष्ठान-विशेष ; (उत्त २६)।
आवह सक [आ+वह्] धारण करना, वहन करना। "थेवोवि गिहिपसंगो जइणो सुद्धस्स पंकमावहइ" (उव)। "णो पूयणं तवसा आवहेज्जा" (सू १, ७)।
आवह वि [आवह] धारण करने वाला ; (आचा)।
आवा सक [आ+पा] १ पीना। २ भोग में लाना, उपभोग करना। हेकृ—"वंतं इच्छसि आवेउं, सेयं ते मरणं भवे" (दस २, ७)।
आवाग पुं [आपाक] आवा, मिट्टी के पात्र पकाने का स्थान ; (उप ६४८; विसे २४६ टी)।
आवाड पुं [आपात] भीलों की एक जाति, "तेणं कालेणं तेणं समएणं उत्तरड्ढभरहे वासे बहवे आवाडा णामं चिलाया परिवसंति" (जं ३)।
आवाणय न [आपाणक] दुकान, "भिन्नाइं आवाणयाइं" (स ५३०)।
आवाय पुं [आपात] १ प्रारम्भ, शुरूआत ; (पाअ ; से ११, ७५)। २ प्रथम मेलन ; (ठा ४, १)। ३ तत्काल, तुरंत ; (श्रा २३)। ४ पतन, गिरना ; (श्रा २३)। ५ संबन्ध, संयोग ; (उव ; कस)।
आवाय पुं [आवाप] १ आवा, मिट्टी के पात्र पकाने का स्थान; २ आलवाल; ३ प्रक्षेप, फेंकना; ४ शत्रु की चिन्ता ; ५ बोना, वपन ; (श्रा २३)।

आवाल } न [दे] जल के निकट का प्रदेश; (दे
आवालय } २, ७०)।
आवाव देखो **आवाय**=आवाप। °**कहा** स्त्री [°कथा] रसोई संबन्धी कथा, विकथा-विशेष; (ठा ४, २)
आवास पुं [आवास] १ वास-स्थान; (ठा ६; पाअ)। २ निवास, अवस्थान, रहना; (पण्ह १, ४; औप)। ३ पक्षि-गृह, नीड; (वव १,१)। ४ पडाव, डेरा; (सुपा २५६; उप पृ १३०)। °**पव्वय** पुं [°पर्वत] रहने का पर्वत; (इक)।
आवास } देखो **आवस्सय**=आवश्यक; (पि ३४८;
आवासग } ओघ ६३८; विसे ८५०)।
आवासणिया स्त्री [आवासनिका] आवास-स्थान; (स १२२)।
आवासय न [आवासक] १ आवश्यक, जरूरी। २ नित्य-कर्त्तव्य धर्मानुष्ठान; (हे १, ४३; विसे ८५८)। ३ पुं. पक्षि-गृह, नीड़; (वव १, १)। ४ संस्काराधायक, वासक; ५ आच्छादक; (विसे ८७५)।
आवासि वि [आवासिन्] रहने वाला; "एगंतनियावासी" (उव)
आवासिय वि [आवासित] संनिवेशित, पडाव डाला हुआ; (सुपा ४५६; सुर २, १)।
आवाह सक [आ+वाहय्] १ सांनिध्य के लिए देव या देवाधिष्ठित चीज को बुलाना। २ बुलाना। संकृ—**आवाहिवि** (अप); (भवि)।
आवाह पुं [आबाध] पीडा, बाध; (विपा १, ६)।
आवाह पुं [आवाह] १ नव-परिणीत वधू को वर के घर लाना; (पण्ह २, ४)। २ विवाह के पूर्व किया जाता पान देने का एक उत्सव; (जीव ३)।
आवाहण न [आवाहन] आह्वान; (विसे १८८३)।
आवाहिय वि [आवाहित] १ बुलाया हुआ, आहूत; (भवि)। २ मदद के लिए बुलाया हुआ देव या देवाधिष्ठित वस्तु "एवं च भणंतेणं तेणं आवाहियाइं सत्थाइं" (सुर ८, ४२)।
आवि न [दे] १ प्रसव-पीडा; २ वि. नित्य, शाश्वत; ३ दृष्ट, देखा हुआ; (दे १, ७३)।
आवि अ [चापि] समुच्चय-द्योतक अव्यय; (कप्प)।
आवि अ [आविस्] प्रकटता-सूचक अव्यय; (सुर १४, २११)।
आविअ सक [आ+पा] पीना। "जहा दुमस्स पुप्फेसु भमरो आविअइ रसं" (दस १, २)।
आविअ वि [आवृत] आच्छादित; (से ६, ६२)।
आविअ पुं [दे] १ इन्द्रगोप, क्षुद्र कीट-विशेष; २ वि. मथित, आलोडित; (दे १, ७६)। ३ प्रोत; (दे १, ७६; पाअ; षड्)।
आविअ वि [आविच] अविच-देशोत्पन्न; (राय)।
आविअज्झा स्त्री [दे] १ नवोढ़ा, दुलहिन; २ परतन्त्र, पराधीन स्त्री; (दे १, ७७)।
आविंध सक [आ+व्यध्] १ विंधना। २ पहनना। ३ मन्त्र से आधीन करना। आविंध; (आक ३८)। आविंधामो; (पि ४८९); "पालंबं वा सुवण्णसुत्तं वा आविंधेज्ज पिणिधेज्ज वा" (आचा २, १३, २०)। कर्म—आविज्झइ; (उव)।
आविंधण न [आव्यधन] १ पहनना; २ मन्त्र से आविद्ध करना, मन्त्र से आधीन करना; (पण्ह १, २; आक ३८)।
आविग्ग वि [आविग्न] उद्विग्न, उदासीन; (से ६, ८; १३, ६३; दे ७, ६३)।
आविट्ठ वि [आविष्ट] १ आवृत, व्याप्त; (सम ५१; सुपा १८७)। २ प्रविष्ट; (सूअ १, ३)। ३ अधिष्ठित, आश्रित; (ठा ५; भास ३६)।
आविद्ध वि [आविद्ध] परिहित, पहना हुआ; (कप्प)।
आविद्ध वि [दे] क्षिप्त, प्रेरित; (दे १, ६३)।
आविब्भाव पुं [आविर्भाव] १ उत्पत्ति। २ प्रादुर्भाव, अभिव्यक्ति; "आविब्भावतिरोभावमेत्तपरिणामिदव्वमेवायं" (विसे)।
आविब्भूय वि [आविर्भूत] १ उत्पन्न; २ प्रादुर्भूत; (कप्प)। ३ अभिव्यक्त; (सुर १४, २११)।
आविल वि [आविल] १ मलिन, अ-स्वच्छ; (सम ५१)। २ आकुल, व्याप्त; (सूअ १, १५)।
आविलिअ वि [दे] कुपित, क्रुद्ध; (षड्)।
आविलुंपिअ वि [आकाङ्क्षित] अभिलषित; (दे १, ७२)।
आविस अक [आ+विश्] १ संबद्ध होना, युक्त होना। २ सक. उपभोग करना, सेवना। "परदारमाविसामिति" (विसे ३२५६)।
"जं जं समयं जीवो, आविसई जेण जेण भावेण।
सो तम्मि तम्मि समए, सुहासुहं बंधए कम्मं" (उव)।

आविहव अक [आविर्+भू] १ प्रकट होना। २ उत्पन्न होना। आविहवइ ; (स ४८)।
आवीअ वि [आपीत] १ पीत ; २ शोषित ; (से १३, ३१)।
आवीइ वि [आवीचि] निरन्तर, अविच्छिन्न ;
"गब्भप्पभिइमावीइसलिलच्छेए सरं व सूसंतं।
अणुसमयं मरमाणे, जीयंति जणो कहं भणइ ?"
(सुपा ६५१)।
°मरण न [°मरण] मरण-विशेष ; (भग १३,७)।
आवीकम्म न [आविष्कर्मन्] १ उत्पत्ति ; २ अभिव्यक्ति ; (ठा ६; कप्प)।
आवीड सक [आ+पीड्] १ पीड़ना। २ दबाना। आवीडइ ; (सण)।
आवीण वि [आपीन] स्तन, थन ; (गउड)।
आवील देखो आमेल=आपीड ; (स ३१५)।
आवीलण न [आपीडन] समूह, निचय ; (गउड)।
आवुअ पुं [आवुक) नाटक की भाषा में पिता, बाप ; (नाट)।
आवुण्ण वि [आपूर्ण] पूर्ण, भरपूर ; (दे २, १०२)।
आवुत्त पुं [दे] भगिनी-पति ; (अभि १८३)।
आवूर देखो आपूर=आ+पूरय्। वकृ—आवूरंत; (पउम ७६, ८)। कवकृ—आवूरिज्जमाण ; (स ३८२)।
आवूरण न [आपूरण] पूर्ति ; (स ४३९)।
आवूरिय देखो आऊरिय ; (पउम ६४, ५२ ; स ७७)।
आवेअ सक [आ+वेदय्] १ विनति करना, निवेदन करना। २ बतलाना। आवेएइ ; (महा)।
आवेअ पुं [आवेग] कष्ट, दुःख ; (से १०, ५७; ११, ७२)।
आवेडं देखो आवा।
आवेड्डिय वि [आवेष्टित] वेष्टित, घिरा हुआ ; (गा २८)।
आवेड, आवेडय } देखो आमेल ; (हे २, २३४ ; कुमा)।
आवेढ पुं [आवेष्ट] १ वेष्टन। २ मण्डलाकार करना ; (से ७, २७)।
आवेढण न [आवेष्टन] ऊपर देखो; (गउड; पि ३०४)।
आवेढिय वि [आवेष्टित] १ चारों ओर से वेष्टित ; (भग १६, ६ ; उप पृ ३२७)। २ एक वार वेष्टित ; (स)।

आवेयण न [आवेदन] निवेदन, मनो-भाव का प्रकाशकरण ; (गउड ; दे ७, ८७)।
आवेवअ वि [दे] १ विशेष आसक्त ; २ प्रवृद्ध, बढ़ा हुआ; (षड्)।
आवेस सक [आ+वेशय्] भूताविष्ट करना। संकृ—आवेसिऊण ; (स ६४)।
आवेस पुं [आवेश] १ अभिनिवेश ; २ जुस्सा ; ३ भूतग्रह ; ४ प्रवेश ; (नाट)।
आवेसण न [आवेशन] शून्य गृह ; "आवेसणसभापवासु पणियसालासु एगया वासो" (आचा)।
आस अक [आस्] बैठना। वकृ—"अजयं आसमाणो य पाणभूयाइं हिंसइ" (दस ४)। हेकृ—आसित्तए, आसइत्तए, आसइत्तु ; (पि ५७८; कस; दस ६,५४)।
आस पुं [अश्व] १ अश्व, घोड़ा ; (णाया १, १७)। २ देव-विशेष, अश्विनी-नक्षत्र का अधिष्ठायक देव ; (जं)। ३ अश्विनी नक्षत्र ; (चंद २०)। ४ मन, चित्त ; (पण्ण २)। °कण्ण, °कन्न पुं [°कर्ण] १ एक अन्तर्द्वीप ; २ उसका निवासी ; (ठा ४, २)। °ग्गीव पुं [°ग्रीव] एक प्रसिद्ध राजा, पहला प्रतिवासुदेव ; (पउम ५, १५६)। °तर पुं [°तर] खच्चर ; (श्रा १८)। °त्थाम पुं [°स्थामन्] द्रोणाचार्य का प्रख्यात पुत्र; (कुमा)। °द्धय पुं [°ध्वज] विद्याधर वंश का एक राजा; (पउम ५,४२) °धम्म पुं [°धर्म] देखो पूर्वोक्त अर्थ; (पउम ५, ४२)। °धर वि [°धर] अश्वों को धारण करने वाला; (औप)। °पुर न [°पुर] नगर-विशेष ; (इक)। °पुरा, °पुरी स्त्री [°पुरी] नगरी-विशेष; (कस; ठा २, ३)। °मक्खिया स्त्री [°मक्षिका] चतुरिन्द्रिय जीव-विशेष; (ओघ ३६७)। °मद्दग, °मद्दय पुं [°मर्दक] अश्व का मर्दन करने वाला ; (णाया १, १७)। °मित्त पुं [°मित्र] एक जैनाभास दार्शनिक, जो महागिरि के शिष्य कौण्डिन्य का शिष्य था और जिसने सामुच्छेदिक पंथ चलाया था ; (ठा ७)। °मुह पुं [°मुख] १ एक अन्तर्द्वीप; २ उसका निवासी; (ठा ४, २)। °मेह पुं [°मेध] यज्ञ-विशेष ; (पउम ११, ४२)। °रह पुं [°रथ] घोड़ा-गाड़ी ; (णाया १, १)। °वार पुं [°वार] घुड़-सवार, घुड़-चढ़ैया; (सुपा २१४)। °वाहणिया स्त्री [°वाहनिका] घोडे की सवारी, घोड़े पर सवार होकर फिरना ; (विपा १, ६)। °सेण पुं [°सेन] १ भगवान् पार्श्वनाथ के पिता ; (कप्प)। २

पांचवेँ चक्रवर्त्ती का पिता ; (सम १५२)। °रोह पुं [°रोह] घुड-सवार, घुड़-चढ़ैया ; (से १२, ६६)।

आस पुंस्त्री [**आश**] भोजन ; " सामासाए पायरासाए " (सूअ २, १)।

आस पुं [**आस**] क्षेपण, फेंकना ; (विसे २७६५)।

आस न [**आस्य**] मुख, मुँह ; (णाया १, ८)।

आसंक सक [**आ+शङ्क्**] १ संदेह करना, संशय करना। २ अक. भय-भीत होना। आसंकइ ; (स ३०)। वकृ— **आसंकंत, आसंकमाण** ; (नाट ; माल ८३)।

आसंका स्त्री [**आशङ्का**] शङ्का, भय, वहम, संशय ; (सुर ६, १२१ ; महा; नाट)।

आसंकि वि [**आशङ्किन्**] आशङ्का करने वाला ; (गा २०५)।

आसंकिय वि [**आशङ्कित**] १ संदिग्ध, संशयित; २ संभावित; (महा)।

आसंकिर वि [**आशङ्कितृ**] आशंका करने वाला, वहमी ; (सुर १४, १७ ; गा २०६)।

आसंग पुं [**दे**] वास-गृह, शय्या-गृह ; (दे १, ६६)।

आसंग पुं [**आसङ्ग**] १ आसक्ति, अभिष्वंग ; २ संबन्ध ; (गउड)। ३ रोग ; (आचा)।

आसंगि वि [**आसङ्गिन्**] १ आसक्त; २ संबन्धी, संयोगी ; (गउड)। स्त्री— °**णी** ; (गउड)।

आसंघ सक [**सं+भावय्**] १ संभावना करना। २ अध्यवसाय करना। ३ स्थिर करना, निश्चय करना। आसंघइ ; (से १५, ६०)। वकृ—**आसंघंत** ; (से १५, ६२]।

आसंघ पुं [**दे**] १ श्रद्धा, विश्वास ; (सुपा ५२६; षड्)। २ अध्यवसाय, परिणाम ; (से १, १५)। ३ आशंसा, इच्छा, चाह ; (गउड)।

आसंघा स्त्री [**दे**] १ इच्छा, वाञ्छा ; (दे १, ६३)। २ आसक्ति ; (मै २)।

आसंघिअ वि [**दे**] १ अध्यवसित ; २ अवधारित ; (से १०, ६६)। ३ संभावित ; (कुमा ; स १३७)।

आसंजिअ वि [**आसक्त**] पीछे लगा हुआ ; (सुर ८, ३० ; उत्तर ६१)।

आसंदय न [**आसन्दक**] आसन-विशेष ; (आचा; महा)।

आसंदाण न [**आसन्दान**] अवष्टम्भन, अवरोध, रुकावट ; (गउड)।

आसंदिआ स्त्री [**आसन्दिका**] छोटा मञ्च ; (सूअ १, ४, २, १५ ; गा ६६७)।

आसंदी स्त्री [**आसन्दी**] आसन-विशेष, मञ्च ; (सूअ १, ६ ; दस ६, ५४)

आसंधी स्त्री [**अश्वगन्धी**] वनस्पति-विशेष ; (सुपा ३२४)।

आसंबर वि [**आशाम्बर**] १ दिगम्बर, नग्न ; (प्राप्र)। २ जैन का एक मुख्य भेद ; ३ उसका अनुयायी ; (सं २)।

आसंसण न [**आशंसन**] इच्छा, अभिलाषा; (भास ६१)।

आसंसा स्त्री [**आशंसा**] अभिलाषा, इच्छा; (आचा)।

आसंसि वि [**आशंसिन्**] अभिलाषी, इच्छा करने वाला; (आचा)।

आसंसिअ वि [**आशंसित**] अभिलषित ; (गा ७६)।

आसक्खय पुं [**दे**] प्रशस्त पक्षि-विशेष, श्रीवद ; (दे १, ६७)।

आसग देखो **आस=अश्व** ; (णाया १, १२)।

आसगलिअ वि [**दे**] आक्रान्त ; "आसगलिओ तिव्वकम्म-परिणईए" (स ४०४)।

आसज्ज अ [**आसाद्य**] प्राप्त कर के ; (विसे ३०)।

आसड पुं [**आसड**] विक्रम की तेरहवीँ शताब्दी का स्वनाम-ख्यात एक जैन ग्रन्थकार ; (विवे १४३)।

आसण न [**आसन**] १ जिस पर बैठा जाता है वह चौकी आदि ; (आव ४)। २ स्थान, जगह ; (उत्त १, १)। ३ शय्या ; (आचा)। ४ बैठना, उपवेशन ; (ठा ६)।

आसणिय वि [**आसनित**] आसन पर बैठाया हुआ; (स २६२)।

आसण्ण न [**आसन्न**] १ समीप, पास। २ वि. समीपस्थ; (गउड)। देखो **आसन्न**।

आसत्त वि [**आसक्त**] लीन, तत्पर; (महा; प्रासू ६४)।

आसत्ति स्त्री [**आसक्ति**] अभिष्वङ्ग, तल्लीनता; (कुमा)।

आसत्थ पुं [**अश्वत्थ**] पीपल का पेड़ ; (पउम ५३, ७६)।

आसत्थ वि [**आश्वस्त**] १ आश्वासन-प्राप्त, स्वस्थ; २ विश्रान्त; (णाया १, १ ; सम १५२; पउम ७, ३८ ; दे ७, २८)।

आसन्न देखो **आसण्ण** ; (कुमा ; गउड)। °**वत्ति** वि [°**वर्त्तिन्**] नजदीक में रहने वाला ; (सुपा ३५१)।

आसम पुं [**आश्रम**] तापस आदि का निवास स्थान, तीर्थ-स्थान ; (सुपा १३ ; औप)। २ ब्रह्मचर्य, गार्हस्थ्य,

वानप्रस्थ, और भैक्ष्य ये चार प्रकार की अवस्था ; (पंचा १०)।

आसमि वि [आश्रमिन्] आश्रम में रहने वाला, ऋषि, मुनि वगैरः ; (पंचव १)।

आसय अक [आस्] बैठना। आसयंति ; (जीव ३)।

आसय सक [आ+श्री] १ आश्रय करना, अवलम्बन करना। २ ग्रहण करना। आसयइ ; (कप्प)। वकृ— आसयंत ; (विसे ३२२)।

आसय पुं [आशक] खाने वाला ; (आचा)।

आसय पुं [आश्रय] आधार, अवलम्बन ; (उप ७१४, सुर १३, ३९)।

आसय पुं [आशय] १ मन, चित्त, हृदय ; (सुर १३, ३९ ; पाअ)। २ अभिप्राय ; (सुअ १, १५)।

आसय न [दे] निकट, समीप ; (दे १, ६५)।

आसरिअ वि [दे] संमुख-आगत, सामने आया हुआ ; (दे १, ६९)।

आसव अक [आ+स्रु] धीरे २ झरना, टपकना। वकृ— आसवमाण ; (आचा)।

आसव पुं [आसव] मद्य, दारू ; (उप ७२८ टी)।

आसव पुं [आश्रव] १ कर्मों का प्रवेश-द्वार, जिससे कर्म-बन्ध होता है वह हिंसा आदि; (ठा २, १)। २ वि. श्रोता, गुरु-वचन को सुनने वाला ; (उत्त १)। °सक्कि वि [°सक्तिन्] हिंसादि में आसक्त ; (आचा)।

आसवण न [दे] वास-गृह, शय्या-घर ; (दे १, ६६)।

आसस अक [आ+श्वस्] आश्वासन लेना, विश्राम लेना। आससइ, आससस्सु ; (पि ८८; ४६९)।

आससण न [आशसन] विनाश, हिंसा; (पण्ह १, ३)।

आससा स्त्री [आशंसा] अभिलाषा ; "जेसिं तु परिमाणं, तं दुट्ठं आससा होइ" (विसे २५१९)।

आससिय वि [आश्वस्त] आश्वासन-प्राप्त ; (स ३७८)।

आसा स्त्री [आशा] १ आशा, उम्मीद ; (औप; से १, २६ ; सुर ३, १७७)। २ दिशा; (उप ६४८ टी)। ३ उत्तर रुचक पर वसने वाली एक दिक्कुमारी, देवी-विशेष ; (ठा ८)।

आसाअ सक [आ+स्वाद्] स्वाद लेना, चखना, खाना। आसायंति ; (भग)। वकृ—आसाअंत, आसाएंत, आसायमाण ; (नाट; से ६, ४५ ; गाया १, १)।

आसाअ सक [आ+सादय्] प्राप्त करना। वकृ— आसाएंत ; (से ३, ४५)।

आसाअ सक [आ+शातय्] अवज्ञा करना, अपमान करना। आसाएज्जा ; (महानि ४)। वकृ—आसायंत, आसाएमाण ; (श्रा ६ ; ठा ४)।

आसाअ पुं [आस्वाद] १ स्वाद, रस ; (गा ५६३ ; से ६, ६८ ; उप ७६८ टी)। २ तृप्ति ; (से १, २६)।

आसाअ पुं [आसाद] प्राप्ति ; (से ६, ६८)।

आसाइअ वि [आशातित] १ अवज्ञात, तिरस्कृत ; (पुप्फ ४५४)। २ न. अवज्ञा, तिरस्कार; (विवे ६२)।

आसाइअ वि [आस्वादित] चखा हुआ, थोड़ा खाया हुआ ; (से ५, ४६)।

आसाइअ वि [आसादित] प्राप्त, लब्ध ; (हेका ३० ; भवि)।

आसाढ पुं [आषाढ] १ आषाढ़ मास ; (सम ३५)। २ एक निह्नव, जो अव्यक्तिक मत का उत्पादक था ; (ठा ७)। °भूइ पुं [°भूति] एक प्रसिद्ध जैन मुनि ; (कुम्मा २६)।

आसाढा स्त्री [आषाढा] नक्षत्र-विशेष ; (ठा २)।

आसाढी स्त्री [आषाढ़ी] आषाढ़ मास की पूर्णिमा ; (सुज्ज)।

आसादेत्तु वि [आस्वादयितृ] आस्वादन करने वाला ; (ठा ७)।

आसामर पुं [आशामर] सातवें वासुदेव और बलदेव के पूर्वभवीय धर्मगुरु का नाम ; (सम १५३)।

आसायण न [आस्वादन] स्वाद लेना, चखना ; (पउम २२, २७ ; गाया १, ६ ; सुपा १०७)।

आसायण न [आशातन] १ नीचे देखो; (विवे ६९)। २ अनन्तानुबन्धि कषाय का वेदन ; (विसे)।

आसायणा स्त्री [आशातना] विपरीत वर्तन, अपमान, तिरस्कार ; (पड़ि)।

आसार पुं [आसार] वेग से पानी का बरसना, (से १, २० ; सुपा ६०६)।

आसालिय पुंस्त्री [आशालिक] १ सर्प की एक जाति ; (पण्ह १, १)। २ स्त्री. विद्या-विशेष ; (पउम १२, ६४ ; ५२, ६)।

आसावि वि [आस्राविन्] झरने वाला, सच्छिद्र ; (सुअ, १, ११)।

आसास सक [आ+शास्] आशा करना, उम्मीद रखना। आसासदि ; (वेणी ३०)।

आसास अक [आ+श्वासय्] आश्वासन देना, सान्त्वन करना। आसासइ ; (वज्जा १६) । वकृ—**आसासंत, आसासिंत**; (से ११, ८७ ; श्रा १२)।

आसास पुं [आश्वास] १ आश्वासन, सान्त्वन ; (ओघ ७३; सुपा ८३; उप ६६२)। २ विश्राम ; (ठा ४; ३)। ३ द्वीप-विशेष ; (आचा)।

आसासअ पुं [आश्वासक] विश्राम-स्थान, ग्रन्थ का अंश, सर्ग, परिच्छेद, अध्याय; (से २, ४६)। २ वि. आश्वासन देने वाला ; " नाणं आसासयं सुमित्तुव्व " (पुप्फ ३८)।

आसासग पुं [आशासक] बीजक-नामक वृक्ष ; (औप)।

आसासण न [आश्वासन] १ सान्त्वन, दिलासा ; (सुर ६, ११० ; १२, १५ ; उप पृ ५७)। २ ग्रहों के देव-विशेष ; (ठा २, ३) ।

आसासिअ वि [आश्वासित] जिसको आश्वासन दिया गया हो वह ; (से ११, १३६ ; सुर ४, २८)।

आसि सक [आ + श्रि] आश्रय करना । संकृ—**आसिज्ज** ; (आरा ६६)।

आसि देखो **अस=अस्** ।

आसि वि [आशिन्] खाने वाला, भोजक ; (सद्दि १३)।

आसिअ वि [आश्विक] अश्व का शिक्षक; "दुट्ठेवि य जो आसे दमेइ तं आसियं विंति " (वव ४) ।

आसिअ वि [आशित] खिलाया हुआ, भोजित ; (से ८, ६३)।

आसिअ वि [आश्रित] आश्रय-प्राप्त ; (कप्प ; सुर ३, १७ ; से ६, ६५ ; विसे ७५६)।

आसिअ वि [आसित] १ उपविष्ट, बैठा हुआ ; (से ८, ६३)। २ रहा हुआ, स्थित ; (पउम ३२, ६६)।

आसिअ देखो **आसित्त** ; (णाया १, १ ; कप्प ; औप)।

आसिअअ वि [दे] लोहे का, लोह-निर्मित ; (दे १, ६७)।

आसिआ स्त्री [आसिका] बैठना, उपवेशन ; (से ८, ६३)।

आसिआ देखो **आसी=आशिष्** ; (षड्)।

आसिण वि [आशिन्] खाने वाला, भोक्ता ; " मंसासिणस्स " (पउम २६, ३७)।

आसिण पुं [आश्विन] आश्विन मास ; (पाअ)।

आसित्त वि [आसिक्त] १ थोड़ा सिक्त ; (भग ६, ३३)। २ सिक्त, सींचा हुआ ; (आवम)। ३ पुं. नपुंसक का एक भेद ; (पुप्फ १२८)।

आसिलिट्ठ वि [आश्लिष्ट] आलिंगित ; (नाट)।

आसिलिस सक [आ + श्लिष्] आलिंगन करना। हेकृ—**आलेट्ठुअं, आलेट्ठुं** ; (हे २, १६४)।

आसिसा देखो **आसी=आशिष्** ; (महा ; अभि १३३)।

आसी देखो **अस्=अस्** ।

आसी स्त्री [आशी] दाढ़ा ; (विसे) । °**विस** पुं [°विष] १ जहरिला साँप ; " आसी दाढा तग्गयविसासीविसा मुणेयव्वा " (जीव १ टी ; प्रासू १२०)। २ पर्वत-विशेष का एक शिखर; (ठा २, ३)। ३ निग्रह और अनुग्रह करने में समर्थ, लब्धि-विशेष को प्राप्त ; (भग ८, १)।

आसी स्त्री [आशिष्] आशीर्वाद ; (सुर १, १३८)। °**वयण** न [°वचन] आशीर्वाद ; (सुपा ४६०)। °**वाय** पुं [°वाद] आशीर्वाद ; (सुर १२, ४३ ; सुपा १७४)।

आसीण वि [आसीन] बैठा हुआ ; " नमिऊण आसीणो तओ " (वसु)।

आसीवअ पुं [दे] दरजी, कपड़ा सीने वाला; (दे १, ६६)।

आसीसा देखो **आसी= आशिष्** ; (षड्)।

आसु, **आसुं** } अ [आशु] शीघ्र, तुरंत, जल्दी ; (सार्ध १९ महा; काल)। °**क्कार** पुं [°कार] १ हिंसा, मारना ; २ मरने का कारण, विसूचिका वगैरः; (आव)। ३ शीघ्र उपस्थित ; "आसुक्कारे मरणे, अच्छिन्नाए य जीवियासाए" (आउ ६)। °**पण्ण** वि [°प्रज्ञ] १ शीघ्र-बुद्धि; २ दिव्य-ज्ञानी, केवल-ज्ञानी ; (सूअ १, ६ ; १४)।

आसुर वि [आसुर] असुर-संबन्धी ; (ठा ४, ४; आउ ३९)।

आसुरिय पुं [आसुरिक] १ असुर, असुर रूप से उत्पन्न; (राज)। २ वि. असुर-संबन्धी ; (सूअ २, २, २७)।

आसुरुत्त वि [आशुरुप्त] १ शीघ्र-क्रुद्ध ; २ अति कुपित (णाया १, १)।

आसुरुत्त वि [आसुरोक्त] अति-कुपित; (णाया १, १)।

आसुरुत्त वि [आशुरुष्ट] अति-कुपित ; (विपा १, ६)।

आसूणि न [आशूनि] १ बलिष्ठ बनाने वाली खुराक; २ रसायण-क्रिया ; (सूअ १, ६)।

आसूणिय वि [आशूनित] थोड़ा स्थूल किया हुआ; (सूअ १, ९)

आसेअणय वि [आसेचनक] जिसको देखने से मन को तृप्ति न होती हो वह ; (दे १, ७२)।
आसेव सक [आ+सेव्] १ सेवना। २ पालना। ३ आचरना। आसेवए ; (आप ६७)।
आसेवण न [आसेवन] १ परिपालन, संरक्षण ; (सुपा ४३८)। २ आचरण ; (स २७१)। ३ मैथुन, रति-संभोग ; (दसचू १ ; पव १७०)।
आसेवणया } स्त्री [आसेवना] १ परिपालन ; (सूअ १, आसेवणा } १४)। २ विपरीत आचरण ; (पव)। ३ अभ्यास ; (आचू)। ४ शिक्षा का एक भेद ; (धर्म ३)।
आसेवा स्त्री [आसेवा] ऊपर देखो ; (सुपा १०)।
आसेविय वि [आसेवित] १ परिपालित। २ अभ्यस्त ; (आचा)। ३ आचरित, अनुष्ठित ; (स ११८)।
आसोअ पुं [अश्वयुक्] आश्विन मास ; (रयण ३६)।
आसोअ वि [आशोक] अशोक वृक्ष संबन्धी ; (गउड)।
आसोइया स्त्री [दे आसोतिका] ओषधि-विशेष, "आसोइयाइमीसं चोलं घुसियं कुसुंभसंमीसं"। (सुपा ३६७)।
आसोई स्त्री [आश्वयुजी] आश्विन पूर्णिमा ; (इक)।
आसोकंता स्त्री [आशोकान्ता] मध्यम ग्राम की एक मूर्च्छना ; (ठा ७)
आसोत्थ पुं [अश्वत्थ] पीपल का पेड़ ; (पण्ण १ ; उप २३६)।
आहु सक [ब्रू] कहना। भूका—आहंसु, आहु; (कप्प)।
आह सक [काङ्क्ष्] चाहना, इच्छा करना। आहइ ; (हे ४, १९२ ; षड्)। वकृ—आहंत ; (कुमा)।
आहंतुं देखो आहण।
आहच्च न [दे] १ अत्यर्थ, बहुत, अतिशय ; (दे १, ६२)। २ अ. शीघ्र, जल्दी ; (आचा)। ३ कदाचित्, कभी ; (भग ६, १०)। ४ उपस्थित होकर ; (आचा)। ५ व्यवस्था कर ; (सूअ २, १)। ६ विभक्त कर ; (आचा)। ७ छीन कर ; (दसा)।
आहच्चा स्त्री [आहत्या] प्रहार, आघात ; (भग १५)।
आहट्टु स्त्री [दे] प्रहेलिका, पहेलियाँ ; " तेसु न विम्हयइ सयं आहट्टुकुहेडएहिं व " (पव ७३)।
आहट्टु देखो आहर=आ+हृ।
आहड [आहृत] १ छीन लिया हुआ; २ चोरी किया हुआ; (सुपा ६४३)। ३ सामने लाया हुआ, उपस्थापित; (स १८८।
आहड न [दे] सीत्कार, सुरत-शब्द ; (षड्)।
आहण सक [आ+हन्] आघात करना, मारना। आहणामि ; (पि ४९९)। संकृ—आहणिअ, आहणिऊण, आहणित्ता; (पि ५९१; ५८५; ५८२)। हेकृ—आहंतुं ; (पि ५७६)।
आहणण न [आहनन] आघात ; (उप ३६६)।
आहणाविय वि [आघातित] आहत कराया हुआ ; (स ५२७)।
आहत्तहीय न [याथातथ्य] १ यथावस्थितपन, वास्तविकता ; २ तथ्य-मार्ग—सम्यग्ज्ञान आदि; ३ 'सूत्रकृताङ्ग' सूत्र का तेरहवाँ अध्ययन ; (सूअ १, १३ ; पि ३३५)।
आहम्म सक [आ+हम्म्] आना, आगमन करना। आहम्मइ ; (हे ४, १६२)।
आहम्मिय वि [अधार्मिक] अधर्मी, पापी ; (सम ५१)।
आहय वि [आहत] आघात-प्राप्त, प्रेरित ; (कप्प)।
आहय वि [आहृत] १ आकृष्ट, खींचा हुआ; २ छीना हुआ; (उप २११ टी)।
आहर सक [आ+हृ] १ छीनना, खींच लेना। २ चोरी करना। ३ खाना, भोजन करना। आहरइ; (पि १७३)। कवकृ—आहरिज्जमाण ; (ठा ३)। संकृ—आहट्टु ; (पि २८८)। हेकृ—आहरित्तए; (तंदु)।
आहरण पुंन [आहरण] १ उदाहरण, दृष्टान्त ; (ओघ ५३९; उप २६३; ६५१)। २ आह्वान, बुलाना ; (सुपा ३१७)। ३ ग्रहण, स्वीकार ; ४ व्यवस्थापन ; (आचा)। ५ आनयन, लाना ; (सूअ २, २)।
आहरण पुंन [आभरण] भूषण, अलंकार ; " देहे आहरणा बहू " (श्रा १२; कप्पू)।
आहरणा स्त्री [दे] खर्राट, नाक का खरखर शब्द ; (ओघ २)।
आहरिसिय वि [आधर्षित] तिरस्कृत, भर्त्सित ; "आहरिसिओ दूओ संभतेण नियन्तिओ" (आवम)।
आहल्ल (अप) अक [आ+चल्] हिलना, चलना। " नवमइ दंतपंतो आहल्लइ, खलइ जीहा" (भवि)।
आहल्ला स्त्री [आहल्या] विद्याधर-राज की एक कन्या ; (पउम १३, ३५)।
आहव पुं [आहव] युद्ध, लड़ाई ; (पाअ ; सुपा २८८ ; आरा ४१)।

आहवण } न [आहवान] १ बुलाना ; २ ललकारना ;
आहव्वण } (श्रा १२; सुपा ६०; पउम ६१, ३०; स ६४)।

आहव्वणी स्त्री [आह्वानी] विद्या-विशेष ; (सूत्र २, २)।

आहा सक [आ+ख्या] कहना। कर्म—आहिज्जइ ; (पि ५४५); आहिज्जंति ; (कप्प)।

आहा सक [आ+धा] स्थापन करना। कर्म—आहिज्जइ ; (सूत्र २, २)। हेकृ—आहेउं ; (सूत्र १, ६)। संकृ—आहाय ; (उत ५)।

आहा स्त्री [आभा] कान्ति, तेज ; (कप्पू)।

आहा स्त्री [आधा] १ आश्रय, आधार ; (पिंड)। २ साधु के निमित्त आहार के लिए मनः-प्रणिधान ; (पिंड)। °कड वि [°कृत] आधा-कर्म-दोष से युक्त ; (स १८८)। °कम्म न [°कर्मन्] १ साधु के लिए आहार पकाना ; २ साधु के निमित्त पकाया हुआ भोजन, जो जैन साधुओं के लिए निषिद्ध है (पण्ह २, ३ ; ठा ३, ४)। °कम्मिय वि [°कर्मिक] देखो पूर्वोक्त अर्थ ; (अनु)।

आहाण न [आधान] १ स्थापन ; २ स्थान, आश्रय ; " सव्वगुणाहाणं " (आव ४ ; उवर २६)।

आहाण } न [आख्यान °क] १ उक्ति, वचन ; २
आहाणय } किंवदन्ती, कहावत, लोकोक्ति ; (सुर २, ६६ ; उप ७२८ टी)।

आहार सक [आ+हारय्] खाना, भोजन करना, भक्षण करना। आहारइ, आहारेंति ; (भग)। वकृ—आहारेमाण ; (कप्प)। भकृ—आहारिज्जस्समाण, (भग)। हेकृ—आहारित्तए, आहारेत्तए ; (कप्प)। कृ—आहारेयव्व ; (ठा ३)।

आहार पुं [आहार] १ खुराक, भोजन ; (स्वप्न ६० ; प्रासू १०४)। २ खाना, भक्षण ; (पव)। ३ न. देखो आहारग ; (पउम १०२, ६८)। °पज्जत्ति स्त्री [°पर्याप्ति] भुक्त आहार को खल और रस के रूप में बदलने की शक्ति ; (पण्ण १)। °पोसह पुं [°पोषध] व्रत-विशेष, जिसमें आहार का सर्वथा या आंशिक त्याग किया जाता है ; (आव ६)। °सण्णा स्त्री [°संज्ञा] आहार करने की इच्छा ; (ठा ४)।

आहार पुं [आधार] १ आश्रय, अधिकरण ; (सुपा १२८; संथा १०३)। २ आकाश ; (भग २, २)। ३ अवधारण, याद रखना ; (पुप्फ ३५६)।

आहारग न [आहारक] १ शरीर-विशेष, जिसको चौदह-पूर्वी, केवलज्ञानी के पास जाने के लिए बनाता है ; (ठा २, १)। २ वि. भोजन करने वाला ; (ठा २, २)। ३ आहारक-शरीर वाला ; (विसे ३७५)। ४ आहारक शरीर उत्पन्न करने का जिसे सामर्थ्य हो वह ; (कप्प)। °जुगल न [°युगल] आहारक शरीर और उसके अंगोपाङ्ग ; (कम्म २, १७ ; २४)। °णाम न [°नामन्] आहारक शरीर का हेतु-भूत कर्म ; (कम्म १, ३३)। °दुग न [°द्विक] देखो °जुगल ; (कम्म २, ३ ; ८ ; १७)।

आहारण वि [आधारण] १ धारण करने वाला ; २ आधार-भूत ; (से ६, ५०)।

आहारण वि [आहारण] आकर्षक ; (से ६, ५०)।

आहारय देखो आहारग ; (ठा ६ ; भग ; पण्ण २८ ; ठा ५, १ ; कर्म १, ३७)।

आहाराइणिया स्त्री [याथारात्निकता] यथा-ज्येष्ठ, ज्येष्ठानुक्रम ; (कस)।

आहारिम वि [आहार्य] आहार के योग्य, खाने लायक ; (निचू ११)।

आहारिय वि [आहारित] १ जिसने आहार किया हो वह ; " तस्स कंडरीयस्स रण्णो तं पणीयं पाणभोयणं आहारियस्स समाणस्स " (णाया १, १६)। २ भक्षित, भुक्त ; (भग)।

आहावणा स्त्री [आभावना] अपरिगणना, गणना का अभाव ; (राज)।

आहाविर वि [आधावितृ] दौड़ने वाला ; (सण)।

आहास देखो आभास=आ+भाष्। संकृ—आहासिवि (अप) ; (भवि)।

आहाह अ [आहाह] आश्चर्य-द्योतक अव्यय ; (हे २, २१७)।

आहि पुंस्त्री [आधि] मन की पीड़ा ; (धम्म १२ टी)।

आहिआइ स्त्री [अभिजाति] कुलीनता, खानदानी ; (हे १, ११)।

आहिआई स्त्री [आभिजाती] कुलीनता ; (गा २८५)।

आहिंड सक [आ+हिण्ड्] १ गमन करना, जाना। २ परिश्रम करना। ३ घूमना, परिभ्रमण करना। वकृ—आहिंडंत, आहिंडेमाण ; (उप २६४ टी ; णाया १, १)। संकृ—आहिंडिय ; (महा ; स १६३)।

आहिंडग } वि [आहिण्डक] चलने वाला, परिभ्रमण करने
आहिंडय } वाला ; (ओघ ११५ ; ११८ ; औप)।

आहिक्क न [आधिक्य] अधिकता ; (विसे २०८७)।

आहिजाइ देखो आहिआइ ; (महा)।

आहिजाई देखो आहिआई ; (गा २४)।

आहितुंडिअ पुं [आहितुण्डिक] गारुडिक, सपहरिया ; (मुद्रा ११९)।

आहित्थ वि [दे] १ चलित, गत ; २ कुपित, क्रुद्ध ; (दे १, ७६ ; जीव ३ टी)। ३ आकुल, घबडाया हुआ ; (दे १, ७६; से १३, ८३ ; पाअ) "आहित्थं उप्पिच्छं च आउलं रोसभरियं च" (जीव ३ टी)।

आहिद्ध वि [दे] १ रुद्ध, रुका हुआ ; २ गलित, गला हुआ ; (षड्)।

आहिपत्त न [आधिपत्य] मुखियापन, नेतृत्व ; (उप १०३१ टी)।

आहिय वि [आहित] १ स्थापित, निवेशित ; (ठा ४)। २ संपूर्ण हितकर ; (सूअ)। ३ विरचित, निर्मित ; (पाअ)। °ग्गि पुं [°ाग्नि] अग्नि-होत्रीय ब्राह्मण ; (पउम ३५, ५)।

आहिय वि [आख्यात] कहा हुआ, प्रतिपादित, उक्त ; (पराण ३३ ; सुज्ज १९)।

आहियार पुं [अधिकार] अधिकार, सत्ता, हक ; (पउम ५५, ८)।

आहिवत्त देखो आहिपत्त ; (काल)।

आहिसारिअ वि [अभिसारित] नायक-बुद्धि से गृहीत ; पति-बुद्धि से स्वीकृत ; (से १३, १७)।

आहीर पुं [आहीर] १ देश-विशेष ; (कप्प)। २ शूद्र जाति-विशेष, अहीर ; (सूअ १, १)। ३ इस नामका एक राजा ; (पउम ९८, ६४)। स्त्री °री—अहीरन ; (सुपा ३६०)।

आहु सक (आ+ह्वे) बुलाना। कृ—आहुणिज्ज ; (औप)।

आहु [आ+हु] दान करना, त्याग करना। कृ—आहुणिज्ज ; (णाया १, १)।

आहु अ [आहु] अथवा, या ; (नाट)।

आहु पुं [दे] घूक, उल्लु ; (दे १, ६१)।

आहु देखो आह=ब्रू।

आहुइ वि [आहोतृ] दाता, त्यागी ; (णाया १, १)।

आहुइ स्त्री [आहुति] १ हवन, होम ; (गउड)। २ होमने का पदार्थ, बलि ; (स १७)।

आहुंदुर } पुं [दे] बालक, बच्चा ; (दे १, ६६)।
आहुंदुरु }

आहुड न [दे] १ सीत्कार, सुरत-समय का शब्द ; २ पणित, विक्रय, बेचना ; (दे १, ७४)।

आहुड अक [दे] गिरना। आहुडइ ; (दे १, ६९)।

आहुडिअ वि [दे] निपतित, गिरा हुआ ; (दे १, ६९)।

आहुण सक [आ+धु] कँपाना, हिलाना। कवकृ—आहुणिज्जमाण ; (णाया १, ९)।

आहुणिय वि [आधुनिक] १ आज-कल का, नवीन। २ पुं. ग्रह-विशेष ; (ठा २, ३)।

आहुत्त न [दे. अभिमुख] सम्मुख, सामने "कुमरोवि पहाविओ तयाहुत्तं" (महा ; भवि)।

आहूअ वि [आहूत] बुलाया हुआ ; (पाअ)।

आहूअ पुं [आहूक] पिशाच-विशेष ; (इक)।

आहूअ वि [आभूत] उत्पन्न, जात ; "आहूओ से गब्भो" (वसु)।

आहेउं देखो आहा=आ+धा।

आहेड } पुं न [आखेट, °क] शिकार, मृगया ; (सुपा
आहेडग } १९७ ; स ६७ ; दे)।
आहेडय }

आहेण न [दे] विवाह के बाद वर के घर वधू के प्रवेश होने पर जो जिमाने का उत्सव किया जाता है वह ; (आचा २, १, ४)।

आहेय वि [आधेय] १ स्थाप्य ; २ आश्रित ; (विसे ९२४)।

आहेर देखो आहीर ; (विसे १४५४)।

आहेवच्च न [आधिपत्य] नेतृत्व, मुखियापन ; (सम ८६)।

आहेवण न [आक्षेपण] १ आक्षेप ; २ क्षोभ उत्पन्न करना ; (पराह १, २)।

आहोअ देखो आभोग ; (से १, ४९ ; ६, ३ ; गा ८८ ; गउड)।

आहोअ देखो आभोय=आ+भोजय्। संकृ—आहोइऊण ; (स ५५)।

आहोइअ वि [आभोगित] ज्ञात, दृष्ट ; (स ४८५)।

आहोइअ वि [आभोगिक] उपयोग ही जिसका प्रयोजन हो वह, उपयोग-प्रधान ; (कप्प)।

आहोड सक [ताडय्] ताडन करना, पिटना। आहोडइ ; (हे ४, २७)।

आहोरण पुं [दे] हस्तिपक, हाथी का महावत ; (पाअ ; से ३६६)।

आहोहि } वि [आधोवधिक] अवधिज्ञानो का एक भेद, नियत क्षेत्र को अवधिज्ञान से देखने वाला ; (भग ; सम ६६)।
आहोहिय }

इअ पाइअसद्दमहण्णवे आयाराइसद्दसंकलणो विइओ तरंगो समत्तो।



इ

इ पुं [इ] १ प्राकृत वर्णमाला का तृतीय स्वर-वर्ण ; (प्रामा)। २—३ वाक्यालङ्कार और पादपूर्ति में प्रयुक्त किया जाता अव्यय ; (कप्प ; हे २, ११७; पड्)।
इ देखो इइ ; (उवा)।
इ सक [इ] १ जाना, गमन करना । २ जानना । एइ, एंति ; (कुमा)। वकृ—एंत; (कुमा)। संकृ—इच्चा ; (आचा)। हेकृ—इत्तए ; एत्तए ; (कप्प ; कस)।
इइ अ [इति] इन अर्थों का सूचक अव्यय; —१ समाप्ति; (आचा)। २ अवधि, हद ; (विसे)। ३ मान, परिमाण ; (पव ८४)। ४ निश्चय ; (निचू २ ; १५)। ५ हेतु, कारण ; (ठा ३)। ६ एवम्, इस तरह, इस प्रकार ; (उत्त २२)। देखो इति।
इओ अ [इतस्] १ इससे, इस कारण ; (पि १७४)। २ इस तरफ ; (सुपा ३६४)। ३ इस (लोक) में ; (विसे २६८२)।
इओअ अ [इतश्च] प्रसंगान्तर-सूचक अव्यय ; (श्रा २८)।
इंखिणिया स्त्री [दे. इङ्खिनिका] निन्दा, गर्हा ; (सुअ १, २)।
इंखिणी स्त्री [दे. इङ्खिनी] ऊपर देखो ; (सुअ १, २)।
इंगार } देखो अंगार ; (पि १०२ ; जी ६ ; प्राप्र)।
इंगाल } °कम्म न [°कर्मन्] कोयला आदि उत्पन्न करने का और वेचने का व्यापार ; (पडि)। °सगडिया स्त्री [°शकटिका] अंगीठी, आग रखने का बर्तन ; (भग)।
इंगाल वि [आङ्गार] अङ्गार-संबन्धी ; (दस ५)।
इंगालग देखो अंगारग ; (ठा २, ३)।
इंगाली स्त्री [दे] ईख का टुकड़ा, गंडेरी ; (दे १, ७६ ; पाअ)।
इंगाली स्त्री [आङ्गारी] देखो इंगाल-कम्म ; (श्रा २२)।
इंगिअ न [इङ्गित] इसारा, संकेत, अभिप्राय के अनुरूप चेष्टा ; (पाअ)। °ज्ज, °ण्ण, °ण्णु वि [°ज्ञ] इसारे से समझने वाला ; (प्राप्र ; हे २, ८३ ; पि २७६)। °मरण न [°मरण] मरण-विशेष ; (पंचा)।
इंगिणी स्त्री [इङ्गिनी] मरण-विशेष, अनशन-क्रिया-विशेष; (सम ३३)।
इंगुअ न [इङ्गुद] इंगुदी वृत्त का फल ; (कुमा ; पउम ४१, ६)।
इंगुई } स्त्री [इङ्गुदी] वृत्त-विशेष, इसके फल तैलमय इंगुदी } होते हैं, इसका दूसरा नाम व्रण-विरोपण भी है, क्योंकि इसके तैल से व्रण बहुत शीघ्र अच्छे होते हैं ; (आचा ; अभि ७३)।
इंघिअ वि [दे] घ्रात, सूंघा हुआ ; (दे १, ८०)।
°इंणर देखो किण्णर ; (से ८, ६१)।
इंत देखो ए=आ+इ ।
इंद पुं [इन्द्र] १ देवताओं का राजा, देव-राज ; (ठा २)। २ श्रेष्ठ, प्रधान, नायक, जैसे 'णरिंद' (गउड) 'देविंद' (कप्प)। ३ परमेश्वर, ईश्वर ; (ठा ४)। ४ जीव, आत्मा ; "इंदो जीवो सव्वोवलद्धिभोगपरमेसरत्तणओ" (विसे २६६३)। ५ ऐश्वर्य-शाली ; (आवम)। ६ विद्याधरों का प्रसिद्ध राजा ; (पउम ६, २ ; ७, ८)। ७ पृथ्वीकाय का एक अधिष्ठायक देव; (ठा ५, १)। ८ ज्येष्ठा नक्षत्र का अधिष्ठायक देव ; (ठा २, ३)। ९ उन्नीसवें तीर्थंकर के एक स्वनाम-ख्यात गणधर ; (सम १५२)। १० सप्तमी तिथि ; (कप्प)। ११ मेघ, वर्षा ; "किं जयइ सव्वत्था दुब्भिक्खं अह भवे इंदो" (दसनि १०५)। १२ न. देव-विमान-विशेष ; (सम ३७)। °इ पुं [°जित्] १ इस नामका राक्षस वंश का एक राजा, एक लंकेश ; (पउम ५, २६२)। २ रावण के एक पुत्र का नाम ; (से १२, ५८)। °ओव देखो °गोव ; (पि १६८)। °काइय पुं [°कायिक] त्रीन्द्रिय जीव-विशेष ; (पण्ण १)। °कील पुं [°कील] दरवाजा का एक अवयव ; (औप)। °कुंभ पुं [°कुम्भ] १ बड़ा कलश ; (राय)। २ उद्यान-विशेष ; (णाया १, ६)। °केउ पुं [°केतु] इन्द्र-ध्वज, इन्द्र-यष्टि ; (पण्ह १, ४ ; २, ४)। °खील देखो °कील ; (औप ; पि २०६)। °गाइय देखो °काइय ; (उत्त २६)। °गाह पुं [°ग्रह] इन्द्रावेश, किसी के शरीर में इन्द्र का अधिष्ठान, जो पागलपन का कारण होता है, ; "इंद-गाहा इवा खंदगाहा इवा" (भग ३, ७)। °गोव, °गोवग, °गोवय पुं [°गोप] वर्षा ऋतु में होने वाला रक्त वर्ण का क्षुद्र जन्तु-विशेष, जिसको गुजराती में 'गोकुल

गाय' कहते हैं ; (उव ३२ ; सुर २, ८७; जी १७ ; पि १६८)। °ग्गह पुं [°ग्रह] ग्रह-विशेष ; (जीव ३)। °ग्गि पुं [°ग्नि] १ विशाखा नक्षत्र का अधिष्ठायक देव ; (अणु)। २ महाग्रह-विशेष ; (ठा २, ३)। °ग्गीव पुं [°ग्रीव] ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष ; (ठा २, ३)। °जसा स्त्री [°यशस्] काम्पिल्य नगर के ब्रह्मराज की एक पत्नी ; (उत्त १३)। °जाल न [°जाल] माया-कर्म, छल, कपट ; (स ४५४)। °जालि, °जालिअ वि [°जालिन्, °क] मायावी, बाजीगर ; (ठा ४ ; सुपा २०३)। °जुइण्ण पुं [°द्युतिज्ञ] स्वनाम-ख्यात इक्ष्वाकु वंश का एक राजा ; (पउम ५, ६)। °ज्झय पुं [°ध्वज] बडी ध्वजा ; (पि २९९)। °ज्झया स्त्री [°ध्वजा] इन्द्र ने भरतराज को दिखाई हुई अपनी दिव्य अङ्गुलि के उपलक्ष में राजा भरत ने उस अङ्गुलि के समान आकृति की की हुई स्थापना, और उसके उपलक्षमें किया गया उत्सव ; (आचू २०)। °णील पुंन [°नील] नीलम, नील-मणि, रत्न-विशेष ; (गउड; पि १६०)। °तरु पुं [°तरु] वृक्ष-विशेष, जिसके नीचे भगवान् संभवनाथ को केवल-ज्ञान हुआ था ; (पउम २०, २८)। °त्त न [°त्व १ स्वर्ग का आधिपत्य, इन्द्र का असाधारण धर्म ; २ राजत्व ; ३ प्राधान्य; (सुपा २५३)। °दत्त पुं [°दत्त] इस नाम का एक प्रसिद्ध राजा ; (उप ९३६)। २ एक जैन मुनि ; (विपा २, ७)। °दिण्ण पुं [°दिन्न] स्वनाम-ख्यात एक जैन आचार्य ; (कप्प)। °धणु न [°धनुष्] १ शक्र-धनु, सूर्य की किरण मेघों पर पड़ने से आकाश में जो धनुष का आकार दीख पड़ता है वह। २ विद्याधरवंश के एक राजा का नाम ; (पउम ८, १८६)। °नील देखो °णील ; (पउम ३, १३२)। °पाडिवया स्त्री [°प्रतिपत्] कार्तिक (गुजराती आश्विन) मास के कृष्ण-पक्ष की पहली तिथि ; (ठा ४)। °पुर न [°पुर] १ इन्द्र का नगर, अमरावती ; (उप पृ १२६) २ नगर-विशेष, राजा इन्द्रदत्त की राजधानी; (उप ९३६)। °पुरग न [°पुरक] जैनीय वेशवाटिक गण के चौथे कुल का नाम ; (कप्प)। °प्पभ पुं [°प्रभ] राक्षस वंश के एक राजा का नाम, जो लङ्का का राजा था ; (पउम ५, २६१)। °भूइ पुं [°भूति] भगवान् महावीर का प्रथम—मुख्य शिष्य, गौतमस्वामी ; (सम १९ ; १५२)। °मह पुं [°मह] १ इन्द्र की आराधना के लिए किया जाता एक उत्सव ; २ आश्विन पूर्णिमा ; (ठा ४, २)। °माली स्त्री [°माली] राजा आदित्य की पत्नी ;(पउम ६, १)। °मुद्धाभिसित्त पुं [°मुर्द्धाभिषिक्त] पक्ष की सातवीं तिथि, सप्तमी ; (चंद्र १०)। °मेह पुं [°मेघ] राक्षस वंश में उत्पन्न एक राजा; (पउम ५, २६१)। °य [°क] १ देखा इन्द्र ; (ठा ६)। २ नरक-विशेष ; ३ द्वीप-विशेष ; ४ न. विमान-विशेष; (इक)। °याल देखो °जाल ; (महा)। °रह पुं [°रथ] विद्याधर वंश के एक राजा का नाम ; (पउम ५, ४४)। °राय पुं [°राज] इन्द्र ; (तित्थ)। °लट्ठि स्त्री [°यष्टि] इन्द्र-ध्वज; (गाया १, १)। °लेहा स्त्री [°लेखा] राजा त्रिकसंयत की पत्नी ; (पउम ५, ५१)। °वज्जा स्त्री [°वज्रा] छन्द-विशेष का नाम, जिसके एक पाद में ग्यारह अक्षर होते हैं ; (पिंग)। °वसु स्त्री [°वसु] ब्रह्मराज की एक पत्नी ; (राज)। °वाय पुं [°वात] एक माण्डलिक राजा ; (भवि)। °वारण पुं [°वारण] इन्द्र का हाथी, ऐरावत; (कुमा)। °सम्म पुं [°शर्मन्] स्वनाम-ख्यात एक ब्राह्मण; (आवम)। °सामणिय पुं [°सामानिक] इन्द्र के समान ऋद्धि वाला देव ; (महा)। °सिरी स्त्री [°श्री] राजा ब्रह्मदत्त की एक पत्नी ; (राज)। °सुअ पुं [°सुत] इन्द्र का लड़का, जयन्त ; (दे ६, १९)। °सेणा स्त्री [°सेना] १ इन्द्र का सैन्य। २ एक महानदी ; (ठा ५, ३)। °हणु देखो °धणु ; (हे १, १८७)। °ाउह न [°ायुध] इन्द्रधनु ; (गाया १, १)। °ाउहप्पभ पुं [°ायुधप्रभ] वानरद्वीप का एक राजा ; (पउम ६, ६६)। °ामअ पुं [°ामय] राजा इन्द्रायुधप्रभ का पुत्र, वानरद्वीप का एक राजा ; (पउम ६, ६७)।

इंद वि [ऐन्द्र] १ इन्द्र-संबन्धी ; (गाया १, १)। २ संस्कृत का एक प्राचीन व्याकरण ; (आवम)।

इंदगाइ पुं [दे] साथ में संलग्न रहने वाले कीट-विशेष ; (दे १, ८१)।

इंदग्गि पुं [दे] वर्फ, हिम ; (दे १, ८०)।

इंदग्गिधूम न [दे] वर्फ, हिम ; (दे १, ८०)।

इंदड्ढलअ पुं [दे] इन्द्र का उत्थापन ; (दे १, ८२)।

इंदमह वि [दे] १ कुमारी में उत्पन्न ; २ कुमारता, यौवन ; (दे १, ८१)।

इंदमहकामुअ पुं [दे. इन्द्रमहकामुक] कुत्ता, श्वान ; (दे १, ८३ ; पाअ)।

इंदा स्त्री [**इन्द्रा**] १ एक महानदी ; (ठा ५, ३)। २ धरणेन्द्र की एक अग्र-महिषी ; (णाया २)।

इंदा स्त्री [**ऐन्द्री**] पूर्व दिशा ; (ठा १०)।

इंदाणी स्त्री [**इन्द्राणी**] १ इन्द्र की पत्नी ; (सुर १, १७०)। २ एक राज-पत्नी ; (पउम ६, २१६)।

इंदिंदिर पुं [**इन्दिन्दिर**] भ्रमर, भमरा ; (पात्र; दे १, ७६)।

इंदिय पुंन [**इन्द्रिय**] १ आत्मा का चिन्ह, इन्द्री, ज्ञान के साधन-भूत—श्रोत्र, चक्षु, घ्राण, जिह्वा, त्वक् और मन ; "तं तारिसं नो पयलेंति इंदिया" (दसचू १, १६ ; ठा ६)। २ अंग, शरीर के अवयव ; "नो निग्गंथे इत्थीणं इंदियाइं मणोहराइं मणोरमाइं आलोइत्ता निज्झाइत्ता भवइ" (उत्त १६)। °**अवाय** पुं [°**ापाय**] इन्द्रियों द्वारा होने वाला वस्तु का निश्चयात्मक ज्ञान-विशेष ; (पण्ण १५)। °**ओगाहणा** स्त्री [°**ावग्रहणा**] इन्द्रियों द्वारा उत्पन्न होने वाला ज्ञान-विशेष ; (पण्ण १५)। °**जय** पुं [°**जय**] १ इन्द्रियों का निग्रह, इन्द्रियों को वश में रखना ; "अजिइंदिएहिं चरणं, कट्ठं व घुणेहि कीरइ असारं। तो धम्मत्थीहिं दढं, जइअव्वं इंदियजयम्मि" (इंदि ४)। २ तप-विशेष ; (पव २७०)। °**ट्ठाण** न [°**स्थान**] इन्द्रियों का उपादान कारण, जैसे श्रोत्रेन्द्रिय का आकाश, चक्षु का तेज वगैरः ; (सुअ १, १)। °**णिव्वत्तणा** स्त्री [°**निर्वर्त्तना**] इन्द्रियों के आकार की निष्पत्ति ; (पण्ण १५)। °**णाण** न [°**ज्ञान**] इन्द्रिय-द्वारा उत्पन्न ज्ञान, प्रत्यक्ष ज्ञान ; (वव १०)। °**त्थ** पुं [°**ार्थ**] इन्द्रिय से जानने योग्य वस्तु, रूप-रस-गन्ध वगैरः ; (ठा ६)। °**पज्जत्ति** स्त्री [°**पर्याप्ति**] शक्ति-विशेष, जिसके द्वारा जीव धातुओं के रूप में बदले हुए आहार को इन्द्रियों के रूप में परिणत करता है ; (पण्ण १)। °**विजय** पुं [°**विजय**] देखो °**जय** ; (पंचा १८)। °**विसय** पुं [°**विषय**] देखो °**त्थ** ; (उत्त ५)।

इंदियाल देखो **इंद-जाल** ; (सुपा ११७; महा)।

इंदियाल } देखो **इंद-जालि** ; "तुह कोउयत्थमित्थं
इंदियालि } विहियं मे खयरइंदियालेण" (सुपा २४२)। "जह एस इंदियालो, दंसइ खणनस्सराइं रूवाइं" (सुपा २४३)।

इंदियालीअ देखो **इंद-जालिअ** ; "न भवामि अहं खयरो नरपुंगव ! [i]दियालीओ" (सुपा २४३)।

इंदिर पुं [**इन्दिर**] भ्रमर, भमरा ; "झंकारमुहरिंदिराइं" (विक्र २६)।

इंदीवर न [**इन्दीवर**] कमल, पद्म ; (पउम १०, ३६)।

इंदु पुं [**इन्दु**] चन्द्र, चन्द्रमा ; (पात्र)।

इंदुत्तरवडिंसग न [**इन्द्रोत्तरावतंसक**] देव-विमान-विशेष ; (सम ३७)।

इंदुर पुंस्त्री [**उन्दुर**] चूहा, मूषक ; (नाट)।

इंदोकंत न [**इन्दुकान्त**] विमान-विशेष ; (सम ३७)।

इंदोव देखो **इंद-गोव** ; (पात्र; दे १, ७६)।

इंदोवत्त पुं [**दे**] इन्द्रगोप, कीट-विशेष ; (दे १, ८१)।

इंद्र देखो **इंद=इन्द्र** ; (पि २६८)।

इंध न [**चिह्न**] निशानी, चिन्ह ; (हे १, १७७ ; २, ५० ; कुमा)।

इंधण न [**इन्धन**] १ ईंधन, जलावन, लकड़ी वगैरः दाह्य वस्तु ; (कुमा)। २ अस्त्र-विशेष ; (पउम ७१, ६४)। ३ उद्दीपन, उत्तेजन ; (उत्त १४)। ४ पलाल, तृण वगैरः, जिससे फल पकाये जाते हैं ; (निचू १५)। °**साला** स्त्री [°**शाला**] वह घर, जिसमें जलावन रक्खे जाते हैं ; (निचू १६)।

इंधिय वि [**इन्धित**] उद्दीपित, प्रज्वलित ; (बृह ४)।

इक न [**दे**] प्रवेश, पैठ "इकमप्पए पवेसणं" (विसे ३४८३)।

इक्क देखो **एक** ; (कुमा; सुपा ३७७; दं ४०; पात्र ; प्रासू १०; कस; सुर १०, २१२ ; श्रा १०; दं २१; रयण २; श्रा ६; पउम ११, ३२)।

इक्कड पुं [**इक्कड**] तृण-विशेष ; (पण्ह २, ३; पण्ण १)।

इक्कण वि [**दे**] चोर, चुराने वाला ; (दे १, ८०) ; "वाहुलयामूलेसुं रइयाओ जणमणेक्कणाओ उ। बाहुसरियाउ तीसे" (स ७६)।

इक्किक्क वि [**एकैक**] प्रत्येक ; (जी ३३; प्रासू ११८; सुर ८, ४२)।

इक्कुस न [**दे**] नीलोत्पल, कमल ; (दे १, ७६)।

इक्ख सक [**ईक्ष्**] देखना। इक्खइ ; (उव)। इक्ख ; (सुअ १, २, १, २१)।

इक्खअ वि [**ईक्षक**] देखने वाला ; (गा ५५७)।

इक्खण न [**ईक्षण**] अवलोकन, प्रेक्षण ; (पउम १०१, ७)।

इक्खाउ देखो **इक्खागु** ; (विक्र ६४)।

इक्खाग वि [ऐक्ष्वाक] इक्ष्वाकु-नामक प्रसिद्ध क्षत्रिय-वंश में उत्पन्न ; (तित्थ)।

इक्खाग } पुं [इक्ष्वाकु] १ एक प्रसिद्ध क्षत्रिय राज-
इक्खागु } वंश, भगवान् ऋषभदेव का वंश ; २ उस वंश में उत्पन्न ; (भग ६, ३३ ; कप्प ; औप; अजि १३)। ३ कोशल देश ; (णाया १, ८) °**भूमि** स्त्री [°भूमि] अयोध्या नगरी ; (आव २)।

इक्खु पुं [इक्षु] १ ईख, ऊख ; (हे २, १७ ; पि ११७)। २ धान्य-विशेष, 'वरट्टिका' नाम का धान्य ; (श्रा १८) । °**गंडिया** स्त्री [°गण्डिका] गंडेरी, ईख का टुकड़ा ; (आचा)। °**घर** न [°गृह] उद्यान-विशेष ; (विसे)। °**चोयग** न [दे] ईख का कुचा; (आचा)। °**डालग** न [°दे] ईख की शाखा का एक भाग ; (आचा)। २ ईख का च्छेद ; (निचू १)। °**पेसिया** स्त्री [°पेशिका] गण्डेरी ; (निचू १६)। °**भित्ति** स्त्री [दे] ईख का टुकड़ा ; (निचू १६) °**मेरग** न [°मेरक] गण्डेरी, कटे हुए ऊख के गुल्ले ; (आचा)। °**लट्ठि** स्त्री [°यष्टि] ईख की लाठी, इक्षु-दण्ड; (आचू)। °**वाड** पुं [°वाट] ईख का खेत, "सुचिरपि अच्छमाणो नलथंभो इक्खुवाडमज्झम्मि" (आव ३)। °**सालग** न [दे] १ ईख की लम्बी शाखा ; (आचा)। २ ईख की बाहर की छाल ; (निचू १६)। देखो **उच्छु**।

इग देखो **एक्क** ; (कम्म १, ८ ; ३३ ; सुपा ४०६ ; श्रा १४ ; नव ८ ; पि ४४५; श्रा ४४ ; सम ७५)।

इगुचाल वि [एकचत्वारिंशत्] संख्या-विशेष, ४१, चालीस और एक ; (भग ; पि ४४५)।

इग्ग वि [दे] भीत, डरा हुआ ; (दे १, ७९)।

इग्ग देखो **एक्क**; (नाट)।

इग्घिअ वि [दे] भर्त्सित, तिरस्कृत ; (दे १, ८०)।

इच्चा देखो **इ** सक।

इच्चाइ पुंन [इत्यादि] वगैरः, प्रभृति ; (जी ३)।

इच्चेवं अ [इत्येवम्] इस प्रकार, इस माफिक ; (सूअ १, ३)।

इच्छ सक [इष्] इच्छा करना, चाहना। इच्छइ ; (उव ; महा)। वकृ—इच्छंत, इच्छमाण; (उत्त १; पंचा ५)।

इच्छ सक [आप्+सन्=ईप्स्] प्राप्त करने को चाहना। कृ—इच्छियव्व; (वव १)।

इच्छकार देखो **इच्छा-कार**; (पडि)।

इच्छा स्त्री [इच्छा] अभिलाषा, चाह, वाञ्छा ; (उवा ; प्रासू ४८)। °**कार** पुं [°कार] स्वकीय इच्छा, अभिलाष ; (पडि) । °**छंद** वि [°च्छन्द] इच्छा के अनु=कूल; (आव ३)। °**णुलोम** वि [°नुलोम] इच्छा के अनुकूल ; (पण्ण ११)। °**णुलोमिय** वि [°नुलोमिक] इच्छा के अनुकूल ; (आचा)। °**पणिय** वि [°प्रणीत] इच्छानुसार किया हुआ ; (आचा)। °**परिमाण** न [°परिमाण] परिग्राह्य वस्तुओं के विषय की इच्छा का परिमाण करना, श्रावक का पांचवाँ व्रत; (ठा ५)। °**मुच्छा** स्त्री [°मूर्च्छा] अत्यासक्ति, प्रबल इच्छा ; (पण्ह १, ३)। °**लोभ** पुं [°लोभ] प्रबल लोभ ; (ठा ६)। °**लोभिय** वि [°लोभिक] महा-लोभी ; (ठा ६)। °**लोल** पुं [°लोल] १ महान् लोभ; २ वि. महा-लोभी ; (वृह ६)।

°**इच्छा** स्त्री [दित्सा] देने की इच्छा ; (आव)।

इच्छिय [इष्ट] इष्ट, अभिलषित, वाञ्छित ; (सुर ४, १५३)।

इच्छिय वि [ईप्सित] प्राप्त करने को चाहा हुआ, अभिलषित ; (भग ; सुपा ६२५)।

इच्छिय वि [इच्छित] जिसको इच्छा की गई हो वह; (भग)।

इच्छिर वि [एषितृ] इच्छा करने वाला ; (कुमा)।

इच्छु देखो **इक्खु** ; (कुमा ; प्रासू ३३)।

इच्छु वि [इच्छु] अभिलाषी ; (गा ७४०)।

इज्ज सक [आ+इ] आना, आगमन करना। वकृ—इज्जंत, "विणयम्मि जो उवाएणं, चोइओ कुप्पई नरो।
दिव्वं सो सिरिमिज्जंतिं, दंडेण पडिसेहए ॥" (दस ९, २, ४)।

इज्जा स्त्री [इज्या] १ याग, पूजा; २ ब्राह्मणों का सन्ध्यार्चन; (अणु; ठा १०)।

इज्जा स्त्री [दे] माता, जननी ; (अणु)।

इज्जिसिय वि [इज्यैषिक] पूजा का अभिलाषी ; (भग ९, ३३)।

इज्झ अक [इन्ध्] चमकना ; (हे २, २८)। वकृ—इज्झमाण ; (राय)।

इट्टगा स्त्री [इष्टका] नीचे देखो ; (पण्ह २, २ ; पिंड)

इट्टा स्त्री [इष्टका] ईंट ; (गउड; हे २, ३४)। °**पाय**, °**वाय** पुं [°पाक] ईंटो का पकना ; २ जहां पर ईंटें पकाई जाती हैं वह स्थान ; (ठा ८)।

इट्टाल न [इट्टाल] ईंट का टुकड़ा ; (दस ५, ४५)।
इट्ठ वि [इष्ट] १ अभिलषित, अभिप्रेत, वाञ्छित ; (विपा १, १ ; सुपा ३७०)। २ पूजित, सत्कृत ; (औप)। ३ आगमोक्त, सिद्धान्त से अ-विरुद्ध ; (उप ८८२)।
इट्ठि स्त्री [इष्टि] १ इच्छा, अभिलाष, चाह ; (सुपा २४६)। २ याग-विशेष ; (अभि २२७)।
इट्ठि स्त्री [कृष्टि] खींचाव, खींचना ; (गा १८)।
इडा स्त्री [इडा] शरीर के दक्षिण भाग स्थित नाड़ी ; (कुमा)।
इड्डुर न [दे] गाड़ी ; (ओघ ४७६)।
इड्डुरिया स्त्री [दे] मिष्टान्न-विशेष, एक प्रकार की मीठाई ; (सुपा ४८५)।
इड्ढ वि [ऋद्ध] ऋद्धि-संपन्न ; (भग)।
इड्ढि स्त्री [ऋद्धि] १ वैभव, ऐश्वर्य, संपत्ति ; (सुर ३, १७)। २ लब्धि, शक्ति, सामर्थ्य; (उत्त ३)। ३ पदवी; (ठा ३, ४)। °गारव न [°गौरव] संपत्ति या पदवी आदि प्राप्त होने पर अभिमान और प्राप्त न होने पर उसकी लालसा; (सम ३; ठा ३, ४)। °पत्त वि [°प्राप्त] ऋद्धि-शाली ; (पण्ण ११; सुपा ३६०)। °म, °मंत वि [°मत्] ऋद्धि वाला ; (निचू १; ठा ६)।
इड्ढिसिय वि [दे] याचक-विशेष, माँगन की एक जाति ; (भग ६, ३३ टी)।
इणं } इणमो } अ [एतत्] यह ; (दे १, ७६)।
इण्ण देखो दिण्ण ; (से ४, ३५)।
इण्ण देखो किण्ण ; (से ८, ७१)।
इण्ह न [चिह्न] चिन्ह, निशान ; (से १, १२ ; षड्)।
इण्हा स्त्री [तृष्णा] तृष्णा, प्यास, स्पृहा ; (गा ६३)।
इण्हिं अ [इदानीम्] इस समय, इस वख्त ; (दे १, ७६ ; पाअ)।
इति देखो इइ ; (पि १८)। °हास पुं (°हास) पूर्व वृत्तान्त, अतीत काल की घटनाओं का विवरण, पुरावृत्त ; (कप्प)। २ पुराण-शास्त्र ; (भग)।
इत्तिप देखो इ सक।
इत्तर वि [इत्वर] १ अल्प, थोड़ा ; (अणु)। २ अल्पकालिक, थोड़े समय के लिए जो किया जाता हो वह; (ठा ६)। ३ थोड़े समय तक रहने वाला ; (श्रा १६)। °परिग्गहा स्त्री [°परिग्रहा] थोड़े समय के लिए रखी हुई वेश्या, रखात आदि ; (आव ६)। °परिग्गहिया स्त्री [°परिगृहीता] देखो °परिग्गहा ; (आव ६)।
इत्तरिय वि [इत्वरिक] ऊपर देखो; (निचू २ ; आचा ; उवा ; पंचा १०)।
इत्तरिय देखो इयर ; (सुअ २, २)।
इत्तरी स्त्री [इत्वरी] थोड़े काल के लिए रखी हुई वेश्या आदि ; (पंचा १)।
इत्तहे (अप) अ [अत्र] यहां पर ; (कुमा)।
इत्ताहे अ [इदानीम्] इस समय, इस वख्त, अधुना; (पाअ)।
इत्ति देखो इइ; (कुमा)।
इत्तिय वि [इयत्, एतावत्] इतना ; (हे २, १५६ ; कुमा; प्रासू १३८ ; षड्)।
इत्तिरिय वि [इत्वरिक] अल्पकालिक, जो थोड़े समय के लिए किया जाता हो.; (स ४६; विसे १२६५)।
इत्तिल देखो इत्तिय; (हे २, १५६)।
इत्तो देखो इओ ; (श्रा १७)।
इत्तोअ देखो इओअ; (श्रा १४)।
इत्तोप्पं अ [दे] यहां से लेकर, इतः प्रभृति (पाअ)।
इत्थ अ [अत्र] यहां, इसमें ; (कप्प; कुमा; प्रासू १४१)।
इत्थं अ [इत्थम्] इस तरह, इस प्रकार ; (पण्ण २)। °थ वि [°स्थ] नियत आकार वाला. नियमित; (जीव १)।
इत्थत्थ पुं [इत्यर्थ] वह अर्थ ; (भग)।
इत्थत्थ पुं [स्त्र्यर्थ] स्त्री-विषय; (पि १६२)।
इत्थयं देखो इत्थ ; (श्रा १२)।
इत्थि } इत्थी } स्त्री [स्त्री] जनाना, औरत, महिला ; (सुअ २, २ ; हे २, १३०)। °कला स्त्री [°कला] स्त्री के गुण, स्त्री को सीखने योग्य कला ; (जं २)। °कहा स्त्री [°कथा] स्त्री-विषयक वार्त्तालाप ; (ठा ४)। °णपुंसग पुंन [°नपुंसक] एक प्रकार का नपुंसक ; (निचू १)। °णाम न [°नामन्] कर्म-विशेष, जिसके उदय से स्त्रीत्व की प्राप्ति होती है ; (णाया १, ८)। °परिसह पुं [°परिषह] ब्रह्मचर्य ; (भग ८, ८)। °विप्पजह वि [°विप्रजह] १ स्त्री का परित्याग करने वाला; २ पुं. मुनि, साधु; (उत्त ८)। °वेद, °वेय पुं [°वेद] १ स्त्री को पुरुष-संग की इच्छा ; २ कर्म-विशेष, जिसके उदय से स्त्री को पुरुष के साथ भोग करने की इच्छा होती है ; (भग ; पण्ण २३)।

इत्थेण त्रि [स्त्रैण] स्त्रीओं का समूह, स्त्री-जन; " लज्जसि किं न महंता दीणाओ मारिसित्थेणा" (उप ७२८ टी)।
इदाणिं देखो इयाणिं; (आचा)।
इदुर न [दे] १ गाड़ी के ऊपर लगाया जाता आच्छादन-विशेष; (अणु)। २ ढकने का पात्र-विशेष; (राय)।
इद्दुदंड पुं [दे] भमरा, मधुकर; (दे १, ७६)।
इद्धग्गिधूम न [दे] तुहिन, हिम; (षड्)।
इद्धि देखो इड्ढि; (षड्)।
इध (शौ) देखो इह; (हे ४, २६८)।
इब्भ पुं [इभ्य] धनी, आढ्य; (पाअ)।
इब्भ पुं [दे] वणिक्, व्यापारी; (१, ७६)।
इभ पुं [इभ] हाथी, हस्ती; (जं २; कुमा)।
इम स [इदम्] यह; (हे ३, ७२)।
इमेरिस वि [एतादृश] ऐसा, इसके जैसा; (सण)।
इय देखो इम; (महा)।
इय देखो इइ; (षड्; ह १, ६१; औप)।
इय न [दे] प्रवेश, पैठ; (आवम)।
इय वि [इत] १ गत, गया हुआ; (सूअ १, ६)। २ प्राप्त; 'उदयमिओ जस्सीसो जयम्मि चंदुव्व जिणचंदो" (सार्ध ७१; विसे)। ३ ज्ञात, जाना हुआ; (आचा)।
इयण्हिं अ [इदानीम्] हाल में, इस समय, अधुना; (ठा ३, ३)।
इयर वि [इतर] १ अन्य, दूसरा; (जी ४६; प्रासू १००)। २ हीन, जघन्य; (आचा १, ६, २)।
इयरहा अ [इतरथा] अन्यथा, नहीं तो, अन्य प्रकार से; (कम्म १, ६०)।
इयरेयर वि [इतरेतर] अन्योन्य, परस्पर; (राज)।
इयाणि, इयाणिं अ [इदानीम्] हाल में, इस समय; (भग; पि १४४)।
इर देखो किल; (हे २, १८६; नाट)।
इरमंदिर पुं [दे] करभ, ऊंट; (दे १, ८१)।
इराव पुं [दे] हाथी; (दे १, ८०)।
इरावदी (शौ) स्त्री [इरावती] नदी-विशेष; (नाट)।
°इरि देखो गिरि " विंझइरिपवरसिहरे " (पउम १०, २७)।
इरिया स्त्री [दे] कुटी, कुटिया; (दे १, ८०)।
इरिया स्त्री [ईर्या] गमन, गति, चलना; (आचा)। °वह पुं [°पथ] १ मार्ग में जाना; (ओघ ५४)। २ जाने का मार्ग, रास्ता; (भग ११, १०)। ३ केवल शरीर से होने वाली क्रिया; (सूअ २, २)। °वहिय न [°पथिक] केवल शरीर की चेष्टा से होने वाला कर्म-बन्ध, कर्म-विशेष; (सूअ २, २; भग ८, ८)। °वहिया स्त्री [°पथिकी] कषाय-रहित केवल कायिक क्रिया; क्रिया-विशेष; (पडि; ठा २)। °समिइ स्त्री [°समिति] विवेक से चलना, दूसरे जीव को किसी प्रकार की हानि न हो ऐसा उपयोग-पूर्वक चलना; (ठा ८)। °समिय वि [°समित] विवेक-पूर्वक चलने वाला; (विपा २, १)।
इरिण न [ऋण] करजा, ऋण; (चारु ६६)।
इरिण न [दे] कनक, सुवर्ण; (दे १, ७६; गउड)।
इल पुं [इल] १ वाराणसी का वास्तव्य स्वनाम-ख्यात एक गृह-पति—गृहस्थ; (णाया २)। २ न. इलादेवी के सिंहासन का नाम; (णाया २)। °सिरी स्त्री [°श्री] इल-नामक गृहस्थ की स्त्री; (णाया २)।
°इलंतअ देखो किलंत; (से ३, ४७)।
इला स्त्री [इला] १ पृथिवी, भूमि; (से २, ११)। २ धरणेन्द्र की एक अग्र-महिषी; (णाया २)। ३ इल-नामक गृहस्थ की पुत्री; (णाया २)। ४ रुचक पर्वत पर रहने वाली एक दिक्कुमारी; (ठा ८)। ५ राजा जनक की माता; (पउम २१, ३३)। ६ इलावर्धन नगर में स्थित एक देवता; (आवम)। °कूड न [°कूट] इलादेवी के निवास-भूत एक शिखर; (ठा ४)। °पुत्त पुं [°पुत्र] इलादेवी के प्रसाद से उत्पन्न एक श्रेष्ठि-पुत्र, जिसने नटिनी पर मोहित होकर नट का पेशा सीखा और अन्त में नाच करते करते ही शुद्ध भावना से केवल-ज्ञान प्राप्त कर मुक्ति पाई; (आचू)। °वइ पुं [°पति] एलापत्य गोत्र का आदि-पुरुष; (णंदि)। °वडंसय न [°वतंसक] इलादेवी का प्रासाद; (णाया २)।
इलाइपुत्त देखो इला-पुत्त; " धन्नो इलाइपुत्तो चिलाइपुत्तो अ बाहुमुणी" (पडि)।
इलिया स्त्री [इलिका] क्षुद्र जीव-विशेष, चीनी और चावल में उत्पन्न होने वाला कीट-विशेष; (जी १७)।
इली स्त्री [इली] शस्त्र-विशेष, एक जात का तरवार की तरह का हथियार; (पण्ह १, ३)।
इल्ल पुं [दे] १ प्रतीहार, चपरासी; २ लविव, दाँती; ३ दरिद्र, गरीब; ४ कोमल, मृदु; ५ काला, कृष्ण वर्ण वाला; (दे १, ८३)।

इल्लि पुं [दे] १ शार्दूल, व्याघ्र ; २ सिंह ; ३ छाता ; (दे १, ८३)।

इल्लिय वि [दे] आसिक्त ; "उप्पेलणफुल्लाविअहल्लअफुल्लासवेल्लिअमल्लिआअक्खतल्लएण" (विक्र २३)।

इल्लिया स्त्री [इल्लिका] क्षुद्र जीव-विशेष, अन्न में उत्पन्न होने वाला कीट-विशेष ; (जी १६)।

इल्लीर न [दे] १ आसन-विशेष ; २ छाता ; ३ दरवाजा, गृह-द्वार ; (दे १, ८३)।

इव अ [इव] इन अर्थों का द्योतक अव्यय;—१ उपमा; २ सादृश्य, तुलना ; ३ उत्प्रेक्षा ; (हे २, १८२ ; सण)।

इसअ वि [दे] विस्तीर्ण ; (षड्)।

इसणा देखो **एसणा** ; (रंभा)।

इसाणी स्त्री [ऐशानी] ईशान कोण, पूर्व और उत्तर के बीच की दिशा ; (नाट)।

इसि पुं [ऋषि] १ मुनि, साधु, ज्ञानी, महात्मा; (उत्त १२; अवि १४)। २ ऋषिवादि-निकाय का दक्षिण दिशा का इन्द्र, इन्द्र-विशेष ; (ठा २, ३)। °**गुत्त** पुं [°गुप्त] १ स्वनाम-ख्यात एक जैन मुनि ; (कप्प)। २ न. जैन मुनिओं का एक कुल; (कप्प)। °**गुत्तिय** न [°गुप्तीय] जैन मुनिओं का एक कुल ; (कप्प)। °**दास** पुं [°दास] १ इस नाम का एक शेठ, जिसने जैन दीक्षा ली थी ; २ 'अनुत्तरोववाइदसा' सूत्र का एक अध्ययन ; (अनु २)। °**दिण्ण** पुं [°दत्त] एक जैन मुनि ; (कप्प)। °**पालिय** °**दत्त**, पुं [°**पालित**] ऐरवत क्षेत्र के पाँचवें तीर्थंकर का नाम ; (सम १५३)। °**पालिया** स्त्री [°पालिता] जैन मुनिओं की एक शाखा ; (कप्प)। °**भद्दपुत्त** पुं [भद्रपुत्र] एक जैन श्रावक ; (भग ११, १२)। °**भासिय** न [°भाषित] १ अंग ग्रन्थों के अतिरिक्त जैन आचार्यों के बनाए हुए उत्तराध्ययन आदि शास्त्र; (आवम)। २ 'प्रश्नव्याकरण' सूत्र का तृतीय अध्ययन ; (ठा १०)। °**वाइ**, °**वाइय**, °**वादिय** पुं [°वादिन्] व्यन्तरों की एक जाति ; (औप ; पण्ह १, ४) °**वाल** पुं [°पाल] १ ऋषिवादि-व्यन्तरों का उत्तर दिशा का इन्द्र ; (ठा २, ३)। २ पांचवें वासुदेव का पूर्वभवीय नाम ; (सम १५३)। °**वालिय** पुं [°पालित] ऋषिवादि-व्यन्तरों के एक इन्द्र का नाम ; (देव)।

इसिण पुं [इसिन] अनार्य देश-विशेष; (णाया १, १)।

इसिणय वि [इसिनक] इसिन-नामक अनार्य देश में उत्पन्न ; (णाया १, १ ; इक)।

इसिया स्त्री [इषिका] सलाई, शलाका ; (सुअ २, २)।

इसु पुं [इषु] बाण ; (पाअ)।

इस्स वि [एष्यत्] १ भविष्य काल ; "जुत्तं संपयमिस्सं" (विसे)। २ होने वाला, भावी ; "संभरइ भूयमिस्सं" (विसे ५०८)।

इस्सर देखो **ईसर** ; (प्राप्र; पि ८७; ठा २, ३)।

इस्सरिय देखो **ईसरिय** ; (पउम ५, २७० ; सम १३; प्रासू ७५)।

इस्सास पुं [इष्वास] १ धनुष, कार्मुक, शरासन ; २ बाण-क्षेपक, तीरंदाज ; (प्रारू)।

इह पुं [इभ] हाथी, हस्ती ; (प्रारू)।

इह अ [इह] यहां, इस जगह ; (आचा; स्वप्न २२)। °**पारलोइय** वि [ऐहपारलौकिक] इस और परलोक से सम्बन्ध रखने वाला ; (स १५६)। °**भविय** वि [ऐहभविक] इस जन्म-संबन्धी ; (भग)। °**लोअ**, °**लोग** पुं [°लोक] वर्तमान जन्म, मनुष्य-लोक ; (ठा ३; प्रासू ७५; १५३) °**लोय**; °**लोइय** वि [ऐहलौकिक] इस जन्म-संबन्धी, वर्त्तमान-जन्म-संबन्धी; (कप्प; सुपा ४०८; पण्ह १,३; स ४८१) ; "इहलोयपारलोइयसुहाइं सव्वाइं तेण दिन्नाइं" (स १५५)।

इहअ, **इहइं** } ऊपर देखो; (षड् ; पउम २१, ७)।

इहइं अ [इदानीम्] हाल, संप्रति, इस समय ; (पाअ)।

इहं, **इहयं** } देखो इह=इह ; (औप ; श्रा १४)।

इहरहा, **इहरा** } देखो इयर-हा; (उप ८६०; भत्त ३६; हे २,२१२)।

इहरा देखो इहइं=इदानीम् ; (गउड)।

इहामिय देखो **ईहामिय**; (पि ५४)।

इहिं अ [इह] यहां ; (रंभा)।

इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवे इआराइसद्दसंकलणो णाम तइओ तरंगो समत्तो।

ई

ई पुं [**ई**] प्राकृत वर्णमाला का चतुर्थ वर्ण, स्वर-विशेष ; (प्रामा)।

ईअ स [**एतत्, इदम्**] यह ; (पि ४२६; ४२६)।

ईअ अ [**इति**] इस तरह ; "ईय मणोविसईणं" (विसे ५१४)।

ईइ पुंस्त्री [**ईति**] धान्य वगैरः को नुकसान पहुंचाने वाला चूहा आदि प्राणि-गण ; (औप)।

ईइस वि [**ईदृश**] ऐसा, इस तरह का, इसके समान; (महा; स १५)।

°**ईड** देखो **कीड**=कीट ; "दुद्दंसणखिंवईडसारिच्छं" (गा ३०)

°**ईण** देखो **दीण** ; (से ८, ६१)।

ईति देखो **ईइ** ; (सम ६०)।

ईदिस देखो **ईइस** ; (स १४० ; अभि १८२ ; कप्पू)।

ईर सक [**ईर्**] १ प्रेरण करना। २ कहना। ३ गमन करना। ४ फेंकना। ईरेइ ; (विसे १०६०)। कृ—"ठाण-गमणगुणजोगजुंजणजुगंतरनिवातियाए दिट्ठीए **ईरियव्वं**" (पण्ह २, १)। भूकृ—**ईरिद** (शौ); (अभि ३०)।

ईरिय वि [**ईरित**] प्रेरित ; (विसे ३१४४)।

ईरिया देखो **इरिआ**; (सम १०; ओघ ७४८; सुर २,१०४)।

ईरिस देखो **ईइस** ; (कुमा; स्वप्न ५५)।

ईस न [**दे**] खूंटा, खीला, कीलक ; (दे १, ८४)।

ईस सक [**ईर्ष्**] ईर्ष्या करना, द्वेष करना। ईसाअंति ; (गा २४०)।

ईस पुं [**ईश**] देखो **ईसर**=ईश्वर ; (कुमा ; पउम १०२, ५८)। २ न. ऐश्वर्य, प्रभुता ; (पण्ण २)।

ईस देखो **ईसि** ; (कप्पू)।

ईसअ पुं [**दे**] रोझ, हरिण की एक जाति ; (दे १, ८४)।

ईसत्थ न [**इष्वस्त्र, इषुशास्त्र**] धनुर्वेद, बाण-विद्या ; (औप ; पण्ह १, ५)। "विन्नाणनाणकुसला ईसत्थक-यस्समा वीरा" (पउम ६८, ४० ; पि ११७)।

ईसर पुं [**दे**] मन्मथ, काम-देव ; (दे १, ८४)।

ईसर पुं [**ईश्वर**] १ परमेश्वर, प्रभु ; (हे १, ८४)। २ महादेव, शिव ; (पउम १०६, १२)। ३ स्वामी, पति ; (कुमा)। ४ नायक, मुखिया ; (विपा १, १)। ५ देवताओं का एक आवास, वेलंधर-देवों का आवास-विशेष; (सम ७३)। ६ एक पाताल-कलश ; (ठा ४, २)। ७ आढ्य, धनी ; (सुपा ४३६)। ८ ऐश्वर्य-शाली, वैभवी; (जीव ३)। ९ युवराज ; १० माण्डलिक, सामन्त राजा; ११ मन्त्री; (अणु)। १२ इन्द्र-विशेष, भूतवादि-निकाय का इन्द्र ; (ठा २, ३)। १३ पाताल-विशेष ; (ठा ४)। १४ एक राजा का नाम ; १५ एक जैन मुनि ; (महानि ;) १६ यक्ष-विशेष ; (पव २७)।

ईसरिय न [**ऐश्वर्य**] वैभव, प्रभुता, ईश्वरपन ; (पउम ८६, ६३)।

ईसा स्त्री [**ईषा**] १ लोकपालों के अग्र-महिषीओं की एक पर्षदा ; (ठा ३, २)। २ पिशाचेन्द्र की एक परिषद्; (जीव ३)। ३ हल का एक काष्ठ ; (दे २, ६६)।

ईसा स्त्री [**ईर्षा**] ईर्ष्या, द्रोह ; (गउड)। °**रोस** पुं [°**रोष**] क्रोध, गुस्सा ; (कप्पू)।

ईसाइय वि [**ईर्ष्यायित**] जिसको ईर्ष्या हुई हो वह; (सुपा ६१)।

ईसाण पुं [**ईशान**] १ देवलोक-विशेष, दूसरा देव-लोक; (सम २)। २ दूसरे देवलोक का इन्द्र ; (ठा ३, १)। ३ उत्तर और पूर्व के बीच की दिशा, ईशान-कोण; (सुपा ६८)। ४ मुहूर्त्त-विशेष ; (सम ५१)। ५ दूसरे देवलोक के निवासी देव ; (ठा १०)। ६ प्रभु, स्वामी ; (विसे)। °**वडिंसग** न [°**ावतंसक**] विमान-विशेष का नाम; (सम २५)।

ईसाणा स्त्री [**ऐशानी**] ईशान-कोण ; (ठा १०)।

ईसाणी स्त्री [**ऐशानी**] १ ईशान-कोण ; २ विद्या-विशेष; (पउम ७, १४१)।

ईसालु वि [**ईर्ष्यालु**] ईर्ष्यालु, असहिष्णु, द्वेषी ; (महा; गा ६३४ ; प्राप्र)। स्त्री °**णी** ; (पउम ३६, ४५)।

ईसास देखो **इस्सास**; "ईसासट्ठाण" (निर ; पि १६२)।

ईसि अ [**ईषत्**] १ थोड़ा, अल्प ; (पण्ण ३६)। २ पृथिवी-विशेष, सिद्धि-क्षेत्र, मुक्त-भूमि ; (सम २२)। °**पब्भार** वि [°**प्राग्भार**] थोडा अवनत; (पंचा १८)। °**पब्भारा** स्त्री [°**प्राग्भारा**] पृथिवी-विशेष, सिद्धि-क्षेत्र; (ठा ८; सम २२)।

ईसिअ न [**ईर्ष्यित**] १ ईर्ष्या, द्वेष ; (गा ५१०)। २ वि. जिस पर ईर्ष्या की गई हो वह ; (दे २, १६)।

ईसिअ न [**दे**] १ भील के सिर पर का पत्र-पुट, भीलों की

एक तरह की पगड़ी ; २ वि. वशीकृत, वश किया हुआ ; (दे १, ८४)।

ईसिं } देखो ईसि ; (महा ; सुर २, ६६ ; कस ; पि
ईसीं } १०२) ।

ईह सक [ईक्ष्, ईह्] १ देखना। २ विचारना। ३ चेष्टा करना। ईहए ; (विसे ५६१)। वकृ—ईहंत ; ईहमाण; (गउड ; सुपा ८८; विसे २५८)। संकृ—"अनिआयो ईहिऊण मइपुव्वं" (पच ८६; विसे २५७)।

ईहण न [ईहन] नीचे देखो ; (आचू १)।

ईहा स्त्री [ईहा] १ विचार, ऊहापोह, विमर्श ; (गाया १, १; सुपा ५७२)। २ चेष्टा, प्रयत्न; (ओघ ३)। ३ मति-ज्ञान का एक भेद; (पगण १५; ठा ५)। ४ इच्छा ; (स ६१२)। °मिग, °मिय पुं [°मृग] १ वृक, भेडिया ; (गाया १, १ ; भग ११, ११)। २ नाटक का एक भेद; (राय)।

ईहा स्त्री [ईक्षा] अवलोकन, विलोकन ; (औप)।

ईहिय वि [ईहित] चेष्टित ; (सुअ १, १, ३)। २ विमर्शित, विचारित, ईहा-विषयीकृत ; (विसे २५७)।

इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवे ईआराइसद्दसंकलणो णाम चउत्थो तरंगो समत्तो।

———:०:———

उ

उ पुं [उ] प्राकृत वर्णमाला का पञ्चम अक्षर, स्वर-विशेष; (प्रामा)। २ उपयोग रखना, ख्याल करना ; " उत्ति उवओगकरणे "। (विसे ३१६८)। ३ गति-क्रिया ; (आवम)।

उ अ [उ] निम्नोक्त अर्थों का सूचक अव्यय ; — १ संबोधन, आमन्त्रण ; २ कोप-वचन, क्रोधोक्ति ; ३ अनुकम्पा, दया; ४ नियाग, हुकुम ; ५ विस्मय, आश्चर्य ; ६ अंगीकार, स्वीकार ; ७ प्रश्न, पृच्छा ; (हे २, २१७)।

उ अ [तु] इन अर्थों का द्योतक अव्यय ; — १ समुच्चय, और ; (कप्प)। २ अवधारण, निश्चय ; (आवम)। ३ किन्तु, परन्तु ; (ठा ३, १)। ४ नियोग, आज्ञा ; ५ प्रशंसा ; ६ विनिग्रह ; ७ शंका की निवृत्ति ; (उव)। ८ पादपूर्त्ति के लिए भी इसका प्रयोग होता है ; (उव)।

उ देखो उव ; " उओ उपे " (षड् २, १, ६८)।

उ° अ [उत्] निम्न अर्थों का सूचक अव्यय; — १ ऊंचा, ऊर्ध्व ; जैसे— 'उक्कमंत' (आवम)। २ विपरीत, उलटा ; जैसे— 'उक्कम' (विसे)। ३ अभाव, रहितता ; जैसे — 'उक्कर' (णाया १, १)। ४ ज्यादः , विशेष ; जैसे— 'उक्कोविय' (उप पृ ७८ ; विसे ३५७६)।

उअ अ [दे] विलोकन करो, देखो ; (दे १, ८६ टी ; हे २, २११)।

उअ अ [उत] इन अर्थों का सूचक अव्यय; — १ विकल्प, अथवा ; २ वितर्क, विमर्श ; (कुमा)। ३ प्रश्न, पृच्छा ; ४ समुच्चय ; ५ बहुत, अतिशय ; (हे १, १७२)।

उअ अ [दे] ऋजु, सरल ; (षड्)।

उअ देखो उव ; (गा ५० ; से ६, ६)।

उअ न [उद] पानी, जल। °सिंधु पुं [°सिन्धु] समुद्र, सागर ; (पि ३४०)।

उअ वि [उदञ्च्] उत्तर, उत्तर दिशा में स्थित। °महिहर पुं [°महिधर] हिमाचल पर्वत ; (गउड)।

उअअ न [उदक] पानी, जल ; (गा ५३ ; से ६, ८८)।

उअअ देखो उदय ; (से १०, ३१)।

उअअ न [उदर] पेट, उदर ; (से ६, ८८)।

उअअ त्रि [दे] ऋजु, सरल, सीधा ; (दे १, ८८)।

उअअद (शौ) देखो उवगय ; (नाट)।

उअआरअ वि [उपकारक] उपकार करने वाला ; (गा ५०)।

उअआरि वि [उपकारिन्] ऊपर देखो ; (विक २५)।

उअइव्व वि [उपजीव्य] आश्रय करने योग्य, सेवा करने योग्य ; (से ६, ६)।

उअऊह सक [उप+गूह्] आलिंगन करना। संकृ—उअऊहेऊण ; (पि ५८६)।

उअएस देखो उवएस ; (गा १०१)।

उअंचण न [उदञ्चन] १ऊंचा फेंकना ; २ ढकने का पात्र, आच्छादक पात्र ; (दे ४, ११)

उअंचिद (शौ) वि [उदञ्चित] १ ऊंचा ऊठाया हुआ; ऊंचा फेंका हुआ ; (नाट)।

उअंत पुं [उदन्त] हकीकत , वृत्तान्त, समाचार ; (पाअ; प्रामा)।

उअकिद (शौ) वि [उपकृत] जिस पर उपकार किया गया हो वह ; (पि ६४)।

उअक्किअ वि [दे] पुरस्कृत, आगे किया हुआ ; (दे १, १०७)।

उअगअ देखो उवगय ; (गा ६४४)।

उअचित्त वि [दे] अपगत, निवृत्त ; (दे १, १०८)।

उअजीवि वि [उपजीविन्] आश्रित ; (अभि १८६)।

उअज्झाअ देखो उवज्झाय ; (नाट)।

उअट्टी स्त्री [दे] नीवी, स्त्री के कटि-वस्त्र की नाड़ी; " उअट्टी उचओ नीवी " (पाअ)।

उअट्ठिअ देखो उवट्ठिय ; (प्राप)।

उअण्णास देखो उवण्णास ; (नाट)।

उअत्तंत देखो उव्वट्ट=उद्+वृत्।

उअत्थाण देखो उवट्ठाण ; (नाट)।

उअत्थिअ देखो उवट्ठिय ; (से ११, ७८)।

उअदिट्ठ देखो उवइट्ठ ; (नाट)।

उअभुत्त देखो उवभुत्त ; (रंभा)।

उअभोग देखो उवभोग ; (नाट)।

उअमिज्जंत वकृ [उपमीयमान] जिसकी तुलना की जाती हो वह ; (काप्र ८९६)।

उअर न [उदर] पेट ; (कुमा)।

उअरि } देखो उवरिं ; (गा ६४; से ८, ७५) ।
उअरिं }

उअरी स्त्री [दे] शाकिनी, देवी-विशेष ; (दे १, ६८) ।

उअरुज्झ देखो उवरुज्झ । उअरुज्झदि (शौ) ; (नाट) ।

उअरोअ } देखो उवरोह ; (प्राप ; नाट) ।
उअरोह }

उअलद्ध देखो उवलद्ध ; (नाट) ।

उअविय वि [दे] उच्छिष्ट " इहरा मे खिसिमतं उअवियं चेव गुल्मादी " (वृह १) ।

उअह अ [दे] देखो, देखिए ; (दे १, ६८ ; प्राप्र) ।

उअहार देखो उवहार ; (नाट) ।

उअहारी स्त्री [दे] दोग्ध्री , दोहने वाली स्त्री ; (दे १, १०८) ।

उअहि पुं [उदधि] १ समुद्र, सागर ; (गउड) । २ स्वनाम-ख्यात एक विद्याधर राज-कुमार; (पउम ५, १६६) । ३ काल परिमाण, सागरोपम ; (सुर २, १३६) । ४ स्वनाम ख्यात एक जैन मुनि ; (पउम २०, ११७) । देखो उदहि ।

उअहि देखो उवहि=उपधि ; (पच ६) ।

उअहुज्जंत देखो उवभुंज ।

उअहोअ देखो उवभोग ; (प्रवो ३० ; नाट) ।

उआअ देखो उवाय ; (नाट) ।

उआअण देखो उवायण ; (माल ४६) ।

उआर देखो उराल ; (सुपा ६०७ ; कप्पू) ।

उआर देखो उवयार ; (षड् ; गउड) ।

उआलंभ देखो उवालंभ=उपा+लभ् । कृ—उआलंभणिज्ज; (नाट) ।

उआलंभ देखो उवालंभ=उपालम्भ ; (गा २०१) ।

उआलि स्त्री [दे] अवतंस, शिरो-भूषण ; (दे १, ६०) ।

उआस पुं [उदास] नीचे देखो ; (पिंग) ।

उआसीण वि [उदासीन] १ उदासी, दिलगीर ; २ मध्यस्थ, तटस्थ ; (स ५४६ ; नाट) ।

उइ सक [उप+इ] समीप जाना । उएइ, उएज; (पि ४६३) ।

उइ अक [उद्+इ] उदित होना । उएइ ; (रंभा) । वकृ— उइयंत ; (रंभा) ।

उइ देखो उउ । "अन्न वि हुंतु उइओ सरिसा परं ते " (रंभा)। °राय पुं [°राज] वसन्त ऋतु ; (रंभा) ।

उइअ वि [उदित] १ उदय-प्राप्त, उद्गत ; (सुपा १२७) । २ उक्त, कथित ; (विसे २३३; ८४६) । °परक्कम पुं [°पराक्रम] इक्ष्वाकु-वंश के एक राजा का नाम ; (पउम ५, ६) ।

उइअ वि [उचित] योग्य, लायक ; (से ८, १०३) ।

उइंतण न [दे] उत्तरीय वस्त्र, चादर; (दे १, १०३ ; कुमा) ।

उइंद पुं [उपेन्द्र] इन्द्र का छोटा भाई, विष्णु का वामन अवतार; जो अदिति के गर्भ से हुआ था ; (हे १, ६) ।

उइट्ठ वि [अपकृष्ट] हीन, संकुचित, " आउसियअक्खचम्म-उइट्ठगंडदेसं " (णाया १, ८) ।

उइण्ण देखो उदिण्ण ; (ठा ५; विसे ५०३) ।

उइण्ण वि [उदीच्य] उत्तर-दिशा-संबन्धी, उत्तर दिशा में उत्पन्न ; (आवम) ।

उइयंत देखो उइ=उद्+इ ।

उईण देखो उदीण ; (राय)

उईर देखो उदीर । " उईरेइ अइपीडं " (श्रा २७) । वकृ—उईरंत ; (पुप्फ १३) । संकृ— उईरइत्ता ; (सुअ १, ६) ।

उईरण देखो उदीरण; (ठा ४; पुप्फ १६५) ।

उईरणया } देखो उदारणा ; (विसे २५१५ टी ; कम्मप १५८; विसे २६६२) ।
उईरणा }

उईरिय देखो उदीरिय ; (पुप्फ २१६) ।

उउ त्रि [ऋतु] १ ऋतु, दो मास का काल-विशेष, वसन्त आदि छः प्रकार का काल ; (औप; अंत ७) । ' उऊए,' ' उऊइं ' (कप्प) । २ स्त्री-कुसुम, रजो-दर्शन, स्त्री-धर्म; (ठा ५, २) । °बद्ध पुं [°बद्ध] शीत और उष्ण-काल, वर्षा-काल के अतिरिक्त आठ मास का समय ; (ओघ २६; २६५; ३४८) ।° मास पुं [°मास] १ श्रावण मास ; (वव १, १) । २ तीस दिन वाला मास ; (सम) । °य वि [°ज] ऋतु में उत्पन्न, समय पर उत्पन्न होने वाला ; (पण्ह २, ५ ; णाया १, १) ;

" उयअगुरुवरपवरधूवणउउयमल्लाणुलेवणविहीसु ।
गंधेसु रज्जमाणा रमंति घाणिदियवसट्टा "
(णाया १,१७) ।

°संधि पुंस्त्री [°संधि] ऋतु का सन्धि-काल, ऋतु का अन्त समय ; (आचा) । °संवच्छर पुं [°संवत्सर] वर्ष-विशेष ; (ठा ५) । देखो उइ=उउ ।

उउंवर देखो उंवर=उदुम्बर ; (कुमा; हे १, २७० ; षड्)।

उऊखल } पुंन [उदूखल] उलुखल, गूगल ; (कुमा;
उऊहल } षड् ; हे १, १, १)।

उओग्गिअ वि [दे] संवद्ध , संयुक्त ; (षड्)।

उंघ अक [नि+द्रा] नींद लेना। उंघइ ; (हे ४, १२)।

उंचहिआ स्त्री [दे] चक्र-धारा ; (दे १, १०६)।

उंछ पुं [उञ्छ] भिक्षा, माधुकरी ; (ऊप ६७७; ओघ ४२४)।

उंछअ पुं [दे] वस्त्र छीपने का काम करने वाला शिल्पी , छीपी ; जो कपड़ा छापता है , छींट वनाता है वह ; (दे १, ६८ ; पाअ)।

उंज सक [सिच्] सींचना, छीटकना । उंजिज्जा; (राज)। भवि—उंजिस्सइ ; (सुपा १३६)।

उंज सक [युज्] प्रयोग करना, जोड़ना। "अहमवि उंजेमि तह किंपि" (धम्म ८ टी)।

उंजायण न [उञ्जायन] गोत्र-विशेष, जो वशिष्ठ गोत्र की एक शाखा है ; (ठा ७)।

उंजिअ वि [सिक्त] सिक्त, छीटका हुआ ; (सुपा १३६)।

उंड } वि [दे] १ गभीर, गहरा ; (दे १, ८५ ; सुपा
उंडग } १५ ; उप १४७ टी ; ठा १० ; श्रा १६)। २
उंडय } पुं. पिण्ड, "वालाई मंसउडग मज्जाराई विराहेज्जा" (ओघ २४६ भा)। ३ चलते समय पाँव मे पिण्ड रूप से लग जाय उतना गहरा कीच, कर्दम ; (ओघ ३३ भा)। ४ शरीर का एक भाग, मांस-पिण्ड "हिययउंडए" (विपा १, ५)।

उंडल न [दे] १ मञ्च, मचान, उच्चासन ; २ निकर, समूह; (दे १, १२६)।

उंडिया स्त्री [दे] मुद्रा-विशेष ; (राज)।

उंडी स्त्री [दे] पिण्ड, गोलाकार वस्तु "तत्थ णं एगा वरमऊरी दो पुट्ठे परियागते पिट्ठुंडीपंडुरे निव्वणे निरुवहए भिन्नमुट्ठिप्पमाणे मऊरीअंडए पसवति" (णाया १, ३)।

उंदर } पुंस्त्री [उन्दुर] मूषक, चूहा ; (गउड; पण्ह १, १ ;
उंदुर } उवा; दे १, १०२)।

उंदुरअ पुं [दे] लम्वा दिवस ; (दे २, १०५)।

उंव पुं [उम्ब] वृक्ष-विशेष, "निंवंवउंवउंवर" (उप १०३१ टी)।

उंवर पुं [उदुम्वर] १ वृक्ष-विशेष, गूलर का पेड़ ; (पण्ण १)। २ न. गूलर का फल; (प्राप्र)। ३ देहली, द्वार के नीचे की लकड़ी ; (दे १, ६०)। °दत्त पुं [°दत्त] १ यक्ष-विशेष ; (विपा १, ७)। २ एक सार्थवाह का पुत्र ; (विपा १, ७)। °पंचग, °पणग न [°पञ्चक] वड, पीपल, गूलर, प्लक्ष और काकोदुम्बरी इन पांच वृक्षों के फल ; (सुपा ४६; भग ६, ३३)। °पुप्फ न [°पुष्प] गूलर का फूल; (भग ६, ३३)।

उंवर वि [दे] वहुत, प्रचुर ; (दे १, ६०)।

उंवरउप्फ न [दे] नवीन अभ्युदय, अपूर्व उन्नति ; (दे १, ११६)।

उंवा स्त्री [दे] वन्धन ; (दे १, ८६)।

उंवी स्त्री [दे] पका हुआ गेहूँ ; (दे १, ८६; सुपा ४७३)।

उंवेभरिया स्त्री [दे] वृक्ष-विशेष ; (पण्ण १)।

उंभ सक [दे] पूर्ति करना, पूरा करना ; (राज)।

उकिट्ठ देखो उक्किट्ठ ; (पिंग)।

उकुरुडिया [दे] देखो उक्कुरुडिया ; (निर १, १)।

उक्क वि [उत्क] १ उत्सुक, उत्कण्ठित ; (सुर ३, ५३)। एक विद्याधर राजा का नाम ; (पउम १०, २०)।

उक्क वि [उक्त) कथित ; (पिंग)।

उक्क न [दे] पाद पतन, पाँव पर गिर कर नमस्कार करना; (दे १, ८५)।

उक्कअ वि [दे] प्रसृत, फैला हुआ ; (षड्)।

उक्कंचण } न [दे] १ झूठी प्रशंसा करना, खुशामद ;
उक्कंचणया } (णाया १, २)। २ ऊंचा करना, ऊठाना ; (सूअ २, २)। ३ झाड़ू निकालना ; (निवू ५)। ४ घूस, रिशवत; (दसा २)। ५ मूर्ख पुरुष को ठगने वाले धूर्त का, समीपस्थ विचक्षण पुरुष के भय से, थोडी देर के लिए निश्चेष्ट रहना ; (औप)। °दीव पुं [°दीप] ऊंचा दंड वाला प्रदीप ; (अंत)।

उक्कंछण न [दे] देखो उक्कंवण ; (राज)।

उक्कंठ अक [उत्+कण्ठ्] उत्कण्ठा करना, उत्सुक होना। उक्कंठेहिं; (मै ७३)। वकृ—उक्कंठंत ; (मै ६३)। हेकृ—उक्कंठिदुं (शौ) ; (अभि १४७)।

उक्कंठा स्त्री [उत्कण्ठा] उत्सुकता, औत्सुक्य; (हे १, ३५ ; ३०)।

उक्कंठिय } वि [उत्कण्ठित] उत्सुक ; (गा ५४२ ; सुर ३, ८६; पउम ११, ११८ ; वज्जा ६०) ।
उक्कंठिर }
उक्कंठुलय }

उक्कंडय सक [उत्कण्टय्] पुलकित करना "दियसेवि भूसंभावणाए उक्कंटयंति अंगाइं" (गउड) ।

उक्कंडय वि [उत्कण्टक] पुलकित, रोमाञ्चित ; (गउड) ।

उक्कंडा स्त्री [दे] घूस, रिशवत ; (दे १, ९२) ।

उक्कंडिअ वि [दे] १ आरोपित ; २ खण्डित ; (षड्) ।

उक्कंत वि [उत्क्रान्त] ऊंचा गया हुआ ; (भवि) ।

उक्कंति } स्त्री [दे] देखो उक्कंडा ; (दे १, ८७) ।
उक्कंती }

उक्कंद वि [दे] विप्रलब्ध, ठगा हुआ, वञ्चित ; (षड्) ।

उक्कंदल वि [उत्कन्दल] अङ्कुरित ; (गउड) ।

उक्कंदि } स्त्री [दे] कूपतुला; (दे १, ८७) ।
उक्कंदी }

उक्कंप अक [उत्+कम्प्] काँपना, हिलना ।

उक्कंप पुं [उत्कम्प] कम्प, चलन ; (सण ; गा ७३५) ।

उक्कंपिय वि [उत्कम्पित] १ चञ्चल किया हुआ; (राज) । २ न. कम्प, हिलन ;
"णीसासुक्कंपिअपुलइएहिं जाणंति णच्चिउं धण्णा ।
अम्हारिसीहिं दिट्ठे, पिअम्मि अप्पावि वीसरिओ"
(गा ३६१) ।

उक्कंपिय वि [दे] धवलित, सफेद किया हुआ ; (कप्प) ।

उक्कंवण न [दे] काठ पर काठ के हाते से घर की छत बांधना, घर का संस्कार-विशेष ; (वृह १) ।

उक्कंबिय वि [दे] काठ से बांधा हुआ ; (राज) ।

उक्कच्छ वि [उत्कच्छ] स्फुट, स्पष्ट ; (पिंग) ।

उक्कच्छा स्त्री [उत्कच्छा] छन्द-विशेष ; (पिंग) ।

उक्कच्छिआ स्त्री [औपकक्षिकी] जैन साध्वीओं को पहनने का वस्त्र-विशेष ; (ओघ ६७७) ।

उक्कज्ज वि [दे] अनवस्थित, चञ्चल ; (षड्) ।

उक्कट्ठि स्त्री [उत्कृष्टि] उत्कर्ष, "महता उक्कट्ठिसीहणादकलकलरवेणं" (सुज्ज १९—पत्र २७८) । देखो उक्किट्ठि ।

उक्कड वि [उत्कट] १ तीव्र, प्रचण्ड, प्रखर ; (णंदि; महा) । २ विशाल, विस्तीर्ण ; (कप्प; सुर १, १०६) । ३ प्रवल ; (उवा ; सुर ६, १७२) ।

°उक्कड देखो दुक्कड ; (उप ६४६) ।

उक्कडिय वि [दे] तोड़ा हुआ, छिन्न ; (पाअ) ।

उक्कडिय देखो उक्कुड्डय ; (कस) ।

उक्कड्ढग पुं [अपकर्षक] चोर की एक जाति—१ जो घर से धन आदि ले जाते हैं; २ जो चोरों को बुलाकर चोरी कराते हैं, ३ चोर की पीठ ठोकने वाले, चोर के सहायक; (पगह १,३ टी) ।

उक्कड्ढिय वि [उत्कर्षित] १ उत्पाटित, ऊठाया हुआ ; २ एक स्थान से उठा कर अन्यत्र स्थापित ; (पिंड ३६१) ।

उक्कण्ण वि [उत्कर्ण] सुनने के लिए उत्सुक ; (से ६, १६) ।

उक्कत्त सक [उत्+कृत्] काटना, कतरना । वकृ—उक्कत्तंत ; (सुपा २१६) ।

उक्कत्त वि [उत्कृत्त] कटा हुआ, छिन्न; (विपा १, २) ।

उक्कत्तण न [उत्कर्त्तन] काट डालना, छेदन ; (पुप्फ ३८४) ।

उक्कत्तिय देखो उक्कत्त=उत्कृत ; (पउम ५६, २४) ।

उक्कत्थण न [उत्कत्थन] उखाडना ; (पगह १, १) ।

उक्कप्प पुं [उत्कल्प] शास्त्र-निषिद्ध आचरण ; (पंचभा)

उक्कम सक [उत्+क्रम्] १ ऊँचा जाना । २ उलटे क्रम से रखना । वकृ—उक्कमंत ; (आवम) । संकृ—उक्कमिऊणं ; (विसे ३५३१) ।

उक्कम पुं [उत्क्रम] उलटा क्रम, विपरीत क्रम ; (विसे २७१) ।

उक्कमित वि [उपक्रान्त] १ प्रारब्ध ; २ क्षीण;
"अब्भागमितम्मि वा दुहे, अहवा उक्कमिते भवंतीए ।
एगस्स गती य आगती, विदुमं ता सरणं ण मन्नइ"
(सूअ १, २, ३, १७) ।

उक्कर सक [उत्+कृ] खोदना । कवकृ—उक्करिज्जमाण ; (आवम) ।

उक्कर पुं [उत्कर] १ समूह, संघात; "सक्करुक्कररसड्ढे" (सुपा ५१८) ; २ कर-रहित, राज-देय शुल्क से रहित ; (णाया १, १) ।

उक्करड पुं [दे] १ अशुचि-राशि ; २ जहां मैला इकट्ठा किया जाता है वह स्थान ; (श्रा २७; सुपा ३५५) ।

उक्करिअ वि [दे] १ विस्तीर्ण, आयत ; २ आरोपित ; ३ खण्डित ; (षड्) ।

उक्करिअ वि [उत्कीर्ण] खोदित, खोदा हुआ ; "टंकुक्करियव्व निचलनिहित्तलोयणा" (महा) ।

उक्करिद (शौ) वि [उत्कृत] ऊंचा किया हुआ ; (स्वप्न ३६)।

उक्करिया स्त्री [उत्करिका] जैसे एरण्ड के बीज से उसका छिलका अलग होता है उस तरह अलग होना, भेद विशेष ; (भग ५, ४)।

उक्करिस सक [उत् + कृष्] १ खींचना। २ गर्व करना, बड़ाई करना। वकृ—उक्करिसंत ; (से १४, ६)।

उक्करिस देखो उक्कस्स=उत्कर्ष ; (उव; विसे १७६६)।

उक्करिसण न [उत्कर्षण] १ उत्कर्ष, बड़ाई, महत्व। २ स्थापन, आधान ;

"उम्मिल्लइ लायएणं पययच्छायाए सक्कय-वयाणं।

सक्कयसक्कारुक्करिसणेण पययस्सवि पहावो ॥" (गउड)।

उक्करिसिय वि [उत्कृष्ट] खींच निकाला हुआ, उन्मूलित ; (से १४, ३)।

उक्कल देखो उक्कड ; (ठा ५, ३)।

उक्कल वि [उत्कल] १ धर्म-रहित ; २ न. चोरी ; (पण्ह १, ३ टी)। ३ पुं. देश-विशेष, जिसको आजकल 'उडिया' या 'ओरिसा' कहते हैं ; (प्रवो ७८)।

उक्कलंब सक [उत् + लम्बय्] फांसी लटकाना। उक्कलंबेमि ; (स ६३)।

उक्कलंबण न [उल्लम्बन] फांसी लटकना ; (स ३५८)।

उक्कलिया स्त्री [उत्कलिका] १ लूता, मकड़ी, एक प्रकार का कीड़ा जो जाल बनाता है "उक्कलियंडे" (कप्प)। २ नीचे की तरफ बहने वाला वायु ; (जी ७)। ३ छोटा समुदाय, समूह-विशेष ; (ठा ३, १)। ४ लहरी, तरंग ; (राज)। ५ ठहर ठहर कर तरंग की तरह चलने वाला वायु ; (आचा)।

उक्कस सक [गम्] जाना, गमन करना। उक्कसइ ; (हे ४, १६२ ; कुमा)। प्रयो—उक्कसावेइ ; वकृ—उक्कसावंत ; (निचू १०)।

उक्कस देखो ओकस। वकृ—उक्कसमाण ; (कस)। हेकृ—उक्कसित्तए ; (आचा २, ३ १, १५)।

उक्कस देखो उक्कुस ; (कुमा)।

उक्कस देखो उक्कस्स=उत्कर्ष ; (सूअ १, १, ४, १२) "तवस्सी अइउक्कसो" (दस ५, २, ४२)।

उक्कसण न [उत्कर्षण] १ अभिमान करना; (सूअ १, १३) २ ऊँचा जाना। ३ निवर्तन, निवृत्ति ; ४ प्रेरणा; (राज)।

उक्कसाइ वि [उत्कशायिन्] सत्कारादि के लिए उत्कंठित ; (उत्त ३)।

उक्कसाइ वि [उत्कषायिन्] प्रबल कषाय वाला ; (उत्त १५)।

उक्कस्स अक [अप + कृष्] १ ह्रास प्राप्त होना, हीन होना। २ पिछलना; गिरना, पैर रपटने से गिर जाना। वकृ—उक्कस्समाण ; (ठा ५)।

उक्कस्स पुं [उत्कर्ष] १ गर्व, अभिमान ; (सूअ १, १, ४, २)। २ अतिशय, उत्कृष्टता ; (भवि)।

उक्कस्स वि [उत्कर्षवत्] १ उत्कृष्ट, ज्यादः से ज्यादः "उक्कस्सठिईयाणं" (ठा १, १); "उक्कस्सा उदीरणाया" (कम्मप १६६)। २ अभिमानी, गर्विष्ठ; (सूअ १, १)।

उक्का स्त्री [उल्का] १ लूका, आकाश से जो एक प्रकार का अंगार सा गिरता है ; (ओघ ३१० भा ; जी ६)। छिन्न मूल दिग्दाह ; (आचू)। ३ अग्नि-पिण्ड ; (ठा ८)। ४ आकाश-वह्नि ; (दस ४)। °मुह पुं [°मुख] १ अन्तर्द्वीप-विशेष ; २ उसके निवासी लोक ; (ठा ४, २)। °वाय पुं [°पात] तारा का गिरना, लूका गिरना। (भग ३, ६)।

उक्का स्त्री [दे] कूप-तुला (दे १, ८७)।

उक्काम सक [उत् + क्रमय्] दूर करना, पीछे हटाना। "उक्कामयंति जीवं धम्माओ तेण ते कामा" (दसनि २—पत्र ८७)।

उक्कारिया देखो उक्करिया ; (पएण ११ ; भास ७)।

उक्कालिय वि [उत्कालिक] वह शास्त्र, जिसका अमुक समय में ही पढ़ने का विधान न हो ; (ठा २, १)।

उक्कास देखो उक्कस्स=उत्कर्ष ; (भग १२, ५)।

उक्कास वि [दे] उत्कृष्ट ; ज्यादः से ज्यादः ; (षड्)।

उक्कासिअ वि [दे] उत्थित, उठा हुआ ; (दे १, ११४)।

उक्किट्ठ वि [उत्कृष्ट] १ उत्कृष्ट, उत्तम ; (हे १, १२८; दं २६)। २ फल का शस्त्र-द्वारा किया हुआ टुकड़ा ; (दस ५, १, ३४)।

उक्किट्ठि स्त्री [उत्कृष्टि] हर्ष-ध्वनि, आनन्द का आवाज ; (औप ; भग २, १)। देखो उक्कट्ठि।

उक्किण्ण वि [उत्कीर्ण] १ खोदित, खोदा हुआ ; (अभि १८२)। २ नष्ट ; (आचू २)।
उक्कित्त वि [उत्कृत्त] कटा हुआ ; (से ५, ५१)।
उक्कित्तण न [उत्कीर्त्तन] १ कथन ; (पउम ११८, ३)। २ प्रशंसा, श्लाघा ; (चउ १)।
उक्कित्तिय वि [उत्कीर्त्तित] कथित, कहा हुआ ; (चंद २)।
उक्किर सक [उत्+कॄ] खोदना, पत्थर आदि पर अक्षर वगैरः का शस्त्र से लिखना। उक्किरइ ; (पि ४७७)।
उक्किरिय देखो उक्करिअ=उत्कीर्ण ; (श्रा १४ ; सुपा ११८)।
उक्कीर देखो उक्किर। उक्कीरसि ; (अणु)। वकृ— उक्कीरमाण ; (अणु)।
उक्कीरिअ देखो उक्करिअ=उत्कीर्ण ; (उप पृ ३१५)।
उक्कीलिय न [उत्क्रीडित] उत्तम क्रीड़ा ; (पउम ११५, ६)।
उक्कीलिय वि [उत्कीलित] कीलक से नियन्त्रित ; "उक्कीलिउव्व परिथंभिउव्व सुन्नुव्व मुक्कजीउव्व" (सुपा ४७५)।
उक्कुंड वि [दे] मत्त, उन्मत्त ; (दे १, ६१)।
उक्कुक्कुर अक [उत्+स्था] उठना, खड़ा होना। उक्कुक्कुरइ ; (हे ४, १७ ; षड्)।
उक्कुज्ज अक [उत्+कुब्ज्] ऊँचा होकर नीचा होना। संकृ—उक्कुज्जिय ; (आचा)।
उक्कुजिय न [उत्कूजित] अव्यक्त शब्द ; (निचू)।
उक्कुट्ठ न [उत्कुष्ट] वनस्पति का कूटा हुआ चूर्ण ; (आचा ; निचू १ ; ४)।
उक्कुट्ठ न [उत्कृष्ट] ऊँचे स्वर से रोदन ; (दे १, ४७)।
उक्कुडुग } वि [उत्कुटुक] आसन-विशेष, निषद्या-विशेष ;
उक्कुडुय } (भग ७, ६ ; ओघ १५६ भा ; णाया १, १)। स्त्री—उक्कुडुई ; (ठा ५, १)। °ासणिय वि [°ासनिक] उत्कुटुक-आसन से स्थित ; (ठा ५, १)।
उक्कुद्द अक [उत् + कूर्द्] कूदना, उछलना। उक्कुद्दइ ; (उत्त २७, ५)।
उक्कुरुड पुं [दे] राशि, ढग ; (दे १, ११०)।
उक्कुरुडिगा } स्त्री [दे] घूरा, कूडा डालने की जगह ;
उक्कुरुडिया } (उप ५६३ टी ; विपा १, १, णाया १, २;
उक्कुरुडी } दे १, ११०)।
उक्कुस सक [गम्] जाना, गमन करना। उक्कुसइ ; (हे ४, १६२)।
उक्कुस वि [उत्कृष्ट] उत्तम, श्रेष्ठ ; (कुमा)।
उक्कूइय वि [उत्कूजित] अव्यक्त महा-ध्वनि ; (पण्ह १, १)।
उक्कूल वि [उत्कूल] १ सन्मार्ग से भ्रष्ट करने वाला ; २ किनारे से बाहर का ; ३ चोरी ; (पण्ह १, ३)।
उक्कूव अक [उत्+कूज्] अव्यक्त आवाज करना, चिल्लाना। वकृ—उक्कूवमाण ; (विपा १, ८ ; निर ३, १)।
उक्केर पुं [उत्कर] १ समूह, राशि ; ढग ; (कुमा ; महा)। २ करण-विशेष, कर्मों की स्थित्यादि को बढ़ाना ; (विसे २५१४)। ३ भिन्न, एरण्ड के बीज की तरह जो अलग किया गया हो वह ; (राज)।
उक्केर पुं [दे] उपहार, भेंट ; (दे १, ९६)।
उक्केल्लाविय वि [दे] उकेलाया हुआ, खुलवाया हुआ ; "राइणा उक्केलियाइं चोल्लयाइं, निरूवियाइं समन्तओ, जाव दिट्ठं कत्थइ सुवण्णं, कत्थइ रुप्पयं, कत्थइ मणिमोत्तियपवालाइं" (महा)।
उक्कोट्टिय वि [दे] अवरोध-रहित किया हुआ, घेरा उठाया हुआ ; (स ६३६)।
उक्कोड न [दे] राज-कुल में दातव्य द्रव्य, राजा आदि को दिया जाता उपहार ; (वव १, १)।
उक्कोडा स्त्री [दे] घूस, रिशवत ; (दे १, ९२ ; पण्ह १, ३ ; विपा १, १)।
उक्कोडिय वि [दे] घूस लेकर कार्य करने वाला, घुसखोर ; (णाया १, १ ; औप)।
उक्कोडी स्त्री [दे] प्रतिशब्द, प्रतिध्वनि ; (दे १, ६४)।
उक्कोय वि [उत्कोप] प्रखर, उत्कट ; (सण)।
उक्कोयण देखो उक्कोवण ; (भवि)।
उक्कोया स्त्री [उत्कोचा] १ घूस, रिशवत ; २ मूर्ख को ठगने में प्रवृत्त धूर्त पुरुष का, समीपस्थ विचक्षण पुरुष के भय से, थोड़ी देर के लिए अपने कार्य को स्थगित करना ; (राज)।
उक्कोल पुं [दे] घाम, धूप, गरमी ; (दे १, ८७)।
उक्कोवण न [उत्कोपन] उद्दीपन, उत्तेजन ; "मयणुक्कोवण" (भवि)।

उक्कोविअ वि [उत्कोपित] अत्यंत क्रुद्ध किया हुआ; (उप पृ ७८)।

उक्कोस सक [उत्+क्रुश्] १ रोना, चिल्लाना। २ तिरस्कार करना। वकृ—**उक्कोसंत**; (राज)।

उक्कोस पुं [उत्कर्ष] १ प्रकर्ष, अतिशय; "उक्कोस-जहन्नेणं अंतमुहुत्तं चिय जियंति" (जी ३८; औप)। २ गर्व, अभिमान; (सूअ १, २, २, २६; सम ७१; ठा ४, ४—पत्र २७४)।

उक्कोस वि [उत्कृष्ट] उत्कृष्ट, अधिक से अधिक; "सुरनेरइयाण ठिई उक्कोसा सागराणि तित्तीसं" (जी ३६); कोसतिगं च मणुस्सा उक्कोससरीरमाणेणं" (जी ३२); तओ वियडदत्तीओ पडिगाहित्तए, तं जहा—उक्कोसा, मज्झिमा, जहण्णा" (ठा ३; उव)।

उक्कोस पुं [उत्क्रोश] १ कुरर, पक्षि-विशेष; (पराह १, १)। २ जोर से चिल्लाने वाला; (राज)।

उक्कोसण न [उत्क्रोशन] १ क्रन्दन। २ निर्भर्त्सन, तिरस्कार;

"उक्कोसणतज्जणताडणाओ अवमाणहीलणाओ य।
मुणिणो मुणियपरभवा दढप्पहारिव्व विसहंति" (उव)।

उक्कोसिअ वि [उत्क्रोशित] भर्त्सित, तिरस्कृत, धूतकारा हुआ; (उप पृ ७८)।

उक्कोसिअ देखो **उक्कोस**=उत्कृष्ट; (कप्प; भत्त ३७)।

उक्कोसिअ पुं [उत्कौशिक] १ गोत्र-विशेष का प्रवर्तक एक ऋषि; २ न. गोत्र-विशेष; "थेरस्स णं अज्जवइरसेणस्स उक्कोसियगोत्तस्स" (कप्प)।

उक्कोसिअ वि [दे] पुरस्कृत, आगे किया हुआ; (षड्)।

उक्कोसिया स्त्री [उत्कृष्टि] उत्कर्ष, आधिक्य; (भग)।

उक्कोस्स देखो **उक्कोस**=उत्कृष्ट; (विसे ५८७)।

उक्ख सक [उक्ष्] सिंचना; (सूअ २, २, ५५)।

उक्ख पुं [उक्ष] १ संबन्ध; (राज)। २ जैन साध्वीओं के पहनने के वस्त्र-विशेष का एक अंश; (बृह १)।

उक्ख देखो **उच्छ**=उक्षन्; (पाअ)।

उक्खइअ वि [उत्खचित] व्याप्त, भरा हुआ; (से १, ३३)।

उक्खंड सक [उत्+खण्डय्] तोड़ना, टुकड़ा करना। वकृ—**उक्खंडंत**; (नाट)।

उक्खंड पुं [दे] १ संघात, समूह; २ स्थपुट, विषमोन्नत प्रदेश; (दे १, १२६)।

उक्खंडण न [उत्खण्डन] उत्कर्तन, विच्छेदन; (कि २८)।

उक्खंडिअ वि [उत्खण्डित] खण्डित, छिन्न; (से ४३)।

उक्खंडिअ वि [दे] आक्रान्त, दबाया हुआ; (दे ११२)।

उक्खंद पुं [अवस्कन्द] १ घेरा डालना; २ छल से सैन्य को मारना; (पराह १, २)।

उक्खंभ पुं [उत्तम्भ] अवलम्ब, सहारा; (संथा)।

उक्खंभिय देखो **उत्थंभिय**; (भवि)।

उक्खंभिय न [औत्तम्भिक] अवलम्ब, सहारा; (राज)।

उक्खडमडु अ [दे] पुनः पुनः, वारंवार; "उक्खडमडु त्ति वा भुज्जो भुज्जोत्ति वा पुणो पुणोति वा एगट्ठा" (... २, १)।

उक्खण सक [उत्+खन्] उखेडना, उच्छेदन करना, काटना। **उक्खणाहि**; (पराह १, १)। संकृ—**उक्खणिऊण**; (निचू १)। कर्म—**उक्खम्मंति**; (पि ५४०)। कवकृ—**उक्खम्मंत**; (से ७, २८)। कृ—**उक्खम्मिअव्व**; (से १०, २६)।

उक्खण सक [दे] खांडना, कूटना, मुशल वगैरः से व्रीहि आदि का छिलका दूर करना; (दे १,११५)।

उक्खण वि [दे] अवकीर्ण, चूर्णित; (षड्)।

उक्खणण न [उत्खनन] उन्मूलन, उत्पाटन; (पराह १, १)।

उक्खणण न [दे] खांडना, निस्तुषीकरण; (दे १, ११५ टी)।

उक्खणिअ न [दे] खण्डित, निस्तुषीकृत; (दे १, ११५)।

उक्खत्त देखो **उक्खय**; (पि ६०; १६३; ५६६)।

उक्खम्म° देखो **उक्खण**= उत्+खन्।

उक्खय वि [उत्खात] १ उखाड़ा हुआ, उन्मूलित; (णाया १, ७; हे १, ६७; षड्; महा)। २ खुदा हुआ, उद्घाटित;

"एत्थन्तरम्मि पत्तो, सुदाढविज्जाहरो तहिं भवणे।
उक्खयखग्गा दिट्ठा, जूयारा तेणवि दुवारे"
(सुपा ४००)।

उक्खल } देखो **उऊखल**; (हे २, ६०; सूअ १, ४,
उक्खला } २, १२)।

उक्खलिय वि [दे. उत्खण्डित] उन्मूलित, उत्पाटित ; (से ६, २६)।

उक्खलिया } स्त्री [दे] थाली, पात्र-विशेष ; (दे १, उक्खली } ८८) ; "उक्खलिया थाली जा साधुणिमित्तं सा आहाकम्मिया" (निचू १)।

उक्खा स्त्री [ऊखा] स्थाली, भाजन-विशेष ; (आचा २, १, १)।

उक्खाइद (शौ) वि [उत्खातित] उद्धृत ; (उत्तर ६७)।

उक्खाय देखो उक्खय ; (हे १, ६७ ; गा २७३)।

उक्खाल सक [उत्+खन्, खालय्] उखाड़ना, उन्मूलन करना। संकृ—उक्खालइत्ता ; (रंभा)।

उक्खिण देखो उक्खण=उत्+खन्। उक्खिणमि ; (भवि)। संकृ—उक्खिणिवि (अप) ; (भवि)।

उक्खिण्ण वि [दे] १ अवकीर्ण, ध्वस्त, चूर्णित ; २ छन्न, गुप्त ; ३ पार्श्व में शिथिल, एक तरफ से ढीला ; (दे १, १३०)।

उक्खित्त } वि [उत्क्षिप्त] १ फेंका हुआ ; २ ऊँचा उक्खित्तय } उडाया हुआ ; (पाअ)। ३ ऊँचा किया हुआ ; (णाया १, १)। ४ उन्मूलित, उत्पाटित ; (राज)। ५ बाहर निकाला हुआ ; (पण्ह २, १)। ६ उत्थित ; (पिंग)। ७ न. गेय-विशेष ; (राय ; ठा ४, ४)। °चरय वि [°चरक] पाक-पात्र से बाहर निकाले हुए भोजन को ही ग्रहण करने का नियम वाला (साधु) ; (पण्ह २, १)।

उक्खिप्प देखो उक्खिव=उत्+क्षिप्।

उक्खिय वि [उक्षित] सिक्त, सिंचा हुआ ; "चंदणोक्खिय-गायसरीरे" (सूअ २, २, ५५ ; कप्पू)।

उक्खिव सक [उप+क्षिप्] स्थापन करना ; "सुयस्स य भगवओ चेव नामं उक्खिविस्सामो"। (स १६२)।

उक्खिव सक [उत्+क्षिप्] १ फेंकना। २ ऊँचा फेंकना। ३ उडाना। ४ बाहर करना। ५ काटना। ६ उठाना। उक्खिवेइ ; (सूक्त ५६)। वकृ—"पाएवि उक्खिवंती न लज्जति पाहिया सुवेवत्था" (बृह ३)। संकृ—उक्खिविउं ; उक्खिप्प ; (पि ५७५ ; आचा २, २, ३)। कवकृ—उक्खिप्पंत, उक्खिप्पमाण ; (से ६, ३५ ; पण्ह १, ४) ; उच्छिप्पंत ; (से २, १३)।

उक्खिवण न [उत्क्षेपण] १ फेंकना, दूर करना। २ वि. दूर करने वाला ; (कुमा)।

उक्खिवणा स्त्री [उत्क्षेपणा] बाहर करना, दूर करना ; (बृह १)।

उक्खिविय देखो उक्खित्त ; (सुर २, १८०)।

उक्खुंड पुं [दे] १ उल्मुक, अलात, मसाल ; २ समूह ; ३ वस्त्र का एक अंश, अञ्चल ; (दे १, १२५)।

उक्खुड सक [तुड्] तोड़ना, टुकडा करना। उक्खुडइ ; (हे ४, ११६)।

उक्खुडिअ वि [तुडित] १ खण्डित, छिन्न, भिन्न ; (कुमा ; से ४, २१ ; सुपा २६२)। २ व्यय किया हुआ, खर्च किया हुआ,

"एत्तियकाला इयिहं, उक्खुडियं सालिमाइयं नाउं।
तुह जोग्गं तो सहसा, पुणो पुणो कुट्टियं हियं"
(सुपा १५)।

उक्खुत्त वि [दे. उत्कृत्त] काटा हुआ ; "रयणुंदुर-दंतुक्खुत्तविसंवलियं तिलच्छेत्तं" (गा ७६६)।

उक्खुरुहुंचिअ वि [दे] उत्क्षिप्त, फेंका हुआ ; (दे १, ४)।

उक्खुहिअ वि [उत्क्षुब्ध] क्षुब्ध, क्षोभ-प्राप्त ; (से ७, १६)।

उक्खेव पुं [उत्क्षेप] १ उत्पाटन, उन्मूलन ; (औप)। २ ऊँचा करना ; (गउड)। ३ जो उठाया जाय वह ; "उक्खेवे निक्खेवे महल्लभाणम्मि" (पिंड ५७०)।

उक्खेव पुं [उपक्षेप] उपोद्घात, भूमिका ; (उवा ; विपा १, २ ; ३ ; ४)।

उक्खेवग वि [उत्क्षेपक] १ ऊँचा फेंकने वाला। २ पुं. एक जात का पंखा, व्यजन-विशेष ; (पण्ह २, ५)।

उक्खेवण न [उत्क्षेपण] १ फेंकना ; (पउम ३७, ५०)। २ उन्मूलन, उत्पाटन ; (सूअ २, १)।

उक्खेविअ वि [उत्क्षेपित] जलाया हुआ (धूप) ; (भवि)।

उक्खोडिअ वि [उत्खोटित] १ उत्क्षिप्त, उडाया हुआ ; (पाअ)। २ छिन्न, उखाडा हुआ ; (दे १, १०५ ; १११)।

उग अक [उत्+गम्] उदित होना। उगइ ; (नाट)।

उग (अप) वि [उद्गत] उदित ; (पिंग)।

उगाहिअ वि [दे] उत्क्षिप्त, फेंका हुआ ; (षड्)।

उग्ग अक [उद्+गम्] उदित होना। उग्गे ; (पिंग)। वकृ—**उग्गंत** ; "देव ! पणयजणकल्लाणकंदुद्दविसट्टणुग्गंतमिह (? हि) राणुगारिणो" (धर्मा ५)।

उग्ग सक [उद्+घाटय्] खोलना। उग्गइ ; (हे ४, ३३)।

उग्ग वि [उग्र] १ तेज, तीव्र, प्रबल ; (पउम ८३, ४)। २ क्षत्रिय की एक जाति, जिसको भगवान् आदिदेव ने आरक्षक-पद पर नियुक्त की थी ; (ठा ३, १)। **°वई** स्त्री [°वती] ज्योतिः-शास्त्र-प्रसिद्ध नन्दा-तिथि की रात ; (जं ७)। **°सिरि** पुं [°श्रीक] राक्षस वंश का एक राजा, स्वनाम-ख्यात एक लंकेश ; (पउम ५, २६४)। **°सेण** पुं [°सेन] मथुरा नगरी का एक यदुवंशीय राजा ; (णाया १, १६ ; अंत)।

उग्गंध वि [उद्गन्ध] अत्यन्त सुगन्धित ; (गउड)।

उग्गच्छ, **उग्गम** अक [उद्+गम्] उदय-प्राप्त होना, उदित होना। उग्गच्छदि (शौ) ; (नाट)। उग्गमइ ; (वज्जा १६)। उग्गमेज्ज ; (काल)। वकृ—**उग्गमंत, उग्गममाण** ; (सुपा ३८ ; पण्ण १)।

उग्गम पुं [उद्गम] १ उत्पत्ति, उद्भव ; "तत्थुग्गमो पसूई पभवो एमाई होंति एगट्ठा" (राज)। २ उदय, "सूरुग्गमो" (सुर ३, २५०)। ३ उत्पत्ति से संबन्ध रखने वाला एक भिक्षा-दोष ; (ओघ ९५ ; ४३० भा ; ठा १०)।

उग्गमिय वि [उद्गमित] उपार्जित ; (निचू २)।

उग्गय वि [उद्गत] उत्पन्न, जात ; (आव ३)। २ उदित, उदय-प्राप्त ; (सुर ३, २४७)। ३ व्यवस्थित ; (राज)।

उग्गह सक [रचय्] रचना, बनाना, निर्माण करना, करना। उग्गहइ ; (हे ४, ९४)।

उग्गह सक [उद्+ग्रह्] ग्रहण करना। उग्गहेइ ; (भग)। संकृ—**उग्गहित्ता** ; (भग)।

उग्गह पुं [अवग्रह] इन्द्रिय-द्वारा होने वाला सामान्य ज्ञान-विशेष ; (विसे)। २ अवधारण, निश्चय ; (उत्त)। ३ प्राप्ति, लाभ ; (आचू)। ४ पात्र, भाजन ; (पंचा ३)। ५ साध्वीओं का एक उपकरण ; (ओघ ६६६ ; ६७६)। ६ योनि-द्वार ; (बृह ३)। ७ ग्रहण करने योग्य वस्तु ; (पण्ह १, ३)। ८ आश्रय, आवास-स्थान, वसति ; (आचा) ; "आहापडिरूवं उग्गहं ओगिन्हित्ता" (णाया १, १)। ९ वह वस्तु, जिस पर अपना प्रभुत्व हो, अधीन चीज ; (बृह ३)। १० देव या गुरु से जितनी दूरी पर रहने का शास्त्रीय विधान है उतनी जगह, मर्यादित भू-भाग, गुर्वादि की चारों तरफ की शरीर-प्रमाण जमीन ; "अणुजाणह मे मिउग्गहं" (पडि)। **°णंतग** न [°ानन्त,°क] जैन साध्वीओं का एक गुह्याच्छादक वस्त्र ; जांघिया, लंगोट ; "छादंतोग्गहणंतं" (बृह ३)। **°पट्ट, °पट्टग** पुंन [°पट्ट°क] देखो पूर्वोक्त अर्थ ; "नो कप्पइ निग्गंथाणं उग्गहणंतगं वा उग्गहपट्टगं वा धारित्तए वा परिहरित्तए वा" (बृह ३)।

उग्गहण न [अवग्रहण] इन्द्रिय-द्वारा होने वाला सामान्य ज्ञान ; "अत्थाणं उग्गहणं अवग्गहं" (विसे १७९)।

उग्गहिअ वि [रचित] १ निर्मित, विहित ; (कुमा)।

उग्गहिअ वि [अवगृहीत] १ सामान्य रूप से ज्ञात ; २ परोसने के लिए उठाया हुआ ; (ठा १)। ३ गृहीत ; ४ आनीत ; ५ मुख में प्रक्षिप्त ; "तिविहे उग्गहिए पण्णत्ते ;—जं च उगिण्हइ, जं च साहरइ, जं च आसगम्मि पक्खिवति" (वव २, ८)।

उग्गहिअ वि [दे] निपुण-गृहीत, अच्छी तरह लिया हुआ ; (दे १, १०४)।

उग्गा सक [उद्+गै] १ ऊँचे स्वर से गाना, गान करना। २ वर्णन करना। ३ श्लाघा करना।

"उग्गाइ गाइ हसइ, असंवुडो सय करेइ कंदप्पं।
गिहिकज्जचिंतगो वि य, ओसन्ने देइ गेण्हइ वा" (उव)।

वकृ—**उग्गायंत** ; (सुर ८, १८९)। कवकृ—**उग्गायमाण** ; (पउम २, ४१)।

उग्गाढ वि [उद्गाढ] १ अति-गाढ, प्रबल ; (उप ६८६ टी ; सुपा ६४)। २ स्वस्थ, तंदुरस्त ; (बृह १)।

उग्गायंत देखो **उग्गा**।

उग्गार, **उग्गाल** पुं [उद्गार] १ वचन, उक्ति ; "ते पिसुणा जे ण सहंति णिग्गुणा परगुणुग्गारे" (गउड)। २ शब्द, आवाज, ध्वनि ; "तियसरहपेल्लियघणो णहद्दुंदुहि-वहलगज्जिउग्गारो", "अहिताडियकंसुग्गारझंझणापडिरवाहोंओ" (गउड)। ३ डकार ; ४ वमन, ओकाई ; (नाट ; कप्पू)। "जिणझाणालणडज्झंतमयंगधूमुग्गारेणं पिव .....केसकला-वेणं" (स ३१२ ; निचू १०)। ५ जल का छोटा प्रवाह ; "उग्गालो छिंछोली" (पाअ)। ६ रोमन्थ, पगुराना ; "रोमंथो उग्गालो" (पाअ)।

उग्गाह सक [उद्+ग्रह्] ग्रहण करना ; " भायणवत्थाइं पमज्जइ , पमज्जइत्ता भायणाइं उग्गाहेइ " (उवा)। संकृ—" उग्गाहेत्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ " (उवा)।

उग्गाह सक [अव+गाह्] अवगाहन करना । " उग्गाहेंति नाणाविहाओ चगिच्छासंहियाओ " (स १७)।

उग्गाह पुं देखो उग्गाहा ; (पिंग)।

उग्गाहण न [उद्ग्राहण] तगादा, दी हुई चीज की माँग ; (सुपा ५७८)।

उग्गाहणिआ स्त्री [उद्ग्राहणिका] ऊपर देखो " उज्जाणपालयाणं पासम्मि गओ तया सोवि। उग्गाहणियाहेउं " (सुपा ६३२)।

उग्गाहणी स्त्री [उद्ग्राहणी] ऊपर देखो ; (द्र ६)।

उग्गाहा स्त्री [उद्गाथा] छन्द-विशेष ; (पिंग)।

उग्गाहिअ वि [दे, उद्ग्राहित] १ गृहीत, लिया हुआ ; २ उत्क्षिप्त, फेंका हुआ ; ३ प्रवर्तित ; (दे १, १३७)। ४ उचालित, ऊँचे से चलाया हुआ ; (पाअ; स २१३)।

उग्गाहिम वि [अवगाहिम] तली हुई वस्तु ; (पण्ह २, ५)।

उग्गिण्ण } वि [उद्गीर्ण] १ उक्त, कथित ; (भवि)।
उग्गिन्न } २ वान्त, उद्गीर्ण ; (गाया १, १)। ३ उठाया हुआ, ऊपर किया हुआ ;
" उग्गिन्नखग्गमवलं, अवलोइय नरवईवि विम्हइओ।
चिंतेइ अहो धट्ठा, मज्झ वहट्ठा इह पविट्ठा" (सुर १६, १४७);
" निद्दय ! निययविणीवहकलंकमलिणोव्व रे तुमं जाओ।
उग्गिन्नखग्गपसरंतकंतिसामलियसव्वंगो " (सुपा ५३८)।

उग्गिर देखो उग्गिल। उग्गिरेइ ; (मुद्रा १२१)। वकृ—उग्गिरंत ; (काल)।

उग्गिरण न [उद्गरण] १ वान्ति, वमन ; २ उक्ति, कथन;
" माणंसिणोवि अवमाणवंचणा ते परस्स न करेंति।
सुहदुक्खुग्गिरणत्थं, साहू उयहिव्व गंभीरा " (उव)।

उग्गिल सक [उद्+गॄ] १ कहना, बोलना। २ डकार करना। ३ उलटी करना, वमन करना। ४ उठाना। वकृ—" अग्गिजालुग्गिलंतवयणं " (गाया १, ८)। संकृ—उग्गिलित्ता ; (कस), उग्गिलेत्ता ; (निचू १०)।

उग्गिलिअ देखो उग्गिण्ण ; (पाअ)।

उग्गीय वि [उद्गीत] १ उच्च स्वर से गाया हुआ ; (दे १, १६३)। २ न. संगीत; गीत, गान ; (से १, ६५)।

उग्गीयमाण देखो उग्गा।

उग्गीर देखो उग्गिर। वकृ—" खग्गं उग्गीरंतो इत्थिवहत्थं, हयासलोयाणं " (सुपा १५८)।

उग्गीरिअ देखो उग्गिण्ण ; " उग्गीरिओ ममोवरि, जमजीहादीहतरलकरवालो " (सुपा १५८)।

उग्गीव वि [उद्ग्रीव] उत्कण्ठित, उत्सुक ; (कुमा)। °कय वि [°कृत] उत्कण्ठित किया हुआ ; (उप १०३१ टी)।

उग्गुलुंछिआ स्त्री [दे] हृदय-रस का उछलना, भावोद्रेक ; (दे १, ११८)।

उग्गोव सक [उद्+गोपय्] १ खोजना। २ प्रकट करना। ३ विमुग्ध करना। वकृ—" इत्थी वा पुरिसे वा सुविणंते एगं महं किण्हसुत्तगं वा जाव सुकिल्लसुत्तगं वा पासमाणे पासति, उग्गोवेमाणे उग्गोवेइ " (भग १६, ६)।

उग्गोवणा स्त्री [उद्गोपना] १ खोज, गवेषणा ;
" एसण गवेसणा लग्गणा य उग्गोवणा य बोद्धव्वा ।
एए उ एसणाए नामा एगट्ठिया होंति " (पिंड ७३)।
२ देखो उग्गम ; " उग्गम उग्गोवण मग्गणा य एगट्ठियाणि एयाणि " (पिंड ८५)।

उग्गोविय वि [उद्गोपित] विमोहित, भ्रान्त ; " उग्गोवियमिति अप्पाणं मन्नति " (भग १६, ६)।

उग्घ देखो उंघ। उग्घइ ; (षड्)।

उग्घट्टि } स्त्री [दे] अवतंस, शिरो-भूषण ; (दे
उग्घट्टी } १, ६०)।

उग्घड सक [उद्+घाटय्] खोलना ; (प्रामा)।

उग्घडिअ वि [उद्घाटित] खुला हुआ। २ छिन्न, नष्ट किया हुआ ; (से ११, १३०)।

उग्घर वि [उद्गृह] गृह-त्यागी, जिसने घरबार छोड़ कर संन्यास लिया हो वह, साधु ;
" चंदोव्व कालपक्खे परिहाई पए पए पमायपरो।
तह उग्घरविग्घरनिरंगणो वि नय इच्छियं लहइ "
(गाया १, १० टी)।

उग्घव देखो अग्घव। उग्घवइ ; (हे ४, १६६ टि ; राज)।

उग्घाअ पुं [दे] १ समूह, संघात ; (दे १, १२६ ; स ७७; ४३६ ; गउड ; से ५, ३४)। २ स्थपुट, विषमान्नत प्रदेश ; (दे १, १२६)।

उग्घाअ पुं [उद्घात] १ आरम्भ, प्रारंभ ; "उग्घाओ आरंभो" (पाअ)। २ प्रतिघात; ठोकर लगना ; ३ लघूकरण, भाग-पात ; (ठा ३)। ४ उपोद्घात, भूमिका ; (विसे १३४८)। ५ ह्रास ; (ठा ५, २)। ६ न. प्रायश्चित्त-विशेष ; ७ निशीथ सूत्र का एक अंश, जिसमें उक्त प्रायश्चित का वर्णन है ; "उग्घायमणुग्घायं आरोवण तिविहमो निसीहं तु" (आव ३)।

उग्घाइम वि [उद्घातिम] १ लघु, छोटा ; २ न. लघु प्रायश्चित्त ; (ठा ३)।

उग्घाइय वि [उद्घातित] १ विनाशित ; (ठा १०)। २ न. लघु प्रायश्चित्त ; (ठा ५)।

उग्घाइय न [उद्घातिक] लघु प्रायश्चित ; (कस)।

उग्घाड सक [उद्+घाटय्] १ खोलना। २ प्रकट करना। ३ बाहर करना। उग्घाडइ ; (हे ४, ३३)। उग्घाडए ; (महा)। संकृ—**उग्घाडिऊण** ; (महा)। कृ—**उग्घाडिअव्व** ; (श्रा १६)। कवकृ— **उग्घाडिज्जंत** ; (से ५, १२)।

उग्घाड वि [उद्घाट] १ खुला हुआ, अनाच्छादित ; (पउम ३६, १०७)। २ थोड़ा बन्द किया हुआ ; "उग्घाडकवाडउग्घाडणाए" (आव ४)। ३ व्यक्त, प्रकट ; ४ परिपूर्ण, अन्यून ; "एत्थंतरम्मि उग्घाडपोरिसीसूयगो वली पत्तो" (सुपा ६७)।

उग्घाडण न [उद्घाटन] १ खोलना ; (आव ४)। २ बाहर करना, बाहर निकालना ; (उप पृ ३६७)।

उग्घाडणा स्त्री [उद्घाटना] ऊपर देखो ; (आव ४)।

उग्घाडिअ वि [उद्घाटित] १ खुला हुआ ; २ प्रकटित, प्रकाशित ; (से २, ३७)।

उग्घायण न [उद्घातन] १ नाश, विनाश ; (आचा)। २ पूज्य स्थान, उत्तम जगह ; ३ सरोवर में जाने का मार्ग ; (आचा २, ३)।

उग्घार पुं [उद्घार] सिञ्चन, छिटकाव ; "विणिंतरुहिरुग्घारं निवडिओ धरणिवट्टे" (स ५६८)।

उग्घिट्ठ, **उग्घुट्ठ** } वि [उद्घृष्ट] संघृष्ट "नमिरसुरकिरीडुग्घिट्ठपायारविंदे" (लहुअ ४ ; से ६, ८०)।

उग्घुट्ठ [उद्घुष्ट] घोषित , उद्घोषित ; (सुर १०, १४; सण), "अमरवहुग्घुट्ठजयजयारवं" (मझ)।

उग्घुट्ठ वि [दे] उत्प्रोञ्छित, लुप्त, दूरीकृत, विनाशित ; (दे १, ६६ ;) उरघालिरवेणीमुहथणलग्गुग्घुट्ठमहिरआ :जणअसुआ" (से ११, १०२)।

उग्घुस सक [मृज्] साफ करना मार्जन करना। उग्घुसइ ; (हे ४, १०५)।

उग्घुस सक [उद्+घुष्] देखो **उग्घोस**। संकृ—**उग्घुसिअ** ; (नाट)।

उग्घुसिअ वि [मृष्ट] मार्जित, साफ किया हुआ ; (कुमा)।

उग्घोस सक [उद्+घोषय्] घोषणा करना, ढिंढोरा पिटवाना, जाहिर करना। उग्घोसेह ; (विपा १, १)। वकृ—**उग्घोसेमाण** ; (विपा १, १ ; णाया १, ५)। कवकृ—**उग्घोसिज्जमाण** ; (विपा १, २)।

उग्घोस पुं [उद्घोष] नीचे देखो ; (स्वप्न २१)।

उग्घोसणा स्त्री [उद्घोषणा] डोंडो पिटवाना, ढिंढोरा पिटवा कर जाहिर करना ; (विपा १, १)।

उग्घोसिय वि [मार्जित] साफ किया हुआ "उग्घोसियसुनिम्मलं व आयंसमंडलतलं" (पण्ह २, ५)।

उग्घोसिय वि [उद्घोषित] जाहिर किया हुआ, घोषित; (भवि)।

उघूण वि [दे] पूर्ण, भरपूर ; (षड्)।

उचिय वि [उचित] योग्य, लायक, अनुरूप ; (कुमा; महा)। °**ण्णु** वि [°ज्ञ] विवेकी ; (उप ७६८ टी)।

उच्च न [दे] नाभि-तल ; (दे १, ८६)।

उच्च, **उच्चअ** } वि [उच्च, °क, उच्चैस्] १ ऊँचा; (कुमा)। २ उत्तम, उत्कृष्ट ; (हे १, १५४ ; सूअ १, १०)। °**च्छंद** वि [°च्छन्दस्] स्वैर, स्वेच्छाचारी ; (पण्ह १, २)। °**णागरी** देखो °नागरी; (कप्प)। °**त्त** न [°त्व] १ ऊँचाई; (सम १२; जी २८)। २ उत्तमता ; (ठा ४, १)। °**त्तभयग**, °**त्तभयय** पुं [°त्वभृतक] जिससे समय और वेतन का इकरार कर यथा-समय नियत काम लिया जाय वह नौकर ; (राज ; ठा ४, १)। °**त्तरिया** स्त्री [°त्तरिका] लिपि-विशेष ; (सम ३५)। °**त्थवणय** न [°स्थापनक] लम्बगोलाकार वस्तु-विशेष, "धरणस्स णं अणगारस्स गीवाए अयमेयारूवे तवरूवलावन्ने होत्था, से जहानामए करगगीवा इवा कुंडियागीवा इवा उच्चत्थवणए इवा" (अनु)। °**वत्थिआ**

स्त्री [°वचिका] ऊँचा-नीचा करना, जैसे तैसे रखना, "कह तं प तुइ ण णाअं जह सा आसं दआस बहुआणं। काऊण उच्चवचिअं तुह दंसणलेहला पडिआ" (गा ६६७)।

°वाय पुं [°वाद] प्रशंसा, श्लाघा ; (उप ७२८ टी)।

देखो उच्चा ।

उच्चइअ वि [उच्चयित] एकत्रीकृत, इकट्ठा किया हुआ ; (काल)।

उच्चंतय पुं [उच्चन्तग] दन्त-रोग, दान्त में होने वाला रोग-विशेष ; (राज)

उच्चंपिअ वि [दे] दीर्घ, लम्बा, आयत ; (दे १, ११६)। २ आक्रान्त, दबाया हुआ, रौंदा हुआ ; " सोसं उच्चंपिअं" (तंदु)।

उच्चड्डिअ वि [दे] उत्क्षिप्त, ऊँचा फेंका हुआ ; (दे १, १०६)।

उच्चत्त वि [उत्त्यक्त] पतित, त्यक्त ; (पाअ)।

उच्चत्तवरत्त न [दे] १ दोनों तरफ का स्थूल भाग ; २ अनियमित भ्रमण, अव्यवस्थित विवर्तन ; (दे १, १३६); ३ दोनों तरफ से ऊँचा नीचा करना ; (पाअ)।

उच्चत्थ वि [दे] दृढ़, मजबूत ; (दे १, ६७)।

उच्चदिअ वि [दे] मुषित, चुराया हुआ ; (षड्)।

उच्चप्प वि [दे] आरूढ़, ऊपर बैठा हुआ ; (दे १, १००)।

उच्चय सक [उत्+त्यज्] त्याग देना, छोड़ देना। कृ— उच्चयणिज्ज ; (पउम ६६, २८)।

उच्चय पुं [उच्चय] १ समूह, राशि ; "रयणोच्चयं विसालं" (सुपा ३४ ; कप्प)। २ ऊँचा ढग करना ; (भग ८, ६)। ३ नीवी, स्त्री के कटी-वस्त्र की नाड़ी ; (पाअ)। °बंध पुं [°बन्ध] बन्ध-विशेष, ऊपर ऊपर रख कर चीजों को बांधना ; (भग ८, ६)।

उच्चय पुं [अवचय] इकट्ठा करना, एकत्रीकरण ; (दे २,५६)।

उच्चर सक [उत्+चर्] १ पार जाना, उत्तीर्ण होना। २ बाहर निकलना। ३ अक. समर्थ होना, पहुँच सकना ; ४ कहना, बोलना। उच्चरए ; (सूक्त ४६)। "मूलदेवेण य निरूवियाइं पासाइं जाव दिट्ठं निसियासिहत्थेहिं वेढ़ियमताणयं मणूमेहिं। चिंतियं च ; णाहमेएसिं उच्चरामि, कायव्वं च मए वइरनिज्जायणं ; निराउहो संपयं, ता न पोरिसस्सावसरोत्ति चिंतिय भणियं " (महा)। "भरिउच्चरंतपसरिअपिअसंभरणपिसुणो वराईए। परिवाहो विअ दुक्खस्स वहइ णअणट्ठिओ वाहो" (गा ३७७)।

उच्चरण न [उच्चरण] कथन, उच्चारण ; "सिद्धसमक्खं सोहिं वय-उच्चरणाइ काऊण" (सुपा ३१७)।

उच्चरिय वि [उच्चरित] १ उत्तीर्ण, पार-प्राप्त ; "तीए हत्थिसंभमुच्चरियाए उज्झिऊण भयं, जीवियदायगोत्ति मुणिऊण तुमं साहिलासं पलोइओ" (महा)। २ उच्चरित, कथित, उक्त ; (विसे १०८३)।

उच्चलण न [उच्चलन] उन्मर्दन, उत्पीडन ; (पाअ)।

उच्चलिय वि [उच्चलित] चलित, गत ; (भवि)।

उच्चल्ल वि [दे] १ अध्यासित, आरूढ़ ; २ विदारित, छिन्न ; (षड्)।

उच्चल्ल सक [उत्+चल्] १ चलना, जाना ; २ समीप में आना।

उच्चल्लिय वि [उच्चलित] १ गत, गया हुआ ; २ समीप में आया हुआ ; 'जिणभवणदुवारट्ठियउच्चल्लियफुल्लमालिओहस्स। पुप्फाइं गेण्हंतो, अंतो विहिणा पविट्ठो हं" (सुर ३, ७४)।

उच्चा अ [उच्चैस्] १ ऊँचा, "तो तेण दुट्ठहरिणा, उच्चा हरिऊण लोय-पच्चक्खं। उवणीओ सो रणे" (महा)। २ उत्तम, श्रेष्ठ ; (ठा २, १)। °गोत्त, °गोय न [°गोत्र] १ उत्तम गोत्र, श्रेष्ठ वंश ; २ कर्म-विशेष, जिसके प्रभाव से जीव उत्तम माना जाता कुल में उत्पन्न होता है ; (ठा २, ४ ; आचा)। °वय न [°व्रत] १ महाव्रत ; (उत्त १)। २ वि. महाव्रतधारी ; (उत्त १५)।

उच्चाअ वि [दे] १ श्रान्त, थका हुआ ; (ओघ ५१८)। २ पुं. आलिंगन, परिरम्भ ; (सुपा ३३२)।

उच्चाइय वि [दे. उत्याजित] उत्थापित, उठाया हुआ ; "उच्चाइया नंगरा" (स २०६)।

उच्चाग पुं [उच्चाग] हिमाचल पर्वत। °य वि [°ज] हिमाचल में उत्पन्न ; "उच्चागयठाणलट्ठसंठियं" (कप्प)।

उच्चाड वि [दे] विपुल, विशाल ; (दे १, ६७)।

उच्चाड सक [दे] १ रोकना, निवारना। २ अक. अफसोस करना, दिलगीर होना ; (हे २, १६३ टि)।

उच्चाडण न [**उच्चाटन**] १ एक स्थान से दूसरे स्थान में उठा ले आना, स्व-स्थान से भ्रष्ट करना। २ मन्त्र-विशेष, जिसके प्रभाव से वस्तु अपने स्थान से उड़ायी जो सकती है; "उच्चाडणथंभणमोहणाइ सव्वंपि मह करगयं व" (सुपा ५९९)।

उच्चाडणी स्त्री [**उच्चाटनी**] विद्या-विशेष, जिसके द्वारा वस्तु अपने स्थान से उड़ायी जा सकती है; (सुर १३, ८१)।

उच्चाडिर वि [**दे**] १ रोकने वाला, निवारण करने वाला; २ अफसोस करने वाला, दिलगीर;

"किं उअवेंतीए, उअ जूरंतीए किं नु भीआए।
उच्चाडिरोए वेव्वेति, तीए भणिअं न विम्हरिमो"
(हे २, १९३)।

उच्चार सक [**उत्+चारय्**] १ बोलना, उच्चारण करना। २ मलोत्सर्ग करना, पाखाना जाना। उच्चारेइ; (उवा)। वकृ—**उच्चारयंत**; (स १०७); **उच्चारेमाण**; (कप्प; णाया १, १)। कृ—**उच्चारेयव्व**; (उवा)।

उच्चार पुं [**उच्चार**] १ उच्चारण। २ विष्ठा, मलोत्सर्ग; (सम १०; उवा; सुपा ६११)।

उच्चार वि [**दे**] विमल, स्वच्छ; (दे १, ९७)।

उच्चारण न [**उच्चारण**] कथन, "इसिं हस्सपंचक्खरुच्चारणद्धाए" (औप)।

उच्चारिअ वि [**दे**] गृहीत, उपात्त; (दे १, ११४)।

उच्चारिअ वि [**उच्चारित**] १ कथित, उक्त; २ पाखाना गया हुआ; (राज)।

उच्चाल सक [**उत्+चालय्**] १ ऊँचा फेंकना। २ दूर करना। संकृ—"**उच्चालइय** निहाणिंसु अदुवा आसणाओ खलइंसु" (आचा)।

उच्चालइय वि [**उच्चालयितृ**] दूर करने वाला, त्यागने वाला; "जं जाणेज्जा उच्चालइयं तं जाणेज्जा दुरालइयं" (आचा)।

उच्चालिय वि [**उच्चालित**] उठाया हुआ, ऊँचा किया हुआ, उत्थापित; "उच्चालियम्मि पाए इरियासमियस्स संकमट्ठाए" (ओघ ७४८; दसनि ४५)।

उच्चाव सक [**उच्चय**] ऊँचा करना, उठाना। संकृ—**उच्चावइत्ता**। "दोवि पाए उच्चावइत्ता सव्वओ समंत सममिलोएज्ज" (पण्ण १७)।

उच्चावय वि [**उच्चावच**] १ ऊँचा और नीचा; (णाया, १, १; पण्ण ३४)। २ उत्तम और अधम; (भग १५)। ३ अनुकूल और प्रतिकूल; (भग १, ९)। ४ असमञ्जस, अव्यवस्थित; (णाया १, १६)। ५ विविध, नानाविध "उच्चावयाहिं सेज्जाहिं तवस्सी भिक्खू थामवं" (उत्त ८)। ६ उत्कृष्टतर, विशेष उत्तम "तए णं तस्स आणंदस्स समणोवासगस्स उच्चावएहिं सीलव्वयगुणवेरमणपच्चक्खाणपोसहोववासेहिं अप्पाणं भावेमाणस्स" (उवा; औप)।

उच्चिट्ठ अक [**उत्+स्था**] खडा होना। उच्चिट्ठइ; (काल)।

उच्चिडिम वि [**दे**] मर्यादा-रहित, निर्लज्ज, "उच्चिडिमं मुक्कमज्जायं" (पाअ)।

उच्चिण सक [**उत्+चि**] फूल वगैरः को तोड़ कर एकत्रित करना, इकट्ठा करना। उच्चिणइ; (हे ४, २४१)। वकृ—**उच्चिणंत**; (भवि)।

उच्चिणण न [**उच्चयन**] अवचयन, एकत्रीकरण; (सुपा ४९९)।

उच्चिणिय वि [**उच्चित**] इकट्ठा किया हुआ; अवचित; (पाअ)।

उच्चिणिर वि [**उच्चेतृ**] फूल वगैरः को चुनने वाला; (कुमा)।

उच्चिय देखो **उच्चिय** "तस्स सुओच्चियपन्नत्तीए संतोसमणुपत्ता" (उप १९९ टी)।

उच्चिवलय न [**दे**] कलुषित जल, मैला पानी; (पाअ)।

उच्चुंच वि [**दे**] दृप्त, गर्विष्ठ, अभिमानी; (दे १, ९९)।

उच्चुग वि [**दे**] अनवस्थित; (षड्)।

उच्चुड अक [**उत्+चुड्**] अपसरण करना, हटना। वकृ—**उच्चुडंत**; (गउड ७३३)।

उच्चुप्प सक [**चट्**] चढ़ना, आरूढ़ होना, ऊपर बैठना। उच्चुप्पइ; (हे ४, २५९)।

उच्चुप्पिअ वि [**दे. चटित**] आरूढ, ऊपर चढा हुआ; (दे १, १००)।

उच्चुरण [**दे**] उच्छिष्ट, जूठा; (षड्)।

उच्चुलउलिअ न [**दे**] कुतूहल से शीघ्र २ जाना; (दे १, १२१)।

उच्चुल्ल वि [**दे**] १ उद्विग्न, खिन्न; २ अधिरूढ, आरूढ; ३ भीत, डरा हुआ; (दे १, १३७)।

उच्चूड पुं [**उच्चूड**] निशान का नीचे लटकता हुआ शृंगारित वस्त्रांश; (उव ४४६)।

उव्वूर वि [दे] नानाविध, बहुविध ; (राज)।
उव्वूल पुं [अवचूल] १ निशान का नीचे लटकता हुआ शृङ्गारित वस्त्रांश ; (उप ४४६ टि)। २ ऊंधा-सिर—पैर ऊपर और सिर नीचे कर —खड़ा किया हुआ; (विपा १, ६)।
उव्वे देखो उच्चिण। उव्वेइ ; (हे ४, २४१)। हेकृ—उव्वेउं ; (गा १५६)।
उव्वेय वि [उच्चेतस्] चिन्तातुर मन वाला ; (पाअ)।
उव्वेल्लर न [दे] १ ऊपर भूमि ; २ जघन-स्थानीय केश ; (दे १, १३६)।
उव्वेव वि [दे] प्रकट, व्यक्त ; (दे १, ६७)।
उच्चोड पुं [दे] शोषण ; " चंदणुच्चोडकारी चंडो देहस्स दाहो " (कप्पू ; प्राप)।
उच्चोल पुं [दे] १ खेद, उद्वेग ; २ नीवी, स्त्री के कटी-वस्त्र की नाडी ; (दे १, १३१)।
उच्छ पुं [उक्षन्] बैल, वृषभ ; (हे २, १७)।
उच्छ पुं [दे] १ आँत का आवरण ; (दे १, ८५)। २ वि. न्यून, हीन, ; " उच्छतं वा न्यूनत्वम् " (पण्ह २, १)।
उच्छअ पुं [उत्सव] क्षण, उत्सव ; (हे २, २२)।
°उच्छअ वि [प्रच्छक] प्रश्न-कर्त्ता ; (गा ५०)।
उच्छइअ वि [उच्छदित] आच्छादित; " पालंबउच्छइय-वच्छयलो " (काल)।
उच्छंखल वि [उच्छृङ्खल] १ शृङ्खला-रहित, अवरोध-वर्जित, बन्धन-शून्य ; २ उद्धत, निरंकुश ; (गउड)।
उच्छंखलिय वि [उच्छृङ्खलित] अवरोध-रहित किया हुआ, खुला किया हुआ, " उच्छंखलियवणाणं सोहग्गं किंपि पवणाणं " (गउड)।
उच्छंग पुं [उत्सङ्ग] मध्य भाग ; " मउडुच्छंगपरिग्गहमियंकजोण्हावभासिणो पसुवइणो " (गउड ; से १०, २)। २ क्रोड, कोला ; (पाअ) ; "उच्छंगे णिविसेत्ता" (आवम)। ३ पृष्ठ देश ; (औप)।
उच्छंगिअ वि [उत्सङ्गित] कोले में लिया हुआ ; (उप ६४८टी)।
उच्छंगिअ वि [दे] आगे किया हुआ, आगे रखा हुआ ; (दे १, १०७)।
उच्छंघ देखो उत्थंघ ; (हे ४, ३६ टि)।
उच्छंट पुं [दे] झड़प से की हुई चोरी ; (दे १, १०१; पाअ)।

उच्छट्ट पुं [दे] चोर, डाकू ; (दे १, १०१)।
उच्छडिअ वि [दे] चुराई हुई चीज, चोरी का माल ; (दे १, ११२)।
°उच्छण न [प्रच्छन] प्रश्न, पूछना ; (गा ५००)।
उच्छण्ण देखो उच्छन्न; (हे १, ११४)।
उच्छत्त न [अपच्छत्र] १ अपने दोष को ढकने का व्यर्थ प्रयत्न, गुजराती में " ढांकपिछोडो ; " २ मृषावाद, झूठ वचन ; (पण्ह १, २)।
उच्छन्न वि [उत्सन्न] छिन्न, खण्डित, नष्ट ; (कुमा ; सुपा ३८४)।
उच्छप्प सक [उत्+सर्पय्] उन्नत करना, प्रभावित करना। उच्छप्पइ ; (सुपा ३५२)। वकृ—उच्छप्पंत ; (सुपा २६६)।
उच्छप्पण न [उत्सर्पण] उन्नति, अभ्युदय ; (सुपा २७१)।
उच्छप्पणा स्त्री [उत्सर्पणा] ऊपर देखो ; "जिणपवयणम्मि उच्छप्पणाउ कारेइ विविहाओ " (सुपा २०६ ; ६४६)।
उच्छल अक [उत्+शल्] १ उछलना, ऊँचा जाना। २ कूदना। ३ पसरना, फैलना। वकृ—उच्छलंत ; (कप्प; गउड)।
उच्छलण न [उच्छलन] उछलना ; (दे १, ११८ ; ६, ११५)।
उच्छलिअ वि [उच्छलित] उछला हुआ, ऊँचा गया हुआ, (गा ११७ ; ६२४ ; गउड)। २ प्रसृत, फैला हुआ " ता ताण वरगंधो। उच्छलिओ छलिउं पिव गंधं गोसीसचंदणवणस्स " (सुपा ३८५)।
उच्छल्ल देखो उच्छल। उच्छल्लइ ; (पि ३२७)। "उच्छल्लंति समुद्दा " (हे ४, ३२६)।
उच्छल्ल वि [उच्छल] ऊछलने वाला ; (भवि)।
उच्छल्लणा स्त्री [दे] अपवर्त्तना, अपप्रेरणा "कप्पडप्पहार-निद्दयआरक्खियखरफरुसवयणतज्जणगलच्छल्लुच्छल्लणाहिं विमणा चारगवसहिं पवेसिया" (पण्ह १, ३)।
उच्छल्लिअ देखो उच्छलिअ ; (भवि)।
उच्छल्लिअ वि [दे] जिसकी छाल काटी गई हो वह ; "तरुणो उच्छल्लिआ य दंतीहिं " (दे १, १११)।
उच्छव देखो उच्छअ ; (कुमा)। २ उत्सेक ; (भवि)।
उच्छविअ न [दे] शय्या, बिछौना ; (दे १, १०३)।

उच्छह अक [उत्+सह्] उत्साहित होना। वकृ—**उच्छहंत**; (भवि)।

उच्छहिय वि [उत्सहित] उत्साह-युक्त; (सण)।

उच्छाइअ वि [अवच्छादित] आच्छादित, ढका हुआ; (पउम ६१, ४२; सुर ३, ७१)।

उच्छाडिअ (अप) वि [अवच्छादित] ढका हुआ; भवि)।

उच्छाण देखो **उच्छ=उक्षन्**; (प्रामा)।

उच्छाय पुं [उच्छ्राय] उत्सेध, ऊँचाई; (ठा ७)।

उच्छायण वि [अवच्छादन] आच्छादक, ढकने वाला; (स ३२३)।

उच्छायण वि [उच्छादन] नाशक; (स ३२३; ५६३)।

उच्छायणया } स्त्री [उच्छादना] १ उच्छेद, विनाश; **उच्छायणा** } (भग १५)। २ व्यवच्छेद, व्यावृत्ति; (राज)।

उच्छार देखो **उत्थार=आ+क्रम्**; (हे ४, १६० टि)।

उच्छाल सक [उत्+शालय्] उछालना, ऊँचा फेंकना वकृ—**उच्छालिंत**; (कुम्मा ४)।

उच्छालण न [उच्छालन] उछालना, उत्क्षेपण; (कुम्मा ५)।

उच्छालिअ वि [उच्छालित] फेंका हुआ, उत्क्षिप्त; (सुपा ६७)।

उच्छास देखो **ऊसास**; (मै ६८)।

उच्छाह सक [उत्+साहय्] उत्साह दिलाना, उत्तेजित करना। उच्छाहइ; (सुपा ३५२)।

उच्छाह पुं [उत्साह] १ उत्साह; (ठा २, १)। २ दृढ़ उद्यम, स्थिर प्रयत्न; (सुज्ज २०)। ३ उत्कंठा, उत्सुकता; (चंद २०)। ४ पराक्रम, बल; ५ सामर्थ्य, शक्ति; (आचू १; हे १, ११४; २, ४८; पउम २०, ११८)।

उच्छाह पुं [दे] सूत का डोरा; (दे १, ९२)।

उच्छाहण न [उत्साहन] उत्तेजन, प्रोत्साहन; (उप ५९७ टी)।

उच्छाहिय वि [उत्साहित] प्रोत्साहित, उत्तेजित; (पिंड)।

उच्छिंद सक [उत्+छिद्] उन्मूलन करना, ऊखडना। संकृ—**उच्छिंदिअ**; (सूक्त ४४)।

उच्छिंपग वि [अवच्छिम्पक] चोरों को खान-पान वगैरः की सहायता देने वाला; (पण्ह १, ३)।

उच्छिंपण न [उत्क्षेपण] १ ऊपर फेंकना; २ बाहर निकालना; (पण्ह १, १)।

उच्छिट्ठ वि [उच्छिष्ट] जूठा, उच्छिष्ट; (सुपा ११७; ३७५; प्रासू १५८)।

उच्छिण्ण वि [उच्छिन्न] उच्छिन्न, उन्मूलित; (ठा ५)।

उच्छित्त वि [दे] १ उत्क्षिप्त, फेंका हुआ; २ विक्षिप्त, पागल; (दे १, १२४)।

उच्छित्त वि [उत्क्षिप्त] फेंका हुआ; (से ५, ६१; पाअ)।

उच्छित्त देखो **उट्ठिय**; (से २, १३; गउड)।

उच्छित्त वि [उत्सिक्त] सींचा हुआ, सिक्त; (दे १, १२३)।

उच्छिन्न देखो **उच्छिण्ण**; (कप्प)।

उच्छिप्पंत देखो **उक्खिव**।

उच्छिय वि [उच्छ्रित] उन्नत, ऊँचा; (राज)।

उच्छिरण वि [दे] उच्छिष्ट, जूठा; (षड्)।

उच्छिल्ल न [दे] १ छिद्र, विवर; (दे १, ९५)। २ वि. अवजीर्ण; (षड्)।

उच्छु देखो **इक्खु**; (पाअ; गा ५४१; पि १७७; ओघ ७७१; दे १, ११७)। °**जंत** न [°यन्त्र] ईख पीलने का सांचा; (दे ६, ५१)।

उच्छु पुं [दे] पवन, वायु; (दे १, ८५)।

उच्छुअ वि [उत्सुक] उत्कण्ठित; (हे २, २२)।

उच्छुअ न [दे] डरते २ की हुई चोरी; (दे १, ९५)।

उच्छुअरण न [दे] ईख का खेत; (दे १, ११७)।

उच्छुआर वि [दे] संछन्न, ढका हुआ; (दे १, ११५)।

उच्छुंडिअ वि [दे] १ बाण वगैरः से आहत; २ अपहृत, छीना हुआ; (दे १, १३५)।

उच्छुग देखो **उच्छुअ**; (सुर ८, ९१)। °**भूय** वि [°भूत] जो उत्कण्ठित हुआ हो; (सुर २, २१४)।

उच्छुच्छु वि [दे] दृप्त, अभिमानी; (दे १, ९६)।

उच्छुण्ण वि [उत्क्षुण्ण] १ खण्डित, तोड़ा हुआ "उच्छुण्णं मड्डिअं च निद्दलिअं" (पाअ)। २ आक्रान्त,

"रइणावि अणुच्छुण्णा, वीसत्थं मारुएण वि अणालिद्धा।
तिअसेहिंवि परिहरिआ, पवंगमेहिं मलिआ सुवेलुच्छंगा"
(से १०, २)।

उच्छुद्ध वि [दे] १ विक्षिप्त; २ पतित ; (ओघ २२० भा)।
उच्छुभ सक [अप+क्षिप्] आक्रोश करना, गाली देना। उच्छुभइ ; (भग १५)।
उच्छुर वि [दे] अविनश्वर, स्थायी ; (दे १, ६०)।
उच्छुरण न [दे] १ ईख का खेत ; २ ईख, ऊख ; (दे १, ११७)।
उच्छुल्ल पुं [दे] १ अनुवाद ; २ खेद, उद्वेग ; (दे १, १३१)।
उच्छूढ वि [दे] आरूढ, ऊपर बैठा हुआ ; (षड्)।
उच्छूढ वि [उत्क्षिप्त] १ त्यक्त, उज्झित ; (णाया १, १; उव)। २ मुषित, चुराया हुआ ; (राज)। ३ निष्कासित, बाहर निकाला हुआ ; (औप)।
उच्छूढ वि [उत्क्षुब्ध] ऊपर देखो "उच्छूढसरीरघरा अन्नो जीवो सरीरमन्नं ति" (उव ; पि ६६)।
उच्छूर देखो उल्लूर=तुड् ; (हे ४, ११६ टि)।
उच्छूल देखो उच्चूल ; (उव)।
उच्छेअ पुं [उच्छेद] १ नाश, उन्मूलन ; " एगंतुच्छेअ-म्मिवि सुहदुक्खविअप्पणमजुत्तं " (सम्म १८)। २ व्यवच्छेद, व्यावृत्ति ; " उच्छेओ सुत्तत्थाणं ववच्छेउत्ति वुत्तं भवति " (निचू १)।
उच्छेयण न [उच्छेदन] विनाश, उन्मूलन ; " चिंतइ एस समओ एयस्सुच्छेयणे मज्झ " (सुपा ३३५)।
उच्छेर अक [उत्+श्रि] १ ऊँचा होना ; उन्नत होना। २ अधिक होना, अतिरिक्त होना। वकृ—उच्छेरंत ; (काप्र १६४)।
उच्छेव पुं [उत्क्षेप] १ ऊँचा करना, उठाना। २ फेंकना ; (वव २, ४)।
उच्छेवण न [उत्क्षेपण] ऊपर देखो ; (से ६, २४)।
उच्छेवण न [दे] घृत, घी ; (दे १, ११६)।
उच्छेह पुं [उत्सेध] ऊँचाई, ; (दे १, १३०)।
उच्छोडिय वि [उच्छोटित] छुडाया हुआ, मुक्त किया हुआ ; "उच्छोडिय-बंधो सो रन्ना भणिओ य भद्द ! उवविससु" (सुर १, १०५) ; " पासट्ठियपुरिसेहिं तक्खणमुच्छोडिया य से बंधा " (सुर २, ३६)।
उच्छोभ वि [उच्छोभ] १ शोभा-रहित ; २ न. पिशुनता, चुगली ; (राज)।
उच्छोल सक [उत्+मूलय्] उन्मूलन मरना, ऊखेडना। वकृ—उच्छोलंत ; (राज)।
उच्छोल सक [उत्+क्षालय्] प्रक्षालन करना, धोना। वकृ—उच्छोलंत ; (निचू १७)। प्रयो; वकृ—उच्छोलावंत ; (निचू १६)।
उच्छोलण न [उत्क्षालन] प्रभूत जल से प्रक्षालन ; " उच्छोलणं च कक्कं च तं निज्जं परियाणिया " (सूअ १, ६ ; औप)।
उच्छोलणा स्त्री [उत्क्षालना] प्रक्षालन ; (दस ४)।
उच्छोला स्त्री [दे] प्रभूत जल " नहदंतकेसरो मे जमेइ उच्छोलधोयणो अजओ " (उव)।
उज्जु देखो उज्जु ; (आचा ; कप्प)।
उंजुअ देखो उज्जुअ ; (नाट)।
उज्ज देखो ओय=ओजस् ; (कप्प)।
उज्ज न [ऊर्ज] १ तेज, प्रताप ; २ बल ; (कप्प)।
उज्जअणी } स्त्री [उज्जयनी, °यिनी] नगरी-विशेष,
उज्जइणी } मालव देश की प्राचीन राजधानी, आजकल भी यह " उज्जैन " नाम से प्रसिद्ध है ; (चारु ३६ ; पि ३८६)।
उज्जंगल न [दे] बलात्कार, जबरदस्ती ; २ वि. दीर्घ, लम्बा; (दे १, १३५)।
उज्जगरय पुं [उज्जागरक] १ जागरण, निद्रा का अभाव ;
" जत्थ न उज्जगरओ, जत्थ न ईसा विसूरणं माणं।
सब्भावचाडुयं जत्थ, नत्थि नेहो तहिं नत्थि "
(वज्जा ६८)।
उज्जग्गिर न [ ] जागरण, निद्रा का अभाव ; (दे १, ११७ ; वज्जा ७४)।
उज्जगुज्ज वि [दे] स्वच्छ, निर्मल ; (दे १, ११३)।
उज्जड वि [दे] ऊजाड, वसति-रहित ; (दे १, ६६) ;
उक्किण्णरयभरोणयतलजज्जरभूविसट्टबिलविसमा।
थोउज्जडक्कविडवा इमाओ ता उन्दरथलीओ " (गउड)।
उज्जणिअ वि [दे] वक्र, टेढ़ा ; (दे १, १११)।
उज्जम अक [उद्+यम्] उद्यम करना, प्रयत्न करना। उज्जमइ ; (धम्म १४)। उज्जमह ; (उव)। वकृ—उज्जमंत, उज्जममाण ; (पण्ह १, ३) ; " ण करेइ दुक्खमोक्खं उज्जममाणावि संजमतवेसु " (सूअ १, १३)। कृ—उज्जमिअव्व, उज्जमेयव्व ; (सुर १४, ८३ ; सुपा २८७ ; २२४)। हेकृ—उज्जमिउं ; (उव)।
उज्जम पुं [उद्यम] उद्योग, प्रयत्न ; (उव ; जी ५० ; प्रासू ११५)।

उज्जमण (अप) न [**उद्यापन**] उद्यापन, व्रत-समाप्ति-कार्य ; (भवि)।
उज्जमिय (अप) वि [**उद्यापित**] समापित (व्रत) ; (भवि)।
उज्जय वि [**उद्यत**] उद्योगी, उद्युक्त, प्रयत्नशील ; (पाअ ; काप्र १६६ ; गा ४४८)। °**मरण** न [°**मरण**] मरण-विशेष ; (आचा)।
उज्जयंत पुं [**उज्जयन्त**] गिरनार पर्वत ; "इय उज्जयंतकप्पं, अवियप्पं जो करेइ जिणभत्तो" (ती ; विवे १८) ; "ता उज्जयंतसत्तुंजएसु तित्थेसु दोसुवि जिणिंदे" (मुणि १०६७५)।
उज्जल अक [**उद् + ज्वल्**] १ जलना। २ प्रकाशित होना, चमकना। उज्जलंति ; (विक्र ११४)। वकृ—**उज्जलंत** ; (णंदि)।
उज्जल वि [**उज्ज्वल**] १ निर्मल, स्वच्छ ; (भग ७, ८ ; कुमा)। २ दीप्त, चमकीला ; (कप्प ; कुमा)।
उज्जल [**दे**] देखो **उज्जल्ल** ; (हे २, १७४ टि)।
उज्जलण वि [**उज्ज्वलन**] चमकीला, देदीप्यमान, "जालुज्जलणगअंबरंव कत्थइ पयंतं अइवेगचंचलं सिहिं" (कप्प)।
उज्जलिअ वि [**उज्ज्वलित**] १ उद्दीप्त, प्रकाशित ; (पउम ११८, ८८ ; औप)। २ ऊँची ज्वालाओं से युक्त ; (जीव ३)। ३ न. उद्दीपन ; (राज)।
उज्जल्ल वि [**दे**] स्वेद-सहित, पसीना वाला, मलिन ; "मुंडा कंडूविणट्ठंगा उज्जल्ला असमाहिया" (सूअ १, ३)। २ बलवान, बलिष्ठ ; (हे २, १७४)।
उज्जल्ल न [**औज्ज्वल्य**] उज्ज्वलता ; (गा ६२६)।
उज्जल्ला स्त्री [**दे**] बलात्कार, जबरदस्ती ; (दे १, ६७)।
उज्जव अक [**उद् + यत्**] प्रयत्न करना। वकृ—"सट्ठुवि उज्जवमाणं पंचेव करंति रित्तयं समणं" (उव)।
उज्जवण देखो **उज्जावण** ; (भवि)।
उज्जाअर } पुं [**उज्जागर**] जागरण, निद्रा का अभाव ;
उज्जागर } (गा ४८२ ; वज्जा ७६
उज्जाडिअ वि [**दे**] उजाड किया हुआ ; (भवि)।
उज्जाण न [**उद्यान**] उद्यान, बगीचा, उपवन ; (अणु ; कुमा)। °**जत्ता** स्त्री [°**यात्रा**] गोष्ठी, गोठ ; (णाया १, १)। °**पालअ**, °**वाल** वि [**पालक**, °**पाल**] बगीचा का रक्षक, माली ; (सुपा २०८ ; ३०५)।

उज्जाणिअ वि [**औद्यानिक**] उद्यान-संबन्धी, बगीचा का ; (भग १४, १)।
उज्जाणिअ वि [**दे**] निम्नीकृत, नीचा किया हुआ ; (दे १, ११३)।
उज्जाणिआ } स्त्री [**औद्यानिका**] गोष्ठी, गोठ ; "उज्जाणि
उज्जाणिगा } जत्थ लोगो उज्जाणिआए वच्चइ" (निचू ८ ; स १५१)।
उज्जाणी स्त्री [**औद्यानी**] गोष्ठी, गोठ ; (सुपा ४८५)।
उज्जाल सक [**उद् + ज्वालय्**] १ ऊजाला करना २ जलाना। संकृ—**उज्जालिय, उज्जालित्ता** ; (दस ५ ; आचा)।
उज्जालण न [**उज्ज्वालन**] जलाना ; (दस ५)।
उज्जालिअ वि [**उज्ज्वालित**] जलाया हुआ, सुलगाया हुआ ; (सुर ६, ११७)।
उज्जावण न [**उद्यापन**] व्रत का समाप्ति-कार्य ; (प्राकृ)।
उज्जाविय वि [**दे**] विकासित ; (सण)।
उज्जिंत देखो **उज्जयंत** ; (णाया १, १६) ;
"उज्जिंतसेलसिहरे, दिक्खा नाणं निसीहिआ जस्स।
तं धम्मचक्कवट्टिं, अरिट्ठनेमिं नमंसामि" (पडि)।
उज्जीरिअ वि [**दे**] निर्भर्त्सित, अपमानित, तिरस्कृत ; (दे १, ११२)।
उज्जीवण न [**उज्जीवन**] १ पुनर्जीवन, जिलाना ; "तस्स पभावो एसो कुमरस्सुज्जीवणे जाओ" (सुपा ५०४)। २ उद्दीपन ; (सण)।
उज्जीविय वि [**उज्जीवित**] पुनर्जीवित, जिलाया हुआ ; (सुपा २७०)।
उज्जु वि [**ऋजु**] सरल, निष्कपट, सीधा ; (औप ; आचा)। °**कड** वि [°**कृत**] १ निष्कपट तपस्वी ; (आचा ; उत्त)। °**कड** वि [°**कृत्**] माया-रहित आचरण वाला ; (आचा)। °**जड**, °**जड्ड** वि [°**जड**] सरल किन्तु मूर्ख, तात्पर्य को नहीं समझने वाला ; (पंचा १६ ; उत्त २६)। °**मइ** स्त्री [°**मति**] १ मनःपर्यव ज्ञान का एक भेद, सामान्य मनोज्ञान ; सामान्य रीति से दूसरों के मनोभाव को जानना ; २ वि उक्त मनो-ज्ञान वाला ; (पण्ह २, १ ; औप)। °**वालिया** स्त्री [°**वालिका**] नदी-विशेष, जिसके किनारे भगवान् महावीर को केवल-ज्ञान उत्पन्न हुआ था ; (कप्प ; स ४३२)। °**सुत्त** पुं [°**सूत्र**] वर्तमान वस्तु को ही मानने वाला नय-विशेष ; (...)। °**सुय** पुं [°**श्रुत**] देखो पूर्वोक्त

अर्थ ; " पच्चुप्पन्नगाही उज्जुसुओ णयविही मुणेअव्वो " (अणु)। °हत्थ पुं [°हस्त] दाहिना हाथ ; (ओघ ५११)।
उज्जुअ वि [ऋजुक] ऊपर देखो ; (आचा ; कुमा ; गा १५६; ३५२)।
उज्जुआइअ वि [ऋजुकायित] सरल किया हुआ ; (स १३ ; २०)।
उज्जुग देखो उज्जुअ ; (पि ५७)।
उज्जुत्त वि [उद्युक्त] उद्यमी, प्रयत्न-शील ; (सुर ४, १५ ; पाअ)।
उज्जुरिअ वि [दे] १ क्षीण, नष्ट ; २ शुष्क, सूखा ; (दे १, ११२)।
उज्जेणग पुं [उज्जयनक] श्रावक-विशेष, एक उपासक का नाम ; (आचू ४)।
उज्जेणी देखो उज्जइणी ; (महा ; काप्र ३३३)।
उज्जोअ सक [उद्+द्योतय्] प्रकाश करना, उद्द्योत करना। उज्जोएइ ; (महा)। वकृ—उज्जोयंत, उज्जोइंत, उज्जोयमाण, उज्जोएमाण ; (णाया १, १; सुपा ४७; सुर ८, ८७ ; सुपा २४२ ; जीव ३)।
उज्जोअ पुं [उद्योग] प्रयत्न, उद्यम ; (पउम ३, १२६ ; सुक्त ३६ ; पुप्फ २८ ; २६)।
उज्जोअ पुं [उद्द्योत] १ प्रकाश, उजेला। °गर वि [°कर] प्रकाशक ; " लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे " (पडि ; पाअ ; हे १, १७७)। २ उद्द्योत का कारण-भूत कर्म-विशेष ; (सम ६७ ; कम्म १)। °त्थ न [°स्त्र] शस्त्र-विशेष ; (पउम १२, १२८)।
उज्जोअग वि [उद्द्योतक] प्रकाशक " सव्वजगुज्जोयगस्स " (णंदि)।
उज्जोअण न [उद्द्योतन] १ प्रकाशन, अवभासन ; २ वि. प्रकाश करने वाला ; (उप ७२८ टी)। ३ पुं. सूर्य, रवि। ४ एक प्रसिद्ध जैनाचार्य ; (गु ७ ; सार्ध ६२)।
उज्जोअय वि [उद्द्योतक] १ प्रकाशक। २ प्रभावक, उन्नति करने वाला ; (उर ८, १२)।
उज्जोइंत देखो उज्जोअ=उद्+द्योतय्।
उज्जोइय वि [उद्द्योतित] प्रकाशित ; (सम १५३ ; सुपा २०५)।
उज्जोएमाण देखो उज्जोअ=उद्+द्योतय्।
उज्जोमिआ स्त्री [दे] रश्मि, किरण ; (दे १, ११५)।

उज्जोव देखो उज्जोअ=उद्+द्योतय्। वकृ—उज्जोवंत, उज्जोवयंत, उज्जोवेंत, उज्जोवेमाण ; (पउम २१, १५ ; स २०७ ; ६३१, ; ठा ८)।
उज्जोवण न [उद्द्योतन] प्रकाशन ; (स ६३१)।
उज्जोविय देखो उज्जोइय ; (कप्प ; णाया १, १ ; पण्ह १, ४ ; पउम ८, २६० ; स ३६)।
उज्झ सक [उज्झ्] त्याग करना, छोड़ देना। उज्झइ ; (महा)। कवकृ—उज्झिज्जमाण ; (उप २११ टी)। संकृ—उज्झिअ, उज्झिउं, उज्झिऊण ; (अभि ६० ; पि ५७६ ; राज)। हेकृ—उज्झित्तए ; (णाया १, ८)। कृ—उज्झियव्व ; (उप ५६७ टी)।
उज्झ पुं [उज्झ, उद्ध्य] उपाध्याय, पाठक ; (विसे ३१६८)।
उज्झअ, उज्झग } वि [उज्झक] त्याग करने वाला, छोड़ने वाला ; (सुअ १, ३ ; उप १७६ टी)।
उज्झण न [उज्झन] परित्याग ; (उप १७६; पृ ४०३ ; पउम १, ६० ; औप)।
उज्झणा } स्त्री [उज्झना] परित्याग ; (उप ५६३ ; आव ४)।
उज्झणिअ वि [दे] १ विक्रीत, बेचा हुआ; २ निम्नीकृत, नीचा किया हुआ ; (षड्)।
उज्झमण न [दे] पलायन, भागना ; (दे १, १०३)।
उज्झमाण वि [दे] पलायित, भागा हुआ ; (षड्)।
उज्झर पुं [निर्झर] पर्वत से गिरने वाला जल-प्रवाह, पहाड़ का झरना ; (णाया १, १ ; गउड ; गा ६३६)। °वण्णी स्त्री [°पर्णी] उदक-पात, जल-प्रपात ; (निचू ५)।
उज्झरिअ वि [दे] टेढ़ी नजर से देखा हुआ ; २ विक्षिप्त ; ३ क्षिप्त, फेंका हुआ ; ४ परित्यक्त, उज्झित ; (दे १, १३३)।
उज्झल वि [दे] प्रबल, बलिष्ठ ; (षड्)।
उज्झलिअ वि [दे] १ प्रक्षिप्त, फेंका हुआ ; २ विक्षिप्त ; (षड्)।
उज्झस पुं [दे] उद्यम, उद्योग, प्रयत्न ; (दे १, ६५)।
उज्झसिअ वि [दे] उत्कृष्ट, उत्तम ; (षड्)।
°उज्झा देखो अउज्झा ; (उप पृ ३७४)।
उज्झाय पुं [उपाध्याय] विद्या-दाता गुरु, शिक्षक, पाठक ; (महा ; सुर १, १८०)।

उज्भासि वि [उद्भासिन्] चमकने वाला, देदीप्यमान, "कंकणुज्भासिहत्था" (रंभा)।

उज्भिंखिअ न [दे] १ वचनीय, लोकापवाद ; २ वि. निन्द-नीय ; ३ कथनीय ; (दे ३, ५५)।

उज्भिय वि [उज्भित] १ परित्यक्त, विमुक्त ; (कुमा)। २ भिन्न ; (श्राव ४)। ३ न. परित्याग ; (श्रणु)। °य पुं [°क] एक सार्थवाह का पुत्र ; (विपा १, २)।

उज्भिय वि [दे] १ शुष्क, सूखा हुआ ; २ निम्नीकृत, नीचा किया हुआ ; (षड्)।

उज्भिया स्त्री [उज्भिता] एक सार्थवाह-पत्नी ; (णाया १, ७)।

उट्ट पुंस्त्री [उष्ट्र] ऊँट, करभ ; (विपा १, ६ ; हे २, ३४ ; उवा)। स्त्री—**उट्टी** ; (राज)।

उट्टार पुं [अवतार] घाट, तीर्थ, जलाशय का तट ;
" अह ते तुरउट्टारे बहुभडमयरे सुसत्थकमलवणे।
लीलायंति जहिच्छं समरतलाए कुमारगया"
(पउम ६८, ३०)।

उट्टिय } वि [औष्ट्रिक] १ ऊँट संबन्धी ; २ ऊँट के
उट्टियय } रोमों का बना हुआ ; (ठा ५, ३ ; ओघ ७०६)। ३ भृत्य, नौकर ; (कुमा)। ४ घड़ा, घट ; (उवा)।

उट्टिया स्त्री [उष्ट्रिका] घड़ा, घट, कुम्भ ; (विपा १, ६ ; उवा)। °समण पुं [°श्रमण] आजीविक-मत का साधु जो बड़े घड़े में बैठ कर तपस्या करता है ; (औप)।

उट्ठ अक [उत्+स्था] उठना, खड़ा होना। उट्ठइ ; (हे ४, १७ ; महा)। उट्ठेइ ; (पि ३०६)। वकृ—**उट्ठंत** ; (गा ३८२ ; सुपा २६६) ; **उट्ठिंत** ; (सुर ८, ४३ ; १३, ५३)। संकृ—**उट्ठाय**, **उट्ठित्तु**, **उट्ठित्ता**, **उट्ठेत्ता** ; (राज ; आचा ; पि ५८२) हेकृ—**उट्ठिउं** ; (उपपृ २५८)।

उट्ठ वि [उत्थ] उत्थित, उठा हुआ ; (ओघ ७० ; उवा)। °बइस अप [°पवेश] उठ-बैठ ; (हे ४, ४२३)।

उट्ठ पुं [ओष्ठ] होठ, अधर ; (सम १२५ ; सुपा ५२३)।

उट्ठंभ सक [अव+स्तभ्] १ आलम्बन देना, सहारा देना। २ आक्रमण करना। कर्म—उट्ठब्भइ ; (हे ४, ३६५)। संकृ—"उट्ठंभिया एगया कायं " (आचा १, ६, ३, ११)।

उट्ठवण न [उत्थापन] उत्थापन, ऊँचा करना, उठाना ; (ओघ २१४ ; दे १, ८२)।

उट्ठविय वि [उत्थापित] उत्पाटित, उठाया हुआ, खड़ा किया हुआ ; "सा सखियं उट्ठविया भणइ किमागमणकारणं मुणहे " (सुर ६, १६०)।

उट्ठा देखो **उट्ठ**=उत्+स्था ; (प्रामा)।

उट्ठा स्त्री [उत्था] उत्थान, उठान ; " उट्ठाए उट्ठेइ" (णाया १, १ ; औप)।

उट्ठाइ वि [उत्थाइन्] उठने वाला ; (आचा)।

उट्ठाइअ वि [उत्थित] १ जो तय्यार हुआ हो, प्रगुण ; (पउम १२, ६६)। २ उत्पन्न, उत्थित ; (स ३७६)।

उट्ठाइअ देखो **उट्ठाविअ** ; (उवा)।

उट्ठाण न [उत्थान] १ उठान, ऊँचा होना ; (उव) ; "मञसलिलेहिं घडासु अ वोच्छिज्जइ पसरिअं महिरउट्ठाणं" (से १३, ३७)। २ उद्भव, उत्पत्ति ; (णायो १, १४)। ३ आरम्भ, प्रारंभ ; (भग १५)। ४ उद्वसन, बाहर निकलना ; (णंदि)। °सुय न [°श्रुत] शास्त्र-विशेष ; (णंदि)।

उट्ठाय देखो **उट्ठ**=उत्+स्था।

उट्ठाव सक [उत्+स्थापय्] उठाना। उट्ठावेइ ; (महा)।

उट्ठावण देखो **उट्ठवण** ; (कस)।

उट्ठावण देखो **उवट्ठावण** ; "पव्वावणविहिमुट्ठावणं च अज्जाविहिं निरवसेसं " (उव)।

उट्ठावणा देखो **उवट्ठावणा** ; (भत २५)।

उट्ठाविअ वि [उत्थापित] १ उठाया हुआ, खड़ा किया हुआ ; (नाट) ; २ उत्पादित ; " तुमए उट्ठाविओ कलहो एस " (उप ६४८ टी)।

उट्ठिउं
उट्ठिंत
उट्ठित्ता
उट्ठित्तु } देखो **उट्ठ**=उत्+स्था।

उट्ठिय वि [उत्थित] उत्थित, खड़ा हुआ ; (सुर ३, ६६)। २ उत्पन्न, उद्भूत ; (पण्ह १, ३) ; " विहीसिया कावि उट्ठिया एसा " (सुपा ५४१)। ३ उदित, उदय-प्राप्त ; "उट्ठियम्मि सूरे " (श्रणु)। ४ उद्यत, उद्युक्त ; (आचा)। ५ उद्वसित, बाहर निकला हुआ ; (ओघ ६५ भा)।

उट्ठिर वि [उत्थातृ) उठने वाला ; (सण)।

उट्ठिसिय वि [उद्घुषित] पुलकित, रोमाञ्चित ; (ओघ ; कुमा)।

उट्ठीअ (अप) देखो **उट्ठिय** ; (पिंग)।

उट्ठुभ } अक [अव+ष्ठीव्] थूकना। उट्ठुभंति, उट्ठुभइ;
उट्ठुह } (पि १२०)। उट्ठुहइ; (भग १५)। संकृ—उट्ठुहइत्ता; (भग १५)।

उठिअ (अप) देखो उट्ठिय—; (पिंग—पत्र ५८१)।

उड पुंन [कुट] घट, कुम्भ;
"पडिवक्खमण्णुपुंजे लावण्णउडं अणंगगअकुंभे।
पुरिससअहिअअधरिए कीस थणंती थणे वहसि"
(गा २६०)।

उडपुं [कूट] समूह, राशि; "सप्पी जहा अंडउडं भत्तारं जो विहिंसइ" (सम ५१)।

उड देखो पुड; (उवा; महा; गउड; गा ६६०; सुर २,१३; प्रासू ३६)।

उडंक पुं [उटङ्क] एक ऋषि, तापस-विशेष; (निचू १२)।

उडंब वि [दे] लिप्त. लिपा हुआ; (षड्)।

उडज } पुं [उटज] ऋषि-आश्रम, पर्ण-शाला, पत्तों से
उडय } बना हुआ घर; (अभि १११; प्रति ८४; अभि
उडव } ३७; स १०); "उडवो तावसगेहं" (पाअ)।
"जमहं दिया य राओ य, हुणामि महुसप्पिसं।
तेण मे उडओ दड्ढो, जायं सरणओ भय" (निचू १)।

उडाहिअ वि [दे] उत्क्षिप्त, फेंका हुआ; (षड्)।

उडिअ वि [दे] अन्विष्ट, खोजा हुआ; (षड्)।

उडिद पुं [दे] उडिद, माष, धान्य विशेष; (दे १, ६८)।

उडु न [उडु] १ नक्षत्र; (पाअ)। २ विमान-विशेष; (सम ६६)। °प, °व पुं [°प] १ चन्द्र, चन्द्रमा; (औप; सुर १६, २४६)। २ जहाज, नौका; (दे १, १२२))। ३ एक की संख्या; (सुर १६, २४६)। °वइ पुं [°पति] चन्द्र; (सम ३०; पण्ह १, ४)। °वर पुं [°वर] सूर्य; (राज)।

उडु देखो उउ; (ठा २, ४; ओघ १२३ भा)।

उडुंबरिज्जिया स्त्री [उदुम्बरीया] जैन मुनिओं की एक शाखा; (कप्प)।

उडुहिअ न [दे] १ विवाहित स्त्री का कोप; २ वि. उच्छिष्ट, जूठा; (दे १, १३७)।

उडु पुं [उड्र] १ देश-विशेष, उत्कल, ओड़, ओड्र नामों से प्रसिद्ध देश, जिसको आजकल उड़ीसा कहते हैं; (स २८६)। २ इस देश का निवासी, उड़िया; "सग-जवण-बब्बर-गाय-मुरुंडोड्ड-भडग—(पण्ह १, १)।

उड्ड वि [दे] कुँआ आदि को खोदने वाला, खनक; (दे १, ८५)।

उड्डण पुं [दे] १ बैल, सांड; २ वि. दीर्घ, लम्बा; (दे १, १२३)।

उड्डस पुं [दे] खटमल, खटकोरा, उड़िस; (दे १, ९६)।

उड्डहण पुं [दे] चोर, डाकू; (दे १, ९१)।

उड्डाअ पुं [दे] उद्गम, उदय, उद्भव; (दे १, ९१)।

उड्डाण न [उड्डयन] उड़ान, उड़ना; "मोरोवि अहव घिप्पइ, हंत तइज्जम्मि उड्डाणे" (सुर ८, ५२)।

उड्डाण पुं [दे] १ प्रतिशब्द, प्रतिध्वनि; २ कुरर, पक्षि-विशेष; ३ विष्ठा, पुरीष; ४ मनोरथ, अभिलाष; ५ वि. गर्विष्ठ, अभिमानी, (दे १, १२८)।

उड्डामर वि [उड्डामर] १ भय, भीति; २ आडम्बर वाला, टाप-टीप वाला; (पाअ)।

उड्डामरिअ वि [उड्डामरित] भय-भीत किया हुआ; (कप्पू)।

उड्डाव सक [उद्+डायय्] उड़ाना। उड्डावइ; (भवि)। वकृ—उड्डावंत; (हे ४, ३५२)।

उड्डावण न [उड्डायन] १ उड़ाना 'मत्तजलवायसुड्डावणेण जलकलुसणं किमिमं" (कुमा)। २ आकर्षण; "हिय-उड्डावणे" (णाया १, १४)।

उड्डाविअ वि [उड्डायित] उड़ाया हुआ; (गा ११०; पिंग)।

उड्डाविर वि [उड्डायितृ] उड़ाने वाला; (वज्जा ६४)।

उड्डास पुं [दे] संताप, परिताप; (दे १, ९६)।

उड्डाह पुं [उद्दाह] १ भयङ्कर दाह, जला देना; (उप २०८)। २ मालिन्य, निन्दा, उपघात; (ओघ २२१)।

उड्डिअ वि [औड्र] उड़ीसा देश का निवासी; (नाट)।

उड्डिअ वि [दे] उत्क्षिप्त, फेंका हुआ; (षड्)।

उड्डिअंत देखो उड्डी=उत्+डी।

उड्डिआहरण न [दे] छुरी पर रक्खे हुए फूल को पाँव की दो उंगलीओं से लेते हुए चल जाना; "छुरिअग्गमुक्कपुप्फं घेतुअ पायंगुलीहि उप्पयणं। तं उड्डिआहरणं"
"कुसुमं यत्नोड्डीय, क्षुरिकाग्राल्लाघवेन संगृह्य।
पादाङ्गुलिभिर्गच्छति, तद्विज्ञातव्यमुड्डिआहरणं"
(दे १, १२१)।

उड्डिहिअ वि [दे] ऊपर फेंका हुआ; (पाअ)।

उड्डी अक [उद्+डी] उड़ना। उड्डेइ ; उड्डिंति ; (पि ४७४)। वकृ—उड्डिअंत, उड्डेंत ; (दे ६, ६४ ; उप १०३१ टी)। संकृ—उड्डेऊण, उड्डेवि ;(पि ५८६ ; भवि)।

उड्डी स्त्री [औड्री] लिपि-विशेष, उत्कल देश की लिपि ; (विसे ४६४ टी)।

उड्डीण वि [उड्डीन] उड़ा हुआ ; (णाया १, १ ; पाअ ; सुपा ४६४)।

उड्डुअ पुं [दे] डकार, उद्गार ; "जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेण" (पडि)।

उड्डुवाडिय पुं [उड्डुवाटिक] भगवान् महावीर के एक गण का नाम ; (कप्प)। देखो उद्दवाइअ।

उड्डुहिअ देखो उडुहिअ ; (दे १, १३७)।

उड्डोय देखो उड्डुअ ; (राज)।

उड्ढ न [ऊर्ध्व] १ ऊपर, ऊँचा ; (अणु)। २ वमन, उलटी ; "उड्ढणिरोहो कुट्ठं" (बृह ३)। ३ उत्तम, मुख्य; "अहत्ताए नो उड्ढत्ताए परिणमंति" (भग ६, ३ ; आवम)। ४ खड़ा, दण्डायमान ; "खाणुव्व उड्ढदेहो काउस्सग्गं तु ठाइज्जा" (आव ६)। ५ ऊपर का, उपरितन ; (उवा)। °कंडूयग पुं [°कण्डूयक] तापसों का एक सम्प्रदाय जो नाभि के ऊपर भाग में ही खुजाते हैं ; (भग ११, ६)। °काय पुं [°काय] शरीर का उपरितन भाग ; (राज)। °काय पुं [°काक] काक, वायस ; "ते उड्ढकाएहिं पखज्जमाणा अवरेहिं खज्जंति सणप्फएहिं" (सूअ १, ५, २, ७)। °गम वि [°गम] ऊपर जाने वाला ; (सुपा ४५६)। °गामि वि [°गामिन्] ऊपर जाने वाला ; (सम १५३)। °चर वि [°चर] ऊपर चलने वाला, आकाश में उड़ने वाला (गृध्रादि) ; (आचा)। °दिसा, स्त्री [°दिक्] ऊर्ध्व दिशा ; (उवा ; आव ६)। °रेणु पुं [°रेणु] परिमाण-विशेष, आठ श्लक्ष्णश्लक्ष्णिका ; (इक)। °लोग, °लोय पुं [°लोक] स्वर्ग, देव-लोक ; (ठा ५, ३ ; भग)। °वाय पुं [°वात] ऊँचा गया हुआ वायु, वायु-विशेष ; (जीव १)।

उड्ढं ऊपर देखो; "उड्ढंजाणू अहोसिरे झाणकोट्ठोवगए" (भग १, १ ; महा; श्रा ३३)।

उड्ढंक न [दे] मार्ग का उन्नत भू-भाग; (सूअ १, २)।

उड्ढल, उड्ढल्ल पुं [दे] उल्लास, वकास ; (दे १, ६१)।

उड्ढा स्त्री [ऊर्ध्वा] ऊर्ध्व-दिशा ; (ठा ६)।

उड्ढि देखो बुड्ढि ; (षड्)।

उड्ढि देखो बुद्धि ; (षड्)।

उड्ढिय देखो उद्धरिअ=उद्धृत ; (रंभा)।

उड्ढिया स्त्री [दे] १ पात्र-विशेष ; (स १७३)। २ कम्बल वगैरः ओढ़ने का वस्त्र ; (स ५८६)।

उढि देखो बुद्धि ; (षड्)।

उण न [ऋण] ऋण, करजा ; (षड्)।

उण, उणा, उणाइ देखो पुण ; (प्रामा ; प्रासू ६१ ; कुमा; हे १, ६५)।

उणाइ पुं [उणादि] व्याकरण का एक प्रकरण ; (पह २, २)।

उणो देखो पुण ; (गउड ; पि ३४२ ; हे १, ६५)।

उण्ण न [ऊर्ण] भेड़ या बकरी के रोम। देखो उन्न। °कप्पास पुं [°कार्पास] ऊन, भेड़ के रोम; (निचू १)। °णाभ पुं [°नाभ] मकड़ी, कीट-विशेष ; (राज)।

°उण्ण देखो पुण्ण=पूर्ण ; (से ८, ६१ ; ६५)।

उण्णइ स्त्री [उन्नति] उन्नति, अभ्युदय ; (गा ४६७)।

उण्णइज्जमाण देखो उण्णो।

उण्णम अक [उद्+नम्] ऊँचा होना, उन्नत होना। वकृ—उण्णमंत ; (पि १६६)। संकृ—उण्णमिय ; (आचा २, १, ५)।

उण्णम वि [दे] समुन्नत; ऊँचा ; (दे १, ८८)।

उण्णय वि [उन्नत] १ उन्नत, ऊँचा ; (अभि २०६)। २ गुणवान्, गुणी ; (णाया १, १)। ३ अभिमानी; (सूअ १, १६)। ४ अभिमान, गर्व ; (भग १२, ५)।

उण्णय पुं [उन्नय] नीति का अभाव ; (भग १२, ५)।

उण्णा स्त्री [ऊर्णा] ऊन, भेड के रोम ; (आवम)। °पिपीलिया स्त्री [°पिपीलिका] जन्तु-विशेष; (दे ६, ४८)।

उण्णाअक वि [उन्नायक] १ उन्नति-कारक ; २ छन्दःशास्त्र प्रसिद्ध मध्य-गुरु चतुष्कल की संज्ञा ; (पिंग)।

उण्णाग पुं [उन्नाक] ग्राम-विशेष ; (आवम)।

उण्णाम पुं [उन्नाम] १ उन्नति, ऊँचाई ; (से ६, ५६)। २ गर्व, अभिमान ; ३ गर्व का कारण-भूत कर्म ; (भग १२, ५)।

उण्णाम सक [उद्+नमय्] ऊँचा करना ; (से ४, ५६)।

उण्णामिय वि [उन्नमित] ऊँचा किया हुआ; (गा १९; २५६; से ६, ७१)।

उण्णालिय वि [दे] १ कृश, दुर्बल; २ उन्नमित, ऊँचा किया हुआ; (दे १, १३६)।

उण्णिअ वि [उन्नीत] वितर्कित; विचारित; (से १३, ७७)।

उण्णिअ वि [और्णिक] ऊन का बना हुआ; (ठा ६, ३; ओघ ७०९; ८६ भा)।

उण्णिद्द वि [उन्निद्र] १ विकसित, उल्लसित; (गउड)। २ निद्रा-रहित; (माल ८५)।

उण्णी सक [उद्+नी] १ ऊँचा ले जाना। २ कहना। भवि—उण्णेहं; (विसे ३५८५)। कवकृ—उण्णइज्जमाण; (राज)।

उण्णुइअ पुं [दे] १ हुँकार; २ आकाश तरफ मुँह किए हुए कुत्ते की आवाज; (दे १, १३२)। ३ वि. गर्वित, "एवं भणिओ संतो उण्णुइओ सो कहेइ सव्वं तु" (वव २, १०)।

उण्ह पुं [उष्ण] १ आतप, गरमी; (णाया १, १)। २ वि. गरम, तप्त; (कुमा)।

उण्हिआ स्त्री [दे] कृसरा, खीचड़ी; (दे १, ८८)।

उण्हीस पुंन [उष्णीष] पगडी, मुकुट; (हे २, ७५)।

उण्होदयभंड पुं [दे] भ्रमर, भमरा; (दे १, १२०)।

उण्होला स्त्री [दे] कीट-विशेष; (आवम)।

उताहो अ [उताहो] अथवा, या; (पि ८५)।

उत्त वि [उक्त] कथित, अभिहित; (सुर १०, ७६; स ३७६)।

उत्त वि [उप्त] १ बोया हुआ; २ निष्पादित, उत्पादित; "देवउत्ते अए लोए बंभउत्तेति यावरे" (सूअ १, १, ३)।

उत्त पुं [दे] वनस्पति-विशेष; (राज)।

उत्त देखो पुत्त; (गा ८४; सुर ७, १५८)।

उत्तंघ देखो उत्थंघ=रुध्। उत्तंघइ; (हे ४, १३३)।

उत्तंत देखो वुत्तंत; (षड्; विक्र ३६)।

उत्तंपिअ वि [दे] खिन्न, उद्विग्न; (दे १, १०२)।

उत्तंभ सक [उत्+स्तम्भ्] १ रोकना। २ अवलम्बन देना, सहारा देना। कर्म—उत्तंभिज्जइ, उत्तंभिज्जेंति; (पि ३०८)।

उत्तंभण न [उत्तम्भन] १ अवरोध। २ अवलम्बन; (उप पृ २२१)।

उत्तंभय वि [उत्तम्भक] १ रोकने वाला। २ अवलम्बन देने वाला, सहायक; (उप पृ २२०)।

उत्तंस पुं [अवतंस] शिरो-भूषण, अवतंस; (गउड; दे २, ५७)।

उत्तंस पुं [उत्तंस] कर्णपूरक, कर्ण-भूषण; (पाअ)।

उत्तण वि [उत्तृण] तृण वाली जमीन; "खित्तखिलभूमिवल्लराइं उत्तणघडसंकडाइं डज्झंतु" (पण्ह १, १)।

उत्तणुअ वि [उत्तनुक] अभिमानी, गर्विष्ठ; (पाअ)।

उत्तत्त वि [उत्तप्त] अति-तप्त, बहुत गरम; (सुपा ३७)।

उत्तत्त वि [दे] अध्यासित, आरूढ; (षड्)।

उत्तत्थ वि [उत्त्रस्त] भय-भीत, त्रास-प्राप्त; (पण्ह १, ३; पाअ)।

उत्तद्ध देखो उत्तरद्ध; (पिंग)।

उत्तप्प वि [दे] १ गर्वित, अभिमानी; (दे १, १३१; पाअ)। २ अधिक गुण वाला; (दे १, १३१)।

उत्तप्प वि [उत्तप्त] देदीप्यमान; (राज)।

उत्तम वि [उत्तम] १ श्रेष्ठ, प्रशस्त, सुन्दर; (कप्प; प्रासू ६)। २ प्रधान, मुख्य; (पंचा ४)। ३ परम, उत्कृष्ट "उत्तमकट्ठपत्ते" (भग ७, ६)। ४ अन्त्य, अन्तिम; (राज)। ५ पुं. मेरु पर्वत; (इक)। ६ संयम, त्याग; (दसा ५)। ७ राक्षस वंश का एक राजा, स्वनाम-ख्यात एक लंकेश, (पउम ५, २६४)। °ट्ठ पुं [°ार्थ] १ श्रेष्ठ वस्तु; २ मोक्ष; (उत्त २)। ३ मोक्ष-मार्ग "जीवा ठिया परमट्ठम्मि" (पउम २, ८१)। ४ अनशन, मरण; (ओघ ७)। °ण्ण वि [°र्ण] लेनदार; (नाट)।

उत्तम वि [उत्तमस्] अज्ञान-रहित; "तिविहतमा उम्मुक्का, तम्हा ते उत्तमा हुंति" (आवनि ५५; कप्प)।

उत्तमंग न [उत्तमाङ्ग] मस्तक, सिर; (सम ५०; कुमा)।

उत्तमा स्त्री [उत्तमा] १ 'णायाधम्मकहा' का एक अध्ययन; (णाया २, १)। २ एक इन्द्राणी; (णाया २, १; ठा ४, १)।

उत्तम्म अक [उत्+तम्] खिन्न होना, उद्विग्न होना। उत्तम्मइ; (स २०३)। वकृ—उत्तम्मंत; उत्तम्ममाण; (नाट)। संकृ—उत्तम्मिअ; (नाट)।

उत्तम्मिअ वि [उत्तान्त] खिन्न, दिलगीर; (दे १, १०२; पाअ)।

उत्तर अक [उत्+तॄ] १ बाहर निकलना। २ सक. पार करना। उत्तरिस्सामो; (स १०१)। वकृ—उत्तरंत,

"पेच्छंति अणिमिसच्छा पहिआ हलिअस्स पिट्ठपंडुरिअं।
धूअं दुद्धसमुद्दुत्तरंतलच्छिं विअ सअण्हा"
(गा ३८८)।

"उत्तरंताण य मरु, खंधवारो तिसाए मरिउमारद्धो" (महा)। संकृ—**उत्तरित्तु** ; (पि ५७७)। हेकृ—**उत्तरित्तए** ; (पि ५७८)।

उत्तर अक [**अव+तॄ**] उतरना, नीचे आना। वकृ—**उत्तरमाण**, "उत्तरमाणस्स तो विमाणाओ" (सुपा ३४०)।

उत्तर वि [**उत्तर**] १ श्रेष्ठ, प्रशस्त; (पउम ११८, ३०)। २ प्रधान, मुख्य ; (सूअ १, ३)। ३ उत्तर-दिशा में रहा हुआ, (जं १)। ४ उपरि-वर्त्ती, उपरितन ; (उत्त २)। ५ अधिक अतिरिक्त ; "अट्ठुत्तर—" (औप ; सूअ १, २)। ६ अवान्तर, भेद, शाखा; "उत्तरपगइ" (कम्म १)। ७ ऊन का बना हुआ वस्त्र, कम्बल वगैरः ; (कप्प)। ८ न. जवाब, प्रत्युत्तर ; (वव १, १)। ९ वृद्धि ; (भग १३, ४)। १० पुं. ऐरवत क्षेत्र के बाईसवें भावि जिन-देव का नाम; (सम १५४)। ११ वर्षा-कल्प ; (कप्प)। १२ एक जैन मुनि, आर्य-महागिरि के प्रथम शिष्य ; (कप्प)। °**कंचुय** पुं [°**कञ्चुक**] वख्तर-विशेष ; (विपा १, २)। °**करण** न [°**करण**] उपस्कार, संस्कार, विशेष गुणाधान ;

"खंडियविराहियाणं, मूलगुणाणं, सउत्तरगुणाणं।
उत्तरकरणं कीरइ, जह सगड-रहंग-गेहाणं" (आव ५)।

°**कुरा** स्त्री [°**कुरु**] स्वनाम-ख्यात क्षेत्र-विशेष ; "उत्तरकुराए णं भंते ! कुराए केरिसए आगारभावपडोयारे पण्णत्ते" (जीव ३)। °**कुरु** पुं [°**कुरु**] १ वर्ष-विशेष; "उत्तरकुरुमाणुसच्छराओ" (पि ३२८ ; सम ७० ; पण्ह १, ४ ; पउम ३५, ५०)। २ देव-विशेष ; (जं २)। °**कुरुकूड** न [°**कुरुकूट**] १ माल्यवंत पर्वत का एक शिखर ; (ठा ६)। २ देव-विशेष ; (जं ४)। °**कोडि** स्त्री [°**कोटि**] संगीतशास्त्र-प्रसिद्ध गान्धार-ग्राम की एक मूर्च्छना ; (ठा ७)। °**गंधारा** स्त्री [°**गान्धारा**] देखो पूर्वोक्त अर्थ ; (ठा ७)। °**गुण** पुं [°**गुण**] शाखा-गुण, अवान्तर गुण ; (भग ७, ३)। °**चावाला** स्त्री [°**चावाला**] नगरी-विशेष ; (आवम)। °**चूल** न [°**चूड**] गुरु-वन्दन का एक दोष, गुरु को वन्दन कर बडे आवाज से "मत्थएण वंदामि" कहना ; (धर्म २)। °**चूलिया** स्त्री [°**चूलिका**] देखो अनन्तर-उक्त अर्थ ;

(वृह ३ ; गुभा २५)। °**ड्ढ** न [°**र्ध**] पिछ... आधा भाग उत्तरार्ध ; (जं ४)। °**दिसा** स्त्री [°**दिश्**] उत्तर दिशा ; (सुर २, २२८)। °**द्ध** न [°**र्ध**] पिछला आधा भाग ; (पिंग)। °**पगइ**, °**पयडि** स्त्री [°**प्रकृति**] कर्मों के अवान्तर भेद ; (उत्त ३३ ; ... ६६)। °**पच्चत्थिमिल्ल** पुं [°**पाश्चात्य**] वायव्य कोण ; (पि)। °**पट्ट** पुं [°**पट्ट**] विछौना का ऊपर का वस्त्र ; (ओघ १५६ भा)। °**पारणग** न [°**पारणक**] उपवासादि व्रत की समाप्ति, पारण ; (काल)। °**पुरच्छिम**, °**पुरत्थिम** पुं [°**पौरस्त्य**] ईशान कोण, उत्तर और पूर्व के बीच की दिशा ; (णाया १, १ ; भग ; ... ६०२)। °**पोट्ठवया** स्त्री [°**प्रौष्ठपदा**] उत्तर भाद्रपद नक्षत्र ; (सुज्ज ४)। °**फग्गुणी** स्त्री [°**फाल्गुनी**] उत्तर-फाल्गुनी नक्षत्र ; (कप्पू ; पि ६२)। °**बलिस्सह** पुं [°**बलिस्सह**] १ एक प्रसिद्ध जैन साधु ; (कप्प)। २ उत्तर बलिस्सह-नामक स्थविर से निकला हुआ एक ग... भगवान् महावीर का द्वितीय गण—साधु-संप्रदाय ; (कप्प ; ... ६)। °**भद्दवया** स्त्री [°**भद्रपदा**] नक्षत्र-विशे... (ठा ६)। °**मंदा** स्त्री [°**मन्दा**] मध्यम ग्राम की ए... मूर्च्छना ; (ठा ७)। °**महुरा** स्त्री [°**मथुरा**] नग... विशेष ; (दंस)। °**वाय** पुं [°**वाद**] उत्तरवा... (आचा)। °**विक्किय**, °**वेउव्विय** वि [°**वैक्रिय**] स्वा... भाविक-भिन्न वैक्रिय, बनावटी वैक्रिय ; (कम्म १; कम्म)। °**साला** स्त्री [°**शाला**] १ क्रीडा-गृह ; २ पीछे से बना हुआ घर ; ३ वाहन-गृह, हाथी-घोड़ा आदि बाँधने का स्था... तवेला ; (निचू ८)। °**साहग**, °**साहय** वि [°**साधक**] विद्या, मन्त्र वगैरः का साधन करने वाले का सहायक ; (सु... १५१ ; स ३६६)। देखो **उत्तरा**°।

उत्तरओ अ [**उत्तरतः**] उत्तर दिशा तरफ ; (ठा २ ; भग)।

उत्तरंग न [**उत्तरङ्ग**] १ दरवाजे का ऊपर का का... (कुमा)। २ चपल, चंचल ; (मुद्रा २६८)।

उत्तरण न [**उत्तरण**] १ उतरना, पार करना ; (ठा ... स ३६२)। २ अवतरण, नीचे आना ; (ठा १०)।

उत्तरणवरंडिया स्त्री [**दे**] उडुप, जहाज, डोंगी, (दे ... १२२)।

उत्तरा स्त्री [**उत्तरा**] १ उत्तर दिशा ; (ठा १०)। २ एक ... मध्यम ग्राम की एक मूर्च्छना ; (ठा ७)। ३ एक दि...

कुमारी देवी ; (ठा ८) । ४ दिगम्बर-मत-प्रवर्तक आचार्य शिवभूति की स्वनाम-ख्यात भगिनी; (विसे) । ५ अहिच्छत्रा नगरी की एक वापी का नाम ; (ती) । °णंदा स्त्री [°नन्दा] एक दिक्कुमारी देवी; (राज) । °पह पुं [°पथ] उत्तरदिशा-स्थित देश; उत्तरीय देश ; (आचू २)। °फग्गुणी देखो उत्तर-फग्गुणी ; (सम ७ ; इक)। °भद्दवया देखो उत्तर-भद्दवया ; (सम ७ ; इक) । °यण न [°यण] उत्तरायण, सूर्य का उत्तर-दिशा में गमन, माघ से लेकर छः महीना ; (सम ५३) । °यया स्त्री [°यता] गान्धार-ग्राम की एक मूर्च्छना ; (ठा ७) । °वह देखो °पह ; (महा; उव १४२ टी) । °संग पुं [°संग] उत्तरीय वस्त्र का शरीर में न्यास-विशेष, उत्तरासण ; (कप्प ; भग ; औप) । °समा स्त्री [°समा] मध्यम ग्राम की एक मूर्च्छना ; (ठा ७) । °साढा स्त्री [°षाढा] नक्षत्र-विशेष ; (सम ६ ; कस) । °हुत्त न [°भिमुख] १ उत्तर की तरफ; २ वि. उत्तर दिशा तरफ मुँह किया हुआ ; (ओघ ६५० ; आव ४) ।

उत्तरिज्ज } न [उत्तरीय] चद्दर, दुपट्टा ; (उवा ; प्राप्र ;
उत्तरिय } हे १, २४८), "जरजिन्नं उत्तरियं" (सुपा ५४६) ।

उत्तरिय वि [उत्तीर्ण] १ उतरा हुआ, नीचे आया हुआ ; (सुर ६, १५६) । २ पार पहुँचा हुआ ; (महा) ।

उत्तरिय वि [औत्तरिक, औत्तराह] देखो उत्तर ; (ठा १० ; विसे १२४५) ।

उत्तरिल्ल वि [औत्तराह] उत्तर दिशा या काल में उत्पन्न या स्थित, उत्तर-संबन्धी, उत्तरीय ; "अह उत्तरिल्लरुयगे" (सुपा ४२ ; सम १०० ; भग) ।

उत्तरीअ देखो उत्तरिय=उत्तरीय ; (कुमा ; हे १, २४८ ; महा) ।

उत्तरीकरण न [उत्तरीकरण] उत्कृष्ट बनाना, विशेष शुद्ध करना "तस्स उत्तरीकरणेणं" (पडि) ।

उत्तरोट्ठ पुं [उत्तरौष्ठ] १ ऊपर का होठ ; (पि ३६७) । २ श्मश्रु, मूँछ ; (राज) ।

उत्तलहअ पुं [दे] विटप, अङ्कुर ; (दे १, ११६) ।

उत्तव वि [उक्तवत्] जिसने कहा हो वह ; (पि ५६६) ।

उत्तस अक [उत्+त्रस्] १ त्रास पाना, पीडित होना । २ डरना, भयभीत होना । वकृ—उत्तसंत ; (सुर १, २४६ ; १०, २२०) ।

उत्तसिय वि [उत्त्रस्त] १ भय-भीत ; २ पीडित ; (सुर १, २४६) ।

उत्ताड सक [उत्+ताडय्] १ ताडना, ताड़न करना; २ वाद्य बजाना । कवकृ—"उत्ताडिज्जंताणं दद्दरियाणं कुडवाणं" (राय) ।

उत्ताडण न [उत्ताडन] १ ताडन करना ; (कुमा) । २ वाद्य बजाना ; (राज) ।

उत्ताण वि [उत्तान] १ उन्मुख, ऊर्ध्व-मुख ; (पंचा १८) । २ चित्त ; (विपा १, ६ ; ठा ४, ४) । ३ विस्फारित, "उत्ताणणयणपेच्छणिज्जा पासादीया दरिसणिज्जा" (औप) । ४ अनिपुण, अकुशल "उत्ताणमई न साहए धम्मं" (धम्म ८)। °साइय वि [°शायिन्] चित्त सोने वाला ; (कस) ।

उत्ताणअ } ऊपर देखो ; (भग; गा ११० ; कस) ।
उत्ताणग }

उत्ताणपत्तय वि [दे] एरण्ड-संबन्धी (पत्ती वगैर); (दे १, १२०) ।

उत्ताणिअ वि [उत्तानित] १ चित किया हुआ ; (से ६, ८६ ; गा ४६०) । २ चित्त सोने वाला ; (दसा) ।

उत्तार सक [अव+तारय्] नीचे उतारना । वकृ— उत्तारेमाण ; (ठा ५) ।

उत्तार सक [उत्+तारय्] १ पार पहुँचाना । २ बाहर निकालना । ३ दूर करना । "देहो...नईए खित्तो, तओ एए जइ नो उत्तारिंता तो हं मरिऊण" (सुपा ३५७ ; काल) ।

उत्तार पुं [उत्तार] १ उतरना, पार करना ; "अणुसोओ संसारो पडिसोओ तस्स उत्तारो" (दस २) ; "दुइउत्ताराइ" (उवर ३२) । २ परित्याग ; (विसे १०४२) । ३ उतारने वाला, पार करने वाला ;

"भवसयसहस्सदुलहे, जाइजरामरणसागरोत्तारे ।
जिणवयणम्मि गुणायर ! खणमवि मा काहिसि पमायं"
(प्रासू १३४) ।

उत्तारण न [उत्तारण] १ उतारना । २ दूर करना । ३ बाहर निकालना । ४ पार करना ।

"ता अज्जवि मोहमहाअहिविसवेगा फुरंति तुह बाढं ।
तण्णुत्तारणहेउं, तम्हा जत्तं कुणसु भद्द ! ॥"
(सुपा ५५७ ; विसे १०४०) ।

उत्तारय वि [उत्तारक] पार उतारने वाला ; (स ६४७) ।

उत्तारिअ वि [उत्तारित] १ पार पहुँचाया हुआ। २ दूर किया हुआ। ३ बाहर निकाला हुआ ; "तेणवि उत्तारिओ भूमिविवराओ" (महा)।

उत्ताल वि [उत्ताल] १ महान्, बड़ा "उत्तालतालयाणं वणिएहिं दिज्जमाणाणं" (सुपा ५०२)। २ उतावला, शीघ्रकारी, 'कहवि उत्तालो अप्पडिलेहियसेज्जं गिण्हंतो" (सुपा ६२०)। ३ उद्धत ; (दे १, १०१)। ४ बेताल, ताल-विरुद्ध, गान का एक दोष; "गायंतो मा पगाहि उत्तालं" (ठा ७) "भीयं दुयमुप्पिच्छत्थमुत्तालं च कमसो मुणेयव्वं" (जीव ३)।

उत्ताल न [दे] लगातार रुदन, अन्तर-रहित क्रन्दन की आवाज ; (दे १, १०१)।

उत्तालण देखो **उत्ताडण**।

उत्तावल न [दे] उतावल, शीघ्रता ; २ वि. शीघ्रकारी, आकुल "हल्लुत्तावलिगिहदासिविहियतक्कालकरणिज्जे" (सुर १०, १)।

उत्तास सक [उत्+त्रासय्] १ भयभीत करना, डराना। २ पीड़ना, हैरान करना। उत्तासेदि (शौ) ; (नाट)। कृ—**उत्तासणिज्ज** ; (तंदु)।

उत्तास पुं [उत्त्रास] १ त्रास, भय ; २ हैरानी; (कप्पू)।

उत्तासइत्तु वि [उत्त्रासयितृ] १ भय-भीत करने वाला; २ हैरान करने वाला ; (आचा)।

उत्तासणअ, **उत्तासणग** } वि [उत्त्रासनक] १ भयंकर, उद्वेग-जनक; २ हैरान करने वाला ; (पउम २२, ३५ ; णाया १, ८)।

उत्तासिय वि [उत्त्रासित] १ हैरान किया हुआ ; २ भयभीत किया हुआ ; (सुर १, २४७ ; आव ४)।

उत्ताहिय वि [दे] उत्क्षिप्त, फेंका हुआ ; (दे १, १०६)।

उत्ति स्त्री [उक्ति] वचन, वाणी ; (श्रा १४ ; सुपा २३ ; कप्पू)।

उत्तिंग पुं [उत्तिङ्ग] १ गर्दभाकार कीट-विशेष ; (धर्म २; निचू १३)। २ चींटीओं का बिल; "उत्तिंगपणगदगमट्टीमक्कडासंताणासंकमणे" (पडि)। ३ चींटीओं का संतान ; (दसा ३)। ४ तृण के अग्रभाग पर स्थित जल-बिन्दु ; (आचा)। ५ वनस्पति-विशेष, सर्पच्छत्रा, गुजराती में जिसको "बिलाडी नी टोप" कहते हैं,

"गहणेसु न चिट्ठिज्जा, बीएसु हरिएसु वा।
उदगम्मि तहा निच्चं, उत्तिंगपणगेसु वा" (दस ८, ११)।

६ न. छिद्र, विवर, रन्ध्र ; (निचू १८; आचा २, ३, १, १६)। °**लेण** न [°लयन] कीट-विशेष का गृह—बिल; (कप्प)।

उत्तिण वि [उत्तृण] तृण-शून्य ;

"झंझावाउत्तिणवरविवरपलोट्टंतसलिलधाराहिं।
कुड्डलिहिओहिदिअहं रक्खइ अज्जा करअलेहिं" (गा १७०)।

उत्तिणिअ वि [उत्तृणित] तृण-रहित किया हुआ "झंझावाउत्तिणिए घरम्मि" (गा ३१५)।

उत्तिण्ण वि [उत्तीर्ण] १ बाहर निकला हुआ "उत्तिण्णा तलागाओ" (महा) ; 'दिट्ठं च महासरवरं, मज्जिओ जहाविहिं तम्मि, उत्तिण्णो य उत्तरपच्छिमतीरं" (महा)। २ पार पहुँचा हुआ, पार-प्राप्त ; (स ३३२); "उत्तिण्णा समुद्दं, पत्ता वीयभयं" (महा)। ३ जो कम हुआ हो, 'संचरइ चिरपडिग्ग हलायणगुत्तिसरणवेससोहग्गो" (गउड) ; ४ रहित "सोहइ अदोसभावो गुणोव्व जइ होइ मच्छरुत्तिण्णो ; (गउड)। ५ निपटा हुआ, जिसने कार्य समाप्त किया हो वह "गहणुत्तिण्णाए" (गा ५५५)। ६ उल्लंघित, अतिक्रान्त ; (राज)।

उत्तिण्ण वि [अवतीर्ण] १ नीचे उतरा हुआ ; "राया दक्खो, तेण साहा गहिया, उत्तिण्णो, निराणंदो किंकायव्वविमूढो गओ चंपं" (महा)।

उत्तित्थ पुंन [उत्तीर्थ] कुपथ, अपमार्ग ; (भवि)।

उत्तिम देखो **उत्तम** ; (षड् ; पि १०१ ; हे १, ४१; निचू १)।

उत्तिमंग देखो **उत्तमंग** ; (महा ; पि १०१)।

उत्तिन्न देखो **उत्तिण्ण** ; (काप्र १४६ ; कुमा)।

उत्तिरिविडि, **उत्तिवडा** } स्त्री [दे] भाजन वगैरः का ऊंचा ढग, भाजनों को थप्पी ; गुजराती में जिसको 'उतरेवड' कहते हैं ; (दे १, १२२)। "फोडेइ विरालो लोलयाए सारेवि उत्तिवडं" (उप ७२८टी)।

उत्तुंग वि [उत्तुङ्ग] ऊँचा, उन्नत; (महा; कप्पू ; गउड)।

उत्तुंड वि [उत्तुण्ड] उन्मुख, ऊर्ध्व-मुख ; (गउड)।

उत्तुण वि [दे] गर्व-युक्त, दृप्त, अभिमानी ; (दे १, ९६; गउड)।

उत्तुप्पिय वि [दे] स्निग्ध, चिकना ; (विपा १, २)।

उत्तुय सक [उत्+तुद] पीडा करना, हैरान करना। वकृ—**उत्तुयंत** ; (विपा १, ७)।

उत्तुरिद्धि स्त्री [दे] १ गर्व, अभिमान ; २ वि. गर्वित, अभिमानी ; (दे १, ६६)।

उत्तुर्व वि [दे] दृप्त, देखा हुआ ; (षड्)।

उत्तुहिअ वि [दे] उत्खोटित, छिन्न, नष्ट; (दे १, १०५ ; १११)।

उत्तूह पुं [दे] किनारा-रहित इनारा, तट-शून्य कूप ; (दे १, ६४)।

उत्तेअ वि [उत्तेजस्] १ तेजस्वी, प्रखर; २ पुं. मात्रा-वृत का एक भेद; (पिंग ; नाट)।

उत्तेअण न [उत्तेजन] उत्तेजन ; (मुद्रा १६८)।

उत्तेइअ } वि [उत्तेजित] उद्दीपित, प्रोत्साहित, प्रेरित;
उत्तेजिअ } (दस ३ ; पाअ)।

उत्तेड } पुं [दे] बिन्दु; (पिण्ड १६); "सितो य एसो घड-
उत्तेडय } उत्तडएहिं" (स २६४)।

उत्थ न [उक्थ] १ स्तोत्र-विशेष; २ याग-विशेष; (विसे)

उत्थ वि [उत्थ] उत्पन्न, उत्थित; (सुपा १६६; गउड)।

उत्थइय वि [अवस्तृत] १ व्याप्त; (से ४, ३८)। २ प्रसारित, फैलाया हुआ ; ३ आच्छादित; "अच्छरगमउयमसूरगउच्छ-(? त्थ)-इयं भद्दासणं रयावेइ" (णाया १, १ ; पि ३०६)।

उत्थंगिअ देखो उत्थंघिअ=उत्तम्भित; (पि ५०५)।

उत्थंघ सक [उद्+नमय्] ऊँचा करना, उन्नत करना। उत्थंघइ ; (हे ४, ३६)।

उत्थंघ सक [उत्+स्तम्भ्] १ उठाना। २ अवलम्बन देना। ३ रोकना; (गउड; से ५, ६)। उत्थंघेइ; (गा ७२४)।

उत्थंघ सक [उत्+क्षिप्] ऊँचा फेंकना। उत्थंघइ; (हे ४ १४४)। संकृ—उत्थंघिअ ; (कुमा)।

उत्थंघ सक [रुध्] रोकना। उत्थंघइ ; (हे ४, १३३)।

उत्थंघ पुं [उत्तम्भ] ऊर्ध्व-प्रसरण, ऊँचा फैलना ; (से ६, ३३)।

उत्थंघण न [उत्तम्भन] ऊपर देखो ; (गउड)।

उत्थंघि वि [उत्क्षेपिन्] ऊँचा फेंकना ; (गउड)।

उत्थंघिअ वि [उन्नमित] ऊँचा किया हुआ, उन्नत किया हुआ ; (कुमा)।

उत्थंघिअ वि [रुद्ध] रोका हुआ ; (कुमा)।

उत्थंघिअ वि [उत्तम्भित] उत्थापित, उठाया हुआ (से ५, ६०)।

उत्थंभि वि [उत्तम्भिन्] १ आघात-प्राप्त ; २ अवलम्बन करने वाला ;

"धारिज्जइ जलनिहीवि कल्लोलोत्थंभिसत्तकुलसेलो।
न हु अन्नजम्मनिम्मिअसुहासुहो कम्म-परिणामो ॥"
(प्रासू १२७)।

उत्थंभिअ वि [उत्तम्भित] १ अवलम्बित; २ रुका हुआ ; स्तम्भित ; "अइपीणत्थणउत्थंभिआणणे सुअणु सुणसु मह वअणं" (गा ६२४)। ३ बन्धन-मुक्त किया हुआ ; (म ५६८)।

उत्थग्घ पुं [दे] संमर्द, उपमर्द ; (दे १, ६३)।

उत्थय देखो उत्थइय; (कप्प); "निवडंति तणोत्थयकूवियासु तुंगावि मायंगा" (उप ७२८ टी)।

उत्थर सक [आ+क्रम्] आक्रमण करना। संकृ—उत्थरिवि (अप) ; (भवि)।

उत्थर सक [अव+स्तृ] १ आच्छादन करना, ढकना। २ पराभव करना। वकृ—उत्थरंत, उत्थरमाण; (पण्ह १, ३; राज)।

उत्थरिअ वि [आक्रान्त] आक्रान्त, दबाया हुआ ; "उत्थरिओवग्गिआइं अक्कंतं" (पाअ ; भवि)।

उत्थरिय वि [दे] १ निःसृत, निर्गत ; (स ४७३); "अच्छुक्कुत्थरियमहल्लवाहभरनीसहा पडिया" (सुपा २०)। २ उत्थित, उठा हुआ; (दे ७, ६२)।

उत्थल न [उत्स्थल] १ ऊँचा धूलि-राशि, उन्नत रजःपुञ्ज; (भग ७, ६)। २ उन्मार्ग, कुपथ; (से ८, ६)।

उत्थलिअ न [दे] १ घर, गृह ; २ उन्मुख-गत, ऊँचा गया हुआ ; (दे १, १०७ ; स १८०)।

उत्थल्ल अक [उत्+शल्] उछलना, कूदना। उत्थल्लइ ; (षड्)।

उत्थल्लपत्थल्ला स्त्री [दे] दोनों पार्श्वों से परिवर्तन, ऊथल-पाथल ; (दे १, १२२)।

उत्थल्ला स्त्री [दे] १ परिवर्तन; (दे १, ६३)। २ उद्वर्तन; (गउड)।

उत्थल्लिअ वि [उच्छलित] उछला हुआ "उत्थल्लिअं उच्छलिअं" (पाअ)।

उत्थाइ वि [उत्थायिन्] उठने वाला; (दे ८, १६)।

उत्थाइय वि [उत्थापित] उठाया हुआ "पुव्वुत्थाइयनरवरदेसे दंडाहिवं ठवइ महणं" (सुपा ३५२)।

उत्थाण न [**उत्थान**] १ वीर्य, बल, पराक्रम ; (विसे २८-२६) । २ उत्थान, उत्पत्ति ;

"वंछावाही असज्झो न नियत्तइ ओसहेहिं कएहिं ।
तम्हा तीउत्थाणं निरुंभियव्वं हिएसीहिं"
(सुपा ४०४) ।

उत्थामिय (अप) वि [**उत्थापित**] उठाया हुआ; (भवि) ।

उत्थार सक [**आ+क्रम्**] आक्रमण करना, दबाना । उत्थारइ ; (हे ४, १६० ; षड्) ।

उत्थार देखो **उच्छाह**=उत्साह; (हे २, ४८ ; षड्) ।

उत्थारिय वि [**आक्रान्त**] आक्रान्त, दवाया हुआ "उत्थारि-अअंतरंगरिउवग्गो" (कुमा ; सुपा ५४६) ।

उत्थिय देखो **उट्ठिय** ; (हे ४, १६ ; पि ३०६) ।

उत्थिय देखो **उत्थइअ** ; (पंचा ८) ।

°**उत्थिय** वि [°**तीर्थिक**] मतानुयायी, दर्शनानुयायी; (उवा; जीव ३) ।

°**उत्थिय** वि [°**यूथिक**] यूथ-प्रविष्ट, "अण्णउत्थिय—"(उवा; जीव ३) ।

उत्थुभण न [**अवस्तोभन**] अनिष्ट की शान्ति के लिए किया जाता एक प्रकार का कौतुक, थू थू आवाज करना ; (बृह १) ।

उद न [**उद**] जल, पानी ; "अवि साहिए दुवे वासे सीओदं अभोच्चा निक्खंते" (आचा ; भग ३, ६) । °**उल्ल**, °**ओल्ल** वि (°**आर्द्र**) पानी से गीला; (ओघ ४८६ ; पि १६१) । °**गत्ताभ** न (°**गर्त्ताभ**) गोत्र विशेष; (ठा ७) ।

उदइय देखो **ओदइय** ; (अणु) ।

उदइल्ल वि [**उदयिन्**] उदयवान्, उन्नति-शील ; "सिरि-अभयदेवसूरी अपुव्वसूरो सयावि उदइल्लो" (सुपा ६२२) ।

उदंक पुं [**उदङ्क**] जल का पात्र-विशेष, जिससे जल ऊँचा छिटका जाता है; (जं २) ।

उदंच सक [**उद्+अञ्च्**] ऊँचा जाना ; (कुमा) ।

उदंचण न [**उदञ्चन**] १ ऊँचा फेंकना ; २ वि. ऊँचा फेंकने वाला ; (अणु) ।

उदंचिर वि [**उदञ्चितृ**] ऊँचा जाने वाला ; (कुमा) ।

उदंत पुं [**उदन्त**] हकीकत, समाचार, वृत्तान्त ; "णिअमे-ऊण कइवलं वीओदंतो व्वराहवस्स उवणिओ" (से ४, ५५; स ३० ; भग) ।

उदग पुंन [**उदक**] जल, पानी ; "चत्तारि उदगा पण्णत्ता" (ठा ४; जी ५) । २ वनस्पति-विशेष; (दस ८, ११) । ३ जलाशय; (भग १, ८) । ४ पुं. स्वनाम-ख्यात एक जैन साधु ; ५ सातवें भावि जिनदेव; (सुअ २, ७) । °**गब्भ** पुं [°**गर्भ**] बद्दल, बादल, अभ्र ; (भग २, ५) । °**दोणि** स्त्री [°**द्रोणि**] १ जल रखने का पात्र-विशेष, ठंढ़ा करने के लिए गरम लोहा जिसमें डाला जाता है वह ; (भग १६, १) । २ जो अरघट्ट में लगाया जाता है वह छोटा घड़ा; (दस ७) । °**पोग्गल** न [°**पौद्गल**] बद्दल, मेघ ; (ठा ३, ३) । °**मच्छ** पुं [°**मत्स्य**] इन्द्र-धनुष का खण्ड, उत्पात-विशेष ; (भग ३, ६) । °**माल** पुंस्त्री [°**माल**] जल का ऊपर चढ़ता तरङ्ग , उदक-शिखा, वेला ; (ठा १० ; जीव ३) । °**वत्थि** स्त्री [°**वस्ति**] दृति, पानी भरने की मशक ; (णाया १, १८) । °**सिहा** स्त्री [°**शिखा**] वेला ; (ठा १०) । °**सीम** पुं [°**सीमन्**] पर्वत-विशेष ; (इक) ।

उदग्ग वि [**उदग्र**] १ सुन्दर, मनोहर; "ततो दट्ठुं तीए रूवं तह जोव्वणमुदग्गं" (सुर १, १२२) । २ उग्र, उत्कट, प्रखर ; (ठा ४, २ ; णाया १, १ ; सत ३०) । ३ प्रधान, मुख्य ; "उदग्गचारित्ततवो महेसी" (उत्त १३) ।

उदत्त वि [**उदात्त**] स्वर-विशेष, जो उच्च स्वर से बोला जाय वह स्वर ; (विसे ८५२) ।

उदन्ना स्त्री [**उदन्या**] तृषा, तरस, पिपासा ; (उप १०३१ टी) ।

उदय देखो **उदग** ; (णाया १, ८ ; सम १५३ ; उप ७२८ टी ; प्रासू ७२ ; पण्ण १) ।

उदय पुं [**उदय**] १ अभ्युदय, उन्नति ; "जो एवंविहंपि कज्जं आयरइ, सो किं बंभदत्तकुमारस्स उदयं इच्छइ ?" (महा) । २ उत्पत्ति ; (विसे) । ३ विपाक, कर्म-परिणाम;

"वहमारणअब्भक्खाणदाणपरधरविलोवणाईणं ।
सव्वजहन्नो उदओ दसगुणिओ एक्कसि कयाणं"
(उव) ।

४ प्रादुर्भाव, उद्गम "आइच्चोदए चंदगहा इव निप्पभा जाया पुरा" (महा) ;

"उदयम्मिवि अत्थमणेवि धरइ रत्तत्तणं दिवसनाहो ।
रिद्धीसु आवईसुवि तुल्लच्चिय हुंति सप्पुरिसा ।"
(प्रासू १२) ।

५ भरतक्षेत्र के भावी सातवें जिन-देव ; (सम १५३) । ६ भरत क्षेत्र में होने वाले तीसरे जिन-देव का पूर्व-भवीय नाम ; (सम १५४) । ७ स्वनाम-ख्यात एक राजकुमार ; (पउम

२१, ५६)। °यल पुं [°चल] पर्वत-विशेष, जहां सूर्य उदित होता है ; (सुपा ८८)।

उदयंत देखो **उदि**।

उदायण पुं [**उदयन**] १ एक राज-कुमार, कोशाम्बी नगरी के राजा शतानीक का पुत्र ; (विपा १, ५)। २ एक विख्यात जैन राजा ; (कप्प)। ३ न. उन्नति, उदय ; ४ वि. उन्नत होने वाला, प्रवर्धमान ; (ठा ५, ३)।

उदर न [**उदर**] १ पेट, जठर ; (सूअ १, ८)। २ पेट की बिमारी ; " खयजरवणलूआसाससोसोदराणि " (लहुअ १५)।

उदरंभरि वि [**उदरम्भरि**] स्वार्थी, एकलपेटा ; (पि ३७६)।

उदरि वि [**उदरिन्**] पेट की बीमारी वाला ; (पण्ह २, ५)।

उदरिय वि [**उदरिक**] ऊपर देखो ; (विपा १, ७)।

उदवाह वि [**उदवाह**] १ पानी वहन करने वाला, जल-वाहक ; २ पुं. छोटा प्रवाह ; (भग ३, ६)।

उदहि पुं [**उदधि**] १ समुद्र, सागर; (कुमा)। २ भवनपति देवों की एक जाति, उदधिकुमार; (पण्ह १, ४)। °**कुमार** पुं [°**कुमार**] देवों की एकजाति; (पण्ण १)। देखो **उअहि**।

उदाइ पुं [**उदायिन्**] १ एक जैन राजा, महाराजा कोणिक का पुत्र , जिसको एक दुष्ट ने जैन साधु बन कर धर्मच्छल से मारा था, और जो भविष्य में तीसरा जिन-देव होगा; (ठा ६; ती)। २ पुं. राजा कूणिक का पट्ट-हस्ती; (भग १६, १)।

उदायण पुं [**उदायन**] सिन्धु-देश का एक राजा, जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा ली थी; (ठा ८; भग ३, ६)।

उदार देखो **उराल** ; (उप पृ १०८)।

उदासि वि [**उदासिन्**] उदास, उदासीन। °**त्त** न [°**त्व**] औदासीन्य ; (रंभा ; स ४५६)।

उदासीण वि [**उदासीन**] १ मध्यस्थ, तटस्थ ; (पण्ह १, २)। २ उपेक्षा करने वाला ; (ठा ६)।

उदाहड वि [**उदाहृत**] कथित, दृष्टान्तित ; (राज)।

उदाहर सक [**उदा+हृ**] १ कहना। २ दृष्टान्त देना। उदाहरंति; (पि १४१)। " भांसं मुसं नेव उदाहरिज्जा" (सत्त ४३)। भूका—उदाहु; (आचा; उत्त १४, ६); उदाहू ; (सूअ १, १२, ४)। वकृ—**उदाहरंत** ; (सूअ १, १२, ३)।

उदाहरण न [**उदाहरण**] १ कथन, प्रतिपादन। २ दृष्टान्त; (सूअ १, १२ ; विसे)।

उदाहिय वि [**उदाहृत**] १ कथित, प्रतिपादित ; २ दृष्टान्तित ; (आचा ; गाया १, ८)।

उदाहिय वि [**दे**] उत्क्षिप्त, फेंका गया ; (षड्)।

उदाहु देखो **उदाहर**।

उदाहु अ [**उताहो**] अथवा, या ; (उवा)।

उदाहु देखो **उदाहर**।

उदाहो देखो **उदाहु**=उताहो ; (स्वप्न ७०)।

उदि अक [**उद्+इ**] १ उन्नत होना। २ उत्पन्न होना। उदेइ ; (विसे १२६६; जीव ३)। वकृ—**उदयंत** ; (भग ; पउम ८२, ५६ ; सुपा १६८)। कवकृ—**उदिज्जंत** ; (विसे ५३०)।

उदिक्खिअ वि [**उदीक्षित**] अवलोकित; (दे ६, १४४)।

उदिण्ण वि [**उदीच्य**] उत्तर-दिशा में उत्पन्न; (आवम)।

उदिण्ण } वि [**उदीर्ण**] १ उदित, उदय-प्राप्त; (ठा ५); **उदिन्न** } "इक्को वि इक्को विसओ उदिन्नो" (सत्त ५२)। २ फलोन्मुख (कर्म); (पण्ण १६; भग)। ३ उत्पन्न; " जहा उदिण्णो नणु कोवि वाही " (सत्त ५ ; श्रा २७)। ४ उत्कट, प्रबल " अणुत्तरोववाइयाणं भंते ! देवा किं उदिण्णमोहा, उवसंतमोहा, खीणमोहा ? " (भग ५, ४)।

उदिय वि [**उदित**] उदित, उद्गत ; (सम ३६)। २ उन्नत ; (ठा ४)। ३ उक्त, कथित ; (विसे ३५७६)।

उदीण वि [**उदीचीन**] १ उत्तर दिशा से संबन्ध रखने वाला, उत्तर दिशा में उत्पन्न ; (आचा ; पि १६५)। °**पाईणा** स्त्री [°**प्राचीना**] ईशान कोण ; (भग ५, १)।

उदीणा स्त्री [**उदीचीना**] उत्तर दिशा ; (ठा १, १)

उदीर सक [**उद्+ईरय्**] १ प्रेरणा करना। २ कहना, प्रतिपादन करना। ३ जो कर्म उदय-प्राप्त न हो उसको प्रयत्न-विशेष से फलोन्मुख करना। उदीरइ, उदीरेंति; (भग; पंनि ७८)। भूका—उदीरिंसु, उदीरेंसु ; (भग)। भवि—उदीरिस्संति ; (भग)। वकृ—**उदीरेंत** ; (ठा ७)। " कुसलवइमुदीरेंतो " (उप ६०४)। कवकृ—**उदीरिज्जमाण** ; (पण्ण २३)। हेकृ—**उदीरेत्तए** ; (कस)।

उदीरण न [**उदीरण**] १ कथन, प्रतिपादन। २ प्रेरणा। ३ काल-प्राप्त न होने पर भी प्रयत्न-विशेष से किया जाता कर्म-फल का अनुभव ; (कम्म २, १३)।

उदीरणया } स्त्री [**उदीरणा**] ऊपर देखो ; (कम्म २,
उदीरणा } १३; १)। "जं करणेणोकड्ढिय उदए दिज्जइ उदीरणा एसा" (कम्मप १४३ ; १६६)।

उदीरय वि [**उदीरक**] १ कथक, प्रतिपादक। २ प्रेरक, प्रवर्तक "एक्कमेक्कं विसयविसउदीरएसु" (पण्ह १, ४)। ३ उदीरणा करने वाला, काल-प्राप्त न होने पर भी प्रयत्न-विशेष से कर्म-फल का अनुभव करने वाला ; (कम्मप १५६)।

उदीरिय वि [**उदीरित**] १ प्रेरित "चालियाणं घट्टियाणं खोभियाणं उदीरियाणं केरिसे सद्दे भवति" (राय; जीव ३)। २ कथित, प्रतिपादित "धीरे धम्मे उदीरिए" ; आचा)। ३ जनित, कृत; "ससद्दफासा फरुसा उदीरिया" (आचा)। ४ समय-प्राप्त न होने पर भी प्रयत्न-विशेष से खींच कर जिसके फल का अनुभव किया जाय वह (कर्म) ; (पण्ण २३ ; भग)।

उदु देखो उउ ; (प्राप ; अभि १८६ ; पि ५७)।

उदुंबर देखो उंवर; (कस)।

उदुरुह सक [उद्+रुह्] ऊपर चढ़ना। उदुरुहइ ; (पि ११८)।

उदूखल देखो उऊखल ; (पि ६६)।

उदूलिय वि [दे] अवनत, नीचा नमा हुआ ; (षड्)।

उदूहल देखो उऊहल ; (आचा ; पि ६६)।

उद्द न [दे] १ जल-मानुष; २ ककुद, बैल के कंधे का कुब्बड़; (दे १, १२३)। ३ मत्स्य-विशेष ; ४ उसके चर्म का बना हुआ वस्त्र ; (आचा)।

उद्द वि [**आर्द्र**] गिला, आर्द्र ; (षड्)।

उद्दंड } वि [**उद्दण्ड**] १ प्रचण्ड, उद्धत ; (कुमा;
उद्दंडग } गउड)। २ पुं. हाथ में दण्ड को ऊँचा रख कर चलने वाले तापसों की एक जाति; (औप; निचू १)।

उद्दंतुर वि [**उद्दन्तुर**] १ जिसका दान्त बाहर आया हो वह ; २ ऊँचा ; (गउड)।

उद्दंभ पुं [**उद्दम्भ**] छन्द का एक भेद ; (पिंग)।

उद्दंस पुं [**उद्दंश**] मधुमक्षिका, मत्कुण आदि छोटा कीट ; (कप्प)।

उद्दड्ढ पुं [**उद्दग्ध**] रत्नप्रभा नरक-पृथिवी का एक नरकावास; (ठा ६)। **°मज्झिम** पुं [**°मध्यम**] रत्नप्रभा पृथिवी का एक नरकावास ; (ठा ६)। **°वत्त** पुं [**°वर्त्त**] देखो पूर्वोक्त अर्थ ; (ठा ६)। **°वसिट्ठ** पुं [**°वशिष्ट**] देखो पूर्वोक्त अर्थ ; (ठा ६)।

उद्दर न [**दे. ऊर्ध्वदर**] सुभिक्ष, सुकाल ; (बृह १)।

उद्दरिअ वि [**दे**] १ उत्खात, उखाड़ा हुआ; (दे १, १००)। २ स्फुटित, विकसित "फुडिअं फलिअं च दलिअं उद्दरिअं" (पाअ)।

उद्दरिअ वि [**उद्+दृप्त**] गर्वित, उद्धत, अभिमानी; (षड्)।

उद्दलण न [**उद्दलन**] विदारण ; (गउड)।

उद्दव सक [**उद्, उप+द्रु**] १ उपद्रव करना, पीड़ा करना। २ मारना, विनाश करना हिंसा करना। "तए णं सा रेवई गाहावईणी अन्नया कयाइ तासिं दुवालसण्हं सवत्तीणं अंतरं जाणित्ता छ सवत्तीओ सत्थप्पओगेणं **उद्दवेइ, उद्दवेइत्ता** छ सवत्तीओ विसप्पओगेणं **उद्दवेइ, उद्दवेइत्ता** तासिं दुवालसण्हं सवत्तीणं कोलघरियं एगमेगं हिरण्णकोडिं एगमेगं वयं सयमेव पडिवज्जेइ, २ त्ता महासयएणं समणोवासएणं सद्धिं उरालाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी विहरइ" (उवा)। भवि—उद्दवेहिइ; (भग १५)। कवकृ—**उद्दविज्जमाण**; (सूअ २, १)। कृ—**उद्दवेयव्व** ; (सूअ २, ३)।

उद्दवअ पुं [**उद्द्रव, उपद्रव**] १ उपद्रव ; २ विनाश, हिंसा ; "आरंभो उद्दवओ" (श्रा ७)।

उद्दवइत्तु वि [**उद्द्रोतृ, उपद्रोतृ,**] १ उपद्रव करने वाला; २ हिंसक, विनाशक ; "से हंता छेत्ता भेत्ता लुंपित्ता उद्दवइत्ता विलुंपित्ता अकडं करिस्सामि त्ति मन्नमाणे" (आचा)।

उद्दवण न [**उद्द्रवण, उपद्रवण**] १ उपद्रव, हरकत ; "उद्दवणं पुण जाणसु अइवायविवज्जियं" (पिंड; औप)। २ विनाश, हिंसा ; (सं ८४ ; आचा २)।

उद्दवणया } स्त्री [**उद्द्रवणा, उपद्रवणा**] ऊपर देखो ;
उद्दवणा } (भग ; पण्ह १, १)।

उद्दवाइअ देखो **उड्डुवाइय** ; "समणस्स णं भगवओ महावीरस्स णव गणा हुत्था, तं०—गोदासे गणे उत्तरबलिस्सहगणे उद्देहगणे चारणगणे उद्दवातित-(इअ)-तगणे विस्सवाति-(इअ)-गणे कामड्ढित-(अ)-गणे माणवगणे कोडितगणे" (ठा ६)।

उद्दविअ वि [**उद्द्रुत, उपद्रुत**] १ पीडित ; "संघाइआ संघट्टिआ परियाविआ किलामिआ उद्दविया ठाणाओ ठाणं संकामिआ" (पडि)। २ विनाशित "नाऊण विभंगेणं नियजिट्ठसुयस्स विलसियं, तो सो सकुडुंबो उद्दविओ" (सुपा ४०६)।

उद्दवेत्तु देखो **उद्दवइत्तु** ; (आचा)।

उद्दा सक [**उद्+दा**] बनाना, निर्माण करना। उद्दाइ; (भग)।

उद्दा अक [अव+द्रा] मरना। उद्दाइ, उद्दायाति ; (भग)। संकृ—उद्दाइत्ता ; (जीव ३; ठा १०; भग)।

उद्दाइआ स्त्री [उद्द्रोत्री, उपद्रोत्री] उपद्रव करने वाली स्त्री ; "ताए वा उद्दाइआए कोइ संजओ गहितो होज्जा" (आघ १८भा, टी)।

उद्दाइंत देखो उद्दाय=शुभ्।

उद्दाइत्ता देखो उद्दा=अव+द्रा।

उद्दाण स्त्री [दे] चुल्हा, चुल्ली, जिस पर रसोई पकाई जाती है; (दे १, ८७)।

उद्दाम वि [उद्दाम] १ स्वैर, स्वच्छन्द ; (पाअ)। २ प्रचण्ड, प्रखर ; "ता सजलजलहरुद्दामगहिरसद्देण ताण तं कहइ" (सुपा २३४)। ३ अव्यवस्थित ; (हे १, १७७)।

उद्दाम पुं [दे] १ संघात, समूह; २ स्थपुट, विषमोन्नत प्रदेश; (दे १, १२६)।

उद्दामिय वि [उद्दामित] लटकता हुआ, प्रलम्बित ; "तत्थ णं बहवे हत्थी पासति सण्णद्धबद्धवम्मियगुडिते उप्पीलियकच्छे उद्दामियघंटे" (विपा १, २)।

उद्दाय अक [शुभ्] शोभना, शोभित होना, अच्छा मालूम देना। वकृ—"उववणेसु परहुयरुयपरिभितसंकुलेसु उद्दायंतरत्तइंदगोवयथोवयकारुन्नविलविएसु" (णाया १, १)। उद्दाइंत ; (णाया १, १ टी)।

उद्दरिअ वि [दे] १ युद्ध से पलायित, रण-द्रुत। २ उत्खात, उन्मूलित ; (षड्)।

उद्दाल सक [आ+छिद्] खींच लेना, हाथ से छीन लेना। उद्दालइ; (हे ४, १२५ ; षड्; महा)। हेकृ—उद्दालेउं; (पि ५७७)।

उद्दाल पुं [अवदाल] १ दबाव, अवदलन "तंसि तारिसगंसि सयणिज्जंसि...गंगापुलिणवालुअउद्दालसालिसए" (कप्प ; णाया १, १)। २ वृक्ष-विशेष ; (जीव ३)। ३ अवसर्पिणी काल का प्रथम आरा—समय-विशेष ; (जं २)।

उद्दालिय वि [आच्छिन्न] छीना हुआ; खींच लिया गया ; (पाअ; कुमा; उप पृ ३२३)। "दो सारंवलिद्दावि हु तेहिं उद्दालिया" (सुपा २३८)।

उद्दावणया स्त्री [उपद्रावणा] उपद्रव, हैरानी ; (राज)।

उद्दाह पुं [उद्दाह] १ प्रखर दाह ; २ आग ; (ठा १०)।

उद्दाहग वि [उद्दाहक] आग लगाने वाला; (पण्ह १,३)।

उद्दिट्ठ वि [उद्दिष्ट] १ कथित, प्रतिपादित ; (विपा २, १)। २ निर्दिष्ट ; (दस)। ३ दान के लिए संकल्पित (अन्न, पानादि); "णायपुत्ता उद्दिट्ठभत्तं परिवज्जयंति" (सूअ २, ६)। ४ लक्षित; (सूअ २, ६)। ५ न. उद्देश; (पंचा १०)। °कड वि [°कृत] साधु के उद्देश से बनाया हुआ, साधु के निमित्त किया हुआ (भोजनादि) ; (दस १०)।

उद्दिट्ठा स्त्री [दे. उद्दिष्टा] तिथि-विशेष, अमावस्या ; (औप)।

उद्दित्त वि [उद्दीप्त] प्रज्वलित ; (बृह १)।

उद्दिस सक [उद्+दिश्] १ नाम निर्देश-पूर्वक वस्तु का निरूपण करना। २ देखना। ३ संकल्प करना। ४ लक्ष्य करना। ५ अंगीकार करना। ६ सम्मति लेना। ७ समाप्त करना। ८ उपदेश देना। उद्दिसइ; (वव २, ७)। कर्म—"दस अज्झयणा एक्कसरगा दससु चेव दिवसेसु उद्दिस्संति" (उवा)। कवकृ—उद्दिसिज्जंत; (आवम)। संकृ—"गओ तासिं समीवं, पुच्छियं महुरवाणीए एक्कं कन्नगं उद्दिसिऊण, कओ तुब्भे" (महा ; वव १, ७) ; "तदवसाणे य एक्का पवरमहिला बंधुमइं उद्दिस्स कुमारउत्तमंगे अक्खए पक्खिवइ; (महा); उद्दिसिय; (आचा २, १; अभि १०४)। हेकृ-उद्दिसिउं, उद्दिसित्तए ; (वव १,१० भा; ठा २,१); प्रयो—उद्दिसावित्तए, उद्दिसावेत्तए; (बृह १; कस)।

उद्दिसिअ देखो उद्दिट्ठ ; (आचा २)।

उद्दिसिअ वि [दे] उत्प्रेक्षित, वितर्कित; (दे १, १०६)।

उद्दीवण न [उद्दीपन] १ उत्तेजन; २ वि. उत्तेजक; (मै ५८ ; रंभा)।

उद्दीवणिज्ज वि [उद्दीपनीय] उद्दीपक, उत्तेजक, "मयणुद्दीवणिज्जेहिं विविहेहिं भूसणेहिं" (रंभा)।

उद्दीविअ वि [उद्दीपित] प्रदीपित, प्रज्वालित; (पाअ)। "चीयाए पक्खिविउं तत्तो उद्दीविओ जलणो" (सुर ६, ८८)।

उद्दुय वि [उद्द्रुत] पलायित ; (पउम ६, ७०)।

उद्दुय वि [उपद्रुत] हैरान किया हुआ ; (स १३१)।

उद्देस देखो उद्दिस। उद्देसइ ; (भवि)।

उद्देस पुं [उद्देश] १ नाम-निर्देश-पूर्वक वस्तु-निरूपण ; (विसे)। २ शिक्षा, उपदेश; "उद्देसो पासगस्स णत्थि" (आचा)। ३ व्यपदेश, व्यवहार ; (आचा)। ४ लक्ष्य; ५ अभिप्राय, मतलब ; (विसे)। ६ ग्रन्थ का एक अंश ; (भग

१, १)। ७ प्रदेश, अवयव; "खुब्भंति खुहिअमअरा आवाआलगहिरा समुद्दुद्देसा" (से ५, १६ ; १, २०)। ८ गुरु-प्रतिज्ञा, गुरु-वचन; (विसे)। ६ जगह, स्थान; (कप्पू)।

उद्देसण न [**उद्देशन**] १ पाठन, वाचना, अध्यापन; "उद्दिसण वायणति पाठणया चेव एगट्ठा" (पंचभा ; पण्ह २, ५)। २ अधिकारिता, योग्यता; (ठा ४, ३)।

उद्देसणा स्त्री [**उद्देशना**] ऊपर देखो; (पंचभा)।

उद्देसिय न [**औद्देशिक**] १ भिक्षा का एक दोष, साधु के लिए भोजन-निर्माण; २ वि. साधु-निमित बनाया हुआ (भोजन); (कस)। "उद्देसियं तु कम्मं एत्थं उद्दिस्स कीरए जंति" (पंचा १७ ; ठा ६ ; अंत)।

उद्देह पुं [**उद्देह**] भगवान् महावीर का एक गण—साधु-समुदाय; (ठा ६ ; कप्प)।

उद्देहलिया स्त्री [**उद्देहलिका**] वनस्पति-विशेष; (राज)।

उद्देहिया } स्त्री [**दे**] उपदेहिका, दिमक, त्रीन्द्रिय जन्तु-
उद्देही } विशेष; (जी १६ ; स ४३५ ; ओघ ३२३); "उवदेहीइ उद्देही" (दे १, ९३)।

उद्दोहग वि [**उद्द्रोहक**] घातक, हिंसक (पण्ह १, ३)।

उद्ध देखो **उड्ढ** ; (से ३, ३३ ; पि ८३; महा ; हे २, ५६; ठा ३, २)।

उद्धअ वि [**उद्धत**] १ उन्मत्त ; (से ४, १३ ; पाअ)। २ गर्वित, अभिमानी ; (भग ११, १०)। ३ उत्पाटित; (णाया १, १)। ४ अतिप्रबल "उद्धततमंधकार—" (पण्ह १, ३)।

उद्धअ देखो **उद्धरिअ**=उद्धृत। "पावल्लेण उवेच्च व उद्धयपयधारणा उ उद्धारो" (वव १, १०)।

उद्धअ वि [**दे**] शान्त, ठंढ़ा ; (षड्)।

उद्धंत देखो **उद्धा**।

उद्धंस सक [**उद्+धृष्**] १ मारना। २ आक्रोश करना, गाली देना। उद्धंसेइ ; (भग १५)। उद्धंसेंति ; (णाया १, १६)।

उद्धंस सक [**उद्+ध्वंस्**] विनाश करना। संकृ—**उद्धंसिऊण** ; (स ३६२)।

उद्धंसण न [**उद्धर्षण**] १ आक्रोश, निर्भर्त्सन ; २ वध, हिंसा ; (राज)।

उद्धंसणा स्त्री [**उद्धर्षणा**] ऊपर देखो; (ओघ ३८ भा); "उच्चावयाहिं उद्धंसणाहिं उद्धंसेंति" (णाया १, १६)।

उद्धंसिय त्रि [**उद्धर्षित**] आकृष्ट, जिस पर आक्रोश किया गया हो वह ; (निचू ४)।

उद्धच्छवि वि [**दे**] विसंवादित, अप्रमाणित ; (दे १, ११४)।

उद्धच्छविअ वि [**दे**] सज्जित, तय्यार ; (दे १, ११६)।

उद्धच्छिअ वि [**दे**] निषिद्ध, प्रतिषिद्ध; (दे १, १११)।

उद्धट्टु देखो **उद्धर**।

उद्धड वि [**उद्धृत**] उठा कर रखा हुआ ; (धर्म ३)।

उद्धण वि [**दे**] उद्धत, अविनीत ; (षड्)।

उद्धत्थ वि [**दे**] विप्रलब्ध, वञ्चित ; (दे १, ९६)।

उद्धदेहिय न [**औध्र्वदेहिक**] अग्नि-संस्कार आदि अन्त्येष्टि-क्रिया ; (स १०६)।

उद्धम सक [**उद्+हन्**] १ शङ्ख वगैरः फूँकना, वायु भरना। २ ऊँचा फेंकना, उड़ाना। कवकृ—**उद्धम्मंताणं** संखाणं सिंगाणं संखियाणं खरमुहीणं" (राय) ; "पायालसहस्सवायवसवेगसलिल**उद्धम्ममाण**दगरयरयंधकारं (रयणागरसागरं)" (पण्ह १, ३ ; औप)।

उद्धर सक [**उद्+हृ**] १ फँसे हुए को निकालना, ऊपर उठाना। २ उन्मूलन करना। ३ दूर करना। ४ खींचना। ५ जीर्ण मन्दिर वगैरः का परिष्कार-संस्कार-करना। ६ किसी ग्रन्थ या लेख के अंश-विशेष को दूसरी पुस्तक या लेखमें अविकल नकल करना। भवि—उद्धरिस्सइ ; (स ५६६)। वकृ—पइनगरं पइगामं पायं जिणमंदिराइं पूयंतो, जिणाइं **उद्धरंतो**" (सुपा २२४) ;

"जयइ धरमुद्धरंतो भरणीसारियमुहग्गचलणेण।
णियदेहेण करेण व पंचंगुलिणा महाकुम्मो ॥" (गउड)।

संकृ—**उद्धरिउं, उद्धरिऊण, उद्धरित्ता, उद्धरित्तु, उद्धट्टु** ; (पंचा १६; प्रारू)। "तं लयं सव्वसो छित्ता, **उद्धरित्ता** समूलया" (उत्त २३ ; पंचा १६) ; "बाहु उद्धट्टु कक्खमणुव्वजे" (सूअ १, ४) ; "तसे पाणे उद्धट्टु पादं रीइज्जा" (आचा २, ३. १, ४)।

उद्धर (अप) देखो **उद्धुर** ; (भवि)।

उद्धरण न [**उद्धरण**] १ ऊपर उठाना ; २ फँसे हुए को निकालना ; (गउड) ; "दीणुद्धरणम्मि धणं न पउत्तं" (विवे १३५)। ३ उन्मूलन ; ४ अपनयन ; (सुअ १, ४ ; ६)।

उद्धरण वि [**दे**] उच्छिष्ट, जूठा ; (दे १,१०६)।

उद्धरिअ वि [**उद्धृत**] १ उत्पाटित, उत्क्षिप्त; " हक्खुत्तं उक्खुडं उक्खित्त-उप्पाडिआइं उद्धरिअं" (पाअ)। २ किसी ग्रन्थ या लेख के अंश-विशेष को दूसरे पुस्तक या लेख में अविकल नकल कर देना;
"एसो जीववियारो, संखेवरुईण जाणणा-हेउं।
संखित्तो उद्धरिओ, रुंदाओ सुय-समुद्दाओ" (जी ५१);
"जेण उद्धरिया विज्जा, आगासगमा महापरिण्णाओ" (आवम)।
३ आकृष्ट, खींचा हुआ; ४ निष्कासित, बाहर निकाला हुआ; "उद्धरियसव्वसल्ल—" (पंचा १६)। ५ जीर्ण वस्तु का परिष्कार करना, " जिणमंदिरं न उद्धरिअं" (विवे १३३)।

उद्धरिअ वि [**दे**] अर्दित, विनाशित; (षड्)।

उद्धल पुं [**दे**] दोनों तरफ की अप्रवृत्ति; (षड्)।

उद्धवअ वि [**दे**] उत्क्षिप्त, फेंका हुआ; (दे १, १०६)।

उद्धविअ वि [**दे**] अर्चित, पूजित; (दे १, १०७)।

उद्धा / **उद्धाअ** } सक [**उद्+धाव्**] १ दौड़ना, वेग से जाना। २ उँचे जाना। उद्धाइ; (पि १६५)। वकृ—**उद्धंत, उद्धाअंत, उद्धायमाण**; (कप्प; से ६, ६६; १३, ६१; औप)।

उद्धाअ अक [**ऊर्ध्वाय्**] ऊँचा होना। वकृ—**उद्धाअमाण**; (से १३, ६१)।

उद्धाअ वि [**उद्धाव**] उद्धावित, ऊँचा गया हुआ " छिण्णकडए वहंतं उद्धाअणिअत्तगरुडमग्गिअसिहरे " (से ६, ३६)।

उद्धाअ पुं [**दे**] १ विषमोन्नत प्रदेश; २ समूह; ३ वि. थका हुआ, श्रान्त; (दे १, १२४)।

उद्धाइअ वि [**उद्धावित**] १ फैला हुआ, विस्तीर्ण, प्रसृत; (से ३, ५२)। २ ऊँचा दौड़ा हुआ; (से २, २२)।

उद्धार पुं [**उद्धार**] १ त्राण, रक्षण; (कुमा)। २ ऋण देना, धार देना; (सुपा ५६७; श्रा १४)। ३ अपहरण; (अणु)। ४ अपवाद; (राज)। ५ धारणा, पढ़े हुए पाठ का नहीं भूलना " पावल्लेण उवेच्च व उद्धयपयधारणा उ उद्धारो " (वव १, १०)। °**पलिओवम** न [°**पल्योपम**] समय का एक परिमाण; (अणु)। °**समय** पुं [°**समय**] समय-विशेष; (अणु)। °**सागरोवम** न [°**सागरोपम**] समय का एक दीर्घ परिमाण; (अणु)।

उद्धाव देखो **उद्धा**।

उद्धावण न [**उद्धावन**] नीचे देखो; (श्रा १)।

उद्धावणा स्त्री [**उद्धावना**] १ प्रबल प्रवृत्ति; २ दूर-गमन, दूर क्षेत्र में जाना; (धर्म ३)। ३ कार्य की शीघ्र-सिद्धि; (वव १, १)।

°**उद्धि** देखो **बुद्धि**; (षड्)।

उद्धिअ देखो **उद्धरिअ**=उद्धृत; (श्रा ४०; औप; राय; वव १, १; औप; पच्च २८)।

उद्धीमुह वि [**ऊर्ध्वीमुख**] मुँह ऊँचा किया हुआ; (चंद ४)।

उद्धुंधलिय वि [**दे**] धुंधलाया हुआ; (सण)।

उद्धुणिय देखो **उद्धुय**; (सण)।

उद्धुम सक [**पू**] पूर्ण करना, पूरा करना। उद्धुमइ; (हे ४, १६९)।

उद्धुमा सक [**उद्+ध्मा**] १ आवाज करना; २ जोर से धमनी को चलाना। उद्धुमाइ, उद्धुमाअइ; (षड्; प्रामा)।

उद्धुमाइअ वि [**उद्ध्मापित**] ठंडा किया हुआ, निर्वापित; (से १, ८)।

उद्धुमाय वि [**दे**] १ परिपूर्ण; " मायाइ उद्धुमाया " (कुमा); "पडिहत्थमुद्धुमायं आहिरेइयं च जाण आउण्णे " (पाअ)। २ उन्मत्त; " मअरंदरसुद्धुमाअमुहलमहुअरं " (से ६, ११);

उद्धुय वि [**उद्धूत**] १ पवन से उड़ा हुआ; (से ७, १४)। २ प्रसृत, फैला हुआ " गंधुद्धुयाभिरामे " (औप)। ३ प्रकम्पित; " वाउद्धुयविजयवेजयंती " (जीव ३)। ४ उत्कट, प्रबल; (सम १३७)। ५ व्यक्त, प्रकट; (कप्प)।

उद्धुर वि [**उद्धुर**] १ ऊँचा, उच्च; " उद्धुरं उच्चं " (पाअ)। २ प्रचण्ड, प्रबल; (सुर ३, ३६; १२, १०६)।

उद्धुव्वंत / **उद्धुव्वमाण** } देखो **उद्धू**।

उद्धुसिय वि [**उद्धुषित**] १ रोमाञ्च, " अन्नोन्नजंपिएहिं हसिउद्धुसिएहिं खिप्पमाणो य " (उव)। २ वि. रोमाञ्चित, पुलकित; (दे १, ११५; २, १००); " उद्धुसियरोमकूवो सीयलअनिलेण संकुइयगत्तो " (सुर २, १०१); "उद्धुसियकेसरसढं " (महा)।

उद्धू सक [**उद्+धू**] १ काँपना, चलाना; २ चामर वगैरः बीजना, पंखा करना। कवकृ—**उद्धुव्वंत, उद्धुव्वमाण**; (पउम २, ४०; कप्प)।

उद्धूणिय देखो **उद्धुय**; (सण)।

उद्धूद (**शौ**) देखो **उद्धुय**; (चारु ३५)।

उद्धूल सक [उद+धूलय्] १ व्याप्त करना। २ धूलि लगाना। **उद्धूलेइ** ; (हे ४, २६)।

उद्धूलण न [उद्धूलन] धूलि को अङ्ग पर लगाना।

"जारमसाणसमुब्भवभूइसुहप्फंससिज्जिरंगीए।
ण समप्पइ णवकावालिआइ उद्धूलणारंभो॥"
(गा ४०८)।

उद्धूलिय वि [उद्धूलित] १ धूलि से लपेटा हुआ। २ व्याप्त " तिमिरोद्धूलिअभवणं " (कुमा)।

उद्धूवणिया स्त्री [उद्धूपनिका] धूप देना ;

" केवि हु विरालतनयपुरीसमीसेहिं गुग्गुलाईहिं।
उव्वरियम्मि खिवित्ता उद्धूवणियं पयच्छंति॥"
(सुर १४, १७४)।

उद्धूविअ वि [उद्धूपित] जिसको धूप किया गया हो वह ; (विक्र ११३)।

उद्धोस पुं [उद्धर्ष] उल्लास, ऊँचा होना ; (सट्ठि ६५)। " जं जं इह सुहुमबुद्धीए चिंतिज्जइ तं सव्वं रोमुद्धोसं जणेइ मह अम्मो " (सुपा ६४)।

उन्न न [ऊर्ण] ऊन, मेड़ या बकरी के रोम। °**मय** वि [°मय] ऊन का बना हुआ ;

" गोवालियाण विंदं नच्चावइ फारमुत्तियाहारं।
उन्नमयवासनिवसणपीणुन्नयथणहरामोगं॥"
(सुपा ४३२)।

उन्न (अप) वि [विषण्ण] विषाद-प्राप्त, खिन्न; (षड्)।

उन्नइ देखो **उण्णइ** ; (काल; सुपा २५७; प्रासू २८ ; सार्ध ३४)।

उन्नइज्जमाण देखो **उन्नी**।

उन्नइय वि [उन्नीत] ऊँचा लिया हुआ; (पउम १०५, ५७)।

उन्नंद सक [उद+नन्द्] अभिनन्दन करना। कवकृ— " हिययमालासहस्सेहिं **उन्नंदिज्जमाणे** " (कप्प)।

उन्नय देखो **उण्णय** ; (सुपा ४७६ ; सम ७१; कप्प)।

उन्ना देखो **उण्णा**। °**मय** वि [°**मय**] ऊन का बना हुआ; (सुपा ६४१)।

उन्नाडिय न [उन्नाटित] हर्ष-द्योतक आवाज ; (स ३७६)।

उन्नाम पुं [उन्नाम] १ ऊँचाई। २ अभिमान, गर्व; (सम ७१)।

उन्नामिअ वि [उन्नमित] ऊँचा किया हुआ ; (पात्र; महा ; स ३७७)।

उन्नालिअ वि [दे] देखो **उण्णालिअ** ; " उन्नालिअं उन्नामिअं " (पात्र)।

उन्नाह पुं [उन्नाह] ऊँचाई ; (पात्र)।

उन्निअ देखो **उण्णिअ**=और्णिक; (ओघ ७०५)।

उन्निक्खमण न [उन्निष्क्रमण] दीक्षा छोड़ कर फिर गृहस्थ होना, साधुपन छोड़कर फिर गृहस्थ बनना; (उप १३० टी; ३६६)।

उन्नी देखो **उण्णी**। कवकृ—**उन्नइज्जमाण**; (कप्प)।

उन्हाल (अप) पुं [उष्णकाल] ग्रीष्म ऋतु; (भवि)।

उयंत न [उपान्त] १ पीछला भाग ; २ वि. समीपस्थ; (गा ६६३)।

उपरिं } देखो **उवरिं**; (विसे १०२१; षड्)।
उपरिं }

उपरिल्ल देखो **उवरिल्ल** ; (षड्)।

उपवज्जमाण देखो **उववाय**=उप+वादय्।

उपसप्प देखो **उवसप्प**। उपसप्पइ ; (षड्)। संकृ— **उपसप्पिय** ; (नाट)।

उपाणहिय पुंस्त्री [उपानत्] जूता ; " अन्नदिणे जंपाणेपाणहिए मुत्तमारूढा " (सुपा ३६२)। " तह तं निउपाणहियाउवि वाहिस्सं " (सुपा ३६२)।

उप्प देखो **ओप्प**=अर्पय्। उप्पेइ; (पि १०४; हे १, २६६)।

उप्पइअ वि [उत्पतित] १ ऊँचा गया हुआ, उड़ा हुआ " सेवि य आगासे उप्पइए " (उवा ; सुर ३, ६६)। २ उन्नत, ऊँचा ; (आचा)। ३ उद्भूत, उत्पन्न; (उत्त २)। ४ न. उत्पतन, उड़ना ; (औप)।

उप्पइअ वि [उत्पाटित] उत्थापित, उठाया हुआ; " खुडिउप्पइअमुणालं दट्ठूण पिअं व सिढिलवलअं णलिणिं " (से १, ३०)।

उप्पइअव्व } देखो **उप्पय**=उत्+पत्।
उप्पइउं }

उप्पंक वि [दे] १ बहु, अत्यन्त ; २ पुं. पङ्क, कीचड़, कादा ; ३ उन्नति ; (दे १, १३०)। ४ समूह, राशि; (दे १, १३० ; पात्र ; गउड ; स ४३७)।

उप्पंग पुं [दे] समह; राशि ;

" णवपल्लवं विसण्णा, पहिआ पेच्छंति चूअरुक्खस्स।
कामस्स लोहिउप्पंगराइअं हत्थभल्लं व॥" (गा ५८४)

उप्पज्ज अक [**उत्+पद्**] उत्पन्न होना। उप्पज्जंति; (कप्प)। वकृ—**उप्पज्जंत, उप्पज्जमाण**; (से ८, ५५; सम्म १३४; भग; विसे ३३२२)।

उप्पड सक [**उत्+पत्**] उड़ना, ऊँचा जाना, कूदना; (प्रामा)।

उप्पड पुं [**उत्पट**] त्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष, क्षुद्र कीट-विशेष; (राज)।

उप्पडिअ देखो **उप्पइअ**; (नाट)।

उप्पण सक [**उत्+पू**] धान्य वगैरः को सूप आदि से साफ-सुथरा करना। कर्म—"साली वीही जवा य लुव्वंतु मलिज्जंतु उप्पणिज्जंतु य" (पण्ह १, २)।

उप्पणण न [**उत्पवन**] सूर्प आदि से धान्य वगैरः को साफ-सुथरा करना; (दे १, १०३)।

उप्पण्ण त्रि [**उत्पन्न**] उत्पन्न, संजात, उद्भूत; (भग; नाट)।

उप्पत्त वि [**दे**] १ गलित; २ विरक्त; (षड्)।

उप्पत्ति स्त्री [**उत्पत्ति**] उत्पत्ति, प्रादुर्भाव; (उव)।

उप्पत्तिया स्त्री [**औत्पत्तिकी**] बुद्धि विशेष, विना ही शास्त्राभ्यासादि के होने वाली बुद्धि, स्वाभाविक मति; (ठा ४, ४; णाया १, १)।

उप्पन्न देखो **उप्पण्ण**; (उवा; सुर २, १६०)।

उप्पय अक [**उत्+पत्**] उड़ना, कूदना। उप्पयइ; (महा)। वकृ—**उप्पयंत, उप्पयमाण**; (उप १४२ टी; णाया १, १६)। संकृ—**उप्पइत्ता**; (औप)। कृ—**उप्पइअव्व**; (से ६, ७८)। हेकृ—**उप्पइउं**; (सुर ६, २२२)।

उप्पय देखो **उप्पव**। वकृ—**उप्पअंत**; (से ५, ५६)।

उप्पय पुं [**उत्पात**] १ उत्पतन, ऊँचे जाना, कूदना, उड्डयन। २ उत्पत्ति; "अवट्ठिए चले मंदपडिवाउप्पयाई य" (विसे ५७७)। °**निवय** पुं [°**निपात**] १ ऊँचा-नीचा होना;

"खरपवणुद्धुयसायरतरंगवेगेहिं हीरए नावा।
गुरुकल्लोलवसुट्ठियनंगरनियरेण धरियावि॥
अणवरयतरंगेहिं उप्पयनिवयं कुणंतिया वहइ"

(सुर १३, १६७)। २ नाट्य-विधि का एक प्रकार; (जीव ३)।

उप्पयण न [**उत्पतन**] ऊँचा जाना, उड्डयन; (ठा १०; से ६, २४)।

उप्पयण न [**उत्प्लवन**] जल में गोता लगाना; (से ५, ६०)।

उप्परिं (अप) देखो **उवरिं**; (हे ४, ३३४; पिंग)।

उप्परिवाडि,°डी स्त्री [**उत्परिपाटि,°टी**] उलटा क्रम, विपर्यास, विपर्यय; "उप्परिवाडीवहणे चाउम्मासा भवे लहुगा" (गच्छ १)।

उपरोप्पर अ [**उपर्युपरि**] ऊपर ऊपर; (स १४०)।

उप्पल न [**उत्पल**] १ कमल, पद्म; (णाया १, १; भग)। २ विमान-विशेष; (सम ३८)। ३ संख्या-विशेष, 'उप्पलंग' को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह; (ठा २, ४)। ४ सुगन्धि द्रव्य-विशेष "परमुप्पलगंधिए" (जं ३)। ५ पुं. परिव्राजक-विशेष; (आचू १)। ६ द्वीप-विशेष; ७ समुद्र-विशेष; (पण्ण १५)। °**वेंटग** पुं [°**वृन्तक**] आजीविक मत का एक साधु-समाज; (औप)।

उप्पलंग न [**उत्पलाङ्ग**] संख्या-विशेष, 'हुहुय' को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह; (ठा २, ४)।

उप्पला स्त्री [**उत्पला**] १ एक इन्द्राणी, काल-नामक पिशाचेन्द्र की एक अग्र-महिषी; (ठा ४, १)। २ इस नाम का 'ज्ञाताधर्मकथा' का एक अध्ययन; (णाया २, १)। ३ स्वनाम ख्यात एक श्राविका; (भग १२, १)। ४ एक पुष्करिणी; (जीव ३)।

उप्पलिणी स्त्री [**उत्पलिनी**] कमलिनी, कमल का गाछ; (पण्ण १)।

उप्पल्ल वि [**दे**] अध्यासित, आरूढ; (षड्)।

उप्पव सक [**उत्+प्लु**] १ गोता लगाना, तैरना। २ ऊँचा जाना, उड़ना। वकृ—**उप्पवंत, उप्पवमाण**; (से ५, ६१; ८, ८६)।

उप्पवइय वि [**उत्प्रव्रजित**] जिसने दीक्षा छोड़ दी हो वह, साधु होकर फिर गृहस्थ बना हुआ; (स ४८५)।

उप्पह पुं [**उत्पथ**] उन्मार्ग, कुमार्ग; "पंथाउ उप्पहं नेंति" (निचू ३; से ४, २६; हेका २५६)। °**जाइ** वि [°**यायिन्**] उलटे रास्ते जाने वाला, विपथ-गामी; (ठा ४, ३)।

उप्पा स्त्री. देखो **उप्पाय=उत्पाद**; (ठा १—पत्र १६; ठा ५, ३—पत्र ३४६)।

उप्पाइ वि [**उत्पादिन्**] उत्पन्न होने वाला; (विसे २८१६)।

उप्पाइत्ता देखो **उप्पाय=उत्+पादय्**।

उप्पइत्तु वि [उत्पादयितृ] उत्पादक, उत्पन्न करने वाला; (ठा ७)।

उप्पाइय वि [उत्पादित] उत्पन्न किया हुआ; "उप्पाइयाविच्छिण्णकोउहलते" (राय)।

उप्पाइय वि [औत्पातिक] १ अस्वाभाविक, कृत्रिम; "उप्पाइयपव्वयं व चंकमंतं" २ आकस्मिक, अकस्मात् होने वाला "उप्पाइया वाही" (राज)। ३ न. अनिष्ट-सूचक आकस्मिक उपद्रव, उत्पात;

"भो भो नावियपुरिसा सकन्नधारा समुज्जया होह।
दीसइ कयंतवयणं व भीममुप्पाइयं जेण"
(सुर १३, १८६)।

उप्पाएउं
उप्पाएंत } देखो उप्पाय= उत्+पादय्।
उप्पाएत्तए

उप्पाड सक [उत्+पाटय्] १ ऊपर उठाना; २ उखेड़ना, उन्मूलन करना। उप्पाडेह; (पण्ह १, १; स ६५; काल)। कृ—उप्पाडणिज्ज; (सुपा २४६)। संकृ—उप्पाडिय; (नाट)।

उप्पाड सक [उत्+पादय्] उत्पन्न करना। संकृ—उप्पाडिऊण; (विसे ३३२ टी)।

उप्पाड पुं [उत्पाट] उन्मूलन, उत्खनन; "नयणोप्पाडो" (उप १४६ टी; ६८६ टी)।

उप्पाडण न [उत्पाटन] १ उत्थापन, ऊपर उठाना; २ उन्मूलन, उत्खनन; (स २६६; राज)।

उप्पाडिय वि [उत्पाटित] १ ऊपर उठाया हुआ; (पाअ; प्रासू)। २ उन्मूलित; (आक)।

उप्पाडिय वि [उत्पादित] उत्पन्न किया हुआ; "उप्पाडियणाणं खंदगसीसाण तेसिं नमो" (भाव १३)।

उप्पादअ वि [उत्पादक] उत्पन्न कर्त्ता; (प्रयौ १७)।

उप्पादीअमाण देखो उप्पाय=उत्+पादय्।

उप्पाय सक [उत्+पादय्] उत्पन्न करना, बनाना। उप्पाएहि; (काल)। वकृ—उप्पाएंत, उप्पायंत; (सुर २, २२; ६, १३)। संकृ—उप्पाएत्ता; (भग)। हेकृ—उप्पाइत्ता, उप्पाएउं; उप्पाएत्तए; (राज, पि ४६५; णाया १,४)। कवकृ—उप्पादीअमाण (शौ); (नाट)।

उप्पाय पुंन [उत्पात] १ उत्पतन, ऊर्ध्व-गमन; "नं सग्गं गंतुमणा सिक्खंति नहंगणुप्पायं" (सुपा ८८)। २ आकस्मिक उपद्रव; "पवहणं च पासइ समुद्दमज्झे उप्पाएण छम्मासे भमंतं ताहे अणेण तं उत्पायं उवसामियं" (महा)। ३ आकस्मिक उपद्रव का प्रतिपादक शास्त्र, निमित्त-शास्त्र-विशेष; (ठा ६; सम ४७; पण्ह १, ४) °निवाय पुं [°निपात] चढ़ना और उतरना; (स ४११)।

उप्पाय पुं [उत्पाद] उत्पत्ति, प्रादुर्भाव; (सुपा ६; कुमा)। °पव्वय पुं [पर्वत] एक प्रकार के पर्वत, जहां आकर व्यन्तर-जातीय देव-देवियां क्रीडा के लिए विचित्र प्रकार के शरीर बनाते हैं; (सम ३३; जीव ३)। °पुव्व न [°पूर्व] प्रथम पूर्व, ग्रन्थांश-विशेष, बारहवें जैन अङ्ग-ग्रन्थ का एक भाग; (सम २६)।

उप्पायग वि [उत्पादक] १ उत्पन्न करने वाला; २ त्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष, कीट-विशेष; (वव १, ८)।

उप्पायण न [उत्पादन] १ उत्पादन; उपार्जन; (ठा ३, ४)। २ वि. उत्पादक, उपार्जक; (पउम ३०, ४०)।

उप्पायणया } स्त्री [उत्पादना] १ उपार्जन, उत्पन्न
उप्पायणा } करना; २ जैन साधु की भिक्षा का एक दोष; (ओघ ७४६; ठा ३, ४; पिण्ड १)।

उप्पाल सक [कथ्] कहना, बोलना। उप्पालइ; (हे ४, २)। उप्पालसु; (कुमा)।

उप्पाव सक [उत्+प्लावय्] १ गोता खिलाना; २ कूदाना, उड़ाना। उप्पावेइ; (हे २, १०६)। कवकृ—उप्पियमाण; (उवा)।

उप्पाहल न [दे] उत्कंठा, उत्सुकता; (पाअ)।

उप्पि सक [अर्पय्] देना। उप्पिउ; (कप्प)।

उप्पिं अ [उपरि] ऊपर; "कहि णं भंते ! जोइसिआ देवा परिवसंति ? गोयमा ! उप्पिं दीवसमुद्दाणं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए" (जीव ३; णाया १, ६; ठा ३, ४; औप)।

उप्पिंगलिआ स्त्री [दे] हाथ का मध्य भाग, करोत्संग; (दे १, ११८)।

उप्पिंजल न [दे] १ सुरत, संभोग; २ रज, धूली; ३ अपकीर्ति, अपयश; (दे १, १३५)।

उप्पिंजल वि [उत्पिञ्जल] अति-आकुल, व्याकुल; (कप्प)।

उप्पिंजल अक [उत्पिञ्जलय्] आकुल की तरह आचरण करना। वकृ—उप्पिंजलमाण; (कप्प)।

उप्पिच्छ [दे] देखो उप्पित्थ। "आहित्थं उप्पिच्छं च आउलं रोसभरियं च" "भीयं दुयमुप्पिच्छमुत्तालं च कमसो

मुग्गेयव्वं" (जीव ३) । "हत्थी अह तस्स सवडहुत्तो पहा-विओ आयरुप्पिच्छो", 'रक्खसमेन्नंपि आयरुप्पिच्छं" (पउम ८, १७५ ; १२, ८७) 'उप्पिच्छमंथरगईहिं" (भत ११६)।

उप्पिण देखो **उप्पण**। वकृ—**उप्पिणिंत**; (सुपा ११)।

उप्पित्थ वि [**दे**] १ त्रस्त, भीत ; (दे १, १२६ ; से १०, ६१ ; स ५७४ ; पुप्फ ४४३ ; गउड) "किं कायव्वविमढा सरणविहूणा भउप्पित्था" (सुर १२, १६०)। २ कुपित, क्रुद्ध ; ३ विधुर, आकुल; (दे १, १२६ ; पाअ)।

उप्पिय सक [**उत्+पा**] १ आस्वादन करना । २ फिर २ श्वास लेना । वकृ—**उप्पियंत**; (पण्ह १,३—पत्र ५५; राज)।

उप्पिय वि [**अर्पित**] अर्पण किया हुआ; (हे १, २६६)।

उप्पियण न [**उत्पान**] फिर २ श्वास लेना ; (राज)।

उप्पियमाण देखो **उप्पाव**।

उप्पिलाव देखो **उप्पाव**। उप्पिलावेइ। वकृ—**उप्पिलावंत** "जे भिक्खू सवणं नावं उप्पिलावेइ, उप्पिलावंतं वा साइज्जइ" (निचू १८)।

उप्पीड पुं [**दे. उत्पीड**] समूह, राशि; (से ४, ३७; ८,३)।

उप्पीडण न [**उत्पीडन**] १ कस कर बाँधना। २ दबाना; (से ८, ६७)।

उप्पील सक [**उत्+पीडय्**] १ कस कर बाँधना। २ उठवाना। "सयणं वा णावं उप्पीलावेज्जा ; (आचा २, ३, १, ११)। उप्पीलवेज्जा ; (पि २४०)।

उप्पील पुं [**दे**] १ संघात; समूह ; (दे १, १२६ ; सुपा ६१; सुर ३, ११६; वज्जा ६०; पुप्फ ७३; धम्म १२ टी)। "हुयासणो दहे सव्वं जालुप्पीलो विणासए" (महा)। २ स्थपुट-विषमोन्नत प्रदेश ; (दे १, १२६)।

उप्पीलण न [**उत्पीडन**] पीडा; उपद्रव; (स २७२)।

उप्पीलिय वि [**उत्पीडित**] कस कर बाँधा हुआ "उप्पीलिय-चिंधपट्टगहियाउहपहरणा" (पण्ह १, ३; विपा १, २)।

उप्पुअ वि [**उत्प्लुत**] उच्छलित, कूदा हुआ; (से ६, ४८; पण्ह १, ३)।

उप्पुंसिअ देखो **उप्पुसिअ**; (से ६, ८५)।

उप्पुणिअ वि [**उत्पूत**] सूर्प से साफ-सूथरा किया हुआ ; (पाअ)।

उप्पुण्ण वि [**उत्पूर्ण**] पूर्ण, व्याप्त ; (स २५)।

उप्पुलइअ वि [**उत्पुलकित**] रोमाञ्चित; (स २८१)।

उप्पुसिअ वि [**उत्प्रोञ्छित**] लुप्त, प्रोञ्छित; (से ६, ८५; गउड)।

उप्पूर पुं [**उत्पूर**] १ प्राचुर्य; (पण्ह १, ३)। २ प्रकृष्ट प्रवाह ; (औप)।

उप्पेक्ख (अप) देखो **उविक्ख**। उप्पेक्ख ; (पिंग)।

उप्पेक्ख सक [**उत्प्र+ईक्ष्**] संभावना करना, कल्पना करना। उप्पेक्खामि ; (स १४७)। उप्पेक्खेमि ; (स ३४६)।

उप्पेक्खा स्त्री [**उत्प्रेक्षा**] १ अलंकार-विशेष ; २ वितर्कणा, संभावना ; (गा ३३६)।

उप्पेक्खिअ वि [**उत्प्रेक्षित**] संभावित, विकल्पित; (दे १, १०६)।

उप्पेय न [**दे**] अभ्यंग, तैलादि की मालिस; "पुव्वं च मंगल-ट्ठा उप्पेयं जइ करेइ गिहियाणं" (वव १, ६)।

उप्पेल सक [**उद्+नमय्**] ऊँचा करना, उन्नत करना। उप्पेलइ ; (हे ४, ३६)।

उप्पेलिअ वि [**उन्नमित**] ऊँचा किया हुआ, उन्नत किया हुआ ; (कुमा)।

उप्पेस पुं [**उत्पेष**] त्रास, भय, डर ; (से १०, ६१)।

उप्पेहड वि [**दे**] उद्भट, आडम्बर वाला ; (दे १, ११६ ; पाअ ; स ४४६)।

°**उप्फ** देखो **पुप्फ** ; (गा ६३६)।

उप्फंदोल वि [**दे**] चल, अस्थिर ; (दे १, १०२)।

उप्फाल पुं [**दे**] खल, दुर्जन ; (दे १, ६० ; पाअ)

उप्फाल सक [**उत्+पाटय्**] १ उठाना। २ उखेड़ना। उप्फालेइ ; (हे २, १७४)।

उप्फाल सक [**कथ्**] कहना, बोलना। उप्फालेइ ; (हे २, १७४)।

उप्फाल वि [**कथक**] कहने वाला, सूचक ; (स ६४४)।

उप्फालिअ वि [**कथित**] १ कथित ; २ सूचित ; (पाअ; उप ७२८ टी ; स ४७८)।

उप्फिड अक [**उत्+स्फिट्**] कुण्ठित होना, असमर्थ होना। उप्फिडइ, उप्फेडइ; "एमाइविगप्पणेहिं वाहिज्जमाणो उप्फिड-(प्फे)-इ परसू" (महा)।

उप्फिडिय वि [**उत्स्फटित**] १ कुण्ठित। २ बाहर निकला हुआ ; "कत्थइ नक्कुक्कत्तियसिप्पिपुडुप्फिडियमोत्तियाइन्नो" (सुर १३, २१३)।

उप्फुंकिआ स्त्री [**दे**] धोबिन, कपड़ा धोने वाली ; (दे १, ११४)।

उप्फुंडिअ वि [**दे**] आस्तृत, बिछाया हुआ ; (दे १,११३)

उप्फुण्ण वि [दे] आपूर्ण, भरा हुआ, व्याप्त ; (दे १, ६२ ; सुर १, २३३ ; ३, २१५)।

उप्फुल्ल वि [उत्फुल्ल] विकसित ; (पाअ ; से ६, ६६)।

उप्फुल्लिआ स्त्री [उत्फुल्लिका] क्रीड़ा विशेष,पाँव पर बैठ कर वारंवार ऊँचा नीचा होना ;

"उप्फुल्लिआइ खेल्लउ, मा णं वारेहि होउ परिऊडा ।
मा जहणभारगरुई, पुरिसाअंती किलिम्मिहिइ"
(गा १९६)।

उप्फुस सक [उत्+स्पृश्] सिंचना, छिटकना । संकृ—**उप्फुसिऊण** ; (राज)।

उप्फेणउप्फेणिय क्रिवि [दे] क्रोध-युक्त प्रवल वचन से; "उप्फेणउप्फेणियं सीहरायं एवं वयासी" (विपा १, ६—पत्र ६०)।

उप्फेस पुं [दे] १ त्रास, भय ; (दे १, ६४)। २ मुकुट, पगड़ी, शिरोवेष्टन ; "पंच रायककुहा पण्णत्ता, तं जहा—खग्गं छत्तं उप्फेसं उवाहणाउ वालवियणी" (ठा ५, १—पत्र ३०३ ; औप ; आचा २, ३, २, २)।

उप्फोअ पुं [दे] उद्गम, उदय ; (दे १, ९१)।

उबुस सक [मृज्] मार्जन करना, शुद्धि करना, साफ करना । **उबुसइ** ; (षड्)।

उब्बंध सक [उद्+बन्ध्] १ फाँसी लगाना, फाँसी लगा कर मरना । २ वेष्टन करना । वकृ—"जलनिहितडम्मि दिट्ठा उब्बंधंती इहप्पाणं" (सुपा १६०)। संकृ—**उब्बंधिअ**, **उब्बंधिऊण** ; (नाट ; पि २७० ; स ३४६)।

उब्बंधण न [उद्बन्धन] फाँसी लगाना, उल्लम्बन ; (पण्ह २, ५)।

उब्बण वि [उल्बण] उत्कट ; (पि २६६)।

उब्बद्ध वि [उद्बद्ध] १ जिसने फाँसी लगाई हो वह; फाँसी लगा कर मरा हुआ । २ वेष्टित; "भुअंगसंघायउब्बद्धो" (सुर ८, ५७)। ३ शिक्षक के साथ शर्तों से बँधा हुआ, शिक्षक के आयत ; (ठा ३),

"सिप्पाई सिक्खंतो, सिक्खावेंतस्स देइ जा सिक्खा ।
गहियम्मिवि सिक्खम्मि, जं चिरकालं तु उब्बद्धो" (वृह)।

उब्बिंब वि [दे] १ खिन्न, उद्विग्न ; २ शून्य ; ३ क्रान्त, ४ प्रकट वेष वाला ; ५ भीत, डरा हुआ ; ६ उद्भट ; (दे १, १२७ ; वज्जा ६२)।

उब्बिंबल न [दे] कलुष जल, मैला पानी ; (दे १, १११)।

उब्बिंबिर वि [दे] खिन्न, उद्विग्न ; (कप्पू)।

उब्बुक्क सक [उद्+बुक्क्] बोलना, कहना । **उब्बुक्कइ** ; (हे ४, २)।

उब्बुक्क न [दे] १ प्रलपित, प्रलाप ; २ संकट ; ३ बलात्कार ; (दे १, १२८)।

उब्बुड अक [उद्+ब्रुड्] तैरना ।

उब्बुड } पुं [उद्ब्रुड] तैरना । °**निबुड**, °**निब्बुड्ण**
उब्बुड्ड } न [निब्रुड,°ण] उबडुब करना ; (पण्ह १, ३ ; उप १२८टी)।

उब्बुड्ड वि [उद्ब्रुडित] उन्मग्न, तीर्ण ; (गा ३७ ; स ३६०)।

उब्बुड्डण न [उद्ब्रुडन] उन्मज्जन ; (कप्पू)।

उब्बूर वि [दे] १ अधिक, ज्यादः ; २ पुं. संघात, समूह; ३ स्थपुट, विषमोन्नत प्रदेश ; (दे १, १२६)।

उब्भ सक [ऊर्ध्वय्] ऊँचा करना, खड़ा करना । **उब्भेउ** ; (वज्जा ६४) ; **उब्भेह** ; (महा)।

उब्भ देखो **उड्ढ** ; (हे २, ५९ ; सुर २, ६ ; षड्)।

उब्भंड पुं [उद्भाण्ड] १ उत्कट भाँड, बहुरूपा, निर्लज्ज हंड़ा ;

"खरउ ति कहं जाणसि देहागारा कहिंति से हंदि ।
छिक्कोवण उब्भंडो णीयासिं दारुणसहावो ॥" (ठा ६ टी)।

२ न. गाली, कुत्सित वचन ; "उब्भंडवयण—" (भवि)।

उब्भंत वि [दे] ग्लान, विमार ; (दे १, ९५ ; महा)।

उब्भंत वि [उद्भ्रान्त] १ आकुल, व्याकुल, खिन्न ; (दे १, १४३) ;

" अवलंवह मा संकह ण इमा गहलंघिआ परिब्भमइ ।
अत्थक्कगज्जिउब्भंतहित्थहिअआ पहिअजाआ "
(गा ३८६)।

" भवभमणुब्भंतमाणसा अम्हे " (सुर १५, १२३)। २ मूर्च्छित ; (से १, ८)। ३ भ्रान्ति-युक्त, भौचक्का, चकित ; (हे २, १६४)।

उब्भग्ग वि [दे] गुण्ठित, व्याप्त ; " तिमिरोब्भग्गणिसाए " (दे १, ९५ ; नाट)।

उब्भज्जि स्त्री [दे] कोद्रव-समूह ; (राज)।

उब्भड वि [उद्भट] १ प्रवल, प्रचण्ड " उब्भडपत्तपक्ख परिजयप्पडागाइ अइपयडं " (सुपा ४६) " उब्भडकल्लोल-भीसणारावे " (धम्मि ४)। २ भयंकर विकराल ; (भवि ५, ६)। ३ उद्धत, आडंबरी ; (पाअ)।

"अइरोसो अइतोसो अइहासो दुज्जणेहिं संवासो।
अइउब्भडो य वेसो पंचवि गरुयंपि लहुअंति ॥" (धम्म)।

उब्भम पुं [उद्भ्रम] १ उद्वेग ; २ परिभ्रमण ; (नाट)।

उब्भव अक [उद् + भू] उत्पन्न होना। उब्भवइ ; (पि ४७५ ; नाट)। वकृ—उब्भवंत ; (सुपा ५७१; ६५६)।

उब्भव अक [ऊर्ध्वय्] ऊँचा करना, खड़ा करना।

उब्भव पुं [उद्भव] उत्पत्ति, प्रादुर्भाव ; (विसे; गाया १, २)।

उब्भविय वि [ऊर्ध्वित] ऊँचा किया हुआ; (उप पृ १३०; वज्जा १४)।

उब्भाअ वि [दे] शान्त, ठंढा ; (दे १, ६६)।

उब्भाम पुं [उद्भ्राम] १ परिभ्रमण ; (ठा ४)। २ वि. परिभ्रमण करने वाला ; (वव १, १)।

उब्भामइल्ला स्त्री [उद्भ्रामिणी] स्वैरिणी, कुलटा स्त्री ; (वव १, ४ ; बृह ६)।

उब्भामग पुं [उद्भ्रामक] १ पारदारिक, परस्त्री-लम्पट ; (ओघ ६० भा)। २ वायु-विशेष, जो तृण वगैरः को ऊपर ले उड़ता है ; (जी ७)। ३ वि. परिभ्रमण करने वाला ; (वव १, १)।

उब्भामिगा } स्त्री [उद्भ्रामिका] कुलटा स्त्री, स्वैरिणी ;
उब्भामिया } (वव १, ६ ; उप पृ २६४)।

उब्भालण न [दे] १ सूर्प आदि से साफ-सुथरा करना, उत्पवन ; २ वि. अपूर्व, अद्वितीय ; (दे १, १०३)।

उब्भालिअ वि [दे] सूर्प आदि से साफ किया हुआ, उत्पूत ; " उब्भालिअं उप्पुणिअं" (पाअ)।

उब्भाव अक [रम्] क्रीड़ा करना, खेलना। उब्भावइ ; (हे ४, १६८ ; षड्)। वकृ—उब्भावंत ; (कुमा)।

उब्भावणया } स्त्री [उद्भावना] १ प्रभावना, गौरव,
उब्भावणा } उन्नति; "पवयणउब्भावणया" (ठा १०—पत्र ५१४)। २ उत्प्रेक्षा, वितर्कणा ; "असब्भावउब्भावणाहिं" (गाया १, १२—पत्र १७४)। ३ प्रकाशन, प्रकटीकरण; (गांदि)।

उब्भाविअ न [रमण] सुरत, क्रीड़ा, संभोग ; (दे १, ११७)।

उब्भास सक [उद् + भासय्] प्रकाशित करना। वकृ—उब्भासंत, उब्भासेंत ; (पउम २८, ३६ ; ३, १५५)

उब्भासिय वि [उद्भासित] प्रकाशित ; (हेका २८२);

"भवणाओ नीहरंते जिणम्मि चाउव्विहेहिं देवेहिं।
इंतेहि य जंतेहि य कहमिव उब्भासियं गयणं ॥"
(सुपा ७७)।

उब्भासुअ वि [दे] शोभा-हीन ; (दे १, ११०)।

उब्भासेंत देखो उब्भास।

उब्भि देखो उब्भिय = उद्भिद् ; (आचा)।

उब्भिउडि वि [उद्भ्रुकुटि] भौं चढ़ाया हुआ; (गउड)।

उब्भिंद सक [उद्+भिद्] १ ऊँचा करना, खड़ा करना। २ विकसित करना। ३ अङ्कुरित करना। ४ खोलना। कर्म—उब्भिज्जंति। वकृ—उब्भिंदमाण; (आचा २,७)। कवकृ—"भत्तिभरनिब्भरुब्भिज्जमाणघणपुलयपूरियसरीरा" (सुपा ६५६ ६७ ; भग १६, ६)। संकृ—उब्भिंदिय, उब्भिंदिउं; (पंचा १३; पि ५७४)।

उब्भिग देखो उब्भिय = उद्भिद् ; (पण्ह १, ४)।

उब्भिडण न [उद्भेदन] लग कर अलग होना, आघात कर पीछे हटना;

"जेसुं चिय कुंठिज्जइ, रहसुब्भिडणमुहलो महिहरेसु।
तेसुं चेय खिसिज्जइ, पहिरोहंदोलिरो कुलिसो" ॥
(गउड)।

उब्भिण्ण } वि [उद्भिन्न] १ अङ्कुरित; (ओघ ११३);
उब्भिन्न } "उब्भिन्ने पाणियं पडियं" (सुर ७, ११४)। २ उद्घाटित, खोला हुआ ; ३ जैन साधुओं के लिए भिक्षा का एक दोष, मिट्टी वगैरः से लिप्त पात्र को खोल कर उसमें से दी जाती भिक्षा; "छगणाइणोवउत्तं उब्भिंदिय जं तमुब्भिण्णं" (पंचा १३; ठा ३, ४)। ४ ऊँचा हुआ, खड़ा हुआ "हरिसवसुब्भिन्नरोमंचा" (महा)।

उब्भिय वि [उद्भिद्] पृथ्वी को फाड कर उगनेवाली वनस्पति; (पण्ह १, ४)।

उब्भिय वि [ऊर्ध्वित] ऊँचा किया हुआ, खड़ा किया हुआ; (सुपा ८६ ; महा ; वज्जा ८८)।

उब्भीकय वि [ऊर्ध्वीकृत] ऊँचा किया हुआ "उब्भीकयबाहुजुओ" (उप ५६७ टी)।

उब्भुअ अक [उद् + भू] उत्पन्न होना। उब्भुअइ ; (हे ४, ६०)।

उब्भुआण वि [दे] १ उबलता हुआ, अग्नि से तप्त जो दूध वगैरः उछलता है वह ; (दे १, १०५ ; ७, ८१)।

उब्भुग्ग वि [दे] चल, अस्थिर ; (दे १, १०२)।

उब्भुत्त सक [उत्+क्षिप्] ऊँचा फेंकना। उब्भुत्तइ; (हे ४, १४४)।

उब्भुत्तिअ वि [उत्क्षिप्त] ऊँचा फेंका हुआ; (कुमा)।

उब्भुत्तिअ वि [दे] उद्दीपित, प्रदीपित; (पाअ)।

उब्भूअ वि [उद्भूत] १ उत्पन्न; (सुर ३, २३६)। २ आगन्तुक कारण; (विसे १४७६)।

उब्भूइआ स्त्री [औद्भूतिकी] श्रीकृष्ण वासुदेव की एक भेरी जो किसी आगन्तुक प्रयोजन के उपस्थित होने पर बजायी जाती थी; (विसे १४७६)।

उब्भेअ पुं [उद्भेद] उद्गम, उत्पत्ति; "उम्हाअंतगिरियडं-सीमाणिव्वडियकंदलुब्भेयं" (गउड); "अभिणवजोव्वणउब्भे-यसुन्दरा सयलमणहरारावा" (सुर ११, ११६)।

उब्भेइम वि [उद्भेदिम] स्वयं उत्पन्न होने वाला; "उब्भेइमं पुण सयंरुहं जहा सामुद्दं लोणं" (निचू ११)।

उभओ अ [उभतस्] द्विधा; दोनों तरह से, दोनों ओर से; (उव; औप)।

उभय वि [उभय] युगल, दो, दोनों; (ठा ४, ४)। °त्थ अ (°त्र) दोनों जगह; (सुपा ६४८)। °लोग पुं [°लोक] यह और पर जन्म; (पंचा ११)। °हा अ [°था] दोनों तरफ से, द्विधा; (सम्म ३८)।

उमच्छ सक [वञ्च्] ठगना, धूतना। उमच्छइ; (हे ४, ९३)। वकृ—**उमच्छंत**; (कुमा)।

उमच्छ सक [अभ्या+गम्] सामने आना। उमच्छइ; (षड्)।

उमा स्त्री [उमा] १ गौरी, पार्वती; (पाअ)। २ द्वितीय वासुदेव की माता; (सम १५२)। ३ गणिका-विशेष; (आचू)। ४ स्त्री-विशेष; (कुमा)। °साइ [°स्वाति] स्वनाम-धन्य एक प्राचीन जैनाचार्य और विख्यात ग्रन्थकार; (सार्ध ५०)।

°**उमार** देखो **कुमार**; (अच्चु २६)।

उमीस वि [उन्मिश्र] मिश्रित; "पलिलसिरपलिअपीवल-करणघुसणुमीसण्हवणजलं" (कुमा)।

उम्मइअ वि [दे] १ मूढ़, मूर्ख; (दे १, १०२)। २ उन्मत्त; (गा ४९८; वज्जा ४२)।

उम्मऊह वि [उन्मयूख] प्रभा-शाली; (गउड)।

उम्मंड पुं [दे] १ हठ; २ वि. उद्वृत्त; (दे १, १२४)।

उम्मंथिय वि [दे] दग्ध, जला हुआ; (वज्जा ९२)।

उम्मग्ग वि [उन्मग्न] १ पानी के ऊपर आया हुआ, तीर्ण; (राज)। २ न. उन्मज्जन, तैरना, जल के ऊपर आना; (आचा)। °जला स्त्री [°जला] नदी-विशेष, जिसमें पत्थर वगैरः भी तैर सकते हैं; (जं ३)।

उम्मग्ग पुं [उन्मार्ग] १ कुपथ, उलटा रास्ता; विपरीत मार्ग; (सुर १, २४३; सुपा ९५)। २ छिद्र, रन्ध्र; (आचा)। ३ अकार्य करना; (आचा)।

उम्मग्गणा स्त्री [उन्मार्गणा] छिद्र, विवर; (आचा)।

उम्मच्छ न [दे] १ क्रोध, गुस्सा; (दे १, १२५; से ११, १९; २०)। २ वि. असंबद्ध; ३ प्रकारान्तर से कथित; (दे १, १२५)।

उम्मच्छर वि [उन्मत्सर] १ ईर्ष्यालु, द्वेषी; (से ११, १४)। २ उद्भट; (गा १२७; ६७५)।

उम्मच्छविअ वि [दे] उद्भट; (दे १, ११६)।

उम्मच्छिअ वि [दे] १ रुषित, रुष्ट; २ आकुल, व्याकुल; (दे १, १३७)।

उम्मज्ज न [उन्मज्जन] तरण, तैरना। °णिमज्जिया स्त्री [°निमज्जिका] उवड्डुब करना; पानी में ऊँचा नीचा होना; (ठा ३; ४)।

उम्मज्जग पुं [उन्मज्जक] १ उन्मज्जन करने वाला, गोता लगाने वाला; २ उन्मज्जन से ही स्नान करने वाले तापसों की एक जाति; (औप; भग ११, ९)।

उम्मड्डा स्त्री [दे] १ बलात्कार, जबरदस्ती; (दे १, ९७)। २ निषेध, अस्वीकार; (उप ७२८ टी)।

उम्मण वि [उन्मनस्] उत्कण्ठित, उत्सुक; (उप पृ ५८)।

उम्मत्त पुं [दे] १ धतूरा, वृक्ष-विशेष; २ एरण्ड, वृक्ष-विशेष; (दे १, ८९)।

उम्मत्त वि [उन्मत्त] १ उद्धत, उन्माद-युक्त; (बृह १)। २ पागल, भूताविष्ट; (पिंड ३८०)। °जला स्त्री [°जला] नदी-विशेष; (ठा २, ३)।

उम्मत्थ सक [अभ्या+गम्] सामने आना। उम्मत्थइ; (हे ४, १६५; कुमा)।

उम्मत्थ वि [दे] अधो-मुख, विपरीत; (दे १, ९३)।

उम्मर पुं [दे] देहली, द्वार के नीचे की लकड़ी; (दे १, ९५)।

उम्मरिअ वि [दे] उत्खात, उन्मूलित; (दे १, १००; षड्)।

उम्मल वि [दे] स्त्यान, कठिन, घट्ट; (दे १, ९१)।

उम्मलण न [उन्मर्दन] मसलना ; (पाअ)।
उम्मल्ल पुं [दे] १ राजा, नृप ; २ मेघ; वारिस; ३ बलात्कार; ४ वि. पीवर, पुष्ट; (दे १, १३१)।
उम्मल्ला स्त्री [दे] तृष्णा ; (दे १, ६४)।
उम्महण वि [उन्मथन] नाशक, विनाश-कारी; (सुर ३,२३१)।
उम्माइअ वि [उन्मादित] उन्मत किया हुआ; (पउम २४, १५)।
उम्माण न [उन्मान] १ माप, माशा आदि तुला-मान ; (ठा २, ४)। २ जो तौला जाता है वह ; (ठा १०)।
उम्माद देखो उम्माय ; (भग १४, २)।
उन्मादइत्तअ (शौ) वि [उन्मादयितृ] उन्माद कराने वाला; (अभि ४२)।
उम्माय अक [उद्+मद्] उन्माद करना, उन्मत होना। वकृ—उम्मायंत ; (उप ६८६ टी)।
उम्माय पुं [उन्माद] १ चित-विभ्रम, पागलपन ; (ठा ६ ; महा)। २ कामाधीनता, विषय में अत्यन्तासक्ति ; (उत्त १६)। ३ आलिङ्गन ; (विसे)।
उम्माल देखो ओमाल ; (पाअ)।
उम्मालिय व [उन्मालित] सुशोभित ; (भवि)।
उम्माह पुं [उन्माथ] विनाश; "निसेविज्जंतावि (कामभोगा) करेंति अहियगुम्माहयं" (महा)।
उम्माहय वि [उन्माथक] विनाशक ; "अहो उम्माहयतं विसयाणं" (महा ; भवि)।
उम्माहि वि [उन्माथिन्] विनाशक; (महा-टि)।
उम्माहिय वि [उन्माथित] विनाशित ; (भवि)।
उम्मि पुंस्त्री [ऊर्मि] १ कल्लोल, तरंग ; (कुमा; दे ३,६); २ भीड़, जन-समुदाय ; (भग २, १)। °मालिणी स्त्री [°मालिनी] नदी-विशेष ; (ठा २, ३)।
उम्मिंठ वि [दे] हस्तिपक-रहित, महावत-रहित, निरंकुश ; "उम्मिंठकरिवरो इव उम्मूलइ नयसमूहं सो" (सुपा ३४८ ; २०३)।
उम्मिय वि [उन्मित] प्रमित, "कोडाकोडिजुगुम्मियावि विहिणो हाहा विचित्ता गदी" (रंभा)।
उम्मिलिर वि [उन्मीलितृ] विकासी "तत्थ य उम्मिलिर-पढमपल्लवारुणियसयलसाहस्स" (सुपा ८६)।
उम्मिल्ल अक [उद्+मील्] १ विकसित होना। २ खुलना। ३ प्रकाशित होना। उम्मिल्लइ; (गउड)। वकृ—उम्मिल्लंत; (से १०, ३१)।
उम्मिल्ल वि [उन्मील] १ विकसित ; (पाअ ; से १०, ५०; स ७६)। २ प्रकाशमान ; (से ११, ६४ ; गउड)।
उम्मिल्लण न [उन्मीलन] विकास, उल्लास ; (गउड)।
उम्मिल्लिय वि[उन्मीलित] १ विकसित; उल्लसित; २ उद्घाटित, खुला हुआ; "तओ उम्मिल्लियाणि तस्स नयणाणि" (आवम; स २८०)। ३प्रकाशित; ४ बहिष्कृत; "पंजरुम्मिल्लियमणिकणगथूभियागे" (जीव ४)। ५ न. विकास; (अणु)।
उम्मिस अक [उद्+मिष्] खुलना, विकसना। वकृ—उम्मिसंत ; (विक ३४)।
उम्मिसिय वि [उन्मिषित] १ विकसित, प्रफुल्ल ; (भग १४, १)। २ न. विकास, उन्मेष; (जीव ३)।
उम्मिस्स देखो उम्मीस ; (पव ६७)।
उम्मीलण देखो उम्मिल्लण ; (कुमा; गउड)।
उम्मीलणा स्त्री [उन्मीलना] प्रभव, उत्पत्ति ; (राज)।
उम्मीलिय देखो उम्मिल्लिय ; (राज)।
उम्मीस वि [उन्मिश्र] मिश्रित, युक्त ; (सुपा ७८ ; प्रासू ३२)।
उम्मुअ न [उल्मुक] अलात, लूका ; (पाअ)।
उम्मुंच सक [उद्+मुच्] परित्याग करना। वकृ—उम्मुंचंत ; (विसे २७५०)।
उम्मुक्क वि [उन्मुक्त] १ विमुक्त, रहित ; "ते वीरा बंधणुम्मुक्का नावकंखंति जीवियं" (सूअ १, ६)। २ उत्क्षिप्त ; (औप)। ३ परित्यक्त ; (आवम)।
उम्मुग्ग वि [उन्मग्न] १ जल के ऊपर तैरा हुआ। २ न. तैरना। °निमुग्गिया स्त्री [°निमग्नता] उवडुब्ब करना ; "से भिक्खू वा० उदगंसि पवमाणे नो उम्मुग्गनिमुग्गियं करेज्जा" (आचा २, ३, २, ३)।
उम्मुग्गा } स्त्री. देखो उम्मग्ग=उन्मग्न ; (पण्ह १, ३ ; उम्मुज्जा } पि १०४ ; २३४ ; आचा)।
उम्मुट्ठ वि [उन्मृष्ट] स्पृष्ट, छूआ हुआ ; (पाअ)।
उम्मुद्दिअ वि [उन्मुद्रित] १ विकसित, प्रफुल्ल ; (गउड; कप्पू)। २ उद्घाटित, खोला हुआ ; "उम्मुद्दिओ समुग्गो, तम्मज्झे लहुसमुग्गयं नियइ" (सुपा १४४)।
उम्मुयण न [उन्मोचन] परित्याग, छोड देना ; (सुर २, १६०)।
उम्मुयणा स्त्री [उन्मोचना] त्याग, उज्झन ; (आव ५)।
उम्मुह वि [दे] दृप्त, अभिमानी ; (दे १, ६६ ;षड्)।
उम्मुह वि [उन्मुख] १ संमुख ; (उप पृ १३४)। २ ऊर्ध्व-मुख ; (से ६, ८२)।

उम्मूढ वि [**उन्मूढ**] विशेष मूढ़, अत्यन्त मुग्ध। °**विसूइया** स्त्री [°**विसूचिका**] रोग-विशेष ; (सुपा १६)।

उम्मूल वि [**उन्मूल**] उन्मूलन करने वाला, विनाशक ; (गा ३५५)।

उम्मूल सक [**उद्+मूलय्**] उखेडना, मूल से उखाड़ फेंकना। उम्मूलेइ ; (महा)। वकृ—**उम्मूलंत, उम्मूलयंत** ; (से १, ४; स ५६६)। संकृ—**उम्मूलिऊण** ; (महा)।

उम्मूलण न [**उन्मूलन**] उत्पाटन, उत्खनन ; (पि २७८)।

उम्मूलणा स्त्री [**उन्मूलना**] ऊपर देखो ; (पराह १, १)।

उम्मूलिअ वि [**उन्मूलित**] उत्पाटित, मूल से उखाड़ा हुआ ; (गा ४७५ ; सुर ३, २४५)।

उम्मेंठ [**दे**] देखो **उम्मिंठ** ; (पउम ७१, २६ ; स ३३२)।

उम्मेस पुं [**उन्मेष**] उन्मीलन, विकास ; (भग १३, ४)।

उम्मोयणी स्त्री [**उन्मोचनी**] विद्या-विशेष ; (सुर १३, ८१)।

उम्ह पुंस्त्री [**ऊष्मन्**] १ संताप, गरमी, उष्णता ; "सरीरउम्हाए जीवइ सयावि" (उप ५६७ टी ; णाया १, १ ; कुमा)। २ भाफ, वाष्प ; (से २, ३२ ; हे २, ७४)।

उम्हइअ } **उम्हविय** } वि [**उष्मायित**] संतप्त, गरम किया हुआ ; (से ४, १ ; पउम २, ६६ ; गउड)।

उम्हाअ अक [**ऊष्माय्**] १ गरम होना। २ भाफ निकालना। वकृ—**उम्हाअंत, उम्हाअमाण** ; (से ६, १० ; पि ५५८)।

उम्हाल वि [**ऊष्मवत्**] १ गरम, परितप्त; २ वाष्प-युक्त ; (गउड)।

उम्हाविअ न [**दे**] सुरत, संभोग ; (दे १, ११७)।

उयट्ट देखो **उव्वट्ट**=उद्+वृत्। उयट्टेंति ; भूका—**उयट्टिंसु** ; (भग)।

उयट्ट देखो **उव्वट्ट**=उद्वृत्त।

उयचिय [**दे**] देखो **उविय**=परिकर्मित ; " उयचियखोमदुगुल्लपट्टपडिच्छणे" (णाया १, १—पत्र १३)।

उयर वि [**उदार**] श्रेष्ठ, उत्तम ; "देवा भवंति विमलोयरकंतिजुत्ता" (पउम १०, ८८)।

उयाइय न [**उपयाचित**] मनौती ; (सुपा ८ ; ५७८)।

उयाय वि [**उपयात**] उपगत ; (राज)।

उयाहु देखो **उदाहु** ; (सुर १२, ५६ ; काल ; विसे १६१०)।

उय्यकिअ वि [**दे**] इकट्ठा किया हुआ ; (षड्)।

उय्यल वि [**दे**] अध्यासित, आरूढ़ ; (षड्)।

उर पुंन [**उरस्**] वक्षःस्थल, छाती ; (हे १, ३२)। °**अ, °ग** पुंस्त्री [°**ग**] सर्प, साँप ; (काप्र १७१) ; " उरगगिरिजलणसागरनहतलतरुगणसमो अ जो होइ। भमरमियधरणिजलरुहरविपवणसमो अ सो समणो ॥"(अणु)। °**तव** पुं [°**तपस्**] तप-विशेष ; (ठा ४)। °**त्थ** न [°**स्त्र**] अस्त्र-विशेष, जिसके फेंकने से शत्रु सर्पों से वेष्टित होता है ; (पउम ७१, ६६)। °**परिसप्प** पुंस्त्री [°**परिसर्प**] पेट से चलने वाला प्राणी (सर्पादि) ; (जो २०)। °**सुत्तिया** स्त्री [°**सूत्रिका**] मोतियों का हार ; (राज)।

उर न [**दे**] आरम्भ, प्रारंभ ; (दे १, ८६)।

उरंउरेण अ [**दे**] साक्षात् ; (विपा १, ३)।

उरत्त वि [**दे**] खण्डित, विदारित ; (दे १, ६०)।

उरत्थय न [**दे**] वर्म, वख्तर ; (पात्र)।

उरब्भ पुंस्त्री [**उरभ्र**] मेष, भेड़ ; (णाया १, १ ; पराह १, १)।

उरब्भिज्ज } **उरब्भिय** } वि [**उरभ्रीय**] १ मेष-संबन्धी ; २ उत्तराध्ययन सूत्र का एक अध्ययन ; " ततो समुट्ठियमेयं उरब्भिज्जंति अज्झयणं " (उत्तनि ; राज)।

उरय पुं [**उरज**] वनस्पति-विशेष ; (राज)।

उररि पुं [**दे**] पशु, बकरा ; (दे १, ८८)।

उरल देखो **उराल** ; (कम्म १ ; भग ; दं २२)।

उरविय वि [**दे**] १ आरोपित ; २ खण्डित, छिन्न ; (षड्)।

उरस्स वि [**उरस्य**] १ सन्तान, बच्चा ; (ठा १०)। २ हार्दिक, आभ्यन्तर ; "उरस्सबलसमण्णागय—"(राय)।

उराल वि [**उदार**] १ प्रबल ; (राय)। २ प्रधान, मुख्य ; (सुज्ज १)। ३ सुन्दर, श्रेष्ठ ; (सूअ १, ६)। ४ अद्भुत ; (चंद २०)। ५ विशाल, विस्तीर्ण ; (ठा ५)। ६ न. शरीर-विशेष, मनुष्य और तिर्यञ्च् (पशु-पक्षी) इन दोनों का शरीर ; (अणु)।

उराल वि [**दे**] भयंकर, भीष्म ; (सुज्ज १)।

उरालिय न [**औदारिक**] शरीर-विशेष ; (सण)।

उरिआ स्त्री [**उड्रिका**] लिपि-विशेष ; (सम ३५)।

उरितिय न [**दे. उरसि-त्रिक**] तीन सर वाला हार ; (औप)।

°उरिस देखो पुरिस ; (गा २८२)।
उरु वि [उरु] विशाल, विस्तीर्ण ; (पाअ)।
उरुपुल्ल पुं [दे] १ अपूप, पूआ ; २ खिचडी ; (दे १, १३४)।
उरुमल्ल } उरुमिल्ल } उरुसोल्ल } वि [दे] प्रेरित ; (षड् ; दे १, १०८)।
उरोरुह न [उरोरुह] १ स्तन, थन ; २ जैन साध्वीओं का उपकरण-विशेष ; (ओघ ३१७ भा)।
°उल देखो कुल ; (से १, २६ ; गा ११६; सुर ३, ४१ ; महा)।
उलय } उलव } पुंन [उलप] तृण-विशेष ; (सुपा २८१ ; प्राप्र)।
उलवी स्त्री [उलपी] तृण-विशेष ; " उलवी वीरणं " (पाअ)।
उलिअ वि [दे] अ-संकुचित नजर वाला, स्फार-दृष्टि ; (दे १, ८८)।
उलित्त न [दे] ऊँचा कुँआ ; (दे १, ८६)।
°उलीण देखो कुलीण ; (गा २५३)।
उलुंडिअ वि [दे] प्रलुठित, विरेचित ; (दे १, ११६)।
उलुओसिअ वि [दे] रोमाञ्चित, पुलकित ; (षड्)।
उलुकसिअ वि [दे] ऊपर देखो ; (दे १, ११५)।
उलुखंड पुं [दे] उल्मुक, अलात, लूका ; (दे १, १०७)।
उलुग पुं [उलुक] १ उल्लू, पेचक ; २ देश-विशेष ; (पउम ६८, ६६)।
उलुगी स्त्री [औलुकी] विद्या-विशेष ; (विसे २४५४)।
उलुग्ग वि [अवरुग्ण] बिमार ; (महा)।
उलुग्ग वि [दे] देखो ओलुग्ग ; (महा)।
उलुफुंटिअ वि [दे] १ विनिपातित, विनाशित; २ प्रशान्त ; (दे १, १३८)।
उलुय देखो उलूअ ; " अह कह दिणमणितेयं, उलुयाणं हरइ अंधत्तं " (सट्ठि १०८ ; सुर १, २६ ; पउम ६७, २४)।
उलुहंत पुं [दे] काक, कौआ ; (दे १, १०६)।
उलुहलिअ वि [दे] अतृप्त, तृप्ति रहित ; (दे १, ११७)।
उलुहुलअ वि [दे] अ-वितृप्त, तृप्ति-रहित ; (षड्)।
उलूअ पुं [उलूक] १ उल्लू, पेचक ; (पाअ)। २ वैशेषिक मत का प्रवर्तक कणाद मुनि ; (सम्म १४६ ; विसे १५०८)।

उलूखल देखो उऊखल ; (कुमा)।
उलूलु पुं [उलूलु] मङ्गल-ध्वनि ; (रंभा)।
उलूहल देखो उऊखल ; (हे १, १७१ : महा)।
उल्ल वि [आर्द्र] गीला, आर्द्र ; (कुमा ; हे १, ८२)।
°गच्छ पुं [°गच्छ] जैन मुनिओं का गण विशेष ; (कप्प)।
उल्ल सक [आर्द्रय्] १ गीला करना, आर्द्र करना। २ अक. आर्द्र होना। उल्लेइ ; (हे १, ८२)। वकृ—उल्लंत, उल्लिंत ; (गउड)। संकृ—उल्लेत्ता ; (महा)।
उल्ल न [दे] ऋण, करजा ; " तो मं उल्ले धरिऊण " (सुपा ४८६)।
उल्लअण न [उल्लयन] अर्पण, समर्पण ; (से ११, ५१)।
उल्लंक पुं [उल्लङ्क] काष्ठ-मय वारक ; (निचू १२)।
उल्लंघ सक [उत्+लङ्घ्] उल्लङ्घन करना, अतिक्रमण करना। उल्लंघेज्ज ; (पि ४५६)। हेकृ—उलंघित्तए ; (भग ८, ३३)।
उल्लंघण न [उल्लङ्घन] १ अतिक्रमण, उत्प्लवन ; (पण्ण ३६)। २ वि. अतिक्रमण करने वाला " उल्लंघणे य चंडे य पावसमणे त्ति वुच्चइ " (उत्त ८)।
उल्लंठ वि [उल्लण्ठ] उद्धत ; " जंपंति उल्लंठवयणाइं " (काल)।
उल्लंडग पुं [उल्लण्डक] छोटा मृदङ्ग, वाद्य-विशेष ; (राज)।
उल्लंडिअ वि [दे] बहिष्कृत, बाहर निकाला हुआ ; (पाअ)।
उल्लंबण न [उल्लम्बन] उद्बन्धन, फाँसी लगा कर लटकना ; (सम १२५)।
उल्लक्क वि [दे] १ भग्न, टूटा हुआ ; २ स्तब्ध ; " उल्लक्कं सिराजालं " (स २६४)।
उल्लट्ट वि [दे] उल्लुठित, खाली किया हुआ ; (दे ७, ८१)।
उल्लण वि [उल्बण] उत्कट ; (पंचा २)।
उल्लण न [आर्द्रीकरण] गीला करना ; (उवा ; ओघ ३६ ; सं २, ८)।
उल्लणिया स्त्री [आर्द्रयणिका] जल पोंछने का गमछा, टोपिया ; (उवा)।
उल्लट्टिय वि [दे] भाराक्रान्त, जिस पर बोझा लादा गया हो वह " अह तम्मि सत्थलोए उल्लट्टियसयलवसहनियरम्मि " (सुर ३, ३)।

उल्लरय न [दे] कौडीओं का आभूषण; (दे १, ११०)।

उल्लल अक [उत् + लल्] १ चलित होना, चञ्चल होना। २ ऊँचा चलना। ३ उत्पन्न होना। उल्ललइ; (से ११, १३)। वकृ—**उल्ललंत**; (काल)।

उल्ललिअ वि [उल्ललित] १ चञ्चल; (गा ५६६)। २ उत्पन्न; (से ६, ६८)

उल्ललिअ वि [दे] शिथिल, ढ़ीला; (दे १, १०४)।

उल्लव सक [उत् + लप्] १ कहना। २ बकना, बकवाद करना, खराब शब्द बोलना। "जं वा तं वा उल्लवइ" (महा)। वकृ—**उल्लवंत, उल्लवेमाण**; (पउम ६४, ८; सुर १, १६६)।

उल्लवण न [उल्लपन] १ बकवाद; २ कथन; "जइवि न जुज्जइ जह तह मणवल्लहनामउल्लवणं" (सुपा ४६८)।

उल्लविय वि [उल्लपित] १ कथित, उक्त; २ न. उक्ति, वचन; "अंगपचंगसंठाणं चारुल्लवियपेहणं" (उत्त)।

उल्लविर वि [उल्लपितृ] १ वक्ता, भाषक; २ बकवादी, वाचाट; (गा १७२; सुपा २२६)।

उल्लस अक [उत्+लस्] १ विकसित होना। २ खुश होना। उल्लसइ; (षड्)। वकृ—**उल्लसंत**; (गा ५६०; कप्प)।

उल्लस देखो **उल्लास**; (गउड)।

उल्लसिअ वि [उल्लसित] १ विकसित; २ हर्षित; (षड्; निचू १)।

उल्लसिअ वि [दे. उल्लसित] पुलकित, रोमाञ्चित; (दे १, ११५)।

उल्लाय वि [दे] लात मारना, पाद-प्रहार; (तंदु)।

उल्लाय पुं [उल्लाप] १ वक्र वचन; २ कथन; (भग)।

उल्लाल सक[उत्+नमय्] १ ऊँचा करना। २ ऊपर फेंकना। उल्लालइ; (हे ४, ३६) वकृ—**उल्लालेमाण**; (अंत २१)

उल्लाल सक [उत्+लालय्] ताडन करना, पीडना। वकृ—**उल्लालेमाण**; (राज)।

उल्लाल पुंन [उल्लाल] छन्द-विशेष; (पिंग)।

उल्लालिअ वि [उन्नमित] १ ऊँचा किया हुआ; २ ऊपर फेंका हुआ; (कुमा; हे ४, ४२२)।

उल्लालिय वि [उल्लालित] ताडित; (राज)।

उल्लाव सक [उत्+लप्, लापय्] १ कहना, बोलना। २ बकवाद करना। ३ बुलवाना। ४ बकवाद कराना। वकृ—**उल्लावंत, उल्लावेंत**; (से ११, १०; गा ५३६; ६५१; हे २, १६३)।

उल्लाव पुं [उल्लाप] १ शब्द, आवाज; (से १, ३०)। २ उत्तर, जवाब; (ओघ ५६ भा; गा ५१४)। ३ बकवाद, विकृत वचन; ४ उक्ति, कथन; (पउम ७०, ५८)। ५ संभाषण;

"नयणेहिं को न दीसइ; केण समाणं न होंति उल्लावा। हिययाणंदं जं पुण, जणेइ तं माणुसं विरलं॥" (महा)।

उल्लाविअ वि [उल्लपित] १ उक्त, कथित; २ न. उक्ति, वचन; (गा ५८६)।

उल्लाविर वि [उल्लपितृ] १ बोलनेवाला, भाषक; (हे २, १६३; सुपा २२६)।

उल्लासग वि [उल्लासक] १ विकसित होने वाला; २ आनन्द-जनक; (श्रा २७)।

उल्लासि / **उल्लासिर** } वि [उल्लासिन्) ऊपर देखो; (कप्पू; लहुअ १; प्रासू ६६)।

उल्लाह सक [उत्+लाघय्] कम करना, हीन करना। वकृ—**उल्लाहअंत**; (उत्तर ६१)।

उल्लिअ वि [दे] उपसर्पित; उपागत; (षड्)।

उल्लिअ वि [आर्द्रित] गीला किया हुआ; (गउड; हे ३, १६)।

उल्लिंच सक [उद्+रिच्] खाली करना। हेकृ— "**उल्लिंचिऊण** य समत्थो हत्थउडेहिं समुद्दं" (पुप्फ ४०)।

उल्लिंचिय वि [दे] उद्रिक्त, खाली किया हुआ;

"तह नाहिदहो जुव्वणपयेण लायन्नवारिणा भरिओ। नहु निट्ठइ जह उल्लिंचिओवि पियनयणकलसेहिं" (सुपा ३३)।

उल्लिक्क न [दे] दुश्चेष्टित, खराब चेष्टा; (षड्)।

उल्लिया स्त्री [दे] राधा-वेध का निशाना "विंधेयव्वा विवरीयभमंतट्ठचक्कोवरिथिउल्लिया" (स १६२)।

उल्लिह सक [उद्+लिह्] १ चाटना। २ खाना, भक्षण करना; "उक्खलिउरिहुअसुररी उअ रोरघरम्मि उल्लिहइ" (दे १, ८८)।

उल्लिह सक [उद+लिख्] १ रेखा करना। २ लिखना। ३ घिसना।

उल्लिहण न [उल्लेखन] १ घर्षण; (सुपा ४८)। २ विलेखन; "सहमाइ नहुल्लिहणे" (हे १, ७)।

उल्लिहिय वि [उल्लिखित] १ घृष्ट, घिसा हुआ ; (गाया १, २)। २ छिला हुआ, तच्छित; (पात्र)। ३ रेखा किया हुआ ; (सुपा १६३ ; प्रासू ७)।

उल्ली स्त्री [दे] १ चुल्हा ; (दे १, ८७)। २ दाँत का मैल; "उल्ली दंदेसु दुग्गंधा" (महा)।

उल्लुअ वि [दे] १ पुरस्कृत, आगे किया हुआ; २ रक्त, रँगा हुआ ; (षड्)।

उल्लुंचिअ वि [उल्लुञ्चित] उखाड़ा हुआ, उन्मूलित; "मुट्ठीहिं कुंतलकलावा उल्लुंचिया" (सुपा ८०; प्रवो ६८)।

उल्लुंटिअ वि [दे] संचूर्णित, टुकड़ा टुकड़ा किया हुआ; (दे १, १०६)।

उल्लुंठ वि [उल्लुण्ठ] उल्लंठ, उद्धत ; (सुपा ४६५ ; सुर ६, २१५)।

उल्लुंड सक [वि+रेचय्] झरना, टपकना, बाहर निकलना। उल्लुंडइ; (हे ४, २६)। प्रयो, वकृ—उल्लुंडावंत; (कुमा)।

उल्लुक्क वि [दे] त्रुटित, टूटा हुआ ; (दे १, ६२)।

उल्लुक्क सक [तुड्] तोड़ना । उल्लुक्कइ ; (हे १, ११६; षड्)।

उल्लुक्किअ वि [तुडित] त्रोटित, तोड़ा हुआ; (कुमा)।

उल्लुगा° } स्त्री [उल्लुका] १ नदी-विशेष; (विसे २४२६)।
उल्लुगा } २ उल्लुका नदी के किनारे का प्रदेश; (विसे २४-२५)। °तीर न [°तीर] उल्लुका नदी के किनारे वसा हुआ एक नगर ; (विसे २४२४; भग २६, ३)।

उल्लुञ्भण न [दे] पुनरुत्थान, कटे हुए हाथ पाँव की फिर से उत्पत्ति ; (उप ३८१)।

उल्लुट्ट अक [उत्+लुट्] नष्ट होना, ध्वंस पाना। वकृ— "तहवि य सा रायसिरी उल्लुट्टंती न ताइया ताहिं" (उव)।

उल्लुट्ट वि [दे] मिथ्या, असत्य, झूठा ; (दे १, ८६)।

उल्लुरुह पुं [दे] छोटा शङ्ख ; (दे १, १०५)।

उल्लुलिअ वि [उल्लुलित] चलित ; (गा ५६७)।

उल्लुह अक [निस्+सृ] निकला। उल्लुहइ ; (हे ४, २५६)।

उल्लुहुंडिअ वि [दे] उन्नत, उच्छ्रित ; (षड्)।

उल्लूढ वि [दे] १ आरूढ ; (दे १, १०० ; षड्)। २ अङ्कुरित ; (दे १, १०० ; पात्र)।

उल्लूर सक [तुड्] १ तोडना । २ नाश करना । उल्लूरइ; (हे ४, ११६ ; कुमा)।

उल्लूरण न [तोडन] छेदन, खण्डन ; (गा १६८)।

उल्लूरिअ वि [तुडित] विनाशित, "उल्लूरिअपहिअसत्थेसु" (णमि १० ; पात्र)।

उल्लूह वि [दे] शुष्क, सूखा "उल्लूहं च नलवणं हरियं जायं" (ओघ ४४६ टी)।

उल्लेत्ता देखो उल्ल = आर्द्रय्।

उल्लेव पुं [दे] हास्य, हाँसी ; (दे १, १०२)।

उल्लेहड वि [दे] लम्पट, लुब्ध; (दे १, १०४ ; पात्र)।

उल्लोइय न [दे] १ पोतना, भीत को चूना वगैरः से सफेद करना; (औप)। २ वि. पोता हुआ; (णाया १, १; सम १३७)।

उल्लोक वि [दे] त्रुटित, छिन्न ; (षड्)।

उल्लोच पुं [दे. उल्लोच] चन्द्रातप, चाँदनी ; (दे १, ६८; सुर १२, १; उप १०७)।

उल्लोय पुं [उल्लोक] १ अगासी, छत ; (णाया १, १ ; कप्प ; भग)। २ थोड़ी देर, थोडा विलम्ब ; (राज)।

उल्लोय देखो उल्लोच ; (सुर ३, ७० ; कुमा)।

उल्लोल अक [उत्+लुल्] लुठना, लेटना। वकृ—उल्लोलंत ; (निचू १७)।

उल्लोल पुं [दे] १ शत्रु, दुश्मन ; (दे १, ६६)। २ कोलाहल ; (पउम १६, ३६)।

उल्लोल पुं [उल्लोल] १ प्रबन्ध; "उद्देसे आसि णराहिवाण वियडा कहुल्लोला" (गउड)। २ उद्भट, उद्धत ; "तरुणजण-विब्भमुल्लोलसागरे" (स ६७)। ३ वि. उत्सुक; "बहुसो घडंतविहडंतसइसुहासायसंगमुल्लोले । हियए च्चेय समप्पंति चंचला वीइवावारा" (गउड)।

उल्लोव (अप) देखो उल्लोच ; (भवि)।

उल्हव सक [वि+ध्मापय्] ठंढा करना, आग को बुझाना। उल्हवइ ; (हे ४, ४१६)।

उल्हविय वि [दे. विध्मापित] बुझाया हुआ, शान्त किया हुआ ; (पउम २, ६६)।

उल्हसिअ वि [दे] उद्भट, उद्धत ; (दे १, ११६)।

उल्हा अक [वि+ध्मा] बुझ जाना। उल्हाइ ; (स २८३)।

उव अ [उप] निम्न लिखित अर्थों का सूचक अव्यय;— १ समीपता ; जैसे – 'उवदंसिय' (पराण १)। २ सदृशता, तुल्यता ; (उत्त ३)। ३ समस्तपन ; (राय)। ४ एक-वार ; ५ भीतर ; (आव ४)।

उवअंठ वि [उपकण्ठ] समीप का, आसन्न ; (गउड)।

उवइट्ठ वि [उपदिष्ट] कथित, प्रतिपादित, शिक्षित ; (ओघ १४ भा; पि १७३)।

उवइण्ण वि [उपचीर्ण] सेवित ; (स ३६)।
उवइय वि [उपचित] १ मांसल, पुष्ट ; (पण्ह १, ४)। २ उन्नत ; (औप)।
उवइय पुंस्त्री [दे] त्रीन्द्रिय जीव-विशेष ; देखो **ओवइय** ; (जीव १ टी; पण्ण)।
उवइस सक [उप+दिश] १ उपदेश देना, सीखाना। २ प्रतिपादन करना। उवइसइ ; (पि १८४)। उवइसंति ; (भग)।
उवउंज सक उप+युज्] उपयोग करना। कर्म—उवउज्जंति ; (विसे ४८०)। संकृ—**उवउंजिऊण, उवउज्ज** ; (पि ५८५; निचू १)।
उवउज्ज पुं [दे] १ उपकार ; (दे १, १०८)। २ त्रि. उपकारक ; (षड्)।
उवउत्त वि [उपयुक्त] १ न्याय्य, वाजवी। २ सावधान, अप्रमत्त ; (उव; उप ७७३)।
उवऊढ वि [उपगूढ] आलिङ्गित ; (पाअ ; से १, ३८; गा १३३)।
उवऊहण न [उपगूहन] आलिङ्गन ; (से ५, ४८)।
उवऊहिअ वि [उपगूहित] आलिङ्गित ; (गा ६२१)।
उवएइआ स्त्री [दे] शराव परोसने का पात्र ; (दे १, ११८)।
उवएस पुं [उपदेश] १ शिक्षा, बोध ; (उव)। २ कथन, प्रतिपादन ; ३ शास्त्र, सिद्धान्त ; (आचा ; विसे ८६४)। ४ उपदेश्य, जिसके विषय में उपदेश दिया जाय वह ; (धर्म १)।
उवएसग वि [उपदेशक] उपदेश देने वाला ; "हिच्चाणं पुव्वसंजोगं, सिया किच्चोवएसगा" (सूअ १, १)।
उवएसण न [उपदेशन] देखो **उवएस**; (उत्त २८ ; ठा ७; विसे २५८३)।
उवएसणया } स्त्री [उपदेशना] उपदेश ; (राज ; विसे
उवएसणा } २५८३)।
उवएसिय वि [उपदेशित] उपदिष्ट ; " सामाइयणिज्जुत्तिं वोच्छं उवएसियं गुरुजणेणं" (विसे १०८० ; सण)।
उवओग पुं [उपयोग] १ ज्ञान, चैतन्य ; (पण्ण १२ ; ठा ४, ४ ; दं ४)। २ ख्याल, ध्यान, सावधानी ; "तं पुण संविग्गेणं उवओगजुएण तिव्वसद्धाए" (पंचा ४)। ३ प्रयोजन, आवश्यकता ; (सुपा ६४३)।
उवओगि वि [उपयोगिन्] उपयुक्त, योग्य, प्रयोजनीय ; "पत्ताईण विसुद्धिं साहेउं गिराहए जमुवओगिं" (सुपा ६४३; स ५)।
उवंग पुंन [उपाङ्ग] १ छोटा अवयव, क्षुद्र भाग ; "एवमादी सव्वे उवंगा भणंति" (निचू १)। २ ग्रन्थ-विशेष, मूल-ग्रन्थ के अंश-विशेष को लेकर उसका विस्तार से वर्णन करने वाला ग्रन्थ, टीका ; "संगोवंगाणं सरहस्साणं चउण्हं वेयाणं" (औप)। ३ 'औपपातिक' सूत्र वगैरः बारह जैन ग्रन्थ; (कप्प ; जं १ ; सूक्त ७०)।
उवंजण न [उपाञ्जन] मृक्षण, मालिस ; (पण्ह २, १)।
उवकंठ देखो **उवअंठ**; (भवि)।
उवकप्प सक [उप+क्लृ] १ उपस्थित करना; । २ करना। " उवकप्पइ करेइ उवणेइ वा होंति एगट्ठा" (पंचभा)। प्रयो—उवकप्पयंति ; (सूअ १, १२)।
उवकप्प पुं [उपकल्प] साधु को दी जाती भिक्षा, अन्न-पान वगैरः ; (पंचभा)।
उवकय वि [उपकृत] जिस पर उपकार किया गया हो वह, अनुगृहीत ; "अणुवकयपराणुग्गहपरायणा" (आव ४)।
उवकय वि [दे] सज्जित, प्रगुण, तय्यार ; (दे १, ११६)।
उवकर देखो **उयवर**=उप+कृ। उवकरेउ ; (उवा)।
उवकर सक [अव+कॄ] व्याप्त करना। भूका—"अहवा पंसुणा उवकरिंसु" (आचा १, ६, ३, ११)।
उवकरण देखो **उवगरण** ; (औप)।
उवकस सक [उप+कष्] प्राप्त होना। "नारीण वसमुवकसंति" (सूअ १, ४)।
उवकसिअ वि [दे] १ संनिहित ; २ परिसेवित ; ३ सर्जित, उत्पादित ; (दे १, १३८)।
उवकिइ } स्त्री [उपकृति] उपकार ; (दे ४, ३४ ; ८;
उवकिदि } ४५)।
उवकुल न [उपकुल] नक्षत्र-विशेष, श्रवण आदि बारह नक्षत्र ; (जं ७)।
उवकोसा स्त्री [उपकोशा] एक प्रसिद्ध वेश्या ; (उव)।
उवक्कंत वि [उपक्रान्त] १ समीप में आनीत ; २ प्रारब्ध, प्रस्तावित ; (विसे ६८७)।
उवक्कम सक [उप+क्रम्] १ शुरू करना, प्रारम्भ करना। २ प्राप्त करना। ३ जानना। ४ समीप में लाना। ५ संस्कार करना। ६ अनुसरण करना। "सीसो गुरुणो भावं जमुवक्कमए" (विसे ६२६)। "ता तुब्भे ताव अवक्कमह लहुं, जाव एगागि सामुवक्कमामि त्ति" (महा)। "जेणोवक्कामि

उज्ज समीवमाणिज्जए" (विसे २०३६)। "जण्णं हलकुलिआईहिं खेत्ताइं उवक्कमिज्जंति से तं खेत्तोवक्कमे" (अणु)। वकृ—**उवक्कमंत**; (विसे ३४१८)।

उवक्कम पुं [**उपक्रम**] १ आरम्भ, प्रारंभ; २ प्राप्ति का प्रयत्न ; 'सोच्चा भगवाणुसासणं सच्चे तत्थ करेज्जुवक्कमं" (सूअ १,२,३,१४)। ३ कर्मों के फल का अनुभव; (सूअ १,३; भग १,४)। ४ कर्मों की परिणति का कारण-भूत जीव का प्रयत्न-विशेष; (ठा ४, २)। ५ मरण, मौत, विनाश; "हुज्ज इमम्मि समए उवक्कमो जीवियस्स जइ मज्झ" (आउ १५ ; बृह ४)। ६ दूर स्थित को समीप में लाना; "सत्थस्सोवक्कमणं उवक्कमो तेण तम्मि अ तओ वा सत्थसमीवीकरणं" (विसे; अणु)। ७ आयुष्य-विघातक वस्तु; (ठा ४, २ ; स २८७)। ८ शस्त्र, हथियार ; "भुम्माहारच्छेए उवक्कमेणं च परिणाए" (धर्म २)। ९ उपचार; (स ३०५)। १० ज्ञान, निश्चय; ११ अनुवर्तन, अनुकूल प्रवृत्ति; (विसे ९२६; ९३०)। १२ संस्कार, परिकर्म ; "खेत्तोवक्कमे" (अणु)।

उवक्कमण न [**उपक्रमण**] ऊपर देखो ; (अणु; उवर ४६; विसे ९११; ९१७; ९२१)।

उवक्कमिय वि [**औपक्रमिक**] उपक्रम से संबन्ध रखने वाला; (ठा २, ४ ; सम १४५ ; पण्ण ३५)।

उवक्काम देखा **उवक्कम**=उप+क्रम् । कर्म—उवक्कामिज्जइ; (विसे २०३६)।

उवक्कामण देखो **उवक्कमण** ; (विसे २०५०)।

उवक्केस पुं [**उपक्लेश**] १ बाधा; २ शोक; (राज)।

उवक्खड सक [**उप+स्कृ**] १ पकाना, रसोई करना । २ पाक को मसाले से संस्कारित करना । उवक्खडेइ, उवक्खडिंति; (पि ५५९)। संकृ—**उवक्खडेत्ता**; (आचा)। प्रयो—उवक्खडावेइ, उवक्खडाविंति; (पि ५५९; कप्प)। संकृ—**उवक्खडावेत्ता**; (पि ५५९)।

उवक्खड } **उवक्खडिय** } वि [**उपस्कृत**] १ पकाया हुआ; २ मसाला वगैरः के संस्कार-युक्त पकाया हुआ; (निचू ८; पि ३०६; ५५९; उत्त १२, ११)। ३ पुंन. "रसोई, पाक "भणिया महाणसप्पारा जह अज्ज उवक्खडो न कायव्वो" (उप ३५६ टी; ठा ४, २; णाया १, ८; ओघ ५४ भा)। °म वि [°म] पकाने पर भी जो कच्चा रह जाता है वह मुंग वगैरः अन्न-विशेष; "उवक्खडामं णाम जहा चणयादीणं उवक्खडियाणं जे ण सिज्झंति ते कंकडुयामं उवक्खडियामं भण्णइ" (निचू १५)।

उवक्खर पुं [**उपस्कर**] १ संस्कार ; २ जिससे संस्कार किया जाय वह ; (ठा ४, २)।

उवक्खरण न [**उपस्करण**] ऊपर देखो। °**साला** स्त्री [°**शाला**] रसोई-घर, पाक-गृह ; (निचू ९)।

उवक्खाइया स्त्री [**उपाख्यायिका**] उपकथा, अवान्तर कथा; (सम ११६)।

उवक्खाण न [**उपाख्यान**] उपाख्यान, कथा ; (पउम ३३, १४६)।

उवक्खित्त वि [**उपक्षिप्त**] प्रारब्ध, शुरू किया हुआ; (मुद्रा ९३)।

उवक्खिव सक [**उप+क्षिप्**] १ स्थापन करना । २ प्रयत्न करना । ३ प्रारंभ करना । उवक्खिव ; (पि ३१९)।

उवक्खेअ पुं [**उपक्षेप**] १ प्रयत्न, उद्योग ; २ उपाय ; "ण भणामि तस्सिं साहणिज्जे किंदो उवक्खेओ" (मा ३९)।

उवग वि [**उपग**] १ अनुसरण करने वाला ; (उप २४३; औप)। २ समीप में जाने वाला ; (विसे २५६५)।

उवगच्छ सक[**उप+गम्**] १ समीप में आना। २ प्राप्त करना। ३ जानना। ४ स्वीकार करना । उवगच्छइ; (उव; स २३७)। उवगच्छंति; (पि ५८२)। संकृ—**उवगच्छिऊण**; (स ४४)।

उवगणिय वि [**उपगणित**] गिना हुआ, संख्यात, परिगणित; (स ४६१)।

उवगम देखो **उवगच्छ**। संकृ—**उवगम्म** ; (विसे ३१९९)। हेकृ—**उवगंतुं** ; (निचू १९)।

उवगय वि [**उपगत**] १ पास आया हुआ ; (से १, १६ ; गा ३२१)। २ ज्ञात, जाना हुआ ; (सम ८८; उप पृ ५९ ; सार्ध १४४)। ३ युक्त, सहित; (राय)। ४ प्राप्त ; (भग)। ५ प्रकर्ष-प्राप्त ; (सम्म १)। ६ स्वीकृत ; "अज्झप्पबद्धमूला, अण्णेहि वि उवगया किरिया" (उवर ५५)। ७ अन्तर्भूत, अन्तर्गत ;

"जं च महाकप्पसुयं, जाणि अ सेसाणि छेअसुत्ताणि ।
चरणकरणाणुओगो त्ति कालियत्थे उवगयाणि"
(विसे २२९५)।

उवगय वि [**उपकृत**] जिस पर उपकार किया गया हो वह ; (स २०१)।

उवगर सक [**उप+कृ**] हित करना । उवगरेमि; (स २०६)।

उवगरण न [**उपकरण**] १ साधन, सामग्री, साधक वस्तु; (ओघ ६६६)। २ बाह्य इन्द्रिय-विशेष; (विसे १६४)।

उवगस सक [उप+कस्] समीप आना, पास आना। संकृ—**उवगसित्ता**; (सूअ १, ४)। वकृ—
"उवगसंतं भंपित्ता, पडिलोमाहिं वग्गुहिं।
भोगभोगे वियारेई, महामोहं पकुव्वइ" (सम ५०)।

उवगा सक [उप+गै] वर्णन करना, श्लाघा करना, गुण-गान करना। कवकृ-**उवगाइज्जमाण**, **उवगिज्जमाण**, **उवगीयमाण**; (राय; भग ६, ३३; स ६३)।

उवगार देखो **उवयार**=उपकार; (सुर २, ४३)।

उवगारग वि [उपकारक] उपकार करने वाला; (स ३२१)।

उवगारि वि [उपकारिन्] ऊपर देखो; (सुर ७, १६७)।

उवगिअ न [उपकृत] १ उपकार; २ वि. जिस पर उपकार किया गया हो वह; (स ६३६)।

उवगिज्जमाण देखो **उवगा**।

उवगिण्ह सक [उप+ग्रह्] १ उपकार करना। २ पुष्टि करना। ३ ग्रहण करना। उवगिण्हह; (पि ५१२)।

उवगीय वि [उपगीत] १ वर्णित, श्लाघित। २ न. संगीत, गीत, गान; "वाइयमुवगीयं नट्टमवि सुयं दिट्ठं चिट्ठमुत्ति-करं" (सार्ध १०८)।

उवगीयमाण देखो **उवगा**।

उवगूढ वि [उपगूढ] १ आलिङ्गित; (गा ३५१; स ४४८)। २ न. आलिंगन; (राज)।

उवगूह सक [उप+गुह्] १ आलिंगन करना। २ गुप्त रीति से रक्षण करना। ३ रचना करना, बनाना। कवकृ—**उवगूहिज्जमाण**; (णाया १, १; औप)।

उवगूहण न [उपगूहन] १ आलिंगन; २ प्रच्छन्न-रक्षण; ३ रचना, निर्माण; "आरुहणणट्टणेहिं वालयउवगूहणेहिं च" (तंदु)।

उवगूहिय वि [उपगूढ] आलिंगित; (आवम)।

उवग्ग न [उपाग्र] १ अग्र के समीप। २ आषाढ़ मास "एसो चिय कालो पुणरेव गणं उवग्गम्मि" (वव १)।

उवग्गह पुं [उपग्रह] १ पुष्टि, पोषण; (विसे १८५०)। २ उपकार; (उप ५६७ टी; स १५४)। ३ ग्रहण, उपादान; (ओघ २१२ भा)। ४ उपधि, उपकरण, साधन; (ओघ ६६६)।

उवग्गहिअ वि [उपगृहीत] १ उपस्थापित; (पराह २३)। २ आलिंगनादि चेष्टा; "उवहसिएहिं उवग्गहिएहिं उवसद्देहिं" (तंदु)। ३ उपकृत; (स १५६)। ४ उपष्टम्भित; (राज)।

उवग्गहिअ देखो **ओवग्गहिअ**; (पंचव)।

उवग्गाहि वि [उपग्राहिन्] संबन्धी, संबन्ध रखने वाला; (स ५२)।

उवग्घाय पुं [उपोद्घात] ग्रन्थ के आरम्भ का वक्तव्य, भूमिका; (विसे ६६२)।

उवघाइ वि [उपघातिन्] उपघात करने वाला; (भग ८७; विसे २००८)।

उवघाइय वि [उपघातिक] १ उपघात-कारक; (विसे २००६)। २ हिंसा से संबन्ध रखने वाला "भूओवघाइए" (औप)।

उवघाय पुं [उपघात] १ विराधना, आघात; (ओघ ७८८)। २ अशुद्धता; (ठा ५)। ३ विनाश; (कम्म १, ५४)। ४ उपद्रव; (तंदु)। ५ दूसरे का अशुभ-चिन्तन; (भास ५१)। °**नाम** न [°**नामन्**] कर्म-विशेष, जिसके उदय से जंतु अपने ही शरीर के पडजीभ, चोरदन्त, रसौली आदि अवयवों से क्लेश पाता है वह कर्म; (सम ६७)।

उवघायण न [उपघातन] ऊपर देखो; (विसे २२३)।

उवचय पुं [उपचय] १ वृद्धि; (भग ६, ३)। २ समूह; (पिंड २; ओघ ४०७)। ३ शरीर; (आव ५)। ४ इन्द्रिय-पर्याप्ति; (पराण १५)।

उवचयण न [उपचयन] १ वृद्धि; २ परिपोषण, पुष्टि; (राज)।

उवचर सक [उप+चर्] १ सेवा करना। २ समीप में घूमना-फिरना। ३ आरोप करना। ४ समीप में खाना। ५ उपद्रव करना। उवचरइ, उवचरए, उवचरामो, उवचरंति; (बृह १; पि ३४६; ४५५; आचा)।

उवचरिय वि [उपचरित] १ उपासित, सेवित, बहुमानित; (स ३०)। २ न. उपचार, सेवा; (पंचा ६)।

उवचि सक [उप+चि] १ इकट्ठा करना। २ पुष्ट करना। उवचिणइ, उवचिणाइ; उवचिणंति; भूका—उवचिणिंसु; भवि—उवचिणिस्संति; (ठा २, ४; भग)। कर्म—उवचिज्जइ, उवचिज्जंति; (भग)।

उवचिट्ठ सक [उप+स्था] उपस्थित होना, समीप आना। उवचिट्ठे, उवचिट्ठेज्जा; (पि ४६२)।

उवचिय वि [उपचित] १ पुष्ट, पीन; (पराह १, ४; कप्प)। २ स्थापित, निवेशित; (कप्प; पराण २)। ३

उन्नति; (औप)। ४ व्याप्त; (अणु)। ५ वृद्ध, बढा हुआ; (आचा)।

उवच्छंदिद (शौ) वि [**उपच्छन्दित**] अभ्यर्थित; (अभि १७३)।

उवजंगल वि [**दे**] दीर्घ, लम्बा; (दे १, ११६)।

उवजा अक [**उप+जन्**] उत्पन्न होना। उवजायइ; (विसे ३०२६)।

उवजाइ स्त्री [**उपजाति**] छन्द-विशेष; (पिंग)।

उवजाइय देखो **उवयाइय**; (श्राद्ध १६; सुपा ३५४)।

उवजाय वि [**उपजात**] उत्पन्न; (सुपा ६००)।

उवजीव सक [**उप+जीव्**] आश्रय लेना। उवजीवइ; (महा)।

उवजीवग वि [**उपजीवक**] आश्रित; (सुपा ११६)।

उवजीवि वि [**उपजीविन्**] १ आश्रय लेने वाला; "न करेइ नेय पुच्छइ निद्धम्मा लिंगमुवजीवी" (उव)। २ उपकारक; (विसे २८८६)।

उवजोइय वि [**उपज्योतिष्क**] १ अग्नि के समीप में रहने वाला; २ पाक-स्थान में स्थित; "के इत्थ खत्ता उवजोइया वा अज्झावया वा सह खंडिएहिं" (उत १२, १८)।

उवज्जण न [**उपार्जन**] पैदा करना, कमाना; (सुर ८, १४४)।

उवज्जिण सक [**उप+अर्ज्**] उपार्जन करना। उवज्जिणेमि; (स ४४३)।

उवज्झय } पुं [**उपाध्याय**] १ अध्यापक, पढ़ाने वाला;
उवज्झाय } (पउम ३६, ६० ; षड्)। २ सूत्राध्यापक जैन मुनि को दी जाती एक पदवी; (विसे)।

उवज्झिय वि [**दे**] आकारित, बुलाया हुआ; (राज)।

उवट्टण देखो **उव्वट्टण**; (राज)।

उवट्टणा देखो **उव्वट्टणा**; (भग; विसे २५१५ टी)।

उवट्ठ वि [**उपस्थ**] एक ही स्थान में सतत अवस्थित; (वव ४)। °**काल** पुं [°**काल**] आने की वेला, अभ्यास समय; (वव ४)।

उवट्ठंभ पुं [**उपष्टम्भ**] १ अवस्थान; (भग)। २ अनुकम्पा, करुणा; (ठा २)।

उवट्ठप्प वि [**उपस्थाप्य**] १ उपस्थित करने योग्य; २ व्रत—दीक्षा के योग्य "वियत्तकिच्चे संहे य उवट्ठप्पा य आहिया" (वृह ६)।

उवट्ठव सक [**उप+स्थापय्**] १ उपस्थित करना। २ व्रतों का आरोपण करना, दीक्षा देना। उवट्ठवेइ, उवट्ठवेह; (महा; उवा)। हेकृ—**उवट्ठवेत्तए**; (वृह ४)।

उवट्ठवणा स्त्री [**उपस्थापना**] १ चारित्र-विशेष, एक प्रकार की जैन दीक्षा; (धर्म २)। २ शिष्य में व्रत की स्थापना; "वयट्ठवणमुवट्ठवणा" (पंचभा)।

उवट्ठवणीय वि [**उपस्थापनीय**] देखो **उवट्ठप्प**; (ठा ३)।

उवट्ठा सक [**उप+स्था**] उपस्थित होना। उवट्ठाएज्जा; (भग)।

उवट्ठाण न [**उपस्थान**] १ बैठना, उपवेशन; (णाया १, १)। २ व्रत-स्थापन; (महानि ७)। ३ एक ही स्थान में विशेष काल तक रहना; (वव ४)। °**दोस** पुं [°**दोष**] नित्यवास दोष; (वव ४)। °**साला** स्त्री [°**शाला**] आस्थान-मण्डप, सभा-स्थान; (णाया १, १; निर १, १)।

उवट्ठाणा स्त्री [**उपस्थाना**] जिसमें जैन साधु-लोक एक वार ठहर कर फिर भी शास्त्र-निषिद्ध अवधि के पहले ही आकर ठहरे वह स्थान; (वव ४)।

उवट्ठाव देखो **उवट्ठव**। उवट्ठावेहि; (पि ४६८)। हेकृ—**उवट्ठावित्तए, उवट्ठावेत्तए**; (ठा)।

उवट्ठावणा देखो **उवट्ठवणा**; (वृह ६)।

उवट्ठिय वि [**उपस्थित**] १ प्राप्त; "जणवादमुवट्ठिओ" (उत्त १२)। २ समीप-स्थित; (आव १०)। ३ तय्यार, उद्यत; (धर्म ३)। ४ आश्रित; "निम्ममत्तमुवट्ठिओ" (आउ; सूअ १, २)। ५ मुमुक्षु, प्रव्रज्या लेने को तय्यार; "उवट्ठियं पडिरयं, संजयं सुतवस्सियं। वुक्कम्म धम्माओ भंसेइ, महामोहं पकुव्वइ" (सम ५१)।

उवडहित्तु वि [**उपदाहयितृ**] जलाने वाला "अगणिकाएणं कायमुवडहित्ता भवइ" (सूअ २, २)।

उवडिअ वि [**दे**] अवनत, नमा हुआ; (षड्)।

उवणगर न [**उपनगर**] उपपुर, शाखा-नगर; (औप)।

उवणच्च सक [**उप+नर्त्तय्**] नचाना, नाच कराना। कवकृ—**उवणच्चिज्जमाण**; (औप)।

उवणद्ध वि [**उपनद्ध**] घटित; (उत्तर ६१)।

उवणम सक [**उप+नम्**] १ उपस्थित करना, ला रखना। २ प्राप्त करना। उवणमइ; (महा)। वकृ—**उवणमंत**; (उप १३६ टी; सूअ १, २)।

उवणमिय वि [**उपनमित**] उपस्थापित; (सण)।

उवणय वि [**उपनत**] उपस्थित; (से १, ३६)।

उवणय पुं [**उपनय**] १ उपसंहार, दृष्टान्त के अर्थ को प्रकृत में जोड़ना, हेतु का पक्ष में उपसंहार; (पव ६६; ओघ ४४

भा)। २ स्तुति, श्लाघा; (विसे १४०३ टी; पव १४१)। ३ अवान्तर नय; (राज)। ४ संस्कार-विशेष, उपनयन; (स २७२)।
उवणयण न [**उपनयन**] उपवीत-संस्कार, यज्ञ-सूत्र धारण संस्कार; (पण्ह १, २)।
उवणिअ देखो **उवणीय**; (से ४, ५५)।
उवणिक्खित्त वि [**उपनिक्षिप्त**] व्यवस्थापित; (आचा २)।
उवणिक्खेव पुं [**उपनिक्षेप**] धरोहर, रक्षा के लिए दूसरे के पास रखा धन; (वव ४)।
उवणिग्गम पुं [**उपनिर्गम**] १ द्वार, दरवाजा। (से १२, ६८)। २ उपवन, बगीचा; (गउड)।
उवणिग्गय वि [**उपनिर्गत**] समीप में निकला हुआ; (औप)।
उवणिज्जंत देखो **उवणी**।
उवणिमंत सक [**उपनि+मन्त्रय्**] निमन्त्रण देना। भवि— उवणिमंतेहिंति; (औप)। संकृ—**उवणिमंतिऊण**; (स ३०)।
उवणिमंतण न [**उपनिमन्त्रण**] निमन्त्रण; (भग ८, ६)।
उवणिविट्ठ वि [**उपनिविष्ट**] समीप-स्थित; (राय)।
उवणिसआ स्त्री [**उपनिषत्**] वेदान्त-शास्त्र, वेदान्त-रहस्य, ब्रह्म-विद्या; (अच्चु ८)।
उवणिहा स्त्री [**उपनिधा**] मार्गण, मार्गणा; (पंचसं)।
उवणिहि पुंस्त्री [**उपनिधि**] १ समीप में आनीत; (ठा ५)। २ विरचना, निर्माण; (अणु)।
उवणिहिय वि [**उपनिहित**] १ समीप में स्थापित; २ आसन्न-स्थित; (सूअ २, २)। °य पुं [°क] नियम-विशेष को धारण करने वाला भिक्षु; (सूअ २, २)।
उवणी सक [**उप+नी**] १ समीप में लाना, उपस्थित करना। २ अर्पण करना। ३ इकट्ठा करना। उवणेंति; (उवा)। उवणेमो; भवि—उवणेहिइ; (पि ४५५; ४७४; ५२१) कवकृ—**उवणिज्जंत**; (से ११, ५३)। संकृ—"से भिक्खुणो **उवणेत्ता** अणेगे" (सूअ २, ६, १)।
उवणीय वि [**उपनीत**] १ समीप में लाया हुआ; (पाअ; महा)। २ अर्पित, उपढौकित; (औप)। ३ उपनय-युक्त, उपसंहृति; (विसे ६६६ टी; अणु)। ४ प्रशस्त, श्लाघित; (आचा २)। °चरय पुं [°चरक] अभिग्रह-विशेष को धारण करने वाला साधु; (औप)।
उवण्णत्थ वि [**उपन्यस्त**] उपन्यस्त, उपढौकित; "गुव्विणीए उवण्णत्थं विविहं पाणभोअणं। भुंजमाणं विवज्जिज्जा" (दस ५, ३६)।
उवण्णास पुं [**उपन्यास**] १ वाक्योपक्रम, प्रस्तावना; (ठा ४)। २ दृष्टान्त-विशेष; (दस १)। ३ रचना; (अभि ६८)। ४ छल-प्रयोग; (प्रयौ २३)।
उवतल न [**उपतल**] हस्त-तल की चारों ओर का पार्श्व-भाग; (निचू १)।
उवताव पुं [**उपताप**] संताप, पीडा; (सूअ १, ३)।
उवताविय वि [**उपतापित**] १ पीडित; २ तप्त किया हुआ, गरम कया हुआ; (सुर २, २२६; सण)।
उवत्त वि [**उपात्त**] गृहीत; (पउम २६, ४६; सुर १४, १६०)।
उवत्थड वि [**उपस्तृत**] ऊपर २ आच्छादित; (भग)।
उवत्थाणा देखो **उवट्ठाणा**; (पि ३४१)।
उवत्थिय देखो **उवट्ठिय**; (सम १७)।
उवत्थु सक [**उप+स्तु**] स्तुति करना, श्लाघा करना। उवत्थुणंति; (पि ४६४)। उवत्थुवंदि (शौ); (उत्तर २२)।
उवदंस सक [**उप+दर्शय्**] दिखलाना, बतलाना। उवदंसइ; (कप्प; महा)। उवदंसेमि; (विपा १, १)। भवि— उवदंसिस्सामि; (महा)। वकृ—**उवदंसेमाण**; (उवा)। कवकृ—**उवदंसिज्जमाण**; (णाया १, १३) संकृ— **उवदंसिय**; (आचा २)।
उवदंस पुं [**उपदंश**] १ रोग-विशेष, गर्मी, सुजाक। २ अवलेह, चाटना; (चारु ६)।
उवदंसण न [**उपदर्शन**] दिखलाना; (सण)। °कूड पुं [°कूट] नीलवंत-नामक पर्वत का एक शिखर; (ठा २, ३)।
उवदंसिय वि [**उपदर्शित**] दिखलाया हुआ; (सुपा ३११)।
उवदंसिर वि [**उपदर्शिन्**] दिखलाने वाला; (सण)।
उवदंसेत्तु वि [**उपदर्शयितृ**] दिखलाने वाला; (पि ३९०)।
उवदव पुं [**उपद्रव**] ऊधम, बखेड़ा; (महा)।
उवदा स्त्री [**उपदा**] भेंट, उपहार; (रंभा)।
उवदाई स्त्री [**उदकदायिका**] पानी देने वाली "पाउवदाइं च ण्हाणोवदाइं च बाहिरपेसणकारिं ठवेति" (णाया १, ७)।
उवदाण न [**उपदान**] भेंट, नजराना; (भवि)।

उवदिस सक [उप+दिश्] उपदेश देना। उवदिसइ; (कप्प)।

उवदीव न [दे] द्वीपान्तर, अन्य द्वीप; (दे १, १०६)।

उवदेसग वि [उपदेशक] व्याख्याता; (औप)।

उवदेसणया देखो **उवएसणया**; (विसे २६१६)।

उवदेसि वि [उपदेशिन्] उपदेशक; (चारु ४)।

उवदेही स्त्री [उपदेहिका] क्षुद्र जन्तु-विशेष, दिमक; (दे १, ६३)।

उवद्दव सक [उप+द्रु] उपद्रव करना, ऊधम मचाना। भवि—उवद्दविस्सइ; (महा)।

उवद्दव देखो **उवदव**; (ठा ५)।

उवद्दवण न [उपद्रवण] उपद्रव करना, उपसर्ग करना; (धर्म ३)।

उवद्दविय वि [उपद्रुत] पीडित, भय-भीत किया हुआ; (आव ४; विवे ७६)

उवद्दुअ वि [उपद्रुत] हैरान किया हुआ; (भत्त १०५)।

उवधारणया स्त्री [उपधारणा] धारणा, धारण करना; (ठा ८)।

उवधारिय वि [उपधारित] धारण किया हुआ; (भग)।

उवनंद पुं [उपनन्द] स्वनाम-ख्यात एक जैन मुनि; (कप्प)।

उवनंद सक [उप+नन्द्] अभिनन्दन करना। कवकृ—**उवनंदिज्जमाण**; (कप्प)।

उवनयर देखो **उवणयर**; (सुपा ३४१)।

उवनिक्खित्त देखो **उवणिक्खित्त**; (कस)।

उवनिक्खेव सक [उपनि+क्षेपय्] १ धरोहर रखना। २ स्थापन करना। कृ—**उवनिक्खेवियव्व**; (कस)।

उवनिग्गय देखो **उवणिग्गय**; (गाया १, १)।

उवनिबंधण न [उपनिबन्धन] १ संबन्ध; २ वि. संबन्ध-हेतु; (विसे १६३६)।

उवनिमंत देखो **उवणिमंत**। उवनिमंतेइ, उवनिमंतेमि; (कस; उवा)।

उवनिहिय वि [औपनिधिक] देखो **उवणिहिय**; (पण्ह २, १)।

उवन्नत्थ वि [उपन्यस्त] स्थापित; (स ३१०)।

उवप्पदाण } न [उपप्रदान] नीति-विशेष, दाम-नीति, **उवप्पयाण** } अभिमत अर्थ का दान; (विपा १, ३; गाया १, १)।

उवप्पुय वि [उपप्लुत] उपद्रुत, भय से व्याप्त; (राज)।

उवभुंज सक [उप+भुज्] उपभोग करना, काम में लाना। उवभुंजइ; (षड्)। वकृ—**उवभुंजंत**; (उप पृ १८०)। कवकृ—**उवभुज्जंत, उवभुज्जंत**; (से २, १०; सुर ८, १६१)। संकृ—**उवभुंजिऊण**; (महा)।

उवभुंजण न [उपभोजन] उपभोग; (सुपा १६)।

उवभुत्त वि [उपभुक्त] १ जिसका उपभोग किया हो वह; (वव ३)। २ अधिकृत; (उप पृ १२४)।

उवभोअ } पुं [उपभोग] १ भोजनातिरिक्त भोग, जिसका **उवभोग** } फिर २ भोग किया जाय वैसे वस्त्र-गृहादि; "उवभोगो उ पुणो पुणो उवभुज्जइ भवणवलयाई" (उत्त ३३; अभि ३१)। २ जिसका एक वार भोग किया जाय वह, अशन-पान वगैरः; (भग ७, २; पडि)।

उवभोग्ग } वि [उपभोग्य] उपभोग-योग्य; (राज; बृह **उवभोज्ज** } ३)।

उवमा स्त्री [उपमा] १ सादृश्य, दृष्टान्त; (अणु; उत्त; प्रासू १२०)। २ स्वनाम-ख्यात एक इन्द्राणी; (ठा ८)। ३ खाद्य-पदार्थ विशेष; (जीव ३)। ४ 'प्रश्नव्याकरण' सूत्र का एक लुप्त अध्ययन; (ठा १०)। ५ अलङ्कार-विशेष; (विसे ६६६ टी)। ६ प्रमाण-विशेष, उपमान-प्रमाण; (विसे ४७०)।

उवमाण न [उपमान] १ दृष्टान्त, सादृश्य; २ जिस पदार्थ से उपमा दी जाय वह; (दसनि १)। ३ प्रमाण-विशेष; (सुअ १, १२)।

उवमालिय वि [उपमालित] विभूषित, सुशोभित;

" अमलामयपडिपुन्नं, कुवलयमालोवमालियमुहं च।
कणयमयपुण्णकलसं, विलसंतं पासए पुरओ"
(सुपा ३४)।

उवमिय वि [उपमित] १ जिसको उपमा दी गई हो वह; २ जिसकी उपमा दी गई हो वह; (आवम)। ३ न. उपमा, सादृश्य; (विसे ६८५)।

उवमेअ वि [उपमेय] उपमा के योग्य; (मै ७३)।

उवय पुं [दे] हाथी को पकड़नेका खड्डा; (पाअ)।

उवय देखो **ओवय**। वकृ—**उवयंत**; (कप्प)।

उवय (अप) देखो **उदय**; (भवि)।

उवयर सक [उप+कृ] उपकार करना, हित करना। उवयरेइ; (सण)। कृ—**उवयरियव्व**; (सुपा ५६४)।

उवयर सक [उप+चर्] १ आरोप करना। २ भक्ति करना। ३ कल्पना करना। ४ चिकित्सा करना। कवकृ—**उवयरिज्जंत**; (सुपा ५७)।

उवयरण न [उपकरण] साधन, सामग्री; "माए घरोवअरणं अज्ज हु गत्थि त्ति साहिअं तुमए" (काप्र २९; गउड)। २ उपकार; (सत्त ४१ टी)।

उवयरिय वि [उपकृत] १ उपकृत; २ उपकार; (वज्जा १०)।

उवयरिय वि [उपचरित] आरोपित; (विसे २८३)।

उवयरिया स्त्री [उपचरिका] दासी; (उप पृ ३८७)।

उवया सक [उप+या] समीप में जाना। उवयाइ; (सूअ १, ४, १, २७)। उवयंति; (विसे १४६)।

उवयाइय वि [उपयाचित] १ प्रार्थित, अभ्यर्थित। २ न. मनौती, किसी काम के पूरा होने पर किसी देवता की विशेष आराधना करने का मानसिक संकल्प; (ठा १०; णाया १, ८)।

उवयाण न [उपयान] समीप में गमन; (सूअ १, २)।

उवयार पुं [उपकार] भलाई, हित; (उव; गउड; वज्जा ५८)।

उवयार पुं [उपचार] १ पूजा, सेवा; आदर, भक्ति; (स ३२; प्रति ४)। २ चिकित्सा, शुश्रूषा; (पंचा ६)। ३ लक्षणा, शब्द-शक्ति-विशेष, अध्यारोप; "जो तेसु धम्मसद्दो सो उवयारेण, निच्छएण इहं" (दसनि १)। ४ व्यवहार; "णिउणजुत्तोवयारकुसला" (विपा १, २)। ५ कल्पना; "उवयारओ खित्तस्स विणिगमणं सव्वओ नत्थि" (विसे)। ६ आदेश; (आवम)।

उवयारग वि [उपचारक] सेवा-शुश्रूषा करने वाला; (निचू ११)।

उवयारण न [उपकारण] अन्य-द्वारा उपकार करना; "उवयारणपारणासु विणओ पउंजियव्वो" (पराह २, ३)।

उवयारय वि [उपकारक] उपकार करने वाला; (धम्म ८ टी)।

उवयारि वि [उपकारिन्] उपकारक; (स २०८; विक २३; विवे ७९)।

उवयारिअ वि [औपचारिक] उपचार से संबन्ध रखने वाला; (उवर ३४)।

उवयालि पुं [उपजालि] १ एक अन्तकृद् मुनि, जो वसुदेव का पुत्र था और जिसने भगवान् श्रीनेमिनाथजी के पास दीक्षा लेकर शत्रुञ्जय पर मुक्ति पाई थी; (अंत १४)। २ राजा श्रेणिक का इस नाम का एक पुत्र, जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा लेकर अनुत्तर-विमान में देव-गति प्राप्त की थी; (अनु १)।

उवरइ स्त्री [उपरति] विराम, निवृत्ति; (विसे २१७७; २६४०; सम ४४)।

उवरंज सक [उप+रञ्ज्] ग्रस्त करना। कर्म—उवरज्जदि (शौ); (मुद्रा ५८)।

उवरग पुं न [उपरक] सब से ऊपर का कमरा, अटारी, अट्टालिका; "उवरगपविट्ठाए कणगमंजरीए निरूवणत्थं दारदेसट्ठिएण दिट्ठं तं पुव्ववण्णियचेट्ठियं" (महा)।

उवरत्त वि [उपरक्त] १ अनुरक्त, राग-युक्त; "कुमरगुणेसुवरत्ता" (सुपा २५६)। २ राहु से ग्रसित; (पाअ)। ३ म्लान; (स ४७३)।

उवरम अक [उप+रम्] निवृत्त होना, विरत होना। "भो उवरमसु एयाओ असुभज्झवसाणाओ" (महा)।

उवरम पुं [उपरम] १ निवृत्ति, विराम; (उप पृ ६३)। २ नाश; (विसे ६३)।

उवरय वि [उपरत] १ विरत, निवृत्त; (आचा; सुपा ५०८)। २ मृत; (स १०४)।

उवरय देखो **उवरग**; "उवरयगया दारं पिहिऊण किंपि मुणमुणंती चिट्ठइ" (महा)।

उवरल (अप) देखो **उव्वरिय** (**दे**); (पिंग)।

उवराग } पुं [उपराग] सूर्य वा चन्द्र का ग्रहण, राहु-ग्रहण;
उवराय } (पराह, १, २; से ३, ३६; गउड)।

उवराय पुं [उपरात्र] दिन, "राओवरायं अपडिन्ने अन्नगिलायं एगया भुंजे" (आचा)।

उवरि अ [उपरि] ऊपर, ऊर्ध्व; (उव)। °**भासा** स्त्री [°**भाषा**] गुरु के बोलने के अनन्तर ही विशेष बोलना; (पडि)। °**म, °मग, °मय, °ल्ल** वि [°**तन**] ऊपर का ऊर्ध्व-स्थित; (सम ४३; सुपा ३५; भग; हे २, १६३; सम २३; ८९)। °**हुत्त** वि [°**अभिमुख**] ऊपर की तरफ; (सुपा २६६)।

उवरिं ऊपर देखो; (कुमा)।

उवरुंध सक [उप+रुध्] १ अटकाव करना, रोकना। २ अड़चन डालना। ३ प्रतिबन्ध करना। कर्म—उवरुज्झइ, उवरुंधिज्जइ; (हे ४, २४८)।

उवरुद्द पुं [उपरुद्र] नरक के जीवों को दुःख देने वाले परमाधार्मिक देवों की एक जाति ; "रुद्दोवरुद्द काले अ, महाकाले ति यावरे" (सम २८)।

"भंजंति अंगमंगाणि, ऊरुबाहुसिराणि कर-चरणा।
कप्पेंति कप्पणीहिं, उवरुद्दा पावकम्मरया"
(सूअ १, ५)।

उवरुद्ध वि [उपरुद्ध] १ रचित। २ प्रतिरुद्ध, अवरुद्ध; "पासत्थपमुहचोरोवरुद्धघणभव्वसत्थाणं" (सार्ध ६८ ; उप पृ ३८५)।

उवरोह पुं [उपरोध] १ अड़चन, बाधा; (विसे १४१३; स ३१६) ; "भूओवरोहरहिए" (आव ४)। २ अटकाव, प्रतिबन्ध ; (बृह १; स १५)। ३ घेरा, नगर आदि का सैन्य द्वारा वेष्टन; "उवरोहभया कीरइ सप्परिखे पुरवरस्स पागारो" (बृह ३)। ४ निर्बन्ध, आग्रह; (स ४५७)।

उवरोहि वि [उपरोधिन्] उपरोध करने वाला; (आव ४)।

उवल पुं [उपल] १ पाषाण, पत्थर ; (प्रास १७५)। २ टाँकी वगैरः को संस्कृत करने वाला पाषाण-विशेष; (पण्ण १)।

उवलम्बण पुं [उपलम्बन] साँकल वाला एक प्रकार का दीपक ; (अनु)।

उवलंभ सक [उप+लभ्] १ प्राप्त करना। २ जानना। ३ उलहना देना। कर्म—**उवलंभिज्जइ** ; (पि ५४१)। वकृ—**उवलंभेमाण** ; (णाया १, १८)।

उवलंभ पुं [उपलम्भ] १ लाभ, प्राप्ति ; (सुपा ६)। २ ज्ञान ; (स ६५१)। ३ उलहना; "एवं बहूवलंभे" (उप ६४८ टी)।

उवलंभणा स्त्री [उपलम्भना] उलहना; "धण्णं सत्थवाहं बहूहिं खेज्जणाहि य रुंटणाहि य उवलंभणाहि य खेज्जमाणा य रुंटमाणा य उवलंभेमाणा य धण्णस्स एयमट्ठं णिवेदेंति" (णाया १, १८)।

उवलक्ख सक [उप+लक्षय्] जानना, पहिचानना। उवलक्खेइ ; (महा)। संकृ—**उवलक्खेऊण**; (महा)। कृ—**उवलक्खिअव्व** ; (उप पृ ८७)।

उवलक्खण न [उपलक्षण] १ पहिचान; (सुपा ६१)। २ अन्यार्थ-बोधक संकेत ; (श्रा ३०)।

उवलक्खिअ वि [उपलक्षित] १ पहिचाना हुआ, परिचित; (श्रा १२)।

उवलग्ग वि [उपलग्न] लगा हुआ, लग्न; "पउमिणिपत्तोवलग्गजलबिंदुनिचयचित्तं" (कप्प; भवि)।

उवलद्ध वि [उपलब्ध] १ प्राप्त ; २ विज्ञात ; "जइ सव्वं उवलद्धं, जइ अप्पा भाविओ उवसमेण" (उव ; णाया १. १३ ; १४)। ३ उपालब्ध, जिसको उलहना दिया गया हो वह ; (उप ७२८ टी)।

उवलद्धि स्त्री [उपलब्धि] १ प्राप्ति, लाभ ; २ ज्ञान ; (विसे २०६)।

उवलद्धु वि [उपलब्धृ] ग्रहण करने वाला, जानने वाला ; (विसे ६२)।

उवलभ देखो **उवलंभ=उप+लभ्**। वकृ—**उवलभंत**; (पि ४५७)। संकृ—**उवलब्भ** ; (पि ५९०)।

उवलभत्ता
उवलयभग्गा } स्त्री [दे] वलय, कङ्गन ; (दे १, १२०)।

उवलल अक [उप + लल्] क्रीड़ा करना, विलास करना। वकृ—**उवलल्लंत** ; (महा)। प्रयो, वकृ—**उवलालिज्जमाण** ; (णाया १, १)।

उवललय न [दे] सुरत, मैथुन ; (दे १, ११७)।

उवललिय न [उपललित] क्रीडा-विशेष; (णाया १. ६)।

उवलह देखो **उवलंभ=उप+लभ्**। संकृ—**उवलहिय** ; (स ३२) ; **उवलहिऊण** ; (स ६१०)।

उवला सक [उप+ला] १ ग्रहण करना। २ आश्रय करना। हेकृ—**उवलाउं**; (वव १)।

उवलि देखो **उवल्लि**। उवलिइज्जा ; (आचा २, ३, १, २)।

उवलिंप सक [उप+लिप्] लीपना, पोतना। भवि—उवलिंपिहिइ ; (पि ५४६)।

उवलित्त वि [उपलिप्त] लीपा हुआ, पोता हुआ ; (णाया १, १)।

उवलीण देखो **उव-लीण**।

उवलुअ वि [दे] सलज्ज, लज्जा-युक्त ; (दे १, १०७)।

उवलेव पुं [उपलेप] १ लेपना। २ कर्म-बन्ध; (औप)। ३. संश्लेष ; (आचा)। ४ आश्लेष; (सूअ १, १, २)।

उवलेवण न [उपलेपन] ऊपर देखो ; (भग ११, ६ ; निचू १ ; औप)।

उवलेविय वि [उपलेपित] लीपा हुआ, पोता हुआ ; (कप्प)।

उवलोभ सक [उप+लोभय्] लालच देना, लोभ दिखाना। संकृ—**उवलोभेऊण**; (महा)।

उवलोहिय वि [उपलोभित] जिसको लालच दी गई हो वह; (उप ७२८ टी)।

उवल्लि सक [उप+ली] १ रहना, स्थिति करना। २ आश्रय करना। उवल्लियइ; (पि १९६; ४७४)। "तओ संजयामेव वासावासं उवल्लिइज्जा" (आचा २, ३,१, १; २)।

उवल्लीण वि [उपलीन] १ स्थित। २ प्रच्छन्न-स्थित; "उवल्लीणा मेहुणधम्मं विण्णवेंति" (आचा २)।

उववज्ज अक [उप+पद्] १ उत्पन्न होना। २ संगत होना, युक्त होना। उववज्जइ; भवि—उववज्जिहिइ; (भग; महा) वकृ—**उववज्जमाण**; (ठा ४)। संकृ—**उववज्जित्ता**; (भग १७, ६)। हेकृ—**उववज्जिउं**; (सूअ २, १)।

उववज्जण न [उपवर्जन] त्याग, "असमंजसोववज्जण-मिह जायइ सव्वसंगचायाओ" (सुपा ४७१)।

उववज्जमाण देखो **उववाय**=उप+वादय्।

उववट्ट अक [उप+वृत्] च्युत होना, मरना, एक गति से दूसरी गति में जाना। उववट्टइ; (भग)। वकृ—**उववट्टमाण**; (भग)।

उववण न [उपवन] बगीचा; (णाया १, १; गउड)।

उववण्ण वि [उपपन्न] १ उत्पन्न; "उववण्णो माणुसम्मि लोगम्मि" (उत्त ६)। २ संगत, युक्त; (पंचा ६; उवर ४७)। ३ प्रेरित; "उववण्णो पावकम्मुणा" (उत्त १९)। ४ न. उत्पत्ति, जन्म; (भग १४,१)।

उववत्ति स्त्री [उपपत्ति] १ उत्पत्ति, जन्म; (ठा २)। २ युक्ति, न्याय; (पउम २, ११७; उवर ४६)। ३ विषय; ४ संभव; "विसउ त्ति वा संभउ त्ति वा उवव त्ति ति वा एगट्ठा" (आचू १)।

उववत्तु वि [उपपत्तृ] उत्पन्न होने वाला, "देवलोगेसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति" (औप; ठा ८)।

उववन्न देखो **उववण्ण**; (भग; ठा २, २; स १५८; १६२)।

उववयण न [उपपतन] देखो **उववाय**=उपपात; "उववयणं उववाओ" (पंचभा)।

उववसण न [उपवसन] उपवास; (सुपा ६१९)।

उववाइय वि [औपपादिक, औपपातिक] १ उत्पन्न होने वाला; "अत्थि मे आया उववाइए, नत्थि मे आया उववाइए" (आचा)। २ देवरूप या नारक रूप से उत्पन्न होने वाला; (पण्ह १, ४)।

उववाय पुं [उप+वादय्] वाद्य बजाना। कवकृ—**उववज्जमाण, उववज्जमाण**; (कप्प; राज)।

उववाय पुं [उपपात] १ देव या नारक जीव की उत्पत्ति—जन्म; (कप्प)। २ सेवा, आदर; "आणोववायवयणनिद्देसे चिट्ठंति" (भग ३, ३)। ३ विनय; ४ आज्ञा; 'उववाओ णिद्देसो आणा विणओ य होंति एगट्ठा" (वव ४)। ५ प्रादुर्भाव; (पण्ण १६)। ६ उपसंपादन, संप्राप्ति; (निचू ५)। °कप्प पुं [°कल्प] साध्वाचार-विशेष, पार्श्वस्थों के साथ रह कर संविग्न-विहार की संप्राप्ति; (पंचभा)। °य वि [°ज] देव या नारक गति में उत्पन्न जीव; (आचा)।

उववास पुंन [उपवास] उपवास, अनाहार, दिन-रात भोजनादि का अभाव; (उवा; महा)।

उववासि वि [उपवासिन्] जिसने उपवास किया हो वह (पउम ३३, ५१; सुपा ४७८)।

उववासिय वि [उपवासित] उपवास किया हुआ; (भवि)।

उवविट्ठ वि [उपविष्ट] बैठा हुआ, निषण्ण; (आवम)।

उवविणिग्गय वि [उपविनिर्गत] सतत निर्गत; (जीव३)।

उवविस अक [उप+विश्] बैठना। उवविसइ; (महा)। संकृ—**उवविसिअ**; (अभि ३८)।

उववीअ न [उपवीत] १ यज्ञसूत्र, जनोऊ; (णाया १, १६; गउड)। २ सहित, युक्त; "गुणसंपओववीओ" (विसे ३४११)।

उववीड अ [उपपीड] उपमर्दन; "सिविणोववीडं आलिंगणेण गाढं पीडिओ" (रंभा)।

उववूह सक [उप+बृंह्] १ पुष्ट करना। २ प्रशंसा करना, तारीफ करना। संकृ—**उववूहेऊण**; (दसनि ३)। कृ—**उववूहेयव्व**; (दसनि ३)।

उववूहण न [उपबृंहण] १ वृद्धि, पोषण; (पण्ह २, १)। २ प्रशंसा, श्लाघा; (पंचा २)।

उववूहा स्त्री [उपबृंहा] ऊपर देखो; "उववूह-थिरीकरणे वच्छल्लपभावणे अट्ठ" (पडि)।

उववूहणिय वि [उपबृंहणीय] पुष्टि-कर्ता; (निचू ८)। स्त्री. पट्ट-विशेष, राजा वगैरः के भोजन-समय में उपभोग में आने वाला पट्ट; (निचू ६)।

उववूहिय वि [उपबृंहित] १ वृद्धि को प्राप्त पुष्ट; (सं १५)। २ प्रशंसित; (उप पृ ३८६)।
उववूहिर वि [उपबृंहिन्] १ पोषक, पुष्टि-कारक; २ प्रशंसक; (सण)।
उववेय वि [उपेत] युक्त, सहित; (णाया १, १; औप वसु; सुर १, ३४; विसे ६६६)।
उवसंखा स्त्री [उपसंख्या] यथावस्थित पदार्थ-ज्ञान; (सूअ २, १६)।
उवसंगह सक [उपसं+ग्रह्] उपकार करना। कर्म—उवसंगहिज्जइ; (स १६१)।
उवसंघर सक [उपसं+हृ] उपसंहार करना। उवसंघरमि; (भवि)।
उवसंघरिय देखो **उवसंहरिय**; (भवि)।
उवसंघिय वि [उपसंहृत] जिसका उपसंहार किया गया हो वह, समापित; (विसे १०११)।
उवसंचि सक [उपसं+चि] संचय करना। संकृ—**उवसंचिवि**; (सण)।
उवसंठिय वि [उपसंस्थित] १ समीप में स्थित; २ उपस्थित; (सण)।
उवसंत वि [उपशान्त] १ क्रोधादि-विकार-रहित; (सूअ १, ६; धर्म ३)। २ नष्ट, अपगत; "उवसंतरयं करेह" (राय)। ३ पुं. ऐरवत क्षेत्र के स्वनाम-धन्य एक तीर्थङ्कर-देव; (पव ७)। °**मोह** पुं [°मोह] ग्यारहवाँ गुण-स्थानक; (सम २६)।
उवसंति स्त्री [उपशान्ति] उपशम; (आचा)।
उपसंधारिय वि [उपसंधारित] संकल्पित; (निचू १)।
उवसंपज्ज [उपसं+पद्] १ समीप में जाना। २ स्वीकार करना। ३ प्राप्त करना। उवसंपज्जइ; (स १६१)। वकृ—**उवसंपज्जंत**; (वव १)। संकृ—**उवसंपज्जित्ता, उवसंपज्जित्ताणं**; (कप्प; उवा)। हेकृ—**उवसंपज्जिउं**; (वृह १)।
उवसंपण्ण वि [उपसंपन्न] १ प्राप्त; २ समीप-गत; (धर्म ३)।
उवसंपया स्त्री [उपसंपद्] १ ज्ञान वगैरः को प्राप्ति के लिए दूसरे गुर्वादि के पास जाना; (धर्म ३)। २ अन्य गुरु आदि की सत्ता का स्वीकार करना; (ठा ३, ३)। ३ लाभ, प्राप्ति; (उत्त २६)।

उवसंहरिय वि [उपसंहृत] हटाया हुआ "वंतरेण य उवसहरिया माया" (महा)।
उवसंहार पुं [उपसंहार] १ समाप्ति; २ उपनय; (श्रा ३६)।
उवसग्ग पुं [उपसर्ग] १ उपद्रव, बाधा; (ठा १०)। २ अव्यय-विशेष, जो धातु के पूर्व में जोड़े जाने से उस धातु के अर्थ की विशेषता करता है; (पण्ह २, २)।
उवसग्ग वि [दे] मन्द, आलसी; (दे १, ११३)।
उवसज्जण न [उपसर्जन] १ अ-प्रधान, गौण; (विसे २२६२)। २ सम्बन्ध; (विसे ३००५)।
उवसत्त वि [उपसक्त] विशेष आसक्ति वाला, (उत्त ३२)।
उवसद्द पुं [उपशब्द] सुरत-समय का शब्द; (तंदु)।
उवसप्प सक [उप+सृप्] समीप जाना। संकृ—**उवसप्पिऊण**; (महा; स ५२६)।
उवसप्पि वि [उपसर्पिन्] समीप में जाने वाला; (भवि)।
उवसप्पिय वि [उपसर्पित] पास गया हुआ; (पाअ)।
उवसम पुं [उप+शम्] १ क्रोध-रहित होना। २ शान्त होना, ठंढ़ा होना। ३ नष्ट होना। उवसमइ; (कप्प; कस; महा)। कृ—**उवसमियव्व**; (कप्प)। प्रयो—उवसमेइ; (विसे १२८४), उवसमावेइ; (पि ५५२); कृ—**उवसमावियव्व**; (कप्प)।
उवसम पुं [उपशम] १ क्रोध का अभाव, क्षमा; (आचा)। २ इन्द्रिय-निग्रह; (धर्म ३)। ३ पन्द्रहवाँ दिवस; (चंद १०)। ४ मुहूर्त्त-विशेष; (सम ५१)। °**सम्म** न [°सम्यक्त्व] सम्यक्त्व-विशेष; (भग)।
उवसमणा स्त्री [उपशमना] आत्मिक प्रयत्न विशेष, जिससे कर्म-पुद्गल उदय-उदीरणादि के अयोग्य बनाये जाँय वह; (पंच)।
उवसमि वि [उपशमिन्] उपशम वाला; (विसे ५३० टी)।
उवसमिय वि [उपशमित] उपशम-प्राप्त; (भवि)।
उवसमिय वि [औपशमिक] १ उपशम से होने वाला; २ उपशम से संबन्ध रखने वाला; (सुपा ६४८)।
उवसाम सक [उप+शमय्] १ शान्त करना। २ रहित करना। उवसामेइ; (भग)। वकृ—**उवसामेमाण**; (राज) कृ—**उवसामियव्व**; (कप्प)। संकृ—**उवसामइत्तु**; (पंच)।
उवसाम देखो **उवसम**; (विसे १३०६)।

उवसामग वि [उपशमक] १ क्रोधादि को उपशान्त करने वाला ; (विसे ५२६; आव ४) । २ उपशम से संबन्ध रखने वाला ; " उवसामगसेढिगयस्स होइ उवसामगं तु सम्मत्तं " (विसे २७३५) ।

उवसामण न [उपशमन] उपशान्ति, उपशम ; (स ४६६) ।

उवसामणया स्त्री [उपशमना] उपशम ; (ठा ८) ।

उवसामय देखो **उवसामग** ; (सम २६; विसे १३०२)।

उवसामिय वि [औपशमिक] १ उपशम-संबन्धी ; २ भाव-विशेष ; " मोहोवसमसहावो, सव्वो उवसामिओ भावो " (विसे ३४९४) । ३ सम्यक्त्व-विशेष ; (विसे ५२६) ।

उवसामिय वि [उपशमित] शान्त किया हुआ ; (वव १)।

उवसाह सक [उप+कथ्] कहना । उवसाहइ; (सण)।

उवसाहण वि [उपसाधन] निष्पादक ; (सण) ।

उवसाहिय वि [उपसाधित] तय्यार किया हुआ; (पउम ३४, ८ ; सण) ।

उवसित्त वि [उपसिक्त] सिक्त, छिटका हुआ; (रंभा)।

उवसिलोअ सक [उपश्लोकय्] वर्णन करना, प्रशंसा करना। कृ—**उवसिलोअइदव्व** (शौ) ; (मुद्रा १६८) ।

उवसुत्त वि [उपसुप्त] सोया हुआ ; (से १५, ११) ।

उवसुद्ध वि [उपशुद्ध] निर्दोष ; (सूअ १, ७) ।

उवसूइय वि [उपसूचित] संसूचित ; (सण) ।

उवसेर वि [दे] रति-योग्य ; (दे १, १०४) ।

उवसेवय वि [उपसेवक] सेवा करने वाला, भक्त; (भवि)।

उवसोभ अक [उप+शुभ्] शोभना, विराजना । वकृ—**उवसोभमाण, उवसोभेमाण** ; (भग; णाया १, १) ।

उवसोभिय वि [उपशोभित] सुशोभित, विराजित; (औप)।

उवसोहा स्त्री [उपशोभा] शोभा, विभूषा ; (सुर ३, १०४) ।

उवसोहिय वि [उपशोधित] निर्मल किया हुआ, शुद्ध किया हुआ ; (णाया १, १) ।

उवसोहिय देखो **उवसोभिय** ; (सुपा ५ ; भवि ; सार्ध ६६)।

उवस्सग्ग देखो **उवसग्ग** ; (कस) ।

उवस्सय पुं [उपाश्रय] जैन साधुओं को निवास करने का स्थान ; (सम १८८ ; ओघ १७ भा ; उप ६४८ टी) ।

उवस्सा स्त्री [उपाश्रा] द्वेष; (वव १) ।

उवस्सिय वि [उपाश्रित] १ द्वेषी ; (वव १) । २ अङ्गीकृत ; ३ समीप में स्थित; ४ न. द्वेष ; (राज) ।

उवह स [उभय] दोनों, युगल; (कुमा; हे २, १३८)।

उवह अ [दे] 'देखो' अर्थ को बतलाने वाला अव्यय; (षड्)।

उवहट्ट सक [समा+रभ्] शुरू करना, आरम्भ करना। उवहट्टइ ; (षड्) ।

उवहड वि [उपहृत] १ उपढौकित, उपस्थापित; (राज)। २ भोजन-स्थान में अर्पित भोजन ; (ठा ३, ३) ।

उवहण सक [उप+हन्] १ विनाश करना । २ आघात पहुँचाना । उवहणइ ; (उव) । कर्म—उवहम्मइ ; (षड्)। वकृ—**उवहणंत** ; (राज) ।

उवहणण न [उपहनन] १ आघात ; २ विनाश ; (अ १०) ।

उवहत्थ सक [समा+रच्] १ रचना, बनाना । २ उत्तेजित करना । उवहत्थइ ; (हे ४, ९५) ।

उवहत्थिय वि [समारचित] १ बनाया हुआ; २ उत्तेजित; (कुमा) ।

उवहम्म° देखो **उवहण** ।

उवहय वि [उपहत] १ विनाशित ; (प्रासू १३५) । २ दूषित ; (बृह १) ।

उवहर सक [उप+हृ] १ पूजा करना । २ उपस्थित करना। ३ अर्पण करना । उवहरइ; (हे ४, २५९)। भूका—उवहरिंसु; (ठा ६) ।

उवहस सक [उप+हस्] उपहास करना, हँसी करना। कृ—**उवहसणिज्ज**; (स ३) ।

उवहसिअ वि [उपहसित] १ जिसका उपहास किया गया हो वह ; (पि १५५) । २ न. उपहास; (तंदु) ।

उवहा स्त्री [उपधा] माया, कपट ; (धर्म ३) ।

उवहाण न [उपधान] १ तकिया, उसीसा; (दे १, १४०; सुर १२, २५; सुपा ४) । २ तपश्चर्या; (सूअ १, ३, ३, २१)। ३ उपाधि; "सच्छंपि फलिहरयणं उवहाणवसा कलिज्जए कालं" (उप ७२८ टी) ।

उवहार पुं [उपहार] १ भेंट, उपहार ; (प्रति ७४)। २ विस्तार, फैलाव ; "महासमुद्दओवहारेहिं सव्वओ चेव दीवयंत" (कप्प) ।

उवहारणया देखो **उवधारणया** ; (राज) ।

उवहारिअ वि [उपधारित] अवधारित, निश्चित; (सूअ २)।

उवहारिआ, **उवहारी** स्त्री [दे] दोहने वाली स्त्री; (गा ७३१; दे १, १०८) ।

उवहास पुं [उपहास] हाँसी, ठट्ठा ; (हे २, २०१) ।

उवहास वि [उपहास्य] हाँसी के योग्य, "सुसमत्थो वि हु जो, जणयअज्जियं संपयं निसेवेइ । सो अम्मि! ताव लोए, ममंव उवहासयं लहइ" (सुर १, २३२)।

उवहासणिज्ज वि [उपहसनीय] हास्यास्पद ; (पउम १०६, २०)।

उवहि पुं [उदधि] समुद्र, सागर ; (से ५, ४०; ४२; भवि)।

उवहि पुंस्त्री [उपधि] १ माया, कपट ; (आचा)। २ कर्म; (सूअ १, २)। ३ उपकरण, साधन ; "तिविहा उवही पण्णत्ता" (ठा ३ ; ओघ २)।

उवहिय वि [उपहित] १ उपढौकित, अर्पित ; २ निहित, स्थापित ; (आचा; विसे ६३७)। ३ न. उपडौकन, अर्पण ; (निचू २०)।

उवहिय वि [औपधिक] माया से प्रच्छन्न विचरने वाला ; (णाया १, २)।

उवहुंज सक [उप+भुज्] उपभोग करना, कार्य में लाना। उवहुंजइ ; (पि ५०७)। कवकृ—**उवहुज्जंत** ; (पि ५४६)।

उवहुत्त देखो **उवभुत्त** ; (पाअ ; से १०; ४५)।

उवाइण सक [उप + याच्] मनौती करना, किसी काम के पूरा होने पर किसी देवता की विशेष आराधना करने का मानसिक संकल्प करना। हेकृ—"जति णं अहं देवाणुप्पिया ! दारगं वा दारियं वा पयामि, ताणं अहं तुब्भं जायं च दायं च भागं च अक्खयणिहिं च अणुवड्ढेस्सामि त्ति कट्टु ओवाइयं उवाइणित्तए" (विपा १, ७)।

उवाइण सक [उपा+दा] १ ग्रहण करना। २ प्रवेश करना। हेकृ—**उवाइणित्तए**; (ठा ३); प्रयो—"तं सेयं खलु मम जितसत्तुस्स रण्णो संताणं तच्चाणं तहियाणं अवितहाणं सब्भूताण जिणपण्णत्ताणं भावाणं अभिगमणट्ठयाए एयमट्ठं उवाइणावित्तए" (णाया १, १२)।

उवाइणाव सक [अति+क्रम्] १ उल्लंघन करना। २ गुजारना, पसार करना। उवाइणावेइ; वकृ—**उवाइणावेंत**; हेकृ—**उवाइणावेत्तए** ; (कस); **उवाइणावित्तए** ; (कप्प)। "से गामंसि वा जाव संनिवेसंसि वा बहिया से णं संनिविट्ठं पेहाए कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा तद्दिवसं भिक्खायरियाए गंतूण पडिनियत्तए; नो से कप्पइ तं रयणिं तत्थेव उवाइणावेत्तए। जे खलु निग्गंथे वा निग्गंथी वा तं रयणिं तत्थेव उवाइणावेइ, उवाइणावेंतं वा साइज्जइ, से दुहओ वीइक्कममाणे आवज्जइ चउमासियं परिहारट्ठाणं अणुग्घाइयं" (कस)। "नो से कप्पइ तं रयणिं उवाइणावित्तए" (कप्प)।

उवाइणाविय वि [अतिक्रान्त] १ उल्लङ्घित। २ गुजारा हुआ, पसार किया हुआ, बिताया हुआ; "नो कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा असणं वा ४ पढमाए पोरुसीए पडिग्गाहेत्ता पच्छिमं पोरुसिं उवाइणावेत्तए। से य आहच्च उवाइणाविए सिया, तं नो अप्पणा भुंजेज्जा" (कस)।

उवाइय देखो **उवयाइय** ; (णाया १, २ ; सुपा १० ; महा)।

उवाई स्त्री [उलावकी] पोताकी-नामक विद्या की प्रतिपक्षभूत एक विद्या ; (विसे २४५४)।

उवाएज्ज / **उवाएय** वि [उपादेय] ग्राह्य, ग्रहण करने योग्य ; (विसे ; स १४८)।

उवागच्छ / **उवागम** सक [उपा+गम्] समीप में आना। उवागच्छइ ; (भग; कप्प)। भवि—उवागमिस्संति; (आचा २, ३, १, २) संकृ—**उवागच्छित्ता** ; (भग; कप्प)। हेकृ—**उवागच्छित्तए** ; (कप्प)।

उवागम पुं [उपागम] समीप में आगमन ; (राज)।

उवागमण न [उपागमन] १ समीप में आगमन। २ स्थान, स्थिति ; (आचानि ३११)।

उवागय वि [उपागत] १ समीप में आया हुआ ; (आचा २, ३, १, २)। २ प्राप्त; "एगदिवसंपि जीवो पवज्जमुवागओ अणन्नमणो" (उव)।

उवाडिय वि [उत्पाटित] उखेड़ा हुआ ; (विपा १, ६)।

उवाणया / **उवाणहा** स्त्री [उपानह्] जूता; (षड्)। "पुव्वमुत्तारियाओ उवाणहाओ पएसु ठवियाओ" (सुपा ६१०; सूअ १, ४, २, ६)।

उवादा सक [उपा+दा] ग्रहण करना। कर्म—उवादीयंति; (भग)। संकृ—**उवादाय, उवादिएत्ता** ; (भग)। कवकृ—**उवादीयमाण** ; (आचा २)।

उवादाण न [उपादान] १ ग्रहण, स्वीकार। २ कार्यरूप में परिणत होने वाला कारण ; ३ जिसका ग्रहण किया जाय वह, ग्राह्य; "नाओवादाणे च्चिय मुच्छा लोभोत्ति तो रागो" (विसे २६७०)।

उवादिय वि [उपजग्ध] उपभुक्त; (राज)।

उवाय पुं [उपाय] १ हेतु, साधन ; (उत्त ३२)। २ दृष्टान्त, "उवाओ सो साधम्मेण य विधम्मेण य" (आचू १)। ३ प्रतीकार ; (ठा ४,३)।

उवाय सक [उप+याच्] मनौती करना। वकृ—**उवायमाण** ; (णाया १, २; १७)।

उवायण न [उपायन] भेंट, उपहार, नज़राना ; (उप २४५; सुपा २२४ ; ४१० ; गउड)।

उवायणाव देखो **उवाइणाव**। उवायणावेइ ; वकृ—**उवायणावेंत**; हेकृ—**उवायणावेत्तए** ; (कस) ; **उवायणावित्तए** ; (कप्प)।

उवायाण देखो **उवादाण**; (अच्चु १२; स २; विसे २९७६)।

उवायाय वि [उपायात] समीप में आया हुआ ; (निर १,१)।

उवारूढ वि [उपारूढ] आरूढ ; (स ३३१)।

उवालंभ सक [उपा+लभ्] उलहना देना। उवालंभइ ; (कप्प)। वकृ—**उवालंभंत**; (पउम १६, ४१) संकृ—**उवालंभित्ता**; (बृह ४)। कृ—**उवालंभणिज्ज**; (माल १५५)।

उवालंभ पुं [उपालम्भ] उलहना ; (णाया १, १ ; मा ४)।

उवालद्ध वि [उपालब्ध] जिसको उलहना दिया गया हो वह "उवालद्धो य सो सिवो बंभणो" (निचू १; माल १६७)।

उवालह सक [उपा+लभ्] उलहना देना। भवि—उवालहिस्सं ; (प्राप)।

उवास सक [उप+आस्] उपासना करना, सेवा करना। सुस्सूसमाणो उवासेज्जा सुपण्णं सुतवस्सियं" (सूअ १, ९)। वकृ—**उवासमाण** ; (ठा ६)।

उवास पुं [अवकाश] खाली जगह, आकाश; (ठा २, ४; ८ ; भग)।

उवासग वि [उपासक] १ उपासना करने वाला, सेवक ; २ पुं. श्रावक, जैन गृहस्थ; (उत्त २)। °**दसा** स्त्री [°**दशा**] सातवाँ जैन अंग-ग्रन्थ ; (सम १)। °**पडिमा** स्त्री [°**प्रतिमा**]श्रावकों को करने योग्य नियम-विशेष; (उत्त २)।

उवासण न [उपासन] उपासना, सेवा ; (स ५४३; मै ८६)।

उवासणा स्त्री [उपासना] १ क्षौर-कर्म, हजामत वगैरहः सफाई ; २ सेवा, शुश्रूषा "उवासणा मंसुकम्ममाइया, गुरुराईणं वा उवासणा पज्जुवासणया" (आवम)।

उवासय देखो **उवासग** ; (सम ११६)।

उवासय पुं [उपाश्रय] जैन मुनिओं का निवास-स्थान ; (उप १४२ टी)।

उवासिय वि [उपासित] सेवित; (पउम ६८, ४२)।

उवाहण सक [उपा+हन्] विनाश करना, मारना। वकृ—**उवाहणंत** ; (पण्ह १, २)।

उवाहणा देखो **उवाणहा** ; (अनु; णाया १,१५)।

उवाहि पुंस्त्री [उपाधि] १ कर्म-जनित विशेषण ;(आचा)। २ सामीप्य, संनिधि ; (भग १, १)। ३ अस्वाभाविक धर्म ; "सुद्धोवि फलिहमणी उपाहिवसओ धरेइ अन्नत्तं" (धम्म ११ टी)।

उवि सक [उप+इ] १ समीप आना। २ स्वीकार करना। ३ प्राप्त करना। उविंति ; (भग)। वकृ—**उविंत** ; (पि ४९३; प्रामा)।

उविअ देखो **अविअ**=अपिच ; (स २०९)।

उविअ वि [उपेत] युक्त, सहित ; (भवि)।

उविअ न [दे] शीघ्र, जल्दी ; (दे १, ८९)। २ वि. परिकर्मित, संस्कारित ; " णाणामणिकणगरयणविमलमहरिहनिउणोवियमिसिमिसंतविरइयसुसिलिट्ठविसिट्ठलट्ठसंठियपसत्थआविद्धवीरवलए " (णाया १, १)।

उविंद पुं [उपेन्द्र] कृष्ण; (कुमा)। °**वज्जा** स्त्री [°**वज्रा**] ग्यारह अक्षरों के पाद वाला एक छन्द ; (पिंग)।

उविक्ख सक [उप+ईक्ष्] उपेक्षा करना, अनादर करना। वकृ—**उविक्खमाण** ; (द्र १६)।

उविक्खा स्त्री [उपेक्षा] उपेक्षा, अनादर ; (काल)।

उविक्खिय वि [उपेक्षित] तिरस्कृत, अनादृत ; (सुपा ३९५)।

उविक्खेव पुं [उद्विक्षेप] हजामत, मुण्डन ; (तंदु)।

उवियग्ग वि [उद्विग्न] खिन्न, उद्वेग-प्राप्त ; (राज)।

उवीव अक [उद्+विच्] उद्वेग करना, खिन्न होना। उवीवइ ; (नाट)।

उवुज्झमाण देखो **उव्वह**।

उवे देखो **उवि**। उवेइ, उवेंति ; (औप)। वकृ—**उवेंत** ; (महा)। संकृ—**उवेच्च** ; (सूअ १, १४)।

उवेक्ख देखो **उविक्ख**। उवेक्खह ; (सुपा ३५४)। कृ—**उवेक्खियव्व** ; (स ६०)।

उवेक्खिअ देखो **उविक्खिय** ; (गा ४२०)।

उवेच्च देखो **उवे**।

उवेय वि [उपेत] १ समीप-गत ; २ युक्त, सहित ; (संथा ६)।

उवेय वि [उपेय] उपाय-साध्य ; (राज)।

उवेल्ल अक [प्र+सृ] फैलना, प्रसारित होना। उवेल्लइ; (हे ४, ७७)।

उवेह सक [उप+ईक्ष्] उपेक्षा करना, तिरस्कार करना, उदासीन रहना। उवेहइ; (धम्म १६)। वकृ— **उवेहंत, उवेहमाण**; (स ४६; ठा ६)। कृ— **उवेहियव्व**; (सण)।

उवेह सक [उत्प्र+ईक्ष्] १ जानना; समझना। २ निश्चय करना। ३ कल्पना करना। उवेहाहि; वकृ— **उवेहमाण**; "उवेहमाणे अणुवेहमाणं बूया, उवेहाहि समियाए" (आचा)। संकृ—**उवेहाए**; (आचा)।

उवेहा स्त्री [उपेक्षा] तिरस्कार, अनादर, उदासीनता; (सम ३२)। °**कर** वि [°कर] उपेक्षक, उदासीन; (श्रा २८)।

उवेहा स्त्री [उत्प्रेक्षा] १ ज्ञान, समझ। २ कल्पना। ३ अवधारण, निश्चय; (औप)।

उवेहिय वि [उपेक्षित] अनादृत, तिरस्कृत; (उप १२६; सुपा १३५)।

°**उव्व** देखो **पुव्व**; (गा ४१४)।

उव्वंत वि [उद्वान्त] १ वमन किया हुआ; २ निष्क्रान्त, निर्गत; (अभि २०६)।

उव्वक्क सक [उद्+वम्] १ बाहर निकालना। २ वमन करना। हेकृ—**उव्वक्किउं**; (सुपा १३६)।

उव्वक्क } वि [उद्वान्त] १ बाहर निकाला हुआ;
उव्वक्किय } (वव १)। २ वमन किया हुआ;

"संतोसामयपाणं, काउं उव्वक्कियं हयासेण।
जं गहिऊणं विरई, कलंकिया मोहमूढेण" (सुपा ४३५)।

उव्वग्ग देखो **ओवग्ग**। संकृ—**उव्वग्गिवि**; (भवि)।

उव्वट्ट उभ [उद्+वृत्, वर्त्तय्] १ चलना-फिरना। २ २ मरना, एक गति से दूसरी गति में जन्म लेना। ३ पिष्टिका आदि से शरीर के मल को दूर करना। ४ कर्म-परमाणुओं की लघु स्थिति को हटा कर लम्बी स्थिति करना। ५ पार्श्व को चलाना-फिराना। ५ उत्पन्न होना, उदित होना। उव्वट्टइ; (भग)। वकृ—**उव्वट्टंत, उव्वट्टमाण**; उअत्तंत; (भग; नाट; उत्तर १०७; बृह १)। संकृ—**उव्वट्टित्ता, उहट्टु, उव्वट्टिय**; (जीव १; विपा १, १; आचा २, ७; स २०६)। —**उव्वट्टित्तए**; (कस)।

उव्वट्ट देखो **उव्वट्टिय**=उद्वृत्त; (भग)।

उव्वट्ट वि [दे] १ नीराग, राग-रहित; गलित; (दे १, १२६)।

उव्वट्टण न [उद्वर्त्तन] १ शरीर पर से मल वगैरः को दूर करना; २ शरीर को निर्मल करने वाला द्रव्य—सुगन्धि वस्तु; (उवा; गाया १, १३)। ३ दूसरे जन्म में जाना, मरण; ४ पार्श्व का परिवर्तन; (आव ४)। ५ कर्म-परमाणुओं की ह्रस्व स्थिति को दीर्घ करना; (पंच)।

उव्वट्टण न [अपवर्त्तन] देखो **उव्वट्टणा**=अपवर्तना; (विसे २५१४)।

उव्वट्टणा स्त्री [उद्वर्तना] १ मरण, शरीर से जीव का निकलना; (ठा २, ३)। २ पार्श्व का परिवर्तन; (आव ४)। ३ जीव का एक प्रयत्न, जिससे कर्म-परमाणुओं की लघु स्थिति दीर्घ होती है, करण-विशेष; (भग ३१, ३२)।

उव्वट्टणा स्त्री [अपवर्त्तना] जीव का एक प्रयत्न, जिससे कर्मों की दीर्घ स्थिति का ह्रास होता है; (विसे २५१५ टी)।

उव्वट्टिय वि [उद्वृत्त] किसी गति से बाहर निकला हुआ, मृत; "आउक्खएण उव्वट्टिया समाणा" पण्ह १, १)।

उव्वट्टिय वि [उद्वर्त्तित] १ जिसने कसी भी द्रव्य से शरीर पर का तैल वगैरः का मैल दूर किया हो वह; 'तओ तत्थट्ठिओ चेव अब्भंगिओ उव्वट्टिओ उण्हखलउदगेहिं पमज्जिओ" (महा)। २ प्रच्यावित, किसी पद से भ्रष्ट किया हुआ; (पिंड)।

उव्वड्ढ वि [उद्वृद्ध] वृद्धि-प्राप्त; (आवम)।

उव्वण वि [उल्बण] प्रचण्ड, उद्भट; (उप पृ ७०; गउड; धम्म ११ टी)।

उव्वत्त देखो **उव्वट्ट**=उद्+वृत्। उव्वत्तइ; (पि २८६)। वकृ— **उव्वत्तंत, उव्वत्तमाण**; (से ५, ४२; स २५८; ६२७)। कवकृ—**उव्वत्तिज्जमाण**; (गाया १, ३) संकृ—**उव्वत्तिवि**; (भवि)।

उव्वत्त देखो **उव्वट्ट** (दे)।

उव्वत्त वि [उद्वृत्त] १ उत्तान, चित्त; (से ५, ६२)। २ उल्लसित; (हे ४, ४३४)। ३ जिसने पार्श्व को घुमाया हो वह; (आव ३)। ४ ऊर्ध्व-स्थित; "सो उव्वत्तविसाणो खंधवसभो जाओ" (महा)। ५ घुमाया हुआ, फिराया हुआ; (प्राप)।

उव्वत्त वि [अपवृत्त] उलटा रहा हुआ, विपरीत स्थित; (से १, ६१)।

उव्वत्तण न [उद्वर्त्तन] १ पार्श्व का परिवर्तन; (गा २८३; निचू ४)। २ ऊँचा रहना, ऊर्ध्व-वर्तन; (ओघ १६ भा)।

उव्वत्तिय वि [उद्वर्त्तित] १ परिवर्तित, चक्राकार घुमा हुआ; (स ८५); "भमियं व वरणतरूहिं उव्वत्तिययं व सयलवसुहाए" (सुर १२, १६६)।
उव्वद्ध देखो उव्वड्ढ; (महा)।
उव्वम सक [उद्+वम्] उलटी करना, पीछा निकाल देना। वकृ—उव्वमंत; (से ५, ६; गा ३४१)।
उव्वमिअ वि [उद्वान्त] उलटी किया हुआ, वमन किया हुआ; (पात्र)।
उव्वर अक [उद्+वृ] शेष रहना, बच जाना; "तुम्हाण देंताण जमुव्वरेइ देज्जाह साहूण तमायरेण" (उप ३११ टी)। वकृ—उव्वरंत; (नाट)।
उव्वर पुं [दे] घर्म, ताप; (दे १, ८७)।
उव्वरिअ वि [दे] १ अधिक, बचा हुआ, अवशिष्ट; (दे १, १३२; पिंग; गा ४७४; सुपा ११, ५३२; ओघ १६८ भा)। २ अनीप्सित, अनभीष्ट; ३ निश्चित; ४ अगणित; ५ न. ताप, गरमी; (दे १, १३२)। ६ वि. अतिक्रान्त, उल्लङ्घित; "परदव्वहरणविरया निरयाइदुहाण ते खलुव्वरिया" (सुपा ३६८)।
उव्वरिअ न [अपवरिका] कोठरी, छोटा घर; (सुर १४, १७४)।
उव्वल सक [उद्+वल्] १ उपलेपन करना। २ पीछे लौटना। हेकृ—उव्वलित्तए; (कस)।
उव्वलण न [उद्वलन] १ शरीर का उपलेपन-विशेष; (णाया १, १; १३)। २ मालिश, अभ्यङ्गन; (बृह ३, औप)।
उव्वलिय वि [उद्वलित] पीछे लौटा हुआ; (महा)।
उव्वस वि [उद्वस] उजाड़, वसति-रहित; (सुपा १८८; ४०६)।
उव्वसिय वि [उद्वसित] ऊपर देखो; (गा १६४; सुर २, ११६; सुपा ५४१)।
उव्वसी स्त्री [उर्वशी] १ एक अप्सरा; (सण)। २ रावण की एक स्वनाम-ख्यात पत्नी; (पउम ७४, ८)।
उव्वह सक [उद्+वह्] १ धारण करना। २ उठाना। उव्वहइ; (महा)। वकृ—उव्वहंत, उव्वहमाण; (पि ३६७; से ६, ५)। कवकृ—उव्वुज्झमाण; (णाया १,६)।
उव्वहण न [उद्वहन] १ धारण; २ उत्थापन; (गउड; नाट)।
उव्वहण न [दे] महान् आवेश; (दे १, ११०)।
उव्वा स्त्री [दे] घर्म, ताप; (दे १, ८७)।
उव्वा } अक [उद्+वा] १ सूखना, शुष्क होना।
उव्वाअ } उव्वाइ, उव्वाअइ; (षड्; हे ४, २४०)।
उव्वाअ वि [उद्वात] शुष्क, सूखा; (गउड)।
उव्वाअ } वि [दे] खिन्न, परिश्रान्त; (दे १, १०२;
उव्वाइअ } बृह १; वव ४; पात्र; गा ७५८; सुपा ४३६)।
उव्वाउल न [दे] १ गोत; २ उपवन, बगीचा; (दे १, १३४)।
उव्वाडुल न [दे] १ विपरीत सुरत; २ मर्यादा-रहित मैथुन; (दे १, १३३)।
उव्वाढ वि [दे] १ विस्तीर्ण, विशाल; २ दुःख रहित; (दे १, १२६)।
उव्वार (अप) सक [उद्+वर्तय्] त्याग करना, छोड़ देना। कर्म—उव्वारिज्जइ; (हे ४, ४३८)।
उव्वाल सक [कथ्] कहना, बोलना। उव्वालइ; (षड्)।
उव्वास सक [उद्+वासय्] १ दूर करना। २ देश-निकाल करना। ३ उजाड़ करना। उव्वासइ; (नाट; पिंग)।
उव्वासिय वि [उद्वासित] १ उजाड़ किया हुआ; (पउम २७, ११)। २ देश-बाहर किया हुआ; (सुपा ५४२)। ३ दूर किया हुआ; (गा १०६)।
उव्वाह पुं [दे] घर्म, ताप; (दे १, ८७)।
उव्वाह पुं [उद्वाह] वीवाह; (मै २१)।
उव्वाह सक [उद्+बाधय्] विशेष प्रकार से पीड़ित करना। कवकृ—उव्वाहिज्जमाण; (आचा; णाया १, २)।
उव्वाहिअ वि [दे] उत्क्षिप्त, फेंका हुआ; (दे १, १०६)।
उव्वाहुल न [दे] १ उत्सुकता, उत्कण्ठा; (भवि; दे १, १३६)। २ वि. द्वेष्य, अप्रीतिकर; (दे १, १३६)।
उव्वाहुलिय वि [दे] उत्सुक, उत्कण्ठित; (भवि)।
उव्विआइअ वि [उद्वेदित] उत्पीडित; (से १३, ३६)।
उव्विक्क न [दे] प्रलपित, प्रलाप; (षड्)।
उव्विग्ग वि [उद्विग्न] १ खिन्न; २ भीत, घबड़ाया हुआ; (हे २, ७६)।
उव्विग्गिर वि [उद्वेगशील] उद्वेग करने वाला; (वज्जा ३८)।
उव्विड वि [दे] १ चकित, भीत; २ क्लान्त, क्लेश-युक्त; (षड्)।

उव्विडिम वि [दे] १ अधिक प्रमाण वाला ; २ मर्यादा-रहित, निर्लज्ज ; (दे १, १३४)।

उव्विण्ण देखो उव्विग्ग ; (पि २१६)।

उव्विद्ध वि [उद्विद्ध] १ ऊँचा गया हुआ, उच्छ्रित ; (पराह १, ४)। २ गभीर, गहरा ; (सम ४४; गाया १, १)। ३ विद्ध; "कोलयसएहिं धरणियले उव्विद्धो" (संथा ८७)।

उव्विन्न देखो **उव्विग्ग** ; (हे २, ७९ ; सुर ४, २४८)।

उव्विय अक [उद् + विज्] उद्वेग करना, उदासीन होना, खिन्न होना। "को उव्विएज्ज नरवर ! मरणस्स अवस्स गंतव्वे" (स १२६)। वकृ—**उव्वियमाण**; (स १३६)।

उव्वियणिज्ज वि [उद्वेजनीय] उद्वेग-प्रद ; (पउम १६, ३६ ; सुपा ५६७)।

उव्विरेयण न [उद्विरेचन] खाली करना। "एवं च भरिउव्विरेयणं कुव्वंतस्स" (काल)।

उव्विल्ल अक [उद् + वेल्] १ चलना, काँपना। २ वेष्टन करना। वकृ—**उव्विल्लंत, उव्विल्लमाण**; (सुपा ८८; उप पृ ७७)।

उव्विल्ल अक [प्र + सृ] फैलना, पसरना। उव्विल्लइ; (भवि)।

उव्विल्ल वि [उद्वेल] चञ्चल, चपल ; (सुपा ३४)।

उव्विल्लिर वि [उद्वेलितृ] चलने वाला, हिलने वाला ; (सुपा ८८)।

उव्विव अक [उद् + विज्] उद्वेग करना, खिन्न होना; उव्विवइ ; (षड्)।

उव्विव्व वि [दे] १ क्रुद्ध, क्रोध युक्त ; (षड्)। २ उद्भट वेष वाला ; (पाअ)।

उव्विह सक [उत् + व्यध्] १ ऊँचा फेंकना। २ ऊँचा जाना, उडना। "से जहाणामए केइ पुरिसे उसुं उव्विहइ" (पि १२६)। वकृ—"मणसावि उव्विहंताइं अणेगाइं आससयाइं पासंति" (णाया १, १७ टी—पत्र २३१)। वकृ—**उव्विहमाण** ; (भग १६)। संकृ—**उव्विहित्ता**; (पि १२६)।

उव्विह पुं [उद्विह] स्वनाम-ख्यात एक आजीविक मत का उपासक ; (भग ८, ५)।

उव्वी स्त्री [ऊर्वी] पृथिवी ; (से २, ३०)। °स पुं [°श] राजा ; (कुमा)।

उव्वीढ देखो **उव्वूढ** ; (कुमा ; हे १, १२०)।

उव्वीढ वि [दे] उत्खात, खोदा हुआ ; (दे १, १००)।

उव्वीढ वि [उद्विद्ध] उत्क्षिप्त ; "तस्स उसुस्स उव्वीढस्स समाणस्स" (पि १२६)।

उव्वील सक [अव + पीडय्] पीडा पहुँचाना, मार-पीट करना। वकृ—**उव्वीलेमाण** ; (राज)।

उव्वीलय वि [अपव्रीडक] लज्जा-रहित करने वाला, शिष्य को प्रायश्चित्त लेने में शरम को दूर करने का उपदेश देने वाला (गुरु) ; (भग २५, ७ ; द्र ४६)।

उव्वुण्ण } वि [दे] १ उद्विग्न ; २ उत्सिक्त ; ३ शून्य ;
उव्वुन्न } (दे १, १२३)। ४ उद्भट, उल्वण ; (दे १, १२३ ; सुर ३, २०५)।

उव्वूढ वि [उदुव्यूढ] १ धारण किया हुआ, पहना हुआ ; (कुमा)। २ ऊँचा लिया हुआ, ऊपर धारण किया हुआ; (से ५, ५४ ; ६, ११)। ३ परिणीत, कृत-विवाह ; (सुपा ४५६)।

उव्वेअणीअ वि [उद्वेजनीय] उद्वेग-कारक ; (नाट)।

उव्वेग पुं [उद्वेग] १ शोक, दिलगीरी ; (ठा ३, ३)। २ व्याकुलता ; (भग ३, ६)।

उव्वेढ सक [उद् + वेष्ट्] १ बाँधना। २ पृथक् करना, बन्धन-मुक्त करना। उव्वेढइ ; (षड्)। उव्वेढिज्ज ; (आचा २, ३, २, २)।

उव्वेढण न [उद्वेष्टन] १ बन्धन। २ वि. बन्धन-रहित किया हुआ ; (राज)।

उव्वेढिअ वि [उद्वेष्टित] १ बन्धन-रहित किया हुआ ; २ परिवेष्टित ; (दे ४, ४६)।

उव्वेत्ताल न [दे] अविच्छिन्न चिल्लाना, निरन्तर रोदन ; (दे १, १०१)।

उव्वेय देखो **उव्वेग** ; (कुमा; महा)।

उव्वेयग त्रि [उद्वेजक] उद्वेग-कारक ; (रयण ४०)।

उव्वेयणग } वि [उद्वेजनक] उद्वेग-जनक ; (आउ; पराह १, १)।
उव्वेयणय }

उव्वेल अक [प्र + सृ] फैलना। उव्वेलइ ; (षड्)।

उव्वेल वि [उद्वेल] उच्छलित ; (से २, ३०)।

उव्वेलिअ वि [उद्वेलित] फैला हुआ, प्रसृत ; (माल १४२)।

उव्वेल्ल देखो **उव्वेढ**। उव्वेल्लइ ; (हे ४, २२३)। कर्म—उव्वेल्लिज्जइ ; (कुमा)।

उव्वेल्ल सक [उद् + वेल्ल्] १ सत्वर जाना। २ त्याग करना। ३ ऊँचा उडना, ऊँचा जाना। ४ अक. फैलना, पसरना। वकृ—उव्वेल्लंत ; (पि १०७)।

उव्वेल्ल वि [उद्वेल] १ उच्छलित, उछला हुआ "उव्वेल्ला सलिलनिही" (पउम ६, ७२)। २ प्रसृत, फैला हुआ; (पाअ)। ३ उद्भिन्न ; "हरिसवसुव्वेल्लपुलयाए" (स ६२५)।

उव्वेल्लिअ वि [उद्वेल्लित] १ कम्पित ; (गा ६०५)। २ उत्सारित ; (बृह ३)। ३ प्रसारित ; (स ३३५)।

उव्वेल्लिर वि [उद्वेल्लितृ] सत्वर जाने वाला; (कुमा)।

उव्वेव देखो उव्विव। उव्वेवइ ; (षड्)।

उव्वेव देखो उव्वेग ; (कुमा; सुर ४, ३६ ; ११, १६४)।

उव्वेवग वि [उद्वेजक] उद्वेग-कारक,
"थद्धा छिद्दप्पेही, अवन्नवाई सयम्मई चवला।
वंका कोहणसीला, सीसा उव्वेवगा गुरुणा" (उव)।

उव्वेवणय वि [उद्वेजनक] उद्वेग-जनक; (पच्च ४५)।

उव्वेवय देखो उव्वेवग ; (स २६२)।

उव्वेसर पुं [उव्वेश्वर] इस नामका एक राजा ; (कुमा)।

उव्वेह पुं [उद्वेध] १ ऊँचाई; (सम १०४)। २ गहराई; (ठा १०)। ३ जमीन का अवगाह ; (ठा १०)।

उव्वेहलिया स्त्री [उद्वेधलिका] वनस्पति-विशेष; (पण्ण १)।

उसड्ड वि [दे] ऊँचा ; (राय)।

उसण पुं [उशनस्] ग्रह-विशेष, शुक्र, भार्गव ; (पाअ)।

उसणसेण पुं [दे] बलभद्र ; (दे १, ११८)।

उसत्त वि [उत्सक्त] ऊपर बँधा हुआ ; (णाया १, १)।

उसन्न पुं [उत्सन्न] भ्रष्ट यति-विशेष की एक जाति ; (सं ६१)।

उसप्पिणी देखो उस्सप्पिणी ; (जी ४०; विसे २७०६)।

उसभ पुं [ऋषभ, वृषभ] १ स्वनाम-ख्यात प्रथम जिन-देव ; (सम ४३ ; कप्प) २ बैल, साँढ; (जीव ३)। ३ वेष्टन-पट्ट; (पव २१६)। ४ देव-विशेष ; (ठा ८)। ५ ब्राह्मण-विशेष ; (उत्त १)। °कंठ पुं [°कण्ठ] १ बैल का गला ; २ रत्न-विशेष ; (जीव ३)। °कूड पुं [°कूट] पर्वत-विशेष; (ठा ८)। °णाराय न [°नाराच] संहनन-विशेष, शरीर-बन्ध-विशेष ; (पंच)। °दत्त पुं [°दत्त] ब्राह्मणकुण्ड ग्राम का रहने वाला एक ब्राह्मण, जिसके घर भगवान् महावीर अवतरे थे ; (कप्प)। °पुर न [°पुर] नगर-विशेष ; (विपा २, २)। °पुरी स्त्री [°पुरी] एक राजधानी ; (ठा ८)। °सेण पुं [°सेन] भगवान् ऋषभ-देव के प्रथम गणधर ; (आचू १)।

उसर (पै) पुंस्त्री [उष्ट्र] ऊँट ; (पि २५६)।

उसलिअ वि [दे] रोमाञ्चित, पुलकित ; (षड्)।

उसह देखो उसभ ; (हे १, १३१; १३३; १४१; षड्; कुमा ; सम १५२ ; पउम ४, ३५)।

उसा अ [उषस्] प्रभात-काल ; (गउड)।

उसिण वि [उष्ण] गरम, तप्त ; (कप्प ठा ३,१)। २ पुंन. गरम स्पर्श; (उत्त १)। ३ गरमो, ताप; (उत्त २)।

उसिय वि [उत्सृत] व्याप्त, फैला हुआ ; (सम १३७)।

उसिअ वि [उषित] रहा हुआ, निवसित ; (से ८,६३; भत्त १२८)।

उसीर न [उशीर] सुगन्धि तृण-विशेष, खश ; (पण्ह २, ५)।

उसीर न [दे] कमल-दण्ड, बिस ; (दे १, ६४)।

उसु पुं (इषु) १ बाण, शर ; (सूअ १, ५,१)। २ धनुराकार क्षेत्र का बाण-स्थानीय क्षेत्र-परिमाण ;
"धणुवग्गाओ नियमा, जीवावग्गं विसोहइत्ताणं।
सेसस्स छब्भागे, जं मूलं तं उसू होइ" (जो १)।
°कार, °गार, °यार पुं [°कार] १ पर्वत-विशेष ; (सम ६६ ; ठा २, ३ ; राज)। २ इस नाम का एक राजा; ३ स्वनाम-ख्यात एक पुरोहित; (उत्त १४)। ४ वि. बाण बनाने वाला ; (राज)। ५ स्वनाम-ख्यात एक नगर; (उत्त १४)।

उसुअ पुं [दे] दोष, दूषण ; (दे १, ८६)।

उसुअ वि [उत्सुक] उत्कण्ठित ; (सुपा २२४)।

उसुयाल न [दे] उदूखल ; (राज)।

उसूलग पुं [दे] परिखा, शत्रु-सैन्य का नाश करने के लिए ऊपर से आच्छादित गर्त्त विशेष ; (उत्त ६)।

उस्स पुं [दे] हिम, ओस ; "अप्पहरिएसु अप्पुस्सेसु" (बृह ४)।

उस्संकलिअ वि [उत्संकलित] निसृष्ट, परित्यक्त ; (आचा २)।

उस्संखलअ वि [उच्छृङ्खलक] उच्छृङ्खल, निरङ्कुश ; (पि २१३)।

उस्संग पुं [उत्सङ्ग] क्रोड, कोला ; (नाट)।

उस्संघट्ट वि [उत्संघट्ट] शरीर-स्पर्श से रहित; (उप ५५५)।
उस्सक्क अक [उत्+ष्वष्क्] १ उत्कण्ठित होना। २ पीछे हटना। ३ सक. स्थगित करना। संकृ—**उस्सक्कइत्ता**; प्रयो—**उस्सक्कावइत्ता**; (ठा ६)।
उस्सक्कण न [उत्ष्वष्कण] किसी कार्य को कुछ समय के लिये स्थगित करना (धर्म ३)।
उस्सग्ग पुं [उत्सर्ग] १ त्याग; (आव ५)। २ सामान्य विधि; (उप ७८१)।
उस्सण्ण वि [अवसन्न] निमग्न; "अबंभे उस्सण्णा" (पण्ह १, ४)।
उस्सण्ण अ [दे] प्रायः, प्रायेण; (राज)।
उस्सण्हसण्हिआ स्त्री [उत्श्लक्ष्णश्लक्ष्णिका] परिमाण-विशेष, ऊर्ध्व-रेणु का ६४ वाँ हिस्सा; (इक)।
उस्सन्न वि [उत्सन्न] निज धर्म में आलसी साधु; (गुभा १२)।
उस्सप्पण न [उत्सर्पण] १ उन्नति, पोषण; २ त्रि. उन्नत करने वाला, बढ़ाने वाला; "कंदप्पदप्पउस्सप्पणाइं वयणाइं जंपए जा सो" (सुपा ५०६)।
उस्सप्पणा स्त्री [उत्सर्पणा] उन्नति, प्रभावना; (उप ३२६)।
उस्सप्पिणी स्त्री [उत्सर्पिणी] उन्नत काल विशेष, दश कोटाकोटि-सागरोपम-परिमित काल-विशेष, जिसमें सर्व पदार्थों की क्रमशः उन्नति होती है; (सम ७२; ठा १, १; पउम २०, ६८)।
उस्सय पुं [उच्छ्रय] १ उन्नति, उच्चता; (विसे ३४१)। २ अहिंसा; (पण्ह २, १)। ३ शरीर; (राज)।
उस्सयण न [उच्छ्रयण] अभिमान, गर्व; (सूअ १, ६)।
उस्सर अक [उत्+सृ] हटना, दूर जाना। उस्सरइ; (स्वप्न ६)।
उस्सव सक [उत्+श्रि] १ ऊँचा करना। २ खड़ा करना। उस्सवेह; संकृ—**उस्सवित्ता**; (कप्प)। प्रयो, संकृ—**उस्सविय**; (आचा २, १)।
उस्सव पुं [उत्सव] उत्सव; (अभि १६४)।
उस्सवणया स्त्री [उच्छ्रयणता] ऊँचा ढ़ेर करना, इकट्ठा करना; (भग)।
उस्सस अक [उत्+श्वस्] १ उच्छ्वास लेना, श्वास लेना। २ उल्लसित होना। उस्ससइ; (भग)। कवकृ—**उस्ससिज्जमाण**; (ठा १०)।
उस्ससिय वि [उच्छ्वसित] १ उच्छ्वास-प्राप्त; २ उल्लसित; (उत्त २०)।
उस्सा स्त्री [उस्रा] गैया, गौ; (दे १, ८६)।
उस्सा [दे] देखो **ओसा**; (ठा ४, ४)। °**चारण** पुं [°चारण] ओस के अवलम्बन से गति करने की सामर्थ्य वाला मुनि; (पव ६८)।
उस्सार सक [उत्+सारय्] १ दूर करना, हटाना। २ बहुत दिन में पाठनीय ग्रन्थ को एक ही दिन में पढ़ाना। वकृ—**उस्सारिंत**; (बृह १)। संकृ—**उस्सारित्ता**; (महा)। कृ—**उस्सारइदव्व** (शौ); (स्वप्न २०)।
उस्सार पुं [उत्सार] अनेक दिन में पढ़ाने योग्य ग्रन्थ का एक ही दिन में अध्यापन। °**कप्प** पुं [°कल्प] पाठन-संबन्धी आचार-विशेष; (बृह १)।
उस्सारग वि [उत्सारक] दूर करने वाला; २ उत्सार-कल्प के योग्य; (बृह १)।
उस्सारण न [उत्सारण] १ दूरीकरण; २ अनेक दिनों में पढ़ाने योग्य ग्रन्थ का एक ही दिन में अध्यापन; "अरिहइ उस्सारणं काउं" (बृह १)।
उस्सारिय वि [उत्सारित] दूरीकृत; हटाया हुआ; (संथा ५७)।
उस्सास पुं [उच्छ्वास] १ ऊसास, ऊँचा श्वास; (पण्ण १)। २ प्रबल श्वास; (आव ५)। °**नाम** न [°नामन्] उसास-हेतुक कर्म-विशेष; (सम ६७)।
उस्सासय वि [उच्छ्वासक] उसास लेने वाला; (विसे २७१५)।
उस्सिंखल वि [उच्छृङ्खल] स्वैरी, स्वेच्छाचारी, निरङ्कुश; (उप १४६ टी)।
उस्सिंघिय वि [दे] आघ्रात, सूँघा हुआ; (स २६०)।
उस्सिंच सक [उत्+सिच्] १ सिंचना, सेक करना। २ ऊपर सिंचना। ३ आक्षेप करना। ४ खाली करना। "पुण्णं वा नावं उस्सिंचेज्जा" (आचा २, ३, १, ११)। उस्सिंचति; (निचू १८)। वकृ—**उस्सिंचमाण**; (आचा २, १, ६)।
उस्सिंचण न [उत्सेचन] १ सिञ्चन। २ कूपादि से जल वगैरः को बाहर खींचना; (आचा)। ३ सिंचन के उपकरण; (आचा २)।
उस्सिक्क सक [मुच्] छोड़ना, त्याग करना। उस्सिक्कइ; (हे ४, ९१)।

उस्सिक्क सक [उत् + क्षिप्] ऊँचा फेंकना। उस्सिक्कइ ; (हे ४, १४४)।

उस्सिक्किअ वि [मुक्त] मुक्त, परित्यक्त ; (कुमा)।

उस्सिक्किअ वि [उत्क्षिप्त] १ ऊँचा फेंका हुआ। २ ऊपर रखा हुआ; (स ५०३)।

उस्सिय वि [उच्छ्रित] उन्नत, ऊँचा किया हुआ ; (कप्प)।

उस्सिय वि [उत्सृत] १ व्याप्त ; २ ऊँचा किया हुआ ; (कप्प)।

उस्सीस न [उच्छीर्ष] तकिया; (सुपा ४३७; णाया १, १; ओघ २३२)।

उस्सुआव सक [उत्सुकय्] उत्कण्ठित करना; उत्सुक करना। उस्सुआवेइ ; (उत्तर ७१)।

उस्सुंक } वि [उच्छुल्क] शुल्क-रहित, कर-रहित ;
उस्सुक्क } (कप्प ; णाया १, १)।

उस्सुक्क वि [उत्सुक] उत्कण्ठित।

उस्सुक्काव वि [उत्सुकय्] उत्सुक करना, उत्कण्ठित करना। संकृ—**उस्सुक्कावइत्ता** ; (राज)।

उस्सुग वि [उत्सुक] उत्कण्ठित ; (पउम ७६,२६; पण्ह २, ३)।

उस्सुत्त वि [उत्सूत्र] सूत्र-विरुद्ध, सिद्धान्त-विपरीत ; (वव १ ; उप १४६ टी)।

उस्सुय देखो **उस्सुग** ; (भग ५, ४ ; औप)।

उस्सुय न [औत्सुक्य] उत्कण्ठा, उत्सुकता। °**कर** वि [°**कर**] उत्कण्ठा-जनक; (णाया १, १)।

उस्सूण वि [उच्छून] सूजा हुआ, फूला हुआ ; (उप ५६४ ; गउड ; स २०३)।

उस्सूर न [उत्सूर] सन्ध्या, शाम; " वच्चामो नियनयरे उस्सूरं वट्टए जेण " (सुर ७, ६३ ; उप पृ २२०)।

उस्सेअ पुं [उत्सेक] १ सिंचन ; २ उन्नति ; ३ गर्व ; (चारु ४५)।

उस्सेइम वि [उत्स्वेदिम] आटा से मिश्रित पानी, आटा-धोया जल ; (कप्प ; ठा ३, ३)।

उस्सेह पुं [उत्सेध] १ ऊँचाई ; (विपा १, १)। २ शिखर, टोंच; (जीव ३)। ३ उन्नति, अभ्युदय; " पडणंता उस्सेहा " (स ३६६)।

उस्सेहंगुल न [उत्सेधाङ्गुल] एक प्रकार का परिमाण; (विसे ३४० टी)।

उह स [उभ] दोनों, युग्म, युगल ; (षड्)।

उहट्टु देखो **उव्वट्ट**=उद् + वृत्।

उहय स [उभय] दोनों, युग्म ; (कुमा; भवि)।

उहर न [उपगृह] छोटा घर, आश्रय-विशेष; (पण्ह १, १)।

उहार पुं [उहार] मत्स्य-विशेष ; (राज)।

उहु [अप] देखो **अहो**=अहो ; (सण)।

उहुर वि [दे] अवाङ्मुख, अधोमुख ; (गउड)।

इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवे उआराइसद्दसंकलणो
पंचमो तरंगो समत्तो।



ऊ

ऊ पुं [ऊ] प्राकृत वर्णमाला का षष्ठ स्वर-वर्ण; (हे १, १ ; प्रामा)।

ऊ अ [दे] निम्न-लिखित अर्थों का सूचक अव्यय;—१ गर्हा, निन्दा, जैसे—"ऊ णिल्लज्ज"; २ आक्षेप, प्रस्तुत वाक्य के विपरीत अर्थ की आशंका से उसे उलटाना, जैसे—"ऊ किं मए भणिअं" ; ३ विस्मय, आश्चर्य ; जैसे—"ऊ कह मुणिआ अहयं ; ४ सूचना, जैसे—"ऊ केण ण विण्णायं" (हे २, १९९ ; षड्) ।

ऊअट्ठ वि [अववृष्ट] वृष्टि से नष्ट ; (पाअ)।

ऊआ स्त्री [दे] यूका, जू ; (दे १, १३९)।

ऊआस पुं [उपवास] भोजनाभाव ; (हे १, १७३)।

ऊगिय वि [दे] अलंकृत ; (षड्)।

ऊज्झाअ देखो उवज्झाय ; (हे १, १७३ ; प्रामा)।

°ऊड देखो कूड ; (से १२, ७८ ; गा ५८३)।

ऊढ वि [ऊढ] वहन किया हुआ, धारण किया हुआ "ऊढ-कलं वज्जुणपरिमलेसु सुरमंदिरंतेसु" (गउड)।

ऊढा स्त्री [ऊढा] विवाहिता स्त्री ; (पाअ)।

ऊढिअय वि [दे] १ प्रावृत, आच्छादित ; २ आच्छादन, प्रावरण ; (पाअ)।

ऊण वि [ऊन] न्यून, हीन ; (पउम ११८, ११९)। °वीसइम वि [°विंशतितम] उन्नीसवाँ ; (पउम १९, ८०)।

ऊण न [ऋण] ऋण, करजा ; (नाट)।

ऊणंदिअ वि [दे] आनन्दित, हर्षित ; (दे १, १४१ ; षड्)।

ऊणिमा स्त्री [पूर्णिमा] पूर्णिमा" तओ तीए चेव ऊणिमाए मरिऊण भंडस्स वहणाइं पत्थिओ पारसउलं" (महा)।

ऊणिय वि [ऊनित] कम किया हुआ ; (जं २)।

ऊणोयरिआ स्त्री [ऊनोदरिता] कम आहार करना, तप-विशेष ; (भग २५, ७ ; नव २८)।

ऊमिणण न [दे] प्रोंखणक, चुमना; (धर्म २)।

ऊमिणिय वि [दे] प्रोञ्छित, जिसने स्नान के बाद शरीर पोंछा हो वह ; (स ७५)।

ऊमित्तिअ न [दे] दोनों पार्श्वों में आघात करना ; (दे १, १४२)।

ऊर पुं [दे] १ ग्राम, गाँव ; २ संघ, समूह ; (दे १, १४३)।

°ऊर देखो तूर; (से ८, ६५)।

°ऊर देखो पूर ; (से ८, ६५ ; गा ४५; २३१)।

ऊरण पुं [ऊरण] मेष, भेड़ ; (राय; विसे)।

ऊरणी स्त्री [दे] मेष, भेड़ ; (दे १, १४०)।

°ऊरय वि [पूरक] पूर्ति करने वाला ; (भवि)।

ऊरस वि [औरस] पुत्र-विशेष, स्व-पुत्र ; (ठा १०)।

ऊरिसंकिअ वि [दे] रुद्ध, रोका हुआ ; (षड्)।

ऊरी अ [ऊरी] १ अंगीकार। २ विस्तार। °कय वि [°कृत] अंगीकृत, स्वीकृत ; (उप ७२८ टी)।

ऊरु पुं [ऊरु] जङ्घा, जाँघ ; (णाया १, १८ ; कुमा)। °जाल न [°जाल] जाँघ तक लटकने वाला एक आभूषण; (औप)।

ऊरुदग्घ वि [ऊरुदघ्न] जंघा-प्रमाण (गहरा वगैरः) ; (षड्)।

ऊरुद्दअस वि [ऊरुद्वयस] ऊपर देखो ; (षड्)।

ऊरुमेत्त वि [ऊरुमात्र] ऊपर देखो ; (षड्)।

ऊल पुं [दे] गति-भंग ; (दे १, १३९)।

°ऊल देखो कूल ; (गा १८९)।

ऊस पुं [उस्र] किरण ; (हे १, ४३)। °मालि पुं [°मालिन्] सूर्य ; (कुमा)।

ऊस पुं [ऊष] क्षार-भूमि की मिट्टी; (पण्ण १ ; जी ४)।

ऊसअ न [दे] उपधान; ओसीसा; (दे १, १४०; षड्)।

ऊसढ वि [उत्सृष्ट] १ परित्यक्त; २ न. उत्सर्जन, मलादि का त्याग ; "नो तत्थ ऊसढं पकरेज्जा, तं जहा; उच्चारं वा" (आचा २, २, १, ३)।

ऊसढ वि [दे, उच्छ्रित] १ उच्च, श्रेष्ठ ; (आचा २, ४, २, ३ ; जीव ३)। २ ताजा ; "भद्दं भद्दएति वा, ऊसढं ऊसढेति वा, रसियं रसिए ति वा" (आचा २, ४, २, २)।

ऊसण न [दे] गति-भङ्ग ; (दे १, १३९)।

ऊसण्हसण्हिया देखो उस्सण्हसण्हिया; (पव २५४)।

ऊसत्त देखो उसत्त ; (कप्प; आवम)।

ऊसत्थ पुं [दे] १ जम्भाई ; २ वि. आकुल ; (दे १, १४३)।

ऊसर अक [उत्+सृ] १ खिसकना। २ दूर होना। ३ सक. त्यागना। ऊसरइ ; (भवि)। संकृ—ऊसरिवि; (भवि)।

ऊसर न [**ऊषर**] क्षार-भूमि, जिसमें वीज नहीं पैदा होता है ; "ऊसरदवदलियदड्ढरुक्खनाएणं" (सम्य १७; भक्त ७३)।

ऊसरण न [**उत्सरण**] आरोहण; "थाणूसरणं तत्रो समुप्पयणं" (विसे १२०८)।

ऊसल अक [**उत्+लस्**] उल्लसित होना। ऊसलइ; (हे ४, २०२ ; षड् ; कुमा)।

ऊसल वि [**दे**] पीन, पुष्ट ; (दे १, १४०)।

ऊसलिअ वि [**उल्लसित**] उल्लसित, पादुर्भूत; (कुमा)।

ऊसलिअ वि [**दे**] रोमाञ्चित; पुलकित ; (दे १, १४१ ; पाअ)।

ऊसव देखो **उस्सव**=उत्सव ; (स्वप्न ६३)।

ऊसव देखो **उस्सव**=उत्+श्रि। उस्सवेह ; (पि ६४ ; ५५१)। संकृ—**ऊसविय** ; (कप्प ; भग)।

ऊसविअ वि [**दे**] १ उद्भ्रान्त; (दे १, १४३)। २ ऊँचा किया हुआ; (दे १, १४३; गाया १, ८ ; पाअ)। ३ उद्वान्त; वमित ; (षड्)।

ऊसविअ वि [**उच्छ्रित**] ऊर्ध्व-स्थित ; (कप्प)।

ऊसस सक [**उत्+श्वस्**] १ उसास लेना, ऊँचा साँस लेना। विकसित होना। ३ पुलकित होना। ऊससइ ; (पि ६४; ३१५)। वकृ—**ऊससंत, ऊससमाण,** (गा ७४; धण ४ ; पि ४९६)।

ऊससण न [**उच्छ्वसन**] उसास। °**लद्धि** स्त्री [°**लब्धि**] श्वासोच्छ्वास की शक्ति ; (कम्म १, ४४)।

ऊससिअ न [**उच्छ्वसित**] १ उसास; (पडि)। २ वि. उल्लसित ; ३ पुलकित ; (स ८३)।

ऊससिर वि [**उच्छ्वसितृ**] उसास लेने वाला; (हे २, १४५)।

ऊसाअंत वि [**दे**] खेद होने पर शिथिल ; (दे १, १४१)।

ऊसाइअ वि [**दे**] १ विक्षिप्त ; २ उत्क्षिप्त ; (दे १, १४१)।

ऊसार सक [**उत्+सारय्**] दूर करना, त्यागना। संकृ—**ऊसारिवि** (अप); (भवि)।

ऊसार पुं [**दे**] गर्त-विशेष ; (दे १, १४०)।

ऊसार पुं [**उत्सार**] परित्याग ; (भवि)।

ऊसार पुं [**आसार**] वेग वाली वृष्टि ; (हे १, ७६ ; षड्)।

ऊसारि वि [**आसारिन्**] वेग से बरसने वाला; (कुमा)।

ऊसारिअ वि [**उत्सारित**] दूर किया हुआ ; (महा ; भवि)।

ऊसास पुं [**उच्छ्वास**] १ उसास, ऊँचा श्वास; (आचू ५)। २ मरण ; (बृह १)। °**णाम** न [°**नामन्**] कर्म-विशेष ; (कम्म १, ४४)।

ऊसासय वि [**उच्छ्वासक**]:उसास लेने वाला; (विसे २७१४)।

ऊसासिअ वि [**उच्छ्वासित**] बाधा-रहित किया हुआ; (से १२, ६२)।

ऊसाह पुं [**उत्साह**] उत्साह, उछाह ; (मा १०)।

ऊसिक्क सक [**उत्+ष्वष्क्**] ऊँचा करना। संकृ—**ऊसिक्किऊण** ; (भग १, ८ टी)।

ऊसिक्किअ वि [**दे**] प्रदीप्त, शोभायमान ; (पाअ)।

ऊसित्त वि [**उत्सिक्त**] १ गर्वित ; २ उद्धत ; ३ बढ़ा हुआ ; ४ अतिशायित ; (हे १, ११४)।

ऊसित्त वि [**अवसिक्त**] उपलिप्त ; (पाअ)।

ऊसिय देखो **उस्सिय**=उच्छ्रित ; (औप; कप्प; सण)।

ऊससी, **ऊसीसग**, **ऊसीसय** न [**उच्छीर्ष**, °**क**] ओसीसा, सिरहाना; (गाया १, ७ ; पाअ ; सुपा ५३; १२०)।

ऊसुअ वि [**उत्सुक**] उत्कण्ठित ; (गा ५४३; कुमा)।

ऊसुअ वि [**उच्छुक**] जहां से शुक उद्गत हुआ हो वह; (हे १, ११४)।

ऊसुइअ वि [**उत्सुकित**] उत्सुक किया हुआ ; (गा ३१२)।

ऊसुंभ अक [**उत्+लस्**] उल्लसित होना। ऊसुंभइ; (हे ४, २०२)।

ऊसुंभिअ वि [**उल्लसित**] उल्लास-प्राप्त ; (कुमा)।

ऊसुंभिअ न [**दे**] १ रोदन-विशेष, गला बैठ जाय ऐसा रुदन ; (दे १, १४२ ; षड्)

ऊसुक्किअ वि [**दे**] विमुक्त, परित्यक्त; (दे १, १४२)।

ऊसुग देखो **ऊसुअ**=उत्सुक ; (उप ५९७ टी)।

ऊसुम्भिअ वि [**दे**] ओसीसा किया हुआ ; (षड्)।

ऊसुर न [**दे**] ताम्बूल, पान ; (हे २, १७४)।

ऊसुरुसुंभिअ [**दे**] देखो **ऊसुंभिअ** ; (दे १, १४२)।

ऊह सक [**ऊह्**] १ तर्क करना। २ विचारना। ऊहइ; (विसे ८३१)। ऊहेमि; (सुर ११, १८५)। संकृ—**ऊहिऊण** ; (आउ ५२)।

ऊह न [ऊधस्] स्तन ; (विपा १, २) ।

ऊह पुं [ऊह] १ विचार, विवेक-बुद्धि ; (राज) । २ तर्क, वितर्क ; (सूत्र २, ४) । ३ संख्या-विशेष ; (राज) । ४ ओघ-संज्ञा, अव्यक्त ज्ञान; (विसे ५२२;५२३)।

ऊहंग न [ऊहाङ्ग] संख्या-विशेष ; (राज) ।

ऊहट्ट वि [दे] उपहसित ; (दे १, १४०) ।

ऊहसिय वि [उपहसित] जिसका उपहास किया गया हो वह ; (दे १, १४०) ।

ऊहा स्त्री [ऊहा] तर्क, विचार-बुद्धि; (आवम) ।

ऊहिअ वि [ऊहित] अनुमान से ज्ञात ; (से ६, ४२) ।

इअ सिरि-पाइअसद्दमहण्णवे ऊआराइसद्दसंकलणो
छट्ठो तरंगो समत्तो ।



ए

ए पुं [**ए**] स्वर-वर्ण विशेष ; (हे १, १; प्रामा)।

ए अ [**ए, ऐ**] इन अर्थों का सूचक अव्यय;—१ आमन्त्रण, सम्बोधन; जैसे—"ए एहि सवड्हुत्तो मज्झ" (पउम ८, १७४)। २ वाक्यालंकार, वाक्य-शोभा; जैसे—"से जहा-णाम ए" (अणु)। ३ स्मरण ; ४ असूया, ईर्ष्या ; ५ अनुकम्पा, करुणा ; ६ आह्वान ; (हे २, २१७ ; भवि; गा ६०४)।

ए सक [**आ+इ**] आना, आगमन करना। एइ ; (उवा)। भवि—एहिइ ; (उवा)। वकृ—**एंत**; (पउम ८, ४३ ; सुर ११, १४८) ; **इंत** ; (सुर ३, १३)। **एज्जंत** ; (पि ५६१); **एज्जमाण** ; (उप ६४८ टी)।

ए° देखो **एत्तिअ** ; (उवा)।

ए° देखो **एवं** ; (उवा)।

एअ स [**एतत्**] यह ; (भग; हे १; ११ ; महा)। °**रिस** वि [°**दृश**] ऐसा, इसके जैसा ; (द्र ३२)। °**रूव** वि [°**रूप**] ऐसा, इस प्रकार का ; (णाया १, १, महा)।

एअ देखो **एग**; (गउड; नाट; स्वप्न ६०; १०६)। °**आइ** वि [°**किन्**] अकेला; (अभि १६०; प्रति ६५)। °**रह** ति. ब. [°**दशन्**] ग्यारह की संख्या, दश और एक ; (पि २४५)। °**रहम** वि [°**दश**] ग्यारहवाँ ; (भवि)।

एअ देखो **एव**=एव ; (कुमा)।

एअ } देखो **एवं** ; "एअ वि सिरीअ दिट्ठआ" (से ३, ४६ ;
एअं } गउड ; पिंग)।

एअंत देखो **एक्कंत** ; (वेणी १८)।

एआईस (अप) पुं. ब. [**एकविंशति**] एक्कीस; (पिंग)।

एआरिच्छ वि [**एतादृक्ष**] ऐसा, इसके जैसा; (प्रामा)।

एइज्जमाण देखो **एय**=एज्।

एईस वि [**एतादृश**] ऐसा ; (विसे २५४६)।

एउंजि (अप) अ [**एवमेव**] १ इसी तरह ; २ यही ; (भवि)।

एऊण देखो **एगूण** ; (पिंग)।

एंत देखो **इ**=इ।

एंत देखो **ए**=आ+इ।

एक देखो **एक्क** तथा **एग** ; (षड्; सम ६६; पउम १०३; १७२ ; हेका ११६; पण्ह २, ५ ; पउम ११४, २४ ; सुपा १६५ ; कप्प ; सम ७१; १५३)। °**इआ** अ [°**दा**] एक समय में, कोई वक्त ; (हे २, १६२)। °**ल** (अप) वि [°**क**] एकाकी ; (पि ५६५)। °**लिय** वि [°**किन्**] एकाकी, अकेला ; (उप ७२८ टी)। °**णउइ** स्त्री [°**नवति**] संख्या-विशेष, एकानवें ; (सम ६५; पि ४३५)।

एकूण देखो **अउण**=एकोन ; (सुज्ज १६)।

एक्क देखो **एक** तथा **एग** ; (हे २, ६६; सुपा १४३; सम ६६; ५५; पउम ३१, १२८ ; गउड; कप्प; मा १८; सुपा ४८६ ; मा ४१; पि ५६५; नाट; णाया १, १ ; गा ६१८; काल; सुर ५, २४२ ; भग ; सम ३६; पउम २१, ६३ ; कप्प)। °**वए** देखो **एगपए** ; (गउड; सुर १, ३८)। °**सणिय** वि [°**ाशनिक**] एक ही वार भोजन करने वाला; (पण्ह २, १)। °**सत्तरि** स्त्री [°**सप्तति**] संख्या-विशेष, ७१, एकहत्तर ; (सम ८२)। °**सरग, सरय** वि [°**सरक, °सर्ग**] एक समान, एक सरीखा ; (उवा; भग १६; पण्ह २,५)। °**सि** अ [°**शस्**] एक वार; "सव्व-जहन्नो उदओ दसगुणिओ एक्कसि कयाणं" (भग) ; "ए-क्कसि कओ पमाओ जीवं पाडेइ भवसमुद्दम्मि" (सुर ८, ११२) "एक्कसि सीलकलंकिअहं देज्जहिं पच्छित्ताइं" (हे ४, ४२८)। °**सि** अ [°**त्र**] एक (किसी एक) में, "एक्कसि न खु त्थिरो सित्ति पिओ कीइवि उवालद्धो" (कुमा)। °**सि,** °**सिअं** अ [°**दा**] कोई एक समय में; (हे २, १६२)। °**सिं** अ [°**शस्**] एक वार ; (पि ४५१)। °**इ** वि [°**किन्**] अकेला ; (प्रयौ २३)। °**इ** पुं [°**दि**] स्वनाम-ख्यात एक माण्डलिक; (सुवा); (विपा १, १)। °**णउय** वि [°**नवत**] ६१ वाँ ; (पउम ६१, ३०)। °**ारसम** वि [°**ादश**] ग्यारहवाँ ; (विपा १, १; उवा; सुर ११, २५०)। °**रह** त्रि. ब. [°**दशन्**] ग्यारह, दश और एक; (षड्)। °**ासीइ** स्त्री [°**ाशीति**] संख्या-विशेष, एकासी ; (सम ८८)। °**ासीइविह** वि [°**ाशीतिविध**] एकासी तरह का; (पण्ण १; १७)। °**ासीय** वि [°**ाशीत**] एकासीवाँ, ८१ वाँ; (पउम ८१, १६)। °**ेत्तरसय** वि [°**ेत्तरशततम**] एक सौ एक वाँ, १०१ वाँ; (पउम १०१, ७६)। °**ेयर** पुं [°**ेदर**] सहोदर भाई, सगा भाई ; (पउम ६, ६० ; ४६ , १८)। °**ेयरा** स्त्री [°**ेदरा**] सगी बहिन ; (पउम ८, १०६)।

एक्कक वि [**एकक**] अकेला ; (हेका ३१)।

एक्क वि [दे] स्नेह-पर, प्रेम-तत्पर ; (दे १, १४४)।
एक्कई (अप) वि [**एकाकिन्**] एकाकी, अकेला ; (भवि)।
एक्कंग न [दे] चन्दन, सुगन्धि काष्ठ-विशेष ; (दे १, १४४)।
एक्कंत पुं [**एकान्त**] १ सर्वथा ; २ तत्व, प्रमेय ; ३ जरूर, अवश्य ; ४ असाधारणता, विशेष; (से ४, २३)। ५ निर्जन, निराला ; (गा १०२)। देखो **एगंत**।
एक्ककक वि [**एकैक**] हर एक, प्रत्येक ; (नाट)।
एक्कक्कम [दे] देखो **एक्केक्कम** ; (से ५, ५६)।
एक्कघरिल्ल पुं [दे] देवर , पति का छोटा भाई; (दे १, १४६)।
एक्कणड पुं [दे] कथक, कथा कहने वाला; (दे १, १४५)।
एक्कमुह वि [दे] १ धर्म-रहित, निधर्मी ; २ दरिद्र, निर्धन ; ३ प्रिय, इष्ट ; (दे १, १४८)।
एक्कमेक्क वि [**एकैक**] प्रत्येक, हर एक ; (हे ३, १ ; षड् ; कुमा)।
एक्कल्ल वि [दे] प्रबल, बलवान् ; (षड्)।
एक्कल्लपुडिंग न [दे] विरल-बिन्दु-वृष्टि, अल्प बिन्दु-वाली वारिस ; (दे १, १४७)।
एक्कसरिअं अ [दे] १ शीघ्र, तुरन्त; २ संप्रति, आजकल ; (हे २. २१३ ; षड्)।
एक्कसाहिल्ल वि [दे] एक स्थान में रहने वाला ; (दे १, १४६)।
एक्कसिंबली स्त्री [दे] शाल्मली-पुष्पों से नूतन फल वाली ; (दे १, १४६)।
एक्कार पुं [**अयस्कार**] लोहार ; (हे १, १६६ ; कुमा)।
एक्की स्त्री [**एका**] एक (स्त्री) ; (निचू १)।
एक्कूण देखो **अउण** ; (पि ४४५)।
एक्केक्कम वि [दे] परस्पर, अन्योन्य; (दे १, १४५)। "सुहडा एक्केक्कमं अपेच्छंता" (पउम ६८, १५)।
एग स [**एक**] १ एक, प्रथम संख्या ; (अणु)। २ एकाकी, अकेला ; (ठा ४.१)। ३ अद्वितीय ; (कुमा)। ४ असहाय, निःसहाय ; (विपा १, २)। ५ अन्य, दूसरा "एवमेगे वदंति मोसा" (पण्ह १, २)। ६ समान, सदृश, तुल्य ; (उवा)। °**इय** देखो **एग** ; " अत्थेगइ-याणं नेरइयाणं एगं पलिओवमं ठिई पन्नत्ता" (सम १, ठा ७ ; औप)। °**इय** वि [°**क**] अकेला, एकाकी ; (भग)। °**ओ** अ [°**तस्**] एक तरफ; (कप्प)। °**क्खरिय** वि [°**ाक्षरिक**] एक अक्षर वाला (नाम) ; (अणु)। °**खंधी** स्त्री [°**स्कन्ध**] एक स्कन्ध वाला (वृक्ष वगैरः); (जीव ३)। °**खुर** वि [°**खुर**] एक खुर वाला (गौ वगैरः पशु) ; (पण्ण १)। °**ग** वि [°**क**] एकाकी, अकेला ; (श्रा १४)। °**ग्ग** वि [°**ाग्र**] तल्लीन, तत्पर ; (सुर १, ३०)। °**चक्खु** वि [°**चक्षुष्क**] एक आँख वाला, एकाक्ष, काना ; (पण्ह २, ५)। °**चत्ताल** वि [°**चत्वारिंश**] एकतालीसवाँ ; (पउम ४१, ७६)। °**चर** वि [°**चर**] एकाकी विहरने वाला ; (आचा)। °**चरिया** स्त्री [°**चर्या**] एकाकी विहरना; (आचा)। °**चारि** वि [°**चारिन्**] एकल-विहारी ; (सूअ १, १३)। °**चूड** पुं [°**चूड**] विद्याधर वंश का एक राजा ; (पउम ५, ४५)। °**च्छत्त** वि [°**च्छत्र**] १ पूर्ण प्रभुत्व वाला, अकण्टक; "एगच्छत्तं ससागरं भुंजिऊण वसुहं" (पण्ह २, ४)। २ अद्वितीय ; (काप्र १८६)। °**जडि** वि [°**जटिन्**] महाग्रह-विशेष ; (ठा २, ३)। °**जाय** वि [°**जात**] अकेला, निस्सहाय; "खग्गविसाणं व एगजाए" (पण्ह २, ५)। °**ट्ठ** वि [°**स्थ**] इकट्ठा, एकत्रित ; (भग १४, ६ ; उप पृ ३४१)। °**ट्ठ** वि [°**ार्थ**] एक अर्थ वाला, पर्याय-शब्द; (ओघ १ भा)। °**ट्ठ**, °**ट्ठं** अ [°**त्र**] एक स्थान में "मिलिया सव्वेवि एगट्ठं" (पउम ४७, ४४)। °**ट्ठिय** वि [°**ार्थिक**] एक ही अर्थ वाला, समानार्थक, पर्याय-शब्द ; (ठा १)। °**ट्ठिय** वि [°**ास्थिक**] जिसके फल में एक ही बीज होता है ऐसा आम वगैरः पेड़ ; (पण्ण १)। °**णासा** स्त्री [°**नासा**] एक दिक्कुमारी, देवी-विशेष ; (आव १)। °**त्त** न [°**त्र**] एक ही स्थान में "एगत्ते ठिओ" (स ४७०)। °**त्थ** देखो °**ट्ठ** ; (सम्म १०६ ; निचू १)। °**नासा** देखो °**णासा** ; (ठा ८)। °**पए** अ [°**पदे**] एक ही साथ, युगपत् ; (पि १७१)। °**पक्ख** वि [°**पक्ष**] १ अस-हाय ; (राज)। २ ऐकान्तिक, अविरुद्ध ; (सुअ १, १२)। °**पन्नास** स्त्रीन [°**पञ्चाशत्**] एकावन, पचास और एक। °**पन्नासइम** वि [°**पञ्चाशत्तम**] एकावनवाँ, ५१ वाँ ; (पउम ५१, २८)। °**पाइअ** वि [°**पादिक**] एक पाँव ऊँचा रखने वाला (आतापना में) ; (कस)। °**पासग** वि [°**पार्श्वक**] एक ही पार्श्व का भूमि

संबन्ध रखने वाला (आतापना में); (पण्ह २, १)। °पासिय वि [°पार्श्विक] देखो पूर्वोक्त अर्थ; (कस)। °भत्त न [°भक्त] व्रत-विशेष, एकाशन; (पंचा १२)। °भूय वि [°भूत] १ एकीभूत, मिला हुआ; (ठा १)। २ समान; (ठा १०)। °मण वि [°मनस्] एकाग्र-चित्त, तल्लीन; (सुर २, २२६)। °मेग वि [°एक] प्रत्येक, हर एक; (सम ६७)। °य वि [°क] एकाकी, अकेला; (दस ५)। °य वि [°ग] अकेला जाने वाला; (उत्त ३)। °यर वि [°तर] दो में से कोई भी एक; (षड्)। °या अ [°दा] एक समय में; (प्रासू; नव २४)। °राइय वि [°रात्रिक] एक-रात्रि-संबन्धी, एक रात में होने वाला; (सम २१; सुर ६, ६०)। °राय न [°रात्र] एक रात; (ठा ५, २)। °ल्ल वि [एक] एकाकी, अकेला; (ठा ७; सुर ४, ५४)। °विह वि [°विध] एक प्रकार का; (नव ३)। °विहारि वि [°विहारिन्] एकल-विहारी, अकेला विचरने वाला; (बृह १)। °वीसइम वि [°विंशतितम] एक्कीसवाँ; (पउम २१, ८१)। °वीसा स्त्री [°विंशति] एक्कीस; (पि ४४५)। °सट्ठ वि [°षष्ट] एकसठवाँ, ६१ वाँ; (पउम ६१, ७५)। °सट्ठि स्त्री [°षष्टि] एकसठ; (सम ७५)। °सत्तर वि [°सप्तत] एकहत्तरवाँ, ७१ वाँ; (पउम ७१, ७०)। °समइय वि [°सामयिक] एक समय में होने वाला; (भग २४, १)। °सरिया स्त्री [°सरिका] एकावली, हार-विशेष; (जं १)। °साडिय वि [°शाटिक] एक वस्त्र वाला, "एगसाडियमुत्तरासंगं करेइ" (कप्प; णाया १, १)। °सिं अ [°दा] एक समय में; (षड्)। °सेल पुं [°शैल] पर्वत-विशेष; (ठा २, ३)। °सेलकूड पुंन [°शैलकूट] एकशैल पर्वत का शिखर-विशेष; (जं ४)। °सेस पुं [°शेष] व्याकरण-प्रसिद्ध समास-विशेष; (अणु)। °हा अ [°धा] एक प्रकार का; (ठा १)। °हुत्त अ [°सकृत्] एक बार; (प्रामा)। °णिअ वि [°किन्] अकेला; (कस; ओघ २८ भा)। °दस त्रि. ब. [°दशन्] ग्यारह। °दसुत्तरसय वि [°दशोत्तरशततम] एक सौ ग्यारहवाँ, १११ वाँ; (पउम १११, २४)। °भोग पुं [°भोग] एकत्र-बन्धन; (निचू १)। °मोस वि [°मर्श] १ प्रत्युपेक्षणा का एक दोष, वस्त्र को मध्य में ग्रहण कर हाथ से घसीट कर उठाना; (ओघ २६७)। °यय वि [°यत] एकत्र संबद्ध; (कप्प)। °रस देखो °दस; (पि ४३५)। °रसी स्त्री [°दशी] तिथि-विशेष, एकादशी; (कप्प; पउम ७३, ३४)। °वण्ण स्त्रीन [°पञ्चाशत्] एकावन; (पि २६५)। °वलि, °ली स्त्री [°वलि, °ली] विविध प्रकार के मणिओं से ग्रथित हार; (औप)। °वलीपविभत्ति न [°वलीप्रविभक्ति] नाटक-विशेष; (राय)। °वाइ पुं [°वादिन्] एक ही आत्मा वगैरः पदार्थ को मानने वाला दर्शन, वेदान्त-दर्शन; (ठा ८)। °वीस स्त्रीन [°विंशति] संख्या-विशेष, एक्कीस; (पउम २०, ७२)। °सण न [°शन, °सन] व्रत-विशेष, एकाशन; (धर्म २)। °ह पुंन [°ह] एक दिन; (आचा २, ३, १)। °हच्च वि [°हत्य] एक ही प्रहार से नष्ट हो जानेवाला; (भग ७, ६)। °हिय वि [°हिक] १ एक दिन का उत्पन्न; २ पुं. ज्वर-विशेष, एकान्तर ज्वर; (भग ३, ७)। °हिय वि [°धिक] एक से ज्यादः (पंच)। देखो **एअ, एक** और **एक्क**।

एगंत देखो **एक्कंत**; (ठा ५; सूअ १, १२; ओघ ५५; पंचा ५; १०)। °दिट्ठि स्त्री [°दृष्टि] १ जैनेतर दर्शन; २ वि. जैनेतर दर्शन को मानने वाला; (सूअ २, ६)। ३ स्त्री. निश्चित सम्यक्त्व, निश्चल सत्य-श्रद्धा; (सूअ १, १३)। °दूसमा स्त्री [°दुष्षमा] अवसर्पिणी-काल का छठवाँ और उत्सर्पिणी-काल का पहला आरा, काल-विशेष; (सूअ १, ३)। °पंडिय पुं [°पण्डित] साधु, संयत; (भग)। °बाल पुं [°बाल] १ जैनेतर दर्शन को मानने वाला; २ असंयत जीव; (भग)। °वाइ वि [°वादिन्] जैनेतर दर्शन का अनुयायी; (राज)। °वाय पुं [°वाद] जैनेतर दर्शन; (सुपा ६५८)। °सुसमा स्त्री [°सुषमा] काल-विशेष, अवसर्पिणी काल का प्रथम और उत्सर्पिणी काल का छठवाँ आरा; (ठाँदि)।

एगंतिय वि [ऐकान्तिक] १ अवश्यंभावी; (विसे)। २ अद्वितीय, "एगंतियं कम्मवाहिओसहं" (स ५६२)। ३ जैनेतर दर्शन; (सम्म १३०)।

एगट्ठिया स्त्री [दे] नौका, जहाज; (णाया १, १६)।

एगिंदिय वि [एकेन्द्रिय] एक इन्द्रिय वाला, केवल स्पर्शेन्द्रिय वाला (जीव); (ठा ६)।

एगीभूत वि [एकीभूत] मिला हुआ, एकता-प्राप्त; (सुपा ८६)।

एगूण देखो **अउण**। °चत्ताल वि [°चत्वारिंश] उनचलीसवाँ; (पउम ३६, १३४)। °चत्तालीस स्त्रीन

[चत्वारिंशत्] उनचालीस ; (सम ६६) । °चत्तालीसइम वि [चत्वारिंशत्तम] उनचालीसवाँ; (सम ८६)। °णउइ स्त्री °नवति] नवासी; (पि ४४४)। °तीस स्त्रीन [°त्रिंशत्] उनतीस, २६ । °तीसइम वि [°त्रिंशत्तम] उनतीसवाँ, २६ वाँ; (पउम २६, ४६) । °नउइ देखो °णउइ; (सम ६४)। °नउय व [°नवत] नवासीवाँ ; (पउम ८६, ६५)। °पन्न, °पन्नास स्त्रीन [°पञ्चाशत्] उनपचास ; (सम ७० ; भग)। °पन्नास वि [°पञ्चाश] उनपचासवाँ; (पउम ४६, ४०)। °पन्नासइम वि [°पञ्चाशत्तम] उनपचासवाँ ; (सम ६६)। °वीस स्त्रीन [°विंशति] उन्नीस ; (सम ३६; पि ४४४ ; णाया १, १६)। °वीसइ स्त्री [°विंशति] उन्नीस ; (सम ७३)। °वीसइम, °वीसईम, °वीसम वि [°विंशतितम] उन्नीसवाँ ; (णाया १, १८ ; पउम १६, ४५; पि ४४६)। °सट्ठ वि [°षष्ट] उनसठवाँ, ५६ वाँ ; (पउम ५६, ८६) । °सत्तर वि [°सप्तत] उनसत्तरवाँ ; (पउम ६६, ६०) । °सी, °सीइ स्त्री [°शीति] उन्नासी; (सम ८७; पि ४४४; ४४६) । °सीय वि [°शीत] उन्नासीवाँ, ७६ वाँ ; (पउम ७६, ३५) । देखो अउण ।

एगूरुय पुं [एकोरुक] १ इस नाम का एक अन्तर्द्वीप; २ उसका निवासी ; (ठा ४, २)।

एग्ग (अप) देखा एग; (पिंग) ।

एज पुं [एज] वायु, पवन ; (आचा) ।

एज्जंत देखो ए=आ+इ ।

एज्जण न [आयन] आगमन ; (वव ३) ।

एज्जमाण देखो ए=आ+इ ।

एड सक [एड्] छोड़ना, त्याग करना । एडेइ; (भग)। कवकृ—एडिज्जमाण; (णाया १, १६)। संकृ—एडित्ता; (भग)। कृ—एडेयव्व ; (णाया १, ६) ।

एडक्क पुं [एडक] मेष, भेड़ ; (उप पृ २३४)।

एड्या स्त्री [एडका] भेडी ; (षड्) ।

एण पुं [एण] कृष्ण मृग, हरिण ; (कप्पू) । °णाहि [°नाभि] कस्तूरी ; (कप्पू) ।

एणंक पुं [एणाङ्क] चन्द्र, चन्द्रमा ; (कप्पू) ।

एणिज्ज वि [एणेय] हरिण-संबन्धी, हरिण का (मांस वगैरः); (राज) ।

एणिज्जय पुं [एणेयक] स्वनाम-ख्यात एक राजा, जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा ली थी ; (ठा ८)।

एणिस पुं [एणिस] वृक्ष-विशेष ; (उप १०३१ टी)।

एणी स्त्री [एणी] हरिणी; (पाअ ; पण्ह १, ४) । °यार पुं [°चार] हरिणी को चराने वाला, उनका पोषण करने वाला ; (पण्ह १, १) ।

एणुवासिअ पुं [दे] भेक, मेढ़क ; (दे १, १४७) ।

एणेज्ज देखो एणिज्ज ; (विपा १, ८) ।

एण्हं } अ [इदानीम्] अधुना, संप्रति ; (महा ; हे २, एण्हिं } १३४) ।

एत्तअ वि [इयत् , एतावत्] इतना ; (अभि ५६ ; स्वप्न ४०) ।

एत्तए देखो इ=इ ।

एत्तहि (अप) अ. [इतस्] यहां से ; (कुमा) ।

एत्तहे देखो इत्तहे ; (कुमा) ।

एत्ताहे देखो इत्ताहे ; (हे २, १३४ ; कुमा) ।

एत्तिअ } वि [इयत्, एतावत्] इतना ; (हे २, १५७)।
एत्तिल } °मत्त, °मेत्त वि [°मात्र] इतना ही; (हे १, ८१)।

एत्तुल (अप) ऊपर देखो ; (हे ४, ४०८ ; कुमा) ।

एत्तो देखो इओ ; (महा) ।

एत्तोअ अ [दे] यहां से लेकर ; (दे १, १४४) ।

एत्थ अ [अत्र] यहां, यहां पर ; (उवा ; गउड ; चारु १०३) ।

एत्थी देखो इत्थी ; (उप १०३१ टी) ।

एत्थु (अप) देखो एत्थ; (कुमा) ।

एदंपज्ज न [ऐदंपर्य] तात्पर्य, भावार्थ ; (उप ८५६ टी)।

एदिहासिअ (शौ) वि [ऐतिहासिक] इतिहास-संबन्धी ; (प्राप)।

एद्दह देखो एत्तिअ ; (हे २, १५७ ; कुमा ; काप्र ७७)।

एम (अप) अ [एवं] इस तरह, ऐसा ; (षड्; पिंग) ।

एमइ (अप) अ [एवमेव] इसी तरह, ऐसा ही ; (षड्; वज्जा ६०) ।

एमाइ } वि [एवमादि] इत्यादि, वगैरः; (सुर ८, २६; एमाइय } उव) ।

एमाण वि [दे] प्रवेश करता हुआ ; (दे १, १४४) ।

एमिणिआ स्त्री [दे] वह स्त्री, जिसके शरीर को, किसी देश के रिवाज के अनुसार, सूत के धागे से माप कर उस धागे को फेंक दिया जाता है ; (दे १, १४५) ।

एमेअ } अ [**एवमेव**] इसी तरह, इसी प्रकार ; " ता भण
एमेव } किं करणिज्जं एमेअ गा वासरो ठाइ " (काप्र २६ ; हे १, २७१) ।

एम्व (अप) अ [**एवम्**] इस तरह, इस प्रकार ; (हे ४, ४१८) ।

एम्वइ (अप) अ [**एवमेव**] इसी तरह, इस प्रकार ; (हे ४, ४२०) ।

एम्वहिं (अप) अ [**इदानीम्**] इस समय, अधुना ; (हे ४, ४२०) ।

एय अक [**एज्**] १ काँपना, हिलना । २ चलना । एयइ ; (कप्प) । वकृ—**एयंत** ; (ठा ७) । प्रयो, कवकृ—**एइज्जमाण** ; (राज) ।

एय पुं [**एज**] गति, चलन ; (भग २५, ४) ।

एयंत देखो **एक्कंत** ; (पउम १५, ५८) ।

एयण न [**एजन**] कम्प, हिलन; " निरेयणं भाणं" (आव ४) ।

एयणा स्त्री [**एजना**] १ कम्प ; २ गति, चलन ; (सुअ २, २; भग १७, ३) ।

एयाणिं देखो **इयाणिं** ; (रंभा) ।

एयावंत वि [**एतावत्**] इतना; (आचा) ।

एरंड पुं [**एरण्ड**] १ वृक्ष-विशेष, एरण्ड का पेड़ ; (ठा ४, ४ ; गाया १, १) । २ तृण-विशेष; (पण्ण १) । °**मिंजिया** स्त्री [°**मिञ्जिका**] एरण्ड-फल ; (भग ७, १) ।

एरंड वि [**ऐरण्ड**] एरण्ड-वृक्ष-संबन्धी (पत्रादि) ; (दे १, १२०) ।

एरंडइय } पुं [**दे**] पागल कुत्ता; " एरंडए साणे एरंडइय-
एरंडय } साणेत्ति हडक्कयितः " (बृह १) ।

एरण्णवय न [**ऐरण्यवत**] १ क्षेत्र-विशेष ; (सम १२) । २ वि, उस क्षेत्र में रहने वाला ; (ठा २) ।

एरवई स्त्री [**ऐरावती, अजिरवती**] नदी-विशेष; (राज; कस) ।

एरवय न [**ऐरवत**] १ क्षेत्र-विशेष; (सम १२; ठा २, ३) २ पुं, पर्वत-विशेष ; (ठा १०) ।

एरवय वि [**ऐरवत**] एरवत क्षेत्र का रहने वाला; (अणु) । °**कूड** न [°**कूट**] पर्वत-विशेष का शिखर-विशेष ; (ठा १०) ।

एराणी स्त्री [**दे**] १ इन्द्राणी ; २ इन्द्राणी व्रत का सेवन करने वाली स्त्री ; (दे १, १४८) ।

एरावई स्त्री [**ऐरावती**] नदी-विशेष ; (ठा ५, २; पि ४६५) ।

एरावण पुं [**ऐरावण**] १ इन्द्र का हाथी, जो कि इन्द्र के हस्ति-सैन्य का अधिपति देव है ; (ठा ५, १; प्रयौ ७८) । °**वाहण** पुं [°**वाहन**] इन्द्र ; (उप ५३० टी) ।

एरावय पुं [**ऐरावत**] १ ह्रद-विशेष ; (राज) । २ ह्रद-विशेष का अधिष्ठाता देव; (जीव ३) । ३ छन्दः-शास्त्र-प्रसिद्ध पञ्चकला-प्रस्तार में आदि के ह्रस्व और अन्त के दो गुरु अक्षरों का संकेत ; (पिंग) । ४ लकुच वृक्ष ; ५ सरल और लम्बा इन्द्र-धनुष ; ६ इरावती नदी का समीपवर्ती देश ; ७ इन्द्र का हाथी ; (हे १, २०८) ।

एरिस वि [**ईदृश**] इस तरह का, ऐसा ; (आचा; कुमा ; प्रासू २१) ।

एरिसिअ (अप) ऊपर देखो ; (पिंग) ।

एल वि [**दे**] कुशल, निपुण ; (दे १, १४४) ।

एल } पुं [**एड, एल**] १ मृगों की एक जाति ; (विपा
एलग } १, ४) । २ मेष भेड़; (सुअ २, २) । °**मूअ**, °**मूग** वि [°**मूक**] १ मूक, भेड़ की तरह अव्यक्त बोलने वाला ; " जलएलमूअमम्मणअलियवयणजंपणे दोसा " (श्रा १२ ; दस ५ ; आव ४ ; निचू ११) ।

एलगच्छ न [**एलकाक्ष**] स्वनाम-ख्यात नगर-विशेष ; (उप २११ टी) ।

एलय देखो **एल** ; (उवा ; पि २४०) ।

एलविल वि [**दे**] १ धनाढ्य, धनी ; २ पुं, वृषभ, बैल ; (दे १, १४८ ; षड्) ।

एला स्त्री [**एला**] १ एलायची का पेड़ ; (से ७,६२) । २ एलायची-फल; (सुर १३, ३३) । °**रस** पुं [°**रस**] एलायची का रस ; (पण्ह २, ५) ।

एलालुय पुंन [**एलालुक**] आलू की एक जाति, कन्द-विशेष ; (अणु ६) ।

एलावच्च न [**एलापत्य**] माण्डव्य गोत्र का एक शाखा-गोत्र ; (ठा ७) ।

एलावच्चा स्त्री [**एलापत्या**] पक्ष की तीसरी रात ; (चंद १४) ।

एलिंघ पुं [**एलिङ्घ**] धान्य-विशेष ; (पण्ण १) ।

एलिया स्त्री [**एडिका, एलिका**] १ एक जात की मृगी; २ भेड़िया ; (हे ३, ३२) ।

एलु पुं [**एलु**] वृक्ष-विशेष ; (उप १०३१ टी) ।

एलुग } पुंन. [एलुक] देहली, द्वार के नीचे की लकड़ी;
एलुय } जीव ३ ; आचा २)।

एल्ल वि [दे] दरिद्र, निर्धन ; (दे १, १७४)।

एव अ [एव] इन अर्थों का सूचक अव्यय;—१ अवधारण, निश्चय ; (ठा ३, १ ; प्रासू १६)। २ सादृश्य, तुल्यता; ३ चार-नियोग ; ४ निग्रह ; ५ परिभव ; ६ अल्प, थोडा ; (हे २, २१७)।

एअ देखो एवं; (हे १, २६ ; पउम १५, २४)।

एवइ वि [इयत्, एतावत्] इतना। °खुत्तो अ [°कृत्वस्] इतनी वार ; (कप्प)।

एवइय वि [इयत्, एतवात्] इतना ; (कप्प ; विसे ४४४)।

एवं अ [एवम्] इस तरह ; इस रीति से, इस प्रकार ; (सूअ १, १ ; हे १, २६)। °भूअ पुं [°भूत] १ व्युत्पत्ति के अनुसार उस क्रिया से विशिष्ट अर्थ को ही शब्द का अभिधेय मानने वाला पक्ष ; (ठा ७)। २ वि. इस तरह का, एवं-प्रकार ; (उप ८७७)। °विध, °विह वि [°विध] इस प्रकार का ; (हे ४, ३२३; काल)।

एवड (अप) वि [इयत्] इतना ; (हे ४, ४०८ ; कुमा; भवि)।

एवमाइ देखो एमाइ ; (पण्ह १, ३)।

एवमेव } देखो एमेव ; (हे १, २७१ ; उवा)।
एवामेव }

एव्व देखो एव=एव ; (अभि १३; स्वप्न ४०)।

एव्वं देखा एवं ; (षड् ; अभि ७२, स्वप्न १०)।

एव्वहि (अप) अ [इदानीम्] इस समय, अधुना ; (षड्)।

एव्वारु पुं [एर्वारु] ककड़ी ; (कुमा)।

एस सक [आ+इष्] १ खोजना, शुद्ध भिक्षा की खोज करना। २ निर्दोष भिक्षा का ग्रहण करना। एसंति; (आचा २, ६, २)। वकृ—एसमाण ; (आचा २, ५, १)। संकृ—एसित्ता, एसिया ; (उत्त १ ; आचा)। हेकृ—एसित्तए ; (आचा २, ३, १)।

एस वि [एष्य] १ भावी पदार्थ, होने वाली वस्तु ; (आव ५)। २ पुं. भविष्य काल ; (दसनि १); " अकयंव संपइ गए कह कीरइ, किह व एसम्मि " (विसे ४२२)।

°एस देखो देस ; " भण को ण रुस्सइ जणो पत्थिज्जंतो अएसकालम्मि " (गा ४००)।

एसग वि [एषक] अन्वेषक, गवेषक ; (आचा)।

एसज्ज न [ऐश्वर्य] वैभव, प्रभुत्व, संपत्ति ; (ठा ७)।

एसण न [एषण] १ अन्वेषण, खोज ; २ ग्रहण ; (उत्त २)।

एसणा स्त्री [एषणा] १ अन्वेषण, गवेषण, खोज; (आचा)। २ प्राप्ति, लाभ; " विसएसणं झियायंति " (सूअ १, ११)। ३ प्रार्थना ; (सूअ १, २)। ४ निर्दोष आहार की खोज करना ; (ठा ६)। ५ निर्दोष भिक्षा ; (आचा २)। ६ इच्छा, अभिलाष ; (पिंड १)। ७ भिक्षा का ग्रहण; (ठा ३, ४)। °समिइ स्त्री [°समिति] निर्दोष भिक्षा का ग्रहण करना ; (ठा ५)। °समिय वि [°समित] निर्दोष भिक्षा को ग्रहण करने वाला ; (उत्त ६ ; भग)।

एसणिज्ज वि [एषणीय] ग्रहण-योग्य ; (णाया १, ५)।

एसि वि [एषित्] अन्वेषक, खोज करने वाला ; (आचा)।

एसिय वि [एषिक] १ खोज करने वाला, गवेषक; २ पुं. व्याध ; ३ पाखण्डि-विशेष ; (सूअ १, ६)। ४ मनुष्यों की एक नीच जाति ; (आचा २, १, २)

एसिय वि [एषित] गवेषित, अन्वेषित ; (भग ७, १)। २ निर्दोष भिक्षा ; (वव ४)।

एस्सरिय देखो एसज्ज ; (उव)।

एह अक [एध्] बढना, उन्नत होना। एहइ ; (षड्)। प्रयो, कवकृ—" दीसंति दुहम् एहंता ; (दस ६)।

एह (अप) वि [ईदृक्] ऐसा, इस के जैसा ; (षड्; भवि)।

एहत्तरि (अप) स्त्री [एकसप्तति] संख्या-विशेष, ७१; (पिंग)।

एहिअ वि [ऐहिक] इस जन्म-संबन्धी ; (ओघ ६२)।

इअ सिरिपाईअसद्दमहण्णवे एआराइसद्दसंकलणो
सत्तमो तरंगो समत्तो।

ऐ

ऐ अ [अयि] इन अर्थों का सूचक अव्यय ;—१ संभावना ; २ आमन्त्रण , संबोधन ; ३ प्रश्न ; ४ अनुराग, प्रीति ; ५ अनुनय ;" ऐ बीहेमि; ऐ उम्मत्तिए " (हे १, १६६)।

इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवे ऐआराइअद्दसंकलणो
अट्ठमो तरंगो समत्तो ।

ओ

ओ पुं [**ओ**] स्वर वर्ण-विशेष ; (हे १, १ ; प्रामा) ।

ओ देखो **अव**=अप ; (हे १, १७२ ; प्राप्र; कुमा ; षड्)।

ओ देखो **अव**=अव ; (हे १, १७२ ; प्राप्र; कुमा; षड्) ।

ओ देखो **उअ**=उत ; (हे १, १७२ ; कुमा ; षड्) ।

ओ देखो **उव** ; (हे १, १७३ ; कुमा) ।

ओ अ [**ओ**] इन अर्थों का सूचक अव्यय;—१ सूचना; जैसे— "ओ अविणयतत्तिल्ले " २ पश्चात्ताप, अनुताप, जैसे— "ओ न मए छाया इत्तिआए " (हे २, २०३ ; षड्; कुमा; प्राप्र) । ३ संबोधन, आमन्त्रण ; (नाट—चैत ३४)। ४ पादपूर्ति में प्रयुक्त किया जाता अव्यय ; (पंचा १; विसे २०२४) ।

ओअ न [**दे**] वार्त्ता, कथा, कहानी; (दे १, १४६) ।

ओअअ वि [**अपगत**] अपसृत ; " ओअआअव—" (पि १६५) ।

ओअंक पुं [**दे**] गर्जित, गर्जना ; (दे १, १५४) ।

ओअंद सक [**आ+छिद्**] १ बलात्कार से छीन लेना । २ नाश करना । ओअंदइ ; (हे ४, १२५ ; षड्) ।

ओअंदणा स्त्री [**आच्छेदना**] १ नाश । २ जबरदस्ती छीनना ; (कुमा) ।

ओअक्ख सक [**दृश्**] देखना । ओअक्खइ; (हे ४, १८१; षड्) ।

ओअग्ग सक [**वि+आप्**] व्याप्त करना । ओअग्गइ ; (हे ४, १४१) ।

ओअग्गिअ वि [**व्याप्त**] विस्तृत, फैला हुआ ; (कुमा)।

ओअग्गिअ वि [**दे**] १ अभिभूत, परिभूत ; २ न. केश वगैरः को एकत्रित करना ; (दे १, १७२) ।

ओअग्घिअ } वि [**दे**] घ्रात, सूँघा हुआ; (दे १, १६३;
ओअघिअ } षड्) ।

ओअण्ण वि [**अवनत**] नमा हुआ, नीचे की तरफ मुड़ा हुआ ; (से ११, ११८) ।

ओअत्त वि [**अपवृत्त**] उँधा किया हुआ, उलटा किया हुआ ; "ओअत्ते कुंभमुहे जललवकणिआवि किं ठाइ ? " (गा ६५४) ।

ओअत्तअ वि [**अपवर्त्तितव्य**] १ अपवर्तन-योग्य ; २ त्यागने योग्य, छोडने लायक ; "कुसुमम्मि व पव्वाअए भमरोअत्तअम्मि " (से ३, ४८) ।

ओअम्मअ वि [**दे**] अभिभूत, पराभूत ; (षड्) ।

ओअर सक [**अव+तॄ**] १ जन्म-ग्रहण करना । २ नीचे उतरना । ओयरइ ; (हे ४, ८५) । वकृ— **ओयरंत**; (ओघ १६१; सुर १४,२१) । हेकृ—**ओयरिउं**; (प्रारू) । कृ—**ओयरियव्व**; (सुर १०, १११) ।

ओअरण न [**उपकरण**] साधन, सामग्री ; (गा ६८१)।

ओअरण न [**अवतरण**] उतरना, नीचे आना ; (गउड)।

ओअरय पुं [**अपवरक**] कमरा, कोठरी ; (सुपा ४१५) ।

ओअरिअ वि [**अवतीर्ण**] उतरा हुआ ; (पाअ) ।

ओअरिअ वि [**औदरिक**] पेट-भरा, उदर भरने मात्र की चिन्ता करने वाला ; (ओघ ११८ भा) ।

ओअरिया स्त्री [**अपवरिका**] कोठरी, छोटा कमरा; (सुपा ४१५) ।

ओअल्ल अक [**अव+चल्**] चलना । ओअल्लंति ; (पि १६७ ; ४८८) वकृ—**ओअल्लंत** ; (पि १६७; ४८८) ।

ओअल्ल पुं [**दे**] १ अपचार, खराब आचरण, अहित आचरण; (षड्; स ५२१) । २ कम्प, काँपना ; (षड् ; दे १, १६५) । ३ गौओं का बाड़ा; ४ वि. पर्यस्त, प्रक्षिप्त; ५ लम्बमान, लटकता हुआ ; (दे १, १६५) । ६ जिसकी आँखें निमीलित होती हों वह ; "मुच्छिज्जंतोअल्ला अक्कंता णिअअमहिहरेहि पवंगा " (स १३, ४३) ।

ओअल्लअ वि [**दे**] विप्रलब्ध, प्रतारित ; (षड्) ।

ओअव सक [**साधय्**] साधना, वश में करना, जीतना । "गच्छाहि णं भो देवाणुप्पिआ ! सिंधूए महाणईए पच्चत्थिमिल्लं णिक्खुडं ससिंधुसागरगिरिमेरागं समविसमणिक्खुडाणि अ ओअवेहि " (जं ३)। संकृ—**ओअवेत्ता** ; (जं ३) ।

ओअवण न [**साधन**] विजय, वश करना, स्वायत्त करना ; (जं ३—पत्र २४८) ।

ओआअ पुं [**दे**] १ ग्रामाधीश, गाँव का स्वामी ; २ आज्ञा, आदेश ; ३ हस्ती वगैरः को पकड़ने का गर्त ; ४ वि. अपहृत, छीना हुआ ; (दे १, १६६) ।

ओआअव पुं [**दे**] अस्त-समय ; (दे १, १६२) ।

ओआर सक [**अप+वारय्**] ढकना । "कई सुज्जं हत्थेण ओआरेसि ", (मै ४६) ।

ओआर पुं [**अपकार**] अनिष्ट, हानि, क्षति ; (कुमा) ।

ओआर पुं [**अवतार**] १ अवतारण ; (ठा १ ; गउड)। २ अवतार, देहान्तर-धारण ; (षड्)। ३ उत्पत्ति, जन्म; " अच्चंतमणोयारो जत्थ जरारोगवाहीणं " (स १३१)। ४ प्रवेश ; (विसे १०४०)।

ओआर देखो **उवयार** ; (षड्)।

ओआरण न [**अवतारण**] उतारना, अवतारित करना ; (दे ४, ४०)।

ओआरिअ वि [**अवतारित**] उतारा हुआ ; (से ११, ६३ ; उप ५६७ टी)।

ओआल पुं [**दे**] छोटा प्रवाह ; (दे १, १५१)।

ओआली स्त्री [**दे**] १ खड्ग का दोष; २ पङ्क्ति, श्रेणि ; (दे १, १६४)।

ओआवल पुं [**दे**] बालातप, सुबह का सूर्य-ताप ; (दे १, १६१)।

ओआस देखो **अवगास**; (हे १, १७२ ; कुमा ; गा २०); " अम्हारिसाण सुंदर ! ओआसो कत्थ पावाणं " (काप्र ६०३)।

ओआस देखो **उववास** ; (हे १, १७३ ; प्राकृ)।

ओआहिअ वि [**अवगाहित**] जिसका अवगाहन किया गया हो वह ; (से १, ४ ; ८, १००)।

ओइंध सक [**आ+मुच्**] १ छोड़ देना, त्यागना, फेंक देना। २ उतार कर रख देना। " तो उज्झिऊण लज्जं ओइंधइ कंचुयं सरीराओ " (पउम ३४, १६)। " तहेव य झडत्ति परिवाडीए ओइंधइ त्ति " (आक ३८)।

ओइण्ण वि [**अवतीर्ण**] उतरा हुआ ; (पाअ ; गा ६३)

ओइत्त } **ओइत्तण** } न [**दे**] परिधान, वस्त्र ; (दे १, १५५)।

ओइल्ल वि [**दे**] आरूढ ; (दे १, १५८)।

ओउंठण न [**अवगुण्ठन**] स्त्री के मुँह पर का वस्त्र, घूँघट ; (अभि १६८)।

ओउल्लिय वि [**दे**] पुरस्कृत, आगे किया हुआ ; (षड्)।

ओऊल न [**अवचूल**] लटकता हुआ वस्त्राञ्चल, प्रालम्ब; (पाअ); " मरगयलंबंतमोत्तिओऊलं " (पउम ८, २८३)। देखो **ओचूल**।

ओ अ [**ओम्**] प्रणव, मुख्य मन्त्राक्षर ; (पडि)।

ओंघ देखो **उंघ**। ओंघइ ; (हे ४, १२ टि)।

ओंडल न [**दे**] केश-गुम्फ, केश-रचना, धम्मिल्ल; (दे १, १५०)।

ओंदुर देखो **उंदुर** ; (षड्)।

ओंबाल सक [**छादय्**] ढकना, आच्छादित करना। ओंबालइ ; (हे ४, २१)।

ओंबाल सक [**प्लावय्**] १ डुबोना। २ व्याप्त करना। ओंबालइ ; (हे ४, ४१)।

ओंबालिअ वि [**छादित**] ढका हुआ ; (कुमा)।

ओंबालिअ वि [**प्लावित**] १ डुबाया हुआ ; २ व्याप्त; (कुमा)।

ओकड्ढ वि [**अपकृष्ट**] १ खींचा हुआ ; २ न. अपकर्षण, खींचाव ; (उत्त १६)।

ओकड्ढग देखो **उक्कड्ढग** ; (पराह १, ३)।

ओक्कस सक [**अव+कृष्**] १ निमग्न होना, गड़ जाना। २ खींचना। ३ वह जाना। वकृ—**ओकसमाण** ; (कस)।

ओक्कंत वि [**अवक्रान्त**] निराकृत, पराजित; "परवाईहिं **अणोक्कंता** अरणउत्थिएहिं अणाद्धंसिज्जमाणा विहरंति" (औप)।

ओक्कंदी देखो **उक्कंदी**; (दे १, १७४)।

ओक्कणी स्त्री [**दे**] यूका, जू; (दे १, १५६)।

ओक्किअ न [**दे**] १ वास, वसन, अवस्थान ; २ वमन, उल्टी ; (दे १, १५१)।

ओक्खंच सक [**आ+कृष्**] खींचना। कर्म— " जह जह आक्खंचिज्जइ, तह तह वेगं पगिराहमाणेण। भयवं ! तुरंगमेणं, इहाणिओ आसमे तुम्ह" (सुर ११, ५१)।

ओक्खंड सक [**अव+खण्डय्**] तोड़ना, भाँगना। कृ— **ओक्खंडेअव्व**; (से १०, २६)।

ओक्खंडिअ वि [**दे**] आक्रान्त ; (दे १, ११२)।

ओक्खंद देखो **अवक्खंद** ; (सुर १०, २१० ; पउम ३७, २६)।

ओक्खल देखो **उऊखल**; (कुमा; प्राप्र)।

ओक्खली [**दे**] देखो **उक्खली**; (दे १,१७४)।

ओक्खिण्ण वि [**दे**] १ अवकीर्ण; २ खण्डित, चूर्णित; (कस; दे १, १३०)। २ छन्न, ढका हुआ; ३ पार्श्व में शिथिल; (दे १, १३०)।

ओक्खित्त वि [**अवक्षिप्त**] फेंका हुआ; (कस)।

ओखंच देखो **ओक्खंच**।

ओगम देखो **अवगम**। कृ—**ओगमिदव्व** (शौ) ; (मा ४८)।

ओगर देखो **ओग्गर**; (पिंग)।
ओगलिअ वि (**अवगलित**) गिरा हुआ, खिसका हुआ; (गा २०५)।
ओगसण न [**अपकसन**] ह्रास; (राज)।
ओगहिय वि [**अवगृहीत**] उपात्त, गृहीत; (ठा ३)।
ओगाढ वि [**अवगाढ**] १ आश्रित, अधिष्ठित ; (ठा २, २)। २ व्याप्त ; (णाया १, १६)। ३ निमग्न ; (ठा ४)। ४ गंभीर, गहरा ; (पउम २०, ६५ ; से ६, २६)।
ओगास पुं [**अवकाश**] जगह, स्थान ; (विवे १३६ टी)।
ओगाह सक [**अव+गाह्**] अवगाहन करना। ओगाहइ ; (षड्)। वकृ—**ओगाहंत** ; (आव २)। संकृ—**ओगाहइत्ता, ओगाहित्ता** ; (दस ५ ; भग ५, ४)।
ओगाहण न [**अवगाहन**] अवगाहन ; (भग)।
ओगाहणा स्त्री [**अवगाहना**] १ आधार-भूत आकाश-क्षेत्र ; (ठा १)। २ शरीर; (भग ६, ८)। ३ शरीर-परिमाण; (ठा ४, १)। ४ अवस्थान, अवस्थिति ; (विसे) °**णाम** न [°**नामन्**] कर्म-विशेष, (भग ६, ८)। °**णाम** पुं [°**नाम**] अवगाहनात्मक परिणाम ; (भग ६, ८)।
ओगाहिम वि [**अवगाहिम**] पक्वान्न ; (पंचा ५)।
ओगिज्झ } सक [**अव+ग्रह्**] १ आश्रय लेना। २
ओगिण्ह } अनुज्ञा-पूर्वक ग्रहण करना। ३ जानना। ४ उद्देश करना। ५ लक्ष्य कर कहना। ओगिण्हइ; (भग; कप्प)। संकृ—**ओगिज्झिय, ओगिण्हइत्ता, ओगिण्हित्ता, ओगिण्हित्ताणं**; (आचा ; णाया १, १; कस; उवा)। कृ—**ओघेत्तव्व**; (कप्प; पि ५७०)।
ओगिण्हण न [**अवग्रहण**] सामान्य ज्ञान-विशेष, अवग्रह; (णंदि)।
ओगिण्हणया स्त्री [**अवग्रहणता**] १ ऊपर देखो ; (णंदि)। २ मनो-विषयीकरण, मन से जानना; (ठा ८)।
ओगिन्ह देखो **ओगिण्ह**। संकृ—**ओगिन्हित्ता** ; (निर १, १)।
ओगुंडिय वि [**अवगुण्डित**] लिप्त ; (बृह १)।
ओगुट्ठि स्त्री [**अपकृष्टि**] अपकर्ष, हलकाइ, तुच्छता ; (पउम ५६, १५)।
ओगूहिय वि [**अवगूहित**] आलिङ्गित ; (णाया १,६)।
ओग्गर पुं [**ओगर**] धान्य-विशेष, व्रीहि-विशेष; (पिंग)।
ओग्गह देखो **उग्गह** ; (सम्म ७५; उव; कस; स ३५ : ५६८)।
ओग्गहण देखो **ओगिण्हण**। °**पट्टग** पुंन [°**पट्टक**] जैन साध्वीओं कों पहनने का एक गुह्याच्छादक वस्त्र; जाँघिया, लंगोट ; (कस)।
ओग्गहिय वि [**अवगृहीत**] १ अवग्रह-ज्ञान से जाना हुआ, अवग्रह का विषय। २ अनुज्ञा से गृहीत। ३ बद्ध, बँधा हुआ; (उवा)। ४ देने के लिए उठाया हुआ ; (औप)।
ओग्गहिय वि [**अवग्रहिक**] अनुज्ञा से गृहीत, अवग्रह वाला ; (औप)।
ओग्गारण न [**उद्गारण**] उद्गार ; (चारु ७)।
ओग्गाल पुं [**दे**] छोटा प्रवाह ; (दे १, १५१)।
ओग्गाल सक [**रोमन्थाय्**] पगुराना, चबाई हुई वस्तु का पुनः चबाना। ओग्गालइ ; (हे ४, ४३)।
ओग्गालिर वि [**रोमन्थायितृ**] पगुराने वाला, चबाई हुई वस्तु का पुनः चबाने वाला ; (कुमा)।
ओग्गिअ वि [**दे**] अभिभूत, पराभूत ; (दे १, १५८)।
ओग्गीअ पुं [**दे**] हिम, वर्फ ; (दे १, १४६) ।
ओग्घसिय वि [**अवघर्षित**] प्रमार्जित : साफ-सुथरा किया हुआ ; (राय)।
ओघ पुं [**ओघ**] १ समूह, संघात ; (णाया १, ५)। २ संसार, " एते ओघं तरिस्संति समुद्दं ववहारिणो " (सूअ १, ३)। ३ अविच्छेद, अविच्छिन्नता; (पण्ह १, ४)। ४ सामान्य, साधारण। °**सण्णा** स्त्री [°**संज्ञा**] सामान्य ज्ञान; (पण्ण ७)। °**देस** पुं [°**देश**] सामान्य विवक्षा ; (भग २५, ३)। देखो **ओह**=ओघ।
ओघट्टिद (शौ) वि [**अवघट्टित**] आहत ; (प्रयौ २७)।
ओघसर पुं [**दे**] १ घर का जल-प्रवाह; २ अनर्थ, खराबी, नुकशान ; (दे १, १७० ; सुर २, ६६)।
ओघसिय देखो **ओग्घसिय**।
ओघेत्तव्व देखो **ओगिण्ह**।
ओचिदी (शौ) स्त्री [**औचिती**] उचितता, औचित्य ; (रंभा)।
ओचुंब सक [**अव+चुम्ब्**] चुम्बन करना। संकृ—**ओचुंबिऊण** ; (भवि)।
ओचुल्ल न [**दे**] चुल्हा का एक भाग ; (दे १, १५३)।

ओचूल } देखो **ओऊल** ; (विपा १, २ ; सुर ३, ७०)।
ओचूलग } २ मुख से हटा हुआ शिथिल—ढ़ीला (वस्त्र); "ओचूलगनियत्था" (जं ३—पत्र २४५)।

ओच्चय देखो **अवचय** ; (महा)।

ओच्चिया स्त्री [**अवचायिका**] तोड़ कर (फूलों को) इकट्ठा करना ; (गा ७६७)।

ओच्चेल्लर न [**दे**] ऊषर-भूमी ; २ जघन के रोम ; (दे १, १३६)।

ओच्छइय } वि [**अवस्तृत**] १ आच्छादित ; २ निरुद्ध, **ओच्छइय** } रोका हुआ ; (पराह १, ४; गउड ; स १६४)।

ओच्छंदिअ वि [**दे**] १ अपहृत ; २ व्यथित, पीडित ; (षड्)।

ओच्छण्ण वि [**अवच्छन्न**] आच्छादित, ढ़का हुआ ; "णिच्चं उगो असोगो ओच्छण्णो सालरुक्खेणं" (सम १५२)। देखो **ओच्छन्न**।

ओच्छत्त न [**दे**] दन्त-धावन, दतवन; (दे १, १५२)।

ओच्छन्न देखो **ओच्छण्ण**; (स ११२, औप)। २ अवष्टब्ध, आक्रान्त ; (आचा)।

ओच्छर (शौ) सक [**अव+स्तृ**] १ बिछाना, फैलाना। २ आच्छादित करना, ढाँकना। ओच्छरीअदि ; (नाट—उत्तम १०५)।

ओच्छविय } वि [**अवच्छादित**] आच्छादित, ढ़का **ओच्छाइय** } हुआ ; "गुच्छलयारुक्खगुम्मवल्लिगुच्छओच्छाइयं सुरम्मं वेभारगिरिकडगपायमूलं" (णाया १, १—पत्र २५; २८ टी ; महा ; स १५०)।

ओच्छाइवि नीचे देखो।

ओच्छाय सक [**अव+छादय्**] आच्छादन करना। संकृ—**ओच्छाइवि** ; (भवि)।

ओच्छायण वि [**अवच्छादन**] ढाँकना, पिधान ; (स ५५७)।

ओच्छाहिय देखो **उच्छाहिय** ;

"ओच्छाहिओ परेण व लद्धिपसंसाहिं वा समुत्तइओ।
अवमाणिओ परेण य जो एसइ माणपिंडो सो॥" (पिंड ४६५)।

ओच्छिअ न [**दे**] केश-विवरण ; (दे १, १५०)।

ओच्छिण्ण वि [**अवच्छिन्न**] आच्छादित ; "पत्तेहि य पुप्फेहि य ओच्छिण्णपलिच्छिराणा" (जीव ३)।

ओच्छुंद सक [**आ+क्रम्**] १ आक्रमण करना २ गमन करना। ओच्छुंदंति ; (से १३, १६)। कर्म—ओच्छुंदइ ; (से १०, ५५)।

ओच्छुण्ण वि [**आक्रान्त**] १ दबाया हुआ। २ उल्लंघित; "ओच्छुरणदुग्गमपहा" (से १३, ६३; १५, १३)।

ओच्छोअअ न [**दे**] घर की छत के प्रान्त भाग से गिरता पानी;

"रक्खेइ पुत्तअं मत्थएण ओच्छोअअं पडिच्छंती।
अंसूहिं पहिअघरिणी ओलिज्जंतं ण लक्खेइ" (गा ६२१)।

ओज्जर वि [**दे**] भीरु, डरपोक ; (षड्)।

ओज्जल देखो **उज्जल** (दे)।

ओज्जल्ल वि [**दे**] बलवान्, प्रबल ; (दे १, १५४)।

ओज्जाअ पुं [**दे**] गर्जित, गर्जारव ; (दे १, १५४)।

ओज्झ वि [**दे**] मैला, अस्वच्छ, चोखा नहीं वह ; (दे १, १४८)।

ओज्झंत देखो **ओज्झा** = अप + ध्या।

ओज्झमण न [**दे**] पलायन, भाग जाना ; (दे १, १०३

ओज्झर पुं [**निर्झर**] झरना, पर्वत से निकलता जल-प्रवाह ; (गा ६४० ; हे १, ९८ ; कुमा ; महा)।

ओज्झरिअ [**दे**] देखो **उज्झरिअ** ; (दे १, १३३)।

ओज्झरी स्त्री [**दे**] ओझ, आँत का आवरण ; (दे १, १५७)।

ओज्झा सक [**अप+ध्या**] खराब चिन्तन करना। कवकृ—**ओज्झंत** ; (भवि)।

ओज्झा देखो **अउज्झा** ; (उप पृ ३७४)।

ओज्झाय देखो **उवज्झाय** ; (कुमा ; प्रारू)।

ओज्झाय वि [**दे**] दूसरे को प्रेरणा कर हाथ से लिया हुआ ; (दे १, १५६)।

ओज्झावग देखो **उवज्झाय** ; (उप ३५७ टी)।

ओट्ठ पुं [**ओष्ठ**] होठ, अधर ; (पउम १, २४ ; स्वप्न १०४; कुमा)।

ओट्टिय वि [**औष्ट्रिक**] उष्ट्र-संबन्धी, उष्ट्र के बालों से बना हुआ ; (कस ; स ५८६)।

ओडड्ढ वि [**दे**] अनुरक्त, रागी, (दे १, १५६)।

ओड्ड पुं [**ओड्र**] १ उत्कल देश; २ वि. उत्कल देश का निवासी, उड़िया ; (पिंग)।

ओड्डिअ वि [**ओड्रीय**] उत्कल-देशीय ; (पिंग)।

ओड्ढण न [**दे**] ओढन, उत्तरीय, चादर ; (दे १, १५५)।

ओड्ढिगा स्त्री [दे] ओढ़नी ; (स २११)।
ओण देखो **ऊण**=ऊन ; (रंभा)।
ओणंद सक [अव+वन्द्] अभिनन्दन करना। कवकृ—**ओणंदिज्जमाण** ; (कप्प)।
ओणम अक [अव+नम्] नीचे नमना। वकृ—**ओणमंत** ; (से १, ४५)। संकृ—**ओणमिअ, ओणमिऊण** ; (आचा २ ; निचू १)।
ओणय वि [अवनत] १ नमा हुआ ; (सुर २, ४६)। २ न. नमस्कार, प्रणाम ; (सम २१)।
ओणल्ल अक [अव+लम्ब्] लटकना। "केसकलावु खंधे ओणल्लइ" (भवि)।
ओणविय वि [अवनमित] नमाया हुआ, अवनत किया हुआ ; (गा ६३५)।
ओणाम सक [अव+नमय्] नीचे नमाना, अवनत करना। ओणामेहि ; (मृच्छ ११०)। संकृ—**ओणामित्ता** ; (निचू)।
ओणामणी स्त्री [अवनामनी] एक विद्या, जिसके प्रभाव से वृक्ष वगैरः स्वयं फलादि देने के लिए अवनत होते हैं ; (उप पृ १५५; निचू १)।
ओणामिय, **ओणाविय** वि [अवनमित] अवनत किया हुआ ; (से ५, ३६ ; ६, ४ ; गा १०३ ; भवि)।
ओणिअत्त अक [अपनि+वृत्] पीछे हटना, वापिस आना। वकृ—**ओणिअत्तंत** ; (से २, ७)।
ओणिअत्त वि [अपनिवृत्त] पीछे हटा हुआ, वापिस आया हुआ ; (से ५, ५८)।
ओणिमिल्ल वि [अवनिमीलित] मुद्रित, मूँदा हुआ ; (से ६,८७ ; १३, ८२)।
ओणियट्ट देखो **ओनियट्ट**; (पि ३३३)।
ओणिव्व पुं [दे] वल्मीक, चींटीओं का खुदा हुआ मिट्टी का ढ़ेर ; (दे १, १५१)।
ओणीवी स्त्री [दे] नीवी, कटी-सूत्र ; (दे १, १५०)।
ओणुणअ वि [दे] अभिभूत, पराभूत ; (दे १, १५८)।
ओण्णिद्द न [औन्निद्रय] निद्रा का अभाव; "ओण्णिद्दं दोव्वल्लं" (काप्र ८५ ; दे १, ११७)।
ओण्णिय वि [और्णिक] ऊन का बना हुआ, ऊर्णा-निर्मित; (कस)।
ओत्तलहअ पुं [दे] विटप ; (दे १, ११६)।
ओत्ताण देखो **उत्ताण**; (विक ३५)।

ओत्थअ वि [अवस्तृत] १ फैला हुआ, प्रसृत ; (से २, ३)। २ आच्छादित, पिहित; "समंतओ ओत्थयं गयणं" (आवम; दे १, १५१ ; स ७७, ३७६)।
ओत्थअ वि [दे] अवसन्न, खिन्न ; (दे १, १५१)।
ओत्थइअ देखो **ओच्छइय**; (गा ५६६; से ८, ६२ ; स ५७६)।
ओत्थर देखो **ओच्छर**। ओत्थरइ ; (पि ५०५; नाट)।
ओत्थर पुं [दे] उत्साह ; (दे १, १५०)।
ओत्थरण न [अवस्तरण] बिछौना ; (पउम ४६,८४)।
ओत्थरिअ वि [अवस्तृत] १ बिछाया हुआ ; २ व्याप्त ; (से ७, ४७)।
ओत्थरिअ वि [दे] १ आक्रान्त ; २ जो आक्रमण करता हो वह ; (दे १, १६६)।
ओत्थल्लपत्थल्ला देखो **उत्थल्लपत्थल्ला**; (दे १, १२२)।
ओत्थाडिय वि [अवस्तृत] बिछाया हुआ ; (भवि)।
ओत्थार सक [अव+स्तारय्] आच्छादित करना। कर्म—ओत्थारिज्जंति ; (स ६६८)।
ओदइय वि [औदयिक] १ उदय, कर्म-विपाक ; (भग ७, १४; विसे २१७४)। २ उदय-निष्पन्न ; (विसे २१७४; सूत्र १,१३)। ३ कर्मोदय-रूप भाव ; "कम्मोदयसहावो सव्वो असुहो सुहो य ओदइओ" (विसे ३४६४)। ४ उदय होने पर होनेवाला ; (विसे २१७४)।
ओदच्च न [औदात्य] उदात्तता, श्रेष्ठता ; (प्राकृ)।
ओदज्ज न [औदार्य] उदारता ; (प्राकृ)।
ओदण न [ओदन] भात, राँधे हुए चावल ; (पण्ह २, ५; ओघ ७१४ ; चारु १)।
ओदरिय वि [औदरिक] पेट-भरा, पेट भरने के लिए ही जो साधु हुआ हो वह ; (निचू १)।
ओदहण न [अवदहन] तप्त किए हुए लोहे के कोश वगैरः से दागना ; (राज)।
ओदारिय न [औदार्य] उदारता ; (प्राकृ)।
ओद्दंपिअ वि [दे] १ आक्रान्त ; २ नष्ट; (दे १, १७१)।
ओद्धंस सक [अव+ध्वंस्] १ गिराना। २ हटाना। ३ हराना। कवकृ—"परवाईहिं अणोक्कंता अण्णउत्थिएहिं अणोद्धंसिज्जमाणा विहरंति" (औप)।
ओधाव सक [अव+धाव्] पीछे दौड़ना। ओधावइ ; (महा)।

ओघुण देखो **अवघुण**। कर्म—ओघुव्वंति; (पि ५३६)। संकृ—**ओघुणिअ**; (पि ५६१)।

ओघूअ वि [**अवधूत**] कम्पित; (नाट)।

ओघूसरिअ वि [**अवधूसरित**] धूसर रंग वाला, हलका पीला रंग वाला; (से १०, २१)।

ओनियट्ट वि [**अवनिवृत्त**] देखो **ओणिअत्त**=अपनिवृत्त; (कप्प)।

ओपल्ल वि [**दे**] अपदीर्ण, कुण्ठित; "तते णं से तेतलिपुत्ते नीलुप्पल जाव असिं खंधे ओहरति, तत्थवि य से धारा ओपल्ला" (णाया १, १४)।

ओप्प वि [**दे**] मृष्ट, ओप दिया हुआ; (षड्)।

ओप्प सक [**अर्पय्**] अर्पण करना। ओप्पेइ; (हे १, ६३)।

ओप्पा स्त्री [**दे**] शाण आदि पर मणि वगैरः का घर्षण करना; (दे १, १४८)।

ओप्पाइय वि [**औत्पातिक**] उत्पात-संबन्धी; (औप)।

ओप्पिअ वि [**अर्पित**] समर्पित; (हे १, ६३)।

ओप्पिअ वि [**दे**] शाण पर घिसा हुआ, "णिवमउडोप्पिअ-पमणह" (दे १, १४८)।

ओप्पील पुं [**दे**] समूह, जत्था; (पाअ)।

ओप्पुंसिअ } देखो **उप्पुसिअ**; (गउड; पि ४८६)।
ओप्पुसिअ }

ओबद्ध वि [**अवबद्ध**] १ बँधा हुआ; २ अवसन्न; (वव १)।

ओबुज्झ सक [**अव+बुध्**] जानना। वकृ—**ओबुज्झमाण**; (आचा)।

ओब्भालण देखो **उब्भालण**; (दे १, १०३)।

ओभग्ग वि [**अवभग्न**] भग्न, नष्ट; (से ३, ६३; १०, २६)।

ओभावणा स्त्री [**अपभ्राजना**] लोक-निन्दा, अपकीर्त्ति; (राज)।

ओभास अक [**अव+भास्**] प्रकाशना, चमकना। वकृ—**ओभासमाण**; (भग ११, ६)। प्रयो—ओभासेइ; (भग); ओभासंति, ओभासेंति; (सुज्ज १६); वकृ—**ओभासमाण**; (सूअ १, १४)।

ओभास सक [**अव+भाष्**] याचना करना, माँगना। कवकृ—**ओभासिज्जमाण**; (निचू २)।

ओभास पुं [**अवभास**] १ प्रकाश; (औप)। २ महाग्रह-विशेष; (ठा २, ३)।

ओभासण न [**अवभासन**] १ प्रकाशन, उद्योतन; (भग ८, ८)। २ आविर्भाव; ३ प्राप्ति; (सूअ १, १२)।

ओभासण न [**अवभाषण**] याचना, प्रार्थना; (वव ८)।

ओभासिय वि [**अवभाषित**] १ याचित, प्रार्थित; (वव ६)। २ न. याचना, प्रार्थना; (बृह १)।

ओभुग्ग वि [**अवभुग्न**] वक्र, वाँका; (णाया १, ८—पत्र १३३)।

ओमेडिय वि [**अवमुक्त**] छुड़ाया हुआ, रहित किया हुआ; "तेणवि कड्ढिऊणालक्खं पिव सूई-ओमेडिओ नियकुक्कुडो" (महा)।

ओम वि [**अवम**] १ कम, न्यून, हीन; (आचा)। २ लघु, छोटा; (ओघ २२३ भा)। ३ न. दुर्भिक्ष, अकाल; (ओघ १३ भा)। °**कोट्ठ** वि [°**कोष्ठ**] ऊनोदर, जिसने कम खाया हो वह; (ठा ४)। °**चेलग**, °**चेलय** वि [°**चेलक**] जीर्ण और मलिन वस्त्र धारण करने वाला; (उत्त १२; आचा)। °**रत्त** पुं [°**रात्र**] १ दिन-क्षय, ज्योतिष की गिनती के अनुसार जिस तिथि का क्षय होता है वह; (ठा ६)। २ अहोरात्र, रात-दिन; (ओघ २८५)।

ओमइल्ल वि [**अवमलिन**] मलिन, मैला; (से २, २५)।

ओमंथ (**दे**) देखो **ओमत्थ**; (पाअ)।

ओमंथिय वि [**दे**] अधोमुख किया हुआ, नमाया हुआ; (णाया १, १)।

ओमंस वि [**दे**] अपसृत, अपगत; (षड्)।

ओमज्जण न [**अवमज्जन**] स्नान-क्रिया; (उप ६४८टी)।

ओमज्जायण पुं [**अवमज्जायन**] ऋषि-विशेष; (जं ७; कस)।

ओमज्जिअ वि [**अवमार्जित**] जिसको स्पर्श कराया गया हो वह, स्पर्शित; (स ५६७)।

ओमट्ठ वि [**अवमृष्ट**] स्पृष्ट, छुआ हुआ; (से ५, २१)।

ओमत्थ वि [**दे**] नत, अधोमुख; (पाअ)।

ओमत्थिय [**दे**] देखो **ओमंथिय**; (ओघ ३८६)।

ओमल्ल न [**निर्माल्य**] निर्माल्य, देवोच्छिष्ट द्रव्य; (षड्)।

ओमल्ल वि [**दे**] घनीभूत; कठिन, जमा हुआ; (षड्)।

ओमाण पुं [**अपमान**] अपमान, तिरस्कार; (उत्त २६)।

ओमाण न [**अवमान**] १ जिससे क्षेत्र वगैरः का माप किया जाता है वह, हस्त, दण्ड वगैरः मान ; (ठा २, ४)। २ जिसका माप किया जाता है वह क्षेत्रादि ; (अणु)।

ओमाल देखो **ओमल्ल**=निर्माल्य ; (हे १, ३८ ; कुमा; वज्जा ८८)।

ओमाल अक [**उप+माल्**] १ शोभना, शोभित होना। २ सक. सेवा करना, पूजना। संकृ—**ओमालिवि**; (भवि)। कवकृ—

"अहवावि भत्तिपणमंततियसवहूसीसकुसुमदामेहिं।
ओमालिज्जंतकमो, नियमा तित्थाहिवो होइ"
(उप ६८६ टी)।

ओमालिअ वि [**उपमालित**] १ शोभित ; २ पूजित, अर्चित ; (भवि)।

ओमालिआ स्त्री [**अवमालिका**] चिमड़ी हुई माला ; (गा १६४)।

ओमास पुं [**अवमर्श**] स्पर्श ; (से ६, ६७)।

ओमिण सक [**अव+मा**] मापना, मान करना। कर्म—ओमिणिज्जइ ; (अणु)।

ओमिय वि [**अवमित**] परिच्छिन्न, परिमित ; (सुज्ज ६)।

ओमील अक [**अव+मील्**] मुद्रित होना, बन्द होना। वकृ—**ओमीलंत**; (से ३, १)।

ओमीस वि [**अवमिश्र**] १ मिश्रित ; २ समीपस्थ। ३ न. सामीप्य, समीपता ;

" सुचिरंपि अच्छमाणो, वेरुलिओ कायमणियओमीसे।
न उवेइ कायभावं, पाहन्नगुणेण नियएण॥"
(ओघ ७७२)।

ओमुग्ग देखो **उम्मुग्ग** ; (पि १०४; २३४)।

ओमुच्छिअ वि [**अवमूर्च्छित**] महा-मूर्छा को प्राप्त; (पउम ७, १५८)।

ओमुद्धग वि [**अवमूर्धक**] अधोमुख; "आमुद्धगा धरणियले पडंति" (सूअ १, ५)।

ओमुय सक [**अव+मुच्**] पहनना। ओमुयइ ; (कप्प)। वकृ—**ओमुयंत** ; (कप्प)। संकृ—**ओमुइत्ता** ; (कप्प)।

ओमोय पुं [**ओमोक**] आभरण, आभूषण ; (भग ११, ११)।

ओमोयर वि [**अवमोदर**] भूख की अपेक्षा न्यून भोजन करनेवाला ; (उत्त ३०)।

ओमोयरिय न [**अवमोदरिक**] १ न्यून-भोजत्व, तप-विशेष ; (आचा)। २ दुर्भिक्ष, अकाल ; (ओघ ७)।

ओमोयरिया स्त्री [**अवमोदरिता, °रिका**] न्युन-भोजन रूप तप ; (ठा ६)।

ओय वि [**ओकस्**] गृह, घर ; (वव ५)।

ओय वि [**ओज**] १ एक, असहाय ; (सूअ १, ४, २, १)। २ मध्यस्थ, तटस्थ, उदासीन ; (वृह १)। ३ पुं. विषम राशि ; (भग २५, ३)।

ओय न [**ओजस्**] १ बल ; (आचा)। २ प्रकाश, तेज ; (चंद ५)। ३ उत्पत्ति-स्थान में आहृत पुद्गलों का समूह ; (पण्ण ८; संग १८२)। ४ आर्तव, ऋतु-धर्म; (ठा ३, ३)।

ओयंसि वि [**ओजस्विन्**] १ बलवान्; २ तेजस्वी ; (सम १५२ ; औप)।

ओयट्टण न [**अपवर्त्तन**] पीछे हटना, वापिस लौटना ; (उप ७६०)।

ओयड्ढ सक [**अप+कृष्**] खींचना। कवकृ—**ओयड्ढियंत** ; (पउम ७१, २६)।

ओयण देखो **ओदण** ; (पउम ६६, १६)।

ओयत्त वि [**अववृत्त**] अवनत, अधोमुख ; (पाअ)।

ओयविय वि [**दे**] परिकर्मित ; (पण्ह १, ४ ; औप)।

ओया स्त्री [**ओजस्**] शक्ति, सामर्थ्य; (णाया १, १०— पत्र १७०)।

ओयाइअ देखो **उवयाइय**; (सुपा ६२५ ; दे ४, २२)।

ओयाय वि [**उपयात**] उपागत, समीप पहुँचा हुआ ; (णाया १, ६ ; निर १, १)।

ओयारग वि [**अवतारक**] १ उतारने वाला ; २ प्रवृत्ति करने वाला ; (सम १०६)।

ओयावइत्ता अ [**ओजयित्वा**] १ बल दिखा कर २ चमत्कार दिखा कर ३ विद्या आदि का सामर्थ्य दिखा कर (जो दीक्षा दी जाय वह) ; (ठा ४)।

ओर वि [**दे**] चारु, सुन्दर ; (दे १, १४६)।

ओरंपिअ वि [**दे**] १ आक्रान्त; २ नष्ट ; (दे १, १७१)।

ओरंपिअ वि [**दे**] पतला किया हुआ; छिला हुआ; (पाअ)।

ओरत्त वि [**दे**] १ गर्विष्ठ, अभिमानी; २ कुसुम्भ से रक्त ; ३ विदारित, काटा हुआ ; (दे १, १६५ ; पाअ)।

ओरल्ली स्त्री [**दे**] लम्बा और मधुर आवाज; (दे १, १५४; पाअ)।

ओरस सक [अव+तॄ] नीचे उतरना। ओरसइ (हे ४, ८५)।
ओरस वि [उपरस] स्नेह-युक्त, अनुरागी ; (ठा १०)।
ओरस वि [औरस] १ स्वोत्पादित पुत्र, स्व-पुत्र; (ठा १०)। २ उरस्य, हृदयोत्पन्न; (जीव ३)।
ओरसिअ वि [अवतीर्ण] उतरा हुआ; (कुमा)।
ओरस्स वि [औरस्य] हृदयोत्पन्न, आभ्यन्तरिक; (प्रारू)।
ओराल देखो **उराल**=उदार; (ठा ४; १०; जीव १)।
ओराल देखो **उराल** (दे); (चंद १)।
ओराल न [औदार] नीचे देखो ; (विसे ६३१)।
ओरालिय न [औदारिक] १ शरीर विशेष, मनुष्य और पशुओं का शरीर; (औप)। २ वि. शोभायमान, शोभा वाला; (पाअ)। ३ औदारिक शरीर वाला; (विसे ३७५)। °**णाम** न [°नामन्] औदारिक शरीर का हेतु-भूत कर्म; (कम्म १)।
ओरालिय वि [दे] १ पोंछा हुआ; "मुहि करयलु देवि पुणु ओरालिउ मुहकमलु" (भवि)। २ फैलाया हुआ, प्रसारित "दसदिसि वहकयंबु ओरालिओ" (भवि)।
ओराली देखो **ओरल्ली**; (सुर ११, ८६)।
ओरिंकिय न [अवरिङ्कित] महिष का आवाज; "कत्थइ महिसोरिंकिय कत्थइ डुहुडुहुडुहुंतनइसलिलं" (पउम ६४, ४३)।
ओरिल्ल पुं [दे] लम्बा काल, दीर्घ काल; (दे १, १५५)।
ओरुंज न [दे] क्रीडा-विशेष; (दे १, १५६)।
ओरुंभिअ वि [उपरुद्ध] आवृत्त, आच्छादित; (गा ६१४)।
ओरुण्ण वि [अवरुदित] रोया हुआ; (गा ५३८)।
ओरुद्ध वि [अवरुद्ध] रुका हुआ, बंद किया हुआ; (गा ८००)।
ओरुभ सक [अव+रुह्] उतरना। वकृ—**ओरुभमाण**; (कस)।
ओरुम्मा अक [उद्+वा] सूखना, सूख जाना। ओरुम्माइ; (हे ४, ११)।
ओरुह देखो **ओरुभ**। वकृ—**ओरुहमाण**; (संथा ६३; कस)।
ओरुहण न [अवरोहण] नीचे उतरना; (पउम २६, ५५; विसे १२०८)।
ओरोध देखो **ओरोह**=अवरोध; (विपा १, ६)।
ओरोह देखो **ओरुभ**। वकृ—**ओरोहमाण**; (कस; ठा ५)।
ओरोह पुं [अवरोध] १ अन्तःपुर, जनानखाना; (औप)। २ अन्तःपुर की स्त्री; (सुर १, १४३)। ३ नगर के दरवाजा का अवान्तर द्वार ; (णाया १, १; औप)। ४ संघात, समूह; (राज)।
ओलअ पुं [दे] १ श्येन पक्षी, बाज पक्षी; २ अपलाप, निह्नव; (दे १, १६०)।
ओलअणी स्त्री [दे] नवोढा, दुलहिन; (दे १, १६०)।
ओलइअ वि [दे. अवलगित] १ शरीर में सटा हुआ, परिहित; (दे १, १६२; पाअ)। २ लगा हुआ; (से १, १६२)।
ओलइणी स्त्री [दे] प्रिया, स्त्री; (दे १, १६०)।
ओलंड सक [उत्+लङ्घ्] उल्लंघन करना। ओलंडेंति; (णाया १, १—पत्र ६१)।
ओलंब देखो **अवलंब**=अव+लम्ब्। संकृ—**ओलंबिऊण**; (महा)।
ओलंब पुं [अवलम्ब] नीचे लटकना; (औप; स्वप्न ७३)।
ओलंबण न [अवलम्बन] सहारा, आश्रय। °**दीव** पुं [°दीप] शृङ्खला-बद्ध दीपक; (राज)।
ओलंबिय वि [अवलम्बित] आश्रित, जिसका सहारा लिया गया हो वह; (निचू १)। २ लटकाया हुआ; (औप)।
ओलंबिय वि [उल्लंबित] लटकाया हुआ; (सूअ २,२ औप)।
ओलंभ पुं [उपालम्भ] उलहना; "अप्पोलंभणिमित्तं पढमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ति बेमि" (णाया १, १)।
ओलक्खिअ वि [उपलक्षित] पहिचाना हुआ; (पउम १३, ४२; सुपा २५४)।
ओलग्ग सक [अव+लग्] १पीछे लगना। २ सेवा करना। ओलग्गंति; (पि ४८८)। हेकृ—**ओलग्गिउं** ; (सुपा २३४; महा)। प्रयो, संकृ—**ओलग्गाविवि**; (सण)।
ओलग्ग वि [अवरुग्ण] १ ग्लान, बिमार; २ दुर्बल, निर्बल; (णाया १, १—पत्र २८ टी; विपा १, २)।
ओलग्ग वि [अवलग्न] पीछे लगा हुआ, अनुलग्न; (महा)।
ओलग्ग [दे] देखो **ओलुग्ग**; (दे १, १६४)।
ओलग्गा स्त्री [दे] सेवा, भक्ति, चाकरी ; "करेउ देवो पसायं मम ओलग्गाए" (स ६३६)। "ओलग्गाए वेलति जंपिउ निग्गओ खुज्जो" (धम्म ८ टी)।

ओलग्गि वि [अवलागिन्] सेवा करने वाला। स्त्री-°णी; (रंभा)।
ओलग्गिअ वि [अवलग्न] सेवित ; (वज्जा ३२)।
ओलावअ पुं [दे] श्येन, बाज पक्षी ; (दे १, १६० ; स २१३)।
ओलि देखो **ओली**=आली ; (हे १, ८३)।
ओलिंदअ पुं [अलिन्दक] बाहर के दरवाजे का प्रकोष्ठ ; (गा २५४)।
ओलिंप सक [अव+लिप्] लीपना, लेप लगाना। वकृ—**ओलिंपमाण**; (राज)।
ओलिंभा स्त्री [दे] उपदेहिका, दिमक ; (दे १, १५३ ; गउड)।
ओलिज्झमाण देखो **ओलिह**।
ओलित्त वि [अवलिप्त, उपलिप्त] लीपा हुआ, कृतलेप ; (पण्ह १, ३ ; उव ; पाअ; दे १, १५८; औप)।
ओलित्ती स्त्री [दे] खड्ग आदि का एक दोष; (दे १, १५६)।
ओलिप्प न [दे] हास, हाँसी ; (दे १, १५३)।
ओलिप्पंती स्त्री [दे] खड्ग आदि का एक दोष ; (दे १, १५६)।
ओलिह सक [अव+लिह्] आस्वादन करना। कवकृ—**ओलिज्झमाण** ; (कप्प)।
ओली सक [अव+ली] १ आगमन करना। २ नीचे आना। ३ पीछे आना। "नीयं च काया ओलिंति" (विसे २०६४)।
ओली स्त्री [आली] पंक्ति, श्रेणी ; (कुमा)।
ओली स्त्री [दे] कुल-परिपाटी, कुलाचार ; (दे १, १४८)।
ओलुंकी स्त्री [दे] बालकों की एक प्रकार की क्रीडा; (दे १, १५३)
ओलुंड सक [वि+रेचय्] झरना, टपकना, बाहर निकालना। ओलुंडइ ; (हे ४, २६)।
ओलुंडिर वि [विरेचयितृ] झरने वाला ; (कुमा)।
ओलुंप पुं [अवलोप] मसलना, मर्दन करना ; (गउड)।
ओलुंपअ पुं [दे] तापिका-हस्त, तवा का हाथा ; (दे १, १६३)।
ओलुग्ग वि [अवरुग्ण] १ रोगी, बीमार ; (पाअ)। २ भग्न, नष्ट ; (पण्ह १, १)। "सुक्का भुक्खा निम्मंसा ओलुग्गा ओलुग्गसरीरा" (निर १, १)।
ओलुग्ग वि [दे] १ सेवक, नौकर ; २ निस्तेज ; निर्बल, बल-हीन; (दे १, १६४)। ३ निश्छाय, निस्तेज; (सुर २ १०२ ; दे १, १६४ ; स ४६६; ५०४)।
ओलुग्गाविय वि [दे] १ बीमार; २ विरह-पीडित ; (वज्जा ८६)।
ओलुट्ट वि [दे] १ असंघटमान, असंगत ; २ मिथ्या, असत्य; (दे १, १६४)।
ओलेहड वि [दे] १ अन्यासक्त ; २ तृष्णा-पर ; ३ प्रवृद्ध ; (दे १, १७२)।
ओलोअ देखो **अवलोअ**। वकृ—**ओलोअंत, ओलोपमाण** ; (मा ५; गाया १, १६ ; १, १)।
ओलोट्ट सक [अप+लुट्] पीछे लौटना। वकृ—**ओलोट्टमाण** ; (राज)।
ओलोयण न [अवलोकन] १ देखना। २ दृष्टि, नजर; (उप पृ १२७)।
ओलोयणा स्त्री [अवलोकना] १ देखना। २ गवेषणा, खोज ; (वव ४)।
ओल्ल पुं [दे] १ पति, स्वामी ; २ दण्ड-प्रतिनिधि पुरुष, राज-पुरुष विशेष ; (पिंग)।
ओल्ल देखो **उल्ल**=आर्द्र ; (हे १, ८२ ; काप्र १७२)।
ओल्ल देखो **उल्ल**=आर्द्रय्। ओल्लेइ ; (पि १११)। वकृ—**ओल्लंत**; (से १३, ६६)। कवकृ—**ओल्लिज्जंत**; (गा ६२१)।
ओल्लण न [आर्द्रयण] गीला करना, भिजाना ; (पि १११)।
ओल्लणी स्त्री [दे] मार्जिता, इलायची; दालचीनी आदि मसाला से संस्कृत दधि ; (दे १,१५४)।
ओल्लरण न [दे] स्वाप, सोना ; (दे १, १६३)।
ओल्लरिअ वि [दे] सुप्त, सोया हुआ ; (दे १, १६३ ; सुपा ३१२)।
ओल्लविद (शौ) नीचे देखो ; (पि १११; मृच्छ १०५)।
ओल्लिअ वि [आर्द्रित] आर्द्र किया हुआ ; (गा ३३० ; सण)।
ओल्हव सक [वि+ध्यापय्] बुझाना, ठंढ़ा करना। कवकृ—**ओल्हविज्जंत** ; (स ३६२)। कृ—**ओल्हवेयव्व**; (स ३६२)।
ओल्हविअ [दे] देखो **उल्हविय**; (सुर १०, १४६)।

ओव न [दे] हाथी वगैरः को बाँधने के लिए किया हुआ गर्त्त ; (दे १, १४६)।

ओवअण न [अवपतन] नीचे गिरना, अधःपात ; (से ६, ७७ ; १३, २२)।

ओवइणी स्त्री [अवपातिनी] विद्या-विशेष, जिसके प्रभाव से स्वयं नीचे आता है या दूसरे को नीचे उतारता है ; (सुअ २, २)।

ओवइय वि [अवपतित] १ अवतीर्ण, नीचे आया हुआ ; (से ६, २८; औप)। २ आ पड़ा हुआ, आ डटा हुआ ; (से ६, २६)। ३ न. पतन ; (औप)।

ओवइय पुंस्त्री [दे] तीन इन्द्रिय वाला एक क्षुद्र जन्तु ; "से किं तं तेइंदिया ? तेइंदिया अणेगविहा पएणत्ता, तं जहा ;— ओवइया रोहिणीया हत्थिसोंडा" (जीव १)।

ओवइय वि [औपचयिक] उपचित, परिपुष्ट ; (राज)।

ओवगारिय वि [औपकारिक] उपकार करने वाला ; (भग १३, ६)।

ओवग्ग सक [उप+वल्ग्, आ+क्रम्] १ आक्रमण करना; २ पराभव करना। ओवग्गइ; (भवि)। संकृ—**ओवग्गिवि**; (भवि)।

ओवग्गहिय वि [औपग्रहिक] जैन साधुओं के एक प्रकार का उपकरण, जो कारण-विशेष से थोड़े समय के लिए लिया जाता है ; (पव ६०)।

ओवग्गिअ वि [दे. उपवल्गित] १ अभिभूत; २ आक्रान्त; (से ६, ३० ; पाअ; सुर १३, ४२)।

ओवघाइय वि [औपघातिक] उपघात करने वाला, पीड़ा उत्पन्न करने वाला ; "सुयं वा जइ वा दिट्ठं न लविज्जोवघाइयं" (दस ८)।

ओवच्च सक [उप+व्रज्] पास जाना। "सुहाए ओवच्च वासहरं" (भवि)।

ओवट्ट अक [अप+वृत्] १ पीछे हटना। २ कम होना, ह्रास-प्राप्त होना। वकृ—**ओवट्टंत** ; (उप ७६२)।

ओवट्ट पुं [अपवर्त्त] १ ह्रास, हानि ; २ भागाकार ; (विसे २०६२)।

ओवट्टणा स्त्री [अपवर्त्तना] भागाकार, भाग-हरण ; (राज)।

ओवट्टिअ न [दे] चाटु, खुशामद ; (दे १, १६२)।

ओवट्ठ वि [अववृष्ट] बरसा हुआ, जिसने वृष्टि की हो वह ; (से ६, ३४)।

ओवट्ठ पुं [दे. अववर्ष] १ वृष्टि, वारिस ; (से ६, २५)। २ मेघ-जल का सिञ्चन; (दे १, १५२)।

ओवट्ठिअ वि [औपस्थितिक] उपस्थिति के योग्य, नौकर ; (प्रयौ ११)।

ओवड अक [अव+पत्] गिरना, नीचे पड़ना। वकृ— **ओवडंत** ; (से १३, २८)।

ओवडण न [अवपतन] १ अधःपात ; २ झम्पा-पात ; (से २, ३२)।

ओवड्ढ वि [उपार्ध] आधे के करीब। °**मोयरिया** स्त्री [°वमोदरिका] बारह कवल का ही आहार करना, तप-विशेष ; (भग ७, १)।

ओवड्ढि स्त्री [अपवृद्धि] ह्रास ; (निचू २०)।

ओवड्ढी स्त्री [दे] ओढ़नी का एक भाग ; (दे १, १५१)।

ओवण न [उपवन] बगीचा, आराम ; (कुमा)।

ओवणिहिय पुं [औपनिहित, औपनिधिक] भिक्षाचर-विशेष; समीपस्थ भिक्षा को लेने वाला साधु ; (ठा ५ ; औप)।

ओवणिहिया स्त्री [औपनिधिकी] आनुपूर्वी-विशेष, अनुक्रम-विशेष ; (औप)।

ओवत्त सक [अप+वर्त्तय्] १ उलटा करना। २ फिराना; घुमाना। ३ फेंकना। संकृ—**ओवत्तिय** ; (दस ५)। कृ—**ओवत्तेअव्व** ; (से १०, ५०)।

ओवत्त वि [अपवृत्त] फिराया हुआ ; (से ६, ६१)।

ओवत्तिय वि [अपवर्त्तित] १ घुमाया हुआ। २ क्षिप्त ; (णाया १, १—पत्र ४७)।

ओवत्थाणिय वि [औपस्थानिक] सभा का कार्य करने वाला नौकर। स्त्री—°**या** ; (भग ११, ११)।

ओवमिय वि [औपमिक] उपमा-संबन्धी ; (अणु)।

ओवमिय } न [औपम्य] १ उपमा ; (ठा ८; अणु)।
ओवम्म } २ उपमान प्रमाण ; (सूअ १, १०)।

ओवय सक [अव+पत्] १ नीचे उतरना। २ आ पड़ना। वकृ—**ओवयंत, ओवयमाण**; (कप्प; स ३७०; पि ३९६ ; णाया १, १; ६)।

ओवयण न [दे. अवपदन] प्रोङ्खणक, चुमना ; (णाया १, १—पत्र ३६)।

ओवयाइयय वि [औपयाचितक] मनौती से प्राप्त किया हुआ, मनौती से मिला हुआ ; (ठा १०)।

ओवयारिय वि [**औपचारिक**] उपचार-संबन्धी ; (पंचा ६ ; पुप्फ ४०६)।

ओवर पुं [**दे**] निकर, समूह ; (दे १, १५७)।

ओववाइय वि [**औपपातिक**] १ जिसकी उत्पत्ति होती हो वह ; (पंच १)। २ पुं. संसारी, प्राणी ; (आचा)। ३ देव या नारक जीव ; (दस ४)। ४ न. देव या नारक जीव का शरीर ; (पंच १)। ५ जैन आगम-ग्रन्थ विशेष, औपपातिक सूत्र ; (औप)।

ओवसग्गिय वि [**औपसर्गिक**] १ उपसर्ग से संबन्ध रखने वाला, उपद्रव—समर्थ रोगादि। २ शब्द-विशेष, प्र परा आदि अव्यय रूप शब्द ; (अणु)।

ओवसमिअ वि [**औपशमिक**] १ उपशम; २ उपशम से उत्पन्न ; ३ उपशम होने पर होने वाला; (विसे २१७४)।

ओवसेर न [**दे**] १ चन्दन, सुगन्धि काष्ठ-विशेष; २ वि. रति-योग्य ; (दे १, १७३)।

ओवह सक [**अव+वह्**] १ बह जाना, बह चलना। २ डूबना। कवकृ—**ओवुब्भमाण**; (कस)।

ओवहारिअ वि [**औपहारिक**] उपहार-संबन्धी ; (विक ७५)।

ओवहिय वि [**औपधिक**] माया से गुप्त विचरने वाला ; (णाया १, २)।

ओवाअअ पुं [**दे**] आपातप, जल-समूह की गरमी; (षड्)।

ओवाइय देखो **ओववाइय** ; (राज)।

ओवाइय देखो **उवयाइय** ; (सुपा ११३)।

ओवाइय वि [**आवपातिक**] सेवा करने वाला ; (ठा १०)।

ओवाडण न [**अवपाटन**] विदारण, नाश ; (ठा २, ४)।

ओवाडिय वि [**अवपाटित**] विदारित ; (औप)।

ओवाय सक [**उप+याच्**] मनौती करना। वकृ—**ओवायंत, ओवाइयमाण** ; (सुर १३, २०६ ; णाया १, ८—पत्र १३४)।

ओवाय पुं [**अवपात**] १ सेवा, भक्ति ; (ठा ३, २ ; औप)। २ गर्त, खड्डा ; (पण्ह १, १)। ३ नीचे गिरना ; (पण्ह १, ४)।

ओवाय वि [**औपाय**] उपाय-जन्य, उपाय-संबन्धी ; (उत्त १, २८)।

ओवार सक [**अप+वारय्**] आच्छादन करना, ढकना। संकृ—**ओवारिअ** ; (अभि २१३)।

ओवारि न [**दे**] धान्य भरने का एक जात का लम्बा कोठा, गोदाम ; (राज)।

ओवारिअ वि [**दे**] ढेर किया हुआ, राशी-कृत ; (स ४८७; ४८)।

ओवारिअ वि [**अपवारित**] आच्छादित, ढका हुआ ; (मै ६१)।

ओवास अक [**अव+काश्**] शोभना, विराजना। ओवासइ ; (प्राप)।

ओवास पुं [**अवकाश**] अवकाश, खाली जगह; (पाअ; प्राप्र; से १, ५४)।

ओवास पुं [**उपवास**] उपवास, भोजनाभाव ; (पउम ४२, ८६)।

ओवाह सक [**अव+गाह्**] अवगाहना। ओवाहइ ; (प्राप्र)।

ओवाहिअ वि [**अपवाहित**] १ नीचे गिराया हुआ ; (से ६, १६ ; १३, ७२)। २ घुमा कर नीचे डाला हुआ; (से ७, ५५)।

ओविअ वि [**दे**] १ आरोपित, अध्यासित; २ मुक्त, परित्यक्त; ३ हृत, छीना हुआ ; ४ न. खुशामद ; ५ रुदित, रोदन ; (दे १, १६७)। ६ वि. परिकर्मित, संस्कारित; (कप्प)। ७ खचित, व्याप्त ; (आवम)। ८ उज्ज्वालित, प्रकाशित ; (णाया १, १६)। ९ विभूषित, शृंगारित ; (प्राप)। देखो **उविय**।

ओविद्ध वि [**अपविद्ध**] १ प्रेरित, आहत ; (से ७, १२)। २ नीचे गिराया हुआ ; (से १३, २६)।

ओवील सक [**अव+पीडय्**] पीडा पहुँचाना, मार-पीट करना। वकृ—**ओवीलेमाण** ; (णाया १, १८—पत्र २३६)।

ओवीलय देखो **उव्वीलय** ; (पण्ह १, ३)।

ओवुब्भमाण देखो **ओवह**।

ओवेहा स्त्री [**उपेक्षा**] १ उपदर्शन, देखना ; २ अवधीरण ; "संजयगिहिचोयणचोयणे य वावारओवेहा" (ओघ १७१ भा)।

°**ओव्वण** देखो **जोव्वण** ; (से ७, ६२)।

ओ॰वत्त अक [**अप+वृत्**] १ पीछे फिरना, लौटना। २ अवनत होना। संकृ—**ओवत्तिऊण** ; (ओघभा ३० टी)।

ओव्वत्त वि [**अपवृत्त**] पिछे फिरा हुआ ; २ नमा हुआ ; अवनत ; (से ८, ८४) ।

ओस पुं [**दे**] देखो **ओसा** ; (राज) । °**चारण** पुं [°**चारण**] हिम के अवलम्बन से जाने वाला साधु ; (गच्छ २) ।

ओसक्क अक [**अव+ष्वष्क्**] १ पीछे हटना, अपसरण करना । २ भागना, पलायन करना । ३ उदीरण करना, उत्तेजित करना । ओसक्कइ; (पि ३०२; ३१५) । वकृ—**ओसक्कंत, ओसक्कमाण** ; (से ५, ७३; स ६४) । संकृ—**ओसक्कइत्ता, ओसक्किय, ओसक्किऊण**; (ठा ८; दस ४; सुर २, १५) ।

ओसक्क वि [**दे. अवष्वष्कित**] अपसृत, पीछे हटा हुआ; (दे १, १४६ ; पाअ) ।

ओसक्कण न [**अवष्वष्कण**] १ अपसरण ; (स ६३) । २ नियत काल से पहले करना ; (धर्म ३) । ३ उत्तेजन ; (बृह २) ।

ओसट्ट वि [**दे**] विकसित, प्रफुल्लित ; (षड्) ।

ओसडिअ वि [**दे**] आकीर्ण, व्याप्त ; (षड्) ।

ओसढ न [**औषध**] दवा, इलाज, भैषज; (हे १, २२७)।

ओसढिअ वि [**औषधिक**] वैद्य, चिकित्सक ; (कुमा) ।

ओसण न [**दे**] उद्वेग, खेद ; (दे १, १५५) ।

ओसण्ण वि [**अपसन्न**] १ खिन्न ; (गा ३८२ ; से १३, ३०) । २ शिथिल, ढीला ; (वव ३) । देखो **ओसन्न** ।

ओसण्ण वि [**दे**] त्रुटित, खण्डित ; (दे १, १५६; षड्) ।

ओसण्णं अ [**दे**] प्रायः, बहुत कर ; (कप्प) ।

ओसत्त वि [**अवसक्त**] संबद्ध, संयुक्त; (णाया १, ३; स ४४६) ।

ओसधि देखो **ओसहि** ; (ठा २, ३) ।

ओसद्ध वि [**दे**] पातित, गिराया हुआ ; (पाअ) ।

ओसन्न देखो **ओसण्ण**=अवसन्न ; (सुर ४, ३४ ; णाया १, ५ ; सं ६; पुप्फ २१) । ३ न. एकान्त ; "ओसन्ने देइ गेण्हइ वा " (उव) ।

ओसन्नं देखो **ओसण्णं** ; (कम्म १, १३ ; विसे २२७५) ।

ओसप्पिणी स्त्री [**अवसर्पिणी**] दश कोटाकोटि सागरोपम-परिमित काल-विशेष, जिसमें सर्व पदार्थों के गुणों की क्रमशः हानि होती जाती है ; (सम ७२ ; ठा १) ।

ओसमिअ वि [**उपशमित**] शान्ति-प्राप्त ; (सम ३७) ।

ओसर अक [**अव+तॄ**] १ नीचे आना । २ अवतरना, जन्म लेना । ओसरइ ; (षड्) ।

ओसर अक [**अप+सृ**] अपसरण करना, पीछे हटना । २ सरकना, खिसकना, फिसलना । ओसरइ ; (महा; काल) । वकृ—**ओसरंत** ; (गा १८; ३६३ ; से ६, २६; ६, ८२ ; १२ , ६; से ६३) ।

ओसर सक [**अव+सृ**] आना, तीर्थंकर आदि महापुरुष का पधारना ; (उप ७२८ टी)

ओसर पुं [**अवसर**] १ अवसर, समय; (सुअ १, २)। २ अन्तर ; (राज) ।

ओसरण न [**अवसरण**] १ जिन-देव का उपदेश-स्थान ; (उप १३३ ; रयण १) । २ साधुओं का एकत्रित होना; (सुअ १, १२) ।

ओसरण न [**अपसरण**] १ हटना, दूर होना । २ वि. दूर करने वाला ; "बहुपावकम्मओसरणं" (कुमा १) ।

ओसरिअ वि [**दे**] १ आकीर्ण, व्याप्त ; २ आँख के इसारे से संज्ञित ; (षड्) । ३ अधोमुख, अवनत ; ४ न. आँख का इसारा ; (दे १, १७१) ।

ओसरिअ वि [**अवसृत**] आगत, पधारा हुआ ; (उप ७२८ टी) ।

ओसरिअ वि [**अपसृत**] १ पीछे हटा हुआ ; (पउम १६, २३ ; पाअ ; गा ३५१) । २ न. अपसरण ; (से २, ८) ।

ओसरिअ वि [**उपसृत**] संमुखागत, सामने आया हुआ ; (पाअ) ।

ओसरिआ स्त्री [**दे**] अलिन्दक, बाहर के दरवाजे का प्रकोष्ठ; (दे १, १६१) ।

ओसव पुं [**उत्सव**] उत्सव, आनन्द-क्षण ; (प्राप्र) ।

ओसविय वि [**उच्छ्रयित**] ऊँचा किया हुआ ; (पउम ८, २६६) ।

ओसव्विअ वि [**दे**] १ शोभा-रहित ; २ न. अवसाद, खेद ; (दे १, १६८) ।

ओसह न [**औषध**] दवाई, भैषज ; (औप ; स्वप्न ५६) ।

ओसहि° ही स्त्री [**ओषधि**] १ वनस्पति ; (पण्ण १) । २ नगरी-विशेष ; (राज) । °**महिहर** पुं [°**महिधर**] पर्वत-विशेष ; (अच्चु ४४) ।

ओसहिअ वि [**आवसथिक**] चन्द्रार्व-दानादि व्रत को करने वाला ; (गा ३४६) ।

ओसा स्त्री [**दे**] १ ओस, निशा-जल ; (जी ५ ; आचा ; विसे २५७६) । २ हिम, बरफ ; (दे १, १६४) ।

ओसाअ पुं [**दे**] प्रहार की पीड़ा ; (दे १, १५२) ।

ओसाअ पुं [**अवश्याय**] हिम, ओस ; (से १३, ५२ ; दे ८, ५३) ।

ओसाअंत वि [**दे**] १ जँभाई खाता हुआ आलसी; २ बैठता ; ३ वेदना-युक्त ; (दे १, १७०) ।

ओसाअण वि [**दे**] १ महीशान, जमीन का मालिक ; २ आपोशान ; (षड्) ।

ओसाण न [**अवसान**] १ अन्त ; (ठा ४) । २ समीपता, सामीप्य ; (सूत्र १, ४) ।

ओसाणिहाण वि [**दे**] विधि-पूर्वक अनुष्ठित ; (दे १, १६३) ।

ओसायण न [**अवसादन**] परिशाटन, नाश; (विसे) ।

ओसार सक [**अप+सारय्**] दूर करना । ओसारेहि; (स ४०८) । कर्म—ओसारिज्जंतु; (स ४१०) । संकृ— **ओसारिवि** ; (भवि) ।

ओसार पुं [**दे**] गो-वाट, गो-वाड़ा ; (दे १, १४६) ।

ओसार पुं [**अपसार**] अपसरण; (से १३, १४) ।

ओसार देखो **ऊसार**=उत्सार; (भवि) ।

ओसार पुं [**अवसार**] कवच, वख्तर ; (से १२, ५६) ।

ओसारिअ वि [**अपसारित**] दूर किया हुआ, अपनीत ; (गा ६६; पउम २३, ८) ।

ओसारिअ वि [**अवसारित**] अवलम्बित, लटकाया हुआ ; (औप) ।

ओसास (अप) देखो **ओवास**=अवकाश ; (भवि) ।

ओसिअ वि [**दे**] १ अबल, बल-रहित; (दे १, १५०) । २ अपूर्व, असाधारण; (षड्) ।

ओसिअंत वकृ [**अवसीदत्**] पीड़ा पाता हुआ ; (हे १, १०१ ; से ३, ५१) ।

ओसिंघिअ वि [**दे**] घ्रात, सूँघा हुआ ; (दे १, १६२ ; पाअ) ।

ओसिंचित्तु वि [**अपसेचयितृ**] अपसेक करने वाला ; (सुअ २, २) ।

ओसिक्खिअ न [**दे**] १ गति-व्याघात ; २ अरति-निहित ; (दे १, १७३) ।

ओसित्त वि [**दे**] उपलिप्त ; (दे १, १५८) ।

ओसिय वि [**अवसित**] १ पर्यवसित ; २ उपशान्त ; (सूअ १, १३) । ३ जित, पराभूत ; (विसे) ।

ओसिरण न [**दे**] व्युत्सर्जन, परित्याग ; (पड्) ।

ओसीअ वि [**दे**] अधो-मुख, अवनत ; (दे १, १५८) ।

ओसीर देखो **उसीर** ; (पण्ह २, ५) ।

ओसीस अक [**अप+वृत्**] १ पीछे हटना ; २ घूमना, फिरना । संकृ—**ओसीसिऊण** ; (दे १, १५२) ।

ओसीस वि [ ] अपवृत्त ; (दे १, १५२) ।

ओसुअ वि [**उत्सुक**] उत्कण्ठित ; (प्राप्र) ।

ओसुंखिअ वि [**दे**] उत्प्रेक्षित, कल्पित ; (दे १, १६१) ।

ओसुंभ सक [**अव+पातय्**] १ गिरा देना । २ नष्ट करना । कर्म—ओसुब्भंति ; (स ७, ६१) । वकृ—**ओसुंभ** (सं ४, ५४) । कवकृ—**ओसुब्भंत** ; (पि ५३५) ।

ओसुक्क सक [**तिज्**] तीक्ष्ण करना, तेज करना । ओसुक्कइ ; (हे ४, १०४) ।

ओसुक्क वि [**अवशुष्क**] सूखा हुआ ; (पउम ५३, ७६ ; दे ५, १४) ।

ओसुक्ख अक [**अव+शुष्**] सूखना । वकृ—**ओसुक्खंत**; (से ६, ६३) ।

ओसुद्ध वि [**दे**] १ विनिपतित ; (दे १, १५७) । २ विनाशित ; (से १३, २२) ।

ओसुब्भंत देखो **ओसुंभ** ।

ओसुय न [**औत्सुक्य**] उत्सुकता, उत्कण्ठा ; (औप; पि ३२७ ए) ।

ओसोयणी, **ओसोवणिया**, **ओसोवणी** स्त्री [**अवस्वापनी**] विद्या-विशेष, जिसके प्रभाव से दूसरे को गाढ़ निद्राधीन किया जा सकता है ; (सुपा २२० ; णाया १, १६ ; कप्प) ।

ओस्सा [**दे**] देखो **ओसा** ; (कस) ।

ओस्साड पुं [**अवशाट**] नाश, विनाश ; (सण) ।

ओह देखो **ओघ** ; (पण्ह १, ४ ; गा ५१८ ; निचू १६; ओघ २; धम्म १० टी) । ५ सूत्र, शास्त्र-सम्बन्धी वाक्य ; (विसे ६५७) ।

ओह सक [**अव+तॄ**] नीचे उतरना । ओहइ; (हे ४, ८५) ।

ओहंक पुं [**दे**] हास, हाँसी ; (दे १, १५३) ।

ओहंजलिया स्त्री [दे] क्षुद्र जन्तु-विशेष, चतुरिन्द्रिय जीव-विशेष ; (जीव १)।

ओहंतर वि [ओघतर] संसार पार करने वाला (मुनि) ; (आचा)।

ओहंस पुं [दे] १ चन्दन ; २ जिस पर चन्दन घिसा जाता है वह शिला, चन्द्रौटा; (दे १, १६८)।

ओहट्ट अक [अप+घट्ट्] १ कम होना, ह्रास पाना। २ पीछे हटना। ३ सक. हटाना, निवृत्त करना। ओहट्टइ ; (हे ४, ४१९) । वकृ—**ओहट्टंत**; (से ८, ६०; सुपा २३३)।

ओहट्ट पुं [दे] १ अवगुण्ठन ; २ नीवी, कटी-वस्त्र ; ३ वि. अपसृत, पीछे हटा हुआ ; (दे १, १६६ ; भवि)।

ओहट्ट } वि [अपघट्टक) निवारक, हटाने वाला, निषेधक;
ओहट्टय } (विपा १, २ ; णाया १, १६; १८)।

ओहट्टिअ वि [दे] दूसरे को दबा कर हाथ से गृहीत ; (दे १, १५९)।

ओहड्ड पुं [दे] हास, हाँसी ; (दे १, १५३)।

ओहड्ड वि [अवघृष्ट] घिसा हुआ ; (पउम ३७, ३)।

ओहडणी स्त्री [दे] अर्गला ; (दे १, १६०)।

ओहत्त वि [दे] अवनत ; (दे १, १५६)।

ओहत्थिअ वि [अपहस्तित] परित्यक्त, दूर किया हुआ ; (मै ३५)।

ओहय वि [उपहत] उपघात-प्राप्त ; (णाया १, १)।

ओहय वि [अवहत] विनाशित ; (औप)।

ओहर सक [अप+हृ] अपहरण करना। कर्म—ओहरिआमि ; (पि ६८)।

ओहर अक [अव+हृ] टेढ़ा होना, वक्र होना। २ सक. उलटा करना। ३ फिराना। संकृ—**ओहरिय** ; (आचा २, १, ७)।

ओहर न [उपगृह] छोटा गृह, कोठरी ; (पण्ह १, १)।

ओहरण न [अपहरण] उठा ले जाना, अपहार ; (उप ६७९)।

ओहरण न [दे] १ विनाशन, हिंसा ; २ असंभव अर्थ की संभावना ; (दे १, १७४)। ३ अस्त्र, हथियार ; (स ५३१; ६३७)। ४ वि. आघ्रात ; (षड्)।

ओहरिअ वि (दे. अपहृत) १ फेंका हुआ; (से १३, ३)। २ नीचे गिराया हुआ ; (से ३, ३७)। ३ उतारा हुआ, उत्तारित ; (ओघ ८०६)। ४ अपनीत ; " ओहरिअभरुव्व भारवहो " (श्रा ४०)।

ओहरिस वि [दे] १ आघ्रात, सूँघा हुआ ; २ पुं. चन्दन घिसने की शिला, चन्द्रौटा; (दे १, १६९)।

ओहल देखो उऊखल; (हे १, १७१ ; कुमा)।

ओहलिय वि [अवखलित] निस्तेज किया हुआ, मलिन किया हुआ; "अंसुजलोहलियगंडयलो" (सुर १, १८६ ; सण)।

ओहली स्त्री [दे] ओघ, समूह ; (सुपा ३६४)।

ओहस सक [उप+हस्] उपहास करना। ओहसइ ; (नाट)। कवकृ –**ओहसिज्जंत** ; (से १५, १०)। कृ—**ओहसणिज्ज** ; (स ८)।

ओहसिअ न [दे] १ वस्त्र, कपड़ा ; २ वि. धूत, कम्पित ; (दे १, १७३)।

ओहसिअ वि [उपहसित] जिसका उपहास किया गया हो वह ; (गा ६०; दे १, १७३ ; स ४४८)।

ओहाइअ वि [दे] अधो-मुख ; (दे १, १५८)।

ओहाडण न [अवघाटन] ढकना, पिधान ; (वव १)।

ओहाडणी स्त्री [दे. अवघाटनी] १ पिधानी ; (दे १, १६१)। २ एक प्रकार की ओढनी ; (जीव ३)।

ओहाडिय वि [अवघाटित] १ पिहित, बन्द किया हुआ; "वइरामयकवाडोहाडियाओ" (जं १—पत्र ७१)। २ स्थगित ; (आव ५)।

ओहाण न [अवधान] उपयोग, ख्याल ; (आचा)।

ओहाण न [अवधावन] अवक्रमण, पीछे हटना ; (निचू १६)।

ओहाम सक [तुलय्] तौलना, तुलना करना। ओहामइ ; (हे ४, २५)। वकृ—**ओहामंत**; (कुमा)।

ओहामिय वि [तुलित] तौला हुआ ; (पाअ; सुपा २६९)।

ओहामिय वि [दे] १ अभिभूत ; (षड्)। २ तिरस्कृत ; (स ३१३ ; ओघ ६०)। ३ बंद किया हुआ, स्थगित ; "जह वीणावंसरवा खणेण ओहामिआ सव्वे" (पउम ४९, ६)।

ओहार सक [अव+धारय्] निश्चय करना। संकृ—**ओहारिअ**; (अभि १६४)।

ओहार पुं [दे] १ कच्छप ; २ नदी वगैरः के बीच की शुष्क जगह, द्वीप ; ३ अंश, विभाग ; (दे १, १६७)। ४ जलचर-जन्तु विशेष ; (पण्ह १, ३)।

ओहार पुं [अवधार] निश्चय। °व वि [°वत्] निश्चय वाला; (द्र ४६)।
ओहारइत्तु वि [अवधारयितृ] निश्चय करने वाला; (राज)।
ओहारइत्तु वि [अवहारयितृ] दूसरे पर मिथ्याभियोग लगाने वाला; (राज)।
ओहारण न [अवधारण] नियम, निश्चय; (द्र २)।
ओहारणी स्त्री [अवधारणी] निश्चयात्मक भाषा; "ओहारणिं अप्पियकारिणिं च भासं न भासिज्ज सया स पुज्जो" (दस ८, ३)।
ओहारिणी स्त्री [अवधारिणी] ऊपर देखो; (भास १४)।
ओहाव सक [आ+क्रम्] आक्रमण करना। ओहावइ; (हे ४, १६० ; षड्)।
ओहाव अक [अव+धाव्] पीछे हटना। वकृ—ओहावंत, ओहावेंत; (ओघ १२६ ; वव ८)।
ओहावण न [अवधावन] १ अपसर्पण, पलायन; (वव १)। २ दीक्षा से भागना, दीक्षा को छोड़ देना; (वव ३)।
ओहावणा स्त्री [अपभावना] तिरस्कार, अनादर; (उप १२६ टी ; स ४१०)।
ओहावणा स्त्री [आक्रान्ति] आक्रमण; (काल)।
ओहाविअ वि [अपभावित] १ तिरस्कृत; (सुपा २२४)। २ ग्लान, ग्लानि-प्राप्त; (वव ८)।
ओहाविअ वि [अवधावित] पलायित, अपसृत; (दस-चू १, २)।
ओहास पुं [अवहास, उपहास] हाँसी, हास्य; (प्राप्र; मै ४३)।
ओहासण न [अवभाषण] याचना, माँग, विशिष्ट भिक्षा; (आव ४)।
ओहि पुंस्त्री [अवधि] १ मर्यादा, सीमा, हद; (गा १७०; २०६)। २ रूपि-पदार्थ का अतीन्द्रिय ज्ञान-विशेष; (उवा ; महा)। °जिण पुं [°जिन] अवधिज्ञान वाला साधु; (पण्ह २, १)। °णाण न [°ज्ञान] अवधि-ज्ञान; (वव १)। °णाणावरण न [°ज्ञानावरण] अवधि-ज्ञान का प्रतिबन्धक कर्म; (कम्म १)। °दंसण न [°दर्शन] रूपी वस्तु का अतीन्द्रिय सामान्य ज्ञान; (सम १५)। °दंसणावरण न [°दर्शनावरण] अवधिदर्शन का आवारक कर्म; (ठा ६)। °नाण देखो °णाण; (प्रासू)। °मरण न [°मरण] मरण-विशेष; (भग १३, ७)।
ओहिअ वि [अवतीर्ण] उतरा हुआ; (कुमा)।
ओहिण्ण वि [अपभिन्न] रोका हुआ, अटकाया हुआ; (से १३, २४)।
ओहित्थ न [दे] १ विषाद, खेद; २ रभस, वेग; ३ वि. विचारित; (दे १, १६८)।
ओहिर देखो ओहीर। ओहिरइ; (षड्)।
ओहिर देखो ओहर=अप+हृ। कर्म—ओहिरिआमि; (पि ६८)।
ओहीअंत वि [अवहीयमान] क्रमशः कम होता हुआ; (से १२, ४२)।
ओहीण वि [अवहीन] १ पीछे रहा हुआ; (अभि ५६)। २ अपगत, गुजरा हुआ; (से १२, ६७)।
ओहीर अक [नि+द्रा] सो जाना, निद्रा लेना; (हे ४, १२)। वकृ—ओहीरमाण; (णाया १, १; विपा २, १; कप्प)।
ओहीरिअ वि [अवधीरित] तिरस्कृत, परिभूत; (आचा २, १)।
ओहीरिअ वि [दे] १ उद्गीत; २ अवसन्न, खिन्न; (दे १, १६३)।
ओहुअ वि [दे] अभिभूत, पराभूत; (दे १, १५८)।
ओहुंज देखो उवहुंज। ओहुंजइ; (भवि)।
ओहुड वि [दे] विफल, निष्फल; (दे १, १५७)।
ओहुप्पंत वि [आक्रम्यमाण] जिस पर आक्रमण किया जाता हो वह; (से ३, १८)।
ओहुर वि [दे] १ अवनत, अधोमुख; (गउड)। २ खिन्न, खेद-प्राप्त; ३ स्रस्त, ध्वस्त; (दे १, १५७)।
ओहुल्ल वि [दे] १ खिन्न; २ अवनत, नीचे झुका हुआ; (भवि)।
ओहूणण न [अवधूनन] १ कम्प; २ उल्लङ्घन; ३ अपूर्व करण से भिन्न ग्रन्थि का भेद करना; (आचा १, ६, १)।
ओहूय वि [अवधूत] उल्लंघित; (बृह १)।

इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवे ओआराइसद्दसंकलणो पंचमो तरंगो समत्तो। तस्समत्तीए अ सरविहाओवि समत्तो।

यह पुस्तक मिलने का पता—

दलीचंद माणेकचंद शेठ,

नं० ४६ ईज़रा स्ट्रीट, कलकत्ता।





